रिसाले-ए-नूर संग्रहः

भाग 4

किरणें

इस्लामी आस्था पर विचार, उपासना और क्रिया

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 4

किरणें

इस्लामी आस्था पर विचार, उपासना और क्रिया

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

TUGHRA
BOOKS
न्यु जर्सी

13 12 11 10 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित

345 क्लिफ्टन एवेन्यू, क्लिफ्टन, एनजे, 07011,

यूएसए

www.tughrabooks.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा उपलब्ध है

आईएसबीएन 978-1-59784-215-0 (हार्डकवर)

द्वारा मुद्रित

Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

दूसरी किरण

तीसरी किरण

चौथी किरण

छठी किरण

सातवीं किरण

नौवीं किरण

दसवीं किरण

ग्यारहवीं किरण

बारहवीं किरण

तेरहवीं किरण

चौदहवीं किरण

पांचवी किरण

पंद्रहवीं किरण

प्रस्तावना

Iएफ बीसवीं सदी के इस्लामी इतिहास का निश्चित इतिहास आंदोलन के बारे में जितना भी लिखा जाता है, कोई भी व्यक्ति आश्चर्य करता है कि क्या इसका लेखक इतना समझदार और साहसी होगा कि वह एक ऐसे मुद्दे पर बहस कर सके, जिसे कई मुस्लिम विचारक और लेखक निजी तौर पर तो रखते हैं, लेकिन शायद ही कभी खुले तौर पर उठाया जाता है, यानी कि 'इस्लामी पुनरुत्थान', जिसके बारे में कहा जाता है कि वह पिछले चालीस या पचास वर्षों में हुआ है, को मुख्य रूप से एक पुनरुत्थानशील पहचान के रूप में देखा जाना चाहिए , जिसका इस्लाम के नीचे के विश्वास में किसी भी तरह की रुचि या जुड़ाव से कोई लेना-देना नहीं है। कोई यह अनुमान लगा सकता है कि मुसलमान अचानक से बेहतर आस्तिक या अपने समर्पण की बाहरी अभिव्यक्तियों में अधिक कुशल नहीं बन गए हैं, हालांकि स्पष्ट रूप से यह विभिन्न व्यक्तिगत मामलों में हुआ हो सकता है। हालांकि, मुस्लिम दुनिया में जो कुछ हुआ है, वह कुछ समूहों की ओर से बाहरी खतरों के सामने अपनी सामूहिक पहचान को फिर से स्थापित करने का एक निरंतर प्रयास है। कुछ लोगों ने इस्लाम के साथ अपने अटूट संबंधों को उजागर किया है - चाहे वे धार्मिक हों, सांस्कृतिक हों या दोनों का मिश्रण हों - जबकि अन्य लोगों ने अपने राजनीतिक और वैचारिक एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए मुस्लिम दुनिया की सामाजिक-राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिशीलता में इस्लाम की केंद्रीयता का लाभ उठाया है।

पिछले 150 वर्षों में हुए अनेक आंदोलनों, जिन्हें लगभग बिना किसी अपवाद के 'इस्लामी आंदोलन' के रूप में जाना जाता है, का धार्मिक आस्था के पुनरुत्थान से कोई लेना-देना नहीं है। इनमें से अधिकांश वास्तव में राजनीतिक आंदोलन रहे हैं, जिनके नेताओं का अंतर्निहित लक्ष्य एक विशिष्ट समस्या का समाधान करना रहा है: मुस्लिम लोगों के कथित पिछड़ेपन की समस्या और राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से पश्चिम के प्रति उनकी अधीनता।

जबकि 'इस्लामिक आंदोलनों' की परिभाषात्मक मैट्रिक्स के भीतर काम करने वाले समूहों में से कोई भी मुख्य रूप से एक आस्था आंदोलन के रूप में पहचाने जाने का दावा नहीं कर सकता है, विभिन्न व्यक्ति विश्वास के नवीनीकरण को बढ़ावा देने के घोषित उद्देश्य के साथ छिटपुट रूप से सामने आए हैं - अक्सर अपने पूरे जीवन के काम को उस उद्देश्य के लिए समर्पित करने की सीमा तक - और इनमें से कुछ व्यक्तियों के इर्द-गिर्द, काफी बड़े और महत्वपूर्ण आंदोलन विकसित हुए हैं। तुर्की मुस्लिम विद्वान बेदीउज्जमान सईद नूरसी (1877/8-1960) ऐसे ही एक व्यक्ति हैं।

'विश्वास की सेवा और कुरान' आंदोलन के प्रणेता, नूरसी यकीनन 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली, भले ही दुखद रूप से कम शोध किए गए, मुस्लिम विचारक हैं। जबकि 'विश्वास की सेवा और कुरान' आंदोलन, एक आस्था-आधारित आंदोलन जिसमें दुनिया भर में लाखों अनुयायी शामिल हैं, सख्ती से एक नए धार्मिक आंदोलन के परिभाषात्मक मानदंडों को पूरा नहीं करता है, यह न केवल सामूहिक आस्था के बजाय व्यक्तिगत आस्था के नवीनीकरण पर अपने अडिग फोकस के लिए, बल्कि राजनीतिक-वैचारिक उद्देश्यों के लिए किसी भी तरह की धार्मिक रूप से वैध-नकली हिंसा या उग्रवाद से बचने के लिए भी अन्य समकालीन मुस्लिम धार्मिक और वैचारिक समूहों से अलग है।

हालाँकि अक्सर उन्हें इस्लाम के सुधार के अग्रदूत के रूप में स्टीरियोटाइप किया जाता है, जो तुर्की राज्य की केमालिस्ट धर्मनिरपेक्षता नीति द्वारा उस पर लगाए गए दबावों के तहत गिर रहा था, उनकी मृत्यु के लगभग आधी सदी बाद, नूरसी ने उन्हें 'मुस्लिम विद्वानों' के आम तौर पर स्वीकृत परिवेश में सटीक रूप से स्थापित करने के किसी भी प्रयास को चुनौती देना जारी रखा है। जबकि उनकी महान कृति, रिसाले -ए नूर, सभी इरादों और उद्देश्यों के लिए कुरान पर एक टिप्पणी है, यह शब्द के तकनीकी अर्थ में व्याख्या का काम नहीं है, हालांकि वह स्पष्ट रूप से एक निपुण व्याख्याकार थे। और जबकि नूरसी शैक्षिक धर्मशास्त्र (कलाम) के सिद्धांतों में पारंगत थे, उन्होंने रिसाले के शेर के हिस्से को उन चीजों को समर्पित किया, जिनके बारे में उनका दावा है कि वे ईश्वर की एकता (तौहीद) के लिए तर्कसंगत प्रमाण हैं , यह पारंपरिक धर्मशास्त्र का काम भी नहीं है।

वास्तव में, एक स्तर पर, रिसाले खुद कुरान की तरह ही विभाजन के प्रति प्रतिरोधी है, जिसे यह प्रतिबिम्बित करने और स्पष्ट करने का दावा करता है। और अगर, जैसा कि नूरसी अक्सर कहते हैं, कुरान का उद्देश्य मनुष्य को विश्वास की ओर ले जाना है, तो रिसाले की शिक्षाओं को उस उद्देश्य के अनुरूप देखा जाना चाहिए।

> मानवता और इस्लाम की दुनिया में तीन सर्वोच्च मामले हैं ईमान, शरीयत और जीवन। चूँकि ईमान की सच्चाईयाँ इनमें से सबसे बड़ी हैं, इसलिए रिसाले-ए-नूर के चुनिंदा और वफ़ादार छात्र राजनीति से घृणा करते हैं ताकि वे दूसरी धाराओं का औज़ार न बनें और दूसरी ताकतों के अधीन न हों, और हीरे जैसी कुरान की सच्चाईयाँ

> दुनिया के लिए धर्म को बेचने वालों या उसका शोषण करने वालों की दृष्टि में हम कांच के टुकड़ों में न बदल जाएं, और ताकि वे विश्वास को बचाने के कर्तव्य को, जो सबसे बड़ा कर्तव्य है, अक्षरशः निभा सकें।

नूरसी के आकर्षण का एक हिस्सा उनके इस अटल विश्वास में निहित था कि यह विश्वास (ईमान) है जिसे नवीनीकृत और संरक्षित किया जाना चाहिए, और यह कि अन्य सभी प्रयासों को विश्वास की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए किया जाना चाहिए: तथ्य यह है कि, अपने स्वयं के युग के कई लोकप्रिय मुस्लिम विचारकों के विपरीत, उन्होंने राजनीति की संदिग्ध कला को अस्वीकार कर दिया - और, इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि धर्म द्वारा समर्थित राजनीति की संदिग्ध कला - ने उन्हें सम्मान दिलाया और उन्हें प्रामाणिकता का वह भाव प्रदान किया जो शायद इतने सारे अन्य मुस्लिम विचारकों में नहीं पाया जाता। उनके आकर्षण का एक और हिस्सा उनके खिलाफ खड़ी ताकतों की उनकी चतुर व्याख्या में निहित था। नूरसी के लिए, बाद में आने वाले कई मुस्लिम विद्वानों, नेताओं और विचारकों के विपरीत, यह महसूस किया कि यदि इस्लाम - या विश्वास - और आधुनिकता के बीच कोई संघर्ष है जैसा कि नूरसी ने मुस्लिम दुनिया के सामने आने वाली समस्याओं का स्वयं मूल्यांकन किया है, संघर्ष अंततः पारलौकिकता को लेकर है, जिसमें ज्ञानोदय के बाद के प्रयोग में मनुष्य के लिए ब्रह्मांड के मामलों में केंद्रीयता का दावा किया गया है, जिसे इस्लाम, मनुष्य की ईश्वर पर निर्भरता पर जोर देने के साथ, स्वीकार नहीं कर सकता। मनुष्य के सामने एक विकल्प है: ईश्वर की संप्रभुता में विश्वास या मनुष्य की संप्रभुता में विश्वास, इस तरह के विकल्प में सभी चीजें शामिल हैं। नूरसी के लिए, मोक्ष का मार्ग केवल स्वयं के बजाय दूसरे को चुनने में निहित है, और यह इस विकल्प की गतिशीलता में है कि नूरसी के आध्यात्मिकता और ब्रह्मांड में मनुष्य के स्थान के बारे में विचारों को समझने की कुंजी मिल सकती है।

नवीकरण और सुधार, नूर्सियन वेल्टन-शाउंग में एक केंद्रीय भूमिका निभाते हैं, लेकिन, उनके कई समकालीनों के विपरीत, यह विश्वास का नवीकरण और व्यक्ति का सुधार है जो उनकी प्राथमिक और सर्वोपरि चिंता का विषय है।

इस संबंध में, वे 20वीं सदी के उन चंद मुस्लिम विचारकों में से एक हैं, जिनके पास मुस्लिम जीवन के सामाजिक-आर्थिक या राजनीतिक बाह्य पहलुओं के बारे में कहने के लिए बहुत कम या कुछ भी नहीं है। सामान्य रूप से पिछली डेढ़ सदी और विशेष रूप से पिछले पच्चीस वर्षों में, 'इस्लाम जीवन का एक संपूर्ण तरीका है' अधिकांश मुस्लिम आंदोलनों के लिए पसंदीदा मंत्र रहा है। इसके परिणामस्वरूप, सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर इस्लाम के 'कार्यान्वयन' पर मुख्य रूप से जोर दिया गया है, जिसमें बहस और चर्चा मुख्य रूप से इस्लामी कानून, इस्लामी शिक्षा और इस्लामी राज्य की अवधारणा जैसे मुद्दों पर केंद्रित है। इस प्रकार, शेर का

मुस्लिम आंदोलनों का एक हिस्सा इस्लामी रहस्योद्घाटन के प्रति 'बाह्यवादी' दृष्टिकोण को अपनाता है, क्योंकि मुसलमान शरिया के प्रति कठोर पालन करते हैं।

- और, जहाँ आवश्यक हो, विधायी साधनों के माध्यम से इस तरह के पालन को लागू करना - आदर्श मुस्लिम समाज के निर्माण की कुंजी है। 'बाहरी-नस्लवादियों' के लिए, सुधार का मतलब मुख्य रूप से समाज का सुधार हो गया है, जिसकी अंतर्निहित आकांक्षा इस्लाम के 'स्वर्ण युग' में वापस लौटना है - कम से कम बाहरी लोगों के लिए - पैगंबर के जीवनकाल के दौरान मदीना के सामुदायिक-राज्य द्वारा। ये 'मदीना के सपने', और उन सपनों को दूसरों पर साझा करने - या, यहाँ तक कि, थोपने की सहवर्ती इच्छा, इस्लाम की वर्तमान पश्चिमी धारणा के लिए आंशिक रूप से जिम्मेदार हैं, जो ईश्वरीय रूप से प्रकट धर्म से अधिक राजनीतिक विचारधारा है। इस्लाम के प्रति इस अति-राजनीतिक दृष्टिकोण का वर्णन करने के लिए 'इस्लामवाद' 'राजनीतिक इस्लाम' के सापेक्ष गुण और दोष हमें यहाँ पर ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। यह कहना पर्याप्त है कि अंतिम विश्लेषण में, यह दृष्टिकोण 'इस्लामी शासन' की वापसी, मुस्लिम दुनिया को मदीना के समुदाय-राज्य के समान उम्मा में बदलना और या जानबूझकर या अन्यथा, इस्लामी रहस्योद्घाटन को शासन के एकमात्र मुद्दे तक सीमित करना है। जबकि इस्लाम को राजनीतिक बनाना और विचारधारा में बदलना अपेक्षाकृत हाल की घटना है, इस्लाम के प्रति 'बाह्यवादी' दृष्टिकोण जो इसे सूचित करता है, लगभग इस्लाम जितना ही पुराना है। हालाँकि, जहाँ 12वीं शताब्दी में ग़ज़ाली और 17वीं में मुल्ला सद्र जैसे 'गैर-बाह्यवादियों' के लिए यह बाह्यवादी विद्वानों का नाममात्रवाद और फ़िक़्ह (न्यायशास्त्र) पर अत्यधिक ज़ोर था जो मुस्लिम समुदाय के स्वास्थ्य के लिए सबसे बड़ी बाधाएँ थीं, वहीं आज के ग़ज़ालियों और सद्रों के लिए - जिनमें नूरसी निस्संदेह एक हैं - यह धर्म का अत्यधिक राजनीतिकरण है जो ख़तरा है।

संभवतः इस्लामी/

पिछले पचास से सौ सालों में इस्लामवादी समूहों और नेताओं में मुस्लिम दुनिया में 'धार्मिक रूप से संदिग्ध' शासन को बदलने और इस्लामी क्रांति लाने के लिए बल प्रयोग का पक्ष लेने की प्रवृत्ति रही है। और यह ठीक यही बिंदु है जहाँ नूरसी और उनके समकालीनों के बीच एक बुनियादी अंतर दिखाई देता है। नूरसी न केवल इस्लाम के नाम पर किसी भी तरह के विद्रोह या क्रांति के अपने कट्टर विरोध के लिए जाने जाते हैं, बल्कि वे सामान्य रूप से राजनीति और विशेष रूप से इस्लाम के राजनीतिकरण के प्रति अपने विरक्ति के कारण भी जाने जाते हैं। जिहाद के अत्यधिक विवादास्पद मुद्दे पर नूरसी का अपने समकालीनों के बहुमत से वैचारिक विचलन कहीं और अधिक स्पष्ट रूप से चित्रित नहीं किया गया है। जैसा कि ऊपर जोर दिया गया है,

नूरसी के अनुसार, मोक्ष का मार्ग केवल स्वयं के स्थान पर दूसरे को चुनने में निहित है, और इस चुनाव की गतिशीलता में ही नूरसी के आध्यात्मिकता और जिहाद के दृष्टिकोण को समझने की कुंजी पाई जा सकती है।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिनके लिए यह स्पष्ट है कि मानवता एक अनिश्चित स्थिति में है। हमें प्रतिदिन बताया जाता है कि हम प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, आतंकवाद, अकाल और एक हज़ार एक अलग-अलग बीमारियों के खतरे में जी रहे हैं। हमें बताया जाता है कि हमारा समय वैश्विक संकट का समय है। फिर भी बहुत कम लोग इस संकट के वास्तविक कारण को समझ पाते हैं। ऐसा नहीं है कि हम अपने आस-पास की समस्याओं को नहीं समझते हैं। हमारा संकट - आधुनिकता का संकट - यह है कि हम खुद को नहीं समझते हैं। वास्तव में, उत्तर आधुनिक विचार - यदि ऐसी कोई चीज़ मौजूद है और वास्तव में देर से आधुनिकता के भ्रमित विचारों का दूसरा नाम नहीं है - एक संदेहवाद को बढ़ावा देता है जिसमें किसी भी चीज़ को समझने की संभावना पर सवाल उठाया जाता है।

नूरसी का दावा है कि आधुनिक समय की मांग और हुक्मों के कारण अधिकांश लोग कठिनाई और दुख में डूब गए हैं। उनका कहना है कि मनुष्य की जन्मजात श्रेष्ठता भी नष्ट हो गई है, क्योंकि धार्मिक मूल्यों से धीरे-धीरे अलग होने से 'व्यभिचार' के द्वार खुल गए हैं, जिससे अनैतिक जीवन और 'शारीरिक भूख' को बढ़ावा मिला है। नूरसी कहते हैं कि सामाजिक-आर्थिक असमानताएं भी इस आधुनिक सभ्यता की पहचान हैं, पश्चिमी दृष्टिकोण यह है कि "जब तक मेरा पेट भरा हुआ है, मुझे इससे क्या मतलब कि दूसरे लोग भूख से मरें?" और "तुम काम करो ताकि मैं आराम

और सुविधा से रह सकूं।" वर्गों के बीच दरार को बढ़ने देकर, पश्चिम ने इतना संघर्ष और विद्रोह पैदा किया है कि यह मानवता को घुटनों पर लाने के कगार पर है, जिससे पूंजी और श्रम के बीच संघर्ष को बढ़ावा मिल रहा है - जो खुद दो विश्व युद्धों और अब तक अज्ञात पैमाने पर रक्तपात और अव्यवस्था का अग्रदूत है।

कोई और बात कह सकता है, लेकिन निश्चित रूप से यह बात कही जा चुकी है: सैद नूरसी के लिए ऐसी सभ्यता को स्वीकार करना असंभव था जिसमें नकारात्मक पहलू सकारात्मक पहलुओं से इतने निर्णायक रूप से अधिक थे। नूरसी के लिए, मनुष्य के लिए आगे बढ़ने का एकमात्र तरीका एक सभ्यतागत रूप को अपनाना है जो सच्ची खुशी और समृद्धि लाता है - और यदि सभी के लिए नहीं, तो कम से कम बहुमत के लिए।

मनुष्य के सामने एक विकल्प होता है: ईश्वर की संप्रभुता में विश्वास या मनुष्य की संप्रभुता में विश्वास, इस विकल्प के साथ-साथ अन्य सभी चीजें भी जुड़ी होती हैं। नूरसी के लिए, मोक्ष का मार्ग केवल स्वयं के बजाय दूसरे को चुनने में निहित है, और यह इस विकल्प की गतिशीलता में है कि नूरसी के 'सच्ची सभ्यता' के बारे में विचारों को समझने की कुंजी मिल सकती है।

सैद नूरसी के अनुसार, मनुष्य को वास्तव में मानव होने के लिए, उसे अपने लिए इस्लामी राज्य नहीं, बल्कि इस्लामी मनःस्थिति स्थापित करनी होगी। यदि, धर्मनिरपेक्ष संक्षेप में, 'सभ्यता' वह सर्वोच्च चीज़ है जिसकी आकांक्षा एक सामाजिक प्राणी के रूप में मनुष्य कर सकता है, तो आइए देखें कि सैद नूरसी इस शब्द को कैसे पुनर्परिभाषित करते हैं ताकि इसे सीमित, नपुंसक मनुष्य के लिए वास्तव में सार्थक बनाया जा सके, जिससे उसे 'कब्र की भयानक खामोशी का सामना करने' की क्षमता मिल सके, जिस तरह से कोई अन्य सभ्यता सक्षम नहीं है। पश्चिमी सभ्यता की तुलना इस्लामी सभ्यता के रूप में जानी जाने वाली वैचारिक इकाई से करते हुए, वह पूर्व के स्रोत को मानवीय कला (दहा) में और बाद के स्रोत को ईश्वरीय मार्गदर्शन (हुदा) में खोजता है। उनका मानना है कि ये स्रोत सामान्य रूप से समाज और विशेष रूप से व्यक्ति पर बहुत अलग-अलग तरीकों से प्रभाव डालते हैं।

नूरसी लिखते हैं कि कलात्मकता दिमाग में काम करती है और दिल को भ्रमित करती है।
यह भौतिक और भौतिक को देखता है, शरीर और दुष्ट आत्मा पर विचार करता है, जिसे यह पोषित करना चाहता है। यह नफ़्स की संभावनाओं को विकसित करता है जबकि रूह को एक सेवक या दास बनाता है । इस दुनिया के प्रति अपने प्रेम में, जो कि एकमात्र दुनिया है जिसे यह पहचानता है, यह मनुष्य को शैतान में बदल देता है, बहरे स्वभाव की पूजा करता है और अपनी अंधता में, पृथ्वी के चेहरे पर कृतघ्नता का पर्दा खींच देता है। यह अपने सामने मौजूद इनामों को बिना मालिक की लूट के रूप में देखता है, जिसे यह एक आम चोर की तरह हड़प लेता है।

दूसरी ओर, मार्गदर्शन हृदय में काम करता है और आत्मा को प्रकाशित करता है। यह मनुष्य की क्षमताओं और आध्यात्मिक योग्यताओं को विकसित करता है और ऐसा करके प्रकृति को प्रकाशित करता है। यह आत्मा और शरीर का निर्माण करता है और ऐसा करके इस दुनिया और परलोक में खुशी पैदा करता है। यह हर जगह ईश्वरीय कला और सभी चीजों में ईश्वर की बुद्धि और शक्ति को देखता है। यह कला और शक्ति के स्वामी अल्लाह की पूजा करता है। यह देखने और सुनने दोनों में सक्षम है और जैसे-जैसे यह ईश्वरीय कृपाओं से लाभान्वित होता है, यह अपने चारों ओर कृतज्ञता का प्रकाश फैलाता है।

नूरसी के शब्दों में, वास्तव में सभ्य होने के लिए, मनुष्य को वास्तव में मानव होना चाहिए, और वास्तव में मानव होने के लिए, उसका लक्ष्य उस तरह का खिलाफ़ नहीं है जो शक्ति पैदा करता है, बल्कि उस तरह का खिलाफ़ है जो पूजा को जन्म देता है - यानी प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा को खलीफत अल्लाह फ़ि अल-अर्द के रूप में उसकी वास्तविक स्थिति में पोषित करना। नूरसी के लिए, यह सच्ची सभ्यता का प्रतीक है जिसकी मनुष्य को आकांक्षा करनी चाहिए।

इन शब्दों को ध्यान में रखते हुए मैं आपको नूरसी की एक उत्कृष्ट कृति, द रेज़, से परिचित कराना चाहूंगा , जिसमें उन्होंने ऊपर वर्णित लगभग सभी बिंदुओं पर अपने अनोखे अंदाज में विस्तार से चर्चा की है।

कोलिन टर्नर

डरहम विश्वविद्यालय, जून 2010

दूसरी किरण

दूसरी किरण

ईश्वरीय एकता के कुछ फल और ईश्वरीय एकता में विश्वास

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यह रे सोलह साल पहले लिखी गई थी, जब मेरे दोस्तों की रिहाई के बाद, मैं एस्कीशेहर जेल में अकेला रह गया था। यह मेरे अपने बहुत ही कमज़ोर हाथ से बहुत ही कष्टदायक और अप्रिय समय पर बहुत तेज़ी से लिखी गई थी: इसलिए, इसमें कुछ हद तक क्रम की कमी है। हालाँकि, हाल ही में इसे संपादित करते समय मुझे एहसास हुआ कि विश्वास और ईश्वरीय एकता के मुद्दों को समझाने और साबित करने के मामले में, यह एक मूल्यवान ग्रंथ है जिसमें दमदार तर्क शामिल हैं।

नर्सी ने कहा

इसके बाद सातवां सार्थक बिंदु आता है, जो ईश्वर के छह महानतम नामों या ईश्वर के छह नामों से संबंधित है, जिनकी व्यापक अभिव्यक्तियाँ हैं (जिनकी चर्चा द ग्लेम्स के अंत में की गई है) और जो ईश्वरीय सत्ता की अद्वितीय पूर्ण एकता की धारणा से संबंधित है (112:1)।

नोट: मेरा मानना है कि यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें विश्वास के कई सूक्ष्म रहस्यों को समाहित किया गया है और उन पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है। मुझे उम्मीद है कि भगवान इसे पढ़ने और समझने वालों को अपने विश्वास को बचाने में सक्षम बनाएंगे। दुर्भाग्यपूर्ण-

चूँकि मुझे यहाँ किसी से मिलने की अनुमति नहीं है, इसलिए मैं अपने लिए इसकी एक साफ प्रति प्राप्त करने में असमर्थ हूँ। यदि आप ग्रंथ के मुख्य बिंदु को समझना चाहते हैं, तो पहले चरण के दूसरे और तीसरे फल से शुरू करें। उन्हें ध्यान से पढ़ें और फिर अंत में निष्कर्ष और उससे पहले के दो पृष्ठों में चर्चा की गई बातों का अध्ययन करें। जब आप यह कर लें, तो वापस जाएँ और पूरे ग्रंथ को धीरे-धीरे पढ़ें!

परमेश्वर के छः वचनों के विषय में सातवाँ अर्थपूर्ण बिन्दु

महानतम नाम और इस तथ्य के बारे में कि "ईश्वर पूर्ण एकता वाला अद्वितीय है"

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हम उसी से सहायता चाहते हैं।

यहाँ जो कुछ कहा गया है, वह तीन सूक्ष्म और सुन्दर फलों से सम्बन्धित है, जो ईश्वर की एकता की समझ से उत्पन्न हुए हैं, साथ ही उसकी एकता के तीन प्रमाण भी हैं, जो पैगम्बर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) द्वारा ली गई एक प्रसिद्ध शपथ और कुरान की इस आयत के एक विशेष और अत्यंत प्रभावशाली अर्थ से प्रेरित हैं, " और जान लो कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है" (47:19)।

W जब तुम शपथ लेते हो, परमेश्वर का सबसे महान् दूत, उस पर हो शांति और आशीर्वाद, आमतौर पर कहा जाता है, "उसकी कसम जिसके हाथ में मुहम्मद का जीवन है।" यह शपथ दर्शाती है कि इसकी सबसे छोटी जड़ से लेकर इसके तने की अगणनीय परिधि और इसकी असंख्य शाखाओं की नोक तक, ब्रह्मांड का वृक्ष अपने अस्तित्व और इसके निरंतर अस्तित्व दोनों के लिए पूरी तरह से और स्पष्ट रूप से एक, अद्वितीय एक की शक्ति और इच्छा पर निर्भर करता है। क्योंकि अगर प्राणियों में सबसे प्रतिष्ठित और प्रतिष्ठित, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, खुद के मालिक नहीं हैं, अगर वे अपनी इच्छानुसार कार्य नहीं कर सकते हैं और अपने सभी कार्यों में दूसरे की इच्छा पर निर्भर हैं, तो सृष्टि में कोई भी अन्य चीज - कोई भी कार्य, कोई भी स्थिति, कोई भी गुण, चाहे वह सार्वभौमिक हो या विशेष - उस सर्वव्यापी प्राधिकरण और इच्छा के प्रभुत्व और नियंत्रण के क्षेत्र से बाहर काम नहीं कर सकता है।

पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की यह अर्थपूर्ण शपथ इस तथ्य की ओर संकेत करती है कि यह एक एकल, अद्वितीय प्रभुत्व है[1]
जो पूरे अस्तित्व पर हावी है। हम इस वास्तविकता की व्याख्या और कई स्पष्ट प्रमाणों को रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में संदर्भित करते हैं, इस दूसरी किरण में हम तीन संक्षिप्त "स्टेशनों" में व्यक्त किए गए तीन निम्नलिखित मामलों पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

प्रथम चरण में, विश्वास के इस अत्यंत महत्वपूर्ण सत्य से उत्पन्न अनेक सूक्ष्म, मधुर और बहुमूल्य फलों में से, तीन सार्वभौमिक फल हैं

1 प्रभुता या ईश्वर का सम्पूर्ण सृष्टि का स्वामी होने का अर्थ है कि ईश्वर सृष्टि का रचयिता, पालनकर्ता, पालक, संचालक और निर्देशक है। (अनुवाद)

फलों के बारे में संक्षेप में बताया जाएगा। उन भावनाओं, स्वादों और अनुभवों का भी उल्लेख किया जाएगा जो मेरे दिल को इन फलों की ओर आकर्षित करते हैं।

दूसरे चरण में तीन सार्वभौमिक तथ्यों पर विस्तार से चर्चा की जाएगी जो इस पवित्र सत्य को आवश्यक और स्पष्ट करते हैं। ये तथ्य, जो इस सत्य के प्रमाण भी हैं, तीन हजार प्रमाणों की शक्ति रखते हैं।

तीसरे चरण में, तीन संकेतों का उल्लेख किया जाएगा जो दिव्य प्रभुत्व की एकता को इंगित करते हैं जो पूरे अस्तित्व पर हावी है।
इन तीन संकेतों में तीन सौ संकेतों और प्रमाणों की शक्ति है।

पहला स्टेशन

पहला फल

दिव्य एकता और पूरे ब्रह्मांड में इसके द्वारा उत्पन्न एकता में, दिव्य अनुग्रह और सौंदर्य तथा प्रभुता की पूर्णता स्पष्ट हो जाती है: यदि एकता न होती, तो वह पूर्व-शाश्वत खजाना छिपा रह जाता। केवल एकता के दर्पण में या उसके माध्यम से तथा सृष्टि के वृक्ष के छोर पर स्थित विशिष्ट व्यक्तियों के चेहरों पर केन्द्रित दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों में ही कोई व्यक्ति अनंत दिव्य अनुग्रह और पूर्णता, दिव्य प्रभुता की असीम सुंदरता और उत्कृष्टता, दिव्य दया के असंख्य उपहार और उदारता, तथा ईश्वर के शाश्वत रूप से प्रार्थित होने की असीम पूर्णता और कृपा को देख पाता है।

उदाहरण के लिए, एक शक्तिहीन शिशु की सहायता के लिए शुद्ध सफेद दूध एक अप्रत्याशित स्थान से भेजा जाता है, अर्थात् रक्त और मल के बीच स्थित एक स्रोत से।2 जब इस घटना को ईश्वरीय एकता के परिप्रेक्ष्य से देखा जाता है, तो अचानक सर्व-दयालु की दया में अमर कृपा और सुंदरता को सभी शिशुओं के प्रति ईश्वर के अद्भुत, स्नेही पालन और उनकी माताओं को उनके अधीन करने के माध्यम से अपने पूरे वैभव में देखा जा सकता है।

2 16:66 में, कुरान कहता है: और निश्चित रूप से मवेशियों (पुनर्जीवित पृथ्वी के चरागाहों पर चरने वाले) में, तुम्हारे लिए एक सबक है: हम तुम्हें उनके शरीर के अंदर से, मल और रक्त के बीच जो अद्भुत रूप से अलग है, दूध देते हैं जो पीने वालों के लिए शुद्ध और स्वादिष्ट है। यह आयत दूध के उत्पादन की प्रक्रिया को उल्लेखनीय विस्तार से वर्णित करती है: भोजन के रूप में जो खाया जाता है उसका आंशिक पाचन, उसका अवशोषण, और फिर ग्रंथियों में दूसरी प्रक्रिया और शोधन। दूध जीवित प्राणियों के लिए पोषण का एक सुखद स्रोत है, फिर भी यह अन्य स्रावों की तरह एक स्राव है, और यह माँ के जीवन के लिए अनावश्यक है। आंतों में गोबर और नसों में खून के बीच से उत्पन्न एक स्राव होने के बावजूद, यह जीवित प्राणियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण और उपयोगी खाद्य पदार्थों में से एक है। चौदह शताब्दियों पहले कुरान में इसके उत्पादन की प्रक्रिया का वर्णन इसकी दिव्य उत्पत्ति के अनगिनत प्रमाणों में से एक है। (ट्र.)

अपनी संतानों की ज़रूरतों को पूरा करना। अगर हम इसे ईश्वरीय एकता के नज़रिए से नहीं देखते हैं, तो वह कृपा और सुंदरता छिपी रहती है, जबकि दूध की उपयोगिता को "प्राकृतिक" कारणों, संयोग या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, इस प्रकार इसका सारा मूल्य और, यकीनन, इसकी प्रकृति भी छीन ली जाती है।

एक और उदाहरण: यदि किसी भयंकर बीमारी से उबरने को ईश्वरीय एकता के दृष्टिकोण से देखा जाए, तो विशाल अस्पताल - पृथ्वी - में सभी पीड़ितों को पृथ्वी की विशाल फार्मेसी से ली गई औषधियों और उपचारों से ठीक करने के कार्य के माध्यम से, परम दयालु द्वारा दिखाए गए स्नेह की कृपा, सुंदरता और उत्कृष्टता एक सार्वभौमिक और सबसे अद्भुत तरीके से स्पष्ट हो जाती है। हालाँकि, यदि हम ईश्वरीय एकता के दृष्टिकोण से स्थिति पर विचार नहीं करते हैं, तो उपचार का वह कुशल, विशेषज्ञ और सचेत कार्य बेजान दवाओं के गुणों, अंधी शक्तियों और अचेतन प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा, इस प्रकार उपचार की कला से उसका ज्ञान और मूल्य दोनों छीन लिए जाएँगे, और उसकी प्रकृति पूरी तरह से बदल जाएगी।

इसकी प्रासंगिकता के कारण, मैं यहाँ एक बिंदु को स्पष्ट करूँगा जो मेरे मन में उस प्रार्थना के बारे में आया है जिसमें कोई व्यक्ति पैगंबर पर ईश्वर की कृपा और शांति को बुलाता है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। न्यायशास्त्र या कानून के शाफी स्कूल के अनुयायी पाँच दैनिक विहित प्रार्थनाओं में से प्रत्येक के बाद होने वाली अतिरिक्त महिमा (तस्बीह) के अंत में यह प्रार्थना करते हैं :

> हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार पर कृपा प्रदान कर, उनकी अनेक बीमारियों और उनके उपचारों पर कृपा कर, तथा उन्हें और उनके परिवार को अपने प्रचुर उपहार और अनुग्रह प्रदान कर, और उन्हें कभी समाप्त न होने वाली शांति प्रदान कर।

यह प्रार्थना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि मानवता के निर्माण में बुद्धि और मानव प्रकृति की व्यापकता की मांग है कि हम हर पल अपने निर्माता से प्रार्थना करें; इसके लिए यह आवश्यक है कि हम ईश्वर की शरण लें और उन्हें धन्यवाद और स्तुति अर्पित करें। चूँकि बीमारी मनुष्य को ईश्वरीय दरबार की ओर ले जाने वाला सबसे प्रभावी चाबुक है, और चूँकि वे मधुर उपहार जो उन्हें सच्चे आभार और उत्साह के साथ धन्यवाद देने और स्तुति अर्पित करने के लिए प्रेरित करते हैं, वे इलाज, उपचार और अच्छे स्वास्थ्य हैं, इसलिए पैगंबर पर आशीर्वाद के लिए इस प्रार्थना को बहुत सराहना और स्वीकृति मिली है।

कभी-कभी जब मैं कहता हूँ “सभी बीमारियों और उनके इलाजों की संख्या” तो मैं पृथ्वी को एक अस्पताल के रूप में देखता हूँ और इसके अस्तित्व को स्पष्ट रूप से महसूस कर पाता हूँ।

मैं सच्चे उपचारक की कृपा का अनुभव करता हूँ - वह जो सभी शारीरिक और आध्यात्मिक बीमारियों के लिए उपचार प्रदान करता है, और सभी आवश्यकताओं का उत्तर देता है - और मैं उसका सार्वभौमिक स्नेह और पवित्र, सर्वव्यापी करुणा महसूस करता हूँ।

एक और उदाहरण: किसी ऐसे व्यक्ति पर विचार करें जिसने गलत राह पर चलने की भयानक आध्यात्मिक पीड़ा झेली हो, लेकिन विश्वास के बल पर उसे मार्गदर्शन का उपहार मिला हो। अगर हम इसे ईश्वरीय एकता के दृष्टिकोण से देखें, तो हम देखते हैं कि एक साधारण, नपुंसक मनुष्य अचानक पूरे ब्रह्मांड के निर्माता और संप्रभु का अभिभाषक बन गया है, और केवल सर्व-पूज्य का उपासक बन गया है। हम देखते हैं कि उन्हें एक विशाल और सबसे शानदार शाश्वत दुनिया में अनंत सुख की पेशकश की गई है। वास्तव में, सभी विश्वासियों को उनके विश्वास की डिग्री के अनुसार समान उपहार दिया जाएगा।

मार्गदर्शन के इस उपहार पर उस सर्वशक्तिमान और सर्व-दयालु की शाश्वत सुंदरता और निरंतर कृपा की छाप स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है - वास्तव में, इतनी अधिक कि इस सुंदरता और कृपा की एक झलक ही विश्वासियों को उससे प्रेम करने के लिए और उनमें से श्रेष्ठ लोगों को उसके लिए हृदयविदारक बनाने के लिए पर्याप्त है।
लेकिन अगर हम ईश्वरीय एकता के नज़रिए से स्थिति पर विचार नहीं करते, तो हम दबंग और अहंकारी मुताज़िलियों3 की तरह बन जाते हैं और ईश्वरीय उपहार ईमान को खुद पर या किसी खास वजह से आरोपित कर देते हैं। नतीजतन, दयालु का वह चमकता हुआ हीरा, जिसकी असली कीमत जन्नत है, कांच के एक टुकड़े से ज़्यादा कुछ नहीं रह जाएगा, जो अब पवित्र कृपा या सुंदरता की चमक को प्रतिबिंबित नहीं कर सकता।

इस प्रकार, जैसा कि इन तीन उदाहरणों से पता चलता है, ईश्वरीय एकता - यह तथ्य कि ईश्वर ही सम्पूर्ण सृष्टि का एकमात्र रचयिता, देवता, प्रभु और संप्रभु है -
यह हजारों प्रकार की दिव्य कृपा और सौंदर्य तथा ईश्वर के प्रभुत्व की पूर्णता को बहुलता के क्षेत्र के सुदूरतम क्षेत्रों में स्थित, जो कि बाह्य अस्तित्व का क्षेत्र है, सबसे विशिष्ट प्राणियों की सबसे विशिष्ट अवस्थाओं में भी स्पष्ट कर देता है।

ऐसा इसलिए है क्योंकि दिव्य सौंदर्य, कृपा और पूर्णता को हृदय द्वारा देखा जाता है और दिव्य एकता में आत्मा द्वारा माना और अनुभव किया जाता है कि सभी संतों और शुद्ध विद्वानों ने बार-बार पाठ करने से सबसे मधुर सुख और आध्यात्मिक पोषण का सबसे सुखद रूप प्राप्त किया है।

---

3 मुताज़िलिस या अल-मुताज़िला: मुस्लिम "तर्कवादियों" का यह स्कूल मानवीय इच्छा और क्षमता को रचनात्मक प्रभाव प्रदान करता है, और यह निष्कर्ष निकालता है कि यह मनुष्य ही है जो अपने कार्यों का निर्माण करता है। इसके अलावा, यह स्कूल सर्वशक्तिमान ईश्वर की विशेषताओं को नकारता है, और दावा करता है कि ईश्वर उन लोगों को पुरस्कृत करने के लिए पूरी तरह से बाध्य है जो विश्वास करते हैं और अच्छे कर्म करते हैं, और उन लोगों को दंडित करते हैं जो अविश्वास करते हैं। (ट्र.)

शब्द, “ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है” - एक ऐसा कथन जो किसी भी अन्य कथन से अधिक, ईश्वरीय एकता की सच्चाई की घोषणा करता है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि ईश्वरीय भव्यता और महिमा, और ईश्वरीय प्रभुत्व की पूर्ण संप्रभुता को ईश्वरीय एकता की इस घोषणा में पूरी तरह से महसूस किया जा सकता है कि ईश्वर के सबसे महान दूत, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने घोषणा की: “मेरे और मेरे पहले आए पैगंबरों द्वारा कहे गए सभी शब्दों में से, सबसे अच्छा यह है कि 'ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।' ”4

जबकि एक छोटा सा उपहार, उपहार या पोषण का कण, जैसे कि एक फल, एक फूल, या एक प्रकाश, अपने आप में एक छोटा सा दर्पण है, जब इसे ब्रह्मांड के एक, एकल निर्माता और भगवान के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो यह अचानक अपने साथियों से जुड़ जाता है और उनके साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होता है। ऐसा करने से, यह उस परिवार से बने एक बड़े दर्पण का हिस्सा बन जाता है जिससे यह संबंधित है और अपनी प्रजाति पर प्रकट दिव्य अनुग्रह और सौंदर्य के कुछ पहलू को प्रदर्शित करता है। अपनी अल्पकालिक, क्षणभंगुर सुंदरता के माध्यम से, यह एक ऐसी सुंदरता की ओर इशारा करता है जो चिरस्थायी और अमर है। मौलाना जलालुद-दीन अर-रूमी के शब्दों के अनुसार5

(उनकी मथनावी में):

ये भ्रम तो संतों के लिए जाल मात्र हैं, जबकि वास्तविकता में
वे ईश्वर के बगीचे में चमकते चेहरों वाले लोगों के प्रतिबिंब हैं।

यह दिव्य सौंदर्य और कृपा का दर्पण बन जाता है। हालाँकि, अगर हम इसे दिव्य सौंदर्य का गुण नहीं मानते हैं, तो प्रत्येक विशेष फल अपने आप में बना रहता है, न तो पवित्र सौंदर्य और न ही उच्च पूर्णता प्रदर्शित करता है। इस तरह से देखा जाए, तो इसके भीतर की विशेष चमक भी बुझ जाती है, इस प्रकार जो वास्तव में हीरा है वह कांच से अधिक कुछ नहीं रह जाता है।

इसके अलावा, ईश्वर की एकता - यह तथ्य कि वह ब्रह्मांड का एकमात्र निर्माता, देवता, प्रभु और संप्रभु है - जीवित प्राणियों को, जो सृष्टि के वृक्ष के फल हैं, एक ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करता है जो उनके दिव्य से संबंधित होने की विशेषता है; यह उन्हें एक ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करता है जो दिव्य प्रभुत्व की छाप धारण करता है और एक चेहरा जो दिव्य दयालुता को दर्शाता है, जिसमें ईश्वर के सात प्रमुख गुण शामिल हैं।६ फिर से, प्रत्येक जीवित प्राणी को एक व्यक्तित्व प्रदान करता है जो दिव्य से संबंधित है; यह उन्हें एक व्यक्तित्व प्रदान करता है जो दिव्य प्रभुत्व की छाप धारण करता है और एक चेहरा जो दिव्य दयालुता को दर्शाता है, जिसमें ईश्वर के सात प्रमुख गुण शामिल हैं। ६

---

4 अत-तिर्मिधि, सुनान, "दावत" 123; इमाम अल-मलिक, अल-मुवत्ता', "अल-कुरान" 32. (ट्र.)

5 जलालुद-दीन अर-रूमी, मौलाना (मेवलाना/रूमी) (1207-1273): इस्लामी सूफीवाद के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक। वे चक्करदार दरवेशों के मौलवी (मेवलवी) संप्रदाय के संस्थापक थे, और अपने मथनवी के लिए प्रसिद्ध थे, जो छह खंडों में धार्मिक जीवन का एक महाकाव्य है। पश्चिमी पाठकों के लिए, रूमी सूफीवाद के कवियों में एक शक्तिशाली आवाज हैं। (अनुवाद)

6 वे हैं जीवन, ज्ञान, श्रवण, दृष्टि, शक्ति, इच्छा और वाणी। (ट्र.)

यह अस्तित्व दिव्य नामों के प्रकटीकरण को संकेन्द्रित रूप में प्रदर्शित करता है, तथा इसकी पहचान उस एक के द्वारा स्थापित होती है, जिसे इन शब्दों से संबोधित किया जाता है: केवल तेरी ही हम आराधना करते हैं और केवल तुझसे ही सहायता मांगते हैं (1:5)।

हालाँकि, यदि हम प्रत्येक जीव को दिव्य एकता के परिप्रेक्ष्य से नहीं देखते हैं, तो उसका वास्तविक व्यक्तित्व, व्यक्तित्व, चेहरा और पहचान दृष्टि से ओझल हो जाती है और अंततः अदृश्य हो जाती है।

साथ ही, इन जीवित प्राणियों के बारे में हमारी समझ से यह भी स्पष्ट है कि उनका निर्माता उन्हें देखता है, उन्हें जानता है, उन्हें सुनता है, तथा उनके साथ अपनी इच्छानुसार व्यवहार करता है।

दूसरे शब्दों में, जीवित प्राणियों की रचना और बनावट, खास तौर पर एक आस्तिक की दृष्टि में, उस एक की ओर संकेत करती है जिसके पास शक्ति और इच्छा है, जो सुनता है, देखता है और जानता है। यह खास तौर पर मानव जाति की रचना और बनावट के पीछे है कि उस एक के अस्तित्व को विश्वास और ईश्वरीय एकता के रहस्य के माध्यम से देखा जाता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज्ञान, शक्ति, जीवन, श्रवण और दृष्टि जैसे ईश्वरीय गुणों की अभिव्यक्ति, किसी भी अन्य सृजित प्राणियों की तुलना में मानव जाति में अधिक दिखाई देती है। मनुष्य उन गुणों के नमूनों के माध्यम से ईश्वरीय गुणों का संकेत देते हैं जो उनके अस्तित्व में प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, यह तथ्य कि किसी व्यक्ति के पास आंखें हैं, यह दर्शाता है कि जो आंखें देता है, वह दोनों आंखों को देखता है और जो आंखें (देखेगी) या अनुभव करेंगी, और फिर वह उन्हें प्रदान करता है। वास्तव में, एक ऑप्टिशियन जो आपको कुछ खास चश्मा पहनने की सलाह देता है, वह आपको चश्मा निर्धारित करने से पहले जानता है कि आपको किस तरह के चश्मे की आवश्यकता है। इसी तरह, जिसने इंसानों को कान दिए हैं, वह वही सुनता है जो वे कान सुनेंगे, और फिर वह उन्हें बनाता है और उन्हें अपनी रचना पर अता करता है। आप इसी तरह की तुलना सृष्टिकर्ता के अन्य गुणों और उन्हें दर्शाने वाली मानवीय क्षमताओं के लिए कर सकते हैं।

इसके अलावा, मनुष्य ईश्वरीय नामों के प्रभाव और अभिव्यक्ति को धारण करते हैं: इनके माध्यम से, लोग नामों के अस्तित्व और उनकी अभिव्यक्तियों के साक्षी होते हैं। फिर, मनुष्य की जन्मजात कमजोरी, नपुंसकता, गरीबी और अज्ञानता के माध्यम से, लोग पूरी तरह से अलग तरीके से दर्पण के रूप में कार्य करते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि, अपनी जन्मजात कमजोरी और गरीबी के माध्यम से, हम उस एक की शक्ति, ज्ञान, इच्छा और पूर्णता के अन्य गुणों के साक्षी होते हैं, जो हमारी नपुंसकता पर दया करते हैं और हमारी सहायता के लिए आते हैं। इस प्रकार, यह इसलिए है क्योंकि दिव्य एकता के कारण एक हजार और एक दिव्य नाम केंद्रित हैं और उन छोटे-छोटे संदेशों में स्पष्ट रूप से पता लगाए जा सकते हैं जिन्हें जीवित प्राणी कहा जाता है, जो बहुलता के क्षेत्र के सबसे दूर के क्षेत्रों में मौजूद हैं, सर्वज्ञ निर्माता बड़े पैमाने पर जीवित प्राणियों की प्रतियों को गुणा करता है। वह बहुत अधिक गुणा करता है

विशेष रूप से छोटे जीवों की प्रजातियों की प्रतिलिपियाँ बड़े पैमाने पर एकत्रित करता है, और उन्हें हर जगह प्रसारित करता है।

आगे एक व्यक्तिगत अनुभव का विवरण दिया गया है जिसने मुझे प्रेरित किया
मुझे इस प्रथम फल की सच्चाई से परिचित कराओ:

दया, कोमलता और करुणा की भावनाओं के कारण, मैं जीवित प्राणियों की दुर्दशा से बहुत अधिक प्रभावित हुआ, और इनमें से, बुद्धिमान प्राणियों और खुद मानव जाति की दुर्दशा, विशेष रूप से उत्पीड़ित और विपत्तिग्रस्त लोगों की दुर्दशा। मैंने अपने दिल और आत्मा की गहराई से पुकारा: "ये एकसमान 'कानून' जो दुनिया पर हावी हैं, इन शक्तिहीन लोगों की पीड़ा को नहीं सुन सकते हैं; इसी तरह, दुनिया भर में फैले ये बहरे तत्व भी उन्हें नहीं सुनते हैं। क्या कोई ऐसा नहीं है जो उन पर दया करे और उन्हें उनकी दयनीय स्थिति से बाहर निकाले?"

मेरा हृदय भी पूरी ताकत से चिल्ला रहा था: "ये सुंदर प्राणी, ये बहुमूल्य संपत्तियाँ, ये कृतज्ञ और विनती करने वाले मित्र - क्या इनका कोई स्वामी, कोई मालिक, कोई सच्चा मित्र नहीं है जो इनका रक्षक होगा और इनका ख्याल रखेगा?"

जो संतोषजनक उत्तर आया, और जो मेरी आत्मा की चीखों और मेरे दिल की चीखों को शांत करने के लिए पर्याप्त था, वह यह था: कुरान और विश्वास की रोशनी के लिए धन्यवाद, मुझे एहसास हुआ कि ईश्वरीय एकता के कारण, महामहिम के सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय अस्तित्व के पास, उन सार्वभौमिक कानूनों के दायरे से बाहर, विशेष अनुग्रह और विशेष सहायता है जो वह अपने उन प्यारे प्राणियों की ओर निर्देशित करता है जो उसके सार्वभौमिक कानूनों के दबाव में रोते और पीड़ित होते हैं। अपने विशेष आधिपत्य के माध्यम से, वह ब्रह्मांड में प्रत्येक प्राणी का स्वामित्व, नियंत्रण, सुरक्षा और रखरखाव करता है: वह स्वयं हर चीज को व्यक्तिगत रूप से निर्देशित करता है और प्रत्येक प्राणी की समस्याओं को सुनता है। वह हर चीज का सच्चा मालिक, स्वामी और रक्षक है। जैसे-जैसे मुझे यह समझ में आया, मेरी अंतहीन निराशा असीम खुशी में बदल गई।

मेरे विचार में, ऐसे सर्व-महान गुरु से अभिन्न रूप से जुड़े होने और उनके पूर्ण स्वामित्व में होने के कारण, प्रत्येक जीव का मूल्य और महत्व हजार गुना बढ़ गया है।

हर कोई अपने मालिक के सम्मान, प्रसिद्धि और पद पर गर्व करता है और ऐसा करके एक तरह की गरिमा प्राप्त करता है। इसे देखते हुए, यह स्पष्ट है कि विश्वास के प्रकाश के कारण इस रिश्ते (प्राणियों के अपने निर्माता और मालिक के साथ) के मजबूत होने के माध्यम से, एक साधारण चींटी फिरौन को हराने में सक्षम थी। इसके अलावा, यह एक हजार लापरवाह फिरौन के गर्व को महसूस करने में सक्षम थी, जो सभी के सभी थे।

जिन्होंने खुद को स्वतंत्र और अपने भाग्य का प्रभारी माना, उन्हें अपने हाल पर छोड़ दिया, और जिन्होंने अपने पूर्वजों और मिस्र की भूमि पर अपने प्रभुत्व पर गर्व किया - जो कब्र के द्वार पर समाप्त हो गया। इसी तरह, निम-रोद के अहंकारी अभिमान के सामने, जो उसकी मृत्यु की पीड़ा के दौरान पीड़ा और शर्म में बदल गया, एक मक्खी अपने मालिक और स्वामी के साथ अपने रिश्ते की गरिमा को प्रदर्शित करने में सक्षम थी, इस प्रकार निम्रोद के गर्व को कम कर दिया।

आयत: निश्चय ही ईश्वर के साथ साझी ठहराना बहुत बड़ा पाप है

(31:13) इस बात की पुष्टि करता है कि अल्लाह के साथ साझी बनाना एक बहुत ही भयानक और घोर अपराध है। अल्लाह के साथ साझी बनाना इतना जघन्य अपराध है कि यह सभी प्राणियों के अधिकारों का उल्लंघन करता है और उनके सम्मान और गरिमा को ठेस पहुँचाता है। वास्तव में, यह एक ऐसा अपराध है जिसे केवल जहन्नम ही साफ़ कर सकता है।

ईश्वरीय एकता का दूसरा फल और उसमें विश्वास

जबकि पहला फल ब्रह्माण्ड के सर्व-पवित्र सत्ता और सृष्टिकर्ता से संबंधित है, यह दूसरा फल स्वयं ब्रह्माण्ड और उसकी मूल प्रकृति से संबंधित है।

ईश्वर के एकमात्र सृष्टिकर्ता और ब्रह्मांड के स्वामी होने तथा इस महानतम सत्य की पुष्टि के कारण ही ब्रह्मांड की पूर्णता का एहसास होता है; प्राणियों के श्रेष्ठ कर्तव्य समझ में आते हैं; तथा प्राणियों के निर्माण के पीछे छिपे उद्देश्यों का एहसास होता है। इसी कारण से प्राणियों का मूल्य ज्ञात होता है; तथा सभी विद्यमान प्राणियों के अस्तित्व और जीवन के पीछे निहित दिव्य उद्देश्य दृष्टिगोचर होते हैं; तथा सजीव और चेतन प्राणियों के निर्माण में निहित बुद्धि स्पष्ट होती है; तथा उग्र तूफानों और उथल-पुथल के क्रोधित, कटु चेहरों के पीछे छिपी दया और बुद्धि के मुस्कुराते, सुंदर चेहरे दिखाई देते हैं। और यह ज्ञात है कि जो प्राणी मृत्यु और क्षय के पर्दे के पीछे लुप्त हो जाते हैं, वे दृश्य जगत में अपने अस्तित्व और जीवन के परिणामों की अनेक छापें छोड़ जाते हैं, जैसे कि उनकी पहचान, प्रकृति, आत्मा और महिमा।

ईश्वर के एकमात्र सृष्टिकर्ता और ब्रह्मांड के स्वामी होने तथा इस महानतम सत्य की पुष्टि के कारण ही यह ज्ञात है कि संपूर्ण ब्रह्मांड उस शाश्वत चाहने वाले की एक सार्थक पुस्तक है; तथा पृथ्वी की गहराई से लेकर स्वर्ग की सुदूर सीमाओं तक सभी प्राणी, उस सर्व-महिमावान द्वारा लिखे गए संदेशों का एक चमत्कारी संग्रह हैं। इसी कारण से जीवों की सभी प्रजातियाँ प्रकट होती हैं।

भगवान की एक शानदार, सुव्यवस्थित सेना के रूप में, और सभी जीवों की जनजातियाँ, सूक्ष्म जीवों और चींटियों से लेकर गैंडे, चील और ग्रहों तक, पूर्व-शाश्वत प्रभु के कर्तव्यपरायण अधिकारी के रूप में देखी जाती हैं। यह इस कारण से है कि प्रत्येक चीज़ अपने स्वयं के व्यक्तिगत मूल्य से हज़ारों गुना अधिक मूल्य प्राप्त करती है, उस प्रभु के साथ उसके संबंध और इस तथ्य के कारण कि वह उसके लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करती है। यह इस कारण से है कि कोई भी व्यक्ति अपने स्वयं के व्यक्तिगत मूल्य से हज़ारों गुना अधिक मूल्य प्राप्त करता है, क्योंकि वह उस प्रभु के साथ संबंध रखता है और इस तथ्य के कारण कि वह उसके लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता ...

ऐसे रहस्यमय प्रश्नों के उत्तर खोजने में सक्षम है जैसे: "प्राणियों की ये विशाल बाढ़ और प्राणियों के ये अंतहीन कारवां कहाँ से आए?"

वे कहाँ जा रहे हैं? वे यहाँ क्यों आए हैं? और वे क्या कर रहे हैं, वे किस उद्देश्य की पूर्ति कर रहे हैं?" यदि ईश्वरीय एकता न होती, तो ब्रह्मांड की ये श्रेष्ठतम पूर्णताएँ लुप्त हो जातीं, और ये महान, पवित्र सत्य अपने विपरीत में परिवर्तित हो जाते।

ऐसा इसलिए है क्योंकि अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदार बनाने के अपराध सृष्टि की संपूर्ण पूर्णता और उसके अपरिवर्तनीय अधिकारों और पवित्र सत्यों के विरुद्ध आक्रमण के कार्य हैं, जिसके कारण ब्रह्मांड अविश्वासियों और ईश्वर के साथ साझीदार बनाने वालों से क्रोधित हो जाता है। स्वर्ग और पृथ्वी का क्रोध उन पर उतरता है और सार्वभौमिक तत्व उन्हें नष्ट करने के लिए एकजुट हो जाते हैं, जैसा कि उन्होंने नूह के लोगों को डुबो कर किया, 'आद और समूद7 को नष्ट कर दिया, और फिरौन को मिटा दिया, जिनमें से सभी ईश्वर के साथ साझीदार बनाने के दोषी थे। जैसा कि आयत में कहा गया है, क्रोध से लगभग फटने वाला (67:8), नरक अविश्वासियों और ईश्वर के साथ साझीदार बनाने वालों पर इस तरह से क्रोध और धुआँ उगलता है कि यह लगभग फट जाता है। ईश्वर के साथ साझीदार बनाना ब्रह्मांड का बहुत बड़ा अपमान है और इसके खिलाफ एक भयानक आक्रमण है। ब्रह्मांड के पवित्र कर्तव्यों को नकारकर और सृष्टि में ज्ञान के उदाहरणों को नीचा दिखाकर, कोई व्यक्ति ब्रह्मांड के सम्मान का घोर अपमान करता है। इसे स्पष्ट करने के लिए, हम हजारों में से एक उदाहरण का उल्लेख करेंगे।

उदाहरण के लिए, ईश्वरीय एकता और सृष्टि को प्रदान किए गए एकीकृत चरित्र के कारण, ब्रह्मांड एक विशाल, भौतिक देवदूत जैसा दिखता है।

इस देवदूत के पास जीवों की जितनी प्रजातियाँ हैं, उतने ही सिर हैं और प्रत्येक सिर में उन प्रजातियों के सदस्यों की संख्या के अनुसार मुँह हैं। प्रत्येक मुँह में उन सदस्यों के अंगों, भागों और कोशिकाओं की संख्या जितनी जीभें हैं। इसलिए, ब्रह्मांड एक अद्भुत रचना की तरह है-

---

7 'आद' पैगम्बर हूद के लोग थे और दक्षिणी अरब में रहते थे, और समूद पैगम्बर सालेह के लोग थे, जो उत्तर-पश्चिम अरब में रहते थे। (ट्र.)

जो अपने निर्माता की महिमा करता है और असंख्य भाषाओं में उसे सर्व-पवित्र घोषित करता है, इस प्रकार खुद को प्रधान देवदूत इसराफिल की तरह पूजा में संलग्न करता है। ब्रह्मांड भी एक कृषि योग्य क्षेत्र की तरह है जो परलोक के क्षेत्रों और महलों के लिए प्रचुर मात्रा में फसलें पैदा करता है; यह एक कारखाने की तरह है जो आपूर्ति का उत्पादन करता है - उदाहरण के लिए, मानव कर्म - जिसे खुशी के क्षेत्र के विभिन्न स्तरों पर भेजा जाना है। यह हजारों लेंसों वाले एक मूवी-कैमरे की तरह है, जो इस दुनिया में बिना रुके तस्वीरें खींचता है ताकि परलोक के लोग, विशेष रूप से स्वर्ग के लोग देख सकें। अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार इस वास्तव में अद्भुत, पूरी तरह से आज्ञाकारी और जीवित भौतिक देवदूत को घटनाओं की उथल-पुथल, परिवर्तन के तूफानों और अस्तित्वहीनता के अंधेरे में घूमती हुई एक बेजान, सड़ती हुई, व्यर्थ, नाशवान, अर्थहीन और दयनीय चीजों के संग्रह के रूप में चित्रित करते हैं। साथ ही, ईश्वर के साथ भागीदार बनने से यह अद्भुत, पूरी तरह से व्यवस्थित और सबसे लाभदायक कारखाना एक बेकार, अव्यवस्थित संयोग का खिलौना बन जाता है जो कुछ भी पैदा नहीं करता और जिसका कोई काम नहीं है। यह इसे बहरी प्रकृति और अंधी शक्ति का खेल का मैदान, सभी सचेत प्राणियों के लिए शोक का स्थान और सभी जीवित प्राणियों का वधगृह के रूप में देखता और दिखाता है।

इस प्रकार, आयत के अनुसार, निश्चय ही ईश्वर के साथ साझी ठहराना बहुत बड़ा पाप है (31:13, ईश्वर के साथ साझी ठहराना, एक बुराई होने के बावजूद, इतने सारे भयानक अपराधों का कारण और स्रोत है कि यह उन लोगों को नरक में असीम यातना के योग्य बनाता है।

मुझे इस दूसरे फल तक ले जाने वाली एक अजीब सी अनुभूति और अनुभव था।
एक बार, जब मैं वसंत के आगमन का अवलोकन कर रहा था, मैंने जीवों को देखा—
विशेष रूप से, जीवित लोग, और विशेष रूप से इनमें से सबसे छोटे - अस्तित्व के क्षेत्र में कारवां के बाद कारवां में प्रवेश करते हैं, और पुनरुत्थान के सैकड़ों हजारों उदाहरणों को प्रदर्शित करते हुए एक बहती धारा में एक छोटे से प्रकटन के बाद इसे छोड़ देते हैं।

इस निरंतर गतिविधि में मृत्यु और क्षय के दृश्य इतने दयनीय थे कि वे मुझे रुला गए। जितना अधिक मैं उन प्यारे जीवों की मृत्यु को देखता, उतना ही मेरा दिल दुखता। दया और खेद से आहें भरते हुए, मैंने पाया कि मेरी आत्मा गहरी उथल-पुथल में है, क्योंकि इस तरह से समाप्त हो चुका जीवन मुझे मृत्यु से भी बदतर पीड़ा लग रहा था।

वनस्पति और प्राणी जगत के सबसे सुन्दर और बहुमूल्य कला से परिपूर्ण जीव, क्षण भर के लिए ब्रह्माण्ड की इस प्रदर्शनी को देखने के लिए अपनी आँखें खोलते और फिर लुप्त हो जाते। जितना अधिक मैं देखता,

मैंने देखा कि ये प्यारे जीव चीथड़ों की तरह फाड़े जा रहे थे और मेरी आँखों के सामने ही अस्तित्वहीनता के अंधेरे में फेंक दिए जा रहे थे, जैसे कि वे बेकार और उद्देश्यहीन थे, जबकि उन्हें इतने ध्यान और कला के साथ और इतने मूल्यवान रूपों में बनाया, सुसज्जित और पोषित किया गया था। और जब मैंने यह देखा, तो मेरी इंद्रियाँ और क्षमताएँ, जो पूर्णता से मोहित थीं और सुंदरता और मूल्यवान चीजों से उतनी ही गहराई से जुड़ी हुई थीं, चिल्लाने लगीं: "इन पर दया क्यों नहीं की जाती?

यह कितना दयनीय है! इस भयावह घटना चक्र में क्षय और मृत्यु कहाँ से आती है, जो इन बेचारे प्राणियों पर आक्रमण करती है?"

जैसे ही मैंने इन प्राणियों के जीवन की घटनाओं के दर्दनाक तरीके के कारण भाग्य के बारे में कड़वी शिकायतें शुरू कीं, जो कुरान की रोशनी और विश्वास के रहस्य से संकेतित हैं, ईश्वरीय एकता सर्व-दयालु की शुद्ध कृपा के रूप में मेरी सहायता के लिए आई। इसने अंधकार की उन सभी परतों को रोशन कर दिया, मेरे विलाप को खुशी के दावों में बदल दिया और मेरी दयनीय शिकायतों को विस्मय में बदल दिया, जैसे कि "ईश्वर ने क्या चमत्कार किया है!" और "ईश्वर कितना धन्य है!" इसने मुझे यह घोषणा करने के लिए प्रेरित किया, "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर की सभी प्रशंसा और आभार!" क्योंकि सृष्टि में प्रकट एकता ने मुझे दिखाया कि ईश्वरीय एकता प्रत्येक सृजित प्राणी - और विशेष रूप से प्रत्येक जीवित प्राणी - को सामान्य लाभ प्रदान करती है और काफी महत्वपूर्ण परिणाम देती है।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक जीवित प्राणी - उदाहरण के लिए यह अलंकृत फूल, या वह मीठा उत्पादन करने वाली मधुमक्खी, एक ऐसा सार्थक दिव्य स्तुति है कि असंख्य सचेत प्राणी इसे बड़े आनंद के साथ अध्ययन करते हैं। यह शक्ति का इतना अनमोल चमत्कार और बुद्धि की इतनी महान घोषणा है कि यह असंख्य प्रशंसात्मक दर्शकों के सामने निर्माता की कला को सबसे आकर्षक तरीके से प्रदर्शित करता है।

इसकी रचना का एक और अति उत्तम परिणाम यह है कि यह स्वयं को उस सर्व-महान् सृजक की दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत करता है, या उसकी कृपादृष्टि प्राप्त करता है, जो स्वयं अपनी कला का अवलोकन करना चाहता है, अपनी रचना की कृपा और सौंदर्य को देखना चाहता है, तथा असंख्य सृष्टि में अपने नामों की अभिव्यक्ति की सुन्दरता को देखना चाहता है।

दर्पण जो उसकी रचनाएँ हैं।

इसके अलावा, जैसा कि चौबीसवें पत्र[8] में बताया गया है, प्रत्येक प्राणी की रचना का यह एक और उच्च कर्तव्य है कि वह पाँच तरीकों से ईश्वर की प्रभुता की अभिव्यक्ति और उसकी महिमा का प्रदर्शन करे।

---

8 देखें द लेटर्स, हुसेन अकार्सू द्वारा अनुवादित, द लाइट, 2007.

दिव्य पूर्णताएँ, जो ब्रह्माण्ड में अनंत क्रियाशीलता को आवश्यक बनाती हैं।
ऐसे परिणाम देने और ऐसे उद्देश्यों और लाभों की पूर्ति करने के अलावा, प्रत्येक जीवित प्राणी जिसके पास आत्मा होती है (पर बुद्धि नहीं होती) जब वह चला जाता है तो उस आत्मा को इस दृश्यमान क्षेत्र में पीछे छोड़ जाता है। और अनगिनत यादों और अन्य "संरक्षित पट्टिकाओं" में वह अपना रूप और पहचान छोड़ जाता है, और अपने बीजों या अंडों में वह अपने स्वभाव के नियम और अपने जीवन की भावी प्रतिकृति के लिए एक तरह की योजना छोड़ जाता है। और अदृश्य जगत और दिव्य नामों के क्षेत्र में वह अपनी पूर्णता और सुंदरता को छोड़ जाता है जिसे उसने प्रतिबिम्बित किया है, मृत्यु के पर्दे से गुजरने और एक स्पष्ट मृत्यु के माध्यम से सांसारिक आँखों से छिप जाने से पहले, जो वास्तव में, अपने कर्तव्यों से एक आनंदमय निर्वहन है। मैंने इस वास्तविकता को महसूस किया और कहा, "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान के लिए हैं!"

ये सच्चे, गहरे जड़ वाले, बेहद शक्तिशाली, दोषरहित और असीम रूप से शानदार कृपा और सौंदर्य के उदाहरण, जो ब्रह्मांड के सभी स्तरों और सृष्टि की सभी प्रजातियों में देखे जा सकते हैं, स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं कि अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ने से चित्रित अत्यंत बदसूरत, कठोर, घृणित और दयनीय तस्वीर असंभव और भ्रामक है। क्योंकि ऐसी भयानक कुरूपता ऐसी वास्तविक कृपा और सौंदर्य के पर्दे के नीचे छिपी नहीं हो सकती: अगर यह वास्तव में मौजूद है, तो वह सच्ची कृपा और सौंदर्य झूठी, निराधार, व्यर्थ और भ्रामक होगी। इसका मतलब यह है कि ईश्वर के साथ साझीदारों का संबंध वास्तविकता पर आधारित नहीं है: इसका रास्ता बंद हो गया है, यह कीचड़ में फंस गया है, और यह केवल एक दावा या अनुमान है जिसे सत्यापित करना असंभव है। विश्वास की इस स्पष्ट रूप से देखी जाने वाली सच्चाई को रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों में कई सबूतों के साथ स्पष्ट किया गया है।

तीसरा फल

यह फल सचेत प्राणियों से संबंधित है, और विशेष रूप से मानव जाति से। ईश्वरीय एकता और उसमें विश्वास के माध्यम से ही मनुष्य सृष्टि का सबसे मूल्यवान फल बन सकता है, प्राणियों में सबसे प्रिय और सबसे कोमल, जीवों में सबसे सुखी और सबसे भाग्यशाली, और ब्रह्मांड के निर्माता का अभिभाषक और मित्र, और वे सबसे श्रेष्ठ पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं। वास्तव में, सभी मानवीय पूर्णताएँ और उनके उच्च लक्ष्य केवल ईश्वरीय एकता के माध्यम से ही अर्थ पाते हैं और केवल इसकी पुष्टि के माध्यम से ही प्राप्त किए जा सकते हैं। असंभव मान लें, यदि ईश्वर सृष्टि का एकमात्र निर्माता, संप्रभु और शासक न होता, तो मनुष्य सबसे दुखी होता

और सबसे दयनीय प्राणी, जानवरों में सबसे गरीब, और सभी सचेत प्राणियों में सबसे अधिक दुखी, शोकाकुल और पीड़ित। अनंत नपुंसकता, अनगिनत प्रतिकूलताओं, असीम इच्छाओं और अनगिनत जरूरतों के साथ, मनुष्य को जन्मजात इतनी बड़ी विविधता वाली क्षमताओं और इंद्रियों से सुसज्जित किया गया है कि वे असंख्य प्रकार के दर्द और अनुभव और अनगिनत प्रकार के सुखों का अनुभव करते हैं। इसके अलावा, उनके पास ऐसे लक्ष्य और इच्छाएँ हैं कि जो व्यक्ति पूरे ब्रह्मांड पर शासन नहीं करता है, वह इन लक्ष्यों या इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता है।

उदाहरण के लिए, मनुष्य में अमरता की तीव्र इच्छा होती है।
केवल वही व्यक्ति इस इच्छा को पूरा कर सकता है जिसके पास पूरे ब्रह्मांड पर एक महल की तरह शक्ति और नियंत्रण है - जो इस दुनिया का दरवाजा बंद कर सकता है और परलोक का द्वार खोल सकता है, जैसे एक कमरे का दरवाजा बंद करके दूसरे कमरे का दरवाजा खोलना। अमरता की लालसा के साथ-साथ, मनुष्य के पास हज़ारों अन्य इच्छाएँ हैं - कुछ सकारात्मक और कुछ नकारात्मक - जो पूरे विश्व में फैली हुई हैं और अनंत काल तक फैली हुई हैं। इसलिए केवल वही एक, अद्वितीय, जिसकी पूर्ण एकता ने पूरे ब्रह्मांड को एक एकीकृत इकाई बना दिया है और जो इसे पूरी तरह से अपनी मुट्ठी में रखता है, इन इच्छाओं का जवाब दे सकता है और मानवता के दो भयानक घावों को ठीक कर सकता है - उनकी जन्मजात नपुंसकता और अभाव।

इसके अलावा, मनुष्य के हृदय की संतुष्टि और सुख से संबंधित ऐसी गुप्त और सूक्ष्म इच्छाएँ होती हैं, और अपनी आत्मा की खुशी और अमरता के लिए ऐसी विशाल, व्यापक और सार्वभौमिक आकांक्षाएँ होती हैं कि केवल वही व्यक्ति जो उनके हृदय के सबसे गुप्त और अगोचर पर्दों को देखता है और इसके प्रति उदासीन नहीं रहता है, और हृदय की सबसे अश्रव्य गुप्त आवाज़ों को सुनता है और उन्हें बिना उत्तर दिए नहीं छोड़ता है, वह इन इच्छाओं को पूरा करने और इन आकांक्षाओं को पूरा करने में सक्षम है। वह एक ऐसा भी शक्तिशाली होना चाहिए जो आकाश और पृथ्वी को अपने आदेश के अधीन कर सके, जैसे कि वे आज्ञाकारी सैनिक हों, और उन्हें सार्वभौमिक कार्यों के निष्पादन में लगा सके।

इसके अलावा, ईश्वरीय एकता और इस महानतम सत्य की पुष्टि के कारण, मानवता के सभी अंग और इंद्रियाँ अत्यधिक उच्च मूल्य प्राप्त करती हैं, जबकि अविश्वास और ईश्वर के साथ भागीदार बनना उन्हें असीम रूप से निम्न स्तर तक कम कर देता है। उदाहरण के लिए, मानवता की सबसे मूल्यवान क्षमता तर्क है। जब ईश्वरीय एकता की पुष्टि होती है, तो तर्क न केवल ईश्वर के पवित्र खजाने की एक शानदार कुंजी बन जाता है, बल्कि हजारों खजाने की भी कुंजी बन जाता है।

ब्रह्मांड। हालाँकि, अगर तर्क अविश्वास और ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने के कारण गलत हो जाता है, तो यह पीड़ा का एक अशुभ साधन बन जाता है जो सिर को अतीत की सभी गंभीर पीड़ाओं और भविष्य के सभी भयानक भय से भर देता है।

उदाहरण के लिए, करुणा मानवता की सबसे बेहतरीन और सबसे प्यारी विशेषता है। यदि ईश्वरीय एकता का अर्थ और परिणाम इसकी सहायता के लिए नहीं आते हैं, तो यह महसूस करने की क्षमता दर्द और पीड़ा का एक ज्वलंत स्रोत बन जाती है जो इसके मालिक को दुख में डाल देती है। एक माँ जिसने अपने बच्चे को खो दिया है, लेकिन सच्चाई से अनजान है, यह मानती है कि उसने उसे हमेशा के लिए खो दिया है, वह इस यातनापूर्ण दर्द को पूरी तरह से महसूस करती है।

इसी तरह, अगर ईश्वरीय एकता का अर्थ और परिणाम प्रेम की सहायता के लिए आता है, जो मानवीय भावनाओं में सबसे मधुर, सबसे सुखद और सबसे कीमती है, तो यह छोटी मानवता को ब्रह्मांड का विस्तार और चौड़ाई प्रदान करता है, और उन्हें प्राणियों का कोमल शासक बनाता है। हालाँकि, अगर इंसान अविश्वास और ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने के गड्ढे में गिर जाता है, तो - ईश्वर न करे - प्रेम इतना भयानक बोझ बन जाता है कि जब वे अपने प्रियजनों से अलग हो जाते हैं, तो उनका दिल टूट जाता है, क्योंकि वे इन गलत मान्यताओं से आश्वस्त होते हैं कि मृत्यु के माध्यम से अलगाव शाश्वत है। हालाँकि, व्यर्थ मनोरंजन असावधानी का कारण बनता है और इंद्रियों को सुन्न कर देता है, जिससे मानवता को नुकसान की भावनाओं से राहत मिलती है।

जब आप इन तीन उदाहरणों के साथ सैकड़ों अन्य मानवीय क्षमताओं और इंद्रियों की तुलना करेंगे, तो आप समझ जाएँगे कि किस हद तक ईश्वरीय एकता और इसकी पुष्टि मनुष्य को पूर्णता और पूर्णता की ओर ले जाने में सक्षम है। इस तीसरे फल के बारे में रिसाले -ए-नूर के शायद बीस ग्रंथों में भी विस्तार से बताया गया है।

मुझे इस फल की ओर निम्नलिखित भावना ने आकर्षित किया:

मैं एक ऊंचे पहाड़ की चोटी पर खड़ा था। एक आध्यात्मिक जागृति के दौरान जो मेरी असावधानी को दूर करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली थी, मृत्यु और कब्र मुझे उनकी व्यथापूर्ण वास्तविकता में दिखाई दिए, साथ ही नश्वरता और क्षय के दर्दनाक दृश्य भी। हर किसी की तरह, मैंने पाया कि अमरता के लिए मेरी सहज इच्छा उबल रही थी और मृत्यु के खिलाफ विद्रोह कर रही थी। मेरे स्वभाव में कोमलता और करुणा भी पूर्णता के लोगों, विशेष रूप से पैगंबरों, संतों और शुद्ध विद्वानों के कब्र में भेजे जाने के खिलाफ विद्रोह में उभरी, जिनके लिए मैं बहुत प्यार और प्रशंसा महसूस करता हूं। मैंने मदद की तलाश में छह दिशाओं में से प्रत्येक में देखा, लेकिन कोई समाधान नहीं मिला-

न तो कोई मदद और न ही कोई मदद। अतीत मुझे एक विशाल कब्र की तरह लग रहा था; भविष्य अंधकार के अलावा कुछ नहीं लग रहा था। मेरे ऊपर, मैंने केवल भय देखा; मेरे पैरों के नीचे, और मेरे दाएं और बाएं, मैं केवल दुखद स्थितियों और कई हानिकारक चीजों के हमले को देख सकता था। अचानक, दिव्य एकता मेरी मदद के लिए आई, पर्दा हटाकर वास्तविकता का चेहरा सामने लाया।

“देखो!” उसने कहा।

सबसे पहले मैंने मौत का सामना किया, जिसने मुझे डरा दिया। मैंने देखा कि आस्था रखने वालों के लिए, मौत सिर्फ़ उनके कर्तव्यों से मुक्ति है: उनके निधन की नियत घड़ी उनके डिस्चार्ज पेपर्स हैं। मृत्यु सिर्फ़ निवास का परिवर्तन है, अनंत जीवन का परिचय है, और उस पर खुलने वाला द्वार है। मैंने देखा कि मरना इस दुनिया की कैद से मुक्त होना और जन्नत के बागों में उड़ जाना है। मृत्यु के बाद, एक आस्तिक अपनी सेवा के लिए पारिश्रमिक पाने के लिए दयालु की उपस्थिति में प्रवेश करता है। मृत्यु आनंद के क्षेत्र में आगे बढ़ने का निमंत्रण है। इसे पूरी तरह से समझते हुए, मैं मृत्यु से प्यार करने लगा।

फिर मैंने क्षणभंगुरता और क्षय को देखा, और मैंने देखा कि वे, फिल्म स्क्रीन पर चित्रों या सूरज के नीचे बहते पानी पर बुलबुले की तरह, नवीनीकरण और प्रतिस्थापन का एक सुखद रूप हैं। सर्व-सुंदर नामों की उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों को ताज़ा करने के लिए अदृश्य दुनिया से आकर, वे दृश्यमान दुनिया में एक भ्रमण, एक दौरा करते हैं, जिसमें कुछ कर्तव्यों का पालन करना होता है। वे दिव्य आधिपत्य की कृपा और सुंदरता की एक बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण अभिव्यक्ति भी बनाते हैं, शाश्वत दिव्य सौंदर्य को प्रतिबिंबित करने का एक कार्य। यह मैं निश्चित रूप से जानता था।

फिर मैंने छहों दिशाओं में देखा और सत्य के कारण
दिव्य एकता, अब मैंने उन्हें इतना उज्ज्वल और सुंदर देखा कि वे आँखों को चकाचौंध कर रहे थे। अतीत अब एक विशाल कब्र नहीं था; बल्कि, भविष्य में तब्दील हो जाने के बाद, इसमें दोस्तों की हज़ारों प्रबुद्ध सभाएँ और हज़ारों प्रबुद्ध तमाशे शामिल थे। मैंने ऐसे हज़ारों मामलों के असली चेहरे देखे और मैंने देखा कि वे खुशी और आभार के अलावा कुछ नहीं देते।

मैंने इस तीसरे फल के बारे में अपनी भावनाओं और अनुभवों को प्रमाणों के साथ, विशेष और सार्वभौमिक रूप से, रिसाले-ए-नूर के लगभग चालीस ग्रंथों में वर्णित किया है। उन्हें छब्बीसवीं झलक के तेरह “आशाओं” में विशेष स्पष्टता के साथ समझाया गया है, जो “बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना का ग्रंथ” है। इसलिए, यहाँ मैंने इस बहुत लंबी कहानी को छोटा कर दिया है।

दूसरा स्टेशन

ऐसे अनगिनत तथ्य हैं जो ईश्वरीय एकता को अनिवार्य बताते हैं और इसे संदेह से परे साबित करते हैं। वे ईश्वर के साथ साझेदारों के संबंध को भी खारिज करते हैं। चूंकि इनमें से सैकड़ों, और शायद हज़ारों, को रिसाले-ए-नूर में विस्तार से दर्शाया गया है, इसलिए यहाँ उनमें से केवल तीन को संक्षेप में समझाया जाएगा।

पहला तथ्य जो ईश्वरीय एकता को आवश्यक और प्रमाणित करता है

जैसा कि ब्रह्मांड में देखे गए निर्विवाद रूप से बुद्धिमान कार्यों और अंतर्दृष्टिपूर्ण नियंत्रण और शासन द्वारा प्रमाणित किया गया है, प्राणियों को एक सर्वज्ञ और पूर्ण संप्रभु के सर्वव्यापी गुणों और नामों के माध्यम से अस्तित्व में लाया जाता है, विशेष रूप से उनके असीम ज्ञान और शक्ति सहित।

ब्रह्मांड में होने वाले कार्यों से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उनके निर्माता के पास सार्वभौमिक प्रभुत्व की डिग्री पर संप्रभुता और अधिकार है, और पूर्ण प्रभुत्व और नियंत्रण की डिग्री पर भव्यता और सर्वोच्चता या भव्यता है। उसके पास पूर्ण दिव्यता की डिग्री पर पूर्ण पूर्णता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता भी है, और असीम और अप्रतिबंधित आदेश, शासन और गतिविधि है। उसकी संप्रभुता और भव्यता, उसकी पूर्णता, स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता, किसी भी प्रतिबंध या हस्तक्षेप से उसकी पूर्ण स्वतंत्रता, उसकी अनंतता और असीमता - ये सभी एकता को पूरी तरह से आवश्यक बनाते हैं और इस धारणा को खारिज करते हैं कि उसके कोई सहकर्मी या भागीदार हैं।

रिसाले-ए-नूर में कई जगहों पर संप्रभुता और एकता के अधिकार की गवाही पूरी निश्चितता के साथ साबित हुई है। संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है:

संप्रभुता की अनिवार्य विशेषता स्वतंत्रता और बाहरी हस्तक्षेप की अस्वीकृति है: संप्रभुता के लिए ये आवश्यक हैं। यहां तक कि जब मनुष्य, जो अपनी जन्मजात कमजोरी के कारण सहायता की आवश्यकता रखते हैं, थोड़ी बहुत संप्रभुता का आनंद लेते हैं, तो वे दूसरों के हस्तक्षेप को अस्वीकार करते हैं और ईर्ष्यापूर्वक अपनी स्वतंत्रता की रक्षा करते हैं। यही कारण है कि एक देश में दो राजा, एक प्रांत में दो राज्यपाल, एक शहर में दो महापौर या एक गांव में दो मुखिया नहीं हो सकते। यदि इनमें से कोई भी दो हो, तो इससे अराजकता, अराजकता और विद्रोह फैल जाता है और कानून और व्यवस्था नष्ट हो जाती है। यदि नपुंसक, असहाय मनुष्यों द्वारा प्राप्त की गई थोड़ी सी संप्रभुता इस हद तक दूसरों के हस्तक्षेप और भागीदारी को अस्वीकार करती है, तो निश्चित रूप से एक पूर्ण शक्तिशाली व्यक्ति की संप्रभुता, सभी नपुंसकता से मुक्त, जिसका प्रयोग किया जाता है

पूर्ण प्रभुता के रूप में, किसी भी तरह से दूसरों की साझेदारी या हस्तक्षेप को स्वीकार नहीं करेगा। वास्तव में, यह उन्हें पूरी तरह से अस्वीकार करता है, और पूर्ण प्रभुता वाले लोग क्रोध में आकर अपने दरबार से उन लोगों को निकाल देंगे जो उसके साथ साझीदार ठहराते हैं। यह इस सच्चाई के कारण है कि बुद्धिमान कुरान उन लोगों को कड़ी धमकियाँ देता है जो ईश्वर के साथ साझीदार ठहराते हैं।

जहाँ तक ईश्वरीय एकता की महानता, सर्वोच्चता और ऐश्वर्य की गवाही का सवाल है, इसे भी रिसाले-ए-नूर के दूसरे हिस्सों में स्पष्ट प्रमाणों के साथ प्रदर्शित किया गया है। उनका संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है: उदाहरण के लिए, सूर्य के प्रकाश की तीव्रता और भव्यता उन जगहों पर किसी अन्य प्रकाश की

आवश्यकता नहीं छोड़ती जहाँ वह चमकता और प्रकाशित करता है; न ही यह किसी अन्य प्रकाश को कोई प्रभाव डालने की अनुमति देता है। इसी तरह, ईश्वरीय शक्ति की सर्वोच्चता और भव्यता किसी अन्य शक्ति या ताकत की आवश्यकता नहीं छोड़ती, और उसे सृजन करने या सृजन में कोई हिस्सा लेने की कोई क्षमता नहीं देती। यह विशेष रूप से अकल्पनीय है कि ईश्वरीय शक्ति जीवित और सचेत प्राणियों के निर्माण और नियंत्रण को दूसरों को सौंप दे, जिस पर ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए ईश्वरीय शक्ति के उद्देश्य विशेष रूप से केंद्रित हैं। यह भी किसी भी तरह संभव नहीं है कि ईश्वरीय सत्ता जीवों की विशिष्ट या विशेष अवस्थाओं, परिणामों और फलों को दूसरे हाथों में छोड़ दे, जो कि वे बिंदु हैं जहाँ मानव-जाति के निर्माण और असंख्य प्रकार के वरदानों के आविष्कार के लिए ईश्वरीय उद्देश्य अधिकांशतः प्रकट होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि कोई जीव किसी मामूली बीमारी से ठीक होने के लिए या किसी विशेष जीविका के लिए या किसी तुच्छ मुद्दे के बारे में मार्गदर्शन के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर के अलावा किसी और के प्रति सच्ची कृतज्ञता या प्रशंसा प्रकट करता है, तो यह ईश्वर की महिमा और उनके प्रभुत्व की सर्वोच्चता और उनकी दिव्यता की महिमा और उनके पूर्णतया पूज्य होने की गरिमा का अपमान होगा।

पूर्णता किस तरह ईश्वरीय एकता के अर्थ और परम आवश्यकता की ओर इशारा करती है , इसे रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में भी बहुत स्पष्ट प्रमाणों के साथ समझाया गया है। संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है:

स्वर्ग और पृथ्वी की रचना के लिए स्वयंसिद्ध रूप से अनंत पूर्णता की एक पूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके अलावा, प्रत्येक जीवित प्राणी के अद्भुत शारीरिक तंत्र के लिए भी उसी शक्ति की आवश्यकता होती है। नपुंसकता और प्रतिबंध से मुक्त एक पूर्ण शक्ति की पूर्णता के लिए निश्चित रूप से एकता की आवश्यकता होती है। यदि ऐसा न होता, तो हमें यह मानना पड़ता कि पूर्णता वास्तव में दोषपूर्ण थी, कि अप्रतिबंधित वास्तव में प्रतिबंधित था, कि अनंत वास्तव में सीमित था, कि सबसे मजबूत शक्ति

वास्तव में वह सबसे अधिक शक्तिहीन था, और असीम की भी अब सीमाएं थीं; ये सब बिल्कुल असंभव है।

पूर्ण अप्रतिबंधित-ता, व्यापकता और अनंतता की एकता के साक्ष्यों का संक्षिप्त सारांश, जिसे रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में विस्तृत किया गया है, यह है: ब्रह्मांड में देखे गए प्रत्येक रचनात्मक और प्रशासनिक कार्य, उनके कार्यों, प्रभावों और परिणामों की व्यापक प्रकृति के माध्यम से दिखाते हैं कि वे व्यापक, अप्रतिबंधित और सीमाहीन हैं। अब इस तथ्य को देखते हुए कि भागीदारी और हस्तक्षेप का अर्थ होगा किसी ऐसी चीज़ पर प्रतिबंध लगाना जो अप्रतिबंधित है और किसी ऐसी चीज़ पर सीमा लगाना जो असीम है, इस प्रकार उनकी वास्तविक प्रकृति को नष्ट करना, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि पूर्ण और व्यापक कार्यों में भागीदारी असंभव है। क्योंकि जो अपने स्वभाव से ही पूर्ण और अप्रतिबंधित है, वह हर जगह फैलता और व्याप्त होता है, तब भी जब वह किसी परिमित, सीमित और भौतिक चीज़ से संबंधित होता है। उदाहरण के लिए, यदि हवा, प्रकाश, गर्मी और यहाँ तक कि पानी को भी अप्रतिबंधित प्रकृति दी गई होती, तो वे बिना किसी बाधा या रुकावट के हर जगह फैल जाते। अप्रतिबंधित प्रकृति होने से सीमित प्राणी को भी व्यापकता प्राप्त हो जाती है। इसे देखते हुए, यह निश्चित है कि सच्ची, सर्वव्यापी और अमूर्त अप्रतिबंधितता अनंत, पारलौकिक, असीमित और सभी दोषों से मुक्त गुणों को ऐसी सर्वव्यापी व्यापकता प्रदान करती है कि इससे दूसरों की भागीदारी या हस्तक्षेप के लिए कोई जगह नहीं बचती। ऐसा होने पर, असंख्य दिव्य कृत्यों और सैकड़ों दिव्य नामों में से प्रत्येक की संप्रभुता, भव्यता, पूर्णता, व्यापकता, अनंतता और अप्रतिबंधितता, जिनके कार्य और प्रकटीकरण ब्रह्मांड में देखे जाते हैं, दिव्य एकता के अत्यधिक शक्तिशाली प्रमाण प्रदान करते हैं।

एक असाधारण शक्ति जब मुक्त होती है तो वह हर जगह व्याप्त हो जाती है और अन्य शक्तियों को तितर-बितर कर देती है। इसी तरह, ईश्वरीय प्रभुत्व के प्रत्येक कार्य और ईश्वरीय नामों की प्रत्येक अभिव्यक्ति अपने कार्यों में ऐसी असाधारण शक्ति प्रदर्शित करती है कि यदि उन्हें ईश्वर की सार्वभौमिक बुद्धि और पूर्ण न्याय द्वारा नियंत्रित न किया जाए, तो वे पूरी सृष्टि को अपने अधीन कर लेंगी। उदाहरण के लिए, क्या यह कल्पना की जा सकती है कि एक शक्ति जो पूरी दुनिया में चिनार के पेड़ों का निर्माण और पालन-पोषण करती है, वह चिनार के बीच उगने वाले सेब या अखरोट के एक-दो पेड़ों को अपने नियंत्रण में न ले? क्या वह शक्ति उस सेब के पेड़ के पालन-पोषण का काम किसी और को सौंप देगी? जिस तरह से वह शक्ति प्रत्येक प्रजाति और प्रत्येक प्राणी में कार्य करती है, उससे पता चलता है कि उसमें पूरे ब्रह्मांड पर आक्रमण करने और सभी चीजों और प्राणियों को अपने अधीन करने की क्षमता है।

निस्संदेह, ऐसी शक्ति किसी भी तरह से अपने कार्यों में किसी साझेदारी या भागीदारी को स्वीकार नहीं कर सकती।

इसके अलावा, एक फलदार वृक्ष का मालिक न केवल उस फल को बहुत महत्व देगा जो उसका वृक्ष देगा, बल्कि, इसके भविष्य की पैदावार को ध्यान में रखते हुए, फल के अंदर के बीजों को भी, जो वास्तव में उसका हृदय है। एक समझदार मालिक फलों को किसी और को सौंपकर अपने स्वामित्व को व्यर्थ नहीं जाने देगा। अब ब्रह्मांड एक वृक्ष की तरह है: तत्व इसकी शाखाएँ हैं-

पेड़ की शाखाओं के सिरे पर स्थित पौधे और जानवर इसके फूल और पत्ते हैं, और मनुष्य, जो पेड़ के सबसे ऊपरी हिस्से पर हैं, इसके फल हैं। मनुष्य की पूजा और धन्यवाद पेड़ और उसके फल-मानव-के निर्माण का उद्देश्य और परिणाम दोनों हैं और मनुष्य के हृदय पेड़ के फल के व्यापक बीज हैं, जबकि मानवीय स्मृतियाँ हृदय के पीछे स्थित हैं। ऐसा होने पर, यह अकल्पनीय है कि ब्रह्मांड का पूर्ण स्वामी इस पेड़ के सभी घटकों के साथ-साथ इसके कब्जे और प्रशासन को अन्य शक्तियों को सौंप देगा, इस प्रकार अपने आधिपत्य की संप्रभुता को नकार देगा और पूजा के लिए उसकी योग्यता को नकार देगा।

फिर, प्रभुता के उद्देश्य उन विशेषताओं में केन्द्रित हैं, जो आकस्मिकता और बहुलता के क्षेत्र की सबसे बाहरी सीमाओं में मौजूद हैं, और इन विशेषताओं की अवस्थाओं और परिस्थितियों में। इन विशेषताओं और उनकी अवस्थाओं की अवस्थाओं और परिस्थितियों से ही सर्व-पूज्य के प्रति आभार, कृतज्ञता और आराधना उत्पन्न होती है, और इसलिए उनका प्रभु उन्हें कभी दूसरों को नहीं सौंपेगा, जिससे उसकी बुद्धि या उसकी दिव्यता समाप्त हो जाएगी। जहाँ तक ब्रह्मांड के निर्माण का सवाल है, प्रभुता का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य यह है कि ईश्वर स्वयं को चेतन प्राणियों को ज्ञात कराए, कि वे उससे प्रेम करें और उसकी प्रशंसा करें, और कि वह उनकी कृतज्ञता को अपनी ओर आकर्षित करे।

इस सूक्ष्म वास्तविकता के कारण ही, यह प्रदर्शित करने के लिए कि बहुलता के क्षेत्र के सुदूर क्षेत्रों में प्रकट सार्वभौमिक और विशिष्ट कार्य और उपकार, जैसे कि प्रावधान, उपचार और, विशेष रूप से, मार्गदर्शन और विश्वास[9], जो बदले में धन्यवाद, आराधना, कृतज्ञता, प्रेम, प्रशंसा और आराधना को जन्म देते हैं, सभी प्राणियों के निर्माता और संप्रभु, चमत्कारिक रूप से वाक्पटु के प्रत्यक्ष कार्य, उदारता, उपहार और कार्य हैं।

कुरान बार-बार प्रावधान, मार्गदर्शन और उपचार को आवश्यक लोगों को बताता है।

---

[9] उदाहरण के लिए देखें 2:22, 60, 142, 168, 172, 213, 272; 3:73; 5:16, 88; 6:71, 88; 26:80....

यह घोषणा करता है कि यह केवल वही है जो उन्हें प्रदान करता है और यह दूसरों के हस्तक्षेप को दृढ़ता से अस्वीकार करता है।

बेशक, जो ईमान का वरदान देता है, जिससे इंसान को हमेशा के लिए सुख का ठिकाना मिल जाता है, वह वही हो सकता है जो उस सुख के ठिकाना को बनाता है और ईमान को उसकी कुंजी बनाता है। यह सिर्फ़ उसकी कृपा ही हो सकती है। कोई और इतनी बड़ी कृपा करके उस विशाल खिड़की को बंद नहीं कर सकता जो सर्वपूज्य परमेश्वर की ओर खुलती है; कोई भी उसकी उपासना के इस सबसे महत्वपूर्ण साधन को छीन या चुरा नहीं सकता।

संक्षेप में, सृष्टि के वृक्ष के सबसे दूर के शीर्ष पर स्थित सबसे विशिष्ट अवस्थाएं, परिस्थितियां और फल निम्नलिखित दो रूपों में ईश्वरीय एकता की गवाही देते हैं:

तौर तरीकों:

पहला: चूँकि ब्रह्माण्ड में दिव्य प्रभुत्व के उद्देश्य इन फलों और अवस्थाओं में संचित और केन्द्रित हैं, तथा अधिकांश दिव्य नामों की अभिव्यक्तियाँ, प्राणियों के निर्माण में देखे जा सकने वाले उनके परिणामों और लाभों के साथ उनमें केन्द्रित हैं, उनमें से प्रत्येक घोषणा करता है: "मैं उस एक की संपत्ति, कार्य और कर्म हूँ जिसने पूरे ब्रह्माण्ड का निर्माण किया है।"

दूसरा: मानव हृदय और स्मृति - जिसे हदीस में "हृदय का पिछला भाग "10 कहा गया है - अधिकांश प्राणियों की संक्षिप्त अनुक्रमणिका या मानचित्रों की तरह हैं। इसके अलावा, वे ब्रह्मांड के वृक्ष के बीज होने का अर्थ रखते हैं, और अधिकांश दिव्य नामों के लिए सूक्ष्म दर्पण हैं।

संसार के प्रत्येक मनुष्य का हृदय और स्मृति एक समान है। यह तथ्य, अत्यंत निश्चितता के साथ, उस एक की ओर संकेत करता है जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है; क्योंकि प्रत्येक हृदय और स्मृति यह घोषित करती है: "मैं केवल उसी का कार्य और कला हूँ।"

निष्कर्ष: इसके लाभों के संबंध में, फल पूरे पेड़ के मालिक को इंगित करता है। इसके बीज के संबंध में, यह पेड़ के सभी भागों, सदस्यों और प्रकृति को इंगित करता है। और इसके चेहरे पर मुहर के संबंध में, जो इसके सभी साथियों के चेहरों पर भी मौजूद है, यह पेड़ के सभी फलों के बीच समानता को प्रदर्शित करता है। साथ में वे घोषणा करते हैं: "हम सभी एक जैसे हैं और एक ही हाथ से बनाए गए हैं। हम एक ही सत्ता की संपत्ति हैं। जिसने हममें से एक को बनाया है, उसने हम सभी को बनाया है।" ठीक उसी तरह, हर सदस्य के चेहरे पर मुहर के संबंध में, साथ ही साथ सभी जीवित प्राणियों के चेहरों पर जो सबसे दूर तक मौजूद हैं।

---

10 अल-बुखारी, "फदैलुल-कुरान" 22; मुस्लिम, "विवाह" 76.

बहुलता के क्षेत्र में, और इस तथ्य के संबंध में कि मानवता सृष्टि के वृक्ष का परिणाम और फल है, वृक्ष के गुणों की सूची के समान हृदय के साथ, मानवजाति सीधे उस एक की ओर संकेत करती है जो संपूर्ण ब्रह्मांड को अपनी शक्ति की मुट्ठी में रखता है, और मानवता उसकी एकता की गवाही देती है।

दूसरा तथ्य जो ईश्वरीय एकता को आवश्यक बनाता है

इसका मतलब यह है कि एकता में एक सहजता और सुविधा मौजूद है जो ईश्वरीय एकता में विश्वास को आवश्यक बनाती है। दूसरी ओर, ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ना, इतनी सारी कठिनाइयों और विरोधाभासों को शामिल करता है कि यह असंभव है। इस सत्य को रिसाले-ए- नूर के कई ग्रंथों में निर्णायक प्रमाणों के साथ विस्तार से समझाया गया है - जिसे "प्रकाश का दीपक" भी कहा जाता है - विशेष रूप से बीसवें पत्र में और संक्षेप में तीसवीं झलक के चौथे भाग में। एक संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है:

यदि सभी चीजों को एक ही सत्ता के अधीन कर दिया जाए, तो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सृजन और प्रशासन एक वृक्ष के सृजन और प्रशासन के समान सरल हो जाएगा, एक वृक्ष का सृजन एक फल के सृजन के समान सरल हो जाएगा, वसन्त ऋतु की उत्पत्ति और नियमन एक फूल के उद्भव और नियमन के समान सरल हो जाएगा, तथा एक सम्पूर्ण प्रजाति का संगठन और पालन-पोषण उस प्रजाति के एक सदस्य के संगठन और पालन-पोषण के समान सरल हो जाएगा।

इसके विपरीत, जब भागीदार सर्वशक्तिमान ईश्वर से जुड़े होते हैं और सभी चीजों को (भौतिक या भौतिक) कारणों और "प्रकृति" के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक व्यक्ति का निर्माण एक पूरी प्रजाति या वास्तव में कई प्रजातियों के निर्माण जितना ही कठिन हो जाता है। एक फूल का निर्माण और सजावट एक पूरे वसंत या कई झरनों के निर्माण और सजावट की तरह ही समस्याग्रस्त हो जाती है, एक फल का निर्माण एक पूरे पेड़ या बल्कि सैकड़ों पेड़ों के निर्माण जितना ही जटिल हो जाता है, और एक पेड़ को अस्तित्व में लाना, उसका पालन-पोषण करना, उसका नियमन करना और उसका प्रशासन करना उतना ही कठिन हो जाता है, जितना कि पूरे पेड़ को अस्तित्व में लाना।

ब्रह्मांड।

इस वास्तविकता को प्रकाश के दीप-रिसाले-ए नूर में पर्याप्त रूप से प्रदर्शित किया गया है। चूँकि, जैसा कि हम अपने सामने आसानी से देख सकते हैं, प्राणियों का एक बहुत बड़ा नृत्य है, फिर भी सब कुछ कलात्मकता और मूल्य के उच्चतम स्तर पर है और, इस तथ्य के बावजूद कि प्रत्येक जीवित प्राणी कई चमत्कारी घटकों और सदस्यों के साथ एक अद्भुत तंत्र है, सभी जीवित प्राणी एक दूसरे में आते हैं।

अनंत सहजता और असाधारण गति के साथ पूर्ण प्रचुरता में अस्तित्व, बिल्कुल माचिस जलाने की तरह, यह सब स्वतः-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि यह अति प्रचुरता और सहजता एकता और इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि वे एक ही सत्ता के कार्य हैं। अन्यथा, अर्थव्यवस्था, प्रचुरता, गति, सहजता और मूल्य का यह संयोजन नहीं होगा; फल का एक टुकड़ा जो अब पाँच सेंट में खरीदा जाता है, उसे पाँच सौ डॉलर में नहीं खरीदा जा सकता या वह इतना दुर्लभ होगा कि पूरी तरह से अप्राप्य होगा। साथ ही, जीवित प्राणियों का निर्माण, जिसे हम अब घड़ी सेट करने या बटन दबाकर तंत्र संचालित करने जितना आसान देखते हैं, इतना कठिन होगा कि यह असंभव होगा। जानवर, जो एक दिन, एक घंटे या एक मिनट में अपने सभी भौतिक अंगों और प्रणालियों के साथ अस्तित्व में आते हैं, एक साल, एक सदी या शायद कभी भी अस्तित्व में नहीं आ पाएंगे।

द लैम्प ऑफ़ लाइट में सौ से ज़्यादा जगहों पर यह निर्णायक रूप से प्रदर्शित किया गया है कि अगर सभी चीज़ों को एकता के एक, अद्वितीय एक के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उनका अस्तित्व में आना एक चीज़ की तरह ही आसान, तेज़ और किफायती है। लेकिन अगर कारणों और प्रकृति को एक भूमिका दी जाती है, तो एक चीज़ का निर्माण पूरे ब्रह्मांड के निर्माण जितना ही कठिन, धीमा और महंगा हो जाता है। यदि आप इस सत्य के प्रमाण देखना चाहते हैं, तो आप बीसवें और तैंतीसवें पत्र, बाईसवें और बत्तीसवें शब्द, तेईसवीं झलक का संदर्भ ले सकते हैं-

जो प्रकृति से संबंधित है - और तीसवीं झलक - जो

सबसे महान नाम या दिव्य नाम के बारे में बात करें जिसमें सभी प्रकार की अभिव्यक्तियाँ हैं; विशेष रूप से इसके चौथे और छठे भाग की जाँच करें, जो क्रमशः "सर्व-स्वतंत्र एकल" और "स्व-निर्भर जिसके द्वारा सभी जीवित हैं" नामों से संबंधित हैं। नीचे हम इन सैकड़ों प्रमाणों में से केवल एक का उल्लेख करेंगे:

कोई चीज़ या तो शून्य से बनाई जाती है या तत्वों और दूसरी चीज़ों से मिलकर बनी होती है। अगर इसे किसी एक सत्ता के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो उस सत्ता के पास एक सर्वव्यापी ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए जो सभी चीज़ों पर हावी हो। इसलिए, उन चीज़ों पर बाहरी अस्तित्व प्रदान करना, जिनका उनके ज्ञान के भीतर एक तरह का अमूर्त अस्तित्व है, या उन्हें स्पष्ट गैर-अस्तित्व से बाहर लाना, उतना ही आसान और सरल है जितना कि माचिस जलाना या अदृश्य स्याही से लिखे गए पाठ पर एक विशेष तरल फैलाना ताकि जो लिखा गया है उसे प्रकट किया जा सके, या फ़ोटोग्राफ़िक फ़िल्म से एक छवि को कागज़ पर स्थानांतरित करना। "हो!" और यह है की आज्ञा के माध्यम से, निर्माता चीज़ों को स्पष्ट गैर-अस्तित्व से बाहरी अस्तित्व में लाता है।

यदि कोई वस्तु तत्वों या अन्य वस्तुओं से बनी है, तथा अस्तित्वहीनता या शून्यता से निर्मित नहीं है, तो वह उस रेजिमेंट के सदस्यों के समान है, जिन्हें बिगुल की आवाज पर विश्राम के लिए भेजा गया था, तथा व्यवस्थित ढंग से एकत्रित किया गया था। रेजिमेंट के सदस्यों की सभी गतिविधियाँ कमांडर की शक्ति, आदेश और नज़र के अधीन होती हैं। इसी प्रकार, किसी वस्तु को बनाने वाले सभी कण या परमाणु ब्रह्मांड के प्रभु के पूर्ण नियंत्रण में होते हैं: वे उसके ज्ञान और निश्चय (नियति) के सिद्धांतों के अनुसार, तथा उसकी सर्वव्यापी और प्रबल शक्ति के नियमों के अनुसार चलते, संगठित होते और एक साथ आते हैं। किसी जीवित प्राणी का शरीर बनाने के लिए, वे नियति द्वारा निर्दिष्ट माप और अनुपात में निर्दिष्ट अमूर्त साँचे में प्रवेश करते हैं और स्थापित होते हैं। इस प्रक्रिया में वे जिन अन्य वस्तुओं के संपर्क में आते हैं, वे इस प्रकार कार्य करते हैं, मानो वे उस प्रभु की सचेतन शक्तियाँ, नियम और अधिकारी हों।

हालाँकि, अगर चीज़ों को अलग-अलग कारकों और कारणों और प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो जैसा कि सभी विवेकशील दिमाग सहमत हैं, इनमें से कोई भी किसी भी तरह से कुछ नहीं और अस्तित्वहीनता से कुछ नहीं बना सकता है। क्योंकि उनमें से किसी के पास न तो सर्वव्यापी ज्ञान है और न ही सर्वव्यापी शक्ति।

इस वजह से, विचाराधीन गैर-अस्तित्व केवल स्पष्ट गैर-अस्तित्व नहीं होगा: यह निरपेक्ष होगा। और निरपेक्ष गैर-अस्तित्व हो सकता है

किसी भी तरह से अस्तित्व की उत्पत्ति नहीं हो सकती। इसे देखते हुए, किसी प्राणी का अस्तित्व में आना केवल संयोजन के माध्यम से ही हो सकता है। लेकिन फिर, कण या परमाणु जो एक मक्खी या फूल के शरीर का निर्माण करते हैं, उन्हें पूरी धरती से एक साथ आना होगा और एक महीन छलनी से गुजरना होगा। यह स्पष्ट रूप से असंख्य कठिनाइयों या असंभवताओं को जन्म देगा।

यदि हम यह मान भी लें कि यह संभव है, तो चूंकि सर्वव्यापी ज्ञान द्वारा नियुक्त कोई अमूर्त साँचे नहीं होंगे जो उन्हें बिना बिखरे व्यवस्थित ढंग से सुरक्षित रख सकें, इसलिए उतने ही वास्तविक भौतिक साँचे होने चाहिए जितने कि किसी प्राणी के सदस्यों की संख्या होती है, ताकि उसके शरीर को बनाने के लिए एकत्रित होने वाले कणों या परमाणुओं को बनाया जा सके।

इस प्रकार, जब किसी एक सत्ता को सभी चीजों का अस्तित्व माना जाता है, तो यह इतना आसान हो जाता है कि यह आवश्यक हो जाता है; जब किसी एक को अनेक कारणों या उत्पत्तियों के लिए जिम्मेदार माना जाता है, तो इसमें इतनी कठिनाइयां शामिल होती हैं कि यह असंभव हो जाता है।
इसी प्रकार, जब सभी चीजों का अस्तित्व उस अद्वितीय, परम एकता वाले एकमेव को माना जाता है, तो वे मूल्यवान, कला से परिपूर्ण, अर्थपूर्ण, और शाश्वत हो जाती हैं।

और अत्यंत प्रभावशाली होने के साथ-साथ अत्यंत किफायती भी है।
लेकिन यदि कोई ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने का रास्ता अपनाता है और उन्हें प्रकृति और कई कारणों या उत्पत्ति का श्रेय देता है, तो वे तुरंत सभी मूल्य खो देते हैं और कला, अर्थ और स्थिरता से पूरी तरह से रहित हो जाते हैं, साथ ही असीम रूप से महंगे भी हो जाते हैं।

जब कोई व्यक्ति सेना में भर्ती होता है और सेनापति से जुड़ जाता है, उस पर भरोसा करना सीखता है, तो वह पाता है कि जब भी जरूरत हो, वह सेना के नैतिक समर्थन पर भरोसा कर सकता है। साथ ही, चूंकि सेना की शक्ति उसकी आरक्षित शक्ति है, इसलिए उसे एक व्यक्ति के रूप में अपनी शारीरिक शक्ति से हजारों गुना अधिक शक्ति प्राप्त होती है। इसके अलावा, चूंकि सेना के पास उस महत्वपूर्ण शक्ति और गोला-बारूद के स्रोत होते हैं, इसलिए उसे उन्हें साथ लेकर चलने की जरूरत नहीं होती। नतीजतन, चूंकि उस सैनिक ने असाधारण कारनामों को अंजाम देने की शक्ति प्राप्त कर ली है, भले ही वह केवल एक निजी व्यक्ति हो, वह दुश्मन के फील्ड-मार्शल को पकड़ने, शहर के सभी निवासियों को पलायन करने के लिए मजबूर करने या दुश्मन के किले पर नियंत्रण करने में सक्षम होगा। उसके कार्य असाधारण और बहुत मूल्यवान होंगे। तथापि, यदि वह सेना छोड़ देता है और अकेला रह जाता है, तो वह अपनी असाधारण शक्ति और नैतिक समर्थन खो देगा: परिणामस्वरूप, एक सामान्य भगोड़े की तरह, वह जो कार्य कर सकेगा, वह एक अकेले सैनिक के रूप में उसकी व्यक्तिगत शक्ति के अनुपात में होगा, और इस प्रकार वह अपेक्षाकृत महत्वहीन और कम मूल्य का होगा।

इसी तरह, चूँकि ईश्वरीय एकता यह सुनिश्चित करती है कि सब कुछ सर्वशक्तिमान ईश्वर से जुड़ा हुआ है और उस पर निर्भर है, एक चींटी फिरौन को हराने में सक्षम है, एक मक्खी निम्रोद को नीचे लाने में सक्षम है, और एक छोटा सा सूक्ष्म जीव एक तानाशाह को गिराने में सक्षम है। इसके अलावा, एक नाखून के आकार का बीज अपने कंधों पर एक पहाड़ के आकार का पेड़ पैदा करने में सक्षम है और एक देवता के रूप में कार्य करता है।

वृक्ष के सभी अंगों और सदस्यों का स्रोत और उद्गम, मानो वह उनका कार्यक्षेत्र हो। दिव्य एकता के साथ यही संबंध और निर्भरता सभी कणों या परमाणुओं को असंख्य शरीरों के निर्माण में असीमित कार्य करने में सक्षम बनाती है, जिनमें से प्रत्येक असंख्य प्रकार की कलाओं से परिपूर्ण है। जिन कार्यों में उन छोटे-छोटे अधिकारियों और छोटे-छोटे सैनिकों को लगाया जाता है, वे अत्यंत उत्तम और उच्चतम कला और मूल्य के होते हैं, क्योंकि उन्हें बनाने वाला सर्वशक्तिमान और महामहिम है।

वह उन्हें उन कार्यों के निर्माण में लगाता है और उन्हें अपने कार्यों पर पर्दा डालता है। हालाँकि, अगर कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो चींटी के काम खुद चींटी की तरह ही महत्वहीन होंगे, जबकि एक कण या परमाणु में कलात्मकता का कोई महत्व नहीं होगा। सब कुछ बेकार हो जाएगा

अर्थ के साथ-साथ भौतिक दृष्टि से भी सम्मान की बात है, और कोई भी व्यक्ति पूरी दुनिया के लिए एक पैसा भी देने को तैयार नहीं है।

चूँकि यह वास्तविकता है, और यह स्पष्ट है कि सब कुछ अत्यधिक मूल्यवान है, कलात्मकता से भरा हुआ है, दोषरहित है, और अर्थ से परिपूर्ण है, इसलिए सभी चीज़ों के अस्तित्व और प्रशासन को समझाने के लिए ईश्वरीय एकता के मार्ग के अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं हो सकता। अगर कोई दूसरा रास्ता होता, तो सभी प्राणियों को बदलना, दुनिया को खाली करके उसे निरर्थक कबाड़ से भरना ज़रूरी होता, ताकि ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने का रास्ता खुल सके।

तो अब आपने रिसाले-ए-नूर में ईश्वरीय एकता की सच्चाई के हजारों प्रमाणों में से सिर्फ़ एक का संक्षिप्त सारांश सुना है , जिसे "प्रकाश का दीपक" भी कहा जाता है। आप दूसरों के लिए भी इसी के साथ समानताएँ बना सकते हैं।

तीसरा तथ्य जो ईश्वरीय एकता को आवश्यक बनाता है

इस तथ्य के अलावा कि वस्तुओं और विशेष रूप से जीवित प्राणियों के निर्माण में असाधारण कलात्मकता है, यह भी तथ्य है कि बीज फल का एक छोटा सा नमूना है, जिसमें एक संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप में उसका अर्थ और उसका संदर्भ समाहित है। वास्तव में, यह फल का एक छोटा सा नमूना या मानचित्र है और फल एक पेड़ के लिए समान भूमिका निभाता है; एक पेड़ प्रजाति के लिए समान है, और प्रजाति ब्रह्मांड के लिए इस तरह से कार्य करती है। इनमें से प्रत्येक ज्ञान के सिद्धांतों और बुद्धि के तराजू के साथ पूरे ब्रह्मांड से आसुत एक व्यापक बिंदु या एक बूंद है, और इसमें पूरी सृष्टि का मूल होने की क्षमता है। इसलिए, जिसने उनमें से किसी को भी बनाया है, उसने निश्चित रूप से पूरे ब्रह्मांड का निर्माण किया होगा। निश्चित रूप से, जिसने तरबूज का बीज बनाया है, वह स्वयं-स्पष्ट रूप से वही है जिसने तरबूज का निर्माण किया है: यह असंभव है कि वह उसके अलावा कोई और हो सकता है।

हम देखते हैं कि हमारे रक्त में सभी परमाणु इतने विविध कार्य करते हैं कि वे सितारों से कमतर नहीं हैं। रक्त में सभी लाल और सफेद कणिकाएँ शरीर की रक्षा और पोषण के लिए इतनी चेतना के साथ काम करती हैं कि वे सबसे उच्च प्रशिक्षित और अनुभवी सैनिकों या रक्षकों से भी अधिक कुशल हैं। शरीर की सभी कोशिकाएँ ऐसी व्यवस्थित प्रक्रियाओं, आवक और जावक से संपन्न हैं कि उनका प्रशासन सबसे अच्छी तरह से संचालित संस्था या महल से भी अधिक परिपूर्ण है। सभी पौधों और जानवरों के चेहरों पर ऐसी मुहर होती है और उनके अस्तित्व में ऐसी क्रियाविधि होती है कि केवल एक ही

जिसने इन सबको बनाया है, वही इनमें ये मुहरें और तंत्र रख सकता था। और सभी जीवित प्राणियों की प्रजातियाँ पृथ्वी पर इस तरह से व्यवस्थित ढंग से फैली हुई हैं और एक दूसरे के साथ इस तरह से घुली-मिली हुई हैं कि जो कोई भी इन सभी प्रजातियों को एक साथ बनाने, निर्देशित करने और पालने में असमर्थ है, वह पृथ्वी के चेहरे को ढंकने के लिए सैकड़ों हज़ारों पौधों और जानवरों की प्रजातियों के ताने-बाने के साथ उस सबसे अलंकृत, कलात्मक, जीवंत कपड़े को बुनने में असमर्थ है - जो ये सब करने में असमर्थ है, वह इनमें से एक भी प्राणी को बनाने या निर्देशित करने में सक्षम नहीं होगा। यदि अस्तित्व की अन्य विशेषताओं के लिए समान समानताएँ बनाई जाती हैं, तो यह समझा जाएगा कि सृजन और आधिपत्य दोनों के संबंध में - पालना, प्रबंधन करना, पालना और बनाए रखना - ब्रह्मांड एक संपूर्ण है जो विभाजन को स्वीकार नहीं करता है।

यह तीसरा तथ्य जो ईश्वरीय एकता को अनिवार्य बनाता है , द लैंप ऑफ लाइट के कई ग्रंथों में और विशेष रूप से द फर्स्ट स्टेशन ऑफ द थर्टी-सेकंड वर्ड में प्रदर्शित किया गया है। यह इतनी स्पष्टता और दृढ़ता से प्रदर्शित किया गया है कि, जैसे पारदर्शी चीजों में सूर्य का प्रतिबिंब एकमात्र सूर्य की ओर इशारा करता है, वैसे ही ईश्वरीय एकता का प्रमाण प्रत्येक व्यक्तिगत इकाई के दर्पण में परिलक्षित और प्रस्तुत होता है। ये स्पष्टीकरण पर्याप्त हैं और अब हम इस लंबी कहानी को छोटा करते हैं।

तीसरा स्टेशन

इस स्टेशन में दिव्य एकता के तीन सार्वभौमिक लक्षणों को संक्षेप में समझाया जाएगा।

ईश्वरीय एकता के संकेत और प्रमाण तथा इसकी स्पष्ट अभिव्यक्तियाँ

ब्रह्मांड में असंख्य वस्तुएं हैं। चूँकि उनमें से हजारों का विस्तृत वर्णन किया जा चुका है-

प्रकाश का दीप में आगे बढ़ते हुए , इस तीसरे स्टेशन में इनमें से केवल तीन प्रमाणों को संक्षेप में समझाना पर्याप्त होगा।

पहला संकेत और प्रमाण जो हमें आगे ले जाता है
निष्कर्ष कि “वह एक है ”

हर चीज़ में एकता है और यह एकता एक की ओर इशारा करती है। यह स्वतःसिद्ध है कि एकता को प्रदर्शित करने वाला कार्य एक निर्माता से उत्पन्न हुआ है। जो एक है वह निश्चित रूप से एक से ही निकलता है। और चूँकि सभी चीज़ों में एकता है, इसलिए यह निश्चित रूप से दर्शाता है कि वे एक ही प्राणी के कार्य हैं।

ब्रह्मांड एक गुलाब की कली की तरह है, जो एकता के हजारों तरह के आवरणों में लिपटा हुआ है। यह भी कहा जा सकता है कि यह एक एकल वृहद मानव है, जो ईश्वरीय नामों और सार्वभौमिक ईश्वरीय कार्यों की संख्या के साथ एकता में लिपटा हुआ है।

इसे "सृष्टि का प्रतीक" कहते हैं। सृष्टि का प्रतीक "तूबा का वृक्ष "11 , जिसकी शाखाओं पर प्राणियों की अनेक प्रजातियों की एकता लटकी हुई है,

ब्रह्माण्ड का पालन-पोषण, संचालन, रख-रखाव और नियंत्रण किस प्रकार किया जाता है, इस संबंध में ब्रह्माण्ड अपनी सभी विशेषताओं में एकता प्रदर्शित करता है। ब्रह्माण्ड को संचालित करने वाले और उसे जीवित रखने वाले नाम और कार्य भी एकता प्रदर्शित करते हैं: उनमें से प्रत्येक ब्रह्माण्ड को समग्र रूप में, या उसके अधिकांश भाग को समाहित करता है। अर्थात्, ब्रह्माण्ड में काम करने वाली बुद्धि एक ही है, ब्रह्माण्ड में देखी जाने वाली कृपा एक ही है, ब्रह्माण्ड का नियमन एक ही है, ब्रह्माण्ड के लिए किया गया प्रावधान एक ही है, जरूरतमंदों की सहायता के लिए तत्पर रहने वाली दया एक ही है, जैसे वर्षा, जो दया की मधुर भेंट है, और यही बात इसकी अन्य सभी विशेषताओं के लिए भी सत्य है। सूर्य, जो संसार की विशाल भट्टी है, एक ही है; चन्द्रमा उसका दीपक है और यह भी एक ही है। अग्नि उसका खाना पकाने का साधन है और यह भी एक ही है; पहाड़, जो हमारी दुनिया की आपूर्ति, खजाने और मस्तूलों के भंडार हैं, एक ही हैं। जल आपूर्तिकर्ता एक ही हैं, तथा स्पंज जिनसे वर्षा का जल निकलता है और जो बगीचों तथा अंगूर के बागों को सींचता है, वे भी एक ही हैं, तथा हमारे विश्व में हजारों अन्य समान विशेषताएं भी एक ही हैं।

दुनिया में एकता के ये सभी उदाहरण एकता के अद्वितीय, एकमेव होने के प्रमाण हैं, और सूर्य की तरह स्पष्ट हैं। साथ ही, इस तथ्य के अलावा कि सभी सार्वभौमिक तत्व और पृथ्वी पर रहने वाली प्रजातियाँ एक हैं, वे एक दूसरे के साथ घुलमिल कर रहते हैं और एक दूसरे की मदद करते हैं। यह इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि उनका स्वामी, उनका मालिक और निर्माता, एक ही है।

दूसरा संकेत और प्रमाण जो हमें आगे ले जाता है
निष्कर्ष कि “उसका कोई साथी नहीं है ”

यह दूसरा संकेत यह तथ्य है कि पूरे ब्रह्मांड में, परमाणुओं से लेकर सितारों तक, एक दोषरहित, पूर्ण व्यवस्था, एक दोषरहित, सबसे सुंदर सुसंगति और एकरूपता, और सभी चीजों में एक बेदाग, दोषरहित संतुलन और न्याय है। एक पूर्ण व्यवस्था, सुसंगति और संतुलन केवल एकता के माध्यम से ही संभव हो सकता है। यदि किसी काम में कई हाथ हस्तक्षेप करते हैं, तो वे केवल भ्रम पैदा करते हैं।

---

11 तूबा का पेड़ स्वर्ग का पेड़ है और इसका उपयोग बड़ी, विशाल चीज़ों के प्रतीक के रूप में किया जाता है जिनकी कई शाखाएँ होती हैं। (ट्र.)

अब आइए और इस व्यवस्था की भव्यता को देखें: इसने ब्रह्माण्ड को एक ऐसा दोषरहित, अद्भुत महल बना दिया है कि इसका प्रत्येक पत्थर महल की तरह ही कलात्मक है; इसने इसे एक ऐसा भव्य शहर बना दिया है कि इसके असीमित सामान और असीम उपहार और प्रावधान बिल्कुल सही समय पर उन जगहों से प्रदान किए जाते हैं जिनकी कोई उम्मीद नहीं करता, अदृश्य के पर्दे के पीछे से, सबसे उत्तम व्यवस्था में। इस व्यवस्था ने ब्रह्माण्ड को एक ऐसा सार्थक और चमत्कारी पुस्तक बना दिया है कि इसके प्रत्येक अक्षर का अर्थ सौ पंक्तियों जितना है, इसकी प्रत्येक पंक्ति का अर्थ सौ पृष्ठों जितना है, इसके प्रत्येक पृष्ठ का अर्थ सौ अध्याय जितना है, और इसके प्रत्येक अध्याय का अर्थ सौ पुस्तकों जितना है। इसके अलावा, इसके सभी अक्षर, शब्द, पंक्तियाँ, पृष्ठ और अध्याय एक दूसरे को संदर्भित करते हैं और अभिन्न रूप से परस्पर जुड़े हुए हैं।

अब आइए और इस अद्भुत व्यवस्था में देखी जा सकने वाली उत्तम सजावट और व्यवस्था को देखें: इसने इस विशाल ब्रह्मांड को एक अद्भुत रचना बना दिया है।

एक पूर्णतया स्वच्छ शहर या एक सुंदर महल जिसे निरंतर और सावधानीपूर्वक साफ और चमकाया जाता है; इसने उसे एक अत्यंत सुन्दर युवती बना दिया है, जो परत-दर-परत अलंकृत वस्त्रों से सुसज्जित है, या अनेकों सुन्दर रूप से अलंकृत पंखुड़ियों में लिपटी एक गुलाब की कली बना दिया है।

अब आइए और इस व्यवस्था और स्वच्छता के भीतर पूर्ण संतुलन और न्याय को देखें: सूक्ष्म जीव जिन्हें केवल एक शक्तिशाली माइक्रोस्कोप के माध्यम से देखा जा सकता है और पृथ्वी से हज़ार गुना बड़े तारे, सभी को इस तराजू के तराजू पर तौला जाता है और उन्हें उनके अस्तित्व के लिए बिल्कुल वही दिया जाता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है, बिना किसी कमी या कमी के। ये छोटे-छोटे जीव और ये विशाल आकाशीय पिंड संतुलन और न्याय की दृष्टि में समान हैं, इस तथ्य के बावजूद कि आकाश में सबसे बड़ी वस्तुएँ, यदि एक सेकंड के लिए भी अपना संतुलन खो दें, तो सामान्य संतुलन को नष्ट कर देंगी और दुनिया को विनाश ला देंगी।

अब आओ और व्यवस्था, स्वच्छता और संतुलन के भीतर असाधारण आकर्षक सौंदर्य को देखो: इसने ब्रह्मांड को एक शानदार उत्सव, एक समृद्ध और उल्लेखनीय रूप से सजाया हुआ प्रदर्शनी, ताजे खिले फूलों से भरा एक वसंत बना दिया है। इसने विशाल वसंत को फूलों के एक सुंदर फूलदान में बदल दिया है और इसने प्रत्येक वसंत को सैकड़ों हजारों अलंकरणों के साथ एक अद्भुत फूल का रूप दिया है, जो हर मौसम में पृथ्वी के चेहरे पर खिलता है। इसने हर फूल को अत्यंत विविध सजावट के साथ सुशोभित किया है। भगवान के सर्व-सुंदर नामों की सुंदर अभिव्यक्तियों के माध्यम से, जिनमें अत्यंत सौंदर्य और प्रेम है, सभी प्राणियों की प्रजातियाँ

ब्रह्मांड में, उनके प्रत्येक व्यक्तिगत सदस्य के साथ, उनकी जन्मजात क्षमताओं के अनुसार, ऐसी सुंदरता प्रदान की गई है कि इमाम अल-ग़ज़ाली12 यह टिप्पणी करने के लिए प्रेरित हुए: "वर्तमान ब्रह्मांड से अधिक सुंदर कोई ब्रह्मांड नहीं हो सकता।" इस प्रकार, यह सर्वव्यापी, मनमोहक सौंदर्य, यह सर्वव्यापी, असाधारण स्वच्छता, यह सर्वव्यापी, सर्वोच्च संवेदनशील संतुलन, यह व्यापक व्यवस्था और सुसंगतता, अपने सभी पहलुओं में चमत्कारी, दिव्य एकता के प्रमाण और संकेत प्रदान करते हैं जो दोपहर के सूरज की रोशनी से भी अधिक उज्ज्वल हैं।

इस स्टेशन से संबंधित दो-भागीय प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर

प्रश्न का पहला भाग: आप इस स्टेशन में दावा करते हैं कि सौंदर्य, अनुग्रह, अच्छाई और न्याय पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त हैं, लेकिन आप हमारे चारों ओर जो कुरूपता, आपदाएं, बीमारी, क्लेश और मृत्यु देखते हैं, उसके बारे में आप क्या कहते हैं?

उत्तर: कुरूपता का एक भी उदाहरण जिसके परिणामस्वरूप सौंदर्य के अनेक उदाहरण होते हैं, वह अप्रत्यक्ष रूप से सौंदर्य का एक उदाहरण है। जबकि कुरूपता के एक उदाहरण का न होना या छिपा होना जिसके कारण सौंदर्य के अनेक उदाहरण छिपे रहते हैं, वह एक नहीं बल्कि अनेक गुना कुरूपता है। उदाहरण के लिए, यदि तुलना या माप की इकाई के रूप में कार्य करने के लिए कोई कुरूपता न होती, तो केवल एक ही प्रकार का सौंदर्य होता और सौंदर्य की अनेक किस्में और डिग्री छिपी रहतीं। क्योंकि कुरूपता के हस्तक्षेप से ही सौंदर्य की विविध और बढ़ती हुई डिग्री प्रकट होती हैं। जिस प्रकार ठंड के अस्तित्व के माध्यम से गर्मी की डिग्री स्पष्ट हो जाती है और अंधेरे के अस्तित्व के कारण प्रकाश की डिग्री का बोध होता है, उसी प्रकार बुराई, कुरूपता, हानि और हानि के विशेष उदाहरण भी अच्छाई और सौंदर्य और सार्वभौमिक लाभ और उपहार के सार्वभौमिक उदाहरणों को प्रकट करते हैं। इसका अर्थ है कि कुरूपता का निर्माण कुरूप नहीं है: यह सुंदर है क्योंकि इसके अधिकांश परिणाम सुंदर हैं। वर्षा के इतने अच्छे और लाभकारी परिणाम होते हैं कि लोगों ने इसे दया कहा है। इस प्रकार, आलसी मन वाला व्यक्ति जो कुछ कष्ट सहता है

[12] इमाम अबू हामिद मुहम्मद अल-ग़ज़ाली (मृत्यु 1111): एक प्रमुख धर्मशास्त्री, विधिवेत्ता और संत जिन्हें अपने समय में (इस्लाम की पवित्रता और जीवन शक्ति का) पुनरुद्धार करने वाला माना जाता था। यूरोप में अल्गाज़ेल के नाम से मशहूर, वे इस्लाम के बाद के विकास के वास्तुकार थे। उन्होंने कई किताबें लिखीं, जिनमें सबसे मशहूर है इह्याउ 'उलुमि'द-दीन ("धार्मिक विज्ञान को पुनर्जीवित करना")। (अनुवाद)

जब वर्षा होती है तो असुविधा के कारण वर्षा को बुरा नहीं माना जा सकता: वह दया को हानि नहीं मान सकता।

जहाँ तक क्षय और मृत्यु का सवाल है, चौबीसवें पत्र में यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया गया है कि वे सार्वभौमिक दया, सर्वव्यापी सौंदर्य या सर्व-समावेशी भलाई के विपरीत नहीं हैं; बल्कि, वे उनके द्वारा आवश्यक हैं। शैतान की रचना भी अच्छी है, क्योंकि वह लोगों को उसके विरुद्ध संघर्ष करने और अच्छे कर्म करने के लिए आपस में प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित करता है, जो मानव जाति की आध्यात्मिक प्रगति के स्रोत हैं। साथ ही, चूँकि अविश्वासी सभी प्राणियों के अधिकारों का उल्लंघन करते हैं और अविश्वास के माध्यम से उनकी गरिमा को ठेस पहुँचाते हैं, इसलिए उन्हें नर्क की यातनाओं से दंडित करना भी अच्छा है। चूँकि इस मामले को अन्य ग्रंथों में विस्तार से समझाया गया है, इसलिए यहाँ एक संक्षिप्त संकेत पर्याप्त है।

प्रश्न का दूसरा भाग: हम शैतान और अविश्वासियों के संबंध में सामान्य दृष्टिकोण से उत्तर को स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन यह कैसे संभव है कि वह परम सुन्दर, वह परम दयालु, वह परम भला और आत्मनिर्भर, कुछ अभागे व्यक्तियों पर बुराई, विपत्तियां और कुरूपता लाता है?

जवाब: जो भी अच्छाई, सुंदरता और उदारता मौजूद है, वह सीधे उस परम सुंदर और दयालु व्यक्ति की दया के खजाने से और उसकी विशेष कृपा से है। जहाँ तक बुराइयों और आपदाओं का सवाल है, वे ईश्वरीय प्रभुता की संप्रभुता के सामान्य, सार्वभौमिक कानूनों के असंख्य परिणामों में से अपेक्षाकृत दुर्लभ घटनाएँ हैं, जिन्हें "ईश्वर का सामान्य व्यवहार" ('आदतुल्लाह) कहा जाता है। चूँकि ये बुराइयाँ प्रश्नगत सामान्य या सार्वभौमिक कानूनों के कार्यान्वयन के कुछ विशेष परिणामों का प्रतिनिधित्व करती हैं, इसलिए सर्वशक्तिमान ईश्वर इन कानूनों को सुरक्षित रखने के लिए बुराई की इन दुर्लभ घटनाओं को बनाता है, जो सार्वभौमिक लाभों के साधन हैं। लेकिन इन छोटी-छोटी बुराइयों का सामना करते हुए, वह अपनी दया और अपने प्रभुता के विशेष अनुग्रहों की विशेष सहायता से आपदाओं और क्लेशों से पीड़ित व्यक्तियों की मदद के लिए पुकार का जवाब देता है।

यह दर्शा कर कि वह जिस तरह चाहता है वैसा कार्य करता है; यह दर्शा कर कि (मानव जाति और जिन्न को स्वतंत्र इच्छा से सुसज्जित किया गया है और वे अपने निर्णयों और कार्यों के लिए जिम्मेदार हैं); यह याद दिला कर कि ब्रह्मांड में जो कुछ भी घटित होता है और जो कुछ भी किसी प्राणी द्वारा किया जाता है, वह उसकी अनुमति से होता है; यह स्पष्ट कर कि सार्वभौमिक नियम भी हमेशा उसकी इच्छा के अधीन होते हैं, और यह कि एक दयालु प्रभु उन व्यक्तियों को सुनता है जो इन नियमों के दबाव में चिल्लाते हैं और वह उनकी सहायता करता है।

अपने अनुग्रहों के साथ उनकी सहायता के लिए आता है - यह सब प्रदर्शित करके, उसने न केवल अपने सर्व-सुंदर नामों की अनंत अभिव्यक्तियों के लिए एक अनंत क्षेत्र खोल दिया है, बल्कि उसने अपने सार्वभौमिक कानूनों के सामने अपनी विशेष कृपा और सहायता की अभिव्यक्तियों के द्वार भी खोल दिए हैं, इस प्रकार अपने सेवकों द्वारा खुद को प्रिय बना दिया है।

चूँकि ईश्वरीय एकता के इस दूसरे संकेत को प्रकाश के दीप (रिसाले-ए नूर) में संभवतः सौ स्थानों पर समझाया गया है , इसलिए यह संक्षिप्त संकेत पर्याप्त होगा।

तीसरा संकेत और प्रमाण, अर्थात् असंख्य
ईश्वरीय एकता के टिकट वाक्यांशों द्वारा इंगित "उसका है
प्रभुता और उसकी स्तुति है”

कणों से लेकर ग्रहों तक, सभी चीज़ों, विशेष और सार्वभौमिक, के चेहरों पर एक मोहर होती है, जो इस तरह की होती है कि जैसे दर्पण में सूर्य की छवि आकाश में सूर्य को इंगित करती है, वैसे ही इन असंख्य मोहरों से बना रूपक दर्पण पूर्ण अनंत काल के सूर्य को इंगित करता है और ईश्वर की एकता की गवाही देता है। चूँकि इनमें से कई मोहरों को द लैम्प ऑफ़ लाइट में विस्तार से समझाया गया है, इसलिए यहाँ हम उनमें से केवल तीन को ही संक्षेप में इंगित करेंगे।

वे इस प्रकार हैं:

जिस प्रकार विभिन्न प्राणियों में परस्पर सहायता, एकता, समानता तथा मिलजुलकर रहने की एकता की विशाल मुहर समूचे ब्रह्माण्ड पर लगाई गई है, उसी प्रकार पृथ्वी पर भी ईश्वरीय एकता की एक ऐसी ही मुहर लगी है, जिसमें लाखों-लाखों वनस्पतियों तथा पशु-जातियों को, जो सर्व-महिमावान की एक भव्य सेना का निर्माण करती हैं, प्रत्येक को पूर्ण व्यवस्थितता के साथ तथा ठीक समय पर विशेष हथियार, वर्दी, भोजन तथा निर्देश दिए जाते हैं। अन्य प्राणियों की भाँति मनुष्य के चेहरे पर भी ईश्वरीय एकता की मुहर लगी है, जो एक मनुष्य की विशेषताओं को अन्य सभी से अलग करती है। इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी के सिर पर, चाहे वह बड़ा हो या छोटा, या अनेक सदस्यों वाली प्रजाति का अंग हो या कुछ सदस्यों वाली, ईश्वरीय एकता की एक मुहर लगी है, जो उसे अन्य सभी से अलग करती है। जीवित प्राणियों पर लगाई गई ये मुहरें विशेष रूप से चमकीली हैं; वस्तुतः, प्रत्येक जीव स्वयं एकता की मुहर, एकत्व की मुहर तथा शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले उस एक का हस्ताक्षर है।

सभी फूल, फल, पत्ते, पौधे और जानवर ईश्वरीय एकता की ऐसी मुहर और शाश्वत रूप से प्रार्थना करने वाले की मुहर हैं कि प्रत्येक पेड़, उदाहरण के लिए, एक ईश्वरीय संदेश है, प्रत्येक प्रजाति सर्व-दयालु की पुस्तक है, और प्रत्येक उद्यान सर्व-महिमावान का आदेश है। इस प्रकार, जितने फूल हैं, उतने ही टिकट हैं, जितने फल हैं, और जितनी पत्तियां हैं, उतनी ही मुहरें उस संदेश पर हैं जो पेड़ है।

और अपने लेखक को दिखाने के लिए, जितने सदस्य हैं, उतनी ही मुहरें किताब में लगाई गई हैं, जो कि प्रत्येक प्राणी की प्रजाति है। इसी तरह, अपने शासक को ज्ञात करने के लिए, जितने पौधे, पेड़ और जानवर हैं, उतनी ही मुहरें बाग़ के आदेश पर लगाई गई हैं। इसके अलावा, प्रत्येक पेड़ पर ईश्वरीय एकता की चार अन्य मुहरें हैं: इसके मूल पर, इसके अंत में, इसके बाहर और इसके अंदर, जैसा कि घोषणा में शामिल ईश्वरीय नामों से संकेत मिलता है कि वह प्रथम, अंतिम, सर्व-बाहरी और सर्व-अंदर है (कुरान, 57:3)।

- जैसा कि नाम द फर्स्ट से पता चलता है, वह बीज जिससे फल देने वाला वृक्ष उगता है, एक छोटा-सा बक्सा है जिसमें वृक्ष के कार्यक्रम, विषय-वस्तु और योजनाएं समाहित होती हैं; यह एक कार्यक्षेत्र की तरह है जिस पर विकास के लिए आवश्यक उपकरण, प्रणालियां और अपेक्षित वस्तुएं मिलती हैं; यह एक मशीन की तरह है जो अपने जीवन के आरंभ में आवश्यक भोजन की छोटी मात्रा का उत्पादन करती है।

- जैसा कि नाम द लास्ट हमें दिखाता है, एक वृक्ष का परिणाम या फल एक निर्देश पत्र है जो वृक्ष की संरचना, उसके गुणों और अस्तित्व के चरणों का वर्णन करता है; यह एक घोषणा है जो उसके कार्यों, लाभों और विशेष विशेषताओं को बताती है, और यह एक सारांश है जो उस वृक्ष के हृदय में स्थित बीजों के माध्यम से उसके भावी साथियों और संतानों की भविष्यवाणी करता है।

- जैसा कि नाम ऑल-आउटवर्ड से पता चलता है, जिस रूप और आकार में पेड़ को सजाया गया है वह एक कुशलता से गढ़े और कढ़ाई किए गए परिधान के रूप में है, जिसे इतनी सटीकता से काटा, छांटा और सजाया गया है कि यह पेड़ और उसकी सभी शाखाओं, सदस्यों और भागों के कद के लिए बिल्कुल सही है। पेड़ को इतनी बारीकी से, इतने सार्थक ढंग से और अनुपात की इतनी समझ के साथ बनाया गया है कि यह एक स्तुति, एक संदेश, एक किताब है।

- जैसा कि नाम द ऑल-इनवर्ड से पता चलता है, एक पेड़ के भीतर चलने वाला कार्यक्षेत्र एक ऐसा कारखाना है जो सभी भागों और उपकरणों का उत्पादन करता है।

पेड़ के सदस्यों को एक साथ लाता है और इन भागों और सदस्यों की ज़रूरतों, आने-जाने और जाने-आने को ध्यान में रखते हुए, प्रत्येक के लिए आवश्यक भोजन को सही नियमितता और व्यवस्था के साथ भेजता और वितरित करता है। यह कारखाना बिजली की गति से, घड़ी सेट करने की आसानी के साथ और सेना को मार्चिंग ऑर्डर देने की एकरूपता के साथ काम करता है।

संक्षेप में, एक पेड़ की उत्पत्ति एक संदूक और एक कार्यक्रम है; इसका अंत एक निर्देश पत्र और एक नमूना है, जबकि बाहरी हिस्सा एक कुशलता से तैयार और कढ़ाई किया हुआ वस्त्र है और इसका अंदर एक कारखाना या कार्यक्षेत्र है। ये चार पहलू आपस में जुड़े हुए हैं, और एक पूरे के रूप में एक सर्वोच्च मुहर, या यहाँ तक कि एक दिव्य महानतम नाम प्रकट करते हैं, जो स्वयं-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि एकता के अद्वितीय, एकल निर्माता के अलावा कोई भी नहीं, जो पूरे ब्रह्मांड को निर्देशित करता है, इन कार्यों को कर सकता है। पेड़ों की तरह, प्रत्येक जीवित प्राणी की उत्पत्ति, अंत, बाहर और अंदर दिव्य एकता की मुहर, दिव्य विशिष्टता की मुहर और दिव्य एकता का हस्ताक्षर होता है।

इन तीनों उदाहरणों में पेड़ों के समान ही वसंत भी है, जो असंख्य फूलों वाले पेड़ जैसा दिखता है। बीज और जड़ें सौंपती हैं-

शरद ऋतु के हाथों में सौंपे गए वस्त्रों पर प्रथम नाम की मुहर लगी होती है। फल, अनाज और सब्ज़ियाँ जो ग्रीष्म ऋतु की गोद में डाली जाती हैं और उसके आंचल को भर देती हैं, उन पर अंतिम नाम की मुहर लगी होती है। लाखों डिज़ाइनों से सजे वस्त्र, जिन्हें वसंत ऋतु स्वर्ग की सुंदर लड़की की तरह पहनती है, उन पर सर्व-बाह्य नाम की मुहर लगी होती है। और शाश्वत चाहने वाले के कारखाने जो वसंत ऋतु में धरती के अंदर काम करते हैं, दयालु के उबलते हुए कड़ाहे और भगवान के रसोई घर जिनमें भोजन पकाया जाता है, उन सभी पर सर्व -बाह्य नाम की मुहर लगी होती है।

हर प्रजाति, उदाहरण के लिए मानव जाति, एक पेड़ की तरह है। इसकी जड़ें और बीज अतीत में हैं और इसके फल और परिणाम भविष्य में हैं, एक प्रजाति के रूप में इसका जीवन और निरंतरता कुछ व्यवस्थित कानूनों के माध्यम से विनियमित होती है।

और अपनी स्पष्ट अव्यवस्था के बावजूद, इसकी वर्तमान स्थिति, जो मानव व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सिद्धांतों द्वारा शासित है, दिव्य एकता की मुहर लगाती है, साथ ही सद्भाव और सामंजस्य की एक छिपी हुई, व्यवस्थित मुहर भी है, जो बदले में उसी एकता को इंगित करती है। उनके स्पष्ट भ्रम के बावजूद, सामान्य मानव जीवन के मामले और परिस्थितियाँ, जिन पर दिव्य नियति और आदेश के सिद्धांत शासन करते हैं, भी दिव्य एकता की मुहर लगाती हैं।

निष्कर्ष

आगे दिव्य एकता द्वारा इंगित विश्वास के अन्य स्तंभों का संक्षिप्त उल्लेख किया गया है।

आइए, अब कम से कम एक बार उन तीन फलों, तीन तथ्यों पर विचार करें जो ईश्वरीय एकता और इसकी पुष्टि को आवश्यक बनाते हैं और तीन प्रमाणों पर जो प्रथम, द्वितीय और तृतीय अवस्थाओं के शीर्षकों के अंतर्गत स्पष्ट किए गए हैं: क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, सर्वदयालु और सर्वज्ञ निर्माता, जिसका ब्रह्मांड पर पूर्ण प्रभुत्व और नियंत्रण है, जो कभी भी सबसे छोटे इलाज या सबसे अल्प आभार को भी अनदेखा या अनदेखा नहीं करता है, जो कला के सबसे छोटे उदाहरण के प्रति भी उदासीन नहीं है, जैसे कि एक मक्खी के पंख में प्रकट होता है, और जो इसे किसी और को नहीं सौंपता है, जो सबसे छोटे सामान्य बीज को भी उतने ही कर्तव्य और ज्ञान के उदाहरण देता है जितना कि वह एक विशाल वृक्ष को देता है, और जो अपनी दया, करुणा और ज्ञान को अपनी सभी कलाओं के माध्यम से बोधगम्य बनाता है, और हर माध्यम से खुद को ज्ञात करता है और हर उपकार के माध्यम से प्यार करता है - क्या यह संभव है कि वह मुहम्मदी सत्य के गुणों के प्रति उदासीन हो,13 उस पर शांति और आशीर्वाद हो, उसकी महिमा और इस्लाम की रोशनी?

क्या यह संभव है कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की पैगम्बरियत, जो समस्त प्राणियों को सुशोभित करती है, उन्हें आनंद से भर देती है, जो ब्रह्माण्ड को प्रकाशित करती है और आकाशों तथा पृथ्वी को पुनर्जीवित करती है?

खुशी और जीत की ध्वनि के साथ राष्ट्र, जिसने दुनिया के लगभग आधे हिस्से और मानवता के पांचवें हिस्से को चौदह शताब्दियों तक अपने भौतिक और आध्यात्मिक शासन के अधीन रखा है और ब्रह्मांड के निर्माता के कारण और उसके नाम पर उस शानदार शासन को कायम रखा है - क्या यह संभव है कि उसका संदेशवाहक होना ब्रह्मांड के अस्तित्व के लिए निर्माता के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक नहीं है, या यह उसकी सबसे महत्वपूर्ण रोशनी और दर्पणों में से एक है? क्या यह संभव है कि अन्य पैगंबर, जिन्होंने मुहम्मद के समान ही सत्य की सेवा की, - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, वे भी निर्माता के संदेशवाहक, मित्र और अधिकारी नहीं रहे होंगे? भगवान न करे, पैगंबर के चमत्कारों की संख्या!

---

13 मुहम्मदी सत्य सार्वभौमिक सत्तामूलक, नैतिक और आध्यात्मिक सत्य या अर्थ है जिसे पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ईश्वर के दूत के रूप में प्रस्तुत करते हैं। (ट्र.)

और क्या यह संभव है कि वह सर्वज्ञ और परम दयालु सृष्टिकर्ता, जो एक शाखा या टहनी जैसी कम से कम महत्वपूर्ण चीज़ में ज्ञान के सौ फल और उदाहरण जोड़ता है, और अपनी बुद्धिमत्ता और सर्वव्यापी दयालुता के असाधारण उदाहरणों के माध्यम से अपने प्रभुत्व को ज्ञात और प्रिय बनाता है - क्या यह संभव है कि वह पुनरुत्थान न लाकर, जो उसकी शक्ति के लिए वसंत के निर्माण के समान आसान है, या खुशी और शाश्वत स्थायित्व का निवास न खोलकर, स्वयं अपनी सारी बुद्धिमत्ता और दया, और यहाँ तक कि अपनी प्रभुत्व और पूर्णता को अस्वीकार कर दे या अस्वीकार करवा दे? क्या यह संभव है कि वह उन सभी प्राणियों को शाश्वत विनाश की निंदा करे, जिनसे वह इतना प्यार करता है? भगवान न करे, एक लाख बार! भगवान की परम कृपा और सुंदरता इस तरह के पूर्ण घृणा से पूरी तरह मुक्त है।

एक लंबा कोष्ठकीय नोट: एक प्रश्न

पुनरुत्थान के विषय में

कुरान की बार-बार की गई घोषणाएँ, यह तो बस एक ही धमाका है (36:53) और क़यामत का मामला तो बस पलक झपकने भर का है, या उससे भी जल्दी (16:77) यह दर्शाता है कि सर्वोच्च पुनरुत्थान एक पल में होगा। हमारी सीमित समझ को एक ठोस सादृश्य की आवश्यकता है ताकि हम इस तरह की अनोखी, चमत्कारी घटना से सहमत हो सकें और उसे स्वीकार कर सकें।

उत्तर: पुनरुत्थान से संबंधित तीन बातें हैं: आत्माएं अपने शरीर में वापस लौट जाएंगी, शरीर पुनर्जीवित हो जाएंगे, और शरीर का पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान होगा।

पहला मामला: आत्माओं के अपने शरीर में वापस लौटने का एक उदाहरण: एक बेहद अनुशासित सेना के सैनिकों की कल्पना करें। आराम करने के लिए सभी दिशाओं में बिखर जाने के बाद, उन्हें एक ज़ोरदार बिगुल ध्वनि के साथ वापस बुलाया जा सकता है। महादूत इसराफिल की तुरही निश्चित रूप से बिगुल से कम शक्तिशाली नहीं है। इसके अलावा, हमारी आत्माएँ - जिनमें से प्रत्येक ने "हाँ, तुम हो!" के साथ इस सवाल का जवाब दिया कि "क्या मैं तुम्हारा भगवान नहीं हूँ?", जब वे परमाणुओं की दुनिया में थे, तब अनंत काल की दिशा से आ रहे थे - किसी भी सैनिक की तुलना में अधिक आज्ञाकारी, अनुशासित और विनम्र हैं।14 तीसवाँ

---

14 अल्लाह क़ुरआन में कहता है: और (याद करो, ऐ रसूल!) जब तुम्हारे रब ने आदम की संतान से उनकी कमर से उनकी संतान निकाली, फिर उनसे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही दी, "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूँ?" उन्होंने कहा, "हाँ, हम गवाही देते हैं।" (7:172)

जब हमारे परिप्रेक्ष्य से और समय और स्थान के ढांचे के भीतर देखा जाता है, तो सृष्टि एक अवरोही और आरोही रेखा का अनुसरण करती है जो कई चरणों या क्षेत्रों से गुजरती है; अस्तित्व-

वचन ने स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया है कि न केवल आत्माएं, बल्कि सभी परमाणु भी सर्वशक्तिमान की सेनाएं हैं, जिनमें से प्रत्येक एक कर्तव्यनिष्ठ सैनिक है।

दूसरा मामला: पुनर्जीवित हो रहे शरीरों के लिए एक उदाहरण:

किसी बड़े शहर में उत्सव के समय, शहर के पावर स्टेशन में एक स्विच दबाकर अनगिनत दीपों को तुरंत जलाया जा सकता है। एक ही पावर स्टेशन से पूरी दुनिया में अनगिनत दीपों को जलाना भी संभव होगा, अगर ऐसा कोई हो। अगर ईश्वर की रचना, जैसे बिजली, एक सेवक और इस क्षणभंगुर क्षेत्र में एक मोमबत्ती धारक, अपने निर्माता के प्रशिक्षण और अनुशासन के कारण इस गुण को प्रकट कर सकता है, तो पुनरुत्थान निश्चित रूप से पलक झपकते ही और दिव्य बुद्धि के व्यवस्थित नियमों के ढांचे के भीतर हो सकता है, जिसका प्रतिनिधित्व और प्रदर्शन उनके हज़ारों प्रकाश देने वाले सेवकों, जैसे बिजली द्वारा किया जाता है।

तीसरा मामला: क़यामत के दिन मानव शरीर के पुनर्निर्माण और पुनरुत्थान के लिए हज़ारों उपयुक्त उपमाएँ हैं। उदाहरण के लिए, विचार करें कि किस तरह पेड़, जो लोगों की तुलना में कहीं ज़्यादा संख्या में हैं, हर वसंत की शुरुआत के कुछ दिनों के भीतर अपने सभी पत्तों के साथ पिछले साल के पत्तों के बिल्कुल समान और लगभग समान रूप से बहाल हो जाते हैं। उस तरीके पर विचार करें जिसमें पेड़ों के पत्ते, फूल और फल पिछले वसंत की तरह ही अत्यधिक तेज़ी से फिर से बनाए जाते हैं। अनगिनत बीजों, गुठलियों और जड़ों के अचानक जागने, खुलने और जीवित होने पर विचार करें, जो वसंत के विकास का मूल हैं।

इस रेखा के भीतर ही विचार है। जैसे कि एक लेख, उदाहरण के लिए, अस्तित्व के कई चरण होते हैं, उदाहरण के लिए, लेखक के दिमाग में मौजूद, और फिर एक योजना के रूप में, और फिर एक लिखित रूप में, उसी तरह, प्रत्येक प्राणी का ईश्वर के ज्ञान में एक आदिम अस्तित्व होता है, फिर नियति द्वारा निर्धारित एक सामान्य रूप के रूप में, और फिर उसके भौतिक अस्तित्व के चरणों में। चूँकि हमारी चेतना हमारे भौतिक अस्तित्व से नहीं, बल्कि हमारे आध्यात्मिक अस्तित्व से आती है, इसलिए यह पूरी तरह से संभव है कि ईश्वर ने हमें भेजने से पहले हमसे बात की हो, या हमें दुनिया में भेजने के बाद, हमारी आत्मा या हमारी प्रकृति के माध्यम से बात की हो। उसने यह वाचा हमारे विवेक को सौंपी है, जो हमारी सचेत प्रकृति का निर्माण करता है।

कुरान में यह भी कहा गया है: तुम ईश्वर पर अविश्वास कैसे कर सकते हो, जबकि तुम मर चुके थे और उसने तुम्हें जीवन दिया? फिर वह तुम्हें मृत्यु देता है। फिर वह तुम्हें फिर से जीवित करेगा; और फिर तुम उसके पास वापस लौट जाओगे (2:28)। तुम मर चुके थे, यह अभिव्यक्ति यह दर्शाती है कि मानव जाति के प्रत्येक सदस्य का परमाणुओं या कणों की दुनिया में किसी न किसी तरह का अस्तित्व है। यह ईश्वर के ज्ञान में पहले से ही निर्धारित है कि तत्वों, पौधों और जानवरों की दुनिया में कौन से परमाणु किस व्यक्ति के शरीर का निर्माण करेंगे। इसलिए मानव शरीर का निर्माण करने वाले परमाणुओं की गति में संयोग या संयोग के लिए कोई जगह नहीं है।

यह अभिव्यक्ति यह भी बताती है कि चूंकि मृत्यु जीवन के बाद आती है, इसलिए वे परमाणु स्वयं उस चीज से रहित हैं जिसे हम जीवन के रूप में पहचानते हैं, जो ईश्वर की ओर से एक प्रत्यक्ष उपहार है, जो स्पष्ट रूप से उनकी ओर इशारा करता है। (ट्र.)

विचार करें कि कैसे खड़े कंकालों जैसे दिखने वाले पेड़ अचानक एक ही आदेश पर "मृत्यु के बाद जी उठने" के संकेत दिखाने लगते हैं। अनगिनत छोटे जीवों के आश्चर्यजनक पुनर्जीवन पर विचार करें, खास तौर पर मक्खियों की विभिन्न प्रजातियों का पुनरुत्थान - खास तौर पर वे जो लगातार अपने चेहरे, आंखों और पंखों को साफ करते हुए हमें हमारे अनुष्ठानिक स्नान और स्वच्छता की याद दिलाते हैं, और हमारे चेहरों को सहलाते हैं - कुछ ही दिनों में, जबकि उनकी संख्या सभी मनुष्यों से कहीं ज़्यादा है।

यह संसार बुद्धि का क्षेत्र है, परलोक शक्ति का निवास है।

इस प्रकार, ईश्वरीय नामों जैसे कि सर्वज्ञ, सर्व-व्यवस्था करने वाला, सर्व-निपटाने वाला और सर्व-पालन करने वाले की आवश्यकताओं के अनुसार, दुनिया में सृजन क्रमिक है और एक निश्चित समयावधि में फैलता है। यह भगवान के रूप में ईश्वर की बुद्धि द्वारा अपेक्षित है। लेकिन यह देखते हुए कि परलोक में शक्ति और दया बुद्धि से अधिक स्पष्ट हैं, उस क्षेत्र में सृजन तात्कालिक है और पदार्थ, स्थान, समय या अवधि से संबंधित किसी भी चीज़ से मुक्त है। यह दिखाने के लिए कि यहाँ जो करने में एक दिन या एक साल लगता है, वह परलोक में एक पल में पूरा हो जाएगा, कुरान कहता है: क़यामत का मामला पलक झपकने के समान है, बल्कि उससे भी तेज़ (16:77)। यदि आप इस बात की पुख्ता पुष्टि चाहते हैं कि पुनरुत्थान अगले वसंत की तरह ही निश्चित रूप से आएगा, तो दसवें और उनतीसवें शब्दों का अध्ययन करें।

पुनरुत्थान का एक और मामला इस दुनिया का विनाश है।

यदि ईश्वर के आदेश पर कोई उल्कापिंड या क्षुद्रग्रह इस ग्रह से टकरा जाए, तो हमारा निवास स्थान उसी प्रकार नष्ट हो जाएगा, जिस प्रकार एक महल जिसे बनाने में दस वर्ष लगे हों, एक मिनट में नष्ट हो जाता है।

पुनरुत्थान से सम्बन्धित चार बातों के सम्बन्ध में उपरोक्त संक्षिप्त व्याख्या फिलहाल पर्याप्त है, अब हम अपने मुख्य विषय पर लौट सकते हैं।

* * *

क्या यह संभव है कि चमत्कारिक व्याख्या करने वाला कुरान, ब्रह्मांड के सभी महान सत्यों का वाक्पटु व्याख्याकार, ब्रह्मांड के निर्माता की सभी परिपूर्णताओं की चमत्कारिक भाषा और उसके सभी उद्देश्यों का अद्भुत संग्रह, उस निर्माता का वचन न हो? भगवान न करे, इसकी आयतों में जितने रहस्य हैं, उससे कहीं अधिक!

इसके अलावा, क्या यह संभव है कि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता अपने जीवित, चेतन प्राणियों को उनकी असंख्य भाषाओं में एक दूसरे के साथ संवाद करने के लिए प्रेरित करे, और वह उनकी आवाज़ें सुने और जाने, और जो वे कहते हैं, उसे जाने,

अपने कार्यों और नेमतों के साथ उन्हें स्पष्ट रूप से जवाब देते हुए, फिर भी खुद न बोलें या बोलने में असमर्थ हों? क्या ऐसी कोई बात संभव है? चूँकि यह स्पष्ट है कि वह बोलता है और उसके भाषण का मुख्य वक्ता और उसे सबसे अच्छी तरह समझने वाला इंसान ही है, तो निश्चित रूप से, सभी पवित्र शास्त्र और सबसे महत्वपूर्ण रूप से कुरान, उसके शब्द हैं।

इसके अलावा, खुद को ज्ञात करने, प्यार करने और प्रशंसा करने के लिए, और अपने असंख्य उपकारों से जीवों को संतुष्ट करके, उनकी कृतज्ञता को अपने प्रभुत्व की उदार गतिविधियों और अभिव्यक्तियों के प्रति प्रतिक्रिया बनाने के लिए, सर्वज्ञ निर्माता ने ब्रह्मांड को, इसके सभी क्षेत्रों और तत्वों के साथ, अपने जीवों के लिए एक कर्तव्यपरायण सेवक, एक निवास स्थान, एक प्रदर्शन का स्थान और एक भोज बनाया है। फिर, हजारों जीवित प्राणियों को गुणा करने की उनकी इच्छा ऐसी है कि वे उन पेड़ों की पत्तियों को जो फल नहीं देते हैं, जैसे कि चिनार और एल्म, कई प्रकार के जीवित प्राणियों के दल के लिए गर्भ, पालना और भोजन-भंडार के रूप में काम करते हैं, जो हवा में उनका स्मरण और महिमा करते हैं। क्या यह बिल्कुल भी संभव है कि जिसने यह सब किया है वह उन सुशोभित स्वर्ग और प्रकाश-फैलाने वाले सितारों को खाली, उद्देश्यहीन और बिना मालिक, जीवन, आत्मा या निवासियों के छोड़ दे? दूसरे शब्दों में, क्या यह कल्पना की जा सकती है कि वह उन्हें स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के बिना छोड़ देगा?

भगवान न करे, उन स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों की संख्या कम हो!

इसके अलावा, सर्वज्ञ निर्माता और निर्देशक सबसे सामान्य पौधे या सबसे छोटे पेड़ की उत्पत्ति और अंत को स्थापित और अंकित करता है, साथ ही इसके बीजों और फलों में इसके पूरे जीवन को अपने भाग्य की कलम से एकदम सही क्रम में स्थापित और अंकित करता है। वह विशाल झरने की उत्पत्ति और परिणामों को भी एकदम सही क्रम और भिन्नता के साथ स्थापित और अंकित करता है, जैसे कि वह एक ही पेड़ हो।

वह दर्शाता है कि वह सबसे तुच्छ दिखने वाली चीज़ के प्रति भी कभी उदासीन नहीं रहता। तो क्या यह संभव है कि जो यह सब करता है वह मानवता के कार्यों और कर्मों को रिकॉर्ड न करे, जो कि, यह देखते हुए कि मानवता सृष्टि का सबसे विशिष्ट फल है और पृथ्वी पर उसका प्रतिनिधि है, बहुत महत्वपूर्ण हैं? क्या यह संभव है कि वह मानव जाति के कार्यों और कर्मों को शामिल न करे, जिसका अन्य सभी प्रकार के प्राणियों पर पर्यवेक्षण की भूमिका है, जो कि भाग्य या उसके निर्धारण के क्षेत्र में है? क्या यह कल्पना की जा सकती है कि वह इस बात से बेपरवाह रहेगा कि मनुष्य पृथ्वी पर क्या करते हैं? भगवान न करे, सभी मनुष्यों के कर्मों की संख्या के लिए, जिन्हें परलोक के तराजू पर तौला जाएगा।

संक्षेप में, अपने सभी सत्यों के साथ, ब्रह्मांड घोषणा करता है:

मैं ईश्वर, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों, उसके पैग़म्बरों, अंतिम दिन और ईश्वरीय नियति में विश्वास करता हूँ - मेरा मानना है कि जो भी अच्छाई या बुराई है, वह ईश्वर की अनुमति और रचना से है, और मृत्यु के बाद पुनरुत्थान सत्य है। मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद उसके पैग़म्बर हैं, ईश्वर उन पर और उनके परिवार और साथियों पर कृपा करें, उन्हें शांति प्रदान करें। आमीन।

ईश्वरीय एकता के विषय में प्रार्थना

नीचे इमाम अली (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) की ओर से एक दुआ है जो हम तक पहुंची है। इसमें कुछ और जोड़ते हुए, हम इसे उनकी उच्च भाषा में और अपनी भाषा में उनकी ओर से अद्वितीय, एकता वाले ईश्वर के दरबार में पेश करते हैं।

प्रार्थना

हे ईश्वर! आकाश में कोई घूमने वाला पिंड नहीं है, कोई ग्रह नहीं है, कोई तारे नहीं हैं...

वायुमंडल में कोई बादल नहीं हैं, न ही गड़गड़ाहट और बिजली की कोई चमक है...

पृथ्वी पर न तो पेड़-पौधों की बहुतायत है, न पानी की बाढ़ है, न जानवर हैं, न अद्भुत प्राणी हैं...

समुद्र में पानी की एक बूँद भी नहीं है, न ही एक मछली,
ना ही कोई अजीब प्राणी...
पहाड़ों पर न तो पत्थर हैं, न पौधे, न खनिजों का खजाना...

पेड़ों पर न पत्ते हैं, न फूल हैं, न फल हैं...
जीवित प्राणियों के शरीर में कोई प्रक्रिया नहीं होती, कोई अंग नहीं होते, कोई सुव्यवस्थित प्रणाली नहीं होती...
मानव हृदय में कोई विचार नहीं, कोई प्रेरणा नहीं, कोई प्रबुद्ध विश्वास नहीं...

लेकिन सभी आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता के साक्षी हैं, और आपकी एकता के प्रमाण हैं, और आपके प्रभुत्व के अधीन हैं।

जिस शक्ति से तूने आकाशों और धरती को वश में किया है, उसी शक्ति से मेरी शारीरिक आत्मा और मेरी आकांक्षा को मेरे वश में कर दे; अपने बन्दों के दिलों को रिसाले नूर के वश में कर दे और सभी प्राणियों और रूहों के दिलों को, चाहे वे ऊँचे हों या नीचे, क़ुरआन और ईमान की सेवा में लगा दे, ऐ सुननेवाले, ऐ समीप रहनेवाले, ऐ प्रार्थनाओं के उत्तर देनेवाले!

और सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है।

तू पवित्र है! हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

तीसरी किरण

तीसरी किरण

प्रार्थना का ग्रंथ

परिचय

T उनका यह ग्रंथ निश्चित रूप से सबसे महत्वपूर्ण साबित होता है विश्वास के मूल तत्व, जैसे कि ईश्वर का अस्तित्व, उनकी एकता और एकरूपता, उनके प्रभुत्व की महिमा, उनकी शक्ति की विशालता, उनकी दया की व्यापकता, उनकी संप्रभुता की सार्वभौमिकता, उनके ज्ञान की सर्व-समावेशीता और उनकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति। पुनरुत्थान के इसके संकेत, विशेष रूप से अंत में जिन पर जोर दिया गया है, वे भी शक्तिशाली हैं।

इस विश्वास के प्रमाण का प्रत्येक परिचयात्मक अंश आठ पर पहुँचता है निष्कर्ष, साथ ही उन्हें साबित करने के लिए इस्तेमाल किए गए साक्ष्य।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> आकाशों और धरती को पैदा करने में, रात और दिन के आने-जाने में, समुद्र में चलने वाली नावों में, लोगों को लाभ पहुँचाने वाली नावों में, और पानी में भी, जिसे अल्लाह ने आकाश से बरसाया, फिर उससे धरती को उसके मरने के पश्चात जिलाया और उसमें हर प्रकार के जीव-जन्तु फैला दिए, और हवाओं को चलाने में, और धरती और आकाश के बीच बादलों को वश में करने में, इन सबमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं, जो बुद्धि से काम लें। (2:164)

प्रार्थना का यह ग्रंथ उपरोक्त पर टिप्पणी का एक रूप है
कविता.

हे ईश्वर, हे मेरे प्रभु!

मैं ईमान की आँखों से कुरान की शिक्षा और प्रकाश को, ईश्वर के सबसे महान् रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षाओं को, तथा उस दिव्य नाम के मार्गदर्शन को देखता हूँ जो सर्वज्ञ है:

आकाश में एक भी हलचल नहीं है लेकिन यह आपके संकेत देता है
अस्तित्व अपनी व्यवस्थितता के माध्यम से;

कोई भी आकाशीय पिंड ऐसा नहीं है जो बिना किसी दृश्य सहारे के चुपचाप खड़े होकर अपने कर्तव्यों का पालन करते हुए आपके प्रभुत्व और एकता का संकेत या साक्ष्य न देता हो;

ऐसा एक भी तारा नहीं है जो अपनी सर्वाधिक आनुपातिक संरचना, अपनी सटीक क्रमबद्ध स्थिति, अपने उज्ज्वल मुखमंडल, तथा अन्य सभी तारों से अपनी समानता की छाप के माध्यम से आपकी एकता या आपकी दिव्यता की भव्यता को प्रदर्शित या साक्ष्य न देता हो;

बारह ग्रहों में से एक भी ऐसा नहीं है जो आपके परम आवश्यक अस्तित्व की गवाही न देता हो और अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण गति, आपके कानून के अधीनता, अपने व्यवस्थित कर्तव्यों और उनकी परिक्रमा करने वाले उपग्रहों के माध्यम से आपकी दिव्यता के प्रभुत्व को इंगित न करता हो।

वास्तव में, जिस प्रकार प्रत्येक आकाश आपके परम आवश्यक अस्तित्व की गवाही देता है, उसी प्रकार हे आकाश और पृथ्वी के रचयिता, समस्त आकाश, समग्र रूप से, आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता की स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं। हे आप जो सभी परमाणुओं और उनके द्वारा निर्मित यौगिकों को नियंत्रित करते हैं और जिन्होंने सभी ग्रहों को अपने अधीन कर रखा है, उन्हें उनके उपग्रहों के साथ परिक्रमा करवाते हैं, ये सभी आपकी एकता और एकरूपता की इतनी शक्तिशाली गवाही देते हैं कि आकाश में तारों की संख्या के चमकदार प्रमाण उनकी गवाही की पुष्टि करते हैं।

अपने असाधारण रूप से विशाल शरीरों के साथ, जो आश्चर्यजनक गति से चलते हैं, ये निष्कलंक आकाश एक व्यवस्थित सेना या असंख्य विद्युत दीपों से प्रकाशित शाही उत्सव जैसा दिखता है। वे आपके आधिपत्य की महिमा और आपकी शक्ति की महानता को सबसे स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं, जिसने सभी चीजों का निर्माण किया है; वे आपके प्रभुत्व के असीम विस्तार को इंगित करते हैं, जो आकाश पर हावी है, और आपकी दया, जो सभी जीवित प्राणियों को गले लगाती है। वे अत्यंत निश्चितता के साथ, आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति की गवाही देते हैं, जो सभी कार्यों और स्थितियों में प्रवेश करता है और उन्हें नियंत्रित करता है।

स्वर्गीय प्राणियों और आपकी बुद्धि की व्यापकता के लिए। यह गवाही और संकेत इतना स्पष्ट है कि ऐसा लगता है जैसे तारे स्वर्ग की गवाही के शब्द और उनके मूर्त प्रकाशमान प्रमाण हों।

जहाँ तक सितारों की बात है, जो आज्ञाकारी सैनिकों, सुव्यवस्थित जहाजों, असाधारण विमानों और आश्चर्यजनक दीपों की तरह हैं, वे आपकी दिव्यता के प्रभुत्व की महिमा को प्रदर्शित करते हैं। जैसा कि हम सूर्य से देख सकते हैं, जो सितारों की सेना में एक सैनिक है, और जो कर्तव्य वह हमारी पृथ्वी और उसके अधीन अन्य ग्रहों के संबंध में निभाता है, सूर्य के कुछ साथी सितारों का परलोक की दुनिया से संबंध है, और वास्तव में वे शाश्वत दुनिया के सूर्य हो सकते हैं।

हे अनिवार्यतः विद्यमान, हे एकल, अद्वितीय!

इन अद्भुत सितारों, इन लुभावने सूर्यों और चंद्रमाओं को आपके आदेश, शक्ति, शासन और प्रबंधन के माध्यम से आपके क्षेत्र और आपके स्वर्ग में वश में किया गया है, आदेश दिया गया है और विभिन्न कर्तव्यों का दायित्व सौंपा गया है।

वे सभी आकाशीय पिंड उस एकमात्र रचयिता की महिमा करते हैं, जिसने उन्हें बनाया है, जो उनका प्रशासन करता है, और जो उन्हें घुमाता है; वे उसकी महिमा करते हैं, और अपने स्वभाव की जीभ से कहते हैं, "आप सर्व-महिमावान हैं!", और "ईश्वर सर्व-महान है।" मैं भी उनकी महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करता हूँ।

हे सर्वशक्तिमान, जो अपनी प्रबलता के कारण छिपे हुए हैं।
उनकी महानता के कारण वे प्रकट और छिपे हुए हैं!

मैंने कुरान की शिक्षाओं और निर्देशों के माध्यम से समझा है-
ईश्वर के सबसे महान् रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - का कथन है कि:

जिस प्रकार आकाश अपने सभी तारों के साथ आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देता है, उसी प्रकार वायुमंडल भी अपने बादलों, बिजली, गड़गड़ाहट, हवा और वर्षा के माध्यम से आपके परम आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है।

वास्तव में, यह केवल आपकी दया और बुद्धि से ही संभव है कि निर्जीव और अचेतन बादल, जीवन के जल के रूप में वर्षा करते हैं, ताकि जीवित प्राणियों को इसकी आवश्यकता हो; इसमें संयोग का कोई महत्व नहीं है।

इसके अलावा, बिजली का सबसे चमकीला और सबसे शक्तिशाली रूप होने के कारण, इसकी प्रकाश देने वाली गुणवत्ता के कारण हमें इससे लाभ उठाने का आग्रह करते हुए, बिजली स्वर्ग में आपकी शक्ति पर प्रकाश डालती है।

इसके अतिरिक्त, जो गड़गड़ाहट वर्षा के आने का शुभ समाचार देती है, वह विशाल आकाश को बोलने पर मजबूर कर देती है, और जिसकी महिमा का गरजता हुआ शब्द आकाश में गूंजता है, वह अपनी स्वभावगत जीभ से घोषणा करता है कि

आप सर्व-पवित्र हैं और यह प्रमाणित करता है कि आप समस्त सृष्टि के स्वामी हैं।

फिर, जीवों को उनके जीवनदायी पोषण प्रदान करने तथा उन्हें सांस लेने और तरोताजा करने जैसे अनेक कर्तव्यों को सौंपे जाने पर, हवाएँ कुछ दिव्य उद्देश्यों के कारण वातावरण को एक प्रकार की "मिटाने और पुष्टि करने या लिखने और मिटाने की पट्टिका" में बदल देती हैं, इस प्रकार आपकी शक्ति की गतिविधियों को इंगित करती हैं और आपके अस्तित्व की गवाही देती हैं। इसके अलावा, बादलों से दूध की बूंदों के अपने व्यवस्थित शब्दों के माध्यम से और आपकी दया के माध्यम से जीवों तक भेजी गई वर्षा, जो जीवों के लिए आपकी दया का अवतार है, आपकी दया और आपके व्यापक स्नेह की व्यापकता की गवाही देती है।

हे सर्वदा सक्रिय रहने वाले, हे सर्वगुण संपन्न करने वाले, हे सर्वगुण संपन्न करने वाले!

जबकि बादल, बिजली, गरज, हवा और बारिश व्यक्तिगत रूप से आपके अस्तित्व की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं, कुल मिलाकर, वे इस तथ्य के माध्यम से आपकी एकता और एकरूपता का एक शक्तिशाली संकेत देते हैं कि, प्रकृति में उनके अंतर के बावजूद, वे मौजूद हैं और एक साथ सद्भाव में काम करते हैं और अपने कार्यों में एक-दूसरे की मदद करते हैं। वे आपके प्रभुत्व की भव्यता की भी गवाही देते हैं, जो विशाल वातावरण को चमत्कारों का प्रदर्शन बनाती है और बार-बार इसे भरती और खाली करती है; और आपकी शक्ति की महानता और व्यापकता की भी, जो वातावरण का उपयोग इस तरह करती है मानो वह "लिखने और मिटाने" की एक पटिया हो, और एक स्पंज हो जिसके माध्यम से आप पृथ्वी के बगीचे को सींचते हैं। वे आपकी दया और प्रभुत्व की अकल्पनीय रूप से विशाल और सर्वव्यापी प्रकृति की भी गवाही देते हैं, जो वातावरण के पर्दे के नीचे सभी प्राणियों को गले लगाती और बनाए रखती है।

इसके अतिरिक्त, वायु का अनेक बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों में उपयोग तथा बादलों और वर्षा का अनेक लाभों के लिए उपयोग, जिनके लिए सर्वव्यापी ज्ञान की आवश्यकता होती है, यह स्पष्ट कर देता है कि यदि सर्वव्यापी बुद्धि और सर्वव्यापी ज्ञान न होता, तो उनका इस प्रकार उपयोग नहीं किया जा सकता था।

ऐ वह जो चाहता है, करता है!

आपकी शक्ति, जो ऐसे कार्य करती है जैसे कि वातावरण में पुनरुत्थान के नमूने लगातार प्रदर्शित करना, और गर्मियों को सर्दियों में बदलना और इसके विपरीत और एक नई दुनिया को सामने लाना जबकि एक और भेजना-

यह संकेत देता है कि वह इस दुनिया को परलोक में बदल देगा और उसमें अनंत क्रियाकलाप प्रदर्शित करेगा।

हे सर्वशक्तिमान महामहिम!

वायु, बादल, वर्षा, बिजली और वायुमंडल में गड़गड़ाहट आपके आदेश और आपकी शक्ति के माध्यम से आपके क्षेत्र में अधीनस्थ और कर्तव्यपरायण हैं। ये वायुमंडलीय प्राणी, जो स्वभाव से भिन्न हैं, अपने कमांडर और संप्रभु को पवित्र करते हैं, जो उन्हें तत्काल आदेशों का पालन करने के लिए प्रेरित करते हैं, और वे आपकी दया की प्रशंसा करते हैं।

हे आकाशों और धरती के सर्वशक्तिमान रचयिता!

आपके ज्ञानपूर्ण कुरआन की शिक्षा और महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षाओं के माध्यम से, मैं निम्नलिखित बातों पर विश्वास करने और समझने में सक्षम हुआ हूँ:

जिस प्रकार आकाश अपने तारों के माध्यम से, तथा वायुमंडल अपने तत्वों के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की परम आवश्यकता की गवाही देता है, उसी प्रकार पृथ्वी भी अपने सभी प्राणियों और परिस्थितियों के माध्यम से, तथा उसमें विद्यमान प्राणियों की संख्या के माध्यम से आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देती है।

पृथ्वी पर कोई परिवर्तन नहीं होता, न ही इसके पेड़-पौधों और जानवरों में कोई परिवर्तन होता है - चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष - जैसे कि हर साल नए वस्त्र पहनना, लेकिन वे आपके अस्तित्व और एकता के साक्षी होते हैं।

ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जो आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही न देता हो, क्योंकि उसे दयापूर्वक और उसकी आवश्यकताओं और कमजोरियों के अनुपात में पोषण दिया जाता है, तथा उसे अस्तित्व के लिए आवश्यक वस्तुओं से बुद्धिमानीपूर्वक सुसज्जित किया जाता है।

इसके अलावा, ऐसा कोई भी पौधा या जानवर नहीं है जो हर वसंत में हमारी आंखों के सामने पुनर्जीवित या उत्पन्न होता है, लेकिन यह आपको अपनी उल्लेखनीय कला, इसके उत्कृष्ट घटक भागों, इसकी विशिष्ट विशेषताओं और इसकी संरचना और जीवन में सही क्रम और अनुपात के माध्यम से ज्ञात कराता है।

ये सभी पौधे और जानवर जो आपकी शक्ति के चमत्कार के रूप में पृथ्वी पर छाये हुए हैं, पूर्ण विभेदन और समृद्ध अलंकरण के साथ, और बिल्कुल भी दोष या खामियों के बिना, एक दूसरे से मिलते-जुलते अंडों या बीजों से बनाए गए हैं और जो लगभग एक ही पदार्थों से बने हैं। इस प्रकार, उनके

उनके सर्वज्ञ निर्माता के अस्तित्व, एकता, ज्ञान और असीम शक्ति की गवाही ऐसी है कि यह गवाही सूर्य के अस्तित्व की गवाही देने वाले प्रकाश से भी अधिक शक्तिशाली और चमकदार है।

इसके अलावा, सृष्टि में कोई भी तत्व, जैसे कि हवा, पानी, प्रकाश, अग्नि, या मिट्टी, नहीं है, लेकिन यह आपके अस्तित्व और एकता का साक्ष्य देता है, उन पूर्ण कार्यों को करके जिनके लिए उनकी निर्जीवता के बावजूद चेतना की आवश्यकता होती है, और उनकी सादगी और उनके प्रतीत होने वाले यादृच्छिक वितरण के बावजूद, अदृश्य के खजाने से सभी प्रकार के पूर्ण रूप से विकसित फल और फसलें लाकर।

एक विशाल क्षेत्र पर कब्जा।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, हे सर्वज्ञ खोलने वाले, हे सदा कार्य करने वाले सृष्टिकर्ता!

जिस प्रकार पृथ्वी अपने सभी निवासियों के साथ मिलकर अपने रचयिता के पूर्णतया आवश्यक अस्तित्व की गवाही देती है, उसी प्रकार हे एकमात्र और अद्वितीय, हे दयालु और सर्व-कल्याणकारी, और हे सर्वदाता और सर्व-प्रदायक, अपने चेहरे पर और अपने निवासियों के चेहरों पर लगी मुहर के माध्यम से, और व्यापक रूप से वितरित होने के बावजूद उनके सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व और पारस्परिक सहायता के माध्यम से, और आपके नामों और कार्यों के माध्यम से, जो उन्हें इस प्रकार से संदर्भित करते हैं कि आप उनके भी वही प्रभु हैं, पृथ्वी स्पष्ट रूप से आपकी एकता और एकरूपता की गवाही देती है।

उस पर जीव.

साथ ही, यह तथ्य कि पृथ्वी एक सैन्य शिविर, एक प्रदर्शनी, निर्देश और अभ्यास का स्थान है, और यह कि लाखों पौधे और पशु विभाग जो इस वैश्विक सेना का निर्माण करते हैं, उन्हें सही क्रम में उनके लिए आवश्यक सटीक घटक भागों या उपकरणों के साथ प्रदान किया जाता है, आपके प्रभुत्व की भव्यता को दर्शाता है और दिखाता है कि आपकी शक्ति एक ही समय में सब कुछ नियंत्रित करती है। इसी तरह, यह तथ्य कि असंख्य जीवित प्राणियों को दयालुता और उदारता से सरल मिट्टी से ठीक सही समय पर उनका पोषण प्रदान किया जाता है, और यह कि वे सभी आपके प्रभुत्व के आदेशों का पूरी तरह से पालन करते हैं, आपकी दया और प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति को दर्शाता है।

इसके अलावा, यह केवल सर्वव्यापी ज्ञान और सर्व-प्रशासक बुद्धि के आधार पर ही संभव है कि प्राणियों के अंतहीन काफिले और जीवन और मृत्यु के सभी उदाहरण पृथ्वी पर एक-दूसरे का अनुसरण कर सकें।

ऐसे पूर्ण क्रम में, और सभी पौधों, पेड़ों और जानवरों को प्रशासित किया जाना चाहिए-

इतनी पूर्णता और नियमितता के साथ व्यक्त किया गया है। यह स्पष्ट रूप से आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति को इंगित करता है।

साथ ही, यद्यपि मानवता को असीमित कर्तव्य सौंपे गए हैं, जिसमें पृथ्वी पर अन्य सभी प्राणियों की देखभाल करना भी शामिल है, और यद्यपि उन्हें इतनी विशाल क्षमताएँ और संभावनाएँ प्रदान की गई हैं कि उन्हें पूरा करने के लिए पृथ्वी पर अनंत काल लग जाएगा, फिर भी पृथ्वी पर मनुष्य का प्रवास वास्तव में बहुत ही संक्षिप्त है। इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि मानवता को दिया गया महत्व, उनके लिए प्रदान किया गया असीमित व्यय, सर्व-महिमावान के अभिभाषक के रूप में उन्हें प्रदान की गई दिव्य प्रभुता की असीम अभिव्यक्तियाँ, और उन पर बरसाई गई दिव्य कृपाओं की अनंत मात्रा - इनमें से कोई भी केवल इस संक्षिप्त, क्षणभंगुर, दर्दनाक और आपदाग्रस्त जीवन के लिए अभिप्रेत नहीं हो सकता है, जो दुनिया के इस प्रशिक्षण-स्थल, पृथ्वी के इस अस्थायी सैन्य शिविर, इस क्षणभंगुर प्रदर्शन में है।

बल्कि, चूँकि ये चीज़ें केवल दूसरे, अनन्त जीवन, खुशी के एक चिरस्थायी क्षेत्र के लिए ही अभिप्रेत हो सकती हैं, वे परलोक के क्षेत्र में अन्य-सांसारिक उपहारों की ओर संकेत करती हैं, यहाँ तक कि उनकी गवाही भी देती हैं।

हे सभी चीज़ों के निर्माता!

पृथ्वी के सभी प्राणी इस पृथ्वी पर आपकी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान, इच्छा और बुद्धि के अधीन हैं और उन्हीं के द्वारा संचालित हैं, जो आपकी संपत्ति है। और आपके प्रभु - आपके सृजन, रखरखाव, प्रावधान, पालन-पोषण और प्रशासन के कार्य - जिन्हें पृथ्वी पर देखा जा सकता है, ऐसी विशालता और व्यापकता प्रदर्शित करते हैं, और इस प्रभु के भीतर प्रशासन, प्रावधान और पालन-पोषण इतने परिपूर्ण और संवेदनशील हैं, और इसके कार्य और संचालन ऐसी एकता, एकरूपता और समन्वय से परिपूर्ण हैं कि आपका प्रभु स्पष्ट रूप से सार्वभौमिक और अविभाज्य है। इसके अलावा, पृथ्वी, अपने सभी निवासियों के साथ और अनगिनत भाषाओं के माध्यम से जो मानवता की वाणी से अधिक स्पष्ट हैं, अपने निर्माता की महिमा करती है और उसे परम-पवित्र घोषित करती है; उनकी असीम उदारता की जीभ के माध्यम से पृथ्वी अपने सर्व-प्रदाता महामहिम की प्रशंसा और गुणगान करती है।

हे सर्वपवित्र! जो अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण छिपे हुए हैं और अपनी महिमा के कारण छिपे हुए हैं!

पृथ्वी द्वारा आपके महिमामंडन तथा आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के साथ, मैं भी घोषणा करता हूँ कि आप सभी दोषों, नपुंसकता या साझीदारों के आरोपण से सर्वथा ऊपर हैं, तथा मैं आपकी स्तुति करता हूँ तथा उनकी सभी स्तुतियों के साथ आपको धन्यवाद देता हूँ।

हे भूमि और समुद्र के स्वामी!

मैंने कुरान की शिक्षाओं और महानतम रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षाओं के माध्यम से यह समझा है कि जिस तरह पृथ्वी, वायुमंडल और आकाश आपके अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, उसी तरह नदियाँ, झरने और जलधाराएँ भी आपके अस्तित्व और आपकी एकता की पूर्ण आवश्यकता की स्पष्ट रूप से गवाही देती हैं।

वास्तव में, ऐसा एक भी प्राणी नहीं है, वास्तव में, समुद्र में पानी की एक भी बूंद नहीं है, जो वास्तव में हमारे ग्लोब के भाप बॉयलर और अनगिनत आश्चर्यों का स्रोत है, लेकिन यह अपने अस्तित्व, सुव्यवस्था, स्थिति और लाभों के माध्यम से अपने निर्माता को ज्ञात नहीं करता है।

इन अद्भुत प्राणियों में से एक भी ऐसा नहीं है, जिसका पोषण साधारण रेत या पानी के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता है, इन समुद्री जानवरों में से एक भी नहीं है, जिनमें से प्रत्येक को अत्यंत व्यवस्थित ढंग से बनाया गया है, असंख्य प्रकार की मछलियों में से एक भी नहीं है, जिनमें से प्रत्येक दस लाख या उससे अधिक अंडे देती है, लेकिन यह अपने सृजन, अपने कर्तव्यों और जिस तरह से इसे प्रशासित किया जाता है, प्रदान किया जाता है और बनाए रखा जाता है, उसके माध्यम से अपने निर्माता को इंगित करता है और अपने प्रदाता की गवाही देता है।

इसके अलावा, समुद्र में एक भी ऐसा कीमती, अलंकृत पदार्थ या रत्न नहीं है, जो विशिष्ट विशेषताओं वाला हो, लेकिन यह आपको अपनी सूक्ष्म रचना, आकर्षक संरचना और लाभकारी गुणों के माध्यम से ज्ञात कराता है।

ये सभी उपर्युक्त प्राणी व्यक्तिगत रूप से आपकी गवाही देते हैं। साथ ही, यद्यपि वे अत्यंत विविधता और संख्या में मौजूद हैं, तथा यद्यपि सभी एक दूसरे के साथ मिश्रित हैं, जिस सुविधा से वे अस्तित्व में आए हैं तथा उनके निर्माण द्वारा प्रदर्शित एकता की छाप आपकी एकता की गवाही देती है। इसके अलावा, पृथ्वी अंतरिक्ष में लटकी रहती है तथा बिना अपनी भूमि या समुद्रों के एक दूसरे के साथ मिश्रित हुए या भूमि पर आक्रमण किए बिना बहुत तेज गति से सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है। इसके अलावा, इसके सभी खनिज तथा अन्य पदार्थ, तथा इसके सभी स्थलीय और समुद्री जीवन अच्छी तरह से निर्मित तथा अत्यंत विविध हैं: साधारण जल या मिट्टी से निर्मित, इन सभी प्राणियों का प्रशासन तथा पालन-पोषण पूर्ण व्यवस्था के साथ किया जाता है। इसके अलावा, उनके अत्यंत प्रचुर अस्तित्व तथा इस तथ्य के बावजूद कि प्रतिदिन उनमें से असंख्य लोग मरते हैं, उनकी कोई भी लाश लंबे समय तक पृथ्वी या समुद्र में नहीं रहती, जिसके परिणामस्वरूप पृथ्वी तथा समुद्र दोनों का चेहरा हमेशा स्वच्छ और शुद्ध रहता है। इसलिए, पृथ्वी आपके अस्तित्व तथा इस तथ्य की गवाही देती है कि आप इसके प्राणियों की संख्या के लिए अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी हैं।

जिस प्रकार ये सभी प्राणी आपके प्रभुत्व की महिमा और आपकी सर्वव्यापी शक्ति की विशालता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं, उसी प्रकार ये भी

आपकी दया और प्रभुत्व की असीम व्यापकता को इंगित करते हैं, जो सब कुछ को अपने में समाहित कर लेती है—ऊपर आकाश में अत्यंत विशाल सितारों से लेकर महासागरों की तलहटी में छोटी मछलियों तक। साथ ही, अपने संपूर्ण संगठन और व्यवस्थित अस्तित्व के माध्यम से, उनके द्वारा दिए जाने वाले लाभों और उनके द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली बुद्धिमत्ता के उदाहरणों के माध्यम से, और उनकी सुसंगठित संरचना और संयोजन के माध्यम से, वे आपके सर्वव्यापी ज्ञान और आपकी सर्वव्यापी बुद्धि को इंगित करते हैं।

इस संसार रूपी अतिथिगृह में यात्रियों के लिए आपके पास दया के सरोवर हैं और आपने इन सरोवरों को उनके लाभ के लिए तथा उनके जहाज के लिए वश में कर दिया है, ताकि वे यात्रा कर सकें। यह इस बात का संकेत है कि जो अपने मेहमानों को समुद्र से एक रात के लिए एक किनारे की सराय में इतने सारे उपहार प्रदान करता है—

संसार में निश्चय ही उसकी प्रभुता के शाश्वत क्षेत्र में दया के अनन्त महासागर होंगे, और यहाँ जो हैं वे तो उनके छोटे, क्षणिक नमूने मात्र हैं।

इस प्रकार, जिस तरह से समुद्र भूमि को इस असाधारण तरीके से घेरते हैं, और उनकी गहराई में रहने वाले जीवों का अद्भुत पोषण और पोषण, यह सब स्वतः स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वे आपकी इच्छा, शक्ति और प्रशासन के माध्यम से आपके क्षेत्र में आपकी आज्ञा के अधीन हैं। इन सभी तथ्यों की भाषा के माध्यम से, वे आपको अपना सर्व-पवित्र निर्माता घोषित करते हैं, और कहते हैं कि "ईश्वर सर्व-महान है।"

हे सर्वशक्तिमान महामहिम, जिन्होंने पर्वतों को खजाना बना दिया है-
पृथ्वी के जहाज़ के लिए मस्तूल भर दिए!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षा और कुरान की शिक्षाओं से यह समझा है कि जिस तरह समुद्र आपको पहचानते हैं और अपने चमत्कारों के माध्यम से आपको पहचानते हैं, उसी तरह पहाड़ भी आपको पहचानते हैं और अपने अस्तित्व में मौजूद बुद्धिमत्ता के उदाहरणों और उनके द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों के माध्यम से आपको पहचानते हैं। उदाहरण के लिए, वे धरती की सेवा करते हैं, इसे समुद्र के आक्रमण से अप्रभावित और ठोस बनाए रखते हैं और भूकंपों और इसके भीतर होने वाली तूफानी हलचलों के बावजूद इसकी स्थिरता को बनाए रखते हैं। वे हानिकारक गैसों से हवा को शुद्ध करते हैं, पानी को संग्रहीत और संरक्षित करते हैं, और जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक खनिजों और धातुओं के विशाल खजाने के रूप में कार्य करते हैं।

वास्तव में, पहाड़ों में एक भी चट्टान या कीमती पत्थर नहीं है, वहाँ असंख्य प्रकार के पदार्थों में से एक भी नहीं है जो दवा के लिए सामग्री के रूप में उपयोग किया जाता है, वहाँ अत्यंत विविध प्रकार के खनिजों या धातुओं में से एक भी नहीं है जो सामान्य रूप से जीवित प्राणियों के लिए महत्वपूर्ण हैं-

पूरे विश्व और विशेष रूप से मानव जाति के लिए, पौधों और पेड़ों की अनगिनत किस्मों में से एक भी ऐसा नहीं है जो अपने फूलों से पहाड़ों, मैदानों और खेतों को सुशोभित करते हैं, उन्हें अपने फलों से समृद्ध बनाते हैं - इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो अपनी बुद्धिमत्ता के उदाहरणों, उनकी सूक्ष्म व्यवस्था और संरचना, उनकी अच्छी रचना, उनके असंख्य लाभों और उनके स्वाद और स्वभाव की अत्यधिक विविधता के माध्यम से, चाहे वे सतह पर एक जैसे क्यों न दिखाई दें, एक असीम शक्तिशाली, दयालु और उदार निर्माता के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता की अत्यंत स्पष्टता के साथ गवाही नहीं देता है। इसके अलावा, फूलों और फलों की महान विविधता के माध्यम से निर्माता की गवाही देने के अलावा, जो इस तथ्य के बावजूद अत्यधिक विविधता दिखाते हैं कि वे सभी सरल, समान मिट्टी में उगते हैं और एक ही, साधारण पानी से पोषित होते हैं, पेड़ और फूल भी अपने प्रशासन, रखरखाव, उत्पत्ति, आवास, निर्माण और कलात्मकता की समानता के माध्यम से उसकी एकता और एकरूपता की गवाही देते हैं। वे अपनी प्रचुरता और जिस गति और सुविधा से बनाए गए हैं, उसके माध्यम से परमेश्वर की एकता और एकरूपता की ओर भी संकेत करते हैं, यद्यपि उनमें से प्रत्येक कला का एक अद्वितीय कार्य और अमूल्य मूल्य है।

इसके अलावा, यह तथ्य कि दुनिया के सभी पर्वतों की संरचना लगभग एक जैसी है और सभी प्राणियों की प्रजातियाँ बिना किसी दोष के, एक ही तरह से, कल्पना की जा सकने वाली सबसे कम अवधि में, और एक व्यक्ति और प्रजाति के निर्माण और पोषण के बिना पूरी तरह से बनाई गई हैं, जो दूसरे के साथ भ्रमित या बाधा उत्पन्न किए बिना बनाई गई हैं - यह सब आपके प्रभुत्व की भव्यता और आपकी शक्ति की विशालता को इंगित करता है, जिसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। इसके अलावा, पहाड़ों में असंख्य प्रकार के जीवित प्राणियों की अंतहीन जरूरतों, स्वाद और भूख को पूरा करने के लिए कई अलग-अलग प्रकार के पौधे, पेड़ और खनिज होते हैं; वे अनगिनत प्रकार की बीमारियों के लिए आवश्यक दवाएँ भी प्रदान करते हैं। यह सब आपकी दया की असीम सीमा और आपके प्रभुत्व की अनंत विशालता को इंगित करता है। यद्यपि इन सभी पौधों और पेड़ों के खनिज और बीज अंधेरे में जमीन के नीचे छिपे और आपस में मिले हुए हैं, वे एक विशाल ज्ञान और एक सर्वव्यापी दृष्टि के कारण पूर्ण क्रम से उगाए और तैयार किए गए हैं।

ये सभी तथ्य आपके ज्ञान की व्यापकता को दर्शाते हैं, जो सब कुछ को समाहित करता है, और आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति, जो सब कुछ को पूरी तरह से व्यवस्थित करती है। इसके अलावा, औषधीय पदार्थों की तैयारी और उनमें खनिजों और धातुओं के जमाव के माध्यम से, पहाड़ स्पष्ट रूप से आपके आधिपत्य की सुंदरता को इंगित करते हैं।

आपके भावुक और उदार व्यवस्था और प्रोविडेंस और आपके परोपकार की एहतियाती सूक्ष्मताएं।

फिर, आपने इन विशाल पर्वतों को इस सांसारिक कारवां सराय में अपने मेहमानों की भविष्य की जरूरतों के लिए आपूर्ति के भण्डार के रूप में बनाया है और इन मेहमानों के जीवन के लिए महत्वपूर्ण अनंत खजानों के पूरी तरह से व्यवस्थित भंडार के रूप में बनाया है, जो निस्संदेह इस तथ्य की गवाही देते हैं कि एक निर्माता जो इतना उदार और मेहमाननवाज़ है, इतना बुद्धिमान और देखभाल करने वाला है, और इतना शक्तिशाली और पालन-पोषण करने वाला है, उसने निश्चित रूप से एक शाश्वत दुनिया में इन प्यारे मेहमानों के लिए अनन्त उपहारों के खजाने तैयार किए हैं। वहाँ के तारे यहाँ दुनिया में पहाड़ों के कर्तव्यों का पालन करेंगे।

हे वह जो सभी चीज़ों पर पूर्ण शक्ति रखता है!

आपकी शक्ति, ज्ञान और बुद्धि के कारण पहाड़ और उनमें रहने वाले प्राणी आपकी सेवा में समर्पित हैं। वे अपने रचयिता परम पवित्र की स्तुति करते हैं और घोषणा करते हैं कि वह वही है जिसने उन्हें इस प्रकार से समर्पित और कर्तव्यपरायण बनाया है।

हे सर्वदयालु सृष्टिकर्ता एवं दयावान प्रभु!

मैंने ईश्वर के रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से यह समझा है कि जिस प्रकार आकाश, पृथ्वी, समुद्र और पर्वत अपने समस्त प्राणियों और पदार्थों सहित तुम्हें पहचानते हैं और तुम्हारा परिचय कराते हैं, उसी प्रकार पृथ्वी के समस्त पेड़-पौधे भी अपने पत्तों, फूलों और फलों सहित तुम्हें जानते हैं और तुम्हारा परिचय कराते हैं।

सभी पौधों और वृक्षों का प्रत्येक पत्ता, जो अपनी आनंदित गतिविधियों के माध्यम से अपने निर्माता को स्मरण करता है, साथ ही प्रत्येक फूल, जो अपने श्रृंगार के माध्यम से अपने निर्माता का वर्णन और परिभाषा करता है, और प्रत्येक फल, जो उसकी दया के प्रकटीकरण के कारण प्रसन्नतापूर्वक मुस्कुराता है, अपने पूर्ण और असाधारण कलात्मक निर्माण के माध्यम से, जिसे संयोग के लिए जिम्मेदार ठहराना पूरी तरह से असंभव है, एक असीम दयालु और उदार निर्माता के अस्तित्व की पूर्ण आवश्यकता की अत्यंत निश्चितता के साथ गवाही देता है; यह अपने निर्माण में पूर्ण संतुलन और अनुपात के माध्यम से भी ऐसा करता है, और उस संतुलन और अनुपात के साथ होने वाले अलंकरण के माध्यम से, और उन कढ़ाईयों के माध्यम से जो इसके अलंकरण में योगदान करते हैं, और कई सुंदर सुगंधों और स्वादों के माध्यम से जो इसके अलंकरण में जोड़े जाते हैं।

समग्र रूप से ये अनिवार्य रूप से विद्यमान निर्माता की एकता (वहीदिया) और एकत्व (अहादिया) के स्पष्ट साक्ष्य हैं। वे ऐसा अपने माध्यम से करते हैं

दुनिया भर में उनकी पारस्परिक समानता और उनकी रचना में उनकी समानता, उनके विकास और उनके लिए प्रावधान के बीच के संबंध के माध्यम से, दिव्य नामों और कृत्यों की अंतर्संबंधता के माध्यम से जो उनके अस्तित्व और रखरखाव से संबंधित हैं, और दोष या भ्रम के बिना सैकड़ों हजारों किस्मों के असंख्य व्यक्तिगत सदस्यों के प्रशासन और पोषण के माध्यम से।

जिस तरह से ये आपके अस्तित्व और आपकी एकता की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं, उसी तरह पृथ्वी पर रहने वाले जीवों के समूह के असंख्य सदस्यों का पूर्ण और विशिष्ट रखरखाव, जो सैकड़ों-हजारों "राष्ट्रों" से बना है, आपके प्रभुत्व की महिमा और विशिष्टता और आपकी शक्ति की विशालता को दर्शाता है, जो हर चीज को अपने में समाहित करती है और उतनी ही आसानी से वसंत का निर्माण करती है, जितनी आसानी से फूल बनाती है। इसके अलावा, पृथ्वी भर में वितरित असंख्य जानवरों और मनुष्यों के लिए अनगिनत प्रकार के भोजन की तैयारी आपकी दया की असीम व्यापकता को दर्शाती है। इसके अलावा, इन सभी कार्यों के निष्पादन में पूर्ण क्रम, प्रदान करने, प्रशासन करने और पालन-पोषण करने के साथ-साथ, सबसे छोटे कण या परमाणु तक, आपके कार्यों और आदेशों के अधीनता और आज्ञाकारिता, आपके प्रभुत्व की सर्वव्यापी प्रकृति का स्पष्ट प्रमाण प्रदान करती है। इसी प्रकार, यह तथ्य कि प्रत्येक पत्ती, फूल, फल, जड़, शाखा या टहनी के अस्तित्व, विकास और पोषण से संबंधित जो कुछ भी है, वह निश्चित ज्ञान और अंतर्दृष्टि पर आधारित है, जिसमें कई बुद्धिमान उद्देश्य और लाभ ध्यान में रखे गए हैं, वे सभी आपके ज्ञान और बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति की ओर स्पष्ट रूप से इशारा करते हैं। असंख्य भाषाओं के साथ, ये सभी आपकी असीम रूप से परिपूर्ण कला की सुंदरता और आपकी असीम रूप से सुंदर उदारता की पूर्णता की प्रशंसा और गुणगान भी करते हैं।

इसके अलावा, इस अस्थायी गेस्टहाउस में पेड़ों और पौधों के हाथों से, ऐसे अमूल्य उपहार और उपहार पेश किए जाते हैं, ऐसे असाधारण खर्च किए जाते हैं, और ऐसी अद्भुत उदारता दिखाई जाती है कि वे स्पष्ट रूप से संकेत देते हैं, वास्तव में, इस तथ्य की गवाही देते हैं: शक्तिशाली और उदार सर्व-दयालु ने अपनी दया के शाश्वत खजाने से, फल देने वाले पेड़ों और फूलों के पौधों की एक सेना तैयार की है जो स्वर्ग के शाश्वत उद्यानों के लिए उपयुक्त हैं, उन सेवकों के लिए जिन्हें वह एक शाश्वत क्षेत्र में अनन्त जीवन के साथ अनुग्रहित करेगा। वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि, अपने द्वारा प्रदान की गई उदारताओं के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करने की अपनी इच्छा के अनुसार, वह नहीं चाहता कि उसके प्यारे दोस्त शिकायत करें, यह कहते हुए: "उसने हमें उनका स्वाद चखाया है और अब हमें अनन्त स्वर्ग में भेज दिया है।

बिना उनका पूरा आनंद लिए बिना अस्तित्वहीनता का अनुभव नहीं किया जा सकता।" न ही वह अपनी दिव्यता के प्रभुत्व के अनंत मूल्य को कम करना चाहता है या अपने प्यारे दोस्तों को अपनी अंतहीन दया से वंचित करना चाहता है, जिससे उनका प्यार दुश्मनी में बदल जाए। इस दुनिया में सभी फलदार पेड़ और फूलदार पौधे अपने शाश्वत समकक्षों के उदाहरण मात्र हैं, और इस दुनिया में केवल उन लोगों के लिए प्रदर्शन के लिए हैं जो उन्हें अनंत काल के लिए "खरीदना" चाहते हैं।

जैसे वृक्ष और पौधे अपने पत्तों, फूलों और फलों के द्वारा आपकी स्तुति करते हैं और आपको परम पवित्र बताते हैं, वैसे ही ये सभी शब्द भी आपकी परम पवित्रता की घोषणा करते हैं। फलों द्वारा अपने स्वभाव की मूक वाणी द्वारा की गई स्तुति-

अर्थात्, अपने आकर्षक आकार, अपने अनेक भिन्न-भिन्न और मनमोहक रंगों, अपने अनंत प्रकार के खाद्य भागों और अपने अद्भुत बीजों के माध्यम से, तथा वृक्षों या पौधों के हाथों से इस पार्थिव कारवां सराय के अतिथियों को अर्पित किये जाने के माध्यम से, वे स्वयं को ऐसे अभिव्यक्त करते हैं मानो वे बोले गए शब्द हों।

वे सभी आपकी शक्ति, इच्छा, परोपकार, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र के अधीन हैं, और वे आपकी सभी आज्ञाओं का पूरी तरह से पालन करते हैं।

हे सर्वज्ञ रचयिता और दयालु रचयिता! जो इसलिये छिपा हुआ है कि
उसकी अभिव्यक्ति की तीव्रता और उसकी भव्यता के कारण पर्दा पड़ा है!

सभी वृक्षों, वनस्पतियों, उनके पत्तों, फूलों, फलों की आवाजों के साथ, तथा उन सब की संख्या के अनुसार मैं आपकी स्तुति करता हूँ, आपका गुणगान करता हूँ, तथा घोषणा करता हूँ कि आप सर्वथा श्रेष्ठ हैं, तथा दोष, नपुंसकता और साझी से रहित हैं।

हे सर्वशक्तिमान सृजक, सर्वज्ञ प्रशासक, सर्व दयालु पालनकर्ता!

मैंने ईश्वर के सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की शिक्षा और ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से समझा है, और मेरा मानना है कि जिस तरह पौधे और पेड़ आपको पहचानते हैं और आपके पवित्र गुणों और सुंदर नामों को बताते हैं, उसी तरह कोई भी जानवर या इंसान ऐसा नहीं है जो आपके अस्तित्व और आपके गुणों की पूर्ण आवश्यकता की गवाही न दे। वे अपने पूरी तरह से और कलात्मक रूप से बनाए गए शरीरों के माध्यम से गवाही देते हैं, क्योंकि वे बेहद नाजुक और अच्छी तरह से काम करने वाले "उपकरणों" से सुसज्जित हैं जिनमें बेहतरीन क्रम और संतुलन है; वे अपने सभी आंतरिक और बाहरी अंगों के माध्यम से सबूत देते हैं, जो पूर्ण संवेदनशीलता और व्यवस्थितता के साथ काम करने के लिए बनाए गए हैं, और

उनके अंग और इंद्रियाँ जो उनके शरीर में पूर्ण संतुलन के साथ और अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए व्यवस्थित हैं। क्योंकि यह बिल्कुल असंभव है कि कोई यादृच्छिक शक्ति, अचेतन "प्रकृति", या अंधा संयोग ऐसी कलात्मकता में योगदान दे जो इतनी नाजुक और बुद्धिमान हो, या ऐसी बुद्धि में जिसके लिए इतनी देखभाल और चेतना की आवश्यकता हो, या एक पूर्ण संतुलन में जो इतना संवेदनशील और उद्देश्यपूर्ण हो। जहाँ तक इस धारणा का सवाल है कि वे स्वयं को बनाते हैं; खैर, यह सौ गुना अधिक असंभव और अकल्पनीय है। क्योंकि उनके आत्म-निर्माण के लिए उनके प्रत्येक कण या परमाणु में ईश्वर-जैसा ज्ञान और शक्ति होनी चाहिए। अन्यथा, प्रत्येक व्यक्ति स्वयं को पूर्ण रूप से कैसे जान पाएगा और स्वयं को अस्तित्व में कैसे ला पाएगा, खासकर तब जब उसे उन सभी अन्य परमाणुओं का भी निर्माण करना होगा जिनके साथ वह परस्पर जुड़ता है और संबंध रखता है, साथ ही ब्रह्मांड के सभी अन्य तत्वों का भी जो उसके अस्तित्व और संचालन में भाग लेते हैं?

उनके प्रशासन और रखरखाव में समग्र रूप से देखी जा सकने वाली एकता, प्रत्येक प्रजाति के सदस्यों के बीच और साथ ही स्वयं प्रजातियों के बीच पूर्ण समानताएं, उनकी रचना और पालन-पोषण में देखी जा सकने वाली एकता की छाप, और यह तथ्य कि उनमें से प्रत्येक के पास आंखें, कान, मुंह आदि हैं, और प्रत्येक समान लक्ष्यों की ओर निर्देशित है - ये सभी और एकता के ऐसे ही अन्य उदाहरण आपकी पूर्ण एकता के सबसे निर्णायक साक्ष्य हैं। और जिस तरह आपके सभी नाम पूरे ब्रह्मांड में एक साथ प्रकट होते हैं, इस प्रकार आपकी एकता (वहीदिया) को दर्शाते हैं, वे ब्रह्मांड में प्रत्येक प्राणी में भी प्रकट होते हैं, इस प्रकार आपकी एकता या विशिष्टता (अहादिया) को प्रदर्शित करते हैं।

साथ ही, मानव जाति की तरह, दुनिया भर में फैली लाखों पशु प्रजातियाँ एक सुव्यवस्थित सेना की तरह सुसज्जित, प्रशिक्षित और आज्ञाकारी हैं, और आपके प्रभु की आज्ञाएँ उनके राज्य में पूर्ण व्यवस्था के साथ संचालित होती हैं। जबकि यह आपके प्रभु की भव्यता को इंगित करता है, उनकी प्रचुरता के बावजूद उनका अत्यधिक मूल्य, उनकी तीव्र उत्पत्ति के बावजूद उनकी उत्तम रचना और संगठन, और जिस सुविधा से उन्हें बनाया गया है उसके बावजूद उनमें निहित उत्तम, अद्वितीय कला, ये सभी आपकी शक्ति की भव्यता को इंगित करते हैं। सूक्ष्म जीवों से, जो दुनिया के चारों कोनों में मौजूद हैं, गैंडे तक, और सबसे छोटी मक्खियों से लेकर सबसे बड़े पक्षियों तक, जिस सटीकता के साथ उन्हें प्रदान किया जाता है और उनका पालन-पोषण किया जाता है, वह स्पष्ट रूप से आपकी दया की अंतहीन व्यापकता को इंगित करता है।

और उनमें से प्रत्येक बिना किसी कमी के अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन करता है, जबकि पृथ्वी, वसंत में उनके जुटान के लिए परेड ग्राउंड के रूप में कार्य करती है

और शरद ऋतु और सर्दियों में उनके विमुद्रीकरण के लिए, असीमता को इंगित करता है
आपके प्रभुत्व का.

इसके अलावा, हर जानवर ब्रह्मांड के लघु नमूने की तरह है। यह अत्यंत गहन ज्ञान और उत्तम बुद्धि के माध्यम से उत्पन्न हुआ है, इसके किसी भी परमाणु, यौगिक या अंग की नियुक्ति या स्थान में कोई भ्रम नहीं है, एक दूसरे के भीतर, और एक दूसरे के साथ उनके जटिल संबंधों में। फिर, प्रत्येक जानवर को एक अलग रूप और विशिष्ट विशेषताएं दी गई हैं जिनमें कोई दोष, भ्रम या दोष नहीं है। चूंकि ये तथ्य अस्तित्व में जानवरों की संख्या के लिए आपके सर्वव्यापी ज्ञान और आपकी सर्वव्यापी बुद्धि को इंगित करते हैं, इसलिए कला के चमत्कार और बुद्धि के चमत्कार के रूप में ऐसी कलात्मकता और सुंदरता के साथ प्रत्येक का निर्माण भी आपके आधिपत्य की कला की संपूर्ण सुंदरता को इंगित करता है, जिसे आप प्यार करते हैं और प्रदर्शित करना चाहते हैं। फिर, उनके नाजुक पोषण और उनकी जरूरतों और इच्छाओं की संतुष्टि के माध्यम से, वे सभी, और विशेष रूप से उनके बच्चे, आपकी परोपकारिता की उदात्त सुंदरता को अंतहीन रूप से इंगित करते हैं।

हे दयालु, दयावान, हे पूर्णतः सत्य!
हे न्याय के दिन के स्वामी!

मैंने आपके महानतम रसूल - जिन पर शांति और आशीर्वाद हो - के निर्देशों और आपके ज्ञानपूर्ण कुरान की शिक्षा से निम्नलिखित बातें समझी हैं:

चूँकि ब्रह्माण्ड का अंतिम परिणाम जीवन है, और जीवन का अंतिम परिणाम आत्मा है, और चूँकि आत्मा वाले प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ वे हैं जिनमें चेतना है, और चेतना वाले प्राणियों में सबसे व्यापक मानवता है, और चूँकि पूरा ब्रह्माण्ड जीवन की सेवा करता है, और जीवित प्राणियों को आत्मा वाले प्राणियों की सेवा करने के लिए दुनिया में भेजा जाता है, और चूँकि आत्मा वाले प्राणियों को मानवजाति की सेवा में लगाया जाता है, और चूँकि मनुष्यों में अपने रचयिता के लिए एक प्रबल जन्मजात प्रेम होता है, जो हर तरह से उनसे प्रेम करता है और उनसे स्वयं को प्रेम करवाता है, और चूँकि मानवता को दी गई क्षमताएँ और अमूर्त क्षमताएँ मुख्य रूप से शाश्वत जीवन की ओर निर्देशित होती हैं, और उनका हृदय और चेतना अपनी पूरी शक्ति से शाश्वतता की इच्छा करते हैं, और उनकी ज़ुबानें अपने रचयिता से अनंत जीवन के लिए कभी न ख़त्म होने वाली प्रार्थनाएँ करती हैं—चूँकि यह सब स्वयं-सिद्ध सत्य है, तो यह स्पष्ट है कि जो प्रेम करता है और जिसे बहुत प्रेम किया जाता है, वह कभी भी मानव को परेशान नहीं करेगा-

उन सभी प्रकार के प्राणियों को, जिन्हें उसने अनंत काल के लिए बनाया है, उन्हें मरने के लिए मजबूर कर दिया है, ताकि उन्हें फिर से जीवित न कर सके, जिससे उनके लिए उसका प्रेम अनंत काल में बदल जाएगा।

अंतिम शत्रुता। क्योंकि मानवता को इस दुनिया में दूसरे, शाश्वत क्षेत्र में खुशी का शाश्वत जीवन पाने के लिए प्रयास करने और कमाने के लिए भेजा गया है। वहाँ हमें दिव्य नामों की शाश्वत अभिव्यक्तियों का आशीर्वाद मिलेगा, जिन्हें हम इस छोटे और क्षणभंगुर जीवन में प्रतिबिंबित करते हैं।

वास्तव में, शाश्वत परमेश्वर का वफादार मित्र शाश्वत रहेगा; शाश्वत परमेश्वर का चेतन दर्पण शाश्वत होना चाहिए।

जैसा कि प्रामाणिक पैगंबरी परंपराओं से समझा जा सकता है और जैसा कि ईश्वरीय बुद्धि, दया और प्रभुत्व की सच्चाई से अपेक्षित है, जानवरों की आत्माएं भी स्थायी रूप से बनी रहेंगी। इसके अलावा, उनमें से कुछ सदस्य, जैसे कि हुपु जो पैगंबर सुलैमान की सेवा करता था, शांति हो, और उनके बारे में कथाओं में पाई जाने वाली चींटी, साथ ही पैगंबर सालेह की ऊँटनी, शांति हो, और गुफा के लोगों का कुत्ता अपने शरीर और आत्माओं के साथ अनन्त दुनिया में चले जाएँगे, जबकि प्रत्येक पशु प्रजाति कभी-कभार रोजगार के लिए एक एकल, प्रतिनिधि निकाय के रूप में अस्तित्व में रहेगी।15

हे सर्वशक्तिमान और स्वयंभू, जिनसे सबका अस्तित्व है!

सभी जीवित प्राणी, सभी आत्मा वाले प्राणी और सभी चेतना वाले प्राणी आपके प्रभु की आज्ञाओं के अधीन बनाए गए हैं और आपकी शक्ति, इच्छा, प्रशासन, दया और बुद्धि के माध्यम से आपके क्षेत्र में उनकी प्रकृति के अनुसार कर्तव्य सौंपे गए हैं। उनमें से कुछ को मानव जाति की सेवा में रखा गया है - मानवता की ओर से किसी शक्ति या प्रभुत्व के कारण नहीं, बल्कि, मानव जन्मजात कमजोरी और नपुंसकता के कारण। अपने निर्माता की महिमा करके और उसे दोष, दोष या साझीदारों से परे पूरी तरह से श्रेष्ठ घोषित करके, और मौखिक रूप से और अपने स्वभाव और स्वभाव की मूक वाक्पटुता के माध्यम से उसकी प्रशंसा और धन्यवाद करके, प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूजा का अपना विशेष रूप करता है।

हे सर्व-पवित्र, आप अपनी अभिव्यक्ति की तीव्रता के कारण छिपे हुए हैं
और उसकी महानता के कारण परदा पड़ा है!

सभी आत्माधारी प्राणियों की महिमा के माध्यम से आपको सर्व-पवित्र घोषित करने के इरादे से, मैं कहता हूँ: हे आप, जिन्होंने जल से प्रत्येक जीवित चीज़ बनाई है, आप सर्व-महिमावान हैं!

---

[15] उन्हें स्वर्ग के लोगों द्वारा नियोजित किया जाना चाहिए। प्रासंगिक पैगंबरी कथाओं के लिए, देखें, अल-बघावी, मआलीमुत-तेनज़िल, 3:154; अल-अलुसी, रूहुल-मानी, 15:226।

हे समस्त लोकों के स्वामी! हे उन सभी के देवता जो इस संसार में आ चुके हैं और उन सभी के देवता जो भविष्य में आने वाले हैं! हे आकाश और लोकों के स्वामी!

ईश्वर के महानतम रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की शिक्षा से, तथा विवेकपूर्ण कुरान की शिक्षा से, मैं निम्नलिखित बातों को समझ गया हूं और उन पर विश्वास करता हूं:

जिस तरह आकाश और पृथ्वी, वायुमंडल, भूमि और समुद्र, पेड़-पौधे और जानवर अपने सभी अंगों, अवयवों और परमाणुओं के साथ आपको पहचानते हैं और आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देते हैं, उसी तरह जीवित प्राणी भी, जो ब्रह्मांड का सार हैं, आपके अस्तित्व, आपकी एकता और आपकी एकता की परम आवश्यकता की गवाही देते हैं। और इस साक्षी के हृदय में मानवता, जीवित प्राणियों का सार है; मानवता के बीच संत, शुद्ध विद्वान और पैगंबर हैं, जो सभी अपनी बुद्धि और हृदय के अवलोकन और अनावरण के माध्यम से और अपनी प्रेरणाओं और आध्यात्मिक खोजों के माध्यम से आपकी एकता की गवाही देते हैं। वास्तव में, उनकी गवाही में सच्चे और विशेषज्ञ ज्ञान वाले विद्वानों के सैकड़ों अलग-अलग समूहों और ज्ञान के प्रसारकों की सैकड़ों श्रृंखलाओं की सहमति की निश्चितता है, जिनकी सत्यता और विश्वसनीयता पर संदेह नहीं किया जा सकता है। इसके अलावा, वे अपने चमत्कारों, चमत्कारों और निर्णायक प्रमाणों के साथ जो जानकारी देते हैं, उसे पुष्ट भी करते हैं।

एक भी ऐसी बात नहीं है जो स्वस्थ हृदय में घटित होती है लेकिन वह उस एक की ओर ध्यान आकर्षित नहीं करती जो अदृश्य के पर्दे के पीछे से उसे प्रेरित करता है, और उसके अस्तित्व की परम आवश्यकता, साथ ही साथ उसके गुणों, एकता और एकत्व की गवाही देती है। इसी तरह, सच्ची प्रेरणा का एक भी उदाहरण नहीं है जो उस एक की ओर ध्यान केंद्रित करता है जो प्रेरित करता है लेकिन यह उसी तरह से गवाही देता है। इसके अलावा, कोई भी ऐसा पंथ नहीं है जो अनुभव के आधार पर निश्चितता के साथ आपके पवित्र गुणों और सर्व-सुंदर नामों की खोज करता है लेकिन यह उसी तरह से गवाही देता है, न ही कोई शुद्ध, प्रकाशित हृदय है जैसा कि पैगंबरों और संतों का है और जो अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के प्रकाश को भेदने वाली स्पष्टता के साथ देखता है, लेकिन यह वही गवाही देता है।

और एक भी प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है, जैसी सत्यनिष्ठ, शुद्ध और संत विद्वानों के पास होती है, लेकिन जो सभी चीजों के निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और एकता के संकेतों को निश्चित ज्ञान के साथ पुष्टि करती है। वास्तव में, कोई घटना नहीं है, कोई सच्ची प्रेरणा नहीं है, कोई निश्चित पंथ नहीं है, कोई शुद्ध और प्रबुद्ध हृदय नहीं है, कोई प्रबुद्ध बुद्धि नहीं है, वास्तव में, वहाँ है

यह केवल आपके अस्तित्व, आपके पवित्र गुणों, आपकी एकता, आपकी एकरूपता और आपके सर्व-सुंदर नामों की परम आवश्यकता को इंगित या प्रमाणित करता है।

विशेष रूप से, सबसे महान रसूल - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो सभी पैगम्बरों, संतों, शुद्ध विद्वानों और उन लोगों का नेता और सार है जो सत्यनिष्ठा में सबसे आगे हैं, का एक भी स्पष्ट चमत्कार नहीं है, जो उनके द्वारा लाए गए शुभ समाचार की पुष्टि करता है; उनके बारे में एक भी महान सत्य नहीं है जो उनकी पूर्ण सत्यता को दर्शाता है; और चमत्कारी कुरान में, सभी पवित्र शास्त्रों और सत्य की पुस्तकों का सार, एक भी आयत नहीं है, जो ईश्वरीय एकता को प्रदर्शित करती है; और इसमें निहित एक भी पवित्र बात या विश्वास का सत्य नहीं है - इन चमत्कारों, सत्यों, आयतों या मामलों में से एक भी ऐसा नहीं है जो आपके अस्तित्व, आपके पवित्र गुणों, आपकी एकता, आपकी एकता और आपके सर्व-सुंदर नामों की पूर्ण आवश्यकता को इंगित या गवाही न दे।

इसके अलावा, जिस तरह से सत्य के ये असंख्य लोग अपने चमत्कारों, अद्भुत कार्यों और तर्कसंगत प्रमाणों के साथ आपके अस्तित्व और एकत्व की गवाही देते हैं, वे भी सर्वसम्मति से आपके प्रभुत्व की महानता की घोषणा और प्रमाण करते हैं, जिसके पास सृष्टि की सभी चीजों का पूर्ण ज्ञान और नियंत्रण है, चाहे वे बड़ी हों या छोटी - आपके सर्वोच्च सिंहासन से जुड़े सार्वभौमिक मामलों से लेकर हृदय की सबसे गुप्त घटनाओं और उसकी सबसे गुप्त इच्छाओं और प्रार्थनाओं तक: वे आपकी शक्ति की उप-सीमा की भी घोषणा करते हैं, जो हमारी आँखों के सामने एक साथ और तुरंत अनगिनत चीजों का आविष्कार करती है, और सबसे बड़ी चीज को उतनी ही आसानी से पूरा करती है जितनी कि सबसे छोटी चीज को, बिना एक को दूसरे में बाधा डाले।

अपने चमत्कारों और अन्य प्रमाणों के साथ, ये सभी सत्यवादी आपकी दया की असीम व्यापकता को भी प्रदर्शित और प्रमाणित करते हैं, जिसने इस ब्रह्मांड को आत्मा वाले प्राणियों, विशेष रूप से मानवता के लिए एक आदर्श महल बना दिया है, और जो जिन्न और मानवता के लिए स्वर्ग और शाश्वत सुख तैयार करता है, सबसे तुच्छ प्राणी को भी नहीं भूलता है, और सबसे शक्तिहीन हृदय को भी संतुष्ट करता है। ये चमत्कार और प्रमाण आपके प्रभुत्व की अनंत विशालता को भी प्रदर्शित और प्रमाणित करते हैं, जिसने परमाणुओं से लेकर आकाशगंगाओं तक सभी प्रकार के प्राणियों को अपने अधीन कर लिया है, और उन्हें कुछ कर्तव्य सौंपे हैं, जिससे वे आपकी आज्ञाओं का पालन करते हैं। इसके अलावा, ये चमत्कार और प्रमाण आपके ज्ञान की सर्वव्यापी प्रकृति की भी गवाही देते हैं, जिसने ब्रह्मांड को एक ब्रह्मांडीय पुस्तक बना दिया है, जो ब्रह्मांड में जितने कण और यौगिक हैं, उतने ही खंडों से बनी है।

और जिसने सभी प्राणियों के जीवन में होने वाली सभी घटनाओं को मैनिफेस्ट रिकॉर्ड और मैनिफेस्ट बुक में दर्ज किया है, जो सर्वोच्च संरक्षित टैब्लेट के रजिस्टर हैं। आपके ज्ञान ने सभी वृक्षों के प्रत्येक बीज में उनकी सामग्री और कार्यक्रमों को पूरी तरह से और बिना किसी त्रुटि के अंकित किया है, और चेतन प्राणियों के संपूर्ण जीवन इतिहास को उनकी स्मृतियों में अंकित किया है।

ये चमत्कार और प्रमाण अत्यंत स्पष्टता के साथ आपकी बुद्धि की सर्वव्यापी प्रकृति की भी गवाही देते हैं, जो प्रत्येक प्राणी को ज्ञान के असंख्य उदाहरण प्रदान करती है, जैसे कि प्रत्येक वृक्ष अपने फलों की संख्या के अनुसार फल देता है, या प्रत्येक जीवित प्राणी को उसके अंगों या वास्तव में यौगिकों और कोशिकाओं के अनुसार उतने ही लाभ प्रदान करता है, या मानव जीभ को उसके सामने आने वाले स्वादों की संख्या के अनुसार क्षमताओं से सुसज्जित करता है, साथ ही उसे कई कर्तव्य सौंपता है। इसके अलावा, ये चमत्कार और प्रमाण सर्वसम्मति से इस तथ्य की गवाही देते हैं कि आपके महिमा और अनुग्रह के नाम, जिनकी अनुकरणीय अभिव्यक्तियाँ पूरे ब्रह्मांड में देखी जाती हैं, अनंत काल के धाम में और भी शानदार तरीके से खुद को प्रकट करना जारी रखेंगे; कि आपके उपहार और उदारता, जिनकी दयालु अभिव्यक्तियाँ और नमूने इस क्षणभंगुर दुनिया में देखे जाते हैं, खुशी के शाश्वत क्षेत्र में और अधिक शानदार तरीके से टिके रहेंगे; और जो लोग उनसे प्रेम करते हैं और जो इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में उन्हें आनंद के साथ पहचानते हैं और प्रेम से उनकी खोज करते हैं, वे अनंत काल तक उनके साथ रहेंगे।

और साथ ही, उनकी नबी होने की अनगिनत प्रमाणों के आधार पर, जिनमें उनके सैकड़ों प्रत्यक्ष चमत्कार भी शामिल हैं, और सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों के आधार पर जो सभी शास्त्रों में मौजूद हैं जिन्हें आपने अवतरित किया है, लेकिन मुख्य रूप से ज्ञानपूर्ण कुरान में, और साथ ही उन वादों और धमकियों पर जो आप उनमें बार-बार दोहराते हैं; और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं जैसे कि शक्ति, दया, अनुग्रह, बुद्धि, महिमा और अनुग्रह पर भरोसा करते हुए, जिनके लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है, और आपकी महिमा की गरिमा और आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व पर, सभी प्रकाशमान आत्माओं वाले नबी, जिनमें सबसे पहले ईश्वर के सबसे महान रसूल भी शामिल हैं, जिन्न और मानव जाति दोनों को मार्गदर्शन करने वालों के लिए शाश्वत खुशी की खुशखबरी देते हैं, और वे चेतावनी देते हैं कि नरक गुमराह लोगों की प्रतीक्षा कर रहा है, जबकि वे स्वयं इन पर विश्वास करने वाले और इनके गवाह बनने वाले पहले व्यक्ति हैं। और ऐसा ही सभी प्रबुद्ध हृदय वाले संत भी करते हैं, जो अपने आध्यात्मिक अनावरणों और दर्शनों पर भरोसा करते हैं, तथा प्रबुद्ध बुद्धि वाले शुद्ध, संत विद्वान भी करते हैं, जो ज्ञान की निश्चितता की डिग्री पर अपने विश्वासों पर आधारित होते हैं।

हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ! हे दयालु और दयावान! हे सर्वदयावान जो अपने वादों का पूर्णतः पालन करने वाला है! हे गरिमा, भव्यता और महिमा से परिपूर्ण!

पुनरुत्थान लाने में विफलता का अर्थ होगा आपके बहुत से सच्चे मित्रों का खंडन करना, आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं को नकारना, जिससे वह अधूरा रह जाएगा जो प्रभु के रूप में आपके प्रभुत्व की प्रकृति द्वारा अपेक्षित है; इसका अर्थ होगा आपके असंख्य सेवकों की परलोक की आशाओं और प्रार्थनाओं को अस्वीकार करना और उन्हें व्यर्थ करना, जिनसे आप प्रेम करते हैं, और जो आपकी पुष्टि और आज्ञापालन करके स्वयं को आपका प्रिय बनाते हैं; इसका अर्थ यह भी होगा कि पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में अविश्वास और गुमराह लोगों की पुष्टि करना, जो अविश्वास और अवज्ञा के माध्यम से और आपके वादों में आपका खंडन करके, आपकी महानता का अपमान करते हैं, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला करते हैं, आपकी दिव्यता के सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं और आपके प्रभुत्व की करुणा का अपमान करते हैं। निस्संदेह आप ऐसी विफलता से पूरी तरह मुक्त हैं और उससे अनंत रूप से ऊपर हैं! मैं आपके असीम न्याय, कृपा और दया को ऐसी असीमित कुरूपता और अधर्म से पूर्णतः मुक्त घोषित करता हूँ। मैं इस आयत को, ' वह सर्व-महिमावान है, और पूर्णतः महान है, जो वे कहते हैं उससे अथाह रूप से ऊँचा है' (17:43) को उतनी बार पढ़ना चाहता हूँ, जितनी बार मेरे शरीर में कण हैं। निस्संदेह, आपके ये असंख्य सत्यवादी संदेशवाहक और आपके प्रभुत्व के संदेशवाहक आपकी दया और परोपकार के अनन्त खजानों और ज्ञान पर आधारित निश्चितता, और दृष्टि पर आधारित निश्चितता, और अनुभव पर आधारित निश्चितता के साथ स्थायित्व की दुनिया में आपके सर्व-सुंदर नामों की असाधारण उत्कृष्ट अभिव्यक्तियों की अपनी गवाही में बिल्कुल सही हैं। वे यह भी मानते हैं और दूसरों को भी सिखाते हैं कि आपके नाम की सबसे बड़ी किरण परम सत्य है, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य और रक्षक है, पुनरुत्थान का यह सबसे बड़ा सत्य है।

ऐ नबियों के रब और नबियों के बाद सत्यनिष्ठा में सबसे आगे रहने वालों!

आपके ये सभी प्रिय मित्र आपके अधीन और कर्तव्यपरायण हैं
आप अपने क्षेत्र में अपनी आज्ञा, शक्ति, इच्छा, प्रशासन, ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से हैं। उनकी महिमा, प्रशंसा और आपकी एकता की घोषणाओं के माध्यम से, और उनके इस दावे के माध्यम से कि आप दोष, दोष या साझेदारों से बिल्कुल ऊपर हैं, उन्होंने यह दिखाया है

विश्व को स्मरण का सबसे विस्तृत घर तथा ब्रह्माण्ड को उपासना का सबसे विस्तृत स्थान बनाना है।

ऐ मेरे रब, आकाशों और धरती के रब! ऐ मेरे रचयिता और हर चीज़ के रचयिता!

अपनी शक्ति, इच्छा, बुद्धि, प्रभुता और दया के लिए, जो आकाश को उसके तारों सहित, पृथ्वी और उसमें जो कुछ है, और सभी प्राणियों को उनकी सभी अवस्थाओं सहित वश में कर लेती है, मेरी शारीरिक आत्मा को मेरे अधीन कर दे और मेरी इच्छाओं को मेरे अधीन कर दे। लोगों के दिलों को रिसाले-ए-नूर के अधीन कर दे
सिर्फ़ क़ुरआन और ईमान की खिदमत के लिए। और मुझे और मेरे भाइयों और बहनों को मुकम्मल ईमान और खुशनुमा अंजाम अता फरमा। दिलों और अक़्लों को रिसाले-ए-नूर के हवाले कर दे, जैसे तूने समंदर को पैगम्बर मूसा (उन पर सलाम हो) के हवाले किया, आग को पैगम्बर इब्राहीम (उन पर सलाम हो) के हवाले किया, पहाड़ों और लोहे को पैगम्बर दाऊद (उन पर सलाम हो) के हवाले किया, जिन्न और इंसानों को पैगम्बर सुलैमान (उन पर सलाम हो) के हवाले किया, सूरज और चाँद को पैगम्बर मुहम्मद (उन पर सलाम हो) के हवाले कर, उन पर सलाम हो और बरकत हो। और मुझे और रिसाले-ए-नूर के शागिर्दों को बद रूह और शैतान की बुराई से और क़ब्र और जहन्नम की यातनाओं से बचा; हमें जन्नत के सबसे ऊँचे मुकाम में खुश कर! आमीन! आमीन!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

और उनका आह्वान इस प्रकार समाप्त होगा कि “सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है!”

यदि मैंने इस शिक्षा को, जो मैंने अल-जौशनुल-कबीर ("महान ढाल") से ली है, ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की प्रार्थना के रूप में, अपने दयालु भगवान के दरबार में पूजा के एक चिंतनशील कार्य के रूप में पेश करके गलती की है, तो हे मेरे भगवान, मैं आपकी दया को कुरान और अल-जौशनुल-कबीर के लिए मुझे क्षमा करने के लिए कहता हूं।

नर्सी ने कहा

चौथी किरण

चौथी किरण

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम संरक्षक है!

यह किरण इस आयत से ली गई है, " अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा रक्षक है!" (3:173)

नोट: अन्य रचनाओं के विपरीत, रिसाले-ए-नूर अपने अर्थों को धीरे-धीरे विकसित और प्रकट करता है। इस ग्रंथ में पहला पहलू विशेष रूप से सूक्ष्म और गहरा है, जो एक बहुत ही मूल्यवान सत्य की व्याख्या करता है। मेरे लिए यह एक भावनात्मक चिंतन, विश्वास पर आधारित एक जीवनदायी उपचार और मेरे दिल में एक गुप्त प्रवचन के रूप में मेरे लिए विशिष्ट है, यह मेरी विभिन्न गहरी बीमारियों के लिए एक इलाज साबित हुआ। जो लोग समान आध्यात्मिक मानसिकता के हैं वे इसे पूरी तरह से समझेंगे; जो नहीं हैं वे इसे पूरी तरह से अनुभव करने में असमर्थ हो सकते हैं।

पहला अध्याय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम संरक्षक है!

O इस तथ्य को स्वीकार करें कि सांसारिक लोगों ने मुझे अलग-थलग कर दिया था हर चीज़ से दूर, मैं पाँच तरह के अलगाव से पीड़ित था।16 मैं पाँच बीमारियों से भी पीड़ित था - आंशिक रूप से मेरे बुढ़ापे में महसूस किए गए दुखों से उत्पन्न। रिसाले-ए-नूर की सांत्वना और मददगार रोशनी की ओर देखे बिना, संकट से उत्पन्न असावधानी के कारण, मैंने अपने दिल और आत्मा की ओर रुख किया। मैंने देखा कि असीम नपुंसकता और असीम ज़रूरत के साथ-साथ, मैं एक अत्यंत दुर्बलता से ग्रस्त था।

[16] इस तरह के अलगाव के लिए, देखें: सईद नूरसी, द लेटर्स, (अनुवाद), द लाइट, 2007, "द सिक्स्थ लेटर," पृ. 35-37. (अनुवाद)

स्थायित्व की प्रबल इच्छा, अस्तित्व के प्रति तीव्र लगाव और जीवन के लिए तीव्र लालसा। फिर भी नश्वरता का भयानक भूत उस स्थायित्व को समाप्त करने की धमकी दे रहा था। ऐसी मनोदशा में, मैंने एक कवि की तरह कहा जो अलगाव की शिकायत करता है:

मेरा हृदय स्थायित्व चाहता था, किन्तु परम सत्य ईश्वर ने आदेश दिया कि मेरा शरीर नश्वर रहे;
मैं एक असाध्य रोग से पीड़ित हूँ; यह कितने दुःख की बात है कि लुकमान को भी इसका पता नहीं है!

मैंने निराशा में अपना सिर झुका लिया। अचानक आयत, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा रक्षक है! (3:173), मेरी सहायता के लिए आई, और मुझे इसे ध्यान से पढ़ने के लिए कहा। इसलिए मैंने इसे हर दिन पाँच सौ बार पढ़ा। इसके केवल नौ पहलुओं या इसके अनगिनत अमूल्य प्रकाशों में से नौ को संक्षेप में लिखते हुए, जो मेरे सामने "दृष्टि या अवलोकन पर आधारित निश्चितता" के स्तर पर प्रकट हुए, मैं पाठकों को विवरण के लिए रिसाले-ए-नूर का संदर्भ देता हूँ , जो अतीत में दृष्टि पर नहीं, बल्कि "ज्ञान पर आधारित निश्चितता" के स्तर पर जाना जाता था।17

परमेश्वर की पर्याप्तता का पहला प्रकाशमान पहलू

मनुष्य का स्थायित्व के प्रति सहज प्रेम और अमरता की उनकी इच्छा अनिवार्य रूप से उनके अस्तित्व में एक नाम की अभिव्यक्ति से उत्पन्न होती है जो पूर्णता और महिमा के स्वामी से संबंधित है, जिसे उनकी पूर्ण पूर्णता के कारण स्वाभाविक रूप से प्यार किया जाता है। यह अभिव्यक्ति, जो मनुष्यों में उस नाम के प्रतिबिंब या छाया की तरह है, लोगों को अमरता की अपनी इच्छा को उस पूर्ण रूप से परिपूर्ण व्यक्ति के सार, पूर्णता और स्थायित्व की ओर निर्देशित करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हालाँकि, मेरे मामले में, स्थायित्व का यह प्रेम अपना रास्ता खो चुका है और लापरवाही के कारण, छाया से जुड़ गया है। इस प्रकार, यह इस सांसारिक जीवन में स्थायित्व की तलाश कर रहा था, जो शाश्वत के लिए रखे गए एक क्षणभंगुर दर्पण से अधिक कुछ नहीं है।

फिर कुरान का कथन आया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और पर्दा हटा दिया। मैंने "पूर्ण निश्चय" की हद तक देखा और अनुभव किया कि

17 मुस्लिम विद्वानों ने कुरान में लिखी बातों के आधार पर निश्चितता (यक़ीन) के तीन स्तरों या डिग्री की ओर इशारा किया है : ज्ञान की निश्चितता, यानी ज्ञान पर आधारित या उससे उत्पन्न निश्चितता, दृष्टि की निश्चितता - दृष्टि पर आधारित निश्चितता, और अनुभव की निश्चितता -
अनुभव पर आधारित निश्चितता। (ट्र.)

मेरे स्थायित्व का सच्चा सुख और खुशी, पूर्णतया और अधिक परिपूर्ण रूप में, उस सर्व-स्थायी पूर्णतया के स्थायित्व में निहित है, तथा यह विश्वास करने और पुष्टि करने में है कि वही मेरा प्रभु और देवता है। क्योंकि उसके स्थायित्व के माध्यम से ही मेरे लिए एक अमर सत्य का एहसास हो सकता है। विश्वास की चेतना यह स्थापित करती है कि मेरा सारभूत अस्तित्व एक स्थायी, शाश्वत दिव्य नाम की छाया मात्र है और इसलिए शाश्वत रूप से जीवित रहता है।

विश्वास की चेतना के माध्यम से ही परम परिपूर्ण और प्रियतम के अस्तित्व को जाना जाता है, और मनुष्य में जन्मजात, तीव्र प्रेम की संतुष्टि होती है। साथ ही, शाश्वत रूप से स्थायी एक के अस्तित्व और स्थायित्व में सचेत विश्वास के माध्यम से ही ब्रह्मांड और मानव जाति की पूर्णता की खोज की जाती है, इस प्रकार पूर्णता के प्रति मानवता के जन्मजात मोह को अंतहीन पीड़ाओं से बचाया जाता है और उन्हें सच्चा संतोष प्राप्त करने की अनुमति दी जाती है।

इसके अलावा, विश्वास की चेतना के माध्यम से शाश्वत रूप से स्थायी एक के साथ एक संबंध बनता है और उस संबंध में विश्वास के माध्यम से उसके सभी प्रभुत्वों के साथ एक संबंध अस्तित्व में आता है। और उस संबंध और रिश्ते के कारण, जो एक अर्थ में मानवता को उन सभी अनंत प्रभुत्वों का रूपक स्वामी बनाता है, व्यक्ति उन पर विश्वास और लाभ की नज़र से देखता है।

इसके अलावा, विश्वास की चेतना और उस संबंध और रिश्ते के माध्यम से, सभी प्राणियों के साथ एक तरह का बंधन बनता है। इस तरह, किसी के व्यक्तिगत अस्तित्व से परे, विश्वास की चेतना और उपर्युक्त संबंध, संबंध और बंधन के माध्यम से, एक असीम अस्तित्व अस्तित्व में आता है जिसे लोग अपना मानते हैं, इस प्रकार अस्तित्व के लिए उनके सहज जुनून को शांत करते हैं।

इसके अलावा, विश्वास की उस चेतना और उस संबंध और बंधन के माध्यम से, पूर्णता के सभी लोगों के साथ एक भाईचारा (और बहनचारा) बनता है। इस प्रकार, यह जानने के माध्यम से कि शाश्वत रूप से स्थायी एक के अस्तित्व और स्थायित्व के कारण, पूर्णता के वे असंख्य लोग शाश्वत गैर-अस्तित्व में नहीं खोए हैं, उन असंख्य प्यारे, प्रशंसित और प्रशंसित मित्रों की स्थायित्व और उनकी पूर्णता का चिरस्थायी होना विश्वास की चेतना वाले लोगों को एक शुद्ध और सबसे ऊंचा आनंद देता है।

इसके अलावा, विश्वास की उस चेतना और उस संबंध, बंधन और भाईचारे (और बहनचारे) के माध्यम से, मुझे अपने दोस्तों की खुशी के कारण असीम खुशी महसूस हुई - जिनकी खुशी के लिए मैं खुश होती-

मैं अपने जीवन का बलिदान नहीं कर सकता। क्योंकि एक दयालु मित्र हमेशा अपने सच्चे मित्रों की खुशी के बारे में सोचकर खुश होता है। इस प्रकार, विश्वास की चेतना के माध्यम से मैंने समझा कि सर्व-स्थायी पूर्णता के एक, सबसे महान रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और उनके परिवार और साथियों के शाश्वत अस्तित्व और स्थायित्व के माध्यम से, अन्य सभी पैगंबरों, संतों और शुद्ध विद्वानों के साथ-साथ - जो सभी मेरे सबसे प्रिय गुरु हैं - और मेरे सभी अन्य असंख्य दोस्त शाश्वत विनाश से बच गए हैं और उन्हें शाश्वत खुशी का आशीर्वाद मिलेगा। बड़ी खुशी के साथ मैंने देखा कि उस रिश्ते, बंधन, भाईचारे (और बहनचारे) और दोस्ती के कारण, उनकी खुशी मुझमें परिलक्षित होती थी, जिससे मैं भी खुश था।

इसके अलावा, विश्वास की चेतना के माध्यम से, मैं उन अंतहीन दुखों से बच गया जो उस प्रेम से आते हैं जो किसी व्यक्ति को अपने साथी के लिए महसूस होता है।

लोगों और रिश्तेदारों के प्रति महसूस की जाने वाली करुणा के बजाय, मुझे असीम आध्यात्मिक आनंद का अनुभव होने लगा। क्योंकि मैंने विश्वास की चेतना के माध्यम से महसूस किया कि मेरे माता-पिता, मेरे रक्त संबंधी और मेरे आध्यात्मिक भाई-बहन, जिनके लिए मैं गर्व के साथ अपना जीवन बलिदान कर सकता था, वे वास्तव में सर्वव्यापी के अस्तित्व और स्थायित्व के माध्यम से अनन्त विनाश और अंतहीन दर्द से बच गए थे, और उनकी असीम दया से अनुग्रहित होंगे। मैंने देखा कि तुच्छ और अप्रभावी करुणा के स्थान पर, जिसने मुझे दु:ख और संकट के अलावा कुछ नहीं दिया, एक असीम दया उनकी रक्षा और देखभाल कर रही थी। और जिस तरह एक माँ अपने बच्चे की सहजता, आराम और खुशी से प्रसन्न होती है, मैं उन सभी लोगों की उस दया की सुरक्षा के तहत मुक्ति और सहजता से प्रसन्न और अति प्रसन्न था, जिनके लिए मेरे मन में करुणा है, और मैं गहराई से आभारी हो गया।

साथ ही, विश्वास की चेतना के माध्यम से, और सर्वशक्तिमान के साथ इसके द्वारा प्रदान किए गए संबंध के माध्यम से, मैं दृढ़ विश्वास के साथ जानता था कि रिसाले-ए-नूर, जो मेरे जीवन का कर्तव्य और उत्पाद था, और मेरी खुशी का साधन था, खोने और लाभहीन होने से बच जाएगा; मैं जानता था कि यह नष्ट नहीं होगा या इसका अर्थ नहीं खोएगा और यह फलदायी रहेगा और स्थायित्व प्राप्त करेगा। इससे मुझे एक गहरी आध्यात्मिक खुशी मिली जो मेरे अपने स्थायित्व के बारे में महसूस की गई खुशी से कहीं अधिक थी। क्योंकि मेरा मानना था कि सर्वव्यापी पूर्णता के अस्तित्व और स्थायित्व के माध्यम से, रिसाले -ए-नूर न केवल लोगों के दिलों और यादों में अंकित हो रहा था, बल्कि असंख्य संवेदनशील प्राणियों और आध्यात्मिक प्राणियों द्वारा इसका अध्ययन किया जा रहा था। इसके अलावा, अगर भगवान इससे प्रसन्न होते, तो यह

सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका और अन्य "संरक्षित पट्टिकाओं"[18] पर उत्कीर्ण किया जा रहा था और पुरस्कार के फलों से सजाया जा रहा था। मैं यह भी जानता था कि कुरान के साथ इसके विशेष संबंध और पालन के माध्यम से, और - ईश्वर की इच्छा से - पैगंबर द्वारा इसकी स्वीकृति, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और ईश्वर की स्वीकृति और अच्छी खुशी के साथ इसका पक्ष लिया जा रहा है, रिसाले-ए नूर के लिए ईश्वरीय प्रशंसा का एक क्षण दुनिया के सभी लोगों की प्रशंसा से कहीं अधिक मूल्यवान था। इस प्रकार मुझे एहसास हुआ कि मैं उन सभी ग्रंथों की सहनशीलता, कथनों और ईश्वरीय स्वीकार्यता के लिए अपना जीवन बलिदान करने के लिए हमेशा तैयार हूं, जो विश्वास की सच्चाईयों को साबित करते हैं, और मुझे पता था कि मेरी खुशी इस तथ्य में निहित है कि वे कुरान की सेवा करते हैं। इस प्रकार, विश्वास द्वारा प्रदान किए गए ईश्वर के साथ संबंध के माध्यम से, मैंने समझा कि ईश्वरीय स्थायित्व के माध्यम से उन्हें लोगों की प्रशंसा से सौ गुना अधिक प्रशंसा मिल सकती है।

मैंने अपने हृदय की गहराई से घोषणा की: “परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना उत्तम संरक्षक है!”

इसके अलावा, विश्वास की चेतना के माध्यम से मुझे पता था कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर के अस्तित्व और स्थायित्व में विश्वास, जो अनन्त जीवन प्रदान करता है, और उस विश्वास के परिणाम - जैसे पुण्य कर्म - इस क्षणभंगुर, सांसारिक अस्तित्व के अनन्त फल हैं और अगली दुनिया में अनन्त जीवन के साधन हैं। एक बीज की तरह जो फल देने वाले पेड़ में बदलने के लिए अपने खोल को तोड़ देता है, मैंने अपनी आत्मा को इस स्पष्ट सांसारिक स्थायित्व के खोल को तोड़ने के लिए आश्वस्त किया ताकि अनन्त फल पैदा हो सकें। अपनी आत्मा के साथ मैंने कहा: "भगवान हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है, और उसका शाश्वत स्थायित्व हमारे लिए पर्याप्त है!"

इसके अलावा, विश्वास की चेतना और सर्वशक्तिमान के साथ संबंध के माध्यम से जो उसका सेवक होने से आता है, मैं ज्ञान से उत्पन्न एक निश्चितता के साथ जानता था कि जो पृथ्वी के पर्दे से परे है वह प्रकाशित है, कि पृथ्वी की भारी परत मृतकों से उठा ली गई है, और वह जमीन के नीचे का क्षेत्र जिसमें परमेश्वर के द्वारा प्रवेश किया जा सकता है।

---

18 सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका, जो एक तरह से ईश्वर के शाश्वत ज्ञान के समान है, वह "पट्टिका" है जिस पर सभी प्राणियों के पूर्व-शाश्वत, आदिम अस्तित्वगत रूप जो अस्तित्व में आएंगे और ब्रह्मांड में होने वाली घटनाएँ अनंत काल तक विद्यमान रहेंगी। सभी प्राणियों के कर्म भी इस पर दर्ज हैं। अन्य संरक्षित पट्टियाँ वास्तविक या रूपकात्मक "पट्टिकाएँ" हैं जिन पर सभी प्राणियों के कर्म और सभी घटनाएँ दर्ज हैं। मानवीय स्मृतियाँ और पेड़ों और पौधों के बीज इन पट्टियों के उदाहरण हैं। (अनुवाद)

कब्र का द्वार अनंत काल के अंधकार में डूबा हुआ नहीं है। अपनी पूरी ताकत से मैंने पुकारा: "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना महान संरक्षक है!"

इसके अलावा, मैंने दृढ़ विश्वास के साथ अनुभव किया और विश्वास की चेतना के माध्यम से अनुभव के आधार पर मुझे निश्चितता के साथ पता था कि अमरता के लिए मेरी तीव्र, सहज इच्छा दो तरीकों से पूर्ण-स्थायी पूर्णता के स्थायित्व को इंगित करती है, क्योंकि मैं आत्म-प्रशंसा से घिरा हुआ था, मैंने अपने सच्चे प्रिय को खो दिया था और इतना मूर्ख बन गया था कि मैंने प्रिय की छाया या प्रतिबिंब की पूजा करना शुरू कर दिया था। अमरता का अत्यधिक गहरा और शक्तिशाली प्रेम जो मेरे मूल अस्तित्व में प्रबल था, वह पूर्ण रूप से पूर्ण के पूर्ण नामों में से एक के प्रकटीकरण से आया था, जिसे केवल अपने लिए प्यार किया जाता है और पूजा की जाती है, और जिसके सार की पूर्णता पूजा के कारण के रूप में पूरी तरह से पर्याप्त है। इसके अलावा, मैंने महसूस किया कि उपर्युक्त स्थायी फल प्रदान करके - जिनमें से प्रत्येक एक सांसारिक या शाश्वत जीवन का त्याग करने के लायक नहीं है, बल्कि हजारों - उसने उस सहज इच्छा को और भी तीव्र बना दिया था। यदि मैं ऐसा कर पाता, तो मैं अपने अस्तित्व के सभी कणों से घोषणा करता: "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!" मैंने यह बात ठीक इसी इरादे से कही थी।

विश्वास की चेतना, जो शाश्वत जीवन की खोज करती है और ईश्वर की शाश्वतता को पाती है - जिसके कुछ फल मैंने ऊपर बताए हैं।

“इसके अलावा... इसके अतिरिक्त... साथ ही... ” से शुरू होने वाले पैराग्राफों ने मुझे इतना आनंद और उत्साह दिया कि मैंने अपनी पूरी आत्मा और शक्ति के साथ और अपने दिल और आत्मा की गहराई से कहा: “परमेश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!”

परमेश्र्वर की पर्याप्तता का दूसरा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब बुढ़ापा, निर्वासन, एकांत और एकांत मेरी अंतहीन जन्मजात नपुंसकता में शामिल हो गए थे, और जब "सांसारिक" लोग अपनी जासूसी और अपनी साजिशों के साथ मुझ पर हमला कर रहे थे, मैंने अपने दिल से कहा: "सेनाएँ एक ऐसे व्यक्ति पर हमला कर रही हैं जिसके हाथ बंधे हुए हैं, और जो बीमार और कमज़ोर है। क्या मेरे लिए कोई सहारा नहीं है?" तब मैंने इस आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है, और इसने मुझे निम्नलिखित बातों की जानकारी दी:

विश्वास के माध्यम से आप पूर्ण शक्ति के शासक से जुड़ जाते हैं, जो ऐसा है कि हर वसंत में वह सही क्रम की सेनाओं से सुसज्जित करता है

पृथ्वी पर पौधे और जानवर, जिनमें सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग "राष्ट्र" शामिल हैं। वह दो शानदार सेनाओं यानी पेड़ों और उड़ने वाले जीवों की वर्दी को भी नवीनीकृत करता है, उन्हें नए कपड़े पहनाता है। जैसे वह मुर्गियों और मोरों के बाहरी वस्त्र बदलता है, उन्हें हमेशा नवीनीकृत और सुंदर बनाता है, वैसे ही वह पहाड़ों के कपड़े और मैदानों के पर्दे भी बदलता है।

इसके अलावा, सर्व-दयालु होने के नाते, वह सभी प्राणियों और मनुष्यों के पोषण के लिए सभी प्रकार के अर्क के रूप में छोटे-छोटे सुरक्षात्मक आवरणों में रखता है।

खाद्य पदार्थों की किस्में, जिन्हें हम बीज और अनाज कहते हैं, और जिनकी तुलना मांस, चीनी और हाल ही में खोजे गए अन्य खाद्य पदार्थों से की जा सकती है, लेकिन जो सौ गुना अधिक परिपूर्ण हैं। वह उन अर्क में नियति या ईश्वरीय निर्धारण के निर्देशों को शामिल करता है जो उनके विकास और खाद्य पदार्थों के रूप में विकसित होने के बारे में हैं। उन छोटे-छोटे मामलों का निर्माण " कफ़-नून के कारखाने" में इतनी तेज़ी, आसानी और प्रचुरता के साथ होता है19 कि कुरान कहता है कि निर्माता केवल किसी चीज़ को अस्तित्व में रहने का आदेश देता है और वह अस्तित्व में आ जाती है (यानी, 2:117; 3:47; 6:73)। हालाँकि वे सभी अर्क एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, एक ही पदार्थ के हैं और एक शहर को नहीं भर सकते हैं, लेकिन अत्यधिक विविध और स्वादिष्ट भोजन जो कि सर्व-दयालु प्रदाता उनसे पकाता है, पृथ्वी पर सभी शहरों को भर सकता है।

चूँकि आपको विश्वास द्वारा सक्षम ईश्वर से जुड़ने के माध्यम से ऐसा समर्थन मिलता है, इसलिए आप अनंत शक्ति और सामर्थ्य पर भरोसा कर सकते हैं। जब मैंने इस श्लोक से यह सबक सीखा, तो मुझे ऐसी नैतिक शक्ति मिली कि मुझे लगा कि मेरा विश्वास न केवल मेरे वर्तमान शत्रुओं बल्कि पूरी दुनिया को चुनौती देने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। अपनी पूरी आत्मा के साथ मैंने घोषणा की, "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!"

अपनी असीम गरीबी और ज़रूरतों के लिए मदद के स्रोत की तलाश में, एक बार फिर मैंने इस श्लोक का सहारा लिया। इसमें अब यह कहा गया है: सेवा और पूजा के रिश्ते के ज़रिए आप एक सर्व-दयालु मालिक के हैं और उनकी व्यवस्था की नोटबुक में दर्ज हैं - एक मालिक जो हर वसंत और गर्मियों में धरती की मेज़ पर एक शानदार भोजन तैयार करता है और इसे सौ गुना फैलाता है, अदृश्य पर्दे के पीछे से, अप्रत्याशित स्थानों से और सूखी धरती के नीचे से भोजन तैयार करता है। यह ऐसा है जैसे कि

---

19 कफ़न-नून की फैक्ट्री " ईश्वर के आदेश "कुन! (हो जाओ!)" को संदर्भित करती है, जिसे वह किसी ऐसी चीज़ से कहता है जिसे वह होना चाहता है। कुरान घोषणा करता है: जब वह किसी चीज़ को होने की इच्छा करता है, तो वह बस उससे कहता है "हो जाओ!" और (उसी पल में) वह हो जाती है (36:82)। (ट्र.)

वर्ष और दिन सभी उदारता के फलों और दया के भोजन के पात्र हैं जो निरंतर क्रम में दिखाई देते हैं। वे एक सर्व-दयालु प्रदाता के सार्वभौमिक और विशेष दोनों प्रकार के दान की डिग्री के प्रदर्शन हैं। आप ऐसे परम धनवान के सेवक हैं। यदि आप अपनी दासता के प्रति सचेत हैं, तो आपकी घोर गरीबी सुखद भूख में बदल जाएगी। यह सबक सीखते हुए, मैंने ईश्वर पर अपना भरोसा रखा और अपनी आत्मा से घोषणा की: "निश्चित रूप से यह सही है! ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है!"

परमेश्वर की पर्याप्तता का तीसरा प्रकाशमान पहलू

निर्वासन और बीमारी के उत्पीड़न के कारण संसार से मेरा लगाव टूट गया, विश्वास की वास्तविकता ने मुझे यह एहसास दिलाया कि मुझे एक शाश्वत दुनिया में, एक शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत सुख के लिए नियत किया गया था। इस बिंदु पर मैंने उन पुराने पछतावे की आहों को त्याग दिया, जो केवल अधिक दु:ख का कारण बनते थे, और हंसमुख और खुश हो गए। हालांकि, मुझे यह भी पता था कि यह आदर्श, आत्मा का यह लक्ष्य और मानव प्रकृति का अंतिम परिणाम केवल एक परम सर्वशक्तिमान की अनंत शक्ति के माध्यम से ही साकार हो सकता है, जो अपने सभी प्राणियों की क्रिया, अकर्म, व्यवहार और अवस्थाओं को जानता और दर्ज करता है, चाहे वे शब्द या कर्म में हों, और मनुष्यों पर असीम अनुग्रह और महत्व प्रदान करता है, जिन्हें वह अपना मित्र और संबोधित करता है, और जिन्हें उसने सभी प्राणियों की पूर्ण नपुंसकता के बावजूद सभी प्राणियों से श्रेष्ठ दर्जा दिया है। इन दो बिंदुओं पर विचार करते हुए-

अर्थात्, ऐसी शक्ति की गतिविधि और स्पष्ट रूप से शक्तिहीन और महत्वहीन मनुष्यों का वास्तविक महत्व - मैंने एक स्पष्टीकरण की तलाश की जो मेरे विश्वास को मजबूत करे और मेरे दिल को संतुष्ट करे। फिर से मैंने आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना बढ़िया संरक्षक है! इस बार इसने मुझे अरबी प्रत्यय "-ना" ("हम") पर ध्यान देने और उन प्राणियों पर ध्यान देने के लिए कहा जो मेरे साथ यह कहने में शामिल होते हैं कि "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है", चाहे वह मौखिक रूप से हो या उनके स्वभाव की मूक वाक्पटुता के माध्यम से।

तुरन्त मैंने देखा कि असंख्य पक्षी और मक्खियाँ - जो लघु पक्षियों के समान हैं - और असंख्य पशु, पौधे और वृक्ष, मेरी तरह, यह श्लोक पढ़ रहे थे कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्तम संरक्षक है!

अपने स्वभाव की भाषा के माध्यम से। वे सभी को इस तथ्य की याद दिलाते हैं कि उनके पास एक ऐसा संरक्षक है जिसके पास सर्व-महान शक्ति है जो उनके जीवन की सभी आवश्यक आवश्यकताओं की गारंटी देता है और विशेष रूप से हर वसंत में, वह बनाता है

हमारी आँखों के सामने जानवरों की अनगिनत प्रजातियाँ और पौधों और पेड़ों की विभिन्न किस्में सबसे संतुलित और सुव्यवस्थित तरीके से, अत्यधिक प्रचुरता और विशाल पैमाने पर, सबसे बड़ी सहजता और अत्यंत कलात्मकता के साथ, और एक दूसरे से भिन्न रूपों में। यह सब वह बिना किसी दोष, दोष या भ्रम के करता है, उन्हें अंडे, अनाज, बीज और तरल पदार्थ की बूंदों से उत्पन्न करता है जो एक दूसरे से मिलते जुलते हैं और जिनके घटक तत्व एक जैसे हैं। यह कि इन प्राणियों के बीच अनंत अंतर होने के बावजूद ये एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, हमें उनकी एकता और एकरूपता को दर्शाता है, और स्पष्ट रूप से दिखाता है कि उनके प्रभुत्व और रचनात्मकता के उन कार्यों में “भागीदारों” द्वारा कोई हस्तक्षेप या भागीदारी नहीं हो सकती है।

फिर मैंने देखा कि "मैं", यानी मेरी आत्मा, "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है" श्लोक में प्रथम पुरुष बहुवचन "हम" में शामिल है। मैंने देखा कि जीवित प्राणियों के बीच, उसने मुझे चमत्कारी ढंग से तरल पदार्थ की एक बूंद से बनाया है। उसने मेरे कान खोले हैं और मेरी आँखें स्थापित की हैं। इसके अलावा, उसने मेरे सिर में एक मस्तिष्क, मेरे सीने में एक दिल और मेरे मुँह में एक जीभ रखी है; और प्रत्येक में उसने बहुत सारे छोटे तराजू और मापने के उपकरण बनाए हैं जिनके साथ मैं उन सभी उपहारों को तौलने, मापने और समझने में सक्षम हूं जो उसने दिव्य दया के खजाने में संग्रहीत किए हैं। उन्होंने उनमें अपने सभी सुंदर नामों की असीम अभिव्यक्तियों के खजाने को खोलने और पहचानने के लिए हजारों उपकरण भी बनाए हैं, और सभी गंधों, स्वादों और रंगों को उन लोगों की सहायता के लिए निर्देश के रूप में नियुक्त किया है।

उपकरण.

इसके अलावा, इस शरीर में उन सभी असंख्य संवेदनशील भावनाओं और इंद्रियों को, और उन सूक्ष्म, गैर-भौतिक क्षमताओं और आंतरिक इंद्रियों को पूर्ण क्रम में शामिल करने के अलावा, उसने मेरे शरीर के सभी भागों, प्रणालियों और अंगों को पूर्ण बुद्धि के साथ बनाया है जो जीवन के लिए आवश्यक हैं; उसने ऐसा इतना सरलता से किया है कि वह मुझे उसकी सभी प्रकार की कृपाओं को पहचानने और अनुभव करने की अनुमति दे सके, और ताकि वह मुझे उसके नामों की असंख्य अभिव्यक्तियों को जानने और अनुभव करने की अनुमति दे सके। सभी विश्वासियों के शरीरों की तरह, उसने मेरे इस गरीब, प्रतीत होता है कि महत्वहीन शरीर को एक प्रकार का ब्रह्मांडीय कैलेंडर या डायरी बना दिया है; स्थूल जगत की एक प्रकाशित, संकुचित प्रतिलिपि; दुनिया का एक लघु नमूना; उसके सभी अन्य प्राणियों के लिए एक स्पष्ट चमत्कार; सभी प्रकार की दिव्य कृपाओं और उनके निर्माण के साधनों का एक इच्छा-चालित साधक; वह धुरी जिस पर उसके प्रभुत्व के नियम और अभ्यास मुख्य रूप से केंद्रित हैं; उसकी बुद्धि और दया के उपहारों और फूलों की एक लघु सूची या बगीचा; और एक समझ-

अपने दिव्य उद्घोषणाओं का अभिभाषक। उसने मुझे अस्तित्व भी दिया है - उसकी सबसे बड़ी कृपा - और जीवन, जिसके माध्यम से मेरा अस्तित्व विस्तृत हो सकता है। क्योंकि जीवन के माध्यम से, मेरा अस्तित्व इस दृश्यमान, भौतिक दुनिया की सबसे बाहरी सीमाओं तक फैल सकता है।

और उसने मुझे मानवता प्रदान की है, जिसके माध्यम से अस्तित्व का अनुग्रह भौतिक और आध्यात्मिक क्षेत्रों में फैल सकता है, जिससे मुझे मानव जाति के लिए विशेष इंद्रियों के माध्यम से उसके द्वारा तैयार की गई विशाल मेज़ों से लाभ उठाने की अनुमति मिलती है। उसने मुझे इस्लाम भी प्रदान किया है, जिसके माध्यम से अस्तित्व का अनुग्रह दृश्यमान दुनिया की सीमा तक विस्तृत होता है और

अदृश्य की दुनिया। उसने मुझे सच्चा और सत्यापन योग्य भी प्रदान किया है

विश्वास, जिसके माध्यम से अस्तित्व का अनुग्रह इस दुनिया और परलोक दोनों को शामिल करता है। उसने मुझे ईश्वर के ज्ञान और प्रेम से अनुग्रहित किया है जो विश्वास से उत्पन्न होता है, जिसके माध्यम से उसने मुझे अपने हाथों को फैलाने और प्रशंसा और महिमा के माध्यम से, आकस्मिकता के क्षेत्र से लेकर आवश्यक क्षेत्र और ईश्वरीय नामों के क्षेत्र तक सृष्टि के सभी स्तरों पर मौजूद लाभों तक पहुँचने की क्षमता दी है। विशेष रूप से, उसने मुझे कुरान का ज्ञान और विश्वास की बुद्धि भी दी है, जिसके माध्यम से उसने मुझे कई प्राणियों पर श्रेष्ठता प्रदान की है।

संक्षेप में, उसने मुझे जो स्वभाव दिया है वह इतना व्यापक है कि उसमें उसकी एकता और शाश्वत प्रार्थना का एक आदर्श दर्पण बनने की क्षमता है, और उसकी सार्वभौमिक, पवित्र प्रभुता का व्यापक पूजा के साथ जवाब देने की क्षमता है। इसके अलावा, जैसा कि सभी पवित्र शास्त्रों और पुस्तकों में सर्वसम्मति से फैसला किया गया है जो उसने अपने रसूलों के माध्यम से मानव जाति के लिए भेजे हैं, और जैसा कि सभी पैगंबरों, संतों और शुद्ध विद्वानों ने एक स्वर से पुष्टि की है, वह मुझसे मेरा अस्तित्व, मेरा जीवन और मेरा आत्म खरीदता है - जैसा कि कुरान की आयतों में कहा गया है - जो मुझे ट्रस्ट में दिए गए हैं। मैंने ज्ञान की निश्चितता और दृढ़ विश्वास के साथ समझ लिया है कि वह उन्हें खो जाने और कुछ भी न होने से बचाएगा; वास्तव में, वह उन्हें सुरक्षित रखेगा, जैसा कि उसने बार-बार और स्पष्ट रूप से वादा किया है, और वह पुरस्कार के रूप में शाश्वत सुख और स्वर्ग प्रदान करेगा।

इस प्रकार, मुझे इस श्लोक से शिक्षा मिली कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट रक्षक है! कि मेरे पास एक परम ऐश्वर्यशाली और दानशील ईश्वर है, जो अपने नाम के माध्यम से सीमित, लगभग समान बीजों और द्रव की बूंदों से लाखों प्रकार के जानवरों और पौधों के रूपों को अत्यंत सुविधा, गति और पूर्णता के साथ "खोलता" है, और जैसा कि हमने पहले सीखा, मानवता को यह आश्चर्यजनक महत्व देता है,

उन्हें अपने प्रभु के कार्यों की मुख्य धुरी बनाना। इस श्लोक ने मुझे यह भी सिखाया कि वह पुनरुत्थान लाएगा, स्वर्ग प्रदान करेगा, और अनंत सुख का सृजन उतनी ही आसानी से और निश्चित रूप से करेगा, जितना कि वह अगले वसंत में करेगा। अगर मैं ऐसा करने में सक्षम होता, तो मैं सभी प्राणियों की जुबानों के माध्यम से कहता "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!" इसके बजाय मैं इसे उस इरादे से और अपने विचार और कल्पना के माध्यम से कहता हूं, और मैं इसे अनंत काल तक दोहराना चाहता हूं।

परमेश्वर की पर्याप्तता का चौथा प्रकाशमान पहलू

एक बार, असावधानी के दौर में, जब मैं बुढ़ापे, निर्वासन और बीमारी से अभिभूत महसूस कर रहा था, मैं अपने अस्तित्व के बारे में बहुत चिंतित हो गया, जिसके लिए मुझे इतना गहरा लगाव महसूस हुआ कि यह मोह की सीमा तक पहुँच गया। मैं चिंतित था-

मुझे लगा कि मेरा अस्तित्व भी सभी अन्य प्राणियों की तरह मृत्यु की ओर जा रहा है और मेरा अस्तित्व भी समाप्त हो जाएगा। इसलिए एक बार फिर मैंने उसी कुरान की आयत का सहारा लिया। इस बार उसमें कहा गया था, "मेरे अर्थ पर ध्यान दो: इसे विश्वास की दूरबीन से देखो!"

इसलिए मैंने विश्वास की दृष्टि से देखा कि मेरा छोटा सा अस्तित्व एक असीमित अस्तित्व का दर्पण है; मैंने देखा कि अनंत विस्तार के माध्यम से यह असंख्य अस्तित्वों को प्राप्त करने का साधन है, और यह ज्ञान का एक शब्द है जो अपने से अधिक मूल्यवान असंख्य स्थायी अस्तित्वों के फल प्रदान करेगा। ज्ञान से उत्पन्न निश्चितता की एक सीमा तक मुझे समझ में आया कि उस असीमित अस्तित्व के साथ जुड़ना, एक पल के लिए भी, शाश्वत अस्तित्व जितना ही मूल्यवान है। क्योंकि मैंने विश्वास की चेतना के माध्यम से समझा कि मेरा अस्तित्व कला का एक कार्य और अनिवार्य रूप से विद्यमान अस्तित्व की अभिव्यक्ति है। इसलिए, अकेलेपन की अनिवार्य रूप से निराधार चिंताओं और असंख्य अलगावों और उनके दर्द से बचकर, मैंने उन प्राणियों के साथ भाईचारे के रिश्ते और बंधन बनाए जिन्हें मैं प्यार करता हूँ, उन दिव्य नामों की संख्या तक जो सभी सृष्टि और विशेष रूप से जीवित प्राणियों पर प्रकट होने वाले कार्यों के स्रोत हैं। मुझे पता था कि एक अस्थायी अलगाव के बाद उन सभी के साथ एक स्थायी मिलन होगा। जैसा कि सभी जानते हैं, जो लोग एक ही गांव, शहर या देश में रहते हैं, या एक ही रेजिमेंट, कमांडर या मास्टर के अधीन काम करते हैं, वे एक दूसरे के साथ घनिष्ठ भाईचारा या बहनचारा और गर्मजोशी भरी दोस्ती महसूस करेंगे, जबकि जो लोग ऐसे बंधनों से वंचित हैं वे निरंतर अंधकार और पीड़ा में रहते हैं। यदि किसी वृक्ष के फल संवेदनशील और सचेत होते, तो वे भी

उन्हें लगेगा कि वे एक दूसरे के भाई-बहन, साथी और पर्यवेक्षक हैं। अगर पेड़ खत्म हो जाए या उन्हें उससे तोड़ दिया जाए, तो वे पेड़ पर लगे फलों की संख्या के हिसाब से अलग हो जाएंगे।

इस प्रकार विश्वास और सृष्टिकर्ता तथा उसके प्राणियों के साथ उसके द्वारा उत्पन्न संबंध के माध्यम से, सभी विश्वासियों की तरह, मेरा अस्तित्व असंख्य अस्तित्वों की रोशनी प्राप्त करता है जो अलगाव से अप्रभावित रहते हैं। भले ही मेरा अस्तित्व चला जाए और अन्य पीछे रह जाएं, यह उतना ही खुश है जितना कि यह भी रह गया होता। इसके अलावा, जैसा कि चौबीसवें पत्र में विस्तार से बताया गया है, प्रत्येक जीवित प्राणी का अस्तित्व, और विशेष रूप से उन लोगों का जो आत्मा रखते हैं, एक शब्द की तरह है: इसे बोला जाता है और लिखा जाता है और फिर गायब हो जाता है। फिर भी जैसे-जैसे यह आगे बढ़ता है, यह अपने पीछे कई "द्वितीय श्रेणी" अस्तित्वों को छोड़ता जाता है, जैसे इसका अर्थ, इसकी "आदर्श" पहचान और रूप, और इसके परिणाम। यह अपने पीछे अपने पुरस्कार भी छोड़ता है - अगर इसे ईश्वर की स्वीकृति और अच्छी खुशी मिली है - और वह सत्य जो इसने व्यक्त किया है। केवल तभी यह पर्दे के नीचे से गुजरता है।

इसी तरह, जब वे अपने बाहरी आवरणों से अलग हो जाते हैं, तो मेरा अस्तित्व और सभी जीवित प्राणियों का अस्तित्व अपनी आत्मा को पीछे छोड़ देता है, यदि उनमें आत्मा है; और उनके अर्थ, उनके द्वारा व्यक्त किए गए सत्य, उनकी "आदर्श" पहचान, और उनके व्यक्तिगत स्वभाव के सांसारिक परिणाम और परलोक से संबंधित उनके फल भी पीछे छोड़ दिए जाते हैं। वे अपने रूप और पहचान को स्मृतियों में और "संरक्षित पट्टिकाओं" पर, शाश्वत दृश्यों को प्रदर्शित करने वाली फिल्मों में और ईश्वर के शाश्वत ज्ञान के प्रदर्शनों में भी छोड़ जाते हैं। वे अपने स्वभाव, स्वभाव और जीवन के माध्यम से जो महिमा प्रदान करते हैं, जो उनका प्रतिनिधित्व करते हैं और उन्हें स्थायित्व देते हैं, उन्हें अपने कर्मों के अभिलेखों में छोड़ जाते हैं, और वे दिव्य नामों के क्षेत्र में उन नामों की अभिव्यक्तियों और अपरिहार्य मांगों के प्रति अपनी सहज प्रतिक्रियाएँ, साथ ही उनके प्रति दर्पण होने के अपने उदाहरण छोड़ जाते हैं। संक्षेप में, वे अपने बाहरी अस्तित्वों की तुलना में अधिक मूल्यवान ऐसे असंख्य अमूर्त अस्तित्वों को पीछे छोड़ जाते हैं और फिर चले जाते हैं।

यह बात मुझे “ज्ञान पर आधारित निश्चितता” के साथ पता थी।

इस प्रकार, विश्वास और विश्वास से उत्पन्न चेतना और संबंध के माध्यम से, व्यक्ति उपर्युक्त शाश्वत, अमूर्त अस्तित्वों को प्राप्त कर सकता है। विश्वास के बिना, व्यक्ति इन सभी अन्य अस्तित्वों से वंचित हो जाता है; वास्तव में, उसका अपना बाह्य अस्तित्व भी व्यर्थ हो जाता है, मानो वह उसके अपने कारण शाश्वत अस्तित्वहीन हो गया हो।

एक बार मुझे वसंत के फूलों के तेजी से नष्ट होने पर बहुत दुख हुआ था; मुझे उन नाजुक जीवों पर दया आ गई थी। लेकिन ऊपर बताए गए विश्वास की सच्चाई

यह दर्शाता है कि ये फूल अर्थ की दुनिया में बीज हैं। चूँकि उनमें से प्रत्येक एक फलदार वृक्ष की तरह बन जाता है जो आत्मा के अलावा उपर्युक्त सभी अस्तित्वों को उत्पन्न करता है, वे अस्तित्व की रोशनी के संबंध में सौ गुना लाभ देते हैं। उनके बाहरी अस्तित्व गैर-अस्तित्व में नहीं जाते हैं: वे केवल छिपे हुए हैं। इसके अलावा, वे अपनी प्रजाति के स्थायी सत्य के नए रूप हैं। इस वसंत के प्राणियों, जैसे कि पत्ते, फूल और फल, पिछले वसंत के समान प्रकृति के हैं: अंतर केवल भौतिक पहचान का है। मुझे एहसास हुआ कि यह अंतर भी ज्ञान के उन शब्दों, दया के उन वाक्यांशों और शक्ति के उन अक्षरों को कई अलग-अलग अर्थों को प्रकट करने की अनुमति देता है।

विलाप करने के बजाय, मैंने कहा: "भगवान क्या चमत्कार चाहते हैं! भगवान का आशीर्वाद कितना महान है!"

इस प्रकार, विश्वास की चेतना और उस विश्वास के माध्यम से आकाश और पृथ्वी के निर्माता के साथ संबंध स्थापित होने के कारण, मैंने कुछ हद तक यह महसूस किया कि एक शिल्पकार की कलाकृति होना कितना मूल्यवान और अद्वितीय है, जो आकाश को तारों से और पृथ्वी को फूलों और अन्य उत्कृष्ट प्राणियों से सजाता है, तथा अपनी प्रत्येक कलाकृति में सैकड़ों चमत्कार प्रदर्शित करता है।

सचेत प्राणियों को कितना गर्व और सम्मान महसूस होता है जब उन्हें पता चलता है कि वे ऐसे असीम रूप से अद्भुत कलाकार की कृति हैं! विशेष रूप से, इस श्लोक ने मुझे सिखाया कि चूँकि उस असीम रूप से चमत्कार करने वाले कलाकार ने एक मनुष्य की छोटी सी प्रति में विशाल आकाश और पृथ्वी की महान पुस्तक को अंकित किया था, यहाँ तक कि प्रत्येक मनुष्य को उस पुस्तक का एक विशेष रूप से चुना हुआ और पूर्ण सारांश बनाया था, इसलिए मानवीय क्षमता को दिया जाने वाला सम्मान, पूर्णता और मूल्य वास्तव में महान है। और इसने मुझे सिखाया कि मनुष्य को यह सम्मान और मूल्य ईश्वर में विश्वास और ऐसे विश्वास के परिणामस्वरूप निर्माता के साथ संबंध स्थापित करने के माध्यम से प्राप्त होता है। उनकी ओर से बोलने के इरादे से, मैंने सभी प्राणियों की जीभ से कहा: "ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!"

परमेश्वर की पर्याप्तता का पाँचवाँ प्रकाशमान पहलू

एक बार जब मैंने खुद को बहुत ही कठिन परिस्थितियों से घिरा पाया, तो मैंने अपने जीवन पर ध्यान केंद्रित किया। मैंने देखा कि यह तेजी से गुजर रहा था, और परलोक के करीब आ रहा था: यह कठोर परिस्थितियों में धीरे-धीरे खत्म हो रहा था। रिसाले-ए-नूर में ईश्वरीय नाम सर्व-जीवित पर चर्चा करते हुए, जीवन को कई महत्वपूर्ण कार्यों, गुणों और लाभों के रूप में वर्णित किया गया है।

मैंने दुखी होकर सोचा कि अगर ऐसा होता, तो निश्चित रूप से जीवन को इतनी जल्दी खत्म होने के बजाय टिके रहना चाहिए। फिर से मैंने अपने शिक्षक की आयत का सहारा लिया, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना बढ़िया संरक्षक है! इस बार उसने मुझसे कहा, "जीवन को सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के दृष्टिकोण से देखो, वह जिसके द्वारा सभी जीवित हैं और जो तुम्हें जीवन देता है!"

इस आयत की नसीहत को ध्यान में रखते हुए मैंने देखा कि अगर मेरी ज़िंदगी एक नज़रिए से मुझसे जुड़ी है, तो सौ नज़रिए से वह सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर से जुड़ी है। और अगर मेरी ज़िंदगी के अनगिनत नतीज़ों में से एक मेरी तरफ़ देखता है, तो हज़ार नतीज़े मेरे पैदा करने वाले की तरफ़ देखते हैं। इसलिए, ईश्वर की खुशियों और स्वीकृति के दायरे में जिया गया जीवन का एक पल ही काफ़ी है: लंबे समय की ज़रूरत नहीं है। चूँकि इस सच्चाई और इसके सबूतों को रिसाले -ए-नूर के कई दूसरे हिस्सों में समझाया गया है, इसलिए इसे यहाँ चार “मामलों” के रूप में संक्षेप में प्रस्तुत किया जाएगा।

पहला विषय: मैंने जीवन पर इस दृष्टिकोण से विचार किया कि अपने सार, स्वभाव और वास्तविकता में, जीवन सर्व-जीवित और स्वयं-अधीन एक से संबंधित है, और मैंने देखा कि:

- वास्तव में, मेरा जीवन चाबियों से भरा एक खजाना था, जो दिव्य नामों के खजाने को खोलने के लिए बनाया गया था; यह उन नामों के शिलालेखों का एक छोटा सा
- नक्शा था,
- उनकी अभिव्यक्तियों का सूचकांक,
- और एक संवेदनशील संतुलन और माप जिसके साथ पहचान और ब्रह्माण्ड के विशाल सत्यों को तौलें।
- मैं समझ गया कि यह ज्ञान का लिखित शब्द है जो उस सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर परमेश्वर के सार्थक और अमूल्य नामों को जानता है और बताता है, तथा जो समझता है और समझाता है।

इस दृष्टि से देखने पर जीवन हजार गुना अधिक मूल्यवान हो जाता है और इसका एक घंटा पूरे जीवनकाल के बराबर महत्वपूर्ण हो जाता है। और जहाँ तक उस शाश्वत परमेश्वर के साथ उसके सम्बन्ध का प्रश्न है, जो समय से बंधा हुआ नहीं है, तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह लम्बा है या छोटा।

दूसरा मामला: मैंने जीवन के आवश्यक अधिकारों पर विचार किया और मुझे निम्नलिखित बातें समझ में आईं:

- मेरा जीवन ईश्वरीय प्रभुत्व का एक संदेश है: यह स्वयं ही उन चेतन प्राणियों द्वारा पढ़ा जाता है जो मेरे भाई और बहन हैं।
- यह अध्ययन का विषय है जो अपने रचयिता को ज्ञात कराता है।

• यह एक घोषणापत्र भी है जो मेरे निर्माता की पूर्णता की घोषणा करता है। जीवन हमसे यह मांग करता है कि हम उन अमूल्य उपहारों और सजावटों से सजे रहें जो निर्माता ने इसके माध्यम से प्रदान किए हैं, और उन्हें सांसारिक अस्तित्व की दैनिक परेड में अद्वितीय संप्रभु के प्रति सचेत और सच्ची आस्था और कृतज्ञता के साथ प्रदर्शित करें।

• जीवन यह भी मांग करता है कि हम असंख्य जीवित प्राणियों द्वारा सृष्टिकर्ता को दी गई स्तुति और महिमा को समझें, उसका अवलोकन करें, घोषणा करें और उसके साक्षी बनें।

• इसके अलावा, जीवन एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर ईश्वर के प्रभुत्व की सुंदरता और अनुग्रह को या तो मौखिक रूप से या स्वभाव और पूजा की मूक वाक्पटुता के माध्यम से जाना जाता है।

इस प्रकार मुझे ज्ञान से उत्पन्न होने वाली निश्चितता की डिग्री पर यह एहसास हुआ कि जीवन के ऐसे उच्च अधिकार लंबे समय की मांग नहीं करते हैं, कि वे जीवन को हज़ार गुना बढ़ाते हैं, और जीवन के सांसारिक अधिकारों की तुलना में सौ गुना अधिक मूल्यवान हैं। और इसलिए मैंने कहा: ईश्वर की महिमा हो! विश्वास इतना मूल्यवान और स्फूर्तिदायक है कि यह जिस किसी चीज़ में प्रवेश करता है, उसमें जीवन भर देता है! इसकी एक भी लौ क्षणभंगुर जीवन से क्षणभंगुरता को दूर करती है और उसे अनंत काल का उपहार देती है।

तीसरा मामला: मैंने अपने जीवन के स्वाभाविक कर्तव्यों और जीवन के उन भौतिक लाभों पर विचार किया जो मेरे निर्माता से संबंधित हैं। मैंने देखा कि जीवन तीन तरीकों से अपने निर्माता के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है:

पहला तरीका: अपनी जन्मजात नपुंसकता, गरीबी और ज़रूरत के ज़रिए, मेरा जीवन अपने निर्माता की शक्ति, ताकत, धन और दया के लिए एक दर्पण के रूप में कार्य करता है। जिस तरह भोजन का आनंद भूख की डिग्री के अनुपात में अनुभव किया जाता है, प्रकाश की डिग्री अंधेरे की डिग्री के माध्यम से जानी जाती है, और गर्मी की डिग्री ठंड की डिग्री के माध्यम से मापी जाती है, निर्माता की असीम दया और शक्ति की सीमा मेरी पूर्ण नपुंसकता और गरीबी की सीमा से समझी जा सकती है, जिस तरह से वह मेरी अंतहीन ज़रूरतों का जवाब देता है और मेरे अस्तित्व के लिए असंख्य खतरों को दूर करता है। मुझे उसके प्रति अपने कर्तव्यों की सीमा का भी एहसास हुआ - विनती, प्रार्थना, विनम्रता, विनम्रता और सेवा के कर्तव्य।

दूसरा तरीका: मेरा जीवन अपनी क्षमताओं और विशेषताओं जैसे आंशिक ज्ञान, इच्छा, श्रवण आदि के माध्यम से मेरे निर्माता के सार्वभौमिक और सर्वव्यापी गुणों और आवश्यक गुणों या विशेषताओं को प्रतिबिंबित करता है।

ज्ञान, श्रवण, दृष्टि, वाणी, इच्छा, शक्ति और जीवन जैसे सर्वव्यापी गुण अवश्य होने चाहिए - लेकिन एक निरपेक्ष और असीमित अर्थ में - वास्तव में, मैं अपने सचेत कार्यों जैसे कि जानना, सुनना, देखना, बोलना और पूछना के माध्यम से यह अनुभव करने लगा कि मेरे निर्माता के पास ज्ञान, श्रवण, दृष्टि, वाणी, इच्छा, शक्ति और जीवन जैसे सर्वव्यापी गुण अवश्य होने चाहिए - लेकिन एक निरपेक्ष और असीमित अर्थ में -

साथ ही उसके क्रोध और करुणा जैसे आवश्यक गुणों को भी। मैंने इस पर अपने विश्वास को स्वीकार किया और इसकी पुष्टि की, इस प्रकार मुझे परमेश्वर के ज्ञान की ओर ले जाने वाला एक और मार्ग मिल गया।

तीसरा तरीका: मेरा जीवन भी ईश्वरीय नामों को प्रतिबिम्बित करता है, जो मेरे जीवन के सभी पहलुओं में मुझ पर अंकित और प्रकट होते हैं। जब मैंने अपने जीवन और अपने भौतिक शरीर को देखा, तो मैंने सैकड़ों प्रकार के चमत्कारी कार्य, शिलालेख और कलाएँ देखीं, और यह स्पष्ट रूप से देख सकता था कि मेरा पालन-पोषण अत्यंत करुणा के साथ किया जा रहा था। इससे मैंने विश्वास के प्रकाश के माध्यम से समझा कि वह कितना असाधारण रूप से उदार, दयालु, कुशल और कृपालु है जिसने मुझे बनाया है और मुझे जीवन दिया है; मैंने देखा कि वह कितना अद्भुत रूप से शक्तिशाली है और, अगर कोई ऐसा कह सकता है, तो वह कितना कलात्मक, सतर्क और कुशल है। मैंने सृजन के सहज उद्देश्यों और कर्तव्यों और जीवन के परिणामों को भी समझा जैसे कि

महिमा, पवित्रीकरण, स्तुति, धन्यवाद, उत्कर्ष, परमेश्वर की असीम महानता और श्रेष्ठता की घोषणा, और उसकी एकता की पुष्टि और घोषणा।

इसके अलावा, मैंने ज्ञान के आधार पर इस बात को निश्चितता के साथ समझा कि क्यों जीवन ईश्वर की सभी रचनाओं में सबसे मूल्यवान है और क्यों हर चीज़ इसके अधीन है। मैंने जीवन के प्रति हर किसी के जन्मजात जुनून में निहित बुद्धिमत्ता और इस तथ्य को भी समझा कि विश्वास ही जीवन का मूल है।

चौथा विषय: यह जानने के लिए कि मेरे सांसारिक जीवन का सच्चा सुख और खुशी कहाँ है, मैंने एक बार फिर इस श्लोक पर विचार किया कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना अच्छा संरक्षक है!

इस सांसारिक जीवन में सबसे शुद्ध सुख और खुशी विश्वास में निहित है -

यह विश्वास कि मैं एक दयालु भगवान का प्राणी, शिल्प और दास हूँ, जिसने मुझे बनाया है और मुझे जीवन दिया है; यह विश्वास कि मैं उनके द्वारा पोषित और संरक्षित हूँ और हर समय मुझे उनकी कृपा की आवश्यकता है; यह विश्वास कि वे मेरे भगवान और मेरे देवता हैं और वे मेरे प्रति सबसे दयालु और करुणामय हैं। इन वास्तविकताओं में विश्वास करने से इतनी संतुष्टिदायक, दर्द रहित और अनंत खुशी मिलती है कि उन्हें शायद ही वर्णित किया जा सके।

इसलिए, यह प्रशंसा कितनी उचित है कि, विश्वास के उपकार के लिए सारी प्रशंसा ईश्वर की हो! यह बात मैंने उपरोक्त श्लोक से समझी।

और इस प्रकार ये चार विषय, जो जीवन की वास्तविकता, अधिकार, कर्तव्य और सुख की व्याख्या करते हैं, यह दर्शाते हैं कि जितना अधिक जीवन सर्वव्यापी, सर्वव्यापी से संबंधित है, उतना ही अधिक यह भी स्पष्ट है कि जीवन सर्वव्यापी, सर्वव्यापी से संबंधित है।

जीवित और आत्मनिर्भर एक और जितना अधिक विश्वास जीवन की आत्मा और मज्जा बन जाता है, उतना ही अधिक शाश्वत जीवन बन जाता है और उतने ही अधिक स्थायी फल मिलते हैं। इस तरह से देखा जाए तो जीवन भी इतना ऊंचा हो जाता है कि उसे अनंत काल की अभिव्यक्ति प्राप्त होती है: सांसारिक जीवन लंबा है या छोटा, यह अब कोई मुद्दा नहीं है। इतना मैंने श्लोक से सीखा। और इसलिए सभी जीवन और जीवित प्राणियों के नाम पर, मैंने घोषणा की: भगवान हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!

परमेश्वर की पर्याप्तता का छठा प्रकाशमान पहलू

ऐसे समय में जब बुढ़ापा मुझे समय के अंत की घटनाओं के बीच दुनिया से अपने प्रस्थान की याद दिला रहा था - एक वास्तविकता जो दुनिया के समग्र विनाश और सामान्य रूप से सभी प्राणियों के प्रस्थान का सुझाव देती है -

सुंदरता के प्रति मेरा सहज प्रेम और पूर्णता के प्रति लगाव आश्चर्यजनक रूप से संवेदनशील तरीके से विकसित हो रहा था। असाधारण जागरूकता और दुःख के साथ, मैंने देखा कि क्षणभंगुरता और गिरावट, जो हमेशा विनाशकारी होती है, और मृत्यु, जो अलगाव का एक निरंतर कारण है, इस सुंदर दुनिया और इन प्यारे जीवों को भयानक तरीके से मार रही थी और उनकी सुंदरता को नष्ट कर रही थी। जैसे-जैसे सृष्टि के प्रति मेरा सहज प्रेम तीव्र रूप से उमड़ रहा था और इस स्थिति के खिलाफ विद्रोह कर रहा था, एक बार फिर मुझे सांत्वना पाने के लिए इस श्लोक का सहारा लेना पड़ा कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है! इसने मुझसे कहा, "मुझे पढ़ो और मेरे अर्थ पर ध्यान से विचार करो!"

इसलिए मैंने सूरतुन्नुर (कुरान का प्रकाश अध्याय) की आयत पैंतीस की वेधशाला में प्रवेश किया , जिसे प्रकाश की आयत के रूप में जाना जाता है और जो इस प्रकार शुरू होती है कि ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है, और विश्वास की दूरबीन से आयत के सबसे दूर के स्तरों को देखा, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!, विश्वास की चेतना के सूक्ष्मदर्शी का उपयोग करके इसके सबसे सूक्ष्म अर्थों का अध्ययन किया। मैंने निम्नलिखित देखा:

दर्पण, कांच के टुकड़े, पारदर्शी चीजें और यहां तक कि बुलबुले भी सूर्य के प्रकाश और उसमें मौजूद सात रंगों की विभिन्न छिपी हुई सुंदरता को प्रकट करते हैं और उनके लुप्त होने, नवीनीकरण और पुनः प्रकट होने के माध्यम से और विभिन्न क्षमताओं और अपवर्तन के साथ, वे इन सुंदरताओं के नवीनीकरण और पुनः प्रकटीकरण का कारण बनते हैं। उसी तरह, सर्व-कृपालु, सुंदर महामहिम, शाश्वत सूर्य की पवित्र सुंदरता और उनके सर्व-सुंदर नामों की स्थायी सुंदरता के लिए दर्पण के रूप में कार्य करने के लिए और उनकी अभिव्यक्तियों के निरंतर नवीनीकरण का कारण बनने के लिए, ये सुंदर

जीव और सबसे प्यारे प्राणी निरंतर प्रवाह में आते और जाते हैं। जैसा कि रिसाले-ए-नूर में शक्तिशाली प्रमाणों के साथ विस्तार से समझाया गया है, वे दर्शाते हैं कि उनके द्वारा प्रकट की गई सुंदरता उनकी अपनी संपत्ति नहीं है; बल्कि, वे एक शाश्वत, पारलौकिक, पवित्र सौंदर्य के संकेत, संकेत, झलक और अभिव्यक्ति के अलावा कुछ नहीं हैं, जो खुद को मानव रूप में बदलना चाहता है। यहाँ, इनमें से तीन प्रमाणों का सारांश दिया जाएगा।

पहला प्रमाण: कढ़ाई के एक बेहतरीन टुकड़े की सुंदरता कढ़ाई करने के कार्य की सुंदरता को इंगित करती है; यह बदले में कढ़ाई करने वाले व्यक्ति की उपाधि की सुंदरता को इंगित करता है। उपाधि की सुंदरता कढ़ाई की उनकी कला में प्रकट कलाकार की विशेषता की सुंदरता को इंगित करती है।

उस विशेषता की सुंदरता कलाकार की कढ़ाई करने की क्षमता या प्रतिभा की सुंदरता को दर्शाती है। अंत में, कढ़ाई करने की क्षमता की सुंदरता स्वयं-स्पष्ट रूप से एक कढ़ाईकार के रूप में कलाकार की अपनी सुंदरता को इंगित करती है।

इसी तरह, पूरे ब्रह्मांड में सभी सुंदर, उत्कृष्ट रूप से बनाए गए प्राणियों द्वारा साझा की गई कृपा और सुंदरता, सर्व-महान कलाकार के कार्यों की कृपा और सुंदरता का स्पष्ट प्रमाण है। इन कार्यों की कृपा और सुंदरता निस्संदेह उपाधियों की कृपा और सुंदरता को इंगित करती है, या अधिक उचित रूप से, इन कार्यों से संबंधित नामों को। इन नामों की कृपा और सुंदरता निस्संदेह उन पवित्र गुणों की कृपा और सुंदरता की गवाही देती है जो नामों के स्रोत हैं। इन गुणों की कृपा और सुंदरता निर्णायक रूप से उन आवश्यक विशेषताओं या "क्षमताओं" की कृपा और सुंदरता की गवाही देती है जिनमें ये गुण उत्पन्न हुए हैं। और अंत में, आवश्यक विशेषताओं या "क्षमताओं" की कृपा और सुंदरता स्वयं-स्पष्ट रूप से उनके सार या अस्तित्व की कृपा, सुंदरता और पवित्र पूर्णता की गवाही देती है - उस व्यक्ति का सार जो कार्यों का लेखक है, जिसे नामों से पुकारा जाता है, और जिसे गुणों द्वारा योग्य बनाया जाता है - और उसके वास्तविक सत्य की पवित्र सुंदरता की। इसका अर्थ यह है कि परम कृपा और सौन्दर्य के रचयिता के पास असीम कृपा और सौन्दर्य है जो उसके सर्व-शुद्ध और पवित्र तत्त्व के अनुरूप है, यहाँ तक कि उसकी एक छाया ने एक छोर से दूसरे छोर तक सभी प्राणियों को सुशोभित कर दिया है; उसकी पारलौकिक, पवित्र सुन्दरता ऐसी है कि उसकी एक ही अभिव्यक्ति ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को सुन्दर और सुशोभित बना दिया है तथा अपनी कृपा और सौन्दर्य की किरणों से सम्पूर्ण क्षेत्र को प्रकाशित कर दिया है।

जिस प्रकार कोई कढ़ाई की हुई वस्तु बिना किसी कार्य के अस्तित्व में नहीं आ सकती, उसी प्रकार कोई भी कार्य उस कार्य के रचयिता के बिना नहीं हो सकता। जिस प्रकार किसी नाम का उसके द्वारा पुकारे जाने वाले के बिना अस्तित्व में रहना असम्भव है, उसी प्रकार गुण भी बिना किसी कार्य के अस्तित्व में नहीं आ सकते।

वे उस व्यक्ति के बिना अस्तित्व में नहीं आ सकते जिसके लिए वे योग्य हैं। चूँकि कला के किसी कार्य का अस्तित्व स्वतः स्पष्ट रूप से उसे बनाने या उत्पादित करने के कार्य को इंगित करता है, और कार्य का अस्तित्व उसके लेखक के शीर्षक या नाम और विशेषता के अस्तित्व को इंगित करता है जिसने कार्य को जन्म दिया, यह स्वतः स्पष्ट है कि किसी कार्य की पूर्णता और सुंदरता उस सौंदर्य और पूर्णता को इंगित करती है जो उस कार्य के लिए विशिष्ट है जिसने उन्हें जन्म दिया है। और वे, बदले में, उस सौंदर्य को इंगित करते हैं जो कार्य के लेखक के नाम के लिए विशिष्ट और उपयुक्त है; ये, बदले में, ज्ञान की निश्चितता के साथ लेखक के सार की सुंदरता और पूर्णता को इंगित करते हैं, जो इस सार के लिए उपयुक्त और उपयुक्त हैं।

इसी तरह, ब्रह्मांड में कामों के पर्दे के पीछे निरंतर गतिविधि का अपने निर्माता के बिना होना असंभव है, या जिन नामों की अभिव्यक्तियाँ और शिलालेख प्राणियों पर दिखाई देते हैं, उनका उनके द्वारा बुलाए गए एक के बिना होना असंभव है; न ही शक्ति और इच्छा जैसे गुण, जो लगभग देखने योग्य हैं, उनके बिना हो सकते हैं। इसलिए, अपने असीम अस्तित्व के साथ, ब्रह्मांड में सभी कार्य, प्राणी और कलाकृतियाँ अपने निर्माता, निर्माता और लेखक के कार्यों के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से इंगित करती हैं; वे उसके नामों, उसके गुणों, उसकी आवश्यक विशेषताओं या "क्षमताओं" के अस्तित्व और उसके सर्व-शुद्ध और पवित्र सार के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं। इसके अलावा, इन सभी प्राणियों में देखी जाने वाली पूर्णता, अनुग्रह और सौंदर्य की सभी विभिन्न किस्में, सर्वशक्तिमान निर्माता के कार्यों, नामों, गुणों, आवश्यक विशेषताओं और सार की अनंत, असीम और पारलौकिक सुंदरता और पूर्णता की गवाही देती हैं - वे पूरी स्पष्टता के साथ और एक ऐसे तरीके से गवाही देती हैं जो इन कार्यों, नामों, गुणों और आवश्यक विशेषताओं के लिए विशिष्ट है, और परम पवित्र सार के लिए है, और उनकी पवित्रता और आवश्यकता के लिए उपयुक्त है।

दूसरे प्रमाण में पाँच बिंदु हैं:

पहला बिन्दु: अपने मार्गों और पद्धतियों में भारी मतभेदों के बावजूद, सत्य के लोगों के नेताओं ने, अपने प्रकाश और आध्यात्मिक अनावरण के आधार पर, सर्वसम्मति से यह विश्वास किया और निष्कर्ष निकाला कि सभी प्राणियों में सौंदर्य के उदाहरण अनिवार्यतः विद्यमान उस एक के पवित्र अनुग्रह और सौंदर्य की छायाएं और झलकियां हैं, जो अनेक आवरणों के पीछे से प्रकट होती हैं।

दूसरा बिंदु: सभी सुंदर प्राणी एक के बाद एक काफिले में प्रकट होते हैं और फिर लुप्त हो जाते हैं, विलुप्त हो जाते हैं। फिर भी चूँकि इन प्राणियों के दर्पणों में खुद को प्रदर्शित करने वाला उच्च और अपरिवर्तनीय सौंदर्य बिना रुके खुद को अभिव्यक्त करना जारी रखता है, इसलिए यह निश्चित रूप से

यह दर्शाता है कि इन दर्पणों में देखी गई सुंदरताएं स्वयं सुंदर प्राणियों की नहीं हैं। बल्कि, जिस तरह से सूर्य की किरणों की सुंदरता को नदी पर तैरते बुलबुलों में देखा जा सकता है, वे ऐसी रोशनी हैं जो एक सतत सौंदर्य से चमकती हैं।

तीसरा बिंदु: यह स्पष्ट है कि प्रकाश किसी ऐसी चीज से आता है जिसमें प्रकाश होता है और अस्तित्व किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा दिया जाता है जो स्वयं अस्तित्व में है; यह भी स्पष्ट है कि अनुग्रह धन से आता है, धन से उदारता और ज्ञान से शिक्षा। साथ ही, सुंदरता उस व्यक्ति से निकलती है जो सुंदर है, जबकि अनुग्रह केवल उस व्यक्ति से आता है जो दयालु है। वास्तव में, यह सोचना अकल्पनीय है कि यह किसी अन्य तरीके से हो सकता है। इस वास्तविकता को देखते हुए, हम मानते हैं कि ब्रह्मांड की सभी सुंदरताएँ उस व्यक्ति से आती हैं जो सुंदर है, और यह कि इसके सभी प्राणियों की जीभों के माध्यम से, जो दर्पण के रूप में कार्य करती हैं, यह लगातार बदलता और नवीनीकृत ब्रह्मांड उसकी कृपा और सुंदरता को इंगित और वर्णित करता है।

चौथा बिन्दु: शरीर आत्मा पर निर्भर है और उसी के द्वारा जीवित और सजीव है; शब्द अपने अर्थ पर निर्भर है और उसी से प्रकाशित होता है; रूप पदार्थ पर आधारित है और उसी के द्वारा मूल्य प्राप्त करता है। अब यह दृश्यमान, भौतिक जगत एक शरीर, एक शब्द और एक रूप की तरह है, और यह अदृश्य के पर्दे के पीछे स्थित दिव्य नामों पर निर्भर है; यह दिव्य नामों से ही जीवन और सौंदर्य प्राप्त करता है। भौतिक सौंदर्य के सभी उदाहरण उन अर्थों और सत्यों की अमूर्त सुंदरता से उत्पन्न होते हैं जिन पर वे आधारित हैं। उनके सत्य दिव्य नामों से प्रकाशित और पोषित होते हैं और एक अर्थ में उनकी छाया हैं। इस सत्य को रिसाले-ए-नूर में निर्णायक रूप से सिद्ध किया गया है।

इसका अर्थ यह है कि ब्रह्मांड में सौंदर्य के सभी विभिन्न प्रकार एक दोषरहित, पारलौकिक सौंदर्य की अभिव्यक्तियाँ, संकेत और निशान हैं, जो नामों के माध्यम से अदृश्य के पर्दे के पार से प्रकट होता है। हालाँकि, अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता का सर्व-शुद्ध और पवित्र सार बिल्कुल भी किसी से मिलता-जुलता नहीं है और उसके गुण आकस्मिक प्राणियों के गुणों से अनंत रूप से श्रेष्ठ हैं: परिणामस्वरूप, उसका पवित्र सौंदर्य प्राणियों या आकस्मिक प्राणियों के सौंदर्य से मिलता-जुलता नहीं है, बल्कि अनंत रूप से अधिक उत्कृष्ट है। निश्चित रूप से, एक शाश्वत सौंदर्य - जिसका एक ही प्रकटीकरण एक विशाल स्वर्ग है, साथ ही इसकी सभी सुंदरता और एक घंटे का दर्शन जो स्वर्ग के लोगों को यह भूला देता है कि वे कहाँ हैं - न तो सीमित हो सकता है और न ही उसका कोई समान, बराबर या समकक्ष हो सकता है। स्पष्ट रूप से, हर चीज में अपने लिए एक विशेष सौंदर्य होता है और उसके अनुसार

सुंदरता की प्रकृति और प्रकृति में हज़ारों किस्में हैं, जैसे कि प्राणियों की विभिन्न प्रजातियों में भिन्नताएँ होती हैं। उदाहरण के लिए, आँखों द्वारा अनुभव की जाने वाली सुंदरता, कानों द्वारा अनुभव की जाने वाली सुंदरता से अलग होती है; मन द्वारा अनुभव की जाने वाली अमूर्त सुंदरता, जीभ द्वारा चखे गए भोजन की सुंदरता से अलग होती है।
इसी तरह, हृदय और आत्मा जैसी शक्तियों और अन्य आंतरिक और बाह्य इंद्रियों द्वारा देखी और सराही जाने वाली सुंदरताएं सभी अलग-अलग हैं। उदाहरण के लिए, विश्वास, सत्य, प्रकाश, फूल, आत्मा, रूप, स्नेह, न्याय और करुणा की सुंदरताएं सभी एक-दूसरे से भिन्न हैं। जिस तरह से परम कृपालु महामहिम के असीम सुंदर नामों की सुंदरता एक-दूसरे से भिन्न है, उसी तरह प्राणियों द्वारा साझा की जाने वाली सुंदरता भी भिन्न होती है।

यदि आप प्राणियों के दर्पणों में दयालु और सुन्दर ईश्वर के नामों की सुन्दरता की एक अभिव्यक्ति देखना चाहते हैं, तो अपनी कल्पना की इतनी व्यापक दृष्टि से देखें कि आप पृथ्वी का चेहरा ऐसे देख सकें जैसे कि वह एक छोटा बगीचा हो, और ध्यान रखें कि दया, करुणा, बुद्धि और न्याय जैसे शब्द सर्वशक्तिमान ईश्वर के कार्यों, नामों, गुणों और आवश्यक विशेषताओं को संदर्भित करते हैं।

सभी जीवित प्राणियों, विशेषकर मानवता सहित, के पोषण को देखें, जो अदृश्य के पर्दे के पीछे से नियमित रूप से आता है, और दिव्य दया के सर्व-दयालु और सुंदर चेहरे को देखें।

फिर देखो और देखो कि कैसे सभी शिशुओं को चमत्कारिक ढंग से भोजन उपलब्ध कराया जाता है; वे अपने सिर के ऊपर स्तनों में लटके दूध के स्रोतों से पोषित होते हैं [20] और अपनी माताओं की कैद को की तरह सुहावनी है , देखो, जो कवथर के पानी
दिव्य प्रभुता की करुणा का धन्य चेहरा।

फिर उस दिव्य बुद्धि के अद्वितीय, कृपालु मुख को देखो, जिसने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को ज्ञान की एक महान पुस्तक बना दिया है, जिसके प्रत्येक अक्षर में सौ शब्द हैं, प्रत्येक शब्द में सौ पंक्तियां हैं, प्रत्येक पंक्ति में एक हजार अध्याय हैं, तथा प्रत्येक अध्याय में हजारों लघु पुस्तकें हैं।

फिर न्याय की राजसी सुंदरता को देखें जो पूरे ब्रह्मांड को उसके सभी प्राणियों के साथ सटीक संतुलन में रखता है, सभी खगोलीय पिंडों का संतुलन बनाए रखता है, चाहे वे बड़े हों या छोटे, समरूपता और अनुपात प्रदान करता है - सुंदरता के सबसे महत्वपूर्ण तत्व। देखें कि कैसे न्याय हर चीज को उसकी इष्टतम स्थिति में रखता है और जीवन का अधिकार देता है

---

20 कवथर स्वर्ग का एक तालाब है। (ट्र.)

जीवित प्राणियों के प्रति यह सुनिश्चित करना कि उनके अधिकार सुरक्षित रहें तथा उन पर आक्रमण करने वालों को विफल किया जाए तथा उन्हें दंडित किया जाए।

फिर किसी व्यक्ति की स्मृति में उसके जीवन के इतिहास के शिलालेख को देखें, जो गेहूँ के दाने जितना छोटा है, और देखें कि कैसे हर पौधे और पेड़ का भविष्य उसके बीजों में समाया हुआ है। जीवित प्राणियों की रक्षा के लिए आवश्यक उपकरणों और अंगों को भी देखें: उदाहरण के लिए मधुमक्खियों के पंख, और उनके जहरीले डंक, और कांटेदार पौधों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली छोटी संगीनें, बीजों के सख्त छिलके, इत्यादि। इन्हें देखें और आधिपत्य के संरक्षण और सुरक्षा के सूक्ष्म, सुखद चेहरे को देखें।

फिर दयालु और दयावान परम दयालु परमेश्वर की धरती की मेज़ पर मेहमानों के लिए दया द्वारा तैयार किए गए अनगिनत अलग-अलग व्यंजनों को देखो, जो परम दयालु हैं; और उनकी अलग-अलग आकर्षक सुगंधों और चमकीले रंगों और उनके अलग-अलग स्वादिष्ट स्वादों के साथ-साथ सभी जीवित प्राणियों के अंगों और अंगों पर भी विचार करो जो उनके आनंद और आनंद को सुविधाजनक बनाते हैं। इन्हें देखो और प्रभु के दान और उदारता के असाधारण सुखद चेहरे और मधुर सौंदर्य को देखो।

फिर सभी जीवित प्राणियों के सार्थक रूपों पर विचार करें-
विशेष रूप से मनुष्य - जो कि सर्व-उद्घाटन और सर्व-निर्माण के नामों की अभिव्यक्ति के माध्यम से तरल पदार्थ की बूंदों से खुलते हैं; वसंत के फूलों के आकर्षक चेहरों को देखें जब वे बीजों और छोटे नाभिकों से खुलते हैं और दिव्य उद्घाटन और निर्माण के चमत्कारिक रूप से अनुग्रहपूर्ण चेहरे को देखें।

जैसा कि इन उदाहरणों से पता चलता है, प्रत्येक दिव्य नाम में ऐसी पवित्र सुंदरता निहित है कि उसकी एक अभिव्यक्ति भी इस विशाल संसार और असंख्य सदस्यों से युक्त प्राणियों की प्रजातियों को सुंदर बना देती है।
तुम एक फूल में नाम की सुंदरता की अभिव्यक्ति देखते हो; फिर भी, वसंत भी एक फूल है, और स्वर्ग एक ऐसा फूल है जिसे अभी देखा जाना बाकी है। यदि तुम पूरे वसंत की कल्पना कर सकते हो और विश्वास की आँखों से स्वर्ग को देख सकते हो, तो देखो और समझो कि वह शाश्वत सौंदर्य कितना राजसी है। यदि तुम उस सौंदर्य का जवाब विश्वास की सुंदरता और पूजा की कृपा से देते हो, तो तुम स्वयं एक सबसे सुंदर प्राणी बन जाओगे। लेकिन यदि तुम उसका जवाब गुमराही और विद्रोह की असीम कुरूपता से देते हो, तो न केवल तुम पृथ्वी पर सबसे कुरूप प्राणियों में से एक बन जाओगे, बल्कि तुम वास्तव में सभी सुंदर प्राणियों की घृणा का पात्र बन जाओगे।

पांचवां बिंदु: यह एक तथ्य है कि हर कौशल खुद को प्रदर्शित करता है, हर शिल्प और कला की सराहना की जाती है, पूर्णता का हर रूप प्रदर्शित होता है।

खुद को दिखाने के लिए, और हर सुंदरता खुद को प्रकट करती है। कल्पना कीजिए कि एक व्यक्ति के पास सैकड़ों असाधारण कौशल, कलाएँ, सिद्धियाँ और सुंदरताएँ हैं; कल्पना कीजिए कि उस व्यक्ति ने एक अद्भुत महल बनाया है जो उन सभी को प्रकट करता है। जो कोई भी उस चमत्कारी महल को देखता है, वह तुरंत उसके निर्माता और मालिक के कौशल, सुंदरता और सिद्धियों पर विचार करता है। उन पर विश्वास करते हुए और उन्हें देखकर पुष्टि करते हुए, पर्यवेक्षक कहते हैं: "जो हर तरह से सुंदर और कुशल नहीं है, वह हर तरह से इतनी सुंदर कृति का निर्माता नहीं हो सकता। ऐसा लगता है जैसे उसकी सुंदरता और सिद्धियाँ इस महल में सन्निहित हैं।"

इसी तरह, बशर्ते कि उनका मन सड़ा हुआ न हो और उनका हृदय भ्रष्ट न हो, जो लोग इस भव्य महल और चमत्कारों की प्रदर्शनी जिसे हम ब्रह्मांड कहते हैं, की सुंदरता को देखते हैं, वे निश्चित रूप से समझेंगे कि यह महल एक दर्पण की तरह है, जिसे इसके निर्माता की सुंदरता और पूर्णता को प्रकट करने के लिए इस तरह से सजाया गया है। चूँकि ब्रह्मांड के इस महल जैसा कुछ भी नहीं है, इसलिए यह स्पष्ट है कि इसकी सुंदरता कहीं और से कॉपी नहीं की जा सकती। और इसलिए इसके निर्माता के पास खुद और उसके नामों के लिए विशेष और उपयुक्त सुंदरता होनी चाहिए: यह उनसे ही है कि ब्रह्मांड अपनी सुंदरता प्राप्त करता है, जिसे उन्हें व्यक्त करने के लिए एक किताब की तरह लिखा गया है।

तीसरे प्रमाण में तीन बिंदु हैं:

पहला बिंदु: यह सत्य बत्तीसवें वचन के तीसरे चरण में शक्तिशाली प्रमाणों के साथ विस्तृत किया गया है। उस वचन से संबंधित इस पर विस्तृत चर्चा करते हुए, हम यहाँ केवल संक्षिप्त रूप से इसका उल्लेख करेंगे।

हम जीवों को देखते हैं, खास तौर पर जानवरों और पौधों को, और हम देखते हैं कि सजावट, व्यवस्था और सौंदर्यीकरण के निरंतर कार्य, जो सभी एक अंतर्निहित ज्ञान, बुद्धि, इरादे और इच्छा को इंगित करते हैं और जिन्हें केवल संयोग के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, उन पर हावी हैं। हम हर चीज में एक कला इतनी नाजुक, एक ज्ञान इतना बढ़िया, एक अलंकरण इतना ऊंचा, एक संगठन इतना दयालु और एक स्थिति इतनी सुखद देखते हैं कि प्रत्येक का उद्देश्य स्पष्ट रूप से किसी की कला पर ध्यान केंद्रित करना और इसे देखने वालों के लिए सुखद और सराहनीय बनाना है। इससे यह स्वतः स्पष्ट हो जाता है कि अदृश्य के पर्दे के पीछे ऐसा कुछ है

कलाकार - वह जो अपनी कला के प्रत्येक कार्य में प्रदर्शित अनेक कौशलों और सिद्धियों के माध्यम से स्वयं को ज्ञात, सराहा और प्रशंसित करना चाहता है। और सचेत प्राणियों को प्रसन्न करने और उन्हें अपना ऋणी, अंतरंग साथी बनाने के लिए, वह उन्हें हर प्रकार की सहायता प्रदान करता है।

ऐसे स्रोतों से स्वादिष्ट उपहार प्राप्त करना, जिनकी उन्हें कम से कम उम्मीद होती है, और जिसे संयोगवश मानना असंभव है।

इसके अलावा, एक उदार व्यवहार और खुद को ज्ञात करने के कार्यों को देखना संभव है, जो एक गहरे स्नेह और करुणा की उच्च भावना का सुझाव देते हैं; स्वभाव की जीभ के साथ मैत्रीपूर्ण संवाद और प्रार्थनाओं के प्रति करुणामय प्रतिक्रिया देखना संभव है। स्पष्ट रूप से, खुद को ज्ञात और प्यार करने की गुणवत्ता के पीछे जो उपहार देने और खुशी देने का उपहार देखा जाता है, जो सूर्य की तरह स्पष्ट है, वह स्नेही और दयालु होने की वास्तविक इच्छा से उत्पन्न होता है। एक ऐसे व्यक्ति में स्नेही और दयालु होने की ऐसी शक्तिशाली इच्छा का अस्तित्व जो पूरी तरह से आत्मनिर्भर है और जिसे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं है, निश्चित रूप से एक असीम रूप से परिपूर्ण, शाश्वत, अद्वितीय और अमर सौंदर्य को प्रदर्शित करता है जिसका स्वभाव ही इसके प्रकटीकरण की आवश्यकता है और जो इसलिए देखा जाना चाहता है

और इस प्रकार दर्पणों में स्वयं को प्रदर्शित करता है। विभिन्न दर्पणों में स्वयं को देखने और प्रदर्शित करने के लिए, इस सौंदर्य ने करुणा और स्नेह का रूप धारण किया है और फिर सचेत प्राणियों के दर्पणों में उदारता और दान देने की प्रवृत्ति को अपनाया है; फिर इसने स्वयं को ज्ञात और प्रेम करने का गुण ग्रहण किया है और प्राणियों को सुशोभित करने और उन्हें सुंदर बनाने का प्रकाश प्रदान किया है।

दूसरा बिन्दु: मनुष्यता में, और विशेष रूप से हमारे बीच असंख्य भिन्न-भिन्न लोगों में जो प्रेम की राहें अलग-अलग हैं, जो तीव्र, शक्तिशाली, सच्चा और पवित्र है, वह एक अद्वितीय सौंदर्य का संकेत और साक्षी है। वास्तव में, ऐसा प्रेम केवल ऐसे सौंदर्य की ओर ही निर्देशित हो सकता है-बल्कि, वह इस सौंदर्य की मांग करता है। इसके अलावा, प्राणियों द्वारा मौखिक रूप से या विरक्ति की जीभ के माध्यम से की गई सभी प्रशंसा और प्रशंसा उस शाश्वत सौंदर्य से संबंधित हैं और उसी की ओर प्रवाहित होती हैं। शम्स-ए-तबरीजी जैसे (ईश्वर के) प्रेमियों की दृष्टि में, आकर्षित होने और आकर्षित होने की सभी भावनाएँ और क्रियाएँ और ब्रह्मांड में सभी आकर्षक सत्य एक शाश्वत, आकर्षक सत्य के संकेत हैं। और सभी आनंदमय हलचलें और चक्कर जो आकाशीय पिंडों और सभी प्राणियों को पतंगों और मेवलेवी दरवेशों की तरह नाचने और घूमने के लिए प्रेरित करते हैं, वे उस आकर्षक सत्य की पवित्र सुंदरता के अत्याचारी प्रदर्शनों के प्रति प्रेमपूर्ण और कर्तव्यपरायण प्रतिक्रियाएँ हैं।

---

21 शम्स-ए-तबरीज़ी: कोन्या में, जलालुद-दीन अर-रूमी 39 साल की उम्र में एक धार्मिक शिक्षक और सूफी बन गए, जब उनकी मुलाकात शम्सुद-दीन अत-तबरीज़ी से हुई। तबरीज़, ईरान से आए अत-तबरीज़ी, जो ईश्वर के एक उत्साही प्रेमी थे, ने रूमी पर गहरा प्रभाव डाला और एक सच्चे सूर्य की तरह उनकी अव्यक्त आध्यात्मिक और साहित्यिक प्रतिभा को जीवंत कर दिया। (अनुवाद)

तीसरा बिंदु: जैसा कि सभी सत्यनिष्ठ विद्वानों ने माना है, अस्तित्व शुद्ध अच्छाई और प्रकाश है, जबकि अस्तित्वहीनता शुद्ध बुराई और अंधकार है। सावधानीपूर्वक विश्लेषण के माध्यम से, बुद्धि के लोगों और हृदय के लोगों के बीच अग्रणी प्रकाश इस बात पर सहमत हुए हैं कि अच्छाई, सुंदरता और आनंद के सभी उदाहरण अस्तित्व से उत्पन्न होते हैं, जबकि सभी बुराइयाँ, विपत्तियाँ, पीड़ा और पाप गैर-अस्तित्व के कारण होते हैं।

यदि आप पूछें: सभी सुन्दरताओं का स्रोत अस्तित्व है, लेकिन आप इसे कैसे समझ सकते हैं? अहंकार और अविश्वास जैसी चीज़ों के अस्तित्व का क्या कारण है?

उत्तर: अविश्वास अस्तित्वहीनता है क्योंकि यह विश्वास की सच्चाइयों का निषेध और खंडन है। अहंकार के लिए, चूँकि यह स्वयं के स्वामित्व के गलत दावे और कल्पना को वास्तविक मानने की प्रवृत्ति से उत्पन्न होता है, और चूँकि यह इस तथ्य की अज्ञानता से उत्पन्न होता है कि मानवता की आवश्यक प्रकृति उसके गोताखोर नामों और विशेषताओं को प्रतिबिंबित करने के लिए डिज़ाइन किए गए दर्पण होने में निहित है, यह भी अस्तित्वहीनता का एक रूप है जिसने अस्तित्व के कपड़े और रंग धारण किए हैं। चूँकि सभी सुंदरता का स्रोत अस्तित्व है और सभी बुराई का स्रोत अस्तित्वहीनता है, इसलिए यह निश्चित है कि एक शाश्वत अस्तित्व जो आवश्यक अस्तित्व से युक्त है, जो अस्तित्व के सभी उदाहरणों में सबसे दृढ़ और सबसे ऊंचा और चमकदार है, और अस्तित्वहीनता से सबसे दूर है, वह एक ऐसी सुंदरता की मांग करेगा जो सबसे शक्तिशाली, सबसे ऊंचा, सबसे उज्ज्वल और सबसे बेदाग हो। वास्तव में, न केवल यह ऐसी सुंदरता को व्यक्त करेगा, बल्कि यह वास्तव में वह सुंदरता होगी। जिस प्रकार सूर्य के लिए एक व्यापक प्रकाश आवश्यक है, उसी प्रकार अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता के लिए भी एक शाश्वत सौंदर्य आवश्यक है; वह इसके माध्यम से "विकिरण" करता है।

विश्वास के उपहार के लिए परमेश्वर की स्तुति और आभार!

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न ठहराना।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

एक अनुस्मारक: चूँकि रिसाले-ए-नूर कुरान से संबंधित है और यह कुरान से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित एक टिप्पणी है, इसलिए इसमें आवश्यक, उद्देश्यपूर्ण और लाभकारी दोहराव शामिल हैं, ठीक उसी तरह जैसे कुरान में अर्थपूर्ण, बुद्धिमानीपूर्ण और आवश्यक दोहराव शामिल हैं, जो बिल्कुल भी थकाऊ नहीं हैं। इसके अलावा, चूँकि रिसाले -ए-नूर में ईश्वरीय एकता की सच्चाई के प्रमाण शामिल हैं, जिसकी घोषणा थकान का कारण नहीं बनती, बल्कि इसे खुशी और उत्साह के साथ दोहराया जाता है, इसलिए आवश्यक दोहराव कोई कमी नहीं है और इससे उबाऊ नहीं होना चाहिए।

दूसरा अध्याय

यह इस अर्थ के विभिन्न स्तरों या डिग्री से संबंधित है कि, " ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है!" इसमें पाँच बिंदु शामिल हैं।22

पहला बिंदु

यह वाक्य मानवता की जन्मजात नपुंसकता और गरीबी से उत्पन्न होने वाली बीमारियों के लिए एक आजमाया हुआ और परखा हुआ उपाय है। वास्तव में, ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, वह कितना अच्छा संरक्षक है23 यह निम्नलिखित बातों के कारण सत्य है:

वह स्वयंभू हैं और सदा अस्तित्ववान हैं।

इसलिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि प्राणी नष्ट हो जाएं और गायब हो जाएं, क्योंकि जिन चीजों से हम प्रेम करते हैं, वे उस अनिवार्यतः अस्तित्ववान के निरन्तर अस्तित्व के कारण अस्तित्व में बनी रहती हैं, जिसने उन्हें अस्तित्व दिया है।

वह सर्व-स्थायी रचयिता और उत्पत्तिकर्ता है, इसलिए प्राणियों के क्षय से कोई दु:ख नहीं होना चाहिए, क्योंकि जिस माध्यम से उनके रचयिता से प्रेम किया जाता है -

अर्थात् उसकी अभिव्यक्तियाँ स्थायी हैं।

वह सर्व-स्थायी प्रभु और स्वामी है, इसलिए उसके प्रभुत्व या सम्पत्ति के क्षय के विषय में कोई खेद नहीं होना चाहिए, क्योंकि एक बार उनका क्षय हो जाने और चले जाने के बाद, उनका निरन्तर नवीकरण होता रहता है।

---

22 तेरह साल पहले, मैंने यूसा की पहाड़ी से दुनिया को देखा, जो इस-तंबूल का एक ऊंचा हिस्सा है। हर किसी की तरह, मैं उन जीवों की श्रेणियों से मोहित हो गया था जिन्हें मैं देख सकता था, एक दूसरे को घेरे हुए, और यहाँ की सुंदरता से। मुझे इसमें जो दिलचस्पी महसूस हुई वह गहन प्रेम की डिग्री थी। हालाँकि, मैं अपने मन में यह भी देख सकता था कि वे सभी जीव क्षय और नश्वरता की ओर बढ़ रहे थे। तब मुझे अलगाव का एक शक्तिशाली दर्द महसूस हुआ, और अंतहीन अलगाव से उत्पन्न एक अंधेरा। अचानक, यह श्लोक कि ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट संरक्षक है! अपने तैंतीस डिग्री अर्थों के साथ मेरी सहायता के लिए आया। मैं उन्हें अनुसरण करने के तरीके से पढ़ रहा था और जो विभिन्न अर्थों और वास्तविकताओं की संभावना का सुझाव देता था। शाम और देर शाम या रात की प्रार्थनाओं के बीच मैं जो सात धन्य वाक्यांश पढ़ता हूँ, उनमें से प्रत्येक को ग्लेम्स में शामिल किया गया होगा। अंत में, उनमें से केवल पांच को ही शामिल किया गया: अन्य दो, जो कि ' ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह कितना उत्कृष्ट रक्षक है, और ईश्वर के अलावा किसी के पास शक्ति और ताकत नहीं है' के अर्थ के रैंक या डिग्री के बारे में हैं, को छोड़ दिया गया।

इन्हें पाँचवीं और छठी झलक के नाम से लिखा गया होगा, लेकिन इन्हें यहाँ किरणों में शामिल किया गया है। चूँकि वे ज्ञान के बजाय चिंतन और स्मरण से संबंधित हैं, इसलिए इन्हें अरबी में लिखा गया है।

23 मैंने एक बार इस धन्य वाक्यांश में कई रोशनी और अर्थ की डिग्री देखी और इसने मुझे अंधेरे और खतरे के कई भयानक पर्दों से बचाया है। इन परिस्थितियों और इस वाक्यांश में अर्थ की विभिन्न डिग्री का उल्लेख करते हुए, मैंने पैराग्राफ या शब्दों के रूप में संक्षिप्त अनुस्मारक लिखे। विशाल दुनिया और उसमें रहने वाले जीवों के क्षय और मृत्यु के बारे में मेरी चिंताओं से उत्पन्न बहुत ही दर्दनाक और गहरी बीमारियों के उपाय के रूप में, जिसने मुझे मोहित कर दिया, मैंने पाया कि भगवान हमारे लिए पर्याप्त है, वह कितना अच्छा संरक्षक है! प्रत्येक पैराग्राफ की शुरुआत में प्रारंभिक अभिव्यक्तियाँ इस सत्य को इंगित करती हैं।

वह सर्वस्थायी, सर्वज्ञ साक्षी है, और इसलिए जिन वस्तुओं से हम प्रेम करते हैं, उनके इस संसार से लुप्त हो जाने पर कोई दुःख नहीं होता, क्योंकि वे अपने सर्वस्थायी साक्षी के ज्ञान और दृष्टि में शाश्वत रूप से विद्यमान रहती हैं।

वह सर्व-स्थायी स्वामी और सृजक है, और इसलिए जो चीजें हमें सुन्दर लगती हैं उनके लुप्त होने पर हमें कोई दुःख नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनके सुन्दरता का स्रोत उनके सृजक के नाम में अनन्त काल तक बना रहता है।

वह स्थायी उत्तराधिकारी और जीवन बहाल करने वाला है, इसलिए हमें उनसे अलग होने पर विलाप नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो उनके बाद भी अस्तित्व में रहेगा और उन्हें जीवन प्रदान करेगा, वह सर्वव्यापी है।

वह सर्व-स्थायी, सर्व-सुन्दर और सर्व-प्रतापी है, अतः सुन्दर वस्तुओं के लुप्त होने पर कोई दुःख नहीं होना चाहिए, क्योंकि ये सुन्दर वस्तुएँ सर्व-सुन्दर नामों के दर्पण हैं, जो दर्पणों के लुप्त हो जाने के बाद भी अपनी सुन्दरता के साथ बने रहते हैं।

वह सर्व-स्थायी, सर्व-पूज्य और सर्व-प्रियतम है, अतः किसी भी सृजित, "रूपकात्मक" प्रियतम के निधन पर कोई दुःख नहीं होना चाहिए, क्योंकि सच्चा प्रियतम वास्तव में शाश्वत है।

वह सर्वव्यापी, सर्वदयालु, सर्वकरुणामय, सर्वप्रेममय, सर्वदयामय है, अतः प्रत्यक्ष दानदाताओं और स्नेहियों के नाश पर कोई दुःख नहीं होना चाहिए और न ही उन्हें महत्व दिया जाना चाहिए, क्योंकि जिसकी दया और स्नेह सभी वस्तुओं को घेरे हुए है, वह सदैव बना रहता है।

वह सर्व-स्थायी, सर्व-सुन्दर, सर्व-कृपालु और सर्व-दयालु है, अतः कृपालु और स्नेही प्राणियों के क्षय से दुःख या शोक नहीं होना चाहिए, क्योंकि जो उन सबका स्थान लेता है, और जिसका एक भी स्वरूप, यदि वे सब मिलकर भी कार्य करें, तो भी उनका स्थान नहीं ले सकते, वह सदा-सर्वदा नित्य है।

उनकी शाश्वत स्थायित्व, सभी पवित्र गुणों के साथ, जिनका उल्लेख किया गया है, इस दुनिया में हर तरह के क्षणभंगुर, क्षणभंगुर प्रियजनों के लिए पर्याप्त विकल्प है। ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना बढ़िया संरक्षक है! वास्तव में, दुनिया और उसमें जो कुछ भी है, उसकी स्थायित्व के स्थान पर, उनके स्वामी, निर्माता और मूलकर्ता की शाश्वत स्थायित्व

पर्याप्त है.

दूसरा बिंदु

स्थायित्व के लिए यह पर्याप्त है कि ईश्वर वह है जो मेरा शाश्वत देवता है, मेरा शाश्वत निर्माता है, मेरा शाश्वत आविष्कारक है, मेरा शाश्वत सृजक है, मेरा शाश्वत स्वामी है, मेरा शाश्वत साक्षी है, मेरी पूजा का शाश्वत उद्देश्य है, तथा वह शाश्वत है जो मेरी मृत्यु के पश्चात मुझे पुनः जीवित करेगा। इसलिए:

मेरे अस्तित्व के क्षय में कोई हानि नहीं है और मुझे इसके समाप्त होने पर कोई दुःख या खेद नहीं होना चाहिए, क्योंकि मेरा निर्माता अनंत काल तक बना रहता है, और उसके नामों के माध्यम से उसका निर्माण और सृजन स्थायी है। मेरे व्यक्तित्व में जो भी गुण या विशेषता है, वह उसके शाश्वत नामों में से एक की किरणों में से एक है, और इसलिए इस विशेषता का क्षय और मृत्यु उसके शाश्वत विलुप्त होने की घोषणा नहीं करती है, क्योंकि यह अपने निर्माता के ज्ञान में स्थायी रूप से मौजूद है और उसकी दृष्टि में अनंत काल तक देखा जाता है।

इसी तरह, स्थायित्व और स्थायित्व से प्राप्त होने वाले आनंद के संबंध में मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं जानता हूँ, जागरूक हूँ और विश्वास करता हूँ कि मेरा एक सर्व-स्थायी देवता है और यह उसके एक स्थायी नाम की किरणें हैं जो मेरे स्वभाव के दर्पण में चमकती हैं। मेरे स्वभाव की वास्तविकता इस नाम की छाया के अलावा और कुछ नहीं है, और यह मेरे अस्तित्व के दर्पण में इसकी अभिव्यक्ति के कारण है कि मेरे अस्तित्व का मूल्य है और यह प्यार के योग्य है। इसके अलावा, यह उसमें जो प्रकट होता है उसकी स्थायित्व के कारण है कि मेरे अस्तित्व में स्थायित्व के कई प्रकार हैं।

---

24 जिस तरह मैंने संसार और बाह्य अस्तित्व की क्षणभंगुरता और क्षय के पीछे सर्व-स्थायी महामहिम के स्थायी नामों की अभिव्यक्ति देखी और इस तरह पूरी तरह से सांत्वना पाई, उसी तरह मैंने अपने बारे में भी सोचा। चूँकि मेरे आंतरिक अस्तित्व के विभिन्न स्तर, मेरी व्यक्तिगत विशेषताएँ और मेरे व्यक्तिगत जीवन की वास्तविकताएँ, जिनसे मैं मोहित हूँ, क्षय और मृत्यु की ओर जा रही हैं, इसलिए मुझे एहसास हुआ कि मैं अमरता की सहज मानवीय इच्छा के प्रभाव में उन क्षणभंगुर चीज़ों में स्थायित्व की तलाश कर रहा था। मैं यह देखने लगा कि मैं एक ऐसा स्थान था जहाँ मेरे निर्माता के शाश्वत नाम प्रकट हुए थे। मैंने अपनी प्रत्येक विशेषता के क्षय में उस नाम की एक स्थायी अभिव्यक्ति देखी, जिसके साथ वह सन्निहित थी। मैं निश्चित रूप से यह समझने लगा कि मानव स्वभाव में स्थायित्व के लिए सहज प्रेम का स्रोत ईश्वर के प्रेम में है। लेकिन मनुष्य अपने प्रिय को गलत तरीके से खोजते हैं।

दर्पण में खुद को प्रकट करने वाले को खोजने और उससे प्रेम करने के बजाय, जैसा कि उन्हें करना चाहिए, वे दर्पण को ही या दर्पण में प्रतिबिम्ब के स्पष्ट रूपों को प्रेम करते हैं। इस तरह वे उसकी पूजा करने के बजाय खुद की पूजा करने लगते हैं: "वह!" के बजाय, उनके होठों पर एकमात्र शब्द "मैं!" होता है। वे अपनी गलती का एहसास तभी कर पाते हैं जब क्षय शुरू हो जाता है। मानव जाति का हृदय और स्वभाव एक सचेत दर्पण है। एक मनुष्य सचेत रूप से महसूस करता है या सहज रूप से जानता है कि उसके अंदर क्या प्रकट होता है, और वह इसे हमेशा के लिए प्यार करता है।

तीसरा बिन्दु 25

ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना बढ़िया संरक्षक है! क्योंकि वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है; ये बहते हुए अस्तित्व उसके अस्तित्व की अभिव्यक्तियों के नवीनीकरण और दूसरों को अस्तित्व देने के परिणाम मात्र हैं। उसके माध्यम से और उससे जुड़ने और उसके बारे में ज्ञान प्राप्त करने के माध्यम से अस्तित्व की अनंत रोशनी प्राप्त होती है: उसके बिना, अस्तित्वहीनता के अंधकार के अंतहीन परदे और अलगाव की असीम पीड़ा के अलावा कुछ भी नहीं है।

ये प्रवाहित, क्षणभंगुर सत्ताएं मात्र दर्पण हैं, और उनके सापेक्ष या नाममात्र निर्धारणों के परिवर्तन के साथ वे अपनी क्षणभंगुरता, क्षय और स्थायित्व के छह पहलुओं में नवीकृत हो जाते हैं:

पहला: उनके सुंदर अर्थों और उनके "विचार-
प्रतिनिधित्व या "आदर्श" रूपों की दुनिया में "अल" पहचान।26

दूसरा: "आदर्श" गोलियों में उनके रूपों की स्थायित्व
प्रतिनिधित्व या “आदर्श” रूपों की दुनिया।

तीसरा: उनके परिणामों की स्थायित्व जो परलोक से संबंधित हैं।

चौथा: उनके द्वारा प्रभु की महिमा का स्थाईकरण, जो उनकी ओर से प्रस्तुत और अभिलेखित है, जो उनके लिए एक प्रकार का अस्तित्व है।

पांचवां: शाश्वत दृश्यों और ज्ञान से संबंधित प्रदर्शनों में उनकी स्थायित्वता।

---

[25] मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण वास्तविकता के अर्थ की डिग्री पर विचार कर रहा था - जिसने जीवन और मृत्यु के अंतहीन चक्रों को रेखांकित करने वाली निरंतर गतिविधि के पीछे के रहस्य को उजागर किया है, जो ब्रह्मांड में सबसे अधिक उलझन वाली दुविधा है। इसे चौबीसवें पत्र में समझाया गया है। यह बिंदु इस तथ्य को दर्शाता है कि क्षय और मृत्यु अन्य विभिन्न प्रकार के अस्तित्व के शीर्षक हैं, और अस्तित्व के कई उदाहरणों के फल देते हैं। यह दर्शाता है कि जो कुछ भी क्षय होता है या मर जाता है, वह अपने स्थान पर अस्तित्व के कई उदाहरण छोड़ जाता है। इसलिए, जो चीजें क्षणभंगुर और नाशवान हैं, वे कई मायनों में अस्तित्व में रहेंगी। एक बीज मिट्टी के नीचे सड़ता है और मर जाता है, लेकिन अपनी जगह एक अंकुर छोड़ जाता है जो एक पौधे या पेड़ में विकसित होता है जो बीजों वाले सौ फल देगा। यही कारण है कि मृत्यु से डरना या क्षय पर पछतावा करना उचित नहीं है।

26 प्रतिनिधित्व या "आदर्श" रूपों की दुनिया वह क्षेत्र है जहाँ चीज़ें अपने अमूर्त प्रतिनिधित्व या प्रतिबिंबों के साथ मौजूद होती हैं। एक इमारत की तरह, जिसमें अस्तित्व के स्तर या डिग्री होती हैं, उदाहरण के लिए, अपने वास्तुकार के दिमाग में इमारत, और योजनाओं पर इमारत, और उसका अंतिम, भौतिक अस्तित्व, चीज़ों के अस्तित्व की डिग्री या स्तर होते हैं: उनका ईश्वर के ज्ञान में शुद्ध अस्तित्व होता है, और नियति या ईश्वरीय निर्धारण की परियोजना के रूप में अस्तित्व होता है, और "विचारों" या अमूर्त प्रतिनिधित्वों के रूप में अस्तित्व होता है, और उनका भौतिक अस्तित्व होता है। (ट्र.)

छठा: उनकी आत्मा की स्थायित्व, यदि उनमें एक है।27

ये प्राणी जो विभिन्न कर्तव्य करते हैं तथा अपनी मृत्यु, क्षणभंगुरता, क्षय, विनाश, तथा अपने अस्तित्व में आने और लुप्त होने में जो अवस्थाएँ ग्रहण करते हैं, वे सब दिव्य नामों द्वारा अपेक्षित हैं। इन्हीं कर्तव्यों के कारण प्राणी बाढ़ के समान हैं जो जीवन और मृत्यु, अस्तित्व और अनस्तित्व की तरंगों पर सबसे अधिक वेग से बहती है। इन्हीं कर्तव्यों के कारण ब्रह्माण्ड में सतत क्रियाशीलता और निरन्तर सृजन होता रहता है। अतः हम सभी को यह घोषित करना चाहिए कि: ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और वह कितना उत्तम संरक्षक है! अर्थात्, अस्तित्व के सम्बन्ध में, मेरे लिए यह पर्याप्त है कि मैं अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता का कार्य हूँ: क्षण भर के लिए इस प्रकाशित अस्तित्व का अनुग्रह प्राप्त करना, लाखों वर्षों के प्रत्यक्ष, निष्फल अस्तित्व से बेहतर है। विश्वास के द्वारा ईश्वर से सम्बन्ध होने के कारण, इस अस्तित्व का एक मिनट विश्वास के सम्बन्ध के बिना हजारों वर्षों के बराबर है; उस एक मिनट का अस्तित्व उन हजारों वर्षों से अधिक पूर्ण और व्यापक है।

इसी तरह, मेरे लिए अस्तित्व और अस्तित्व के मूल्य के लिए यह पर्याप्त है कि मैं उसकी कला हूँ जिसका गौरव आकाशों में है और जिसके निशान पृथ्वी पर हैं, जिसने आकाशों और पृथ्वी को छह “दिनों” में बनाया है।

मेरे अस्तित्व और उसकी पूर्णता के लिए यही पर्याप्त है कि मैं उसकी कलाकृति हूँ जिसने आकाश को दीपों से सजाया और प्रकाशित किया है तथा पृथ्वी को फूलों से सजाया है।

मेरे लिए गर्व और सम्मान के लिए यही पर्याप्त है कि मैं उसी का प्राणी, दास और सेवक हूँ जिसकी पूर्णता और महिमा के सम्बन्ध में मैं स्वयं को जानता हूँ।

सौंदर्य ब्रह्माण्ड अपनी सम्पूर्णता और सुन्दरता के साथ मात्र एक धुंधलापन है।

---

27 आत्मा की स्थायित्वता को उनतीसवें वचन में स्पष्ट रूप से समझाया गया है।

उनकी वास्तविकता और प्रकृति तथा उनकी संरचना के सिद्धांतों को निर्धारित करने वाले नियम, उन प्राणियों के लिए समान अर्थ रखते हैं जिनमें आत्मा नहीं है, जैसा कि आत्मा उन प्राणियों के लिए रखती है जिनमें आत्मा है। ये नियम और सिद्धांत स्थायी हैं। उदाहरण के लिए, एक अंजीर का पेड़ सड़ जाता है और मर जाता है, लेकिन इसकी "आत्मा", जो इसके गठन, संगठन और विकास के नियमों में शामिल है जो दिव्य आज्ञाओं के दायरे से जारी होती है, इसके बीजों में मौजूद रहती है। यह "आत्मा" नहीं मरती है, और इसके अनुसार रूपों का नवीनीकरण होता है, जिससे पेड़ की प्रकृति मौजूद रहती है। क्योंकि इसकी प्रकृति शाश्वत सुंदर में से एक की छाया है

ईश्वर के नाम, उस शाश्वत स्थायी नाम की किरण के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करते हैं, इसकी पहचान कई “आदर्श” पट्टियों में मौजूद रहती है जो प्रतिनिधित्व या “आदर्श” रूपों की दुनिया से संबंधित हैं। इसलिए, गैर-अस्तित्व (क्षय और मृत्यु के रूप में) अस्तित्व के क्षयकारी उदाहरण के स्थायी अस्तित्व के असंख्य उदाहरणों में संक्रमण के शीर्षक से अधिक कुछ नहीं है।

छाया है, और जो उसकी पूर्णता के चिह्नों और उसकी सुन्दरता के संकेतों से बनी है।

मेरे लिए सभी चीज़ों के लिए वह पर्याप्त है जो कफ़ और नून के बीच छोटे-छोटे कंटेनरों में अनगिनत उपहारों को संग्रहीत करता है, और जो अपनी शक्ति के माध्यम से, इन सूक्ष्म कंटेनरों की एक मुट्ठी में टनों उपहार जमा करता है, जिन्हें बीज और अनाज कहा जाता है।

मेरे लिए हर सुंदर और लाभदायक चीज़ के बदले में वह सर्व-कृपालु, सर्व-सुंदर और सर्व-करुणामयी ही पर्याप्त है। क्योंकि ये सभी सुंदर प्राणी ऋतुओं, शताब्दियों और युगों के दौरान उसकी कृपा और सौंदर्य की रोशनी के नवीनीकरण के लिए क्षणिक दर्पण मात्र हैं। और वसंत और ग्रीष्म के ये सभी आवर्ती उपहार और क्रमिक फल उसके निरंतर कार्य की हमेशा नवीनीकृत अभिव्यक्तियाँ हैं।

प्राणियों के जीवन के दौरान तथा दिनों और वर्षों के दौरान, कुछ हद तक पक्षपात करना।

मेरे जीवन और उसके सच्चे स्वरूप के लिए यह पर्याप्त है कि मैं जीवन और मृत्यु के निर्माता के नामों की अभिव्यक्तियों का एक मानचित्र, एक सारांश, एक संतुलन और एक माप हूँ।

मेरे जीवन और उसके कार्यों के लिए यह पर्याप्त है कि चूंकि मेरा जीवन मेरे मूल-निर्माता और उनके सर्व-सुंदर नामों के मूल लक्षणों की अभिव्यक्ति का परिणाम है, इसलिए मैं शक्ति की कलम से अंकित एक शब्द हूं, जो उस परम शक्तिशाली, सर्व-जीवित और स्वयं-निर्भर के नामों को इंगित करता और समझाता है।

मेरे जीवन और उसके अधिकारों के लिए यह पर्याप्त है कि चूँकि मेरे अस्तित्व का वस्त्र, मेरी जन्मजात प्रकृति का लबादा, और मेरे जीवन का हार उसकी दया के उपहारों से सुशोभित है, इसलिए मैं अपने भाई (या बहन) प्राणियों के बीच अपने निर्माता के नामों के प्रकटीकरण को प्रदर्शित और घोषित करूँ और उन्हें ब्रह्मांड के निर्माता की दृष्टि में प्रदर्शित करूँ।

मेरे जीवन के अधिकार के लिए यह पर्याप्त है कि मैं जीवित प्राणियों द्वारा जीवनदाता को की जाने वाली सभी प्रकार की पूजा को समझूं, उसका पालन करूं और उसका साक्षी बनूं।

मेरे जीवन के अधिकार के लिए यह पर्याप्त है कि मैं शाश्वत प्रभु की कृपा के उभरे हुए रत्नों से अलंकृत हो गई हूँ, तथा विश्वास से उत्पन्न चेतना के साथ उन्हें उसकी दृष्टि के समक्ष प्रस्तुत कर रही हूँ।

---

[28] कफ़ और नून अरबी आज्ञाकारी कुन (हो!) के अक्षर क और न हैं , जो ईश्वरीय आदेश "हो!" को दर्शाता है, जिसे ईश्वर तब कहते हैं जब वह किसी चीज़ को अस्तित्व में लाना चाहते हैं। (अनुवाद)

मेरे जीवन और उसके सुखों के लिए यह पर्याप्त है कि मुझमें यह ज्ञान, दृढ़ विश्वास, जागरूकता और विश्वास हो कि मैं उसका सेवक, उसकी कृति और उसका प्राणी हूँ; यह पर्याप्त है कि मैं जानूँ कि मैं उसके समक्ष जरूरतमंद और अभावग्रस्त हूँ, और यह कि वह मेरा परम दयालु, परम उदार और परम कृपालु सृष्टिकर्ता है, जो अपनी बुद्धि और दया के अनुरूप मुझे मुफ्त में प्रदान करता है और मेरा पालन-पोषण करता है।

मेरे लिए जीवन और उसके मूल्य के लिए यह पर्याप्त है कि मैं अपनी पूर्ण नपुंसकता, गरीबी और कमजोरी के माध्यम से पूर्ण शक्तिशाली की शक्ति, पूर्ण दयालु की दया और पूर्ण शक्ति के स्वामी की शक्ति के प्रकटीकरण की डिग्री का माप हूँ। अपने ज्ञान, इच्छा और शक्ति के सीमित, विशेष गुणों के माध्यम से, मैं एक दर्पण भी हूँ जिसके माध्यम से मेरे निर्माता के सर्वव्यापी गुणों को समझा जाता है। उदाहरण के लिए, मैं अपने सीमित, विशेष ज्ञान के माप के माध्यम से उनके सर्वव्यापी ज्ञान को समझने में सक्षम हूँ।

मेरे लिए पूर्णता के लिए यह पर्याप्त है कि मैं जानूं कि मेरा देवता पूर्णतः परिपूर्ण है, और ब्रह्मांड में जो भी परिपूर्णताएं हैं, वे उसकी पूर्णता के संकेत और संकेत हैं। मेरे लिए पूर्णता के लिए ईश्वर में मेरा विश्वास भी पर्याप्त है, क्योंकि विश्वास ही मानवजाति की संपूर्ण पूर्णता का स्रोत है।

tions.

और यह मेरे लिए पर्याप्त है, मेरी सभी अनगिनत विभिन्न आवश्यकताओं के लिए, जिनकी संतुष्टि मेरे विभिन्न अंगों और क्षमताओं की भाषाओं के माध्यम से मांगी जाती है, कि मेरे देवता, मेरे भगवान, मेरे निर्माता और निर्माता, के पास यह है कि
वह सर्व सुन्दर नामों वाला है, मुझे खिलाता है, पिलाता है, पालता है, बड़ा करता है, और मुझसे बातें करता है
- उसकी महिमा महान है और वह सर्वसमावेशी है
उसके उपकार.

चौथा बिंदु

मेरे लिए, मेरी सभी इच्छाओं और मांगों के लिए, वह पर्याप्त है, जिसने अपनी सूक्ष्म कला, सर्व-भेदी शक्ति, सूक्ष्म बुद्धि और अपने सूक्ष्म प्रभुत्व के माध्यम से मेरे और मेरे सभी साथी जीवों के रूप को एक तरल पदार्थ से खोल दिया है।

मेरे लिए, मेरे सभी उद्देश्यों के लिए, वह पर्याप्त है जिसने मुझे बनाया है, मेरे कान और आंखें खोल दीं, मेरी जीभ और मेरे दिल को मेरे शरीर में शामिल कर दिया, और उनमें और मेरी अन्य शक्तियों में असंख्य सटीक तराजू रख दिए जो उसकी दया के विभिन्न खजानों की सामग्री को तौलते हैं। उसने मुझे बनाया है, मेरे कान और आंखें खोल दीं, मेरी जीभ और मेरे दिल को मेरे शरीर में शामिल कर दिया, और उनमें और मेरी अन्य शक्तियों में असंख्य सटीक तराजू रख दिए जो उसकी दया के विभिन्न खजानों की सामग्री को तौलते हैं।

मेरी जीभ, मेरे हृदय और मेरे स्वभाव में उनके नामों के खजाने की विविधता को समझने के लिए असंख्य संवेदनशील उपकरण रखे हैं।

मेरे लिए वह पर्याप्त है, जिसने अपने देवत्व की महिमा, अपनी दया की कृपा, अपने प्रभुत्व की महानता, अपनी दयालुता की उदारता, अपनी शक्ति की सर्वोच्चता और अपनी बुद्धि की सूक्ष्मता के माध्यम से इन सभी अंगों और अवयवों, अंगों और प्रणालियों, इंद्रियों और भावनाओं, क्षमताओं और आध्यात्मिक शक्तियों को मेरे तुच्छ, दीन-हीन व्यक्ति और मेरे कमजोर और अभावग्रस्त अस्तित्व में सम्मिलित कर लिया है, ताकि मैं उसकी सभी प्रकार की कृपाओं और स्वादों को अनुभव कर सकूं और उसके नामों के अधिकांश प्रकटीकरणों का अनुभव करने में मेरी सहायता कर सकूं।

पांचवां बिंदु

मुझे, अन्य सभी लोगों के साथ, गर्व और कृतज्ञता के साथ मौखिक रूप से और अपनी स्वभावगत भाषा में घोषणा करनी चाहिए:

मेरे लिए वही काफ़ी है जिसने मुझे पैदा किया और मुझे दुनिया से निकाला

अस्तित्वहीनता का अंधकार मुझे अस्तित्व का प्रकाश प्रदान कर रहा है;

मेरे लिए वही काफी है जिसने मुझे जीवित प्राणी बनाया, मुझे जीवन का उपहार दिया, जो उन लोगों को सभी चीजें देता है जिनके पास यह है और उन्हें सभी चीजों के लिए अपना हाथ बढ़ाने की अनुमति देता है;

मेरे लिए वही पर्याप्त है जिसने मुझे मानव बनाया है, मुझे वह अनुग्रह प्रदान किया है जो मानवता है, जो हमें सूक्ष्म जगत बनाती है, जो स्थूल जगत से भी अधिक अर्थपूर्ण है;

मेरे लिए वह अल्लाह ही काफ़ी है जिसने मुझे ईमान वाला बनाया और मुझे ईमान का वरदान दिया, जो दुनिया और आख़िरत को दो मेज़ों के समान बना देता है जो ईमान के हाथ से ईमानवाले को पेश करता है।

मेरे लिए वही काफी है जिसने मुझे कमिशन का सदस्य बनाया है।

उनके प्रिय मुहम्मद की कृपा उन पर हो और उन पर शांति और आशीर्वाद हो, तथा वे मुझ पर ईश्वर के प्रति प्रेम और ईश्वर का मुझ पर प्रेम प्रदान करें, जो दोनों ही विश्वास में पाए जाते हैं और मानवीय पूर्णता की उच्चतम डिग्री हैं। और इस प्रेम के माध्यम से विश्वासियों के लिए उदारता ताकि वे आकस्मिकता और आवश्यकता के क्षेत्रों की अनंत सामग्री से लाभ उठाने में सक्षम हों;

, जो विश्वास से उत्पन्न होता है, उसने अपने क्षेत्र का विस्तार किया है

मेरे लिए वह अल्लाह ही काफी है, जिसने मुझे न तो कोई जड़ वस्तु बनाया, न कोई पशु, न कोई गुमराह इंसान।

प्रकृति, प्रजाति, धर्म और विश्वास के संबंध में अधिकांश प्राणियों से श्रेष्ठ: सारी प्रशंसा उसी के लिए है और सारा धन्यवाद उसी को मिलना चाहिए;

मेरे लिए वह काफ़ी है, जैसा कि हदीस कुदसी में वर्णित है: "न तो पृथ्वी और न ही आकाश मुझे समा सकते हैं, लेकिन मेरे मोमिन बन्दे का दिल मुझे समा सकता है;"29 ने मुझे एक ऐसा उपहार दिया है जिसे ब्रह्मांड समा नहीं सकता। क्योंकि, जिस तरह से मानवता का मूल स्वभाव सभी दिव्य नामों के लिए एक व्यापक दर्पण है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं, उसने मुझे अपने नामों की अभिव्यक्तियों के लिए एक व्यापक दर्पण बनाया है; मेरे लिए वह काफ़ी है, जिसने इसे संरक्षित करने और बाद में इसे मुझे वापस करने के लिए मुझसे वह संपत्ति खरीदी है जो उसने मुझे सौंपी थी और बदले में मुझे जन्नत देने का वादा किया है। सारी प्रशंसा और धन्यवाद उसी के लिए है, मेरे अस्तित्व के परमाणुओं की संख्या अस्तित्व में परमाणुओं की संख्या

से गुणा की गई है;

मेरे लिए मेरा रब ही काफ़ी है, उसकी महिमा महान है!
और मुहम्मद, प्रकाश, ईश्वर का आशीर्वाद उन पर हो!
ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है!
मेरे लिए मेरा रब ही काफ़ी है, उसकी महिमा महान है!
मेरे हृदय का अंतरतम जीवन ईश्वर का स्मरण है
और अहमद का स्मरण, ईश्वर का आशीर्वाद उस पर हो!
ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है!

29 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, "अज़्-ज़ुहद" 81; अद-दयालामी, अल-मुस्नद, 3:174.

छठी किरण

छठी किरण

प्रार्थना के बैठे हुए भाग के दौरान पाठ के संबंध में

इसमें केवल दो बिंदु हैं।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

T उनकी किरण में दो प्रश्नों के उत्तर शामिल हैं
विहित प्रार्थना के बैठे हुए भाग (तशह्हुद) के दौरान पाठ के बारे में पूछा गया , जो इस प्रकार शुरू होता है, "सभी पूजा (सभी जीवित प्राणियों द्वारा उनके जीवन के माध्यम से की गई) भगवान की है, और इसलिए सभी पूजा (विशेष रूप से सभी प्राणियों जैसे बीज और अंडे के लिए और उनके द्वारा की गई), और पूजा (विशेष रूप से सभी जीवित प्राणियों द्वारा आत्माओं के साथ की गई), और पूजा (मानवता के सिद्ध सदस्यों और भगवान के निकट स्थित फ़रिश्तों द्वारा की गई)।" तशह्हुद की अन्य सच्चाइयों की व्याख्या को किसी अन्य समय के लिए स्थगित करते हुए, यहां हम सैकड़ों में से केवल दो बिंदुओं की जांच करेंगे।

पहला सवाल

तशह्हुद के पवित्र वाक्य वास्तव में अल्लाह और उसके रसूल के बीच रसूल के स्वर्गारोहण (अल-मेराज) की रात को हुई बातचीत थी।[30] तो फिर, उन्हें पवित्र प्रार्थना में शामिल करने का क्या कारण है?

---

[30] अल-मीराज: स्वर्गारोहण। पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की चमत्कारी यात्रा, रूपों की सीमा से परे अस्तित्व के क्षेत्रों के माध्यम से। (अनुवाद)

उत्तर: पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ प्रत्येक आस्तिक के लिए एक प्रकार का "आरोहण" है जो उन्हें करता है। इसलिए, तशह्हुद में बोले जाने वाले शब्द मुहम्मद के सर्वोच्च आरोहण के दौरान बोले जाने वाले शब्द होने चाहिए, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। उन्हें पढ़ने से हमें ईश्वर और उनके रसूल के बीच इस पवित्र वार्तालाप को ध्यान में लाने की अनुमति मिलती है। इस स्मरण या स्मरण के माध्यम से, उन धन्य शब्दों के अर्थ सार्वभौमिक हो जाते हैं और, इस तरह, अब वे किसी आस्तिक के बौद्धिक या आध्यात्मिक स्तर तक सीमित नहीं रह जाते हैं। इस प्रकार उनके पवित्र, व्यापक अर्थों की कल्पना की जा सकती है, और इस अवधारणा के माध्यम से उनके मूल्य और प्रकाश को बढ़ाया और विस्तारित किया जाता है।

उदाहरण के लिए, उस मुबारक रात में सर्वशक्तिमान ईश्वर को बधाई देने के लिए, सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा: अत-तहियातु लि'ल्लाह।
इसका अर्थ है: "हे मेरे प्रभु! सभी प्राणी अपने जीवन के माध्यम से जो भी महिमा-मंडन करते हैं, तथा अपने निर्माता को जो भी उपहार देते हैं, वे सब आपके ही हैं। मैं भी उनका दर्शन करके तथा अपने विश्वास के माध्यम से उन्हें आपको ही अर्पित करता हूँ।"

अत-तहियात शब्द से ईश्वर के सबसे महान् रसूल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उन सभी पूजाओं का उल्लेख कर रहे थे जो जीवित प्राणी अपने जीवन के माध्यम से करते हैं; फिर उन्होंने इसे ईश्वर को अर्पित किया। इसी तरह, अल-मुबारकात शब्द से, जो अत-तहियात का सारांश है , उनका मतलब प्राणियों की धन्यता, प्रचुरता और पूजा से था, और विशेष रूप से बीज, अनाज और अंडे से, जो आशीर्वाद और प्रचुरता के साधन हैं और जो किसी को यह कहने के लिए प्रेरित करते हैं: "ईश्वर के आशीर्वाद कितने महान हैं!" और अस-सलावत शब्द के माध्यम से उन्होंने उन सभी विशेष प्रकार की पूजा की कल्पना की जो आत्मा से संपन्न प्राणियों द्वारा की जाती हैं और जो जीवित प्राणियों का सारांश हैं, और उन्हें उस व्यापक अर्थ के साथ दिव्य न्यायालय में पेश किया। अंत में, अत-तय्यिबत शब्द के माध्यम से, उनका मतलब सिद्ध मनुष्यों और ईश्वर के सबसे निकट के फ़रिश्तों की उज्ज्वल, उच्च पूजा से था, जो आत्मा से संपन्न प्राणियों का सारांश हैं; उसने यह उसकी भेंट चढ़ाई जिसकी वह पूजा करता था।

उस रात, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कहा: “शांति आप पर हो, हे (सबसे शानदार) पैगंबर!” यह एक अप्रत्यक्ष आदेश और संकेत था कि भविष्य में, करोड़ों लोग दिन में कम से कम दस बार कहेंगे: “शांति आप पर हो, हे (सबसे शानदार) पैगंबर!” इस दिव्य अभिवादन ने सलाम के इन शब्दों को एक व्यापक प्रकाश और सबसे ऊंचा अर्थ दिया।

सबसे महान पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने इस अभिवादन का जवाब यह कहकर दिया: "हम पर और सभी नेक सेवकों पर शांति हो

इसका मतलब यह था कि पैगंबर उम्मीद और प्रार्थनापूर्वक अपने निर्माता से पूछ रहे थे कि भविष्य में उनके विशाल समुदाय और उसके धर्मी सदस्यों को ईश्वरीय शांति और आशीर्वाद का प्रतिनिधित्व करने के लिए इस्लाम का आशीर्वाद दिया जाएगा, और उनके समुदाय के लोग एक-दूसरे को इन शब्दों के साथ बधाई देंगे: "शांति तुम पर हो!" "और शांति तुम पर हो!", जो विश्वासियों के बीच इस्लाम का एक सार्वभौमिक चिह्न है।

महादूत गेब्रियल (उन पर शांति हो) जो उस वार्तालाप में शामिल थे, ने ईश्वर के आदेश पर उस रात कहा: "मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।" इससे यह खुशखबरी हुई कि मुहम्मद के समुदाय के सभी लोग, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अंतिम दिन तक इसी तरह गवाही देंगे।

प्रत्येक विहित प्रार्थना के बैठे हुए भाग के दौरान इस पवित्र वार्तालाप को स्मरण करने से, इसके शब्दों के अर्थ प्रकाश से भर जाते हैं और व्यापकता प्राप्त करते हैं।

मन की एक अजीब स्थिति जिसने मुझे उपरोक्त सत्य को उजागर करने में मदद की

एक बार निर्वासन की एक अंधेरी रात में असावधानी की अंधेरी स्थिति में फँसा हुआ यह विशाल ब्रह्मांड मेरी कल्पना में एक बेजान, बेजान, खाली, उजाड़ और भयानक लाश के रूप में दिखाई दिया। अतीत भी, मैंने पूरी तरह से बेजान, खाली और आतंक से भरा हुआ कल्पना की, जबकि असीम अंतरिक्ष और असीम समय ने एक अंधेरे जंगल का रूप ले लिया।

इस मनःस्थिति से बचने के लिए मैंने पवित्र प्रार्थना में शरण ली। जब मैंने प्रार्थना के बैठे हुए भाग के दौरान अत-तहियात कहा, तो ब्रह्मांड अचानक जीवन में आ गया: यह तुरंत जीवंत हो गया, एक जीवित, चमकदार रूप धारण कर लिया। यह एक चमकदार दर्पण बन गया जो सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर व्यक्ति के सामने रखा गया था। मैंने ज्ञान और अनुभव की निश्चितता के साथ जाना और देखा कि ब्रह्मांड, अपने सभी जीवित भागों के साथ, निरंतर विभिन्न प्रकार की पूजा और अपने जीवन के उपहार सर्व-जीवित, स्वयं-निर्भर व्यक्ति को अर्पित कर रहा था।

फिर, जब मैंने कहा, "आप पर शांति हो, हे (सबसे शानदार) पैगंबर!", वह असीम, खाली समय भगवान के सबसे महान दूत के नेतृत्व में परिवर्तित हो गया, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, एक उजाड़ जंगल से जीवित आत्माओं से भरे मनोरंजन के अनुकूल स्थान में।

दूसरा प्रश्न

तशह्हुद के अंत में कहा गया वाक्य , "हे ईश्वर! हमारे स्वामी मुहम्मद और हमारे स्वामी मुहम्मद के परिवार पर कृपा और शांति प्रदान कर, जैसा कि आपने इब्राहीम और इब्राहीम के परिवार पर कृपा प्रदान की थी," तुलना के नियमों के अनुरूप नहीं प्रतीत होता है, क्योंकि पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, पैगम्बर इब्राहीम, उन पर शांति हो से महान थे, और उन्हें अधिक दया प्राप्त थी।

इस तरह के आशीर्वाद का कारण क्या है और इसे विशेष रूप से तशह्हुद के दौरान क्यों पढ़ा जाता है? साथ ही, यह वाक्यांश हर प्रार्थना में अनादि काल से क्यों दोहराया जाता रहा है, जबकि यदि जो मांगा जाता है उसका वादा ईश्वर ने पहले ही कर दिया है, तो निश्चित रूप से, इसे एक बार कहना ही पर्याप्त है? एक और उदाहरण देते हुए, हालाँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने कुरान में वादा किया है कि आपका रब आपको एक शानदार, प्रशंसित स्थान पर उठाएगा (17:79), लेकिन प्रार्थना के आह्वान और प्रार्थना की शुरुआत की घोषणा के बाद की गई प्रार्थना में, हम पढ़ते हैं "... और उसे उस शानदार, प्रशंसित स्थान पर उठाएँ जिसका वादा आपने उससे किया है।" मुहम्मद का पूरा समुदाय प्रार्थना करता है कि यह वादा पूरा हो। ऐसा क्यों है?

उत्तर: इस प्रश्न में वास्तव में तीन प्रश्न हैं, और
तीन पहलू.

पहला पहलू: यह सच है कि पैगम्बर इब्राहीम (उन पर शांति हो) पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो और आशीर्वाद हो) के बराबर नहीं थे, लेकिन उनके वंशज पैगम्बर थे, जबकि पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति हो और आशीर्वाद हो) के वंशज संत थे। संत पैगम्बरों के स्तर तक नहीं पहुँच सकते। आगे जो लिखा गया है वह इस बात का सबूत है कि मुहम्मद के परिवार के लिए यह प्रार्थना उल्लेखनीय तरीके से स्वीकार की गई है:

करोड़ों मुसलमानों में से, वे संत जो केवल दो व्यक्तियों, अर्थात् हसन और हुसैन, मुहम्मद के परिवार में से, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, के वंशज हैं, ज़्यादातर मामलों में सच्चाई के मार्ग और विभिन्न आध्यात्मिक आदेशों पर बौद्धिक या आध्यात्मिक मार्गदर्शक और नेता रहे हैं। इससे पता चलता है कि उन्हें हदीस में जो कहा गया है, उससे अनुग्रह प्राप्त हुआ है : "मेरे समुदाय के विद्वान पैगंबर की तरह हैं-

३१ हसन और हुसैन, अल्लाह उन पर प्रसन्न हो, अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के पोते हैं, जो उनकी प्यारी बेटी फातिमा और उनके चचेरे भाई अली (अल्लाह उन पर प्रसन्न हो) के माध्यम से पैदा हुए हैं। (ट्र.)

जाफर अस-सादिक 33 , ग़ौथुल-आज़म अब्दुल-कादिर अल-जिलानी34 और शाह नक्शबंद35 जैसे लोगों ने, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, मुहम्मद की कौम के बड़े हिस्से को सच्चाई के रास्ते पर, इस्लाम की सच्चाई पर, मार्गदर्शन किया है; वे मुहम्मद के परिवार के लिए इस प्रार्थना की स्वीकृति के फल हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

दूसरा पहलू: इस तरह की दुआ खास तौर पर धार्मिक प्रार्थना के दौरान क्यों कही जाती है, मैं यह कहना चाहूँगा: इसे पढ़कर हम याद करते हैं कि हम उसी रास्ते पर चल रहे हैं जिस पर पैगम्बरों और संतों का विशाल कारवां चला है, जो मानव जाति के सबसे प्रसिद्ध लोगों में सबसे अधिक प्रकाशमान, पूर्ण और धर्मी हैं; यह हमें याद दिलाता है कि हम उस विशाल जमात में शामिल हो गए हैं, जिसका रास्ता कभी भ्रमित नहीं हुआ और जिसके रास्ते की सच्चाई मानव जाति के सबसे सच्चे, सबसे अधिक ज्ञानी सदस्यों की सहमति से समर्थित प्रमाणों से पुष्टि की गई है, और हम सीधे रास्ते पर उसके साथ चल रहे हैं। इसे याद करके हम शैतानी संदेह और बुरे भ्रमों से बच जाते हैं।

इस कारवां के सदस्य भगवान के प्रिय सेवक और मित्र हैं।

इस कायनात के मालिक हैं, जबकि इसके विरोधी उसके दुश्मन हैं और इसलिए अस्वीकार के पात्र हैं। इसका सबूत यह है कि आदम (उन पर शांति हो) के ज़माने से यह कारवाँ अदृश्य से आने वाली मदद से पुष्ट और समर्थित रहा है, जबकि इसके विरोधियों पर आसमानी विपत्तियाँ आई हैं। जबकि इसके विरोधी, जैसे कि नूह की क़ौम, आद और समूद, फ़िरऔन और निम्रोद36, सभी को आसमानी विपत्तियों से मारा गया है ।

[32] अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 4:384.

[33] जाफर अस-सादिक (मृत्यु, 765) चौथे खलीफा अली के बेटे इमाम हुसैन के परपोते थे। वे धार्मिक विज्ञान के एक प्रतिष्ठित विद्वान थे, जो अपनी धर्मपरायणता और धार्मिकता के लिए भी जाने जाते थे। बारह इमाम शिया ("ट्वेलवर्स") उन्हें अपना छठा इमाम मानते हैं। (ट्र.)

[34] अब्दुल-कादिर अल-जिलानी (मृत्यु, 1166): सबसे प्रसिद्ध सूफी गुरुओं में से एक। न्यायशास्त्र और हदीस के छात्र, वे अपने युग के कुतुब ("आध्यात्मिक ध्रुव") और अल-ग्वाहसूल-आज़म ("ईश्वरीय सहायता का सबसे बड़ा साधन") के रूप में जाने जाते थे। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में किताबुल-घुन्याह, फुतुहुल-ग़ैब और अल-फ़थुर-रब्बानी शामिल हैं। (अनुवाद)

35 मुहम्मद बहाउद्दीन शाह अन-नक्शबंद (मृत्यु 1389): सबसे प्रमुख इस्लामिक आध्यात्मिक गुरुओं में से एक और सूफी नक्शबंदियाह संप्रदाय के संस्थापक। उनकी पुस्तकों में रिसालतु'एल-वारिदा, अल-अवरादु'एल-बहैय्या, हयातनामा और तन्बिहुल-ग़ाफिलिन शामिल हैं। (ट्र.)

36 निम्रोद एक चाल्डियन राजा था जो पैगंबर अब्राहम के समय में मेसोपोटामिया पर शासन करता था। एक मक्खी जो उसकी नाक से घुस गई थी, उसकी दुखद मौत का कारण बनी। (ट्र.)

अदृश्य, जो ईश्वरीय प्रकोप और दंड का संकेत देता है, शक्तिशाली कारवां के पवित्र नायक, जैसे कि पैगंबर नूह, पैगंबर अब्राहम और पैगंबर मूसा, उन पर शांति हो, और पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, को सबसे असाधारण तरीके से अदृश्य से चमत्कार और दिव्य उपहारों के साथ अनुग्रहित किया गया है। जिस तरह एक ही वार क्रोध को दर्शाता है और एक ही उपहार प्रेम को दर्शाता है, यह तथ्य कि विरोधियों पर हजारों वार हुए हैं जबकि हजारों एहसान और सहायता के उदाहरण कारवां तक पहुंचे हैं, संदेह से परे साबित करते हैं कि कारवां सच्चाई का प्रतिनिधित्व करता है और सीधे रास्ते पर चल रहा है। फातिहा (कुरान के शुरुआती अध्याय) की अंतिम आयत का हिस्सा, उन लोगों का मार्ग जिन्हें आपने (मार्गदर्शन के साथ) अनुग्रह्वित किया है, कारवां को संदर्भित करता है, जबकि भाग, उन लोगों का नहीं जिन्होंने आपका क्रोध भड़काया है, न ही वे जो भटक गए हैं, उनके विरोधियों से संबंधित है। इस प्रकार हमने जो अर्थ समझाया है वह कुरान के शुरुआती अध्याय की इस अंतिम आयत में स्पष्ट हो गया है।

तीसरा पहलू: जिस चीज़ का वादा पहले ही किया जा चुका है, उसे बार-बार मांगने का कारण यह है: "महान, प्रशंसित स्थान" ईश्वर से मांगे गए आशीर्वाद का अंतिम लक्ष्य है। यह एक सर्वोच्च सत्य की शाखा है जिसमें हजारों शानदार, प्रशंसित स्थानों जैसे उच्च और महत्वपूर्ण सत्य शामिल हैं। यह ब्रह्मांड के निर्माण के सबसे महत्वपूर्ण परिणाम का फल है। प्रार्थना के माध्यम से अंतिम लक्ष्य, शाखा और फल मांगना उस सामान्य, सर्वोच्च सत्य की प्राप्ति के लिए पूछना है, शाश्वत क्षेत्र के आगमन या प्राप्ति के लिए पूछना है, जो सृष्टि के वृक्ष की सबसे बड़ी शाखा है, पुनरुत्थान की प्राप्ति और शाश्वत सुख के क्षेत्र के उद्घाटन के लिए पूछना है; ये ब्रह्मांड के सबसे बड़े परिणाम हैं। इन्हें मांगने से, व्यक्ति सभी मानव जाति की पूजा और प्रार्थना में भाग लेता है, जो स्वर्ग या शाश्वत सुख के क्षेत्र के अस्तित्व का सबसे महत्वपूर्ण कारण हैं। यह वास्तव में बहुत बड़ी बात नहीं है कि असंख्य लोग एक ऐसे लक्ष्य के लिए प्रार्थना करते हैं जो इतना अवर्णनीय रूप से सर्वोच्च है। इसके अलावा, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को इस तरह के शानदार, अत्यधिक प्रशंसित पद के साथ सम्मानित करना दूसरे, शाश्वत क्षेत्र में अपने सभी समुदाय के लिए उनकी सर्वोच्च मध्यस्थता को दर्शाता है। वह अपने सभी समुदाय की खुशी के बारे में गहराई से चिंतित हैं। इसलिए यह शुद्ध ज्ञान है कि पैगंबर मुहम्मद अपने सभी समुदाय से दया के लिए अंतहीन आशीर्वाद और प्रार्थनाएँ चाहते हैं।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सातवीं किरण

सातवीं किरण

सर्वोच्च चिन्ह

एक महत्वपूर्ण अनुस्मारक

Nओटी हर कोई सभी मामलों को समझने में सक्षम हो सकता है

इस महत्वपूर्ण ग्रंथ में जिन फलों की चर्चा की गई है, उनमें से कोई भी बिना अपने हिस्से के नहीं रहेगा। एक विशाल बाग में प्रवेश करने वाले के लिए वहां मौजूद सभी फलों को उठाकर ले जाना संभव नहीं है, लेकिन जो फल उनकी मुट्ठी में आ जाएंगे, वे उनके लिए पर्याप्त होंगे।

आखिरकार, बगीचा केवल उस व्यक्ति के लिए ही नहीं है: जिसकी बाहें इतनी लंबी हैं कि वह उस तक पहुंच सके, वह भी फल का हिस्सा पा सकता है।

निम्नलिखित पाँच कारक इस ग्रंथ को समझना कुछ कठिन बनाते हैं
समझना:

पहला: मैंने अपनी समझ के अनुसार और सबसे पहले अपने लिए अपने अवलोकन लिखे हैं। मैंने उन्हें दूसरों की समझ और दृष्टिकोण के अनुसार नहीं लिखा है, जैसा कि अन्य कार्यों के मामले में होता है।

दूसरा: चूँकि ईश्वरीय एकता को ईश्वर के महानतम नाम या उसकी अभिव्यक्ति के आधार पर सबसे व्यापक रूप में समझाया गया है

ईश्वर के नामों की सबसे व्यापक अभिव्यक्ति प्रासंगिक है, और चूंकि चर्चा किए गए विषय अत्यंत व्यापक, अत्यंत गंभीर और कभी-कभी काफी लंबे होते हैं, इसलिए हर कोई उन्हें पूरी तरह से समझने में सक्षम नहीं होगा।

तुरंत।

तीसरा: चूँकि प्रत्येक मामले में एक महान और व्यापक सत्य शामिल होता है, इसलिए कभी-कभी एक वाक्य पूरे एक या दो पृष्ठों तक फैल जाता है, ताकि प्रश्नगत सत्य को भागों में विभाजित न किया जा सके। इसी तरह, एक ही प्रमाण के लिए कभी-कभी कई प्रारंभिक बातों या आधारों की आवश्यकता हो सकती है।

चौथा: चूँकि यहाँ बताई गई अधिकांश बातों में अनेक प्रमाण हैं, इसलिए चर्चा कभी-कभी लंबी हो जाती है, जिसमें दस या बीस प्रमाणों को एक ही प्रमाण के रूप में समूहीकृत किया जाता है। यह देखते हुए कि यह मामला है, सीमित क्षमताएँ इसे पूरी तरह से समझने में सक्षम नहीं हो सकती हैं।

पाँचवाँ: इस ग्रंथ की रोशनी मुझे रमज़ान के आशीर्वाद के रूप में मिली। हालाँकि, चूँकि यह उस समय जल्दबाजी में लिखा गया था जब मैं कई मामलों में विचलित था और जब मेरा शरीर कई बीमारियों से ग्रस्त था, इसलिए मुझे पहले मसौदे से ही संतुष्ट होना पड़ा। इसके अलावा, इसमें कई अरबी हिस्से भी शामिल किए गए थे। उदाहरण के लिए, द फर्स्ट स्टेशन, जो पूरी तरह से अरबी में लिखा गया था, बाद में हटा दिया गया और एक अलग ग्रंथ बना दिया गया।

इन पाँचों कारणों से होने वाली कमियों और कठिनाइयों के बावजूद, यह ग्रंथ महत्वपूर्ण है। और इसकी महत्ता के कारण ही इसे "सर्वोच्च संकेत" और "मूसा की छड़ी" नाम दिया गया है। सर्वोच्च संकेत का यह ग्रंथ एक सर्वोच्च आयत, अर्थात् 17:44 की सच्ची व्याख्या है: सातों आकाश और धरती, और जो कोई उनमें है, उसकी स्तुति करते हैं। ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति के बिना उसकी स्तुति करता हो।

यह ग्रंथ, जो सातवीं किरण का निर्माण करता है, में एक परिचय और दो स्टेशन शामिल हैं। परिचय में चार महत्वपूर्ण विषयों की व्याख्या की गई है; पहला स्टेशन संबंधित सर्वोच्च पद्य की व्याख्या का अरबी भाग है, जबकि दूसरे स्टेशन में उस व्याख्या का अनुवाद या अर्थ, साथ में प्रमाण शामिल हैं।

इसमें बहुत सारे स्पष्टीकरण दिए गए हैं, इसलिए यह भूमिका अपेक्षा से अधिक लंबी हो गई है। हालाँकि, इसे इस तरह से होना ज़रूरी हो सकता है, और कुछ लोग इसे इसकी लंबाई के बावजूद बहुत छोटा भी मान सकते हैं।

नर्सी ने कहा

परिचय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

मैंने जिन्न और मनुष्य को इसलिए पैदा किया है कि वे मुझे ही जानें और मेरी ही इबादत करें। (51:56)

इस महान श्लोक के अनुसार, मानव जाति को इस संसार में इसलिए बनाया और भेजा गया है ताकि वह ब्रह्मांड के रचयिता को पहचान सके और उस पर विश्वास कर सके।

और उसकी पूजा करें। इस प्रकार, मानव जाति का प्राथमिक कर्तव्य ईश्वर को जानना और उस पर विश्वास करना है, और पूर्ण निश्चितता के साथ उसके अस्तित्व और एकता की पुष्टि करना है।

चूँकि मानवता में अनंत काल तक जीने की जन्मजात इच्छा होती है, और चूँकि वे असीमित आकांक्षाएँ रखते हैं और अंतहीन पीड़ाएँ सहते हैं, इसलिए ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान के अलावा कोई भी चीज़ या कोई भी अन्य उपलब्धि, जो अनंत जीवन में अनंत सुख की कुंजी है, मानवता के लिए तुच्छ है। वास्तव में, ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान के अलावा कई चीज़ों के बारे में कहा जा सकता है कि उनका कोई मूल्य नहीं है।

इस सत्य को रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में संदर्भित करते हुए , जहाँ इस पर ठोस चर्चा की गई है, यहाँ हम दो आधुनिक बाधाओं पर चर्चा करेंगे जो मानवता को विश्वास की निश्चितता प्राप्त करने से रोकती हैं या उसे नुकसान पहुँचाती हैं। प्रत्येक बाधा में दो मामले शामिल हैं।

पहली बाधा और उससे कैसे पार पाया जाए

इसमें दो बातें शामिल हैं।

पहला मामला: जैसा कि तेरहवीं झलक में विस्तार से बताया गया है, आम सरोकार और स्वीकृति के मामलों में नकार या इनकार का सत्य की स्थापना और प्रदर्शन के सामने कोई मूल्य नहीं है। उदाहरण के लिए, अगर दो आम लोग रमज़ान के पवित्र महीने की शुरुआत में अर्धचंद्र को देखते हैं और इसकी गवाही देते हैं, और हज़ारों कुलीन और विद्वान इसे यह कहते हुए नकार देते हैं: "हमने इसे नहीं देखा है," तो इस नकार का न तो कोई मूल्य है और न ही कोई ताकत। क्योंकि सत्य की स्थापना और प्रदर्शन के मामले में, प्रत्येक व्यक्ति दूसरे को मजबूत करता है और उसका समर्थन करता है, इस प्रकार एक आम सहमति प्रदान करता है। हालाँकि, चाहे एक व्यक्ति किसी चीज़ का खंडन करे या हज़ार लोग उसका खंडन करें, उस खंडन का मूल्य - या, बल्कि, मूल्यहीनता - एक ही है। हर व्यक्ति जो इनकार करता है वह अलग-थलग है। क्योंकि जो कोई चीज़ स्थापित करता है और प्रदर्शित करता है वह उस चीज़ का उल्लेख कर रहा है जो वास्तव में मौजूद है और मामले का न्याय कर रहा है जैसा कि वह है। इस प्रकार, उपरोक्त उदाहरण में, यदि कोई कहता है, “चाँद आकाश में है,” और दूसरा इसकी पुष्टि करता है, तो वे दोनों एकजुट हो जाते हैं और मजबूत हो जाते हैं।

हालाँकि, जो नकारता या अस्वीकार करता है, वह किसी ऐसी चीज़ का उल्लेख नहीं करता जो वास्तव में मौजूद है, और यह एक प्रसिद्ध सिद्धांत है कि "किसी ऐसी चीज़ का खंडन जो किसी विशेष स्थान या स्थिति में निर्दिष्ट करना संभव नहीं है, स्थापित नहीं किया जा सकता है।" उदाहरण के लिए, यदि मैं किसी चीज़ के अस्तित्व की पुष्टि करता हूँ और आप इसका खंडन करते हैं, तो मैं केवल एक कथन प्रस्तुत करके आसानी से उसका अस्तित्व स्थापित कर सकता हूँ।

इसका उदाहरण। लेकिन उसी चीज़ के अस्तित्व को स्थापित करने के लिए, आपको इसे नकारने के लिए पूरी दुनिया को खंगालना होगा, यहाँ तक कि अतीत की पूरी तरह से जाँच करनी होगी। जब आप ऐसा कर लेंगे तभी आप कह पाएँगे: "यह अस्तित्व में नहीं है और कभी अस्तित्व में नहीं था।"

चूँकि जो लोग नकारते और इनकार करते हैं, वे वास्तविक वास्तविकता को नहीं मानते, बल्कि अपने दृष्टिकोण या अपनी मनमानी राय या ज्ञान के अनुसार निर्णय लेते हैं, इसलिए वे किसी भी तरह से एक-दूसरे को मजबूत या समर्थन नहीं दे सकते। क्योंकि देखने और जानने से रोकने वाले पर्दे और कारण कई हैं। कोई भी कह सकता है, "मैं इसे नहीं देखता; इसलिए, मेरी राय और विश्वास में, यह मौजूद नहीं है।"

लेकिन कोई भी यह नहीं कह सकता कि, “वास्तव में इसका अस्तित्व नहीं है।” यदि कोई ऐसा दावा करता है - विशेष रूप से विश्वास के मामलों में जो पूरे ब्रह्मांड से संबंधित हैं - तो यह दुनिया जितनी ही बड़ी झूठ होगी और जो कोई भी ऐसा दावा करता है, वह कभी भी इसकी पुष्टि नहीं कर पाएगा या दूसरों से इसकी पुष्टि नहीं करवा पाएगा।

संक्षेप में: पुष्टि या स्थापना के मामले में, परिणाम एक होता है और पुष्टि का हर उदाहरण सभी अन्य उदाहरणों द्वारा समर्थित होता है। लेकिन एक इनकार या निषेध व्यक्तिगत, मनमाने विचारों या दृष्टिकोणों पर आधारित होता है और अन्य इनकारों द्वारा समर्थित नहीं होता है। चूँकि हर कोई जो इनकार करता है, वह कहता है, "मेरे विचार या राय में," या "मेरे विश्वास के अनुसार," परिणाम कई गुना बढ़ जाते हैं लेकिन एक दूसरे की पुष्टि नहीं करते हैं।

इस वास्तविकता के कारण ही विश्वास का विरोध करने वालों की संख्या का कोई महत्व नहीं है: यह तथ्य कि वे अपनी भीड़ में मौजूद हैं, विश्वासियों की निश्चितता में कोई संदेह या हिचकिचाहट पैदा नहीं करनी चाहिए। फिर भी, इस युग में, कुछ यूरोपीय दार्शनिकों के निषेध और खंडन ने उनके कई दुर्भाग्यपूर्ण अनुकरणकर्ताओं में संदेह पैदा किया है, इस प्रकार उनके विश्वास की निश्चितता को नुकसान पहुँचाया है और उनके शाश्वत सुख को नष्ट कर दिया है। वे मानते हैं कि मृत्यु, जो हर दिन दसियों हज़ार लोगों पर आती है, को सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के रूप में नहीं बल्कि शाश्वत विनाश के रूप में देखा जाना चाहिए। उन इनकार करने वालों को उनके शाश्वत विनाश की निरंतर याद दिलाने के रूप में कार्य करके, कब्र, जिसका खुला दरवाजा कभी बंद नहीं हो सकता, उनके जीवन को सबसे कड़वे दुखों से जहर देती है। इससे समझें कि विश्वास कितना बड़ा आशीर्वाद है, और यह जीवन का सार क्यों है।

दूसरा मामला: कला या विज्ञान की किसी विशेष शाखा से संबंधित किसी विवादास्पद मामले में, जो लोग उसमें विशेषज्ञ नहीं हैं, उनका कोई अधिकार नहीं है, चाहे वे अन्य शाखाओं में कितने ही महान, जानकार या कुशल क्यों न हों; न ही उनके निर्णय को निर्णायक माना जा सकता है या उन्हें विद्वानों की आम सहमति का हिस्सा बनाया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, किसी बीमारी के निदान और उपचार में एक महान इंजीनियर के विचार का उतना महत्व नहीं हो सकता जितना कि एक साधारण चिकित्सक के विचार का।
विशेष रूप से, एक दार्शनिक के इनकार के शब्द, जो भौतिक मामलों में लीन है और जिसका तर्क उसकी आंखों से जो कुछ दिखता है, उसी तक सीमित है, और इसलिए जो सत्य के प्रकाश के प्रति असंवेदनशील हो गया है और आध्यात्मिक मुद्दों से क्रमशः अधिक से अधिक दूर होता जा रहा है - आध्यात्मिक मामलों पर उसकी घोषणाएं बेकार हैं और उन पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए।

इस वास्तविकता को देखते हुए, ईश्वरीय एकता से संबंधित पवित्र मामलों और आध्यात्मिक मुद्दों के संबंध में, जिस पर शेख अल-जिलानी जैसे सत्य के सैकड़ों-हजारों लोगों के बीच पूर्ण सहमति है, उनके रहस्य को पवित्र किया जा सकता है, जिन्होंने आध्यात्मिक मार्ग पर आगे बढ़ने में नब्बे साल बिताए और पृथ्वी पर रहते हुए भी ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन का निरीक्षण करने में सक्षम थे, और जिन्होंने ज्ञान या अवलोकन या यहां तक कि अनुभव की निश्चितता की डिग्री पर विश्वास की सच्चाई की खोज की, दार्शनिकों के शब्दों का क्या मूल्य हो सकता है, जिनके विचार बिखरे हुए हैं और उन असंख्य चिंताओं के बीच खो गए हैं जो केवल भौतिक दुनिया पर ध्यान केंद्रित करते हैं? क्या उनके इनकार गड़गड़ाहट की तुलना में मच्छर की भिनभिनाहट के समान कमजोर नहीं हैं?

संक्षेप में, इस्लाम की सच्चाइयों का विरोध करने वाला और उनके खिलाफ संघर्ष करने वाला अविश्वास इनकार, अज्ञानता और निषेध है। भले ही यह किसी तरह की पुष्टि प्रतीत हो, लेकिन वास्तव में यह एक निषेध है और इस प्रकार किसी भी स्थापित तथ्य से रहित है। हालाँकि, विश्वास ज्ञान है और स्थापित, अवलोकनीय तथ्यों पर आधारित है: यह एक पुष्टि और एक वस्तुनिष्ठ निर्णय है। विश्वास का कोई भी पहलू जो इसके विपरीत को नकारता है, वह या तो एक सकारात्मक सत्य का वर्णन है या एक पर्दा है जिस पर वह सत्य प्रकट होता है। भले ही, अत्यधिक कठिनाइयों के बावजूद, विश्वास के खिलाफ संघर्ष करने वाले अविश्वासी अपने नकारात्मक विश्वासों या विश्वास के नकार और अस्वीकृति को गैर-अस्तित्व (उदाहरण के लिए ईश्वर या परलोक या स्वर्गदूतों या पैगंबर और रहस्योद्घाटन का गैर-अस्तित्व) की स्वीकृति और पुष्टि के रूप में पुष्टि करने का प्रयास करते हैं, तो उनके अविश्वास को गलत ज्ञान या गलत निर्णय के रूप में कुछ भी नहीं माना जा सकता है। लेकिन, अस्वीकृति और अप्रतिज्ञान, जिन दोनों को आसानी से और बिना सोचे-समझे स्वीकार किया जा सकता है, वे पूर्ण अज्ञानता और निर्णय की पूर्ण कमी का प्रदर्शन हैं।

संक्षेप में: अविश्वास दो प्रकार का होता है:

पहले का इस्लाम की सच्चाई से कोई लेना-देना नहीं है। यह एक व्यक्तिगत, गलत धारणा, एक गलत विश्वास, एक गलत स्वीकृति और एक अन्यायपूर्ण निर्णय है।

इस तरह का अविश्वास हमारी चर्चा में शामिल नहीं है। यह हमारे यहाँ के विमर्श से संबंधित नहीं है और हमें इससे कोई सरोकार नहीं है।

दूसरा प्रकार विश्वास की सच्चाइयों का विरोध करता है और उनके विरुद्ध लड़ता है।
इस प्रकार का अविश्वास स्वयं दो प्रकार का होता है:

पहला है अस्वीकृति। इसमें विश्वास की सच्चाई की पुष्टि न करना शामिल है। यह एक तरह की अज्ञानता है - एक तरह का "गैर-निर्णय" - और इस तरह यह ऐसी चीज है जिसमें लोग आसानी से फंस जाते हैं। अविश्वास की यह विशेष उप-शाखा भी यहाँ हमारे लिए चिंता का विषय नहीं है।

दूसरा प्रकार है अस्तित्वहीनता की स्वीकृति। अस्तित्वहीनता को स्वीकार करने का अर्थ है ईश्वरीय सत्ता या विश्वास की किसी अन्य वस्तु के अस्तित्वहीन होने की पुष्टि करना। इस प्रकार का अविश्वास एक निर्णय और दृढ़ विश्वास है, और इसमें विश्वास का विरोध करना शामिल है। जो लोग इस तरह का विरोध करते हैं, उन्हें अपने अविश्वास या इनकार की पुष्टि करनी होती है।

जहाँ तक इस प्रकार के इनकार या निषेध का प्रश्न है, इसके भी दो प्रकार हैं:

पहला प्रकार किसी विशेष मामले, स्थान, स्थिति या समय के संबंध में किसी भी प्रमुख विश्वास की सच्चाई को नकारना है। इस प्रकार के इनकार को ध्यान में रखा जा सकता है, और इसलिए यह हमारी चर्चा से बाहर है।

दूसरे प्रकार में पवित्र, बुनियादी और सार्वभौमिक सत्य या विश्वास के मामलों को नकारना और अस्वीकार करना शामिल है, जो इस दुनिया और दुनिया दोनों से संबंधित हैं।

परलोक, और सभी समय और स्थानों पर। इस तरह के नकार या इनकार को किसी भी तरह से प्रमाणित नहीं किया जा सकता है, जैसा कि हमने प्रथम मामले में दिखाया है, क्योंकि एक ऐसा दर्शन होना चाहिए जो पूरे ब्रह्मांड, परलोक और अतीत को पूरी तरह से शामिल करने और देखने में सक्षम हो।

दूसरी बाधा और उससे कैसे पार पाया जाए

जो मन लापरवाही, पाप और भौतिकता में डूबा रहता है, वह ईश्वरीय सर्वोच्चता, महानता और अनंतता जैसे मुद्दों के संबंध में सीमित और संकुचित हो जाता है, और व्यापक या सारगर्भित मामलों को समझने में असमर्थ हो जाता है। इस वजह से, वे अपने पास मौजूद ज्ञान के कारण अहंकार से फूलकर इनकार और नकार की ओर भटक जाते हैं। चूँकि ऐसे लोग अपने आध्यात्मिक रूप से सूखे और संकुचित दिमाग या अपने भ्रष्ट और आध्यात्मिक रूप से मृत दिलों के भीतर विश्वास के अत्यंत विशाल, गहन और व्यापक मामलों को नहीं समझ पाते, इसलिए वे खुद को अविश्वास और गुमराही में झोंक देते हैं और डूब जाते हैं।

यदि वे अपने अविश्वास के सार और अपने पथभ्रष्टता के वास्तविक स्वरूप को देख पाते, तो वे देख पाते कि यह कितना बेतुका और भ्रामक है।

विश्वास की तर्कसंगतता और उदात्तता की तुलना में उनका इनकार असंभव है। रिसाले-ए-नूर ने सैकड़ों तुलनाओं की व्याख्या के माध्यम से इस सत्य को दृढ़तापूर्वक दर्शाया है। उदाहरण के लिए, जो व्यक्ति विश्वास के विशाल सत्यों को स्वीकार करने में असमर्थ है, जैसे कि सर्वशक्तिमान ईश्वर के पूर्णतः आवश्यक अस्तित्व, पूर्व-अनंत काल और सर्वव्यापी गुण, केवल उनकी विशुद्ध भव्यता और उदात्तता के कारण, वह ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व, गुणों और पूर्व-अनंत काल को असंख्य भौतिक प्राणियों या परमाणुओं या प्रकृति या संयोग जैसी कुछ अवधारणाओं के लिए जिम्मेदार ठहराकर अविश्वास का पंथ बना सकता है, या मूर्ख सोफिस्टों की तरह, वे अपने और ब्रह्मांड दोनों के अस्तित्व को नकार कर और नकार कर तर्क को भी त्याग सकते हैं।

इस प्रकार, ईमान और इस्लाम के सभी सत्य, ईश्वरीय महानता और श्रेष्ठता से उत्पन्न और उस पर आधारित, अपने और अपने मूल परिणामों की स्वतंत्रता को, उन भारी मूर्खताओं, डरावने अंधविश्वासों और अविश्वास के अंधकारमय अज्ञान से सुरक्षित रखते हैं, जो उनका सामना करते हैं, तथा उन्हें पूर्ण सहमति और समर्पण के माध्यम से स्वस्थ हृदय और मन में स्थापित करते हैं।

इस्लाम के अधिकांश सार्वजनिक प्रतीकों या अनुष्ठानों जैसे कि प्रार्थना के लिए आह्वान और प्रार्थनाओं में ईश्वर की महानता और उत्कृष्टता को लगातार इस तरह से घोषित किया जाता है कि ईश्वर महान है, ईश्वर महान है। साथ ही, हदीस कुदसी (पवित्र परंपरा) में यह घोषित किया गया है कि "उत्कृष्टता मेरा वस्त्र है और महानता मेरा लबादा है।" इसके अलावा, अपने आह्वानों में, उदाहरण के लिए, अल-जौशानुल-कबीर के अस्सी-छठे भाग में, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ईश्वर की महानता और उत्कृष्टता को इस तरह से उच्चारित करते हैं कि यह ईश्वर के बारे में उनके ज्ञान की गहराई को प्रकट करता है:

ऐ तेरे सिवा कोई और प्रभुता नहीं!
हे आप जिनकी प्रशंसा और गुणगान उनके सेवक पूरा करने में असमर्थ हैं;
हे आप जिनकी महिमा का वर्णन करने में उनके प्राणी असमर्थ हैं;
हे आप जिनका सार मन की पहुंच से परे है;
हे आप जिनकी पूर्णता को दर्शन समझने में असमर्थ हैं;
हे आप जिनके गुणों को बुद्धि समझ पाने में असमर्थ है;
हे आप जिनकी महानता को मन समझने में असमर्थ हैं;
हे आपके गुणों की प्रशंसा मनुष्य वर्णन करने में असमर्थ हैं;
ऐ तेरे आदेश को उसके बन्दे टाल नहीं सकते;
ऐ तेरे सबूत और निशानियाँ हर चीज़ में साफ़ हैं
- तू महिमावान है, तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं है।
हम तेरी शरण में आते हैं, हम तेरी शरण में आते हैं, हमें आग से बचा!

ये सभी दर्शाते हैं कि महानता और उत्कृष्टता (सर्वशक्तिमान ईश्वर और उसके कार्यों के समक्ष) एक आवश्यक आवरण का निर्माण करती है।

सर्वोच्च चिन्ह

इसमें एक यात्री के अवलोकन (उन्नीस चरणों में) शामिल हैं जो ब्रह्मांड से उसके निर्माता के बारे में प्रश्न करता है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सातों आकाश और धरती और जो कोई उनमें है, सब उसी की तसबीह करते हैं। कोई चीज़ उसकी तसबीह के बिना नहीं है, (और वह कहती है कि वही अकेला अल्लाह है, न कोई साझी है और न कोई साझी है और सारी प्रशंसा उसी के लिए है), किन्तु तुम उनकी तसबीह को समझ नहीं सकते। निस्संदेह वह अत्यन्त तरस खानेवाला, अत्यन्त क्षमाशील है। (17:44)

उपरोक्त उत्कृष्ट आयत की व्याख्या करने के साथ-साथ, यह दूसरा स्टेशन, पहले स्टेशन का संक्षिप्त अर्थ, जो अरबी में है और छोड़ दिया गया है, तथा उसमें निहित प्रमाणों और तर्कों पर भी प्रकाश डालता है।

पहला कदम

ब्रह्मांड के रचयिता को ज्ञात कराने के लिए, कुरान की कई आयतों में, जैसे कि यहाँ दी गई आयत में, सबसे पहले आकाश का उल्लेख किया गया है, जो ईश्वर की एकता को प्रकट करने वाला एक शानदार पृष्ठ है और जिसे सभी लोग हर समय आश्चर्य और खुशी के साथ देखते हैं। चूँकि यह मामला है, इसलिए हमें भी उसी तरह से शुरुआत करनी चाहिए।

वास्तव में, अतिथिगृह या इस दुनिया के निवास में आने वाला प्रत्येक अतिथि अपनी आँखें खोलता है और देखता है कि यह उत्तम अतिथिगृह सबसे उदार भोजों का स्थान है, एक अत्यंत कलात्मक रूप से निर्मित प्रदर्शनी है, एक सबसे शानदार सैन्य शिविर और प्रशिक्षण स्थल है, मनोरंजन और अवलोकन का सबसे अद्भुत, प्रेरणादायक और उत्साहवर्धक स्थान है, और शिक्षा का सबसे सार्थक और बुद्धिमान स्थान है। ऐसा व्यक्ति खुद से पूछता है कि इस उत्तम अतिथिगृह का मालिक कौन है, इस सर्वोच्च पुस्तक का लेखक, इस शानदार क्षेत्र का शासक कौन है। पहली चीज़ जो उन्हें नज़र आती है वह है आकाश का सुंदर चेहरा, जो प्रकाश के सुनहरे अक्षरों से अंकित है। यह इस व्यक्ति को पुकारता है, कहता है, "मेरी ओर देखो, और मैं तुम्हें उस तक पहुँचाऊँगा जहाँ तुम खोज रहे हो।"

फिर वे एक सर्वोच्च प्रभुत्व - प्रभुत्व और प्रशासन - की अभिव्यक्ति देखते हैं, जो बिना किसी सहायक स्तंभ के, ऊपर उठा हुआ है।

लाखों-लाखों आकाशीय पिंड, जिनमें से कुछ पृथ्वी से हज़ार गुना भारी हैं और जो तोप के गोले से कई गुना तेज़ चलते हैं। यह इन पिंडों को बिना टकराए एक साथ सामंजस्य और असाधारण रूप से तेज़ गति से चलने का कारण बनता है। यह असंख्य दीपों को बिना किसी तेल के उपयोग के निरंतर प्रकाश देने का कारण भी बनता है; यह बिना किसी व्यवधान या अव्यवस्था के इन विशाल पिंडों को नियंत्रित और प्रबंधित करता है; यह सूर्य और चंद्रमा जैसे विशाल पिंडों को बिना किसी विद्रोह की अनुमति दिए उनके संबंधित कार्यों पर काम करने देता है; यह अनंत अंतरिक्ष में काम करता है - जिसकी माप की गणना या आंकड़ों से व्यक्त नहीं की जा सकती - सभी एक ही समय में, एक ही शक्ति के साथ, एक ही स्थापित तरीके और तरीके से, बिना किसी दोष के। यह उन सभी पिंडों को उनकी विशाल, आक्रामक शक्तियों के साथ बिना किसी आक्रमण की अनुमति दिए बिना बिना किसी शर्त और पूर्ण रूप से अपने कानून का पालन करने के लिए मजबूर करता है; यह आकाश के चेहरे को लगातार साफ और चमकदार बनाए रखता है बिना किसी कचरे को पीछे रहने देता है जो इसे गंदा कर सकता है; यह उन निकायों को एक अनुशासित सेना की तरह चलने के लिए प्रेरित करता है, और पृथ्वी को घुमाकर, यह सृष्टि के दर्शकों को उस शानदार चाल के कई अन्य वास्तविक या काल्पनिक रूप दिखाता है, हर रात और हर साल, एक फिल्म के पर्दे पर दृश्यों की तरह। यह सर्वोच्च प्रभुत्व और प्रशासन अधीनता, प्रबंधन, निर्देशन, आदेश, सफाई और रोजगार को प्रकट करता है। यह एक उदात्त और व्यापक सत्य है, और इस उदात्तता और व्यापकता के साथ यह सत्य स्वर्ग के निर्माता के बिल्कुल आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देता है और इस तथ्य की खुले तौर पर गवाही देता है कि उसका अस्तित्व स्वर्ग के अस्तित्व से अधिक स्पष्ट है। इसलिए, पहले चरण के पहले चरण में, जो अरबी में लिखा गया था और इस किरण में शामिल नहीं था, इसे इस प्रकार घोषित किया गया था:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में स्वर्ग द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जिसमें जो कुछ भी है। यह अधीनता, प्रबंधन, निर्देशन, आदेश, सफाई और रोजगार की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

दूसरा कदम

तब वह वातावरण, जो आश्चर्यों का स्थान है, उस यात्री को जो इस संसार में अतिथि के रूप में आया है, गर्जनापूर्वक घोषणा करने लगता है, "मेरी ओर देखो! तुम मेरे माध्यम से उसे खोज सकते हो और जान सकते हो, जिसे तुम खोज रहे हो-

वह जिसने तुम्हें दुनिया में भेजा है, वही तुम्हारा भला करे!” यात्री वातावरण के स्पष्ट रूप से खट्टे, लेकिन दयालु चेहरे को देखता है, और उसके भयानक, फिर भी खुशखबरी से भरे गरजते संदेशों को सुनता है। यात्री निम्नलिखित को देखता है:

आकाश और धरती के बीच लटके बादल, दुनिया के बगीचे को बहुत ही बुद्धिमानी और दयालु तरीके से सींचते हैं, धरती के निवासियों को जीवन का जल पहुंचाते हैं, जीवन की प्राकृतिक गर्मी को संशोधित करते हैं, और जहाँ भी ज़रूरत होती है, वहाँ सहायता प्रदान करने के लिए दौड़ पड़ते हैं। इन और अन्य कर्तव्यों को पूरा करने के बाद, एक सुव्यवस्थित सेना की तरह जो दिए गए आदेशों के अनुसार खुद को तुरंत प्रकट या छिपा लेती है, विशाल बादल, वायुमंडल को भरते हुए, अचानक खुद को छिपा लेते हैं, अपने घटक भागों के साथ आराम करने के लिए पीछे हट जाते हैं ताकि कोई निशान न दिखाई दे। फिर, जब उन्हें आदेश मिलता है: "बारिश बरसाने के लिए आगे बढ़ो!" बादल एक घंटे में या कुछ मिनटों में एकत्र हो जाते हैं, वायुमंडल को भरते हैं और अपने कमांडर से आगे के आदेशों के लिए तैयार खड़े होते हैं।

इसके बाद यात्री हवाओं को देखता है और पाता है कि हवा इतने सारे कामों में बुद्धिमानी और उदारता से काम करती है कि ऐसा लगता है जैसे निर्जीव हवा के प्रत्येक अचेतन परमाणु ब्रह्मांड के स्वामी से आने वाले आदेशों को सुनने और समझने में सक्षम हैं। उनमें से किसी की भी उपेक्षा किए बिना, यह अपने स्वामी के आदेशों को पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से, स्वामी की शक्ति के माध्यम से पूरा करता है। यानी, यह पृथ्वी पर सभी प्राणियों को सांस देता है, सभी जीवित प्राणियों को उनकी ज़रूरत के अनुसार गर्मी, प्रकाश और बिजली पहुँचाता है, और ध्वनि संचारित करता है, साथ ही पौधों के परागण में सहायता करता है। यह इन सार्वभौमिक कार्यों में एक अदृश्य हाथ द्वारा अत्यंत सचेत, ज्ञानपूर्ण और जीवन-रक्षक तरीके से काम करता है।

फिर यात्री बारिश को देखता है और पाता है कि दया के छिपे हुए खजाने से भेजी गई इन कोमल, चमकती और मीठी बूंदों में इतने सारे दयालु उपहार और कार्य हैं कि ऐसा लगता है जैसे दया स्वयं बारिश में सन्निहित है और बूंदों के रूप में दिव्य खजाने से बह रही है। यही कारण है कि बारिश को "दया" कहा जाता है।

फिर यात्री बिजली को देखता है और गड़गड़ाहट सुनता है और देखता है कि ये दोनों भी सबसे अद्भुत और आश्चर्यजनक कार्यों में लगे हुए हैं।

इनसे अपनी नज़र हटाकर, यात्री अपने विवेक की ओर मुड़ते हैं और खुद से कहते हैं: "यह निर्जीव, बेजान बादल जो रूई के समान है, निश्चित रूप से हमारे बारे में कुछ नहीं जानता है, और यह हमारी सहायता के लिए नहीं आता है।"

यह अपना ही है क्योंकि इसमें कोई चेतना नहीं है कि यह हम पर दया कर सके। न ही यह बाहरी आदेश के बिना प्रकट हो सकता है और गायब हो सकता है। बल्कि, इसे सबसे शक्तिशाली और दयालु कमांडर के आदेशों के अनुसार कार्य करना चाहिए। यह बिना कोई निशान छोड़े गायब हो जाता है और फिर अचानक अपने कार्य को शुरू करने के लिए फिर से उभरता है। सबसे सक्रिय और पारलौकिक, सबसे शानदार और स्वयं प्रकट होने वाले संप्रभु के आदेश और शक्ति से, समय-समय पर यह वातावरण को भरता और खाली करता है। यह आकाश को एक पट्टिका में बदल देता है जिस पर चीजें लिखी और मिटाई जाती हैं, ज्ञान के साथ अंकित करता है और थोड़ी देर के लिए रुक कर मिटा देता है, इस प्रकार पुनरुत्थान का एक उदाहरण प्रदर्शित करता है। सबसे उदार और उदार, सबसे उदार और चौकस शासक और निर्देशक के आदेश से, यह हवा पर चढ़ता है और पहाड़ों की तरह भारी बारिश के खजाने से लदा होता है, जरूरतमंद स्थानों की मदद के लिए दौड़ता है। ऐसा लगता है जैसे वह उन स्थानों पर दया करके रो रहा हो, बगीचों में पानी छिड़क रहा हो, उन्हें फूलों से मुस्कुराने के लिए मजबूर कर रहा हो, सूरज की गर्मी को ठंडा कर रहा हो और धरती का चेहरा साफ कर रहा हो।”

जिज्ञासु यात्री तब उनका कारण बताता है: "ये सैकड़ों हजार-

बुद्धिमान, दयालु और चतुराईपूर्ण कार्यों की रेत, और उदारता और सहायता के ये कार्य जो इस निर्जीव, अचेतन, अस्थिर, तूफानी, अस्थिर और अस्थिर हवा के माध्यम से होते प्रतीत होते हैं, जो एक सचेत उद्देश्य नहीं रख सकती, सभी संदेह से परे साबित करती है कि हवा, यह मेहनती सेवक, कभी भी अपनी इच्छा से काम नहीं करती है; बल्कि, यह केवल एक सबसे शक्तिशाली और जानकार, सबसे बुद्धिमान और उदार कमांडर की आज्ञा का पालन करती है। ऐसा लगता है जैसे इसका प्रत्येक परमाणु हर कार्य से अवगत था और, एक सैनिक की तरह जो अपने कमांडर के हर आदेश को समझता है और उसका पालन करता है, हवा के माध्यम से बहने वाले हर दिव्य आदेश को सुनने और उसका पालन करने में सक्षम था। यह सभी जानवरों की सांस लेने और जीवित रहने की सेवा करता है, सभी पौधों के परागण और विकास को सुविधाजनक बनाता है, और उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी पदार्थ प्रदान करता है। यह बादलों की गति और दिशा, नौकायन जहाजों को आगे बढ़ाने और विशेष रूप से वायरलेस, टेलीफोन, टेलीग्राफ और रेडियो के माध्यम से बोली या भेजी गई ध्वनियों के प्रसारण का भी काम करता है। इन तथा अन्य सार्वभौमिक कार्यों में योगदान देने के अलावा, तथा दो सरल पदार्थों - नाइट्रोजन और ऑक्सीजन - से बने होने और एक दूसरे के समान होने के बावजूद, वायु के कण बुद्धि के हाथ द्वारा पूर्ण क्रम के साथ सैकड़ों हजारों विभिन्न कार्यों में नियोजित होते हैं।

निश्चय ही आकाशों और पृथ्वी की रचना में, और रात और दिन के परिवर्तन में (उनके घटते और बढ़ते हुए काल में)

> और वह पानी जो अल्लाह ने आसमान से बरसाया और उसके ज़रिए ज़मीन को उसके मरने के बाद ज़िन्दा किया और उसमें हर तरह के जीव-जन्तु फैला दिए और हवाओं को भी उसी ने नियंत्रित किया और आसमान और ज़मीन के बीच रहनेवाले बादलों को भी उसी ने नियंत्रित किया। बेशक बहुत-सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो समझ-बूझ रखते हैं (2:164)।

जैसा कि उपरोक्त श्लोक में कहा गया है, यात्री यह निष्कर्ष निकालता है कि जो हवाओं को नियंत्रित करता है और उन्हें बनाए रखने, पालने और पोषण करने के असंख्य कार्यों में लगाता है; जो बादलों को वश में करता है ताकि उनका उपयोग दया के असंख्य कार्यों में किया जा सके और जो ऊपर वर्णित तरीके से हवा को उत्पन्न और नियोजित करता है - ऐसा प्राणी कोई और नहीं बल्कि सर्वशक्तिमान और सर्व-दयालु भगवान ही हो सकता है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, जो सर्वज्ञ है और सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति रखता है।

फिर यात्री बारिश को देखता है और पाता है कि इसमें जितनी बूँदें हैं, उतनी ही इसमें दयालुतापूर्ण उपयोग, लाभ और ज्ञान के उदाहरण हैं। इसके अलावा, ये प्यारी, नाजुक और धन्य बूँदें, साथ ही ओलों और बर्फ के टुकड़ों की बूँदें, इतनी खूबसूरती से और इतने क्रम से बनाई जाती हैं और इतने संतुलन और नियमितता के साथ बिखरी जाती हैं कि वे तूफानी हवाएँ भी जो बड़ी वस्तुओं को टकराने का कारण बनती हैं, इस क्रम को नष्ट नहीं कर सकतीं: बूँदें एक दूसरे से टकराती नहीं हैं या इस तरह से मिलती नहीं हैं कि पानी के हानिकारक द्रव्यमान बन जाएँ। यह साधारण पदार्थ, पानी, जो दो साधारण, निर्जीव और अचेतन तत्वों - हाइड्रोजन और ऑक्सीजन से बना है - सैकड़ों हज़ारों बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण कार्यों और कलाओं में, विशेष रूप से सजीव प्राणियों में काम आता है। इसका मतलब यह है कि बारिश, जो दया का साक्षात् अवतार है, केवल उस सर्वशक्तिमान की दया के अदृश्य खजाने में ही निर्मित हो सकती है। और अपने अवतरण के माध्यम से यह आयत भौतिक शब्दों में व्याख्या करती है: वही है जो हर तरह से उपयोगी वर्षा बरसाता है, ताकि (उन्हें) बचाने के लिए जब वे सारी आशा खो चुके होते हैं, और अपनी दया को दूर-दूर तक (हर प्राणी पर) फैलाता है।

वही रक्षक, प्रशंसनीय है (42:28)

यात्री फिर ध्यान से गड़गड़ाहट सुनता है और फिर से बिजली की चमक को देखता है। वह समझता है कि भौतिक शब्दों में इन आयतों की व्याख्या करने के अलावा: गड़गड़ाहट उसकी प्रशंसा के साथ उसकी महिमा करती है (13:13), और बिजली की चमक लगभग दृष्टि को छीन लेती है (24:43), ये दो विस्मयकारी वातावरणीय घटनाएँ बारिश के आने की भी घोषणा करती हैं, इस प्रकार उन लोगों को खुशखबरी देती हैं जिन्हें इसकी ज़रूरत है। और वातावरण को अचानक बोलने के लिए प्रेरित करने में

अचानक एक असाधारण शोर के साथ, अंधेरे वातावरण को बिजली की अद्भुत रोशनी और आग से भरकर, और उन बादलों को जलाकर जो कपास के पहाड़ों या टोंटियों जैसे दिखते हैं जिनसे ओले, बर्फ या बारिश बरसती है, ये और अन्य अद्भुत और बुद्धिमान घटनाएँ उन लापरवाह लोगों के सिर पर वार करती हैं जो “नीचे देखते हैं और उन्हें नहीं देख पाते।” वे चेतावनी देते हुए कहते हैं: “अपना सिर ऊपर उठाओ और एक सदा-सक्रिय और शक्तिशाली व्यक्ति के अद्भुत कार्यों को देखो जो खुद को प्रकट करना चाहता है। जिस तरह आपको अपने हाल पर नहीं छोड़ा जाता है, उसी तरह ये घटनाएँ भी संयोग से छोड़ी गई यादृच्छिक घटनाएँ नहीं हैं। उनमें से प्रत्येक को कई बुद्धिमान कार्यों में नियोजित किया जाता है; प्रत्येक को एक सर्व-बुद्धिमान निर्देशक द्वारा नियोजित किया जाता है।”

इस प्रकार, जिज्ञासु यात्री एक सत्य की जोरदार और स्पष्ट गवाही सुनता है जो बादलों के वश में होने, हवाओं के निपटान, वर्षा के उतरने और वायुमंडलीय घटनाओं की दिशा से बना है, और कहता है: "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ।" प्रथम स्टेशन के दूसरे चरण में जो कहा गया था वह वायुमंडल के संबंध में यात्री की उपर्युक्त टिप्पणियों को व्यक्त करता है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व वातावरण और उसमें मौजूद हर चीज़ से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, निपटान, और अवतरित होने का कारण, और प्रबंधन या निर्देशन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

तीसरा कदम

और फिर धरती उस चिंतनशील यात्री को, जो अब चिंतन की अपनी यात्रा का आदी हो चुका है, अपनी स्वभावगत भाषा में संबोधित करती है: "तुम अंतरिक्ष में, आकाश में क्यों भटक रहे हो? आओ, मैं तुम्हें वह बताऊँगी जिसे तुम खोज रहे हो। मेरे द्वारा किए जाने वाले कार्यों को देखो और मेरे पन्नों को पढ़ो!"

यात्री देखता है कि एक आनंदित मेवलेवी दरवेश की तरह, पृथ्वी, जिसमें दो गतियाँ हैं जो दिन, ऋतुएँ और वर्ष की घटना के साधन हैं, सर्वोच्च सभा के स्थान के चारों ओर एक घेरा बना रही है। वे देखते हैं कि यह एक शानदार, वशीभूत जहाज है जो अपने भीतर सैकड़ों हज़ारों प्रजातियों के जीवों को उनके लिए आवश्यक सभी भोजन और उपकरणों के साथ रखता है, एक जहाज जो अंतरिक्ष के महासागर में सूर्य के चारों ओर पूर्ण संतुलन और व्यवस्था के साथ यात्रा कर रहा है।

यात्री फिर पृथ्वी के पन्नों या पन्नों को देखता है और पाता है कि प्रत्येक अध्याय का प्रत्येक पृष्ठ अपने हज़ारों “श्लोकों” में पृथ्वी के स्वामी के अस्तित्व की घोषणा करता है। संपूर्ण कार्य को पढ़ने का समय न होने के कारण, वे उस पृष्ठ को देखते हैं जिसमें वसंत ऋतु में जीवित प्राणियों के निर्माण और प्रशासन का वर्णन है, और निम्नलिखित को देखते हैं:

लाखों प्रजातियों के असंख्य सदस्यों के रूपों को एक साधारण सामग्री से सबसे असाधारण क्रमबद्धता और सटीकता के साथ खोला जाता है; फिर उन्हें सबसे दयालु तरीके से पोषित और बड़ा किया जाता है। इसके बाद, इनमें से कुछ सदस्यों के बीजों को सबसे चमत्कारी तरीके से पंख दिए जाते हैं और उड़ने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे उन्हें पृथ्वी पर बिखरने की अनुमति मिलती है। लाखों प्रजातियों के इन सभी असंख्य सदस्यों को अत्यंत दक्षता के साथ निर्देशित किया जाता है और सबसे बड़े स्नेह के साथ खिलाया और पाला जाता है। उनके असंख्य, विविध और स्वादिष्ट पोषण को सूखी मिट्टी, पानी की बूंदों और हड्डियों के समान बीज और जड़ों से सबसे दयालु तरीके से प्रदान किया जाता है और उन्हें पहुँचाया जाता है, जो एक दूसरे से थोड़ा अलग होते हैं। जिस तरह से माल को माल गाड़ी पर लोड किया जाता है, उसी तरह हर झरने पर अदृश्य खजाने से सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग प्रकार के भोजन और उपकरण लोड किए जाते हैं और जीवित प्राणियों तक पूरी तरह से व्यवस्थित तरीके से पहुँचाए जाते हैं। विशेष रूप से, इन खाद्य पैकेजों में डिब्बाबंद दूध भेजना, जो कि शिशुओं के मुंह में उनकी माताओं के स्नेहमय स्तनों से निकलने वाले मीठे दूध के रूप में पहुंचाना है, ऐसे स्नेह, करुणा और बुद्धिमत्ता को प्रदर्शित करता है कि इसे स्पष्ट रूप से एक सर्व-दयालु की दया का उपहार और सबसे स्नेही और चौकस अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है।

संक्षेप में: पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम के सैकड़ों-हज़ारों उदाहरणों को प्रदर्शित करके, वसंत का यह जीवंत पृष्ठ इस आयत की शानदार व्याख्या करता है, फिर, ईश्वर की दया के निशानों को देखो - कैसे वह मृत पृथ्वी को उसकी मृत्यु के बाद पुनर्जीवित करता है: निश्चित रूप से वह वही है जो मृतकों को पुनर्जीवित करेगा (इसी तरह से)। उसके पास हर चीज़ पर पूरी शक्ति है (30:50)। इसी तरह, यह आयत चमत्कारी तरीके से उस पृष्ठ के अर्थों को व्यक्त करती है।

इस प्रकार यात्री समझता है कि पृथ्वी अपने सभी पृष्ठों के साथ यह घोषणा करती है कि "उसके अलावा कोई देवता नहीं है", एक ऐसे अंदाज़ और ताकत के साथ जो उचित है-
इसके आकार के अनुसार।

पृथ्वी के बीस से अधिक बड़े पन्नों में से एक पन्ने के बीस पहलुओं में से एक की संक्षिप्त गवाही के माध्यम से, तीसरे कदम में

प्रथम स्टेशन के बाद, पृथ्वी के अन्य पृष्ठों में यात्री द्वारा किये गए अवलोकन इस प्रकार व्यक्त किये गये:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में पृथ्वी और उसके ऊपर मौजूद हर चीज़ द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, प्रबंधन, पालन-पोषण, खोलना, बीजों का वितरण, संरक्षण, प्रशासन, और सभी जीवित प्राणियों के प्रावधान, और सर्वव्यापी और सर्व-समावेशी दयालुता और करुणा की सूक्ष्म व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

चौथा कदम

फिर, जैसे-जैसे वह चिंतनशील यात्री पृथ्वी के प्रत्येक पृष्ठ को पढ़ता है, उनका विश्वास, जो सच्ची खुशी की कुंजी है, मजबूत होने लगता है; आध्यात्मिक प्रगति की कुंजी, ईश्वर के बारे में उनका ज्ञान बढ़ता है, और ईश्वर में विश्वास की सच्चाई, जो सभी पूर्णता का स्रोत और आधार है, उनमें एक डिग्री और विकसित होती है, जिससे उन्हें कई आध्यात्मिक सुख मिलते हैं और उनकी जिज्ञासा और उत्सुकता और भी बढ़ जाती है। स्वर्ग, वायुमंडल और पृथ्वी द्वारा उन्हें सिखाए गए परिपूर्ण और ठोस पाठों को सुनने के बाद, यात्री पूछता है: "क्या और भी कुछ है?" जिस बिंदु पर वे समुद्र और उनमें बहने वाली बड़ी नदियों द्वारा किए गए ईश्वर के जोरदार, उल्लासपूर्ण आह्वान को सुनते हैं; वे कुछ देर तक इन शोकपूर्ण और सुखद ध्वनियों को सुनते हैं।

मौखिक रूप से और मूक वाक्पटुता के साथ वे कह रहे हैं: “हमें देखो और हमें भी पढ़ो!” और इसलिए यात्री देखता है, और वह यह देखता है:

हालाँकि समुद्र, जो लगातार जीवन से भरे रहते हैं, और जिनमें ज़मीन पर पानी भरने की एक सहज प्रवृत्ति होती है, और जो धरती के साथ-साथ चलते हैं, जो सूरज के चारों ओर इतनी तेज़ी से चक्कर लगाती है कि एक साल में वह इतनी दूरी तय कर लेती है जितनी दूरी एक व्यक्ति पच्चीस हज़ार साल में चलकर तय कर सकता है, वे न तो फैलते हैं और न ही बहते हैं, कभी भी उस ज़मीन पर अतिक्रमण नहीं करते जिसके किनारे पर उनका पानी बहता है। इसका मतलब यह है कि वे एक सबसे शक्तिशाली और उदात्त प्राणी की आज्ञा और शक्ति द्वारा चलते और स्थिर रहते हैं।

समुद्र की गहराई में झाँकते हुए यात्री देखता है कि अत्यंत सुंदर, सुशोभित और सुडौल रत्नों के अलावा, हजारों प्रकार के जानवरों का पालन-पोषण, पालन-पोषण, जीवन देना और उन्हें पूरी तरह संतुलित और व्यवस्थित तरीके से मरवाना होता है। वे यह भी देखते हैं कि इन जीवों का पालन-पोषण रेत और पानी से ही होता है, बल्कि यह सब कुछ रेत और पानी से होता है।

इतने उत्तम ढंग से कि बिना किसी संदेह के वे एक सर्वशक्तिमान, महामहिम, एक दयालु और कृपालु के अस्तित्व को स्थापित करते हैं।

फिर यात्री नदियों को देखता है और पाता है कि वे जो लाभ प्रदान करती हैं, जो कार्य करती हैं, और जो जल उनमें से बहता है और निकलता है, वे ऐसी बुद्धिमत्ता और दया प्रदर्शित करते हैं कि वे स्पष्ट रूप से साबित करते हैं कि सभी नदियाँ, झरने और धाराएँ एक दयालु, महान और उदार ईश्वर की दया के खजाने से निकलती हैं। उन्हें इस तरह से खिलाया, संरक्षित और वितरित किया जाता है कि पैगंबर से यह बताया गया है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो: "चार नदियाँ स्वर्ग से निकलती हैं।"37 अर्थात्, चूँकि उनके बहने की वास्तविकता स्पष्ट कारणों से परे है, वे एक अमूर्त स्वर्गीय स्रोत के खजाने से, एक अदृश्य और अक्षय स्रोत की अतिशयता से निकलती हैं।

उदाहरण के लिए, धन्य नील नदी (दुनिया की सबसे लंबी नदी), जो मिस्र की रेतीली भूमि को स्वर्ग में बदल देती है, मध्य अफ्रीका में चंद्रमा के पहाड़ों (या कुछ ऊंचे इलाकों या पहाड़ियों या झीलों) से निकलती है और बिना थके बहती है, जैसे कि यह एक छोटा सा समुद्र हो। यदि छह महीने में यह जो पानी लाती है उसे एक हिमखंड के रूप में इकट्ठा किया जाए, तो यह उन पहाड़ों (या ऊंचे इलाकों या झीलों) से बड़ा होगा जो इसके स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। फिर भी उन पहाड़ों में नदी का स्रोत उनके द्रव्यमान के छठे हिस्से के बराबर भी नहीं है। जहाँ तक नदी को खिलाने वाले पानी और उसके जलाशय में आने वाली बारिश की बात है, वे ऐसे गर्म क्षेत्र में बहुत कम मात्रा में होते हैं और प्यासी मिट्टी द्वारा जल्दी से निगल लिए जाते हैं; परिणामस्वरूप वे नदी में मिलने वाले पानी और उससे बहने वाले पानी की मात्रा के बीच संतुलन बनाए रखने में असमर्थ होते हैं। इस प्रकार पैगंबरी परंपरा जो कहती है कि धन्य नील नदी एक असाधारण तरीके से एक अदृश्य स्वर्गीय स्रोत से निकलती है, अत्यंत सार्थक है और एक सुंदर वास्तविकता को व्यक्त करती है।

इस प्रकार, यात्री को समुद्र और नदियों में निहित समुद्र-समान सत्य और साक्ष्यों का हजारवाँ भाग दिखाई देता है। ये सभी सत्य एकमत होकर और समुद्र के आकार के अनुपात में शक्ति के साथ कहते हैं, "उसके अलावा कोई देवता नहीं है ," जबकि समुद्र इस साक्ष्य के लिए उतने ही गवाह पेश करते हैं जितने कि उनमें रहने वाले सभी जीव। यात्री को इतना ही पता चलता है।

समुद्रों और नदियों की गवाही को व्यक्त करते हुए, यह प्रथम स्टेशन के चौथे चरण में था:

---

37 अल-बुखारी, "बदुल-ख़ल्क" 6; मुस्लिम, "ईमान" 264.

ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी समुद्रों और नदियों तथा उनमें मौजूद हर चीज़ से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है। यह अधीनता, संरक्षण, भंडारण और प्रबंधन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

पांचवां कदम

फिर पहाड़ और मैदान उस यात्री को अपने चिंतन की यात्रा पर बुलाते हैं, और कहते हैं: “हमारे पन्ने भी पढ़ो!” देखते हुए, यात्री देखता है:

पर्वतों द्वारा किये जाने वाले सार्वभौमिक कार्य तथा उनके उद्देश्य इतने महान तथा ज्ञान से परिपूर्ण हैं कि वे मन को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

उदाहरण के लिए, पहाड़ अपने प्रभु के आदेश से पृथ्वी की सतह से फूटकर बाहर आ गए और इस तरह पृथ्वी के भीतर की हलचल से उत्पन्न अशांति, क्रोध और रोष को शांत कर दिया। फिर भी जब पृथ्वी

जब यह अपने भीतर के हानिकारक झटकों और उथल-पुथल से मुक्त हो जाता है और इन पहाड़ों के फटने से सांस लेने की अनुमति देता है, तो यह अपने निवासियों के आराम या सुख में खलल नहीं डालता है क्योंकि यह घूमने का अपना कर्तव्य निभाता है। जिस तरह जहाज़ों को अशांति से बचाने और उनका संतुलन बनाए रखने के लिए उन पर मस्तूल लगाए जाते हैं, उसी तरह चमत्कारिक व्याख्या वाले कुरान के अनुसार, पहाड़ मस्तूलों की तरह हैं जिन्हें जहाज़ यानी धरती के डेक पर लगाया गया है:

और पहाड़ भी मस्तूल जैसे हैं (78:7)

और धरती को भी हमने फैलाया और उसमें दृढ़ पर्वत स्थापित कर दिए। (15:19; 50:7)

और उसने पहाड़ भी स्थिर किये हैं। (79:32)

इसके अलावा, पहाड़ों में अनगिनत चीजें तैयार और संग्रहीत हैं जो जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक हैं, जैसे झरने, पानी, खनिज और औषधीय पदार्थ; ये वहां इतनी बुद्धिमानी, कुशलता, उदारता और सावधानी से संग्रहीत और संरक्षित हैं कि वे केवल अनंत शक्ति और ज्ञान वाले किसी व्यक्ति के भंडार और सेवक हो सकते हैं। इतना ही यात्री निष्कर्ष निकालता है, और इन दोनों के साथ पहाड़ों और मैदानों में निहित अन्य कर्तव्यों और ज्ञान के उदाहरणों की तुलना करके, वे उनके द्वारा दी गई गवाही और उनके द्वारा घोषित दिव्य एकता को देख सकते हैं, "उसके अलावा कोई देवता नहीं है," उनमें छिपी हुई बुद्धि के सामान्य उदाहरणों के माध्यम से और,

खास तौर पर, ईश्वर द्वारा उनमें संग्रहित चीजों के संबंध में। और यह देखते हुए कि उनका कथन पहाड़ों की तरह ही शक्तिशाली और दृढ़ है और मैदानों की तरह ही विशाल और विस्तृत है, यात्री भी घोषणा करता है: "मैं ईश्वर में विश्वास करता हूँ।"

इस अर्थ की अभिव्यक्ति के रूप में, यह पांचवें चरण में कहा गया था
पहला स्टेशन:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व सभी पहाड़ों और मैदानों से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, और उनमें या उनके ऊपर जो कुछ भी है। यह भंडारण और प्रबंधन की अत्यंत व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता से प्रमाणित होता है, बीजों के प्रसार द्वारा, संरक्षण और एहतियाती उपाय जो कि ईश्वरीय प्रभुत्व के लिए विशेष हैं, ये सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं।

छठा कदम

फिर जब वह यात्री अपने मन में पहाड़ों और मैदानों के बीच यात्रा कर रहा होता है, तो पेड़-पौधों की दुनिया का प्रवेश द्वार उसके लिए खुल जाता है।
उन्हें इन शब्दों के साथ प्रवेश करने के लिए आमंत्रित किया जाता है: "आओ, हमारी दुनिया में यात्रा करो और हमारे शिलालेखों को पढ़ो।" वहाँ प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि उन्होंने एक शानदार और अच्छी तरह से सुसज्जित सभा बनाई है जो ईश्वर की एकता की घोषणा करती है और एक मंडली है जो उनके नामों से उनका उल्लेख करती है और उन्हें धन्यवाद देती है।

यात्री सभी पेड़ों और पौधों की उपस्थिति से समझ सकता है कि, अपनी सभी प्रजातियों के साथ वे एकमत से घोषणा करते हैं: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।" क्योंकि वे तीन महान, सार्वभौमिक वास्तविकताओं को देखते हैं जो इस तथ्य को इंगित और प्रमाणित करती हैं कि उनके सुडौल और वाक्पटु पत्तों की भाषा में, उनके समृद्ध रूप से सजे और धाराप्रवाह फूलों के वाक्यांशों के साथ, और उनके सुव्यवस्थित और स्पष्ट फलों के शब्दों के साथ, सभी फल देने वाले पेड़ और पौधे ईश्वर की महिमा करते हैं और उनकी एकता की गवाही देते हैं, यह कहते हुए कि "उनके अलावा कोई देवता नहीं है ।"

पहली सच्चाई: हर पेड़-पौधा यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि उन्हें किसी खास उद्देश्य से लगाया गया है और उन्हें जानबूझकर रखा गया है। यह तथ्य सूरज की रोशनी की चमक के साथ पेड़ों और पौधों की समग्रता में भी देखा जा सकता है।

दूसरी वास्तविकता: असंख्य विविधताओं और प्रजातियों में एक बुद्धिमानीपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण भेद और भिन्नता, और एक स्वैच्छिक और दयालु फैशन, सुसज्जित और अलंकृत, जिनमें से कोई भी किसी भी तरह से नहीं है

संयोगवश उत्पन्न हुई इन कृतियों को दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है: वे इस तथ्य को स्पष्ट रूप से प्रकट करते हैं कि वे एक सर्वज्ञ निर्माता की कृतियाँ और कढ़ाई हैं।

तीसरी वास्तविकता: इन सैकड़ों हजारों में से प्रत्येक सदस्य-

पौधों और पेड़ों की प्रजातियों की रेत को सबसे उत्तम क्रम, संतुलन, अनुपात और सुंदरता के साथ, जीवन शक्ति और बुद्धिमान उद्देश्यपूर्णता के साथ, और बिना किसी त्रुटि के, सरल और ठोस बीजों और अनाजों से एक अलग, विशिष्ट रूप दिया जाता है जो एक दूसरे के समान या लगभग समान होते हैं। यह सूर्य से भी अधिक चमकदार वास्तविकता है और इस सत्य को साबित करने वाले उतने ही गवाह हैं जितने वसंत में दिखाई देने वाले फूल, फल और पत्ते हैं। यात्री इसे समझता है और कहता है: "विश्वास के आशीर्वाद के लिए सभी प्रशंसा भगवान की है।"

इन वास्तविकताओं और उनके लिए दी गई गवाही की अभिव्यक्ति के रूप में यह
प्रथम स्टेशन के छठे चरण में कहा गया था:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी प्रकार के पेड़ों और पौधों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जो ईश्वर की महिमा करते हैं और अपने सुसंतुलित, वाक्पटु पत्तों, अपने धाराप्रवाह, समृद्ध रूप से सजे फूलों और अपने सुव्यवस्थित, स्पष्ट फलों के शब्दों से बोलते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण और दयालु प्रावधान, दान और अनुग्रह, और स्वेच्छापूर्वक और बुद्धिमानी से भेद करने, सजाने और गढ़ने की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं। यह इस तथ्य से भी स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि इनमें से प्रत्येक पेड़ और पौधे को समान या लगभग समान बीजों और अनाजों से एक सुसंतुलित, सजाया हुआ, विशिष्ट, अलग रूप दिया जाता है, जो सभी सीमित और सीमित हैं।

सातवां कदम

फिर, जैसे वह जिज्ञासु यात्री, जिसकी चिंतन यात्रा हर कदम के साथ अधिक सुखद होती जाती है, वसंत के बगीचे से ईश्वर के ज्ञान और विश्वास का गुलदस्ता लेकर लौटता है, जो स्वयं एक वसंत की तरह है, पृथ्वी के पशु-पक्षियों के क्षेत्र का द्वार उनके सत्य-बोधक मन और बुद्धि के सामने खुल जाता है, जिसने इस समय तक एक निश्चित सीमा तक ईश्वर का ज्ञान प्राप्त कर लिया है। सैकड़ों-हजारों विभिन्न आवाजों और विभिन्न भाषाओं के साथ, वे यात्री को अंदर बुलाते हैं। प्रवेश करते हुए, वे देखते हैं कि पृथ्वी के पशु-पक्षियों की सभी प्रजातियाँ, समूह और राष्ट्र मौखिक रूप से और मूक वाणी की भाषा में , "उसके अलावा कोई देवता नहीं है " का उच्चारण कर रहे हैं।

उनके स्वभाव की परिणति, पृथ्वी को ईश्वर की एकता की घोषणा और उनके नामों से उनका उल्लेख करने के लिए एक विशाल सभा में बदलना। यात्री देखता है कि वे अपने निर्माता का वर्णन कर रहे हैं और उसकी प्रशंसा कर रहे हैं जैसे कि प्रत्येक भगवान के रूप में उसे समर्पित एक स्तुति है, एक शब्द जो उसे महिमा देता है या एक पत्र जो उसकी दया को इंगित करता है। यह ऐसा है जैसे कि इन जानवरों और पक्षियों की इंद्रियाँ, शक्तियाँ, अंग और यंत्र सुंदर, लयबद्ध, सुसंगठित शब्द या परिपूर्ण और व्यवस्थित अभिव्यक्तियाँ हैं। यात्री तीन महान और व्यापक वास्तविकताओं को देखता है जो निर्णायक रूप से संकेत देते हैं कि वे अपने निर्माता और प्रदाता को धन्यवाद देते हैं और उनकी एकता की गवाही देते हैं।

प्रथम वास्तविकता: पशु-पक्षियों को बुद्धि के साथ शून्य से अस्तित्व में लाया गया है, उन्हें पूर्ण कला और पूर्ण ज्ञान के साथ बनाया और गढ़ा गया है और इस तरह से जीवन दिया गया है कि बीस पहलुओं में ज्ञान, बुद्धि और इच्छा की अभिव्यक्ति प्रदर्शित होती है - यह सब, जो इस तरह से घटित होता है कि इसे संयोग के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, आवश्यक अस्तित्व, सात आवश्यक गुणों और सभी जीवित, स्वयं-निर्भर एक की एकता की गवाही देता है - एक गवाही जो जीवित प्राणियों की संख्या के अनुसार कई प्रमाणों पर आधारित है।

दूसरी वास्तविकता: चेहरे की विशेषताओं में जो भेद विद्यमान है,
इन अनंत प्राणियों के बीच, उनके अलंकृत रूपों में, तथा उनकी पूर्णतया गणना की गई संख्या और सुव्यवस्थित संरचना में, एक ऐसा सत्य प्रकट होता है जो इतना भव्य और शक्तिशाली है कि जिसके पास पूर्ण शक्ति और ज्ञान है, उसके अलावा किसी अन्य के लिए ऐसा व्यापक कार्य कर पाना पूर्णतया असंभव और अकल्पनीय है, ऐसा कार्य जो हर दृष्टि से हजारों आश्चर्यों और बुद्धिमत्ता के उदाहरणों को प्रदर्शित करता है।

तीसरी वास्तविकता: इन असंख्य जानवरों और पक्षियों की लाखों प्रजातियों में से प्रत्येक को सबसे व्यवस्थित और आनुपातिक तरीके से और बिना किसी त्रुटि के, एक विशिष्ट चेहरा और रूप दिया गया है -

ज्ञान का एक चमत्कार - जो अंडे और शुक्राणु नामक तरल पदार्थ की बूंदों से निकलता है, जो एक दूसरे के समान या बहुत मिलते-जुलते हैं। यह इतनी शानदार वास्तविकता है कि यह उतने ही अलग-अलग प्रमाणों से प्रकाशित होती है जितने कि अस्तित्व में जानवर और पक्षी हैं।

इन तीनों वास्तविकताओं की सहमति से, सभी प्रकार के जानवर एक साथ गवाही देते हैं कि "कोई देवता नहीं है सिवाय उसके।" ऐसा लगता है मानो पूरी धरती, एक विशाल मानव की तरह, अपनी विशालता के अनुरूप कह रही हो "कोई देवता नहीं है सिवाय उसके" , और स्वर्ग के निवासियों को अपनी गवाही दे रही हो। यात्री इसे देखता है और इसे समझता है-

इन वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति के रूप में, पहले स्टेशन के सातवें चरण में कहा गया था:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से अस्तित्व में है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में पृथ्वी के सभी पशु-पक्षियों की प्रजातियों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है, जो अपनी इंद्रियों, शक्तियों और क्षमताओं के संतुलित, सुसंगठित और धाराप्रवाह शब्दों के साथ, और अपने अंगों, अंगों और अवयवों के परिपूर्ण और वाक्पटु शब्दों के साथ ईश्वर की स्तुति करते हैं और उसकी गवाही देते हैं। यह उद्देश्यपूर्ण आविष्कार, निर्माण और उत्पत्ति की सूक्ष्म व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता, उद्देश्यपूर्ण भेद और श्रृंगार की वास्तविकता और बुद्धिमानी से निर्धारण, पहचान और फैशन की वास्तविकता द्वारा प्रमाणित होता है, जो सभी स्पष्ट रूप से देखने योग्य हैं। यह इस तथ्य से भी निर्णायक रूप से संकेतित होता है कि इनमें से प्रत्येक पशु और पक्षी को एक सुव्यवस्थित, भिन्न और विशिष्ट रूप दिया जाता है जो समान या समान दिखने वाले अंडों और तरल पदार्थ की बूंदों से निकलता है, जो सभी सीमित और सीमित हैं।

आठवां कदम

इसके बाद, चिंतनशील यात्री अनंत श्रेणियों और आनंद की असीमित डिग्री और ईश्वर के ज्ञान की रोशनी में आगे बढ़ने के लिए मानवता की दुनिया में प्रवेश करना चाहता है। और इस प्रकार, पैगंबरों के नेतृत्व में मानव जाति, यात्री को अंदर आमंत्रित करती है। वहां प्रवेश करते हुए, और पहले उस विशाल भवन में देखते हुए जो अतीत है, यात्री देखता है कि सभी पैगंबर, उन पर शांति हो, जो सभी लोगों में सबसे अधिक प्रकाशमान और पूर्ण हैं, एक स्वर में घोषणा करते हैं: "उसके अलावा कोई देवता नहीं है ।" अपने असंख्य शानदार और पुष्ट चमत्कारों की शक्ति से, वे ईश्वर की एकता की पुष्टि और घोषणा कर रहे हैं, और मानवता को जानवरों के पद से उठाकर स्वर्गदूतों के पद पर लाने के लिए, वे लोगों को ईश्वर में विश्वास करने की शिक्षा दे रहे हैं और उन्हें इसके लिए बुला रहे हैं। प्रकाश की उस पाठशाला में घुटने टेकते हुए, यात्री भी सबक पर ध्यान देता है और निम्नलिखित को देखता है:

इन सभी शिक्षकों, जो सभी प्रसिद्ध मनुष्यों में सबसे श्रेष्ठ और प्रसिद्ध हैं, के हाथों में असंख्य चमत्कार हैं जो उन्हें ब्रह्मांड के निर्माता द्वारा उनके मिशन की पुष्टि करने वाले संकेत के रूप में दिए गए हैं। इसके अलावा, लोगों के एक बड़े समूह, एक पूरे समुदाय ने उनके दावों की पुष्टि की है और उनके निर्देश के माध्यम से विश्वास तक पहुँच गया है। यात्री देखता है कि यह कितना शक्तिशाली, निर्णायक और निश्चित सत्य है जिस पर सर्वसम्मति से सहमति व्यक्त की गई और इन एक लाख से अधिक गंभीर और सत्यनिष्ठ व्यक्तियों द्वारा पुष्टि की गई। यात्री यह भी समझता है

कि इतने सारे सच्चे उपदेशकों द्वारा प्रमाणित और पुष्टि किए गए सत्य को नकार कर, गुमराह लोग सबसे गंभीर गलती कर रहे हैं - बल्कि एक अपराध कर रहे हैं - और इस प्रकार वे सबसे दर्दनाक अनन्त दंड के पात्र हैं। यात्री, इसके विपरीत, यह देखता है कि जो लोग पैगम्बरों के संदेश की पुष्टि करते हैं और ईमान लाते हैं, वे वास्तव में कितने धर्मी हैं, और इस प्रकार यात्री के लिए ईमान की पवित्रता की एक और डिग्री स्पष्ट हो जाती है।

पैगम्बरों द्वारा किये गए अनगिनत चमत्कारों के अलावा, उन पर शांति हो, जो उनके और उनके मिशन के बारे में ईश्वर की वास्तविक पुष्टि के संकेत हैं; उनके विरोधियों को दिए गए स्वर्गीय प्रहारों के अलावा, जो पैगम्बरों की सच्चाई को प्रदर्शित करते हैं; उनकी व्यक्तिगत पूर्णता और सत्य शिक्षाओं के अलावा, जो उनकी सच्चाई और धार्मिकता को इंगित करते हैं; उनके विश्वास की ताकत, उनकी सर्वोच्च गंभीरता और आत्म-बलिदान के अलावा, जो उनकी ईमानदारी को प्रदर्शित करते हैं; उनके हाथों में जो पवित्र पुस्तकें और स्क्रॉल हैं, और उनके अनगिनत शिष्यों के अलावा, जिन्होंने उनका अनुसरण करके सत्य, पूर्णता और प्रकाश प्राप्त किया है, इस प्रकार उनके मार्गों की सच्चाई को साबित किया है - इन सभी वास्तविकताओं के अलावा, पैगंबरों की सर्वसम्मत सहमति, जो ईश्वर के संदेशों के सबसे गंभीर संवाहक हैं, और उनके अनुयायियों की सभी सच्चे, सकारात्मक मामलों पर, और उनकी सहमति, आपसी समर्थन, और उन्हें स्थापित करने और साबित करने में आत्मीयता, ये सब एक ऐसा शक्तिशाली प्रमाण है जिसका दुनिया की कोई भी ताकत सामना करने में सक्षम नहीं है, और कोई संदेह या संकोच नहीं किया जा सकता है। यात्री को यह समझ में आता है कि सभी पैगंबरों पर विश्वास, उन पर शांति हो, विश्वास के स्तंभों में से एक के रूप में, शक्ति का एक और स्रोत है, और वे उनके द्वारा सिखाए गए पाठों से विश्वास का बड़ा लाभ उठाते हैं।

इस यात्री द्वारा सीखे गए सबक की अभिव्यक्ति, आठवीं सीढ़ी में
प्रथम स्टेशन के बारे में कहा गया था:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, जिसका अस्तित्व उसकी एकता में सभी पैगम्बरों की सर्वसम्मति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, तथा उनके चमत्कारों की शक्ति भी स्पष्ट रूप से प्रमाणित होती है, जो (उनके मिशनों और संदेशों) की पुष्टि करते हैं और (असंख्य लोगों और सर्वसम्मति से स्वीकार की गई रिपोर्टों द्वारा) उनकी पुष्टि करते हैं।

नौवां कदम

जबकि जिज्ञासु यात्री, जिसने विश्वास की शक्ति से सत्य का उन्नत स्वाद प्राप्त किया है, पैगम्बरों की सभा से आ रहा है, उन पर शांति हो, उन्हें गहन, सत्य की पाठशाला में कदम रखने के लिए आमंत्रित किया जाता है-

यहाँ के विद्वान और शुद्ध विद्वान पैगम्बरों के दावों की पुष्टि करते हैं, उन पर शांति हो, सबसे निर्णायक और शक्तिशाली प्रमाणों के साथ जो ज्ञान के आधार पर निश्चितता की डिग्री तक पहुँचते हैं। यहाँ प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि उनके गहन अध्ययन और जांच के साथ, हजारों प्रतिभाशाली और लाखों सत्यनिष्ठ और उच्च विद्वान पहले और दूसरे स्थान पर हैं।

सबसे पहले ईश्वर के अस्तित्व और उसकी एकता की आवश्यकता को साबित करना, साथ ही अन्य सभी विश्वास के लेख, जो पूर्णतः सत्य हैं। और वे ऐसा इस तरह से कर रहे हैं कि संदेह के लिए कोई जगह ही नहीं बचती। वास्तव में, यह तथ्य कि वे विश्वास के सिद्धांतों और स्तंभों पर सर्वसम्मति से सहमत हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे अपनी क्षमताओं और दृष्टिकोण में भिन्न हैं, उनमें से प्रत्येक अपने स्वयं के दृढ़ और निश्चित प्रमाण पर निर्भर है, अपने आप में इतना मजबूत सबूत है कि इस पर संदेह नहीं किया जा सकता। या, बल्कि, हम देख सकते हैं कि इस पर तभी संदेह किया जा सकता है जब संदेह करने वाले के पास इन सभी विद्वानों की संयुक्त बुद्धि और सूझबूझ से अधिक हो, और केवल तभी जब वे अपने तर्कों का मुकाबला एक ऐसे प्रमाण से कर सकें जो सभी विद्वानों के संयुक्त प्रमाणों से अधिक सम्मोहक हो। अन्यथा, इनकार करने वाले केवल अपनी अज्ञानता - अपनी पूर्ण अज्ञानता - और नकारात्मक मामलों के संबंध में अपनी हठ और पक्षपातपूर्ण असावधानी को प्रदर्शित करने के लिए उनका विरोध कर सकते हैं जो न तो इनकार करने की अनुमति देते हैं और न ही पुष्टि की। पक्षपातपूर्ण असावधानी वाला या जो बंद-

उनकी आँखें केवल अपने लिए ही दिन को रात में बदल देती हैं।

यात्री को एहसास होता है कि इन प्रतिष्ठित और प्रखर विद्वानों ने इस भव्य और विशाल विद्यालय से जो रोशनी फैलाई है, वह एक हजार से भी अधिक वर्षों से आधी दुनिया को रोशन कर रही है। यात्री को इन रोशनी में ऐसी नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति मिलती है कि अगर सभी इनकार करने वाले लोग उनके खिलाफ एकजुट हो जाएं, तो भी वे यात्री को न तो भ्रमित कर पाएंगे और न ही हिला पाएंगे।

इस स्कूल में यात्री ने जो सबक सीखा है, उसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए,
प्रथम स्टेशन के नौवें चरण में कहा गया था:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका एकत्व में अनिवार्य अस्तित्व सभी शुद्ध, संत और सत्यनिष्ठ विद्वानों द्वारा उनके उज्ज्वल, निश्चित और सर्वसम्मत प्रमाणों की शक्ति से स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुका है।

दसवां कदम

एक चिंतनशील यात्री के रूप में, जो विश्वास की मजबूती और विकास तथा प्रगति में रोशनी और आनंद देखने की उत्सुकता से इच्छा रखता है

ज्ञान से उत्पन्न होने वाली निश्चितता से लेकर दृष्टि या अवलोकन से आने वाली निश्चितता तक, धार्मिक विज्ञान के स्कूल को छोड़कर, उन्हें एक और निमंत्रण मिलता है। इस बार, यह उन हज़ारों, बल्कि लाखों आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की ओर से आता है जो सत्य के लिए काम कर रहे हैं और मुहम्मद के राजमार्ग पर और उनके स्वर्गारोहण की छाया में दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता के स्तर को प्राप्त कर चुके हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

वे यात्री को आध्यात्मिक प्रशिक्षण के एक विशाल, प्रकाश-प्रसारक विद्यालय में आमंत्रित करते हैं, जो ईश्वर के स्मरण का स्थान है, जो आध्यात्मिक प्रकाश के असंख्य छोटे-छोटे विद्यालयों के विलय से बना है।

यहाँ प्रवेश करते हुए, यात्री देखता है कि ये आध्यात्मिक मार्गदर्शक, जो असाधारण कर्मों के स्वामी हैं और दिव्य सत्यों और आध्यात्मिक रहस्यों को उजागर करने में निपुण हैं, अपने अनावरणों, दर्शनों और चमत्कारों के आधार पर एक स्वर में घोषणा कर रहे हैं कि "उनके अलावा कोई देवता नहीं है" और पूरे ब्रह्मांड को वे भगवान के आवश्यक अस्तित्व और एकता की घोषणा करते हैं। यात्री यहाँ देखता है कि यह सत्य कितना स्पष्ट और स्व-सिद्ध है, एक ऐसा सत्य जिस पर इन सभी पवित्र प्रतिभाओं और प्रकाशमान विद्वानों ने पूर्ण सहमति प्राप्त की है, भले ही वे कई अलग-अलग आध्यात्मिक मार्गों का अनुसरण करते हों। यात्री देखता है कि जिस तरह से सूर्य अपने प्रकाश में सात रंगों को विकीर्ण करता है और उनके माध्यम से जाना जाता है, उसी तरह ये प्रकाशमान व्यक्ति, ईश्वर के अपने ज्ञान में, अनंत काल के सूर्य द्वारा उत्सर्जित रंगों की एक श्रृंखला को मजबूती से पकड़े हुए हैं, जिनकी संख्या स्वयं ईश्वर के सर्व-सुंदर नामों जितनी बड़ी है।

यात्री देखता है कि पैगम्बरों की एकमतता, शुद्ध और सत्यनिष्ठ विद्वानों की सहमति और संतों की सहमति से बनी सर्वोच्च सहमति, दिन के प्रकाश से भी अधिक चमकदार है, जो सूर्य के अस्तित्व को ज्ञात कराता है।

आध्यात्मिक प्रशिक्षण विद्यालय से यात्री द्वारा प्राप्त प्रकाश की किरणों के संक्षिप्त संदर्भ में, प्रथम स्टेशन के दसवें चरण में कहा गया था:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में संतों की सहमति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जो उनकी स्पष्ट, सत्यापित और पुष्ट आध्यात्मिक खोजों और असाधारण कार्यों या उपलब्धियों के साथ है।

ग्यारहवाँ कदम

यात्री अब यह जान गया है कि सभी मानवीय परिपूर्णताओं में सबसे महान और सबसे महत्वपूर्ण, वास्तव में ऐसी सभी परिपूर्णताओं का मूल और आधार ही,

ईश्वर के प्रति प्रेम ईश्वर में विश्वास और उसके ज्ञान से उत्पन्न होता है। इस बात को ध्यान में रखते हुए, यात्री अपनी पूरी शक्ति और योग्यता के साथ अपने विश्वास को मजबूत करने और अपने ज्ञान के विकास में आगे बढ़ने की इच्छा रखता है। और इस प्रकार यात्री अपना सिर उठाता है और आकाश की ओर देखते हुए अपने तर्कशील मन को इस प्रकार संबोधित करता है:

"क्योंकि ब्रह्मांड में सबसे मूल्यवान चीज़ जीवन है और ब्रह्मांड में सभी चीज़ें जीवन के अधीन हैं, और क्योंकि सभी जीवित प्राणियों में सबसे मूल्यवान वे हैं जो आत्मा से संपन्न हैं, और क्योंकि आत्मा से संपन्न प्राणियों में सबसे मूल्यवान वे हैं जो सचेत हैं, और क्योंकि प्रत्येक शताब्दी और प्रत्येक वर्ष पृथ्वी को बिना रुके जीवित प्राणियों की संख्या को उनके मूल्य के कारण बढ़ाने के लिए खाली और फिर से भरा जाता है - इन सब के कारण, निस्संदेह यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि इन शानदार और अलंकृत स्वर्गों में भी जीवित, सचेत निवासी होने चाहिए जो उनके लिए विशिष्ट हैं। स्वर्गदूतों को देखने और उनसे बात करने से संबंधित अनुभव - जैसे कि महादूत गैब्री-एल का प्रकट होना, पैगंबर मुहम्मद की उपस्थिति में एक इंसान के रूप में, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, साथियों के पूर्ण दृश्य में - सबसे प्राचीन समय से विश्वसनीय संचरण चैनलों के माध्यम से प्रेषित और संबंधित हैं। यह देखते हुए कि यह सच है, काश मैं स्वर्ग के निवासियों से बात कर पाता और इस मामले पर उनके विचार जान पाता। क्योंकि ब्रह्मांड के निर्माता के बारे में उनके शब्द अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।”

जब यात्री ऐसा सोच रहा था, तो उसने अचानक एक दिव्य आवाज सुनी: "यदि आप हमसे मिलना चाहते हैं और हमारे शब्द सुनना चाहते हैं, तो जान लें कि हमने सबसे पहले उन विश्वासों की सच्चाइयों पर विश्वास किया है जो हमने पैगम्बरों को बताई थीं, और सबसे पहले पैगंबर मुहम्मद को, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिन्होंने चमत्कारी व्याख्या के साथ कुरान लाया था।

"इसके अलावा, हमारे बीच से जो भी पवित्र आत्माएँ मनुष्यों के सामने प्रकट हुई हैं, उन्होंने सर्वसम्मति से और बिना किसी अपवाद के, ब्रह्मांड के निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और पवित्र गुणों की गवाही दी है, और एकमत से इसकी घोषणा की है। इन असंख्य घोषणाओं की एकरूपता और पारस्परिक पत्राचार आपके लिए एक मार्गदर्शक है जो सूर्य की तरह उज्ज्वल है।" परिणामस्वरूप, यात्री की आस्था का प्रकाश और अधिक उज्ज्वल हो जाता है और पृथ्वी से स्वर्ग तक चढ़ जाता है।

यात्री ने जो सबक सीखा है उसका संक्षिप्त संदर्भ इस प्रकार है-

स्वर्गदूतों, यह पहले स्टेशन के ग्यारहवें कदम में कहा गया था:

ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, जिसका अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, उन देवदूतों की सहमति से जो मानव रूप में मनुष्यों के सामने आते हैं और जो मानव जाति के बीच आध्यात्मिक रूप से प्रतिष्ठित लोगों से अपने परस्पर संगत और अनुरूप संदेशों के साथ बात करते हैं।

बारहवीं और तेरहवीं सीढ़ी

फिर अत्यंत जिज्ञासु और उत्साही यात्री, जो पहले से ही दृश्य क्षेत्र से संबंधित विभिन्न प्रजातियों और राष्ट्रों की भाषाओं और स्वभावों से सीख चुका है, सत्य की आगे की खोज में अदृश्य और मध्यवर्ती क्षेत्र के माध्यम से यात्रा करने की इच्छा व्यक्त करता है। और इस तरह उनके सामने एक द्वार खुलता है जो ईमानदार और प्रबुद्ध बुद्धि और स्वस्थ और प्रबुद्ध हृदय की दुनिया की ओर ले जाता है, जो मानव जाति के बीज, ब्रह्मांड के फल की तरह हैं, और जो अपने छोटे आकार के बावजूद लगभग पूरे ब्रह्मांड को गले लगाने के लिए विस्तारित हो सकते हैं। यात्री देखता है और पाता है कि ये बुद्धि और हृदय अदृश्य और अदृश्य के बीच एक कड़ी बनाते हैं

दृश्यमान क्षेत्र, और यह कि इन दो क्षेत्रों के बीच संपर्क और आदान-प्रदान जो मानव जाति से संबंधित हैं, इस बिंदु पर होते हैं। उनके तर्क और हृदय को संबोधित करते हुए, यात्री कहता है: "आओ, तुम्हारे इन समकक्षों के द्वार से सत्य की ओर जाने वाला मार्ग छोटा है। हमें उन गुणों, प्रकृति और रंगों का अध्ययन करने से लाभ उठाना चाहिए जो विश्वास ने उन्हें दिए हैं, एक अलग तरीके से जो हमने पिछले मार्गों से संबंधित भाषाओं के माध्यम से सीखने में इस्तेमाल किया है।"

इस अध्ययन की शुरुआत करते हुए, यात्री देखता है कि ईश्वरीय एकता के बारे में जो विश्वास और दृढ़ विश्वास सभी ईमानदार और प्रबुद्ध बुद्धि वाले लोगों में होता है और वे अपने पूरे जीवन में प्रदर्शित करते हैं, वह उनकी अलग-अलग क्षमताओं और उनके अलग-अलग और कभी-कभी विरोधी तरीकों और दृष्टिकोणों के बावजूद, पूरी तरह से अनुरूप है; यात्री देखता है कि उनकी निरंतर और हमेशा-विश्वासी निश्चितता और आश्वासन एक हैं। इसका मतलब है कि वे एक ही, अपरिवर्तनीय सत्य को मजबूती से पकड़े हुए हैं: उनकी जड़ें इस सत्य में गहराई से घुस गई हैं और उन्हें बाहर नहीं निकाला जा सकता है। नतीजतन, विश्वास और ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व और एकता के बारे में उनकी सहमति एक चमकदार, अटूट श्रृंखला की तरह है, एक चमकदार रोशनी वाली खिड़की जो सत्य की ओर खुलती है।

यात्री यह भी देखता है कि विश्वास के स्तंभों के बारे में इन सभी स्वस्थ और प्रबुद्ध हृदयों की उल्लासमय आध्यात्मिक खोजें और दर्शन, उनके अलग-अलग आध्यात्मिक पथों के बावजूद, एक दूसरे के साथ पत्राचार में हैं, और वे दिव्य एकता पर पूर्ण सहमति में हैं। ये सभी प्रबुद्ध-

संयुक्त हृदय, जिनमें से प्रत्येक सत्य का अवतार है, ईश्वर के ज्ञान का एक छोटा सिंहासन है और एक व्यापक दर्पण है जो शाश्वत रूप से प्रार्थित एक के लिए खुला है, वे खिड़कियों की तरह हैं जो सत्य के सूर्य की ओर खुलती हैं। एक साथ मिलकर, वे एक सर्वोच्च दर्पण हैं, जैसे एक महासागर जो सूर्य को प्रतिबिंबित करता है।

ईश्वर के अनिवार्य अस्तित्व और एकत्व के विषय में उनकी सहमति और एकमतता एक अचूक और सबसे उत्तम मार्गदर्शक, एक सबसे श्रेष्ठ गुरु है।
क्योंकि यह किसी भी तरह से संभव या कल्पनीय नहीं है कि कोई गलत धारणा या गलत विश्वास एक ही समय में इतनी सारी तीक्ष्ण, सत्य-दर्शी आँखों को धोखा दे सके या धोखा दे सके। यहाँ तक कि मूर्ख सोफिस्ट भी, जो ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारते हैं, भ्रष्ट और बिखरी हुई बुद्धि से सहमत नहीं हो सकते, जो ऐसी चीज़ को संभव मानती है। यह सब समझते हुए, हमारे यात्री अपने दिल और बुद्धि से कहते हैं: "मैं ईश्वर में विश्वास करने लगा हूँ।"

बारहवीं और बारहवीं में, यात्री ने ईमानदार बुद्धि और प्रबुद्ध दिलों से जो विश्वास का ज्ञान सीखा है, उसका संक्षिप्त संदर्भ दिया गया है।
प्रथम स्टेशन के तेरहवें चरण में कहा गया था:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी ईमानदार, प्रबुद्ध बुद्धिजीवियों की एकमत सहमति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, उनके अनुरूप पंथों, उनके विश्वासों और संगत निश्चितताओं के साथ, उनकी क्षमता और दृष्टिकोण में भिन्नताओं के बावजूद। उनकी एकता में उसका अनिवार्य अस्तित्व सभी स्वस्थ, प्रबुद्ध हृदयों की सहमति से भी प्रदर्शित होता है, उनके परस्पर सहायक खोजों और उनके सुसंगत अवलोकनों और दर्शनों के साथ, उनके अलग-अलग मार्गों और तरीकों के बावजूद।

चौदहवाँ और पंद्रहवाँ कदम

फिर वह यात्री, जो अपने मन और हृदय से यात्रा कर रहा है, अदृश्य के दायरे को और करीब से देखना शुरू करता है। उस दुनिया के संदेश को जानने के लिए जिज्ञासा से उसके दरवाजे पर दस्तक देते हुए, वे अपने आप से सोचते हैं: "यह स्पष्ट है कि अदृश्य के पर्दे के पीछे एक है जो बनाना चाहता है

वह स्वयं को दृश्यमान दुनिया में इन सभी असंख्य, सुंदर ढंग से सजी कलाकृतियों के माध्यम से जाना जाता है; वह इन अनगिनत, मधुर और सजी हुई खूबियों के माध्यम से खुद को प्यार करने की इच्छा रखता है, और अपनी छिपी हुई परिपूर्णताओं को इन अनगिनत, चमत्कारी और कुशल कलाकृतियों के माध्यम से जाना जाता है। यह स्पष्ट है कि एक है जो खुद को जानने और प्यार करने की अपनी इच्छा को प्रकट करता है, और अपनी छिपी हुई परिपूर्णताओं को भाषण से अधिक स्पष्ट तरीके से प्रकट करता है। यह देखते हुए, जैसे वह अपनी इच्छा को कार्यों और कर्मों के माध्यम से प्रकट करता है,

यह स्पष्ट है कि उसे वाणी के माध्यम से भी स्वयं को ज्ञात और प्रिय बनाना होगा।
इस प्रकार, हमें अदृश्य जगत के सम्बन्ध में उसकी अभिव्यक्तियों से उसे जानना चाहिए।'' ऐसा विचार करते हुए, यात्री अपने हृदय से उस जगत में प्रवेश करता है और अपनी बुद्धि की आँखों से निम्नलिखित को देखता है:

रहस्योद्घाटन का सत्य अदृश्य जगत में हर समय अभिव्यक्ति के सबसे शक्तिशाली साधन के रूप में व्याप्त है। ईश्वर के अस्तित्व और एकता की गवाही जो ब्रह्मांड और उसकी सामग्री की गवाही से कहीं अधिक शक्तिशाली है, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के सत्य के माध्यम से अदृश्य के सर्वज्ञ एक से आती है। वह अपने आप को, अपने अस्तित्व और एकता की पहचान और पुष्टि को केवल अपने प्राणियों की गवाही तक सीमित नहीं रखता है। बल्कि, वह एक पूर्व-शाश्वत वाणी के साथ बोलता है जो उसके अपने अस्तित्व के अनुकूल है। जो अपने ज्ञान और शक्ति के साथ सर्वव्यापी है, उसकी वाणी भी अनंत है, और जिस तरह उसकी वाणी का अर्थ उसे ज्ञात कराता है, उसी तरह उसका प्रवचन भी उसके गुणों के साथ खुद को ज्ञात कराता है।

प्रकाशितवाक्य की सच्चाई स्थापित हो चुकी है और स्वयं को स्पष्ट कर दिया गया है।
एक लाख से ज़्यादा पैगम्बरों की सहमति से, उन पर शांति हो, और इस तथ्य के माध्यम से कि इन पैगम्बरों के सभी निर्देश और घोषणाएँ ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर आधारित हैं; यह पवित्र पुस्तकों और स्वर्गीय स्क्रॉल में निहित सबूतों और चमत्कारों के माध्यम से भी स्पष्ट किया गया है, जो रहस्योद्घाटन के फल हैं और सभी मनुष्यों के लिए मार्गदर्शक हैं, जिनमें से अधिकांश ने इसमें सत्य की पुष्टि की है। इसे महसूस करते हुए, यात्री आगे समझता है कि रहस्योद्घाटन की सच्चाई निम्नलिखित पाँच पवित्र वास्तविकताओं को सामने रखती है।

पहली वास्तविकता: रहस्योद्घाटन ईश्वरीय दया या कृपा का एक रूप है ।
यह "परमेश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय क्षमता के स्तर तक नीचे लाना है, ताकि वे इसे समझ सकें" के रूप में वर्णित किया गया है। परमेश्वर अपने सभी चेतन प्राणियों को बोलने में सक्षम बनाता है और उनकी वाणी को समझता है, इसलिए समस्त सृष्टि का प्रभु होने के नाते यह उसकी आवश्यकता है कि वह अपनी वाणी के साथ उनमें भाग ले।

दूसरी वास्तविकता: जिसने स्वयं को ज्ञात करने के लिए चमत्कारी, अमूल्य कलाकृतियों से भरा एक ब्रह्मांड बनाया है, जो असंख्य भाषाओं को उसकी परिपूर्णता के बारे में बोलने के लिए प्रेरित करता है, वह स्वयं-प्रमाणित रूप से ऐसा करेगा ।

वह स्वयं को भी अपने शब्दों से जानता है।

तीसरी वास्तविकता: सृष्टिकर्ता होने के नाते यह उसकी विशेषता है कि परमेश्वर अपने कार्यों के द्वारा, अपने प्राणियों में से सबसे अधिक चुने हुए, सबसे जरूरतमंद, सबसे नाजुक और सबसे उत्साही लोगों द्वारा की गई प्रार्थनाओं और धन्यवाद का उत्तर अपनी वाणी से देता है - जो वास्तव में मानव हैं।

चौथी वास्तविकता: वाणी का गुण, जो ज्ञान और जीवन की अनिवार्य आवश्यकता है तथा दोनों की प्रकाशमान अभिव्यक्ति है , अनिवार्यतः उस सत्ता में व्यापक और शाश्वत रूप में पाया जाएगा जिसके पास व्यापक ज्ञान और शाश्वत जीवन है।

पाँचवीं वास्तविकता: यह दिव्यता का परिणाम है कि जो सत्ता अपने सबसे प्रिय और प्यारे, अपने सबसे अधिक व्याकुल और दरिद्र प्राणियों को - जिन्हें सबसे अधिक किसी सहारे की आवश्यकता है और जो अपने स्वामी और मालिक को पाने के लिए सबसे अधिक इच्छुक हैं - जन्मजात नपुंसकता और लालसा, गरीबी और आवश्यकता, भविष्य की चिंताएँ, और प्रेम और आराधना प्रदान करती है - यह उसकी दिव्यता का परिणाम है कि वह अपनी वाणी के माध्यम से उन तक अपना अस्तित्व संप्रेषित करे। इस प्रकार, सार्वभौमिक, स्वर्गीय रहस्योद्घाटन, जिसमें ईश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक कम करने की वास्तविकताएँ शामिल हैं, स्वयं को ज्ञात करने के लिए भगवान की इच्छा, और उनकी दयालु प्रतिक्रिया, राजसी वार्तालाप, और शाश्वत रूप से चाहने वाले के रूप में आत्म-संचार, अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व और एकता के लिए सर्वसम्मति से गवाही देते हैं। यह प्रमाण सूर्य के अस्तित्व के बारे में सूर्य की किरणों की गवाही से भी अधिक शक्तिशाली है। यात्री को यही बात समझ में आई है।

यात्री फिर प्रेरणा के उपहार पर विचार करता है और देखता है कि सच्ची प्रेरणा एक मामले में रहस्योद्घाटन से मिलती जुलती है और यह प्रभु के प्रवचन का एक रूप है। हालाँकि, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा दो मामलों में भिन्न हैं:

पहला अंतर: रहस्योद्घाटन, जो प्रेरणा से कहीं अधिक उच्च है, आमतौर पर स्वर्गदूतों द्वारा दिया जाता है, जबकि प्रेरणा आमतौर पर सीधे आती है।

उदाहरण के लिए, एक राजा के पास बोलने और अपने आदेश देने के दो तरीके होते हैं।
पहला यह है कि, अपने राज्य की महिमा और पूरे देश पर अपनी संप्रभुता के नाम पर, वह एक गवर्नर के पास एक लेफ्टिनेंट को भेजता है। कभी-कभी, अपनी संप्रभुता की भव्यता और अपने शाही आदेश के महत्व को प्रदर्शित करने के लिए, वह अपने लेफ्टिनेंट के साथ बैठक कर सकता है, और फिर राज्यपाल को आदेश सुनाया जाता है। दूसरा यह है कि वह अपने निजी फोन पर बात करता है, न कि राजा की उपाधि या राजा के नाम से-

वह किसी जहाज पर नहीं, बल्कि स्वयं किसी विश्वसनीय सेवक या किसी साधारण व्यक्ति को, जिसके साथ उसका विशेष संबंध या विशेष व्यवसाय हो, संदेश भेज सकता है।

इसी प्रकार, पूर्व-शाश्वत प्रभु या तो सभी लोकों के प्रभु के नाम से तथा ब्रह्माण्ड के रचयिता के पद से रहस्योद्घाटन या व्यापक प्रेरणा के माध्यम से बोल सकते हैं, जिसका कार्य रहस्योद्घाटन करना है, या वे एक गुप्त तरीके से, प्रत्येक जीव के प्रभु और रचयिता के रूप में, एक पर्दे के पीछे से तथा सम्बोधित करने वाले की क्षमता के अनुसार बोल सकते हैं।

दूसरा अंतर: वह्यत स्पष्ट, शुद्ध और सबसे चुने हुए लोगों के लिए आरक्षित है। हालाँकि, प्रेरणा, वह्यत जितनी स्पष्ट नहीं है; इसमें रंग हस्तक्षेप कर सकते हैं और यह अधिक सामान्य है। प्रेरणा के कई अलग-अलग प्रकार हैं, जैसे कि वह जो फ़रिश्तों को आती है, वह जो मनुष्यों को होती है, और वह जो जानवरों को दी जाती है; इस प्रकार प्रेरणा समुद्र में बूंदों की सीमा तक ईश्वर के शब्दों को गुणा करने के लिए एक क्षेत्र बनाती है। यात्री समझता है कि ईश्वर के शब्दों का गुणा करना इस आयत पर एक तरह की टिप्पणी है: कहो: "अगर सारा समुद्र मेरे रब के शब्दों को लिखने के लिए स्याही होता, तो समुद्र मेरे रब के शब्दों के समाप्त होने से पहले ही समाप्त हो जाता, भले ही हम उसके साथ ऐसा ही कुछ और भी लाएँ। " (18:109)

फिर यात्री प्रकृति, ज्ञान, गवाही और परिणाम को देखता है
प्रेरणा और देखता है कि वे निम्नलिखित चार प्रकाशों से मिलकर बने हैं:

प्रथम प्रकाश: यह इसलिए उभरता है क्योंकि ईश्वर सर्व-प्रेममय और दयालु है और इस प्रकार वह अपने वचन, उपस्थिति और वार्तालाप के माध्यम से स्वयं को प्रिय बनाता है, ठीक उसी प्रकार जैसे वह अपने कर्मों के माध्यम से अपने प्राणियों से स्वयं को प्रिय बनाता है।

दूसरा प्रकाश: यह ईश्वर के अत्यन्त दयालु होने का परिणाम है; जिस प्रकार वह अपने बंदों की प्रार्थनाओं का उत्तर कर्मों के रूप में देता है, उसी प्रकार वह परदे के पीछे से शब्दों के माध्यम से भी उन्हें उत्तर देता है।

तीसरा प्रकाश: परमेश्वर का प्रभुत्व यह मांग करता है कि जिस प्रकार वह अपने उन प्राणियों की सहायता के लिए की गई प्रार्थनाओं और पुकारों का अपने कार्यों द्वारा उत्तर देता है, जो घोर क्लेशों और कठिनाइयों से पीड़ित हैं, उसी प्रकार वह प्रेरणा के शब्दों के साथ उनकी सहायता के लिए भी आता है, जो उसकी वाणी के समान हैं।

चौथा प्रकाश: जिस प्रकार ईश्वर अपने अस्तित्व, उपस्थिति और सुरक्षा को अपने कर्मों के माध्यम से अपने उन चेतन प्राणियों के लिए प्रत्यक्ष बनाता है जो गरीब, कमजोर हैं और जिन्हें अपने स्वामी, रक्षक, संरक्षक और संरक्षक को खोजने की सबसे अधिक आवश्यकता है, यह भी उसके सर्वशक्तिमान होने का परिणाम है।

स्नेही देवता और सर्व-दयालु भगवान से प्रार्थना है कि उन्हें अपनी उपस्थिति और अस्तित्व को वाणी के माध्यम से, सच्ची प्रेरणा के फिल्टर के माध्यम से - भगवान के रूप में उनके प्रवचन का एक तरीका - व्यक्तियों को उनके और उनकी क्षमताओं के अनुकूल तरीके से, उनके हृदय के "टेलीफोन" के माध्यम से संप्रेषित करना चाहिए। यह बात यात्री को समझ में आ गई है।

यात्री फिर प्रेरणा की गवाही को देखता है और देखता है कि, उदाहरण के लिए, यदि सूर्य में चेतना और जीवन होता, और उसके प्रकाश में सात रंग उसके सात गुण होते - जैसे कि ईश्वर के सात सकारात्मक या पुष्टिकारक गुण - तो उसके पास अपनी किरणों और प्रकाश की अभिव्यक्तियों के माध्यम से एक प्रकार की वाणी भी होती। चूँकि सभी पारदर्शी चीजों में इसका प्रतिबिंब और छवि होती है, इसलिए यह प्रत्येक की क्षमता के अनुसार सभी दर्पणों, चमकती वस्तुओं, कांच के टुकड़ों, बुलबुले और पानी की बूंदों से बात करेगा। यह उन सभी चीजों की जरूरतों का जवाब देगा जिनमें यह प्रतिबिंबित होता है और ये सभी सूर्य के अस्तित्व की गवाही देंगे। इसके अलावा, इसका कोई भी कार्य अन्य कार्यों में बाधा नहीं बनेगा, और एक वस्तु को संबोधित करना इसे अन्य सभी वस्तुओं को एक साथ संबोधित करने से नहीं रोकेगा। इसी प्रकार, सनातन सूर्य की वाणी, जो सनातन सर्व-प्रतापी प्रभु, सर्व-महिमावान, सर्व-कृपालु सभी वस्तुओं का रचयिता है, जो सार्वभौमिक और सर्वव्यापी है, अपने ज्ञान और शक्ति की तरह, प्रत्येक वस्तु या प्राणी की क्षमता के अनुसार स्वयं को प्रकट करता है। एक अनुरोध के प्रति उसका प्रत्युत्तर अन्य सभी अनुरोधों के प्रति उसके प्रत्युत्तर में बाधा नहीं बनता, न ही वह जो कोई कार्य करता है, वह अन्य कार्यों की पूर्ति में बाधा डालता है। चाहे वह कितने भी प्राणियों को संबोधित करे, वह कभी भ्रमित नहीं होता। ज्ञान और दर्शन के आधार पर यात्री निश्चितता की सीमा तक समझ जाता है कि ये सभी अभिव्यक्तियाँ, वार्तालाप और प्रेरणाएँ - अलग-अलग और एक साथ - उस सनातन सूर्य की सर्वव्यापकता और आवश्यक अस्तित्व और उसकी एकता और एकरूपता की सर्वसम्मति से गवाही देती हैं।

अदृश्य जगत से ईश्वर के ज्ञान के संबंध में जिज्ञासु यात्री को जो सबक मिला है, उसके संक्षिप्त संदर्भ में, प्रथम स्टेशन के चौदहवें और पंद्रहवें चरण में कहा गया है:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान, एकवचन और सर्व-अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में सभी सच्चे प्रकाशनों की सर्वसम्मति से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है जिसमें ईश्वर द्वारा अपनी वाणी को मानवीय समझ के स्तर तक कम करना, उसके गौरवशाली प्रवचन, भगवान के रूप में उसका आत्म-संचार, सर्व-दयालु के रूप में अपने सेवकों की विनतियों का उसका उत्तर, और उसकी अदृश्य शक्ति शामिल है।

अपने अस्तित्व के बारे में ईश्वर द्वारा अपने प्राणियों को शाश्वत रूप से चाहने वाले के रूप में संकेत देना। उनकी एकता में उनका आवश्यक अस्तित्व सभी सत्य प्रेरणाओं की सर्वसम्मति से सहमति से भी प्रदर्शित होता है, जिसमें ईश्वर द्वारा स्वयं को प्रेम करने के उदाहरण, अपने प्राणियों की प्रार्थनाओं के प्रति उनका दयालु के रूप में उत्तर देना, अपने सेवकों की सहायता के लिए उनके प्रभु के रूप में अपील का उत्तर देना, तथा अपने प्राणियों को सर्व-महिमावान के रूप में उनके अस्तित्व और सर्वव्यापकता की सूचना देना शामिल है।

सोलहवाँ कदम

यात्री फिर अपनी बुद्धि को संबोधित करते हुए कहते हैं: "चूँकि मैं इन प्राणियों के माध्यम से इस ब्रह्मांड के निर्माता और मालिक की खोज कर रहा हूँ, इसलिए मुझे सबसे पहले उनके प्राणियों में सबसे प्रसिद्ध का दर्शन करना चाहिए - जो, जैसा कि उनके शत्रुओं ने भी पुष्टि की है, उनमें से सबसे उत्तम है, और सबसे कुशल सेनापति, सबसे प्रसिद्ध शासक, सबसे महान वक्ता और सबसे प्रखर बुद्धि का स्वामी है। मुझे उस व्यक्ति का दर्शन करना चाहिए जिसने पिछली चौदह शताब्दियों को अपने गुणों और कुरान के साथ प्रकाशित किया है: मुहम्मद अरबवासी, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। हमें उनसे वह पूछने के लिए खुशी के युग में एक साथ जाना चाहिए जिसकी मुझे तलाश है।" और इस तरह यात्री अपनी बुद्धि के साथ उस युग में प्रवेश करता है और देखता है कि, मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के लिए धन्यवाद, यह सच्ची खुशी का युग था; इस व्यक्ति ने एक सबसे आदिम और अनपढ़ लोगों को दुनिया के स्वामी और शिक्षक में बदल दिया था और उन्होंने अपने द्वारा लाए गए प्रकाश के माध्यम से बहुत ही कम समय में यह कर दिखाया था।

यात्री उनकी बुद्धि से कहता है: "सबसे पहले, हमें इस असाधारण व्यक्ति के मूल्य, उसके शब्दों की सत्यता और उसके संदेशों की सत्यता को निश्चित रूप से जानना चाहिए। फिर हमें उससे हमारे निर्माता के बारे में पूछना चाहिए।" और इस तरह यात्री जांच शुरू करता है। यहाँ हम यात्री द्वारा खोजे गए अनगिनत सार्वभौमिक और निर्णायक प्रमाणों में से नौ का संक्षेप में उल्लेख करेंगे।

वे इस प्रकार हैं:

पहला: यह व्यक्ति, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, सभी संभव प्रशंसनीय गुणों और उत्कृष्ट विशेषताओं से युक्त था; यह बात उसके शत्रुओं द्वारा भी प्रमाणित की गई थी। इसके अलावा, विश्वसनीय संचार माध्यमों से यह बताया गया है कि उसके हाथों से सैकड़ों चमत्कार किए गए थे, जैसे कि मात्र एक इशारे से चाँद को विभाजित करना, या मुट्ठी भर मिट्टी फेंक कर कई सैनिकों को भागने पर मजबूर करना - चमत्कार जिनका उल्लेख इन आयतों में किया गया है, और चाँद विभाजित हो गया (54:1), और जब तुमने फेंका तो तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका (8:17)। उन्होंने एक पूरी आग को भी बुझा दिया।

अपनी उंगलियों से भरपूर पानी से सेना की प्यास बुझाई। वास्तव में, इनमें से तीन सौ से ज़्यादा चमत्कारों को उन्नीसवें पत्र में निर्णायक सबूतों के साथ प्रस्तुत किया गया है, जिसे पैगंबर मुहम्मद के चमत्कार के रूप में जाना जाता है। पैगंबर के अन्य चमत्कारों के बारे में जानने के इच्छुक पाठकों को उस ग्रंथ का संदर्भ लेना चाहिए। और इसलिए यात्री निष्कर्ष निकालता है: "जो कोई भी व्यक्ति अपने जीवन में सफल होता है, वह अपने जीवन में सफल होता है।

अपनी सबसे महान विशेषताओं और परिपूर्णताओं के अलावा, जो ऐसे स्पष्ट चमत्कार करता है, उसे वाणी में सबसे सच्चा होना चाहिए। वह झूठ और छल-कपट के आगे खुद को कैसे गिरा सकता है, जो कि नीच लोगों के दोष हैं?"

दूसरा: पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने हाथ में ब्रह्मांड के मालिक का फरमान रखते हैं, अर्थात शक्तिशाली, गौरवशाली कुरान, जिसे हर सदी में करोड़ों लोगों ने स्वीकार किया है और इसकी पुष्टि की है। यह तथ्य कि कुरान ब्रह्मांड के निर्माता का वचन है और कम से कम चालीस पहलुओं में चमत्कारी है, इसे पच्चीसवें वचन में पुख्ता सबूतों के साथ समझाया गया है, जिसे कुरान की चमत्कारिकता के रूप में जाना जाता है। उन पहलुओं के बारे में अधिक जानने में रुचि रखने वाले पाठकों को उस ग्रंथ का संदर्भ लेना चाहिए। इसे समझते हुए, यात्री कहता है: "ऐसे शुद्ध सत्य के फरमान का अनुवादक, व्याख्याता और संवाहक झूठ नहीं बोल सकता, क्योंकि ऐसा करना फरमान का उल्लंघन करना और उसके मालिक को धोखा देना होगा।"

तीसरा: निम्नलिखित पर विचार करें:

• पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, एक पवित्र कानून, एक धर्म, पूजा की एक संहिता, प्रार्थना का एक तरीका, एक संदेश और विश्वास का एक तरीका लेकर आए, जो पहले कभी अस्तित्व में नहीं था। और उनके बिना, इनमें से कुछ भी कभी भी नहीं हो सकता था। उस अनपढ़ पैगम्बर द्वारा लाया गया अद्वितीय कानून चौदह शताब्दियों तक मानव जाति के पांचवें हिस्से पर न्यायपूर्ण और सटीक तरीके से शासन करता रहा है।

• इस्लाम, जिसकी उत्पत्ति पैगंबर के कार्यों, कथनों, कथनों और उदाहरणों से हुई और जिसका प्रतिनिधित्व पैगंबर ने किया, वह भी बेजोड़ है। समय या स्थान की परवाह किए बिना, इसने करोड़ों लोगों के जीवन में मार्गदर्शक और सक्षम अधिकारी के रूप में सेवा की है। इसने उनके दिमागों को सिखाया और प्रशिक्षित किया है, उनके दिलों को रोशन और शुद्ध किया है, उनकी आत्माओं को प्रशिक्षित और परिष्कृत किया है, और उनकी आत्माओं को परिपूर्ण किया है।

• पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, इस्लाम द्वारा निर्धारित पूजा पद्धति का सबसे अच्छा उदाहरण हैं; वह सभी लोगों में सबसे अधिक ईश्वर के प्रति जागरूक और ईश्वर का सम्मान करने वाले व्यक्ति हैं।

अत्यंत सावधानी और ध्यान के साथ, यहां तक कि सबसे छोटी-छोटी बातों पर भी, बड़े संकट के समय और निरंतर संघर्ष और गतिविधि के जीवन के दौरान। उन्होंने अपनी पूजा में किसी की नकल नहीं की, और आध्यात्मिक विकास के अल्फा और ओमेगा को पूरी तरह से संयोजित किया।

• उनकी प्रार्थनाएँ और ईश्वर के बारे में उनका ज्ञान भी बेमिसाल है: अकेले अल-जौशनुल-कबीर में, जो उनकी हज़ारों प्रार्थनाओं और दुआओं में से सिर्फ़ एक है, वे अपने भगवान का वर्णन इस हद तक करते हैं कि कोई भी संत या ज्ञानी कभी भी इस तरह का ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाया, भले ही वे अपने पूर्वजों की उपलब्धियों पर आगे बढ़ने में सक्षम रहे हों। अल-जौशनुल-कबीर के निन्यानबे भागों में से सिर्फ़ एक का सरसरी अध्ययन भी दिखाएगा कि इसके जैसा कोई दूसरा भाग कभी नहीं हो सकता।

• अपने संदेश को संप्रेषित करते हुए और अपने लोगों को सत्य की ओर बुलाते हुए, पैगंबर (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने ऐसी दृढ़ता और साहस का प्रदर्शन किया कि वह कभी भी लड़खड़ाए या हिचकिचाए नहीं। और यह आसपास की शक्तियों और धर्मों के साथ-साथ उनके अपने लोगों और कबीले के लोगों, यहां तक कि उनके चाचा के शत्रुतापूर्ण व्यवहार के बावजूद था। उन्होंने सफलतापूर्वक पूरी दुनिया को चुनौती दी, जिससे इस्लाम अन्य सभी धर्मों और प्रणालियों से श्रेष्ठ बन गया। यह साबित करता है कि मानव जाति को उपदेश देने या उन्हें सत्य के संदेश की ओर बुलाने में कोई भी अन्य व्यक्ति उनकी बराबरी नहीं कर सकता। • उनका विश्वास इतना असाधारण रूप से मजबूत और आश्वस्त था, उनके दिल में इतना चमत्कारिक रूप से विकसित और निहित था, और इतना ऊंचा और विश्व-ज्ञानवर्धक था कि उस समय प्रचलित कोई भी विचार, विश्वास, दर्शन या आध्यात्मिक शिक्षाएं उनके भीतर कोई संदेह पैदा नहीं कर सकीं। अपने दुश्मनों के विरोध और शत्रुता के बावजूद, वे उन्हें हिला नहीं सके या उन्हें उनके उद्देश्य के बारे में अनिश्चित नहीं बना सके। इसके अलावा, सभी युगों के संत, सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण उनके साथी, जिन्होंने आध्यात्मिकता में और विश्वास की विभिन्न डिग्री के माध्यम से प्रगति की है, हमेशा उनके विश्वास से लाभान्वित हुए हैं, जिसे वे उच्चतम डिग्री मानते हैं। यह साबित करता है कि उनका विश्वास भी बेजोड़ है।

जो यात्री ईश्वर की खोज में लगा रहता है, वह इस प्रकार समझता है और अपनी बुद्धि से यह निष्कर्ष निकालता है कि जिसने ऐसा अनोखा कानून और अद्वितीय धर्म लाया, जिसने ऐसी अद्भुत उपासना पद्धति और प्रार्थना में असाधारण उत्कृष्टता प्रदर्शित की, उसके गुणों में झूठ और छल का कोई स्थान नहीं हो सकता।

जिनके उपदेशों की प्रशंसा विश्व भर में की जाती थी, और जिनका विश्वास चमत्कारिक पूर्णता की हद तक था।

चौथा: जिस तरह पैगम्बरों की सर्वसम्मति ईश्वर के अस्तित्व और एकत्व का बहुत मजबूत सबूत है, उसी तरह यह उस महान व्यक्ति की सच्चाई और संदेशवाहक होने की ठोस गवाही भी है। क्योंकि इतिहास इस बात की पुष्टि करता है कि उसमें सभी पवित्र गुण, चमत्कार और कर्तव्य मौजूद हैं जो एक पैगम्बर के मिशन और सच्चाई को दर्शाते हैं। जिस तरह पिछले पैगम्बरों ने तौरात, सुसमाचार, भजन और अन्य शास्त्रों में उसके आने की खुशखबरी देकर भविष्यवाणी की थी - इन खुशनुमा भविष्यवाणियों में से बीस से अधिक स्पष्ट भविष्यवाणियाँ उन्नीसवें पत्र में बताई गई हैं - उन्होंने अपने मिशन और चमत्कारों से भी उसकी पुष्टि की, इस व्यक्ति की सच्चाई को प्रमाणित करते हुए, जो पैगम्बरी के मिशन और कार्यों को पूरा करने में सबसे निपुण है, वास्तव में उसके दावों पर अपनी मुहर लगाते हुए। यात्री को यह अनुभव होता है कि सभी पूर्ववर्ती पैगम्बरों ने अपने कार्यों की एकमतता के माध्यम से इस व्यक्ति की सत्यता की गवाही दी थी, ठीक उसी तरह जैसे उन्होंने मौखिक सहमति के माध्यम से ईश्वर की एकता की गवाही दी थी।

पाँचवाँ: उस व्यक्ति के कर्मों और सिद्धांतों का अनुसरण करके सत्य, पूर्णता, चमत्कार करने की श्रेणी, चीज़ों की वास्तविकता में अंतर्दृष्टि, तथा आध्यात्मिक खोज और दर्शन प्राप्त करके, हज़ारों संत एकमत होकर ईश्वर की एकता और उस व्यक्ति की सत्यता और संदेशवाहक होने की गवाही देते हैं, जो उनका स्वामी है। यह तथ्य कि अपने संतत्व के प्रकाश के माध्यम से संत अदृश्य जगत के बारे में उनके द्वारा घोषित कुछ सत्यों के साक्षी होते हैं, और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से वे ज्ञान की निश्चितता या दृष्टि की निश्चितता या अनुभव की निश्चितता के स्तर पर इन सभी पर विश्वास करते हैं और उनकी पुष्टि करते हैं, उस व्यक्ति की सत्यता और सदाचार की सीमा को सूर्य से भी अधिक चमकदार तरीके से प्रदर्शित करता है, जो उनका स्वामी है।

छठा: लाखों मेहनती, सावधान, शुद्ध और सत्यनिष्ठ विद्वान और ऋषिगण, जो सभी उस अशिक्षित व्यक्ति द्वारा लाए गए पवित्र सत्यों में निहित शिक्षा के माध्यम से, उसके द्वारा प्रस्तुत किए गए उत्कृष्ट विज्ञानों के माध्यम से और उसके द्वारा खोजे गए ईश्वर के ज्ञान के माध्यम से ज्ञान के उच्चतम स्तर तक पहुँच चुके हैं - सभी एकमत से न केवल ईश्वर की एकता को साबित करते हैं, जो पैगंबर मुहम्मद के मिशन का आधार है, बल्कि उस सर्वोच्च गुरु की सत्यता और उनके शब्दों की सत्यता को भी साबित करते हैं। यह उनके संदेशवाहक होने और सत्यनिष्ठा का प्रमाण है जो दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है।

सातवीं बात: पैगम्बरों के बाद पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के परिवार और साथी अंतर्दृष्टि, विवेक और पूर्णता में सबसे श्रेष्ठ हैं; वे मानव जाति के सबसे प्रसिद्ध, सम्मानित, धर्मपरायण और तीक्ष्ण दृष्टि वाले सदस्य हैं। पैगम्बर के सभी विचारों और उनकी छिपी और प्रकट अवस्थाओं और स्थितियों की गहन जांच करने के बाद, उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला है कि वह दुनिया में सबसे महान और सबसे सच्चे और ईमानदार व्यक्ति थे। यात्री समझता है कि ऐसे असाधारण लोगों द्वारा उनके बारे में ऐसी अडिग पुष्टि उनके कारण की सच्चाई को साबित करती है, जैसे दिन का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व को साबित करता है।

आठवां: यह ब्रह्मांड निर्माता, लेखक, लेखक और लेखक को इंगित करता है
डिज़ाइनर जिसने इसे निर्धारित और आकार दिया और जो इसे एक महल, एक पुस्तक और चमत्कारों की प्रदर्शनी की तरह नियंत्रित और प्रशासित करता है। इसलिए, एक महान संदेशवाहक, एक सत्यवादी प्रकटकर्ता, एक सटीक गुरु और एक सत्यनिष्ठ शिक्षक होना चाहिए जो ब्रह्मांड के निर्माण के पीछे के दिव्य उद्देश्य को जानता और बताता है, जो दूसरों को उस दिव्य ज्ञान के बारे में सिखाता है जो ब्रह्मांड की उद्देश्यपूर्ण गति और परिवर्तनों को रेखांकित करता है, जो इसके अंतर्निहित मूल्य और इसमें मौजूद प्राणियों की पूर्णता की घोषणा करता है, और जो इस महान ब्रह्मांडीय पुस्तक के अर्थों की व्याख्या करता है। यात्री को यह एहसास होता है कि ऐसे कर्तव्यों को सबसे पूर्णता से पूरा करने वाला व्यक्ति अपने उद्देश्य में सबसे सच्चा है, जो ब्रह्मांड के निर्माता का सबसे भरोसेमंद और महान अधिकारी है।

नौवीं बात: सृष्टि के पर्दे के पीछे एक है जो इन उद्देश्यपूर्ण और कुशल कार्यों के माध्यम से अपनी संपूर्ण कुशलता और कलात्मकता को प्रदर्शित करना चाहता है। उस पर्दे के पीछे एक है जो अपने द्वारा बनाए गए अनगिनत सजे-धजे प्राणियों के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्रिय बनाना चाहता है, और अपने असीम अनमोल उपहारों के बदले में प्रशंसा और धन्यवाद प्राप्त करना चाहता है, अपने स्नेही और सुरक्षात्मक जीवन को बनाए रखने के माध्यम से अपने प्रभुत्व के लिए कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ पूजा को प्रोत्साहित करना चाहता है, साथ ही अपने प्राणियों के सबसे नाजुक स्वाद और भूख को संतुष्ट करके। वह अपनी बुद्धिमानी और विस्मयकारी रचनात्मकता और शानदार, राजसी और उद्देश्यपूर्ण गतिविधि के माध्यम से अपनी दिव्यता को प्रदर्शित करना चाहता है, जो कि उदाहरण के लिए, ऋतुओं के परिवर्तन और दिन और रात के परिवर्तन के दौरान प्रदर्शित होती है - यह सब इसलिए ताकि मानवजाति उसकी दिव्यता में विश्वास करे, उसके अधीन हो और उसकी आज्ञा का पालन करे। इसके अलावा, वह अपने न्याय, न्यायसंगतता और ईमानदारी के प्रकटीकरण की इच्छा रखता है

सद्गुणों और पुण्यात्माओं की रक्षा करते हुए बुराई और उसके अपराधियों का नाश करते हुए, तथा झूठों और अत्याचारियों को स्वर्गीय प्रहारों से नष्ट करते हुए।

इस प्रकार, उस अदृश्य सत्ता की दृष्टि में सबसे प्रिय रचना और सबसे समर्पित सेवक निश्चित रूप से वह होगा जो ऊपर वर्णित ईश्वरीय उद्देश्यों की सर्वोच्च सीमा तक सेवा करेगा। यह वह होगा जो ब्रह्मांड की रचना के रहस्य और ताबीज को उजागर करता है, जो हमेशा अपने निर्माता के नाम पर कार्य करता है, और जो केवल उसी से सहायता और सफलता मांगता है, और दोनों प्राप्त करता है। यह पैगंबर मुहम्मद अल-कुरैशी हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो।

यात्री उनकी बुद्धि या तर्क को संबोधित करते हुए कहता है: "चूँकि ये नौ सत्य उस व्यक्ति की सत्यनिष्ठा की गवाही देते हैं, इसलिए वह निस्संदेह मानवता के सम्मान और दुनिया के गौरव का स्रोत होना चाहिए। इसलिए वह 'दुनिया का गौरव' और 'मानव जाति का गौरव' कहलाने के योग्य है। इसके अलावा, कुरान, वह चमत्कारी शब्द और दयालु का फरमान जिसे इस व्यक्ति ने अपने हाथ में थामा है, उसने पुरानी दुनिया के आधे हिस्से को अपने शानदार आध्यात्मिक क्षेत्र में खींच लिया है। पैगंबर की व्यक्तिगत पूर्णता और उच्च गुणों के साथ, यह दर्शाता है कि वह दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति है, और तदनुसार हमारे निर्माता के बारे में उनके शब्द सबसे महत्वपूर्ण हैं।"

अब आओ और देखो! अपने सैकड़ों चमत्कारों और इस्लाम में निहित हज़ारों उदात्त, स्थापित सत्यों की शक्ति के आधार पर, उनका एकमात्र उद्देश्य अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व और एकता को साबित करना और उसकी गवाही देना था, और उसे उसके सभी गुणों और नामों के साथ घोषित करना था। वह ब्रह्मांड को प्रकाशित करने वाला "आध्यात्मिक सूर्य" है, हमारे निर्माता का सबसे शानदार प्रमाण और "ईश्वर का प्रिय" है। महान, सत्यनिष्ठ और अडिग सर्वसम्मति के निम्नलिखित रूपों में से प्रत्येक उस गवाही की पुष्टि और पुष्टि करता है जो वह रखता है:

पहला: मुहम्मद के परिवार और वंशजों के रूप में जाने जाने वाले और प्रसिद्ध समुदाय की सर्वसम्मत पुष्टि, जिनके बीच हज़ारों आध्यात्मिक ध्रुव और सर्वोच्च संत हैं, जिनके पास इतनी गहरी आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि है कि वे अदृश्य में भी प्रवेश कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, इमाम अली ने कहा: "यदि अदृश्य से पर्दा हटा दिया जाए, तो मेरी निश्चितता में वृद्धि नहीं होगी।"[38] और फिर अब्दुल-कादिर अल-जिलानी हैं, जो

[38] अस-सुबकी, तबकातु'श-शफ़ी'इयातुल-कुबरा, 6:61.

इस धरती पर रहते हुए ही परमेश्वर के सर्वोच्च सिंहासन और महादूत इसराफिल के भयानक रूप को देखा।[39]

दूसरा: साथियों की सर्वसम्मत पुष्टि, जो इस विश्वास पर आधारित थी कि वे इसके लिए अपने जीवन और संपत्ति, अपने माता-पिता और अपने कबीले को बलिदान करने के लिए तैयार थे। हालाँकि वे आदिम लोगों के बीच पले-बढ़े थे और अज्ञानता के माहौल में सामाजिक जीवन या प्रशासन के बारे में किसी भी सकारात्मक धारणा से रहित थे, मार्गदर्शक शास्त्र से रहित थे और असभ्य युग के अंधेरे में डूबे हुए थे जब कोई पैगंबर नहीं थे, इन लोगों ने मुहम्मद के नक्शेकदम पर चलना शुरू कर दिया और जल्द ही अपने समय के सबसे सभ्य और सामाजिक-राजनीतिक रूप से उन्नत लोगों और राज्यों के स्वामी, मार्गदर्शक और न्यायपूर्ण शासक बन गए।

तीसरा: अपने समुदाय के असंख्य सटीक और गहन विद्वानों की सर्वसम्मत पुष्टि, जो ज्ञान की निश्चितता पर आधारित है। प्रत्येक शताब्दी में ऐसे हजारों लोग हुए हैं जो विज्ञान और कला की हर शाखा में असाधारण रूप से उन्नत हुए हैं।

इस प्रकार, ईश्वर के अस्तित्व और एकता के बारे में इस व्यक्ति की गवाही इतनी सार्वभौमिक और अडिग है कि यदि इसके विरोधी सभी प्राणी एक हो जाएं, तो भी वे इसे चुनौती नहीं दे पाएंगे। यात्री इस निष्कर्ष पर पहुंचता है। उस पाठ के संदर्भ में जो यात्री ने उस स्कूल में सीखा था

उनके मन में खुशी के युग का दौरा करते समय प्रकाश की, यह कहा गया था
प्रथम स्टेशन का सोलहवाँ चरण:

> ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अनिवार्य रूप से अस्तित्ववान, एक और अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में है, जो संसार के गौरव और आदम की संतानों की महिमा से, कुरान की संप्रभुता की महिमा, इस्लाम की समग्रता की महिमा, उसकी परिपूर्णताओं की बहुलता और उसके नैतिक गुणों की उत्कृष्टता से स्पष्ट रूप से प्रमाणित होता है, जिसकी पुष्टि उसके शत्रुओं द्वारा भी की गई है। फिर, वह सैकड़ों चमत्कारों की शक्ति के माध्यम से गवाही देता है जो उसकी सत्यनिष्ठा को प्रमाणित करते हैं और जो दृढ़ता से स्थापित हो चुके हैं, और उसके धर्म में निहित हजारों स्पष्ट और निर्णायक सत्यों की शक्ति के माध्यम से, जैसा कि उसके प्रसिद्ध, प्रकाश फैलाने वाले परिवार और वंशजों की सर्वसम्मति, उसके साथियों की पैनी दृष्टि और विवेक के साथ सहमति, और उसके समुदाय के विद्वानों की उनके प्रकाशमान प्रमाणों और अंतर्दृष्टि के साथ सहमति द्वारा पुष्टि की गई है।

[39] दियाउ'द-दीन अल-गुमुशनवी, अल-मजमु'अतु'एल-अहजाब, 561।

सत्रहवाँ कदम

अथक और अतृप्त यात्री, जो इस दुनिया में जीवन के उद्देश्य और सार को विश्वास में समझते हैं, अपने दिल को संबोधित करते हुए कहते हैं: "आइए हम चमत्कारी व्याख्या वाली कुरान नामक पुस्तक का सहारा लें, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह उस व्यक्ति का वचन है जिसे हम खोज रहे हैं: आइए हम दुनिया की 'सबसे प्रसिद्ध, सबसे शानदार और सबसे बुद्धिमान पुस्तक' की जांच करें, जो हर युग में उन लोगों को चुनौती देती है जो इसे मानने से इनकार करते हैं। आइए देखें कि इसमें क्या लिखा है। लेकिन पहले, हमें यह स्थापित करना होगा कि यह पुस्तक हमारे निर्माता की ओर से है।"

यह कहकर वे जांच शुरू करते हैं।

चूँकि यात्री वर्तमान युग में रहते हैं, इसलिए वे सबसे पहले रिसाले-ए-नूर को देखते हैं, जिसमें कुरान की चमत्कारिकता की झलकियाँ शामिल हैं, और वे देखते हैं कि इसके एक सौ तीस भाग सत्य और असत्य के बीच के उस मानदंड - कुरान - से कुछ आयतों के सूक्ष्म अर्थों, प्रकाशों और सुस्थापित व्याख्याओं से मिलकर बने हैं। वे इस हठ और अविश्वास के युग में इसकी विषय-वस्तु और कुरान की सच्चाइयों के सशक्त प्रसार और बचाव से समझते हैं कि कुरान, इसका स्वामी, स्रोत, अधिकार और सूर्य, एक अवतरित पुस्तक है। रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में क़ुरआन के ईश्वरीय रचयिता के सैकड़ों प्रमाणों में से , पच्चीसवाँ शब्द, जो क़ुरआन का एकमात्र प्रमाण है, तथा उन्नीसवें अक्षर का अन्त क़ुरआन की चमत्कारिकता के चालीस पहलुओं को इस तरह स्थापित करता है कि जो कोई भी उन्हें देखेगा, वह न केवल कोई आलोचना या आपत्ति उठाएगा, बल्कि उनके तर्कों की भी बहुत प्रशंसा करेगा। इसलिए, क़ुरआन को ईश्वरीय वचन के रूप में स्थापित करने तथा उसके चमत्कारिकता के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या को रिसाले -ए-नूर पर छोड़ते हुए, यात्री कुछ बिंदुओं पर ध्यान देता है जो संक्षेप में क़ुरआन की महानता को प्रदर्शित करते हैं।

पहला बिन्दु: जिस प्रकार कुरान, अपने सभी चमत्कारों और सत्यों के साथ, जो इसकी सत्यता को दर्शाते हैं, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का एक चमत्कार है, उसी प्रकार पैगम्बर मुहम्मद स्वयं भी अपने सभी चमत्कारों, पैगम्बरत्व के प्रमाणों और ज्ञान की परिपूर्णता के साथ कुरान का एक चमत्कार है और एक निर्णायक प्रमाण है कि यह ईश्वर का वचन है।

दूसरा बिंदु: मानव सामाजिक जीवन में एक सार्थक, खुशहाल और ज्ञानवर्धक परिवर्तन लाने के साथ-साथ, कुरान ने लोगों की आत्माओं, दिलों, आत्माओं और बुद्धि में तथा उनके व्यक्तिगत, सामाजिक और राजनीतिक जीवन में क्रांति ला दी है। इसके अलावा, इसने इस क्रांति को इस तरह से कायम रखा है कि पिछले चार वर्षों में हर पल-

100 से अधिक शताब्दियों में इसे एक सौ मिलियन से अधिक लोगों द्वारा अत्यंत सम्मान के साथ पढ़ा गया है, जिससे उनकी आत्माओं को प्रशिक्षण और परिष्कार मिला है और उनके दिलों को शुद्ध किया गया है। आत्माओं के लिए यह विकास और उन्नति का साधन रहा है; बुद्धि के लिए, एक मार्गदर्शन और प्रकाश; और जीवन के लिए, यह स्वयं जीवन और सुख है। ऐसी पुस्तक निस्संदेह हर मामले में अद्वितीय है: यह एक आश्चर्य, एक चमत्कार और एक चमत्कार है।

तीसरा बिन्दु: अपने अवतरण के समय से लेकर आज तक, कुरान ने ऐसी वाक्पटुता प्रदर्शित की है कि इसने "सात लटकती कविताओं" - ऐसी कविताओं को जो सर्वोत्तम मानी जाती थीं, सोने में लिखी गई थीं और अज्ञानता के युग के दौरान काबा की दीवारों पर लटका दी गई थीं - का मूल्य इतना कम कर दिया है कि काबा से अपने पिता की कविता उतारते समय, (प्रसिद्ध कवि) लबीद की बेटी ने कहा:40

“कुरान की आयतों की तुलना में इसका अब कोई महत्व नहीं है।”

एक बार एक बेडौइन कवि ने यह कविता सुनी जिसका अर्थ है: जो तुम्हें आदेश दिया गया है उसे खुले तौर पर और जोरदार तरीके से कहो

(15:94) और तुरन्त सजदा किया। जब उन्होंने उससे पूछा कि क्या तू मुसलमान हो गया है तो उसने कहा कि नहीं, मैं तो केवल इस आयत की व्याख्या के समक्ष सजदा कर रहा था।

इसके अलावा, हजारों विद्वानों, लेखकों और वाक्पटुता और बयानबाजी के विज्ञान के विशेषज्ञों , है कि कुरान की वाक्पटुता मानव क्षमता से जैसे कि ज़माखशारी,44 ने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला परे है और किसी भी सृजित प्राणी द्वारा इसकी नकल नहीं की जा सकती।

---

40 लाबिद अज्ञानता के युग के प्रमुख कवियों में से एक थे - पैगंबर के आगमन से पहले का युग, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। वह मुहम्मद के पैगंबर होने के साक्षी बनने के लिए काफी समय तक जीवित रहे, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। (अनुवाद) अस-सुयुति, अल-इत्कान, 2:149।

41

42 'अब्दुल-काहिर अल-जुरजानी (1010-1079) अरबी साहित्य की भाषा के सबसे प्रमुख विद्वानों में से एक थे। उन्हें वाक्पटुता के उस्ताद के रूप में जाना जाता था। असरारू-अल-बलाघा ("वाक्पटुता के रहस्य") और दलाईलु-अल-इयाज ("अद्वितीयता के प्रमाण") उनकी सबसे प्रसिद्ध पुस्तकें हैं। (अनुवाद)

43 अबू याक़ूब यूसुफ इब्न अबू बक्र अल-सक्काकी (?–1229) अरबी भाषा और वक्तृत्व कला के अग्रणी विद्वानों में से एक थे। मिफ्ताहुल-उलुम (“विज्ञान की कुंजी”) और अल-मिफ्ताह फ़िन-नहव वत-तस्रिफ़ वाल-बयान (“व्याकरण, विभक्ति, वाक्यविन्यास और शैली की कुंजी”) उनकी सबसे प्रसिद्ध कृतियों में से हैं। (अनुवाद)

44 अबुल-कासिम जरुल्लाह महमूद इब्न उमर अज़-ज़माख़शरी (1075-1144) इस्लाम के मुताज़िली विद्वान थे, जो क़ुरान के सबसे प्रसिद्ध व्याख्याकारों में से एक थे। वे क़ुरान की अल-कशशाफ़ नामक उनकी व्याख्या आयतों के गहन भाषाई विश्लेषण के लिए प्रसिद्ध थी। (अनुवाद)

इसके अलावा, कुरान ने शुरू से ही सभी अहंकारी और अहंकारी कवियों और वाक्पटु लोगों को चुनौती दी है, इस तरह से कि उनका अहंकार खत्म हो जाए: "(अगर तुम नहीं मानते कि मैं ईश्वर का वचन हूँ, तो) या तो मेरे जैसा एक भी सूरा बनाओ या फिर इस दुनिया और आखिरत में बर्बादी और अपमान स्वीकार करो।" इस चुनौती के बावजूद, उस युग के जिद्दी वाक्पटु लोगों ने कुरान जैसा एक भी सूरा बनाने की कोशिश करने के छोटे रास्ते को छोड़ दिया और इसके बजाय (इसके खिलाफ लड़ने और) अपने जान-माल को खतरे में डालने का लंबा रास्ता चुना। इससे साबित होता है कि छोटा रास्ता नहीं अपनाया जा सकता।

उस समय से लेकर अब तक लाखों अरबी किताबें प्रचलन में हैं, जो या तो कुरान के मित्रों ने उसकी नकल करने के लिए लिखी हैं या उसके शत्रुओं ने उसका विरोध करने और उसकी आलोचना करने के लिए; ऐसी किताबों में समय के साथ विज्ञान और विचार के विकास के साथ सुधार हुआ है। हालाँकि, आज तक उनमें से एक भी कुरान के स्तर तक नहीं पहुँच पाई है। अगर कोई आम इंसान भी उन्हें सुनेगा, तो वह ज़रूर कहेगा: “कुरान इन दूसरी किताबों जैसा नहीं है और बिल्कुल अलग श्रेणी का है। यह या तो उनसे नीचे है या उनसे ऊपर।” और चूँकि दुनिया में कोई भी - यहाँ तक कि कोई नास्तिक या मूर्ख भी - यह नहीं कह सकता कि यह उनसे नीचे है, इसलिए हमें यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि वाक्पटुता में यह उन सभी से ऊपर है।

एक बार एक व्यक्ति ने यह आयत पढ़ी जिसका अर्थ है, आकाश और पृथ्वी में जो कुछ भी है वह ईश्वर की महिमा करता है (57:1)। उसने कहा: "मैं इस आयत में कोई चमत्कारी वाक्पटुता नहीं देख सकता।" उसे बताया गया: "अपने मन में उस युग में वापस जाओ और उस आयत को सुनो जैसा कि इसे वहाँ पढ़ा गया था।" खुद को वहाँ होने की कल्पना करते हुए, उसने देखा कि दुनिया के सभी प्राणी निर्जीव और बिना चेतना या उद्देश्य के, एक अस्थिर, क्षणभंगुर दुनिया में रहते हुए, खाली, अनंत और असीम अंतरिक्ष से घिरे हुए, और भ्रम और अंधकार में डूबे हुए दिखाई दे रहे थे। अचानक उसने कुरान की आवाज से उपरोक्त आयत की घोषणा सुनी। तुरन्त उस आयत ने ब्रह्मांड के चेहरे से पर्दा हटा दिया और उसे रोशन कर दिया। इस पूर्व-शाश्वत भाषण, इस शाश्वत आदेश ने सभी सचेत प्राणियों को निर्देश दिया, पूरी सृष्टि, और खास तौर पर आकाश और धरती, ईश्वर की याद और उसकी महिमा के उद्घोष में लगे हुए थे, और इस कार्य को खुशी और संतुष्टि के साथ पूरा कर रहे थे। यह सब यात्री ने देखा है। इस प्रकार, कुरान की वाक्पटुता का एक अंश चखकर और अन्य आयतों की तुलना करके, यात्री उनमें से एक को समझ सकता है।

हजारों बुद्धिमानी भरे कारण हैं कि क्यों कुरान की वाक्पटुता ने आधी पृथ्वी और मानवता के पांचवें हिस्से पर विजय प्राप्त कर ली है; वे देखते हैं कि कैसे इसने अपने आगमन के बाद से चौदह शताब्दियों के दौरान बिना किसी बाधा या बाधा के, और अत्यंत सम्मान के साथ अपने राजसी प्रभुत्व को बढ़ाया है।

चौथा बिंदु: जबकि सबसे सुखद बात को भी बार-बार दोहराने से अंततः घृणा होती है, कुरान की मिठास ऐसी है कि इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, इससे न तो थकान होती है और न ही घृणा। वास्तव में, यह स्वयंसिद्ध हो गया है कि जिनके दिल भ्रष्ट नहीं हैं और जिनका स्वाद खराब नहीं हुआ है, उनके लिए कुरान को बार-बार पढ़ने से थकान नहीं होती, बल्कि इसकी मिठास और आकर्षण में वृद्धि होती है। साथ ही, कुरान में ऐसी ताजगी, युवापन और मौलिकता है कि भले ही यह चौदह शताब्दियों से जीवित है और सभी के लिए उपलब्ध है, लेकिन इसकी जीवंतता ऐसी है कि कोई सोचेगा कि इसे अभी-अभी ही उतारा गया है। हर सदी में कुरान ने एक नया यौवन देखा है, मानो वह उस सदी को संबोधित कर रहा हो। इसी तरह, भले ही ज्ञान की हर शाखा के विद्वान कुरान से लाभ उठाने और इसकी व्याख्या के तरीके का पालन करने के लिए इसे लगातार अपने पास रखते हैं, वे देखते हैं कि कुरान अपनी शैली और व्याख्या के तरीके की मौलिकता को बनाए रखता है।

पाँचवाँ बिन्दु: क़ुरआन का एक पक्ष अतीत में है और दूसरा भविष्य में। इसका मूल और एक पक्ष पूर्ववर्ती पैगम्बरों की सर्वसम्मत पुष्टि की गई सच्चाईयाँ हैं, जो इसे सर्वसम्मति की ज़ुबान से पुष्ट करते हैं और बदले में यह उनकी पुष्टि और पुष्टि करता है। इसी तरह, सभी संत और शुद्ध विद्वान-

दूसरा पक्ष - कुरान के वे फल, जिन्होंने इससे जीवन प्राप्त किया है, उन्होंने अपनी महत्वपूर्ण आध्यात्मिक प्रगति के माध्यम से दिखा दिया है कि उनका धन्य "वृक्ष" सत्य तक पहुंचने का जीवित और सबसे उज्ज्वल साधन है, और हर तरह से लाभदायक है।
सभी सच्चे आध्यात्मिक मार्ग या संतत्व के मार्ग और इस्लामी विज्ञान, जो कुरान के दूसरे भाग के संरक्षण में विकसित हुए हैं, सर्वसम्मति से प्रमाणित करते हैं कि कुरान स्वयं सत्य है और सत्यों का ऐसा संग्रह है जिसकी व्यापकता अद्वितीय है।

छठा बिन्दु: कुरान अपने निम्नलिखित छह पहलुओं या पक्षों में प्रकाशमान है, जो इसकी सत्यता और सच्चाई को इंगित करते हैं:

- इसके नीचे तर्क और प्रमाण के स्तम्भ छिपे हैं;
- इसके ऊपर चमत्कार या अदृश्यता की छाप की झलकियाँ चमकती हैं
  स्थिरता;
- दोनों लोकों में सुख की प्राप्ति को अपना लक्ष्य बनाना उसके सामने है;

• इसके पीछे स्वर्गीय रहस्योद्घाटन की सच्चाईयाँ हैं
सहायता;

• इसके दाईं ओर असंख्य स्वस्थ और ईमानदार दिमागों की अच्छी तरह से प्रलेखित और प्रमाणित पुष्टि है;

• और इसके बायीं ओर सच्ची संतुष्टि, ईमानदार आकर्षण और स्वस्थ हृदय और शुद्ध अंतःकरण की समर्पणता देखी जा सकती है।

इन छह बातों को मिलाकर यह साबित होता है कि कुरान एक असाधारण, दृढ़ और अजेय स्वर्गीय किला है जो धरती पर खड़ा है। इन छह पहलुओं से यह स्पष्ट है कि कुरान शुद्ध सत्य है, यह मानवीय शब्द नहीं है और इसमें कोई त्रुटि नहीं है।

भी:

• ब्रह्मांड के नियन्ता एवं निर्देशक, जिसने ब्रह्मांड में सदैव सुन्दरता प्रदर्शित करना, अच्छाई एवं सत्य की रक्षा करना, तथा ढोंगियों एवं झूठों का नाश करना अपना आचरण बना लिया है, ने कुरान को संसार में सर्वाधिक स्वीकार्य, सर्वोच्च एवं सर्वाधिक प्रभावशाली सम्मान एवं सफलता का स्थान देकर उस पर अपनी मुहर लगा दी है।

• वह व्यक्ति जिसने इस्लाम का प्रतिनिधित्व और संचार किया तथा जीवन भर कुरान की व्याख्या और व्याख्या की - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - वह किसी भी अन्य व्यक्ति की तुलना में इसमें अधिक दृढ़ता से विश्वास करता था और इसे अधिक सम्मान देता था।

• जब यह बात उजागर हुई तो उन्होंने एक अलग अवस्था धारण कर ली।

• उनके अपने शब्द (हदीस) कुरान से मिलते-जुलते नहीं थे और कभी भी उसी स्तर पर नहीं हो सकते थे।

• अशिक्षित होने के बावजूद, कुरान को आधार बनाकर, वह भूत और भविष्य की अनेक घटनाओं तथा असंख्य ब्रह्मांडीय घटनाओं का पूर्ण विश्वास के साथ वर्णन करने में सक्षम थे।

अदृश्य.

• कुरान के सर्वोच्च अनुवादक के रूप में, जिनके व्यवहार में कभी भी कोई छल या कमी नहीं देखी गई थी, यहां तक कि सबसे तेज आंखों से भी नहीं, उन्होंने कुरान की हर घोषणा पर पूरी ताकत से विश्वास किया और उसकी पुष्टि की, किसी भी चीज को अपने अंदर हिलने नहीं दिया।

दृढ़ विश्वास।

ये सभी छह तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुरान पवित्र है।
अपने सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता का दिव्य-प्रकट वचन।

आगे:

- मानवता के पांचवें हिस्से से ज़्यादा लोगों ने खुद को पवित्रता और उत्साह के साथ क़ुरान के प्रति समर्पित कर दिया है, और सच्चाई जानने की अपनी इच्छा में उत्सुकता से उस पर ध्यान दिया है। कई संकेतों, घटनाओं और आध्यात्मिक अनावरणों द्वारा प्रदान की गई गवाही के अनुसार, जब भी इसे पढ़ा जाता है, तो जिन्न, फ़रिश्ते और आत्माएँ सत्य की पूजा करते हुए पतंगों की तरह इसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते हैं। यह भी इस बात की पुष्टि करता है कि क़ुरान को सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त है और इसे सर्वोच्च स्थान प्राप्त है।

- इसके अतिरिक्त, मानव जाति के विभिन्न वर्ग, सबसे सरल और निम्न से लेकर सबसे चतुर और विद्वान तक, कुरान की शिक्षा का पूरा हिस्सा लेने और इसके सबसे गहन सत्य को समझने में सक्षम हैं (प्रत्येक अपनी क्षमता के अनुसार)।

- इसके अलावा, धार्मिक विज्ञान की सभी शाखाओं के सभी प्रसिद्ध विद्वान, विशेष रूप से सर्वोच्च शरिया के महान व्याख्याकार, धर्मशास्त्र और धर्म के मूल सिद्धांतों के प्रतिभाशाली और सटीक विद्वान कुरान से अपने विभिन्न विषयों के लिए आवश्यक सभी उत्तर प्राप्त करने में सक्षम हैं। ये सभी तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि कुरान सत्य का स्रोत और वास्तविकता की खान है।

- इसके अलावा, हालांकि अरब लेखकों और कवियों में से अविश्वासियों ने, जो साहित्य और वाक्पटुता में सबसे आगे थे, कुरान पर विवाद करने की सबसे बड़ी जरूरत महसूस की, लेकिन वे वाक्पटुता में एक भी सूरा की रचना करके कभी भी कुरान की बराबरी नहीं कर पाए, इस तथ्य के बावजूद कि वाक्पटुता कुरान की चमत्कारिकता के सात सबसे प्रमुख पहलुओं में से केवल एक है। आज तक, यहां तक कि प्रसिद्ध वाक्पटुतावादी या भाषा विशेषज्ञ जिन्होंने खुद का नाम बनाने के लिए कुरान पर विवाद किया है, वे भी इसके चमत्कारिकता के एक भी पहलू का विरोध नहीं कर पाए हैं, और परिणामस्वरूप उन्हें नपुंसक चुप्पी में रहने के लिए मजबूर होना पड़ा है। यह इस बात की और पुष्टि करता है कि कुरान एक चमत्कार है और पूरी तरह से मानवीय क्षमता से परे है।

- भाषण का मूल्य, श्रेष्ठता और वाक्पटुता इसके संबंध में पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों पर आधारित है: "यह किसकी ओर से आता है, किसके लिए है और इसका उद्देश्य क्या है?" इन बिंदुओं के संबंध में, कुरान के समान कोई नहीं है, और कोई भी इसके करीब नहीं आ सकता है। क्योंकि कुरान भगवान और उनके द्वारा दिया गया भाषण और संबोधन है।

सभी संसारों का रचयिता; यह हमारे साथ उसकी बातचीत है जो किसी भी तरह से व्युत्पन्न या कृत्रिम नहीं है। यह उस व्यक्ति को संबोधित है जिसे सभी मानवता के नाम पर भेजा गया था, वास्तव में सभी प्राणियों में, मानव जाति में सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित; यह उस व्यक्ति को संबोधित है जिसके विश्वास में इतनी ताकत और चौड़ाई थी कि इसने शक्तिशाली इस्लाम को गति दी और इसके मालिक को "दो धनुष तारों के बीच की दूरी के बराबर या उससे भी अधिक निकटता"45 के पद पर पहुंचा दिया, जिससे वह शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले के रूप में वापस आ गया। यह इस दुनिया और परलोक में खुशी, ब्रह्मांड के निर्माण के परिणामों और इसके भीतर भगवान के उद्देश्यों से संबंधित मामलों का वर्णन और व्याख्या करता है। यह अपने पहले और प्राथमिक संबोधित- पैगंबर मुहम्मद के विश्वास को भी स्पष्ट करता है- जो इस्लाम के सभी सत्यों को शामिल करते हुए सबसे ऊंचा और सबसे व्यापक विश्वास है। यह विशाल ब्रह्मांड के हर पहलू को एक नक्शे, एक घड़ी या एक घर की तरह प्रकट और दिखाता है, इसे उस तरीके से वर्णित करता है जो इसे बनाने वाले शिल्पकार के अनुकूल है। अतः इस कुरान के समान चमत्कारिक व्याख्या उत्पन्न करना न तो सम्भव है, न ही इसकी चमत्कारिकता की सीमा प्राप्त की जा सकती है।

- इसके अलावा, हज़ारों सावधानीपूर्वक, उच्च बुद्धि वाले विद्वानों ने कुरान पर व्याख्या करने वाली टिप्पणियाँ लिखी हैं, जिनमें से कुछ सत्तर खंडों तक की हैं, जो स्पष्ट प्रमाण और तर्क के साथ इसकी असंख्य विशेषताओं, विशेषताओं, रहस्यों, सूक्ष्मताओं और उच्च अर्थों को साबित करते हैं, हर तरह के छिपे या अदृश्य मामले के बारे में कई संकेत दिखाते हैं। रिसाले -ए-नूर के एक सौ तीस भाग, विशेष रूप से, प्रत्येक निर्णायक तर्कों के साथ कुरान की एक गुणवत्ता या सूक्ष्म बात साबित करते हैं। इसका प्रत्येक भाग - जैसे कि कुरान की चमत्कारिकता पर पच्चीसवाँ वचन; बीसवें वचन का दूसरा स्टेशन, जो सभ्यता के चमत्कारों जैसे रेलवे और रेलवे के बारे में कुरान से कई बातें निकालता है।

45 आयत 53:9–10 का अर्थ यह है: फिर, वह निकट आया और करीब आया, इसलिए वह (इतना निकट कि केवल दो धनुषों (एक दूसरे के समीप रखे गए) के तारों के बीच की दूरी रह गई थी), या उससे भी अधिक निकट था। ईश्वर के दूत के स्वर्गारोहण के दौरान, ईश्वर ने उसके प्रति अपनी निकटता प्रकट की और उसे अपनी ओर आकर्षित किया, और दूत, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, उसकी ओर चढ़ गया, इतना ऊपर कि वह उससे "मिल" सके। यह मुलाकात, जो ईश्वर के लिए दूत की अद्वितीय निकटता को दर्शाती है, आयत 9 में "दो धनुषों (एक दूसरे के समीप रखे गए) के बीच (दूरी की निकटता)" के रूप में व्यक्त की गई है। (अनुवाद)

हवाई जहाज; पहली किरण, जिसे कुरान की निशानियाँ कहा जाता है, जो कुछ आयतों में बिजली के संकेत को स्पष्ट करती है; आठ छोटे ग्रंथ जिन्हें आठ निशानियाँ के रूप में जाना जाता है, जो दिखाते हैं कि कुरान के शब्द वास्तव में कितने सुव्यवस्थित, अर्थपूर्ण और रहस्यमय हैं; छोटा ग्रंथ (द ग्लेम्स में "सातवीं किरण") जो सूरतुल-फ़तह (सूरा 48) के अंत में आयतों की चमत्कारिकता के पाँच पहलुओं को उनके अदृश्य की ख़बर देने के दृष्टिकोण से साबित करता है - संक्षेप में, रिसाले-ए-नूर का प्रत्येक भाग कुरान की एक सच्चाई या एक रोशनी को दर्शाता है। यह सब इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कुरान जैसा कोई नहीं है: यह एक चमत्कार और एक आश्चर्य है; यह इस दृश्यमान सांसारिक क्षेत्र में अदृश्य दुनिया की भाषा है, और यह उस व्यक्ति का शब्द है जो अदृश्य के बारे में सब कुछ जानता है।

कुरान की इन्हीं खूबियों और विशेषताओं के कारण, जिन्हें हमने ऊपर, लगातार तीन समूहों में शामिल अठारह बिंदुओं में दर्शाया है, इसकी उत्कृष्ट, चमकदार संप्रभुता और इसका पवित्र, शक्तिशाली शासन पूर्ण वैभव के साथ जारी रहने में सक्षम रहा है, जिसने सदियों के चेहरों और धरती की छवि को तेरह शताब्दियों से भी अधिक समय तक रोशन रखा है। कुरान की इन्हीं खूबियों के कारण इसके प्रत्येक अक्षर को कम से कम दस पुरस्कार, दस पुण्य और दस शाश्वत फल देने का पवित्र गौरव प्राप्त है; वास्तव में, कुछ आयतों और सूरों के अक्षर सौ या एक हजार या उससे भी अधिक फल देते हैं, जबकि कुछ निश्चित समय पर प्रत्येक अक्षर का प्रकाश, पुरस्कार और मूल्य सौ गुना बढ़ जाता है। संसार भर में भ्रमण करने वाले हमारे यात्री इस बात को समझते हैं और अपने हृदय में कहते हैं: "कुरान, जो अपने सूराओं की सर्वसम्मति , अपनी आयतों की सहमति, अपनी ज्योतियों और रहस्यों की सहमति तथा अपने फलों और कार्यों की सहमति के द्वारा हर दृष्टि से चमत्कारी है, अपने प्रमाणों के साथ एक अनिवार्यतः विद्यमान एक के अस्तित्व, एकता, गुणों और नामों की गवाही देता है, और इसकी गवाही ने सभी ईमान वालों की स्थायी गवाही को सामने ला दिया है।"

इस प्रकार, कुरान से यात्री को विश्वास और ईश्वरीय एकता की शिक्षा प्राप्त हुई, इसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए, प्रथम स्टेशन के सत्रहवें चरण में कहा गया है:

ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः विद्यमान है, एक है और
अद्वितीय, जिसका अस्तित्व उसकी एकता में स्पष्ट रूप से चमत्कारिक व्याख्या के साथ कुरान द्वारा प्रदर्शित किया गया है, वह पुस्तक है जिसे फ़रिश्तों, मानवता और जिन्न की सभी प्रजातियों द्वारा स्वीकार किया गया है और जिसकी चाहत है;

जिसे वर्ष के प्रत्येक मिनट में करोड़ों लोग अत्यंत श्रद्धा के साथ पढ़ते हैं और जिसकी पवित्र प्रभुता पृथ्वी और ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों और समय के चेहरे पर स्थायी है; इसका आध्यात्मिक और प्रकाशमान अधिकार चौदह शताब्दियों से आधी पृथ्वी और मानवता के पांचवें हिस्से पर अत्यंत वैभव के साथ चला आ रहा है। इसकी पवित्र और स्वर्गीय सूरों की एकमतता, इसके प्रकाशमान दिव्य छंदों की सहमति, इसके रहस्यों और प्रकाशों की एकरूपता और इसके फलों और प्रभावों की संगति, साक्षी और स्पष्ट दृष्टि द्वारा भी इसकी गवाही और प्रमाण है।

अठारहवाँ कदम

जीवन की यात्रा कर रहे यात्री को अब पता है कि विश्वास सबसे कीमती पूंजी है जो एक इंसान के पास हो सकती है, क्योंकि यह दरिद्र मानवता को कोई क्षणभंगुर क्षेत्र या आवास नहीं, बल्कि एक विशाल ब्रह्मांड, एक शाश्वत संपत्ति प्रदान करता है जो दुनिया जितनी ही विशाल है। विश्वास क्षणभंगुर मानवजाति को वह सब भी प्रदान करता है जिसकी उसे शाश्वत जीवन के लिए आवश्यकता होती है; यह उस दुखी व्यक्ति को शाश्वत विनाश से बचाता है जो भाग्य के आगमन के लिए फांसी पर लटके होने की तरह प्रतीक्षा कर रहा है, मानवता के लिए शाश्वत सुख का एक शाश्वत खजाना खोलता है। तब यात्री खुद से कहता है: “आगे बढ़ो! विश्वास की अनंत डिग्री में से एक और डिग्री प्राप्त करने के लिए, आइए हम ब्रह्मांड की समग्रता पर विचार करें और सुनें कि यह क्या कहता है। हमें इसके घटकों और भागों से प्राप्त पाठों को पूर्ण और स्पष्ट करना चाहिए।”

कुरान से ली गई विस्तृत और व्यापक दूरबीन से देखने पर यात्री देखता है कि ब्रह्मांड इतना अर्थपूर्ण और सुव्यवस्थित है कि यह एक मूर्त पुस्तक, सर्व-महिमावान प्रभु की एक सृजित कुरान, अनंत काल से प्रार्थना करने वाले का एक सुंदर ढंग से सुसज्जित महल और सर्व-दयालु का एक व्यवस्थित शहर प्रतीत होता है। उनके निरंतर, अर्थपूर्ण विलोपन और पुनर्पुष्टि, और उनके बुद्धिमानीपूर्ण परिवर्तनों, फेरबदल और रूपांतरणों के माध्यम से, ब्रह्मांड की उस पुस्तक के सभी सूरा , छंद और शब्द - यहाँ तक कि इसके अक्षर, पंक्तियाँ, पृष्ठ, अध्याय और विभाजन -

उस एक के अस्तित्व और उपस्थिति का वर्णन करें जिसके पास पुस्तक के लेखक के रूप में सभी चीजों पर पूर्ण शक्ति और ज्ञान है - एक पूर्ण और महाप्रतापी लेखक जो सभी चीजों में सभी चीजों को देखता है और सभी चीजों के साथ सभी चीजों के संबंध को जानता है।

इसी प्रकार, इसके सभी असंख्य विभागों, प्रजातियों और कणों के साथ, इसके सभी निवासियों और अंतर्वस्तुओं के साथ, इसमें प्रवेश करने और इसे छोड़ने वाली सभी चीज़ों के साथ, और इसके सभी दैवी परिवर्तनों, रूपांतरणों और बुद्धिमत्तापूर्ण प्रक्रियाओं के साथ।

इसमें होने वाले नवीनीकरण और ताज़गी के साथ-साथ, ब्रह्मांड एक सर्वोत्कृष्ट शिल्पकार, एक अद्वितीय निर्माता के अस्तित्व और एकता की भी घोषणा करता है जो असीम शक्ति और अनंत बुद्धि के साथ कार्य करता है। निम्नलिखित दो शक्तिशाली वास्तविकताओं की गवाही, जो ब्रह्मांड जितनी ही विशाल हैं, ब्रह्मांड के इस सर्वोच्च साक्षी की पुष्टि करती हैं।

पहली वास्तविकता: यह "समय और स्थान के भीतर अस्तित्व में आना" और "संयोग" की वास्तविकता है , जिसे धर्म के सिद्धांतों और धर्मशास्त्र के विज्ञान के प्रतिभाशाली विद्वानों और साथ ही इस्लाम के संतों द्वारा अनगिनत प्रमाणों के साथ स्थापित किया गया है। इन महान लोगों के अनुसार, चूँकि दुनिया और सभी चीजों में परिवर्तन और बदलाव देखे जाते हैं, इसलिए दुनिया क्षणभंगुर होनी चाहिए और समय के भीतर बनाई गई होनी चाहिए: यह अनिर्मित और पूर्व-शाश्वत नहीं हो सकती। अगर इसे बनाया गया है, तो इसका एक निर्माता होना चाहिए जिसने इसे बनाया है। और अगर किसी चीज का अस्तित्व में आना या न आना समान रूप से संभव है और अगर उसके अस्तित्व में आने या न आने के लिए कोई आवश्यक या अनिवार्य कारण नहीं है - एक कारण जो अनिवार्य रूप से अपने आप में उत्पन्न होता है, तो वह चीज अतीत में आवश्यक या अनिवार्य और शाश्वत नहीं हो सकती। यह भी निर्णायक तर्कों के साथ सिद्ध किया गया है कि चीजों के लिए अतीत में अनंत काल तक एक के बाद एक एक दूसरे को बनाना संभव नहीं है; दूसरे शब्दों में, चीजें चक्रों में अनंत काल तक वापस नहीं जा सकती हैं जिसमें पहले वाले ने बाद वाले को बनाया हो। इसलिए, एक अनिवार्य अस्तित्ववान का अस्तित्व आवश्यक हो जाता है - जिसके समान कोई नहीं हो सकता, जिसकी समानता असंभव है, तथा जिसके अलावा अन्य सभी आकस्मिक हैं और उसके द्वारा निर्मित हैं।

“समय और स्थान के भीतर अस्तित्व में आने या लाने” की वास्तविकता ने पूरे ब्रह्मांड को व्याप्त कर दिया है। इसके कई उदाहरण आंखों को दिखाई देते हैं, जबकि बाकी को बुद्धि द्वारा देखा जा सकता है। क्योंकि हमारी आंखों के सामने हर पतझड़ में एक पूरी दुनिया मर जाती है; इसके साथ ही सैकड़ों-हजारों विभिन्न प्रकार के पौधे और छोटे जानवर भी नष्ट हो जाते हैं, प्रत्येक प्रजाति का प्रत्येक सदस्य अपने आप में एक छोटे ब्रह्मांड की तरह होता है। हालाँकि, यह इतनी व्यवस्थित मृत्यु है कि सभी चीजें अपने स्थान पर बीज और अंडे छोड़ जाती हैं - दया और बुद्धि, शक्ति और ज्ञान के छोटे चमत्कार - ताकि वसंत में वे एक नए पुनरुत्थान और पुनर्जन्म का साधन बन सकें। वे बीजों और अंडों को अपने कर्मों की किताबें और अपने द्वारा किए गए कर्तव्यों की योजनाएँ और अभिलेख सौंपते हैं, उन्हें सर्व-महान संरक्षक की बुद्धि और संरक्षण को सौंपते हैं, और उसके बाद ही वे मरते हैं।

वसंत ऋतु में, मृत पेड़, जड़ें और कुछ जानवर फिर से जीवित हो जाते हैं जैसे वे थे, इस प्रकार लाखों पौधे जीवित हो जाते हैं।

सर्वोच्च पुनरुत्थान के उदाहरण, नमूने और प्रमाण। कुछ अन्य के स्थान पर, उनसे मिलते-जुलते पौधों और जानवरों को अस्तित्व और जीवन में लाया जाता है, इस प्रकार पिछले वसंत के प्राणियों के पन्नों को उनके कर्मों और कार्यों के साथ प्रकाशित किया जाता है, बिल्कुल एक विज्ञापन की तरह।

इस प्रकार, वे इस आयत का एक अर्थ प्रदर्शित करते हैं, और जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाएँगी (81:10)। और फिर, प्रत्येक पतझड़ में, एक पूरी दुनिया मर जाती है, और प्रत्येक बसंत में एक नई दुनिया अस्तित्व में आती है।

यह मृत्यु और पुनर्जन्म इतने व्यवस्थित ढंग से आगे बढ़ता है, और इतनी सारी प्रजातियों की मृत्यु और पुनर्जन्म उनके भीतर इतने व्यवस्थित और नियमित ढंग से होता है, कि ऐसा लगता है जैसे दुनिया एक अतिथिगृह है जहाँ सजीव प्राणी कुछ समय के लिए निवास करते हैं, जहाँ यात्रा करने वाली दुनियाएँ और प्रवासी क्षेत्र आते हैं, अपने कर्तव्यों को पूरा करते हैं, और फिर अपने रास्ते पर चले जाते हैं। और इस प्रकार, सभी बुद्धि के लिए, सूर्य की स्पष्टता के साथ, आवश्यक अस्तित्व, असीम शक्ति और एक सर्व-महान व्यक्ति की अनंत बुद्धि स्पष्ट है जो इस दुनिया में कई सजीव क्षेत्रों और कर्तव्य-पूर्ण ब्रह्मांडों को पूर्ण बुद्धि, ज्ञान, सामंजस्य, संतुलन, व्यवस्था और नियमितता के साथ बनाता और अस्तित्व में लाता है, और फिर उन्हें प्रशिक्षण, पोषण, पालन और रखरखाव के उद्देश्यों के लिए नियोजित करता है - सभी दिव्य उद्देश्यों और दयालु लक्ष्यों के लिए, पूर्ण शक्ति और करुणा के साथ। हम रिसाले-ए-नूर पर छोड़ देते हैं

और धर्मशास्त्र की पुस्तकों में समय और स्थान के भीतर लाने और अस्तित्व में आने से संबंधित मामलों की आगे की चर्चा।

जहाँ तक आकस्मिकता की बात है, यह भी पूरे ब्रह्मांड पर हावी है और इसे घेरे हुए है। क्योंकि हम देखते हैं कि सभी चीजें - चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशेष, बड़ी हों या छोटी, सबसे ऊँचे आकाश से लेकर ज़मीन तक, परमाणु से लेकर ग्रह तक - एक विशेष सार, एक विशिष्ट रूप, एक अलग पहचान, विशेष गुण, बुद्धिमान गुण और लाभकारी घटकों के साथ अस्तित्व में लाई गई हैं। अब,

- उस विशेष सार और प्रकृति को उसकी विशेषताएं प्रदान करना
  अनंत संभावनाओं में से;
- जितनी भी संभावनाएं और सम्भावनाएं कल्पना की जा सकती हैं, उनमें से उसे विशिष्ट, विशिष्ट और उपयुक्त रूप प्रदान करना;

- उस प्राणी को उसके अनुकूल पहचान के साथ अन्य प्राणियों से अलग करना
  प्रजातियों के सदस्यों जितनी ही संभावनाएं;

• इसे अद्वितीय, उपयुक्त और लाभकारी विशेषताएं प्रदान करना, जबकि यह असंख्य संभावनाओं और संभावनाओं के बीच निराकार और संकोची है, जो विशेषताओं और उनकी डिग्री की विविधताओं के समान ही असंख्य हैं;

• और उस निराकार प्राणी को बुद्धिमान गुण और लाभकारी अंग प्रदान करना, जो असंख्य संभावनाओं और संभावनाओं के बीच उलझन में है और लक्ष्यहीन है, जो अनंत कल्पनीय मार्गों और तौर-तरीकों से उत्पन्न होता है - ये सभी आवश्यक अस्तित्व, अनंत शक्ति और अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी की असीमित बुद्धि के संकेत और प्रमाण हैं: वे पुष्टि करते हैं कि यह वही है जो इन सभी आकस्मिक प्राणियों के विशिष्ट ठोस रूपों और आकारों, विशेषताओं और स्थितियों को निर्दिष्ट, चुनता, निर्दिष्ट, भेद करता और बनाता है, चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशिष्ट। वे यह भी संकेत देते हैं कि कोई भी वस्तु या पदार्थ उससे छिपा नहीं है, उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, और उसके लिए सबसे बड़ा कार्य भी उतना ही आसान है जितना कि सबसे छोटा; वे दिखाते हैं कि वह एक झरने को उतनी ही आसानी से बना सकता है जितनी आसानी से एक पेड़ और एक पेड़ को उतनी ही आसानी से बना सकता है जितनी आसानी से एक बीज। यह सब, फिर, आकस्मिकता की वास्तविकता से संबंधित है, और ब्रह्मांड द्वारा वहन की जाने वाली सर्वोच्च साक्षी का एक पंख बनाता है।

चूँकि ब्रह्माण्ड की यह गवाही, जिसके दो पंख और दो वास्तविकताएँ हैं, रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में स्थापित और व्याख्या की जा चुकी है, विशेष रूप से बाईसवें और बत्तीसवें शब्दों में, साथ ही बीसवें और तैंतीसवें अक्षरों में, इसलिए हम अपने पाठकों को इन ग्रंथों का संदर्भ देते हैं और यहाँ इस अत्यंत लंबी व्याख्या को संक्षिप्त करते हैं।

दूसरी वास्तविकता: यह वास्तविकता ब्रह्मांड की संपूर्ण योजना से निकलती है, जो इसकी महान और सार्वभौमिक गवाही का दूसरा पंख भी है। यह इस प्रकार है:

सहयोग या पारस्परिक सहायता की एक वास्तविकता उन प्राणियों के बीच देखी जा सकती है जो अपना अस्तित्व बनाए रखने की कोशिश कर रहे हैं - और, यदि वे सजीव हैं, तो अपना जीवन - और विभिन्न क्रांतियों और परिवर्तनों से उत्पन्न निरंतर उत्तेजना के बीच अपने कर्तव्यों को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं, एक ऐसा प्रयास जो उनकी क्षमताओं से कहीं परे है।

हम देखते हैं कि तत्व जीवित प्राणियों की सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं: बादल, विशेष रूप से, वनस्पति जगत की सहायता के लिए आते हैं, जबकि वनस्पति जगत पशु जगत की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है, और पशु जगत पृथ्वी की सहायता करने के लिए तत्पर रहता है।

मनुष्यों की दुनिया। स्तनों से दूध बहता है, जैसे स्वर्ग का झरना, बच्चों के लिए भोजन उपलब्ध कराने के लिए; जीवित प्राणियों को उनके पोषण और जीवन की अन्य आवश्यकताएं अप्रत्याशित स्थानों से इस तरह से दी जाती हैं जो उनकी क्षमता से बिल्कुल परे है; भोजन के कण शरीर की कोशिकाओं को बनाए रखने और उनकी मरम्मत करने के लिए तेज़ी से आगे बढ़ते हैं, इत्यादि। सर्व-दयालु भगवान के पूर्ण नियंत्रण, निर्देशन और नियोजन के तहत सहयोग की वास्तविकता के ये और कई अन्य ऐसे उदाहरण सभी दुनियाओं के स्वामी की सार्वभौमिक और दयालु प्रभुता को प्रदर्शित करते हैं, जो ब्रह्मांड को एक महल की तरह चलाते हैं।

वास्तव में, जो वस्तुएं ठोस, निर्जीव और असंवेदनशील हैं, लेकिन फिर भी वे एक दूसरे की कोमल और सचेत तरीके से मदद करती हैं, वे निस्संदेह एक असीम दयालु और बुद्धिमान महाप्रभु की शक्ति, दया और आदेश के कारण एक दूसरे की सहायता के लिए दौड़ पड़ती हैं।

ब्रह्मांड में व्याप्त सार्वभौमिक सहयोग; ग्रहों से लेकर सजीव प्राणियों के अंगों, अंगों और शारीरिक कणों तक सभी चीजों में सर्वोच्च क्रम के साथ व्याप्त सर्व-समावेशी संतुलन और सर्वव्यापी संरक्षण; वह अलंकरण जिसकी कलम पूरे ब्रह्मांड पर चलती है, आकाश के सुनहरे चेहरे और पृथ्वी के अलंकृत चेहरे से लेकर फूलों के नाजुक चेहरों तक; आकाशगंगा से लेकर सब्जियों और फलों, जैसे कि मक्का और अनार तक सभी चीजों पर व्याप्त व्यवस्था और संगठन; और सूर्य, चंद्रमा, तत्वों और बादलों से लेकर मधुमक्खियों तक सभी चीजों को कर्तव्य सौंपना - ये सभी विशाल वास्तविकताएं अपनी विशालता के अनुपात में एक गवाही देती हैं, और उनकी गवाही ब्रह्मांड द्वारा दी गई गवाही का दूसरा पंख बनाती है। चूंकि रिसाले -ए-नूर ने इसे अन्यत्र समझाया है, इसलिए हम यहां इस संक्षिप्त संकेत से संतुष्ट होंगे।

विश्व से यात्रा करने वाले यात्री ने ब्रह्माण्ड से जो विश्वास का पाठ सीखा था, उसका संक्षिप्त उल्लेख करते हुए, द अठारहवें कदम में कहा गया है
पहला स्टेशन:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः विद्यमान है, जिसके समान कोई और किसी भी तरह से अस्तित्व में नहीं आ सकता, तथा जिसके अतिरिक्त अन्य सभी आकस्मिक हैं; वह एक है, अद्वितीय है, जिसका अनिवार्य अस्तित्व उसकी एकता में ब्रह्माण्ड द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित किया जाता है - वह विशाल पुस्तक जो भौतिक रूप में आच्छादित है, सर्वोच्च कुरआन का अवतार, अलंकृत और व्यवस्थित महल, भव्य और सुव्यवस्थित नगर - अपने सभी सूरों, आयतों, शब्दों, अक्षरों, अध्यायों, भागों, पृष्ठों और पंक्तियों के साथ, तथा अपने मूल विभागों, प्रजातियों, भागों और कणों, अपने निवासियों और अंतर्वस्तुओं, तथा इसमें क्या प्रवेश करता है और क्या छोड़ता है, की सहमति के साथ। यह परीक्षण है-

समय और स्थान के भीतर, परिवर्तन और आकस्मिकता द्वारा, और धर्मशास्त्र के विज्ञान में सभी विद्वानों की सहमति से अस्तित्व में आने या लाने की उत्कृष्ट व्यापक, विशाल और परिपूर्ण वास्तविकता द्वारा प्रमाणित। यह एक गवाही है जिसमें ज्ञान और नियमितता के साथ इसके रूप और सामग्री को बदलने और व्यवस्था और सामंजस्य के साथ इसके अक्षरों और शब्दों के नवीनीकरण की वास्तविकता भी शामिल है। यह सहयोग, पारस्परिक प्रतिक्रिया, एकजुटता, अंतर्संबंध, माप, संतुलन और संरक्षण की वास्तविकता की महानता और सर्व-समावेशीता द्वारा प्रस्तुत एक गवाही भी है - जो सभी इसके भीतर मौजूद सभी प्राणियों में स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं।

उन्नीसवाँ कदम

जिज्ञासु और तड़पता यात्री, जो इस स्तर तक ऊपर वर्णित अठारह श्रेणियों से आगे बढ़कर सत्य के सिंहासन तक पहुँच गया है, और जो दुनिया के निर्माता को अप्रत्यक्ष रूप से जानने की श्रेणी से सीधे उसे संबोधित करने के पद तक उठ गया है, अपनी आत्मा को इस प्रकार संबोधित करता है: "फ़ातिहा (कुरान का पहला अध्याय) की शुरुआत में हम अप्रत्यक्ष रूप से ईश्वर की स्तुति करते हैं, (कहते हैं: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है।")। हालाँकि, जब हम इय्याका ("केवल आप") शब्द तक पहुँचते हैं , तो हम उसकी उपस्थिति में प्रवेश करते हैं और उसे सीधे संबोधित करते हैं। इससे संकेत लेते हुए, हमें इस अप्रत्यक्ष खोज को छोड़ देना चाहिए और जिसे हम खोज रहे हैं, उसे संबोधित करना चाहिए, उससे सीधे उसके बारे में प्रश्न करना चाहिए। आखिरकार, अगर कोई सूरज के बारे में जानना चाहता है, जो सभी चीजों को दिखाता है, तो उसे सूरज से ही पूछना चाहिए।

जो सब कुछ दिखाता है, वह खुद को और भी स्पष्ट रूप से दिखाता है। जिस तरह हम सूर्य को उसकी किरणों के माध्यम से देखते हैं, उसी तरह हम अपनी क्षमताओं के अनुसार अपने निर्माता को उसके सभी सुंदर नामों और पवित्र गुणों के माध्यम से जानने की कोशिश कर सकते हैं। हम यहाँ संक्षेप में और संक्षिप्तता के साथ उन अनगिनत मार्गों में से दो को प्रस्तुत करेंगे जो इस लक्ष्य की ओर ले जाते हैं; हम इन दो मार्गों के असंख्य चरणों में से दो और इन दो चरणों की असंख्य वास्तविकताओं में से दो की व्याख्या करेंगे।

पहली वास्तविकता: हम एक सर्वव्यापी गतिविधि की व्यापक, निरंतर, व्यवस्थित और विस्मयकारी वास्तविकता को स्पष्ट रूप से देख पाते हैं जो स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी चीजों और प्राणियों को निर्देशित, परिवर्तित और नवीनीकृत करती है। उस व्यापक रूप से बुद्धिमान गतिविधि की वास्तविकता के भीतर व्यक्ति प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के सत्य को तुरंत समझने में सक्षम होता है। बदले में, प्रभुत्व की उस व्यापक रूप से दयालु अभिव्यक्ति के सत्य के भीतर, व्यक्ति दिव्यता के प्रदर्शन के सत्य को पहचानने में सक्षम होता है।

इस निरंतर, निरंकुश और बुद्धिमानीपूर्ण क्रियाकलाप के पर्दे के पीछे से, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ कर्ता के कार्यों को इतनी स्पष्टता से देखा जा सकता है कि ऐसा लगता है जैसे कोई उन्हें प्रत्यक्ष रूप से देख रहा हो। और प्रभुता के इन पोषण, निर्देशन और प्रशासन कार्यों के पर्दे के पीछे से, सभी चीजों में प्रकट होने वाले दिव्य नामों को सबसे स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

फिर उन सर्वसुंदर नामों के पर्दे के पीछे से, जो स्वयं को महिमा और अनुग्रह के साथ प्रकट करते हैं, सात पवित्र गुणों के अस्तित्व और संचालन को ज्ञान की निश्चितता की डिग्री पर, या बल्कि, दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता की डिग्री पर, या यहां तक कि अनुभव की निश्चितता पर निष्कर्ष निकाला जा सकता है। और जैसा कि पूरी सृष्टि द्वारा इन सात गुणों, अर्थात् जीवन, ज्ञान, शक्ति, इच्छा, श्रवण, दृष्टि और वाणी की अनंत अभिव्यक्तियों के माध्यम से प्रमाणित किया गया है, इन गुणों द्वारा वर्णित अनिवार्य रूप से विद्यमान एक का अस्तित्व, इन नामों से ज्ञात एकता का वह एकमात्र, वह सर्व-स्वतंत्र, शाश्वत रूप से प्रार्थित एक, हृदय में विश्वास की आंख से, स्वयं-स्पष्ट रूप से, आवश्यक रूप से जाना जाता है, जैसे कि वह सूर्य की तुलना में अधिक स्पष्ट और चमकदार रूप से देखा जा रहा हो।

एक सुंदर और सार्थक पुस्तक और एक अच्छी तरह से निर्मित घर के लिए क्रमशः लेखन और निर्माण के कार्य आवश्यक हैं; सुंदर लेखन और अच्छी तरह से निर्माण के कार्य के लिए लेखक और निर्माता की उपाधियों की आवश्यकता होती है; लेखक और निर्माता की उपाधियाँ स्पष्ट रूप से लेखन और निर्माण की कलाओं और गुणों को दर्शाती हैं; और इन कलाओं और गुणों के लिए स्पष्ट रूप से एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो इन नामों और गुणों से योग्य हो, और जो एक कलाकार, एक शिल्पकार और एक एजेंट हो। क्योंकि, जिस तरह से कर्ता के बिना कोई कार्य होना असंभव है, या नाम के बिना कोई नाम होना असंभव है, उसी तरह से विशेषता के बिना कोई गुण होना असंभव है, या शिल्पकार के बिना कोई शिल्प होना असंभव है।

इस वास्तविकता और सिद्धांत के आधार पर, ब्रह्मांड और उसमें मौजूद सभी चीजें ईश्वरीय नियति की कलम द्वारा लिखी गई अनगिनत सार्थक पुस्तकों और पत्रों तथा ईश्वरीय शक्ति के औजारों से निर्मित अनगिनत इमारतों और महलों के संग्रह के समान हैं। ये सभी, व्यक्तिगत रूप से हजारों तरीकों से और साथ में असंख्य तरीकों से, प्रभुता और दया के असीम कार्यों की अनंत गवाही देते हैं।

इन कर्मों के साथ, एक हजार एक सर्वसुन्दर नाम, जो इन कर्मों के मूल हैं, तथा सात महागुण, जो नामों के स्रोत हैं, अपनी अनंत अभिव्यक्तियों के माध्यम से, तथा अनंत और अनन्त तरीकों से, आवश्यक अस्तित्व और अस्तित्व की गवाही देते हैं।

एक सर्व-प्रतापी सत्ता की एकता जो इन सात पवित्र, सर्वव्यापी गुणों का स्रोत है और उनके द्वारा योग्य है। और इसी तरह, उन प्राणियों में पाए जाने वाले सौंदर्य, अनुग्रह, मूल्य और पूर्णता के सभी उदाहरण प्रभुत्व के कार्यों की पवित्र सुंदरता और पूर्णता के लिए एक के रूप में गवाही देते हैं; वे शाश्वत रूप से मांगे जाने वाले दिव्य नामों और गुणों और सर्व-महिमावान की आवश्यक विशेषताओं की गवाही देते हैं, जो उनके लिए उपयुक्त और योग्य हैं। और इन सभी नामों, गुणों और विशेषताओं के साथ, वे सर्व-शुद्ध और पवित्र दिव्य सार की पवित्र सुंदरता और पूर्णता की गवाही देते हैं।

इस प्रकार, प्रभुत्व का सत्य जो सभी गतिविधियों की वास्तविकता के भीतर खुद को प्रकट करता है, वह ज्ञान और बुद्धि के साथ सृजन, आविष्कार, निर्माण और उत्पत्ति जैसे गुणों और कार्यों में खुद को प्रकट करता है; यह खुद को निर्धारित करने, गढ़ने, निर्देशित करने और व्यवस्था और संतुलन के साथ प्रशासन करने में प्रकट करता है; यह खुद को उद्देश्य और इच्छा के साथ रूपांतरित करने, बदलने, अवतरित होने और परिपूर्ण करने में प्रकट करता है; यह खुद को खिलाने, पालने और कोमलता और दया के साथ उपहार और उपहार देने के माध्यम से ज्ञात करता है। और प्रभुत्व की अभिव्यक्ति की वास्तविकता के भीतर पाई और अनुभव की गई दिव्यता के आत्म-प्रदर्शन की वास्तविकता खुद को सर्व-सुंदर नामों की दयालु और उदार अभिव्यक्तियों और सात स्थापित, सकारात्मक या पुष्टिकारक गुणों की राजसी और सुंदर अभिव्यक्तियों के माध्यम से ज्ञात और पहचानी जाती है: जीवन, ज्ञान, शक्ति, इच्छा, श्रवण, दृष्टि या दृष्टि, और भाषण।

जिस प्रकार वाणी का गुण परम पवित्र दिव्य तत्व को रहस्योद्घाटन और प्रेरणा के माध्यम से ज्ञात कराता है, उसी प्रकार शक्ति का गुण उसे अपने कुशल कार्यों और प्रभावों के माध्यम से ज्ञात कराता है, जो उसके मूर्त शब्द हैं। संपूर्ण ब्रह्मांड को मूर्त मानदंडों की एक पुस्तक के रूप में प्रस्तुत करते हुए जो सत्य और असत्य में अंतर करते हैं, शक्ति एक सर्वशक्तिमान महामहिम का वर्णन और परिचय कराती है।

जहाँ तक ज्ञान के गुण का प्रश्न है, वह असंख्य बुद्धिमान, सुव्यवस्थित और संतुलित कलाकृतियों के माध्यम से, तथा उन असंख्य प्राणियों के माध्यम से, जो ज्ञान के माध्यम से प्रशासित, निर्देशित, सुशोभित और विशिष्ट बनाये जाते हैं, एक एकल, सर्वज्ञ और सर्व-पवित्र दिव्य सार को प्रकट करता है।

जहाँ तक जीवन के गुण का प्रश्न है, यह अपने स्वयं के प्रमाणों तथा ईश्वर की शक्ति की घोषणा करने वाले सभी कार्यों द्वारा स्थापित होता है; यह सभी सुव्यवस्थित, बुद्धिमान, संतुलित और सुशोभित रूपों और अवस्थाओं द्वारा ज्ञात होता है जो ईश्वर की शक्ति को इंगित करते हैं।

ईश्वर के ज्ञान के साथ-साथ अन्य गुणों द्वारा प्रदान किये गये सभी प्रमाणों से भी।
इस प्रकार जीवन, जो अपने सभी प्रमाणों के साथ सभी जीवित प्राणियों को साक्षी के रूप में दिखाता है, जो इसके दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, एक सर्व-जीवित और स्वयं-अवस्थावान सत्ता को ज्ञात करता है। जीवन ब्रह्मांड को एक सर्वोच्च दर्पण में भी बदल देता है जो अनगिनत छोटे दर्पणों से बना होता है - एक ऐसा दर्पण जो लगातार बदलता और नवीनीकृत होता रहता है ताकि नए और विविध अभिव्यक्तियों और डिजाइनों की एक निरंतर बदलती सरणी प्रदर्शित की जा सके। इसी तरह, दृष्टि और श्रवण और इच्छा और वाणी के प्रत्येक गुण उसी तरह से सर्व-पवित्र दिव्य सार को प्रकट और ज्ञात करते हैं जैसे कि ब्रह्मांड करता है।

इसके अलावा, जिस प्रकार गुण सर्व-महान् दिव्य सार के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं, उसी प्रकार वे जीवन के अस्तित्व और वास्तविकता तथा इस तथ्य को भी स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि दिव्य सार शाश्वत रूप से जीवित है।
क्योंकि जानना जीवन का लक्षण है; सुनना जीवित होने का संकेत है; देखना केवल जीवितों का काम है; और इच्छा करना केवल जीवन के द्वारा ही संभव है। उद्देश्यपूर्ण शक्ति केवल जीवित प्राणियों में पाई जाती है, जबकि वाणी उन लोगों की क्षमता है जो जीवन और ज्ञान से संपन्न हैं। इन सभी वास्तविकताओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि जीवन के दिव्य गुण के पास ब्रह्मांड से सात गुना बड़े प्रमाण हैं, और ऐसे प्रमाण हैं जो उसके अपने अस्तित्व और उस व्यक्ति के अस्तित्व की घोषणा करते हैं जिसे वह योग्य बनाता है। इसी कारण से जीवन अन्य सभी गुणों का आधार और स्रोत है: यह ईश्वर के महानतम नाम का उद्गम और धुरी है। चूँकि रिसाले-ए-नूर ने इस प्राथमिक सत्य को शक्तिशाली प्रमाणों के साथ स्थापित किया है और, एक हद तक, इसे स्पष्ट किया है, इसलिए हम अब इस महासागर से एक बूंद लेकर संतुष्ट हो जाएँगे।

दूसरी वास्तविकता: यह ईश्वरीय प्रवचन है जो इस प्रकार से उत्पन्न होता है :
वाणी का दिव्य गुण.

जैसा कि आयत में कहा गया है: यदि सारा समुद्र मेरे रब के शब्दों को लिखने के लिए स्याही होता, तो भी समुद्र मेरे रब के शब्दों के समाप्त होने से पहले ही समाप्त हो जाता, भले ही हम उसके साथ वैसा ही कुछ और भी ले आएं (18:109), ईश्वरीय वाणी अनंत है। किसी प्राणी के अस्तित्व को प्रदर्शित करने वाला सबसे स्पष्ट संकेत उसकी वाणी है। इस प्रकार, यह वास्तविकता शाश्वत वक्ता के अस्तित्व और एकता का एक अनंत प्रमाण प्रस्तुत करती है। जैसा कि इस ग्रंथ के चौदहवें और पंद्रहवें चरण में बताया गया है, रहस्योद्घाटन और प्रेरणा इस वास्तविकता के दो शक्तिशाली प्रमाण हैं; ईश्वरीय रूप से प्रकट की गई पुस्तकें, जैसा कि दसवें चरण में उल्लेख किया गया है, एक विस्तृत प्रमाण हैं, और जैसा कि सत्रहवें चरण में संकेत दिया गया है, चमत्कारिक व्याख्या वाला कुरान सबसे शानदार और व्यापक प्रमाण है। इसलिए, इस वास्तविकता की व्याख्या उन लोगों को संदर्भित करते हुए

कदम, और शक्तिशाली कविता के प्रकाश और रहस्यों से संतुष्ट होकर: ईश्वर (स्वयं) गवाही देता है कि निश्चित रूप से उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है, और इसी तरह फ़रिश्ते और ज्ञान से संपन्न लोग भी सच्चाई और ईमानदारी को बनाए रखने में दृढ़ हैं: (ये सभी गवाही देते हैं कि) उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है, वह अप्रतिरोध्य शक्ति वाला, सर्व-तत्वदर्शी है (3:18), जो इस वास्तविकता को चमत्कारिक ढंग से घोषित करता है और सभी पूर्ववर्ती लोगों के साथ अपनी गवाही जोड़ता है, हमारा यात्री आगे नहीं जाता है।

इस पवित्र स्थान पर यात्री ने जो सबक सीखा है, उसके संक्षिप्त अर्थ के संदर्भ में, द नाइनटीन्थ स्टेप ऑफ द होली में कहा गया है
पहला स्टेशन:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई भी देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः अस्तित्ववान, एकल, अद्वितीय है, जिसके पास सर्वसुन्दर नाम और सर्वोत्कृष्ट गुण हैं, तथा जिसका वर्णन सबसे उत्कृष्ट है।
>
> उनकी एकता में उनका आवश्यक अस्तित्व उनके सभी पवित्र और सर्वव्यापी गुणों और उनके सभी सुंदर नामों द्वारा स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होता है, जो स्वयं को निरंतर प्रकट करते हैं, और जिनकी अभिव्यक्तियाँ उनके आवश्यक गुणों और क्रियाशील कृत्यों की सहमति से प्रदर्शित होती हैं। यह प्रभुता के प्रकटीकरण में दिव्यता के आत्म-प्रकाशन की उदात्त वास्तविकता द्वारा प्रमाणित होता है, जो इच्छा और शक्ति के माध्यम से आविष्कार, सृजन, निर्माण और उत्पत्ति के कार्यों के माध्यम से, चुनाव और बुद्धि के माध्यम से निर्धारण, निर्माण, प्रशासन और निर्देशन के कार्यों के माध्यम से, और नियति और दया के माध्यम से विस्तार, आदेश, संरक्षण, प्रबंधन और प्रदान करने के कार्यों के माध्यम से निरंतर, सर्वव्यापी गतिविधि में खुद को प्रकट करता है - सभी पूर्ण व्यवस्था, सामंजस्य और संतुलन के साथ। इसकी पुष्टि आयत के रहस्यों की उत्कृष्ट और सर्वव्यापी सच्चाई से भी होती है: ईश्वर (स्वयं) गवाही देता है कि निश्चय ही उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, और इसी प्रकार फ़रिश्ते और ज्ञानवान भी, जो सत्य और ईमानदारी पर दृढ़ रहते हैं, ऐसा ही करते हैं: (ये सभी गवाही देते हैं कि) उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं है, वह अत्यन्त महिमावान, अप्रतिम सामर्थ्यवान, अत्यन्त तत्वदर्शी है (3:18)।

टिप्पणी

ऊपर दिए गए दूसरे स्टेशन के पहले अध्याय के उन्नीस चरणों में प्रदर्शित प्रत्येक सत्य न केवल अपने वास्तविक अस्तित्व के माध्यम से ईश्वर के अनिवार्य अस्तित्व की गवाही देता है, बल्कि अपनी व्यापकता के माध्यम से दिव्य एकता और एकरूपता की भी गवाही देता है। हालाँकि, चूँकि वे मुख्य रूप से ईश्वरीय अस्तित्व को सबसे स्पष्ट और स्पष्ट रूप से स्थापित करते हैं, इसलिए उन्हें ईश्वर के अस्तित्व की आवश्यकता के प्रमाण के रूप में माना जाता है।

दूसरे अध्याय के दूसरे अध्याय के लिए, चूँकि प्रस्तुत किए जाने वाले सत्य मुख्य रूप से और स्पष्ट रूप से ईश्वरीय एकता को स्थापित और सिद्ध करते हैं, तथा ईश्वरीय अस्तित्व को गौण रूप से सिद्ध करते हैं, इसलिए उन्हें ईश्वरीय एकता के प्रमाण माना जाता है। वास्तव में, दोनों अध्यायों में प्रस्तुत प्रमाण ईश्वर के अस्तित्व और एकता दोनों को सिद्ध करते हैं। हालाँकि, उनके अंतर को इंगित करने के लिए, पहले अध्याय में बार-बार कहा गया है: "यह सर्वोच्च व्यापक वास्तविकता (या सत्य) द्वारा प्रमाणित है...", जबकि दूसरे अध्याय में यह कहा जाएगा: "यह सर्वोच्च व्यापक वास्तविकता (या सत्य) में देखा जाता है...", ईश्वरीय एकता की स्पष्ट दृश्यता के संदर्भ में।

मेरा इरादा दूसरे अध्याय के चरणों को उसी तरह से समझाने का था जैसा मैंने पहले अध्याय में किया था, लेकिन विभिन्न बाधाओं के कारण मैं चीजों को संक्षिप्त रखने के लिए बाध्य हूँ। पाठक रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों का संदर्भ ले सकते हैं
उनके स्पष्टीकरण के लिए.

दूसरा अध्याय: ईश्वरीय एकता के प्रमाण

वह यात्री जो विश्वास प्राप्त करने के लिए दुनिया में भेजा गया था, और जिसने पूरे ब्रह्मांड में एक बौद्धिक यात्रा की है, सभी चीजों से उनके निर्माता के बारे में पूछते हुए और हर जगह अपने भगवान को खोजते हुए, अंततः अनुभव की निश्चितता के साथ अपने देवता को पा लिया है, विशेष रूप से उनके आवश्यक अस्तित्व के संबंध में, और अब अपनी बुद्धि से कहता है: "आओ, हम अपने अनिवार्य रूप से विद्यमान निर्माता की एकता के प्रमाण देखने के लिए एक नई यात्रा पर निकलेंगे।"

पहला चरण

और इसलिए वे एक साथ आगे बढ़े। पहले चरण में, वे देखते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में व्याप्त चार पवित्र वास्तविकताएँ या सत्य स्वयं-स्पष्ट रूप से ईश्वर की एकता को आवश्यक बनाते हैं।

पहला सत्य: परम दिव्यता मानवजाति का प्रत्येक

भाग अपने "प्राकृतिक" जीवन के माध्यम से पूजा की एक विधा में लगा हुआ है या उसे प्रकट करता है: अन्य जीवित प्राणियों के निर्माण और महत्वपूर्ण कार्यों, साथ ही साथ निर्जीव सृष्टि द्वारा निर्धारित सेवाएं, वास्तव में उनके लिए विशेष रूप से पूजा का एक रूप हैं; प्रत्येक भौतिक और आध्यात्मिक उपहार और अनुग्रह प्राणियों को उस एक की पूजा और प्रशंसा करने के लिए प्रेरित करने का एक साधन है जो पूजा और प्रशंसा के लिए अद्वितीय रूप से योग्य है। वास्तव में, सभी प्रकट-

अदृश्य और आध्यात्मिक उत्सर्जन और विकिरण जैसे रहस्योद्घाटन और प्रेरणाएं सर्वसम्मति से इस निश्चित तथ्य की घोषणा करती हैं कि एक देवता है जिसकी पूजा की जाती है और जो पूजा के योग्य है। यह सब स्वयं-स्पष्ट रूप से इस निश्चित तथ्य को साबित करता है कि पूरे ब्रह्मांड में एक पूर्ण देवता व्याप्त है। और यह देवता किसी भी तरह से साझेदारी स्वीकार नहीं कर सकता। ऐसा इसलिए है क्योंकि जो लोग इस देवता या इस तथ्य के प्रति कि उसकी पूजा की जा रही है और वह पूजा के योग्य है, धन्यवाद और प्रशंसा के साथ प्रतिक्रिया करते हैं, वे ब्रह्मांड के वृक्ष के आगे के हिस्सों पर सचेत फल हैं। यदि दूसरे लोग उन सचेत प्राणियों को इस तरह से संतुष्ट और अपने दायित्व के अधीन करने में सक्षम हों कि वे अपनी सच्ची पूजा की वस्तु को त्याग दें, जिसे उसकी अदृश्यता के कारण तुरंत भुला दिया जा सकता है, तो यह दिव्यता की प्रकृति और उसके पवित्र उद्देश्यों के इतने पूर्ण विरोधाभास में होगा कि इसे किसी भी तरह से स्वीकार नहीं किया जा सकता है। यही कारण है कि कुरान बार-बार और जोरदार तरीके से बहुदेववाद का खंडन करता है और बहुदेववादियों को नरक की धमकी देता है।

दूसरा सत्य : पूर्ण प्रभुत्व

यह पूरे ब्रह्मांड में, खास तौर पर जीवित प्राणियों के जीवन में देखा गया है कि एक बुद्धिमान और दयालु छिपा हुआ हाथ हर जगह उनके प्रावधान और प्रशासन के लिए एक ही तरीके से काम करता है, फिर भी आमतौर पर एक अप्रत्याशित रूप में। यह निश्चित रूप से पूर्ण प्रभुत्व का प्रतिबिंब है और इसके वास्तविक अस्तित्व के लिए एक निर्णायक प्रमाण है।

चूँकि एक पूर्ण प्रभुत्व मौजूद है, इसलिए यह निश्चित रूप से किसी भी भागीदारी को स्वीकार नहीं कर सकता। क्योंकि प्रभुत्व के सबसे महत्वपूर्ण लक्ष्य और उद्देश्य - जैसे कि इसकी सुंदरता की अभिव्यक्ति, इसकी पूर्णता की घोषणा, इसकी बहुमूल्य कलाओं का प्रदर्शन और इसके अज्ञात कौशल का प्रदर्शन - विशेष और जीवित प्राणियों में संयुक्त और केंद्रित हैं, किसी अन्य "प्रभुत्व" की कोई भी भागीदारी - यहाँ तक कि सबसे विशेष चीजों और सबसे छोटे जीवित प्राणियों में भी - उन उद्देश्यों की प्राप्ति को विफल कर देगी और उन लक्ष्यों को नष्ट कर देगी।

इसके अलावा, चूँकि किसी अन्य "प्रभुत्व" की भागीदारी उन उद्देश्यों और उनकी इच्छा रखने वाले से सचेत प्राणियों के चेहरे को दूर कर देगी, और उन चेहरों को साधनों और कारणों की ओर मोड़ देगी, यह प्रभुत्व की प्रकृति या सार के बिल्कुल विपरीत और शत्रुतापूर्ण होगा: इसे देखते हुए, पूर्ण प्रभुत्व किसी भी तरह से इसकी अनुमति नहीं दे सकता है। यह इस मौलिक सत्य के कारण है कि ईश्वर की पवित्रता की अपनी सभी लगातार घोषणाओं के साथ, और

किसी भी दोष और साझेदार से उसकी पूर्ण स्वतंत्रता की पुष्टि करते हुए, कुरान अपने सभी अध्यायों, आयतों और अक्षरों के साथ लोगों को ईश्वर की पूर्ण एकता की ओर निरंतर मार्गदर्शन करता है।

तीसरा सत्य : परिपूर्णता

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड में ज्ञान के सभी उत्कृष्ट उदाहरण, तथा इसकी सभी अद्भुत सुन्दरताएं, न्यायपूर्ण नियम और बुद्धिमत्तापूर्ण उद्देश्य, ब्रह्माण्ड के अस्तित्व से संबंधित पूर्णता के अस्तित्व को स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं, उसी प्रकार वे सृष्टिकर्ता की पूर्णता की भी स्पष्ट रूप से गवाही देते हैं, जिसने ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति की है और जो इसे हर प्रकार से चमत्कारिक और सुन्दर ढंग से निर्देशित करता है, तथा मानवता की भी, जो सृष्टिकर्ता का सचेतन दर्पण है।

चूँकि पूर्णता का अस्तित्व एक वास्तविकता है; और चूँकि सृष्टिकर्ता, जिसने ब्रह्माण्ड को पूर्णता से बनाया है और उसे पूर्णता से संपन्न किया है, स्वयं भी आवश्यक पूर्णता रखता है; और चूँकि मानवजाति को पूर्णता या विशिष्टताएँ ईश्वर की रचनाओं में सबसे मूल्यवान, ब्रह्माण्ड का सबसे महत्वपूर्ण फल और पृथ्वी पर बसने के लिए चुनी गई प्रजाति के रूप में दी गई हैं, ताकि ईश्वर के नियमों के अनुसार इसे विकसित, विकसित और प्रशासित किया जा सके, तो निस्संदेह ब्रह्माण्ड और मानवता के निर्माण और जीवन में किसी अन्य "प्रभु" और "देवता" की भागीदारी पूरी तरह से असंभव और झूठी है। क्योंकि ऐसे "भागीदार" का अस्तित्व ब्रह्माण्ड को, जो पूर्णता और ज्ञान के उदाहरणों से संपन्न है, व्यर्थ के संयोग के खिलौने में बदल देगा जो निरर्थक रूप से पूर्ण विनाश की ओर घूम रहा है: यह प्रकृति के लिए मनोरंजन का क्षेत्र, जीवित प्राणियों के लिए क्रूर वधशाला और चेतन के लिए दुखों का एक भयानक घर बन जाएगा; यह मानवता को, जिसकी (सापेक्ष) परिपूर्णताएं उसके कार्यों में दिखाई देती हैं, सबसे दयनीय, व्यथित और पतित पशुओं के स्तर तक गिरा देगा; और यह सृष्टिकर्ता की अनंत पवित्र परिपूर्णताओं पर एक अभेद्य पर्दा डाल देगा, जो उनके कार्यों में प्रतिबिम्बित होती हैं।

सभी प्राणियों का दर्पण, इस प्रकार उसकी गतिविधि के परिणाम को शून्य कर देता है और उसकी रचनात्मकता को नकार देता है।

चूंकि द्वितीय किरण के प्रथम स्टेशन में यह बात स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुकी है कि ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ना ईश्वरीय, मानवीय और सृष्टिगत पूर्णता के अस्तित्व के सीधे विरोधाभास में है, इसलिए हम अपने पाठकों को उस भाग की ओर संकेत करते हैं और यहां तर्क को संक्षिप्त कर देते हैं।

चौथा सत्य : संप्रभुता

जो भी ब्रह्माण्ड को ध्यान से देखेगा, वह उसे सत्य में देखेगा।
यदि आप किसी समृद्ध और सक्रिय देश या सबसे बुद्धिमानी से शासित और सबसे दृढ़ता से शासित शहर का रूप देखते हैं, तो वे पाएंगे कि वहां सभी चीजें और सभी प्रजातियां किसी विशेष कर्तव्य में आज्ञाकारी रूप से लगी हुई हैं।

पद्य में निहित सैन्य रूपक के अनुसार, ईश्वर आकाश और पृथ्वी की सेनाएँ हैं (48:4, 7), परमाणुओं की सेनाओं से लेकर वनस्पति जगत की ब्रिगेड और पशु जगत की बटालियनों से लेकर सितारों की सेनाओं तक सभी दिव्य सेनाएँ सृष्टि और जीवन के प्रचलित आदेशों, अनिवार्य आदेशों और शाही आदेशों का पूरी तरह से पालन करती हैं। यह स्पष्ट रूप से एक पूर्ण संप्रभुता और एक सार्वभौमिक, सर्वव्यापी प्राधिकरण के अस्तित्व को इंगित करता है।

चूँकि पूर्ण संप्रभुता का सत्य है, इसलिए ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ने में कोई सत्य नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा कि आयत में निर्णायक रूप से घोषित किया गया है, यदि स्वर्ग और पृथ्वी में ईश्वर के अलावा कोई अन्य देवता होते, तो दोनों (उन क्षेत्रों में) निश्चित रूप से बर्बाद हो जाते (21:22), यदि एक ही कार्य में कई हाथ हस्तक्षेप करते हैं, तो वे अराजकता पैदा करते हैं। यदि एक देश में दो राजा हों, या एक गाँव में दो मुखिया हों, तो व्यवस्था नष्ट हो जाएगी और सरकार अराजकता में बदल जाएगी। हालाँकि, हर जगह ऐसी व्यवस्था कायम है, चाहे वह मक्खी के पंख में हो या स्वर्ग के दीयों में, शरीर की कोशिकाओं में हो या स्वर्ग के नक्षत्रों में, कि ईश्वर के साथ किसी का भी साझेदार होना असंभव है।

इसके अलावा, संप्रभुता महिमा और सम्मान का स्थान है: किसी प्रतिद्वंद्वी को स्वीकार करना संप्रभुता की महिमा और सम्मान को नुकसान पहुंचाएगा। यह तथ्य कि एक मानव संप्रभु, जिसे अपनी नपुंसकता के कारण कई लोगों की मदद की ज़रूरत है, अपनी छोटी, स्पष्ट और अस्थायी संप्रभुता को बनाए रखने के लिए अपने भाइयों और संतानों की हत्या करने के लिए तैयार है, यह दर्शाता है कि संप्रभुता प्रतिद्वंद्विता और साझेदारी को अस्वीकार करती है। यदि कोई इतना कमज़ोर व्यक्ति इतनी तुच्छ संप्रभुता के लिए इस तरह से कार्य करता है, तो यह किसी भी तरह से संभव नहीं है कि वह सर्वशक्तिशाली, जो पूरी सृष्टि का स्वामी है, अपने अलावा किसी और को अपनी पवित्र संप्रभुता में हिस्सा लेने की अनुमति दे, जो उसकी वास्तविक और सार्वभौमिक प्रभुता और दिव्यता का साधन है।

चूँकि इस सत्य को द्वितीय किरण के द्वितीय स्टेशन तथा रिसाले-ए-नूर में कई अन्य स्थानों पर शक्तिशाली प्रमाणों के साथ समझाया गया है, इसलिए हम अपने पाठकों को उन अनुभागों का संदर्भ देते हैं।

इन चार सत्यों का अवलोकन करने के बाद, हमारे यात्री दिव्य एकता को दृष्टि की निश्चितता के स्तर तक जान गए, और परिणामस्वरूप उनका विश्वास और अधिक उज्ज्वल हो गया। अपनी पूरी ताकत से वे कहते हैं, "कोई देवता नहीं है सिवाय ईश्वर के, जिसका कोई साझी नहीं है।" इस चरण से उन्होंने जो सबक सीखा, उसका संक्षिप्त संदर्भ देते हुए, प्रथम स्टेशन के दूसरे अध्याय में कहा गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, वह एक है, अद्वितीय है, जिसकी एकता और आवश्यक सत्ता, पूर्ण दिव्यता के आत्म-प्रकाशन के उदात्त सत्य के अवलोकन के माध्यम से, साथ ही पूर्ण प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होती है, जो एकता की मांग करता है; और पूर्णताओं के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से, जो एकता से उत्पन्न होते हैं; और पूर्ण संप्रभुता के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से, जो किसी भी साझेदारी को रोकता है और उसका खंडन करता है।

दूसरा चरण

तब वह बेचैन यात्री अपने हृदय से कहता है: "यह तथ्य कि आस्था रखने वाले लोग, और विशेष रूप से आध्यात्मिक मार्ग पर चलने वाले लोग, बार-बार घोषणा करते हैं कि, ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, और इस प्रकार ईश्वर की एकता को स्मरण करते हुए और उसकी घोषणा करते हुए, यह संकेत देता है कि ईश्वर की एकता में विश्वास और पुष्टि के कई स्तर हैं।

ऐसा विश्वास और पुष्टि भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण, आनंददायक और उच्च पवित्र कर्तव्य है - एक पूजा का कार्य जो सृष्टि द्वारा अपेक्षित है। तो फिर, आइए, और एक और डिग्री की खोज करने के लिए, हम शिक्षा के इस निवास में एक और हवेली का दरवाजा खोलें। भगवान की एकता की सच्ची पुष्टि के लिए-

हम जो सत्य चाहते हैं, वह महज कोई मानसिक रचना या अवधारणा नहीं है: बल्कि यह एक पुष्टि या पुष्टि है - जिसे ज्ञान कहा जाता है - जो प्रमाण पर आधारित है, और इस प्रकार तर्कशास्त्र जिसे अवधारणा कहता है, उससे भिन्न है और कहीं अधिक मूल्यवान है।”

ईश्वर की एकता की सच्ची पुष्टि एक निर्णय, एक निष्कर्ष, एक पुष्टि और एक स्वीकृति है जो ऐसी है कि जिसने इसे प्राप्त कर लिया है वह ब्रह्मांड में हर चीज के माध्यम से अपने भगवान को पा सकता है: जो कोई इस स्तर को प्राप्त करता है वह सभी चीजों में अपने निर्माता की ओर जाने वाला मार्ग देखेगा, और कोई भी चीज उसे हर जगह मौजूद भगवान को देखने से नहीं रोक पाएगी। अन्यथा भगवान को खोजने के लिए ब्रह्मांड के पर्दे को फाड़ना हमेशा आवश्यक होगा।

"आगे बढ़ो," यात्री खुद से कहते हैं और भगवान की महानता और उत्कृष्टता के दरवाजे पर दस्तक देते हैं। और इस तरह वे भगवान के महल में प्रवेश करते हैं।

ईश्वर के कर्म और कार्यप्रणाली, सृष्टि और उत्पत्ति की दुनिया, जहां वे देखते हैं कि पांच व्यापक सत्य पूरे ब्रह्मांड पर हावी हैं, जो दिव्य एकता का स्वयंसिद्ध प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

पहला सत्य : भव्यता और उदात्तता

चूँकि इस सत्य को द्वितीय अध्याय में पर्याप्त प्रमाणों के साथ समझाया गया है।
द्वितीय किरण के स्टेशन और रिसाले-ए-नूर के विभिन्न अन्य स्थानों के बारे में, हम यहां अपनी चर्चा संक्षिप्त रखेंगे:

वह सत्ता जो हजारों प्रकाशवर्ष दूर स्थित तारों को एक साथ और एक ही ढंग से बनाती और संचालित करती है; जो एक ही क्षण और एक ही रूप में पृथ्वी के चारों कोनों में फैले एक ही प्रजाति के फूलों के असंख्य सदस्यों को बनाती है; जो हर बसंत में पृथ्वी पर सर्वोच्च पुनरुत्थान के लाखों उदाहरण प्रदान करने के लिए तैयार है, और हमारी आंखों के सामने एक अत्यंत उल्लेखनीय अतीत, अदृश्य घटना को साबित करने के लिए, अर्थात् छह "दिनों" में आकाश और पृथ्वी का निर्माण, जैसा कि आयत में संकेत किया गया है, वही है जिसने छह दिनों में आकाश और पृथ्वी का निर्माण किया (57:4), पांच या छह सप्ताह में सैकड़ों-हजारों विभिन्न पौधों और जानवरों की प्रजातियों को अस्तित्व में लाता और सजाता है, और अत्यंत क्रम और सामंजस्य के साथ और बिना किसी भ्रम, दोष या त्रुटि के उनके बीच प्रबंधन, पोषण और अंतर करता है, भले ही वे सभी एक-दूसरे के साथ मिश्रित हों; वह सत्ता जो, जैसा कि आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है, वह रात को दिन में बदल देता है, और वह दिन को रात में बदल देता है

(57:6), पृथ्वी को घुमाता है, और दिन और रात के पन्नों को बनाता और बदलता है, जिस पर वह दैनिक घटनाओं को अंकित करता है - यही सत्ता अपनी इच्छा से, एक ही समय में, हमारे दिलों में आने वाले सबसे गुप्त और छिपे हुए विचारों को जानती और संचालित करती है। चूँकि वर्णित प्रत्येक कार्य वास्तव में एक एकल, एकसमान कार्य है, इसलिए यह आवश्यक रूप से अनुसरण करता है कि उनके एक और सर्वशक्तिमान महामहिम के स्वामी के पास ऐसी भव्यता और उत्कृष्टता है कि कहीं भी, किसी भी तरह से, किसी भी तरह से, वह उसके साथ किसी भी भागीदार होने की थोड़ी सी भी संभावना नहीं देता है।

चूँकि ऐसी महानता और शक्ति की उदात्तता में से एक ही अस्तित्व में है, और चूँकि वह महानता असीम रूप से परिपूर्ण और व्यापक है, इसलिए यह निश्चित रूप से किसी भी तरह से संभव नहीं है कि वे किसी अन्य को हस्तक्षेप या भागीदारी की अनुमति दें। क्योंकि इसका अर्थ होगा उस शक्ति को नपुंसकता, उस महानता को दोष, उस पूर्णता को दोष, उस व्यापकता को प्रतिबंध लगाना।

उस अनन्तता की एक सीमा है और कोई भी समझदार बुद्धि इसे संभव नहीं मान सकती।

चूंकि यह ईश्वर की महानता तथा उसकी महानता और महानता की गरिमा को ठेस पहुंचाता है, इसलिए ईश्वर के साथ साझीदारों को जोड़ना इतना बड़ा अपराध माना गया है कि चमत्कारी कुरान में बहुत ही गंभीरता से कहा गया है कि निस्संदेह, ईश्वर इस बात को क्षमा नहीं करता कि उसके साथ साझीदार बनाए जाएं; इससे कम पर, वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है (4:48)।

दूसरा सत्य

यह अनंत में पूर्णता, व्यापकता और अभिव्यक्ति है।
ब्रह्माण्ड में कार्य करते हुए देखे गए भगवान के कार्यों का नित्य रूप।

केवल सर्वशक्तिमान ईश्वर की बुद्धि और इच्छा ही उन कार्यों को सीमित और प्रतिबंधित करती है, साथ ही उन वस्तुओं और स्थानों की अंतर्निहित क्षमताएँ जिनमें वे कार्य प्रकट होते हैं। यादृच्छिक संयोग, अचेतन प्रकृति, अंध शक्ति, निर्जीव कारणता और वे तत्व जो बिना किसी प्रतिबंध के हर दिशा में बिखरे हुए हैं और हर चीज़ में घुलमिल गए हैं - इनमें से कोई भी निर्माता के सबसे संतुलित, बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण, अंतर्दृष्टिपूर्ण, जीवन देने वाले, व्यवस्थित और दृढ़ कार्यों में कोई भूमिका नहीं निभा सकता है। बल्कि, उनका उपयोग सर्वशक्तिमान निर्माता की आज्ञा, इच्छा और शक्ति द्वारा उसकी शक्ति पर एक स्पष्ट आवरण के रूप में किया जाता है।

हम इसके तीन सार्थक उदाहरण प्रस्तुत करेंगे, जिन्हें आप पढ़ सकते हैं
पत्र-नहल:

पहला:

> और तुम्हारे रब ने मधुमक्खी को यह संदेश भेजा कि, "अपने लिए पहाड़ों और वृक्षों में रहने के स्थान बना लो और उनमें भी जो कुछ मनुष्य बनाएँ और बुनें।" (16:68)

अपनी रचना और कर्तव्यों के संबंध में, मधुमक्खी ईश्वरीय शक्ति का ऐसा चमत्कार है कि कुरान का एक पूरा अध्याय - सूरतुअन-नहल (सूरा)
16) का नाम इसके नाम पर रखा गया है। क्योंकि इसके महत्वपूर्ण कर्तव्य की पूर्ति के लिए पूरा कार्यक्रम उस छोटी सी शहद बनाने वाली मशीन के छोटे से सिर में अंकित किया गया है; सबसे मीठा भोजन इसके छोटे से पेट में रखा गया है; और इसे एक डंक दिया गया है जो इसे नुकसान पहुँचाए बिना कुछ प्राणियों को मारने में सक्षम है। अब, चूँकि यह सब अत्यंत सावधानी और ज्ञान के साथ, असाधारण बुद्धि और उद्देश्य के साथ, और पूर्ण व्यवस्थितता, सटीकता और संतुलन के साथ किया जाता है, क्या बहरे, बेहोश,

अव्यवस्थित और असंगत प्रकृति और इसमें किसी भी तरह से हस्तक्षेप करने या भाग लेने का मौका?

इस दिव्य शिल्प की व्यापकता, प्रभुत्व का यह कार्य, जो कि ऊपर वर्णित तीन पहलुओं में चमत्कारी है - इसका पृथ्वी भर में फैली हुई असंख्य मधुमक्खियों में, समान बुद्धि, समान देखभाल, समान संतुलन, समान समय और समान तरीके से प्रकट होना या उपस्थिति होना - ईश्वर की एकता का स्वयंसिद्ध प्रमाण है।

दूसरा श्लोक:

> और निश्चय ही चौपायों में तुम्हारे लिए एक शिक्षा है कि हम उनके शरीर के अंदर से, उनके मल और रक्त के बीच से, तुम्हें ऐसा दूध देते हैं जो शुद्ध है और पीनेवालों के लिए स्वादिष्ट है। (2:66)

यह श्लोक ज्ञान और शिक्षाओं से भरा एक उद्घोषणा है। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर रक्त और मल के बीच में एक ऐसा पदार्थ उत्पन्न करता है जो उनके बिल्कुल विपरीत है - शुद्ध, स्वादिष्ट, पौष्टिक सफेद दूध - लेकिन जो किसी भी चीज़ से प्रदूषित नहीं होता। इसे वह मादा स्तनधारियों के स्तनों में रखता है - उन दूध बनाने वाली फैक्ट्रियों में - और उनके दिलों में एक आत्म-त्यागी कोमलता को प्रेरित करता है जो दूध से भी अधिक मीठी और अधिक मूल्यवान होती है। यह सब

इसके लिए इतनी दया, बुद्धि, ज्ञान, शक्ति, इच्छा और सावधानी की आवश्यकता होती है कि यह किसी भी तरह से अशांत संयोग, अनियमित रूप से मिश्रित तत्वों और अंधी ताकतों का काम नहीं हो सकता।

सम्पूर्ण पृथ्वी पर तथा लाखों प्रजातियों की असंख्य माताओं के हृदयों और वक्षस्थलों में प्रभुत्व की ऐसी बुद्धिमत्तापूर्ण और चमत्कारी कला का व्यापक प्रकटीकरण और कार्य, एक ही क्षण में, एक ही ढंग से, एक ही बुद्धि और एक ही देखभाल के साथ - यह सब ईश्वर की एकता को सबसे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

तीसरा श्लोक:

> और खजूर और अंगूर के फल भी हैं, उनसे तुम मादक द्रव्य और उत्तम पौष्टिक आहार प्राप्त करते हो। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो बुद्धि से काम लें और अज्ञानी हों। (2:67)

यह श्लोक खजूर और अंगूर की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहता है: "बुद्धिमान लोगों के लिए इन दो फलों में ईश्वरीय एकता का एक बड़ा सबूत है।" क्योंकि खजूर और अंगूर पोषण और जीविका के स्रोत हैं, जो ताजे और सूखे दोनों तरह के फल देते हैं और सबसे स्वादिष्ट रूपों को जन्म देते हैं।

भोजन के लिए। फिर भी उन्हें पैदा करने वाले पेड़ पानी रहित रेत और सूखी मिट्टी में खड़े हैं! उनमें से प्रत्येक एक कारखाने की तरह है जो चीनी और सिरप बनाता है; इस तरह वे शक्ति के चमत्कार और बुद्धि के चमत्कार हैं - कला के कार्य इतने संवेदनशील संतुलन और पूर्ण क्रम के साथ और इतनी बुद्धिमत्ता और सावधानी से बनाए गए हैं कि थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति यह स्वीकार करेगा कि "जिसने उन्हें इस तरह से बनाया है, वही ब्रह्मांड का निर्माण कर सकता है।"

क्योंकि हमारी आँखों के सामने एक-एक अंगुल मोटी शाखा में बीस अंगूर के गुच्छे हैं, और प्रत्येक गुच्छे में लगभग सौ छोटे-छोटे पंप हैं जिनमें मीठा सिरप है। प्रत्येक अंगूर को एक नाजुक, पतले और सूक्ष्म रंग के सुरक्षात्मक आवरण में ढंकना; उसके कोमल हृदय में कठोर छिलकों सहित बीज रखना, जो उसकी स्मृति, उसके निर्माण और क्रिया के कार्यक्रम और उसके जीवन-इतिहास के समान हैं; उसके पेट में जन्नत के हलवे जैसी मिठाई और परादीस के झरने के पानी जैसा शहद बनाना; और पूरी धरती पर ऐसे असंख्य फलों का निर्माण करना, समान देखभाल और बुद्धिमत्ता और अद्भुत कला के साथ, एक ही समय और एक ही तरीके से - यह सब स्वयं-सिद्ध रूप से प्रदर्शित करता है कि इन कार्यों को पूरा करने वाला कोई और नहीं बल्कि सृष्टि का रचयिता ही हो सकता है।

संपूर्ण ब्रह्माण्ड, और यह कार्य, जिसके लिए असीम शक्ति और बुद्धि की आवश्यकता है, केवल उसके द्वारा ही संभव है।

प्रकृति और कारणता की अंधी, अव्यवस्थित, अचेतन, लक्ष्यहीन, अराजक और व्यापक शक्तियाँ इस सबसे कुशल कला, इस सबसे संवेदनशील संतुलन और व्यवस्था और संतुलन के इस सबसे बुद्धिमान मानव-प्रस्तुतिकरण को उत्पन्न करने में कोई वास्तविक भूमिका नहीं निभा सकतीं। ऐसी शक्तियों को केवल प्रभु के आदेश के माध्यम से साधन के रूप में नियोजित किया जाता है - स्पष्ट कारण जो दिव्य शक्ति के हाथ को ढक देते हैं ताकि जो लोग कुछ अप्रिय घटनाओं और प्रभावों की वास्तविक प्रकृति और ज्ञान को नहीं समझ सकते हैं, वे सर्वशक्तिमान ईश्वर को दोष न दें।

जिस प्रकार दिव्य एकता को प्रमाणित करने वाले तीन सार्थक तथ्य, जो उपरोक्त तीन श्लोकों में निहित हैं, उसी प्रकार प्रभुता के अनंत कार्यों की असंख्य अभिव्यक्तियाँ और क्रियाएँ, एक अद्वितीय एकता, सर्व-महान की एकता को सर्वसम्मति से प्रमाणित करती हैं।

तीसरा सत्य

यह प्राणियों, विशेषकर पौधों और पशुओं का सृजन है, पूर्ण गति और पूर्ण प्रचुरता के साथ, तथापि पूर्ण व्यवस्थितता के साथ; यह सभी चीजों का सृजन पूर्ण सहजता से तथा फिर भी पूर्ण स्थिरता के साथ करने से संबंधित है।

एक ही समय में अत्यंत कुशलता, प्रतिभा, सटीकता, परिशुद्धता और व्यवस्था के साथ; यह सभी प्राणियों को महान मूल्य और विशिष्टता के साथ अस्तित्व प्रदान करने से संबंधित है, सभी सृजित वस्तुओं की अत्यधिक प्रचुरता और अंतर्मिश्रण के बावजूद।

संस्थाएं.

प्राणियों को पूर्ण प्रचुरता और अत्यधिक तीव्रता के साथ, तथापि अत्यंत कुशलता और कलात्मकता के साथ, तथा अविश्वसनीय सुविधा के साथ तथा अत्यंत सावधानी और व्यवस्था के साथ उत्पन्न करना, तथा उन्हें प्रचुरता और अंतर्मिश्रण के बावजूद अत्यंत मूल्य और विशिष्टता के साथ, किसी भी प्रकार के भ्रम या कमी के बिना उत्पन्न करना - यह केवल उस अद्वितीय की शक्ति के द्वारा ही संभव है, जिसके लिए कुछ भी कभी कठिन नहीं है। उस शक्ति के लिए तारों का निर्माण उतना ही सरल है, जितना परमाणुओं का निर्माण, एक पूरी प्रजाति का निर्माण उस प्रजाति के एक सदस्य के निर्माण से अधिक कठिन नहीं है, एक विशाल और व्यापक विश्व को अस्तित्व में लाना, सबसे छोटी वस्तु के अस्तित्व में लाने के समान ही है। उसके लिए पूरी पृथ्वी का पुनरुद्धार एक वृक्ष के पुनरुद्धार से अधिक कठिन नहीं है, एक वृक्ष का सृजन और पोषण एक पंख के आकार के बीज के सृजन से अधिक कठिन नहीं है। ये सभी कार्य वह हमारी आंखों के सामने करता है।

और इस प्रकार दिव्य एकता के प्रकटीकरण की इस श्रेणी के इस महत्वपूर्ण रहस्य की खोज करके, इस तीसरे सत्य या दिव्य एकता के शब्द को -

अर्थात् यह तथ्य कि ईश्वरीय शक्ति के लिए सबसे बड़ा सार्वभौमिक सबसे छोटे विशेष के समान है और सबसे प्रचुर भी सबसे छोटे से भिन्न नहीं है; बुद्धि की पहुंच से परे इस ताबीज या पहेली को समझने से, इस्लाम के इस सबसे महत्वपूर्ण आधार, विश्वास के इस सबसे गहन स्रोत, ईश्वरीय एकता में विश्वास के इस सबसे बड़े आधार को - ऐसा करने से, कुरान का ताबीज हल हो जाता है और ब्रह्मांड के निर्माण की सबसे गुप्त पहेली - एक पहेली जिसे मानव दर्शन समझने में असमर्थ है - सुलझ जाती है।

ज्ञात हो जाता है। रिसाले-ए-नूर के पत्रों का मेरे दयालु निर्माता को एक लाख बार धन्यवाद और प्रशंसा है कि रिसाले-ए-नूर ने इस अद्भुत ताबीज को हल कर दिया है। विशेष रूप से बीसवें पत्र के अंत में, जहाँ "वह हर चीज़ पर सर्वशक्तिमान है" पर चर्चा की गई है; उनतीसवें शब्द में "जो पुनरुत्थान लाएगा वह ऐसा करने में सक्षम है" शीर्षक वाली चर्चा में; और उनतीसवीं झलक में " ईश्वर की रैंक सर्व-महान है" शीर्षक वाली दिव्य शक्ति को समझने में डिग्री के स्पष्टीकरण के लिए समर्पित अनुभाग में, इसे स्पष्ट रूप से समझाया गया है।
रिसाले-ए-नूर के उन हिस्सों के लिए अधिक विस्तृत व्याख्या की इच्छा रखने वाले पाठकों को संदर्भित करते हुए , यहाँ मेरा इरादा यह था कि

संक्षेप में उन आधारों और प्रमाणों को प्रस्तुत करना जो इस तावीज़ को सुलझाते हैं और तेरह चरणों में तेरह रहस्यों को स्पष्ट करना। हालाँकि, जब मैं पहले दो रहस्यों पर चर्चा करने में सक्षम हो गया हूँ, तो दो शक्तिशाली बाधाओं - एक भौतिक, दूसरी अभौतिक - ने मुझे बाकी को छोड़ने के लिए मजबूर किया है।

पहला रहस्य: अगर कोई चीज़ किसी सार में उत्पन्न होती है और इसलिए अपने आप में ज़रूरी है, तो उसका विपरीत उस सार तक नहीं पहुँच सकता जिसमें वह चीज़ उत्पन्न होती है: ऐसा करने का मतलब होगा एक ही सार में दो विपरीत सारों का मिलन, जो अकल्पनीय है। यह देखते हुए, चूँकि दिव्य शक्ति स्वयं दिव्य सार में उत्पन्न होती है और उसके लिए ज़रूरी है, निश्चित रूप से, नपुंसकता - उस शक्ति का विपरीत - किसी भी तरह से उस सर्वशक्तिमान सार तक पहुँच नहीं सकती।

इसके अलावा, किसी चीज़ में डिग्री का अस्तित्व उसके विपरीत के हस्तक्षेप के कारण होता है। उदाहरण के लिए, प्रकाश की मजबूत और कमजोर डिग्री अंधेरे के हस्तक्षेप से उत्पन्न होती है; गर्मी की उच्च और निम्न डिग्री ठंड के हस्तक्षेप से आती है; और अधिक और कम ताकत की मात्रा प्रतिरोध के हस्तक्षेप और विरोध के कारण होती है। इसलिए यह असंभव है कि दिव्य शक्ति में डिग्री मौजूद हो, जो दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक है, या एक मामले में समान है। वह सभी चीजों को इस तरह बनाता है जैसे कि वे एक ही चीज हों। और चूंकि दिव्य सत्ता के लिए आवश्यक शक्ति में डिग्री मौजूद नहीं है, और चूंकि कमजोरी या कमी उस तक पहुंच नहीं सकती है, इसलिए कोई भी बाधा उसे किसी भी तरह से बाधित नहीं कर सकती है; न ही किसी चीज का निर्माण उसे मुश्किल बना सकता है। चूंकि, तब, दिव्य शक्ति के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, वह वसंत की तरह ही सर्वोच्च पुनरुत्थान की रचना करता है; वह वसंत को उसी आसानी से बनाता है जैसे एक अकेला पेड़; और वह एक फूल के समान ही आसानी से एक अकेला पेड़ बनाता है। इसी तरह, वह एक फूल को एक पेड़ की तरह ही कलात्मक रूप से बनाता है; एक पेड़ को एक झरने की तरह ही चमत्कारी रूप से बनाता है; और पुनरुत्थान के समान व्यापक और असाधारण रूप से एक झरना। यह सब वह हमारी आँखों के सामने पूरा करता है।

रिसाले-ए-नूर में कई निर्णायक और मजबूत तर्कों के साथ यह साबित किया गया है कि अगर ईश्वरीय एकता न होती, तो फूल का निर्माण पेड़ जितना या उससे भी ज़्यादा मुश्किल होता और पेड़ का निर्माण झरने जितना या उससे भी ज़्यादा मुश्किल होता। इसके अलावा, वे अपना मूल्य और अपनी कलात्मक गुणवत्ता भी खो देते। एक जीवित प्राणी जिसे अब पैदा होने में एक मिनट लगता है, उसे एक साल में बड़ी मुश्किल से पैदा किया जा सकता है; वास्तव में, हम जानते हैं कि यह कभी पैदा नहीं होगा और न ही कभी पैदा हो सकता है।

इसी सत्य के कारण ये फल, फूल, पेड़ और जानवर, जो अपनी प्रचुरता और बहुलता के बावजूद सर्वोच्च मूल्य के हैं, और जो अपनी रचना की तीव्रता और सरलता के बावजूद सर्वोच्च कलात्मकता के हैं, बिल्कुल व्यवस्थित ढंग से प्रकट होते हैं और अपना कार्य पूरा करने के लिए निकल पड़ते हैं। जब वे परमेश्वर की महिमा का बखान करने का अपना कर्तव्य पूरी तरह से पूरा कर लेते हैं, तो अपने स्थान पर अपने बीज छोड़कर चले जाते हैं।

दूसरा रहस्य: जिस प्रकार सूर्य अपने प्रकाश, अपनी चमकती हुई वस्तुओं की पारदर्शिता, अपनी मूल शक्ति की अभिव्यक्ति तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के एक ही नियम के प्रति आज्ञाकारिता के कारण एक ही दर्पण में अपने प्रकाश से प्रतिबिम्बित होता है, उसी प्रकार ईश्वरीय आदेश से तथा अपनी अप्रतिबंधित शक्ति की व्यापक क्रियाशीलता के कारण वह भी अपने प्रकाश तथा ऊष्मा से असंख्य दर्पणों, चमकती हुई वस्तुओं तथा बूंदों में बहुत आसानी से प्रतिबिम्बित कर सकता है। उसके समक्ष अनेक तथा कुछ एक ही हैं: उनमें सूर्य के प्रतिबिम्ब के सम्बन्ध में कोई अन्तर नहीं है।

इसी तरह, जिस तरह एक शब्द एक व्यक्ति के कान में बिना किसी कठिनाई के प्रवेश कर सकता है, असीम रचनात्मकता की असीम व्यापकता के कारण, यह ईश्वरीय अनुमति से, एक ही आसानी से लाखों कानों में प्रवेश कर सकता है: एक श्रोता और एक हज़ार श्रोता बराबर हैं। साथ ही, दया की अभिव्यक्ति में सन्निहित ईश्वरीय गतिविधि की असीम व्यापकता के कारण, एक आँख या एक भी चमकदार प्राणी जैसे कि आर्केंजल गैब्रियल, ईश्वरीय शक्ति के माध्यम से, एक ही समय में हज़ारों स्थानों को देख सकता है, उनमें प्रवेश कर सकता है या उनमें उपस्थित हो सकता है, उतनी ही आसानी से जैसे वे एक ही स्थान को देखते हैं, उनमें प्रवेश करते हैं या उनमें उपस्थित होते हैं: बहुतों और कुछ के बीच कोई अंतर नहीं है।

इसी प्रकार, चूँकि ईश्वर के सार की शाश्वत शक्ति सबसे सूक्ष्म और शुद्धतम ज्योति है - सभी ज्योतियों का प्रकाश - और चूँकि सभी वस्तुओं की प्रकृति, सार और आंतरिक आयाम दर्पण की तरह चमकदार और दीप्तिमान हैं; और चूँकि सभी वस्तुएँ, परमाणु, पौधे और जीवित प्राणी से लेकर चंद्रमा, सूर्य और तारे तक, उस दिव्य सार की शक्ति की आज्ञा के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारी और आज्ञाकारी हैं, इसलिए यह स्पष्ट है कि वह असंख्य वस्तुओं को एक वस्तु जितनी ही आसानी से बनाता है, और उनमें से प्रत्येक के साथ सर्वव्यापी है। कोई भी कार्य उसे दूसरा कार्य करने से नहीं रोकता। बड़ा या छोटा, बहुत या कम, विशेष या सार्वभौमिक - सभी उस शक्ति के लिए समान हैं: उसके लिए कुछ भी कठिन नहीं है।

जैसा कि दसवें और उनतीसवें शब्दों में चर्चा की गई है, व्यवस्था, संतुलन, आदेश का पालन और आदेश की पुष्टि या पालन के संबंधों या सार्वभौमिक वास्तविकताओं के माध्यम से, एक बच्चा एक निश्चित दिशा में आगे बढ़ने में सक्षम होता है।

सौ घरों जितना बड़ा विशाल जहाज़, वह अपनी छोटी उंगलियों से अपने खिलौने को उतनी ही आसानी से हिलाता है। साथ ही, जिस तरह एक कमांडर एक अकेले निजी सैनिक को “मार्च!” के आदेश के साथ युद्ध में भेजता है, उसी तरह वह एक ही आदेश के साथ पूरी आज्ञाकारी सेना को युद्ध में भेजने में भी सक्षम है।

मान लीजिए कि दो पहाड़ों को एक बड़े और अत्यंत संवेदनशील तराजू पर तौला जाता है। जिस तरह दो अंडों को तौलने वाले तराजू के एक पलड़े पर एक अखरोट रखने से वह पलड़ा गिर सकता है और दूसरा ऊपर उठ सकता है, उसी तरह बुद्धि के नियम के अनुसार, वही अखरोट उस तराजू पर भी वही परिणाम दे सकता है जिस पर पहाड़ों को तौला जा रहा है: इससे एक पलड़ा ऊपर उठ जाएगा और दूसरा नीचे गिर जाएगा।

अतः, चूँकि ईश्वर की निरपेक्ष, अनंत, ज्योतिर्मय, सारभूत और शाश्वत शक्ति में अनंत बुद्धि भी निहित है, जो सृष्टि में समस्त व्यवस्था, संतुलन और सामंजस्य का मूल, स्रोत और आधार है, तथा एक अनंत संवेदनशील दिव्य न्याय है; और चूँकि सभी चीज़ें, चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशिष्ट, बड़ी हों या छोटी, उस शक्ति की आज्ञा के अधीन हैं और उसके संचालन के अधीन हैं - इसका अर्थ यह है कि बुद्धि पर आधारित व्यवस्था के माध्यम से, वह सितारों को उसी सरलता से घुमाता और चलाता है, जिस सरलता से वह परमाणुओं को निर्देशित और चलाता है। जिस प्रकार वसंत में वह एक मक्खी को एक ही आज्ञा से सरलता से जीवित कर देता है, उसी प्रकार अपनी शक्ति में निहित बुद्धि और संतुलन के माध्यम से, वह उसी सरलता और उसी आज्ञा से समस्त मक्खी प्रजाति को, साथ ही सभी असंख्य पौधों और जानवरों को जीवन प्रदान करता है, और फिर उन्हें जीवन के मैदान में भेज देता है।

जिस तरह से वह बसंत ऋतु में एक पेड़ को तेजी से पुनर्जीवित करता है और अपनी बुद्धिमान, न्यायपूर्ण और पूर्ण शक्ति के माध्यम से उसके मृत प्रतीत होने वाले तने और शाखाओं को जीवन प्रदान करता है, उसी तरह वह बसंत ऋतु में विशाल धरती की लाश को भी उतनी ही आसानी से जीवन प्रदान करता है जितनी आसानी से वह एक पेड़ को पुनर्जीवित करता है, इस प्रकार पुनरुत्थान के सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग उदाहरण प्रस्तुत करता है। जिस तरह से वह एक ही सृजनात्मक आदेश के साथ धरती को जीवन प्रदान करता है, जैसा कि आयत में कहा गया है कि यह सिर्फ़ एक ही विस्फोट है, और देखो, वे सभी हमारे सामने (निर्णय के लिए) एक साथ (उठाए गए और) पेश किए जाएँगे (36:53), सभी मानव जाति और जिन्न सिर्फ़ एक ही आदेश के साथ सर्वोच्च पुनरुत्थान के मैदान पर उसकी उपस्थिति में सामने लाए जाएँगे।

फिर से, जैसा कि आयत में घोषित किया गया है ... क़यामत की घड़ी (ईश्वरीय शक्ति के संबंध में) पलक झपकने या उससे भी कम समय में पूरी हो जाएगी (16:77), दुनिया को नष्ट करने और पुनरुत्थान लाने में पलक झपकने से ज़्यादा समय नहीं लगेगा, या उससे भी कम समय लगेगा। साथ ही, आयत कहती है कि तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक आत्मा की रचना और पुनरुत्थान के समान है (31:28),

यह दर्शाता है कि सारी मानवजाति का निर्माण और पुनरुत्थान उसकी शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि एक आत्मा का निर्माण और पुनरुत्थान। ऊपर वर्णित तीन आयतें घोषणा करती हैं कि ईश्वर सभी मानवजाति और जिन्न, सभी जानवरों, आत्मिक प्राणियों और फ़रिश्तों को सर्वोच्च सभा के क्षेत्र में लाएगा और उन्हें एक ही आदेश और समान आसानी से सर्वोच्च संतुलन के सामने रखेगा।

एक कार्य दूसरे कार्य की पूर्ति में बाधा नहीं डालेगा।

(शेष रहस्य, तीसरे से तेरहवें तक,

(किसी अन्य समय के लिए स्थगित किया जाना चाहिए।)

चौथा सत्य

सभी प्राणियों का अस्तित्व और अस्तित्व के क्षेत्र में उनकी उपस्थिति; उनका एक साथ रहना और उनका एक दूसरे के लघु या आवर्धित संस्करण होना; यह तथ्य कि उनमें से कुछ संपूर्ण और सार्वभौमिक का निर्माण या प्रतिनिधित्व करते हैं जबकि अन्य उनके भाग या व्यक्तिगत सदस्य हैं; यह तथ्य कि वे सृजन की छाप और कलात्मकता की छाप धारण करने में एक दूसरे के समान हैं, साथ ही कई अन्य समानताएं और एकता के बिंदु जैसे कि ईश्वर के प्राणियों के रूप में उनके आवश्यक कर्तव्यों के संबंध में उनका पारस्परिक सहयोग - ये सभी स्पष्ट रूप से सृष्टिकर्ता की एकता की ओर इशारा करते हैं और यह स्पष्ट करते हैं कि ब्रह्मांड एक अविभाज्य संपूर्ण है।

एक ही प्रभु के नियंत्रण और निर्देशन के अधीन।

उदाहरण के लिए, प्रत्येक वसंत में वह पौधों और जानवरों की लाखों विभिन्न प्रजातियों के असंख्य सदस्यों को एक साथ और एक ही तरीके से, बिना किसी त्रुटि या भूल के, और अत्यंत बुद्धिमत्ता और कलात्मकता की पूर्णता के साथ बनाता है, निर्देशित करता है और उनके लिए पोषण करता है। इसी तरह, वह पक्षियों की सभी विभिन्न प्रजातियों को बनाता है—

छोटे-छोटे मक्खियों से, जो छोटे आकार के पक्षियों की तरह होते हैं, लेकर चील तक, जो पक्षियों में सबसे राजसी होते हैं—और उन्हें उड़ने और जीवन-यापन के साधन प्रदान करते हैं। इसके अलावा, आकाश को पक्षियों की असंख्य प्रजातियों से आबाद करने के अलावा, वह उनके चेहरों पर कलात्मकता की एक चमत्कारी मुहर लगाता है, उनके शरीर पर ज्ञान की एक प्रशासनिक मुहर लगाता है, और उनके स्वभाव में विशेष ध्यान, प्रावधान और पोषण का प्रमाण देता है। साथ ही, पूर्ण ज्ञान और दया के साथ वह भोजन के कणों को शरीर की कोशिकाओं की सहायता के लिए जल्दी आने देता है, पौधों को जानवरों की सहायता के लिए आने देता है, जानवरों को मनुष्यों की सहायता के लिए आने देता है, और सभी माताओं को अपने शक्तिहीन शिशुओं की आवश्यकताओं को तुरंत पूरा करने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा, वह आकाशगंगा, सौर प्रणाली से लेकर सभी चीजों पर काम करता है और उनका उपयोग करता है, चाहे वे विशेष हों या सार्वभौमिक

पृथ्वी के तत्वों से लेकर आँख की पुतली को ढकने वाले पर्दे तक, गुलाब की पंखुड़ियाँ, मकई की भूसी और खरबूजे के बीज, एक दूसरे को काटते हुए वृत्तों की श्रृंखला की तरह, उसी सुव्यवस्था, कलात्मकता की पूर्णता, उसी कार्य और पूर्ण बुद्धि के साथ। यह तथ्य कि वह यह सब करता है, निम्नलिखित को स्व-स्पष्ट निश्चितता के साथ स्थापित करता है:

- जो ये कर्म करता है वह एक और अद्वितीय है, उसकी छाप सब पर है
  सभी चीज़ें।
- जिस प्रकार वह किसी एक स्थान पर नहीं है, उसी प्रकार वह सर्वत्र विद्यमान है।
  सभी जगहों पर।
- सूर्य की तरह सभी चीजें उससे दूर हैं, लेकिन वह सभी के करीब है
  चीज़ें।
- जिस प्रकार आकाशगंगा और सौरमंडल जैसी वस्तुएं उसके लिए कठिन नहीं हैं, उसी प्रकार रक्त की लाल और सफेद कणिकाएं और हृदय में आने वाले विचार भी उससे गुप्त नहीं हैं, न ही वे उसके पूर्ण नियंत्रण और निर्देश की पहुंच से परे हैं।

- कोई भी प्राणी कितना ही महान क्यों न हो, उसकी रचना उसके लिए छोटी से छोटी वस्तु के समान सरल है, क्योंकि वह बड़ी सरलता से एक चील के आकार की मक्खी, एक वृक्ष के आकार का बीज, एक बगीचे के आकार का वृक्ष, एक झरने की कलात्मकता वाला बगीचा तथा एक पुनरुत्थान के पैमाने का झरना आदि सब कुछ बना देता है।

- और वह हमें कला में सबसे मूल्यवान चीजें सबसे किफायती तरीके से प्रदान करता है। वह हमसे जो कीमत मांगता है, वह केवल यह है कि हम कहें "ईश्वर के नाम पर" और "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है।" कहने का मतलब यह है कि उन सभी बहुमूल्य उपहारों के लिए स्वीकार्य मूल्य यह है कि जब हम उनका उपयोग या उपभोग करना शुरू करते हैं, तो "ईश्वर के नाम पर, जो सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय है," और, एक बार जब हम उनसे लाभ उठा लेते हैं, तो ये शब्द कहें "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है।"

चूँकि इस चौथे सत्य की व्याख्या रिसाले-ए-नूर में अन्यत्र भी की गई है , इसलिए हम यहाँ इस संक्षिप्त संकेत के साथ संतुष्ट हैं।

पांचवां सत्य

दूसरे भवन या मंच पर हमारा यात्री यही अनुभव करता है:
सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में, इसके प्राथमिक भागों में, इसके गौण भागों में तथा इसमें निहित सभी व्यक्तिगत प्राणियों में एक अत्यंत उत्तम व्यवस्था है।

वे पदार्थ और कर्तव्यबद्ध चीजें (जैसे वायु, अग्नि, जल और मिट्टी) जो उस विशाल सृष्टि के प्रशासन और रखरखाव के साधन हैं।

क्षेत्र, और जो इसकी सामान्य योजना से संबंधित हैं, वे सभी इस क्षेत्र के हर कोने में एकरूपता प्रदर्शित करते हैं। साथ ही, उस भव्य शहर, उस विशाल प्रदर्शनी हॉल में काम करने वाले दिव्य नाम और कार्य, व्यक्तिगत रूप से और साथ में, अधिकांश - और कुछ मामलों में, सभी - चीजों को शामिल करते हैं और प्रबल होते हैं, भले ही वे एक दूसरे के भीतर मौजूद हों और प्रत्येक का स्वभाव एक जैसा हो, चाहे वे कहीं भी काम करें और प्रबल हों। इसके अलावा, वे तत्व और प्रजातियाँ जो उस सुशोभित महल के निर्माण, जनसंख्या और प्रशासन के साधन हैं, वे पूरी धरती पर एक साथ और व्यक्तिगत रूप से फैले हुए हैं, भले ही वे एक दूसरे के भीतर मौजूद हों और प्रत्येक का स्वभाव एक जैसा हो, चाहे वे कहीं भी हों। यह सब, अनिवार्य रूप से और स्व-स्पष्ट रूप से, निम्नलिखित की मांग करता है, साबित करता है और पुष्टि करता है:

- इस ब्रह्मांड का निर्माता और प्रशासक, इस क्षेत्र का प्रभु और पोषक, इस महल का मालिक और निर्माता एक, एकमात्र, अद्वितीय है।

- न तो उसका कोई समान है, न कोई बराबर, न कोई मंत्री है, न कोई सहायक। न उसका कोई साथी है, न कोई विरोधी; न कोई अयोग्यता है, न कोई कमी।

वास्तव में, व्यवस्था अपने आप में एकता की एक आदर्श अभिव्यक्ति है; इसके लिए एक ही व्यवस्था करने वाले की आवश्यकता होती है। यह दूसरों के हस्तक्षेप के लिए कोई स्थान नहीं छोड़ता, जिससे विवाद और मतभेद पैदा हो।

चूँकि सभी चीज़ों में एक बुद्धिमानी भरा और सटीक क्रम है, चाहे वह सार्वभौमिक हो या विशेष, ब्रह्मांड की समग्रता से लेकर पृथ्वी के दैनिक और वार्षिक घूर्णन से लेकर मनुष्यों के चेहरे, उनके सिर में इंद्रियों के समूह और उनके रक्त में लाल और सफेद रक्त कोशिकाओं के परिसंचरण तक, यह स्पष्ट है कि परम शक्तिशाली और परम बुद्धिमान के अलावा कोई भी चीज़ या कोई भी व्यक्ति किसी चीज़ की ओर सृजन और निर्देशन के इरादे से अपना हाथ नहीं बढ़ा सकता है; न ही वह किसी भी तरह से उसके निर्माण में हस्तक्षेप या हस्तक्षेप कर सकता है। इसके विपरीत, सभी चीज़ें निष्क्रिय प्राप्तकर्ता हैं जो एक परम एजेंट या उस आधार के कार्यों को प्रकट करती हैं जहाँ वह कार्य करता है।

साथ ही, चूँकि कुछ उद्देश्यों की पूर्ति करना और कुछ लाभ प्रदान करने के उद्देश्य से चीजों को व्यवस्थित करना केवल ज्ञान और बुद्धि के माध्यम से ही संभव हो सकता है, और केवल इच्छा और विकल्प के साथ ही किया जा सकता है, यह स्पष्ट है कि यह सामान्य आदेश, जो बुद्धि के कुछ उदाहरणों पर आधारित और निर्देशित है-

डोम, और हमारी आँखों के सामने जीवों का यह असीम रूप से विविध और लाभकारी क्रम स्व-स्पष्ट रूप से प्रदर्शित और प्रमाणित करता है कि सभी प्राणियों का निर्माता और निर्देशक एक है, एक एजेंट जो जो चाहे और जिस तरह चाहे करता है। सब कुछ उसकी शक्ति के माध्यम से अस्तित्व में आता है, उसकी इच्छा के माध्यम से एक विशेष स्थिति ग्रहण करता है, और उसकी पसंद के माध्यम से एक विशेष और सबसे सटीक रूप लेता है।

साथ ही, चूँकि इस अतिथिगृह का ऊष्मा देने वाला दीपक - संसार - एक है; इसकी मोमबत्ती जो समय के विभाजन और मापन (चंद्र कैलेंडर में) के लिए आधार के रूप में कार्य करती है, एक है; इसका दयालु स्पंज एक है; इसका अग्निमय रसोइया एक है; इसका पेय जो जीवन का स्रोत है, एक है; इसका संरक्षण क्षेत्र एक है 46 - एकता के इन सभी उदाहरणों के कारण, यह स्पष्ट है कि यह एकता इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि इस अतिथिगृह का निर्माता और मालिक भी एक है। यह स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है कि वह अत्यंत उदार और मेहमाननवाज़ है, जो अपने अतिथिगृह के जीवित मेहमानों की सेवा करने के लिए उन उच्च-श्रेणी और महान अधिकारियों को नियुक्त करता है।

इसके अलावा, वही नाम जैसे कि सर्वज्ञ, सर्व-करुणामय, सर्व-रूप देने वाला, सर्व-निर्देशक, सर्व-पुनरुत्थान करने वाला, सर्व-पोषण करने वाला; वही गुण जैसे कि बुद्धि, दया और कृपा; और वही कार्य जैसे कि निर्माण, निर्देशन, स्वभाव और पालन-पोषण - ये सभी पूरे ब्रह्मांड में, व्यक्तिगत रूप से और एक साथ, एक दूसरे के भीतर और हर जगह सर्वोच्च सीमा तक व्याप्त हैं। वे एक दूसरे की छापों को इस तरह से पूरा और परिपूर्ण करते हैं कि ऐसा लगता है जैसे वे एक दूसरे के साथ एक हो रहे हैं: ऐसा लगता है जैसे कि शक्ति बुद्धि और दया के साथ एक हो जाती है, और बुद्धि कृपा और जीवन के साथ एक हो जाती है। जैसे ही किसी वस्तु में जीवन देने वाले सर्वज्ञ नाम की क्रियाशीलता प्रकट होती है, उसी समय, उसी वस्तु में तथा उसी व्यवस्था में, सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ तथा सर्वस्व प्रदान करने वाले जैसे अनेक नामों की क्रियाशीलता भी प्रकट होती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इन नामों से जाना जाने वाला तथा सर्वत्र एक ही प्रकार से प्रकट होने वाले व्यापक कार्यों का कर्ता एक, अद्वितीय तथा अद्वितीय है। हम इस पर विश्वास करते हैं तथा पूरे हृदय से इसकी पुष्टि करते हैं!

---

46 इस विश्वरूपी अतिथिगृह का ऊष्मा देने वाला दीपक सूर्य है; इसकी मोमबत्ती जो काल के विभाजन और मापन का आधार है, वह चन्द्रमा है; इसका दयालु स्पंज बादल है; इसका अग्निमय रसोइया भी सूर्य है; इसका पेय जो जीवन का स्रोत है, वह जल है; इसका संरक्षक क्षेत्र मिट्टी है। (ट्र.)

इसके अलावा, चूंकि वे तत्व जो पदार्थ और सामग्री का निर्माण करते हैं
सृष्टि पूरी धरती को अपने में समाहित करती है, और चूंकि सृष्टि की सभी प्रजातियां - जिन पर एकता को दर्शाने वाले विभिन्न चिह्न हैं - पूरी धरती पर बिखरी हुई हैं, इसलिए यह भी स्वतःसिद्ध रूप से सिद्ध होता है कि वे तत्व अपनी सामग्री के साथ, और वे प्रजातियां, अपने अलग-अलग सदस्यों के साथ, एक ही सत्ता की संपत्ति हैं। वे एक ऐसे शक्तिशाली और अद्वितीय व्यक्ति की कलाकृतियाँ और सेवक हैं जो उन विशाल और व्यापक तत्वों को पूरी तरह से आज्ञाकारी सेवकों के रूप में नियुक्त करता है और पूरी धरती पर बिखरी हुई उन प्रजातियों को अनुशासित सैनिकों के रूप में तैनात करता है। चूंकि यह सत्य रिसाले-ए- नूर के कुछ अन्य भागों में भी स्थापित और समझाया गया है, इसलिए हम यहाँ इस संक्षिप्त संकेत के साथ खुद को संतुष्ट करते हैं।

अपने अवलोकनों का सारांश प्रस्तुत करते हुए तथा विश्वास की चमक और दिव्य एकता के आनंद से उत्पन्न आनंद के साथ अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए, जो उन्हें इन पांच वास्तविकताओं से प्राप्त हुआ था, हमारे यात्री ने अपने हृदय से कहा:

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के रंगीन पृष्ठ को देखो,
और देखो कि सत्ता की स्वर्णिम कलम ने इस पर क्या अंकित किया है!
उन लोगों के लिए कोई भी बिंदु अंधकारमय नहीं छोड़ा गया है
जो अपने हृदय की आँखों से देख सकते हैं।
ऐसा लगता है मानो ईश्वर ने अपनी निशानियों को प्रकाश से अंकित कर दिया हो।

यह भी जान लें कि:

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के पन्ने अनंत प्रकार के हैं;
समय की घटनाओं की रेखाएँ अनगिनत रचनाएँ हैं।
सत्य की संरक्षित पट्टिका के मुद्रण गृह में लिखा गया,
ब्रह्माण्ड का प्रत्येक प्राणी एक सार्थक, मूर्त शब्द है।

यह भी सुनिए:

जबकि सभी चीज़ें घोषणा करती हैं, "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," वे एक स्वर में यह भी घोषणा करते हैं, "हे परम सत्य!" और एक स्वर से कहते हैं, "हे सर्वव्यापी!" हर चीज़ में एक संकेत है जो दर्शाता है कि वह एक है।

ये सब वे अपने हृदय से कहते हैं, और अपने हृदय के साथ-साथ अपनी आत्मा से भी कहते हैं
उनके शब्दों की सच्चाई की पुष्टि करते हुए कहते हैं, "हाँ, सचमुच!"

दिव्य एकता की पांच वास्तविकताओं के संक्षिप्त संदर्भ में, जिसे इस दुनिया में अतिथि, ब्रह्मांड के माध्यम से यात्री ने दूसरे स्थान पर देखा

हवेली या उनकी यात्रा का दूसरा चरण, यह द सेकेंड में कहा गया था
प्रथम स्टेशन का अध्याय:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, एक, अद्वितीय, जिसकी एकता और आवश्यक अस्तित्व प्रत्येक की पूर्णता और व्यापकता में भव्यता और उदात्तता के सत्य के अवलोकन के माध्यम से स्पष्ट रूप से प्रदर्शित होते हैं; ईश्वर की इच्छा और बुद्धि के अलावा किसी भी सीमा के बिना, निरपेक्ष रूप से, अनंत में दिव्य कृत्यों की उपस्थिति के सत्य के अवलोकन के माध्यम से; पूर्ण तीव्रता के साथ पूर्ण बहुलता में प्राणियों के निर्माण की सच्चाई के अवलोकन के माध्यम से, पूर्ण सुविधा और पूर्ण सटीकता के साथ प्राणियों का निर्माण, और कलात्मकता और मूल्य की पूर्ण पूर्णता के साथ पूर्ण प्रचुरता में चीजों की उत्पत्ति; सार्वभौमिक और संपूर्ण, परस्पर जुड़े और परस्पर संबंधित प्राणियों के अस्तित्व की सच्चाई के अवलोकन के माध्यम से; सार्वभौमिक व्यवस्था की सच्चाई के अवलोकन के माध्यम से, जो ईश्वर के साथ साझेदारी की किसी भी धारणा का पूरी तरह से खंडन करता है; और ब्रह्माण्ड की आवश्यकताओं की पूर्ति के स्रोतों की एकता के सत्य के अवलोकन के माध्यम से, जो इसके निर्माता की एकता और नामों और कृत्यों की उनकी सर्वव्यापी क्रिया के साथ, तथा पृथ्वी को आच्छादित करने वाले तत्वों और प्रजातियों की एकता को सबसे स्पष्ट रूप से प्रमाणित करता है।

तीसरा चरण

फिर जब हमारा पर्यवेक्षक विभिन्न युगों से होकर यात्रा कर रहा होता है, तो वे दूसरी सहस्राब्दी के प्रसिद्ध नवीनीकरणकर्ता, इमाम अर-रब्बानी अहमद अल-फारुकी[47] के स्कूल में प्रवेश करते हैं, और एक सबसे महत्वपूर्ण पाठ में भाग लेते हैं।
इमाम इस प्रकार थे:

> सभी आध्यात्मिक यात्राओं का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम (या फल) विश्वास की सच्चाइयों की पूर्ण अनुभूति प्राप्त करना है।

उन्होंने यह भी कहा:

> विश्वास के एक सत्य की पूर्ण अनुभूति, हजारों आश्चर्यों और आध्यात्मिक सुखों से बेहतर है।[48]

---

47 इमाम रब्बानी, अहमद फ़ारूक़ी अल-सरहंदी (मृत्यु, 1624): "दूसरी सहस्राब्दी के पुनरुत्थानकर्ता।" सरहंद (भारत) में जन्मे और इस्लामी विज्ञान में पारंगत, उन्होंने सूफ़ीवाद से कई भ्रष्ट तत्वों को हटा दिया। उन्होंने शाह आलमगीर या अवरंगज़ेब (मृत्यु, 1707) को पढ़ाया, जिन्होंने विद्वानों की एक समिति को हनफ़ी कानून का सबसे व्यापक संग्रह तैयार करने के लिए नियुक्त किया था। उनकी रचना, अल-मकतूबत ("पत्र") बहुत प्रसिद्ध है और पूरे मुस्लिम जगत में व्यापक रूप से जानी जाती है। (अनुवाद)

48 इमाम अर-रब्बानी, अल-मकतुबत ("पत्र"), पत्र संख्या। 210. (ट्र.)

इमाम ने आगे कहा:

> पुराने ज़माने में महान संतों ने भविष्यवाणी की थी कि धर्मशास्त्र के विद्वानों में से कोई व्यक्ति उभरेगा। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि वह विश्वास और इस्लाम के सभी सत्यों को तर्कसंगत प्रमाणों और अत्यंत स्पष्टता के साथ साबित करेगा। मुझे उम्मीद है कि मैं वह व्यक्ति हो सकता हूँ।

इस उम्मीद को ध्यान में रखते हुए, उन्होंने सिखाया कि ईश्वरीय एकता का विश्वास और पुष्टि ही सभी मानवीय पूर्णता का आधार, सार, प्रकाश और जीवन है। इसके अलावा, उन्होंने सिखाया कि हदीस "एक घंटे का चिंतन एक साल की (अतिरिक्त) पूजा से बेहतर है,"49 विश्वास की सच्चाइयों पर चिंतन से संबंधित है, और नक्शबंदी सूफी संप्रदाय में ईश्वर का मौन आह्वान और स्मरण बेहतर है क्योंकि यह इस सबसे उत्कृष्ट चिंतन का एक रूप है।

यात्री इमाम की सारी शिक्षाओं को ध्यान से सुनता है। फिर वे अपनी आत्मा की ओर मुड़ते हैं और उससे इस प्रकार कहते हैं: "यह वीरतापूर्ण कार्य इस प्रकार है

इमाम कहते हैं। अपने ईमान की ताकत को एक अणु जितना भी बढ़ाना एक टन ज्ञान या पूर्णता के अन्य रूपों से अधिक मूल्यवान है; यह सौ आध्यात्मिक सुखों के शहद से भी अधिक मीठा है। साथ ही, पश्चिमी दार्शनिकों के संदेह और आपत्तियाँ जो इस्लामी विश्वास और कुरान के खिलाफ एक हजार वर्षों से जमा हुई हैं, वर्तमान में विश्वासियों पर हमला करने का एक तरीका खोज रही हैं। वे विश्वास के स्तंभों को हिलाना चाहते हैं, जो शाश्वत सुख, शाश्वत जीवन और शाश्वत स्वर्ग की कुंजी, स्रोत और नींव हैं। इसलिए हमें अपने विश्वास को केवल नकल के बजाय जांच और अनुभव पर आधारित करके मजबूत करना चाहिए।

तो आओ, आगे बढ़ें! हमने जो विश्वास की उनतीस श्रेणियाँ पाई हैं, जिनमें से प्रत्येक पर्वत के समान शक्तिशाली है, उन्हें धन्य संख्या तैंतीस तक लाने के लिए, जो कि प्रत्येक विहित या निर्धारित प्रार्थना के बाद की जाने वाली महिमाओं की संख्या है, और इस शिक्षा के क्षेत्र में तीसरे भवन या चरण तक पहुँचने के लिए, आइए हम प्रभु द्वारा जीवित दुनिया के भरण-पोषण के द्वार पर दस्तक दें और इसे ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है, की कुंजी से खोलें।" ऐसा कहते हुए, वे इस तीसरे भवन के द्वार पर विनतीपूर्वक दस्तक देते हैं, जो कि आश्चर्यों का समूह और चमत्कारों का प्रदर्शन है। वे इसे "सर्व-प्रकट करने वाले ईश्वर के नाम पर" की कुंजी से खोलते हैं, और इस प्रकार तीसरे भवन में प्रवेश प्राप्त करते हैं।

---

[49] अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकामील- कुरान, 4:314।

वहाँ वे देखते हैं कि चार महान और व्यापक सत्य उस भवन को प्रकाशित कर रहे थे और दिव्य एकता के सत्य को सूर्य के समान चमक से प्रदर्शित कर रहे थे।

पहला सत्य : खुलने का सत्य

अर्थात्, एक ही क्रिया द्वारा, सर्व-प्रकटीकरण नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से, एक ही सरल पदार्थ से एक ही समय में असंख्य विविध और विशिष्ट रूप सर्वत्र प्रकट होते हैं। इस नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से, ईश्वर की उत्पत्ति की शक्ति ने ब्रह्मांड के बगीचे में फूलों की तरह असंख्य व्यवस्थित रूप खोल दिए हैं, और उनमें से प्रत्येक को एक अलग पहचान प्रदान की है। इसी तरह, और भी अधिक चमत्कारी तरीके से, उन्होंने पृथ्वी के बगीचे में रहने वाले लाखों जीवित प्राणियों में से प्रत्येक को उसका विशेष रूप दिया है, जो सममित, सुशोभित और कलात्मकता और ज्ञान से भरा हुआ है।

जैसा कि श्लोकों में संकेत दिया गया है,

> वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ में तीन पर्दों में एक के बाद एक सृजन करता है। वही अल्लाह है, तुम्हारा सच्चा रब। उसी का राज्य है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं। फिर तुम कहाँ भटक गए? (39:6)

> निस्संदेह अल्लाह से धरती और आकाश में कोई चीज़ छिपी नहीं है। वही है जो तुम्हें गर्भों में जैसा चाहता है वैसा बनाता है। उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह अत्यन्त महिमावान, अप्रतिम सामर्थ्यवान, तत्वदर्शी है। (3:5-6)

ईश्वरीय एकता का सबसे शक्तिशाली प्रमाण और ईश्वरीय शक्ति का सबसे उल्लेखनीय चमत्कार ईश्वर द्वारा रूपों को खोलना है। इस कारण से, रूपों के खुलने की सच्चाई को रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में, विशेष रूप से इस ग्रंथ के दूसरे पड़ाव के पहले अध्याय के छठे और सातवें चरण में, अलग-अलग तरीकों से बार-बार स्थापित और व्याख्या किया गया है।

पाठकों को उन अनुभागों का संदर्भ देते हुए हम यहां केवल इतना ही कहते हैं:

जैसा कि वनस्पति विज्ञान और प्राणी विज्ञान के विद्वानों द्वारा किए गए व्यापक शोध से पता चलता है, रूपों का उद्घाटन इतना व्यापक और कलात्मक कार्य है कि कोई भी अन्य व्यक्ति, जो सभी चीजों में सब कुछ देखने और करने में सक्षम है, के अलावा कोई भी इसे प्राप्त नहीं कर सकता। रूपों के उद्घाटन के इस कार्य के लिए अनंत ज्ञान, ध्यान और व्यापक-

वह शक्ति जो केवल एक अनंत शक्ति में ही विद्यमान हो सकती है जो हर समय और हर जगह मौजूद है। यह शक्ति, बदले में, केवल उस अद्वितीय सत्ता में ही पाई जा सकती है जो पूरे ब्रह्मांड का संचालन करती है।

जैसा कि ऊपर उल्लेखित श्लोकों में दर्शाया गया है, ईश्वर के खुलने का गुण, जो माता के गर्भ में अंधकार के तीन पर्दों के भीतर लोगों के रूपों के मापित, विशिष्ट और व्यवस्थित उद्घाटन और सृजन में व्यक्त होता है, बिना किसी त्रुटि, भ्रम या भूल के, ईश्वर की एकता का सबसे शक्तिशाली प्रमाण है। इसी तरह, पृथ्वी पर सभी मनुष्यों, जानवरों और पौधों के रूपों का एक ही शक्ति, एक ही बुद्धि और एक ही कलात्मकता के साथ खुलना ईश्वर की एकता का सबसे शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो ईश्वर के साथ किसी भी साझेदारी के लिए कोई जगह नहीं छोड़ता है। जिस तरह पहले अध्याय में उन्नीस चरणों के रूप में प्रस्तुत उन्नीस सत्य ईश्वर के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं और अपने स्वयं के अस्तित्व के माध्यम से सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं, वे अपनी व्यापकता के माध्यम से उसकी एकता की भी गवाही देते हैं।

फिर हमारा यात्री तीसरे भवन में दूसरे सत्य का साक्षी बनता है:

दूसरा सत्य : दयालुता का सत्य

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक ऐसा व्यक्ति है जिसने धरती को दया के हज़ारों उपहारों से ढक दिया है, और इसे एक वास्तविक भोज-स्थल में बदल दिया है। उसने इसे एक ऐसी मेज़ के रूप में सजाया है जहाँ दया के सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग स्वादिष्ट भोजन परोसे जाते हैं। उसने धरती के अंदर भी करुणा और बुद्धि के हज़ारों अनमोल उपहारों का भण्डार बनाया है। इसके अलावा, वह हमें धरती को, उसके वार्षिक चक्कर के साथ, एक वाणिज्यिक जहाज़ या रेलगाड़ी की तरह भेजता है जो दुनिया से आने वाली लाखों बेहतरीन मानवीय ज़रूरतों से लदी होती है।

अदृश्य। वह हमारे लिए भोजन और कपड़े ले जाने वाली गाड़ी की तरह वसंत का मौसम भी भेजता है। वह अत्यंत करुणा के साथ हमारा पालन-पोषण करता है। और इन उपहारों और उपहारों से हमें लाभ पहुँचाने के लिए, उसने हमें सैकड़ों या हज़ारों भूख, ज़रूरतें, भावनाएँ, संवेदनाएँ और इंद्रियाँ प्रदान की हैं।

जैसा कि चौथी किरण में भगवान के बारे में श्लोक के संबंध में समझाया गया था

सर्व-पर्याप्तता:

- उसने हमें ऐसा पेट दिया है जो इस प्रकार बनाया गया है कि हम उसमें से गुजरने वाले असंख्य प्रकार के भोजन से आनंद प्राप्त कर सकते हैं।

• उसने हमें एक ऐसा जीवन प्रदान किया है जो इस तरह से संरचित है कि, इसकी इंद्रियों के माध्यम से, हम विशाल भौतिक दुनिया में, जो एक भोज-टेबल जैसा दिखता है, उसकी असंख्य कृपाओं से लाभ प्राप्त करने में सक्षम हैं। • उसने हमें मानवता का उपहार दिया है, जो ऐसा है कि बुद्धि और हृदय जैसे उपकरणों के माध्यम से हम अदृश्य और दृश्य दोनों दुनियाओं से आने वाले

असीम उपहारों का आनंद ले सकते हैं।

• उन्होंने हमें इस्लाम को एक जीवन-पद्धति के रूप में बताया है, जो हमें अदृश्य और दृश्यमान दुनिया के अप्रतिबंधित खज़ानों से प्रकाश प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

• उसने हमें ऐसे विश्वास की ओर निर्देशित किया है जिससे हम इस संसार और परलोक की असंख्य ज्योतियों और उपहारों से प्रकाशित हो सकें और उनसे लाभ उठा सकें।

यह ब्रह्मांड एक महल की तरह है जिसे ईश्वरीय दया ने असंख्य प्राचीन वस्तुओं और मूल्यवान कलाकृतियों से सुसज्जित और सुशोभित किया है। उस महल में सभी संदूकों और कक्षों को खोलने की चाबियाँ मानवता के हाथों में दी गई हैं, जिन्हें उन सभी ज़रूरतों और इंद्रियों से भी संपन्न किया गया है जिनकी उन्हें उनका उपयोग करने के लिए आवश्यकता होती है। इस प्रकार यह दया जो इस दुनिया और परलोक को अपने भीतर समाहित करती है, निस्संदेह ईश्वर की एकता की समग्र अभिव्यक्ति के भीतर ईश्वर की एकता की एक विशेष अभिव्यक्ति होनी चाहिए।

जिस तरह सूरज की रोशनी ईश्वर की एकता (वहीदिया) का दृष्टांत है - उसके नामों की सर्वव्यापकता या समग्र अभिव्यक्ति - इस तथ्य के संबंध में कि वह अपने सामने आने वाली सभी चीज़ों को समझता है, यह तथ्य कि हर चमकदार और पारदर्शी वस्तु जो अपनी क्षमता के अनुसार, सूर्य की छवि या उसके उष्मा और प्रकाश और उसके प्रकाश में सात रंगों के साथ उसका प्रतिबिंब ग्रहण करती है, वह ईश्वर की एकता (अहदिया) का दृष्टांत है - किसी विशेष चीज़ या प्राणी में उसके नामों की विशेष अभिव्यक्ति। इसलिए, जो कोई भी उसके सर्वव्यापी प्रकाश को देखेगा, वह इस निष्कर्ष पर पहुंचेगा कि इस धरती का सूर्य एक है। सभी चमकदार वस्तुओं में और यहां तक कि पानी की बूंदों में भी सूर्य की गर्मी और प्रकाश के साथ प्रतिबिंब को देखकर, वे कहेंगे कि एक ही सूर्य अपनी विशेषताओं के साथ सभी चीजों के करीब मौजूद है: यह सभी चीजों के दर्पण जैसे दिल में है।

इसी प्रकार, यह तथ्य कि सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान की दया अत्यन्त व्यापक है,

सौंदर्य और अनुग्रह सभी चीजों को उसी तरह से घेरे हुए हैं जैसे एक प्रकाश अ-

उस सर्व-दयालु की असीम कृपा; यह दर्शाता है कि उसका किसी भी तरह से कोई "साथी" नहीं हो सकता। साथ ही, यह तथ्य कि उस सर्वव्यापी दया के आवरण के नीचे सर्व-दयालु के अधिकांश नामों की रोशनी और उसके दिव्य सार की एक तरह की अभिव्यक्ति सभी चीजों में मौजूद है - विशेष रूप से मानव जाति में -

और यह तथ्य कि यह प्रत्येक व्यक्ति को जीवन से उत्पन्न एक व्यापक प्रकृति प्रदान करता है जिसके कारण उसका सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के साथ संबंध होता है, सर्व-दयालु की एकता को सिद्ध करता है: यह बिना किसी संदेह के प्रदर्शित करता है कि वह सभी चीजों के साथ मौजूद है और सभी चीजों में सभी कार्य करता है।

जिस तरह सर्व-दयालु अपनी दया की एकता और व्यापकता के माध्यम से पूरे ब्रह्मांड और पूरी धरती पर अपनी महिमा का प्रदर्शन करते हैं, उसी तरह अपनी एकता के प्रकटीकरण के माध्यम से वे प्रत्येक जीवित प्रजाति के प्रत्येक सदस्य में, और विशेष रूप से प्रत्येक मानव व्यक्ति में, अपनी सभी कृपाओं के नमूने भी इकट्ठा करते हैं। वे उन्हें उस जीवित सदस्य के उपकरणों और साधनों के रूप में व्यवस्थित करते हैं, पूरे ब्रह्मांड को उनके लिए एक विशेष घर बनाते हैं, इस प्रकार अपनी कृपा और सौंदर्य की विशेष कोमलता की घोषणा करते हैं और घोषणा करते हैं कि उनकी कृपा की सभी विविधताएँ मानव जाति के प्रत्येक सदस्य में केंद्रित हैं।

उदाहरण के लिए, एक खरबूजा अपने बीज में सघन रूप में मौजूद होता है; इससे हम समझ सकते हैं कि बीज बनाने वाला ही खरबूजा भी बनाता है। फिर, अपने ज्ञान के विशेष संतुलन और अपनी बुद्धि के विशेष नियम से, वह उसमें से बीज निकालता है और उसे एक शरीर पहनाता है। खरबूजा बनाने वाले एक और अद्वितीय मास्टर कारीगर के अलावा कोई भी या कोई भी इसका बीज बनाने में सक्षम नहीं है। इसी तरह, चूँकि दया की अभिव्यक्ति के माध्यम से ब्रह्मांड एक पेड़ या एक बगीचे की तरह है, पृथ्वी एक फल या खरबूजे की तरह है, और प्रत्येक जीवित प्राणी - विशेष रूप से एक इंसान - एक बीज की तरह है, इसका अर्थ यह है कि सबसे छोटे जीवित प्राणी का निर्माता और स्वामी न केवल पूरी पृथ्वी का बल्कि पूरे ब्रह्मांड का भी निर्माता होना चाहिए।

संक्षेप में: जिस तरह सभी प्राणियों के आनुपातिक और व्यवस्थित रूपों का निर्माण और प्रकटीकरण सर्वव्यापी दिव्य उद्घाटन के सत्य के माध्यम से बिना किसी संदेह के दिव्य एकता की सच्चाई को साबित करता है, उसी तरह सर्वव्यापी दया के सत्य से भी यह साबित होता है। क्योंकि यह सभी जीवित प्राणियों का पालन-पोषण करता है जो अस्तित्व में आते हैं और इस दुनिया के जीवन में प्रवेश करते हैं, विशेष रूप से नवजात शिशु का, अत्यंत क्रम और नियमितता के साथ, उन्हें जो कुछ भी चाहिए उसे उन तक पहुँचाता है, उनमें से किसी को भी अनदेखा या भूले बिना। यह तथ्य कि दया एक ही पल में सभी व्यक्तियों तक हर जगह पहुँचती है, दोनों दिव्य गुणों को प्रदर्शित करता है।

एकता और ईश्वरीय एकता के साथ एकता। चूँकि दया की सच्चाई के आयाम रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में स्पष्ट किए जा चुके हैं जहाँ सर्वज्ञ और सर्वदयालु के नामों पर चर्चा की गई है, इसलिए हम यहाँ अपने आपको इस संक्षिप्त संकेत तक सीमित रखेंगे।

तीसरा सत्य: निपटान और प्रशासन का सत्य

जो हमारा यात्री तीसरे भवन या चरण में देखता है वह निपटान और प्रशासन का सत्य है।

यह सभी चीज़ों के पूर्ण व्यवस्था और संतुलन के साथ निपटान और प्रशासन की सच्चाई या वास्तविकता है, भयानक और तेज़ी से चलने वाले आकाशीय पिंडों से लेकर धरती के ज़रूरतमंद, कमज़ोर प्राणियों तक। क्योंकि उन्हें एक-दूसरे की मदद करने के लिए बनाया गया है और एक-दूसरे के सहयोग से प्रशासित किया जाता है: उनकी देखभाल के लिए ज़रूरी सभी उपाय किए जाते हैं, और जैसे-जैसे वे किए जाते हैं, विशाल दुनिया एक परिपूर्ण राज्य, एक शानदार शहर, एक शानदार ढंग से सुसज्जित महल में बदल जाती है। इस अत्याचारी और दयालु प्रशासन के विशाल क्षेत्रों को छोड़कर, हम तुलना के ज़रिए, इसके एक पृष्ठ या चरण की एक संक्षिप्त तस्वीर पेश करेंगे जो वसंत में धरती के चेहरे पर खुद को प्रकट करता है। अधिक विस्तृत व्याख्या चाहने वाले पाठक रिसाले-ए-नूर के अन्य खंडों जैसे कि दसवें शब्द का संदर्भ ले सकते हैं।

मान लीजिए कि कोई महान विश्व विजेता लाखों विभिन्न जनजातियों और राष्ट्रों की एक सेना एकत्रित करता है, और प्रत्येक जनजाति और राष्ट्र के प्रत्येक सदस्य को वस्त्र और हथियार, निर्देश और वेतन अलग-अलग और विभिन्न रूप से, बिना किसी दोष और त्रुटि या भूल के, उचित समय पर, बिना किसी देरी या भ्रम के, सर्वोच्च क्रम के साथ और कल्पना की जा सकने वाली सबसे उत्तम रीति से प्रदान करता है।

अब, उस महान सेनापति की असाधारण शक्ति के अलावा कोई भी कारण या अभिकर्ता उस विशाल, जटिल, सूक्ष्म, संतुलित, बहुआयामी और न्यायपूर्ण प्रशासन में भूमिका निभाने के लिए हाथ नहीं बढ़ा सकता। अगर वह हाथ बढ़ाता, तो वह व्यवस्था को नष्ट कर देता और भ्रम पैदा कर देता।

इसी तरह, हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक अदृश्य हाथ हर वसंत में सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग प्रजातियों से बनी एक शानदार सेना बनाता है और उसका प्रबंधन करता है। पतझड़ में - अंतिम घंटे का एक नमूना - यह हाथ पौधों और जानवरों की उन लाखों प्रजातियों में से अधिकांश को मृत्यु के रूप में उनके कर्तव्यों से मुक्त कर देता है। वसंत में - सर्वोच्च पुनरुत्थान और न्याय के दिन सभी प्राणियों की सभा का एक नमूना - यह सैकड़ों हज़ारों उदाहरणों को सामने लाता है

सर्वोच्च पुनरुत्थान कुछ ही हफ्तों में अत्यंत क्रम और अनुशासन के साथ होता है। एक पेड़ पर पुनरुत्थान के चार छोटे उदाहरण दिखाने के बाद—यानी, पेड़ को ही जीवन प्रदान करना और उसके पहले के पत्तों, फूलों और फलों की सटीक समानताएं बनाना—यह महिमा की उस सेना के प्रत्येक कबीले और प्रजाति को, जिसमें लाखों अलग-अलग प्रजातियां शामिल हैं, उसके उपयुक्त प्रावधान, उसके विविध रक्षात्मक हथियार और विशिष्ट वस्त्र, उसके निर्देश और निर्वहन, और उसके सभी अत्यंत विविध उपकरण और यंत्र, अत्यंत क्रम के साथ, बिना किसी त्रुटि या दोष के, बिना किसी भ्रम या चूक के, अप्रत्याशित स्रोतों से और सबसे उपयुक्त समय पर देता है। इस प्रकार यह अपनी एकता साबित करता है, जैसा कि इसके गुणों और उपाधियों की सर्वव्यापी अभिव्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित होता है; इसकी एकता, जैसा कि विशेष चीजों पर उसके गुणों और उपाधियों की विशेष अभिव्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित होता है; और इसकी सर्व-स्वतंत्र अद्वितीयता, इसकी अनंत शक्ति और इसकी असीम दया, प्रभुत्व, संप्रभुता और बुद्धि की पूर्णता के भीतर, दिव्य नियति की कलम से पृथ्वी की पटिया पर प्रत्येक झरने के पृष्ठ पर पूर्ण एकता की यह घोषणा लिखती है।

वसंत ऋतु में इस घोषणा का केवल एक पृष्ठ पढ़ने के बाद, हमारे यात्री अपने आप से कहते हैं:

> वह सर्व-शक्तिशाली, वह सर्व-शक्तिशाली, वह सर्व-शक्तिशाली, जो प्रत्येक वसंत में हजारों पुनरुत्थान लाता है, जो सर्वोच्च पुनरुत्थान से भी अधिक आश्चर्यजनक है, उसने अपने सभी पैगम्बरों को हजारों बार वादा किया है और आश्वासन दिया है कि वह सर्वोच्च पुनरुत्थान लाएगा। उसने कुरान में इसकी वास्तविकता के हजारों संकेत भी दिए हैं और इसकी हजारों आयतों में स्पष्ट रूप से घोषणा की है। और इसलिए नरक की सजा उन लोगों के लिए शुद्ध न्याय है जो पुनरुत्थान को अस्वीकार करने की गलती करते हैं, क्योंकि ऐसा इनकार असंख्य वादों का खंडन करना होगा और उस सर्व-शक्तिशाली, उस सर्व-शक्तिशाली की शक्ति को अस्वीकार करना होगा।

जब यात्री ने यह कहा, तो उनकी आत्मा ने उनकी भावनाओं को प्रतिध्वनित किया यह कहकर: “मैं भी विश्वास करता हूँ!”

चौथा सत्य: करुणा और सहायता का सत्य

जो कि तैंतीसवाँ कदम है, जिसे यात्री ने देखा है तीसरा भवन या चरण करुणा और प्रावधान का सत्य है।

हम अपनी आँखों से देख सकते हैं कि धरती पर, आसमान में और समुद्र में रहने वाले सभी जीव, खास तौर पर वे जो आत्मा से संपन्न हैं, और उनमें से खास तौर पर नपुंसक, कमज़ोर और युवा, उन्हें उनका सारा ज़रूरी पोषण, चाहे वह भौतिक हो या अभौतिक, सबसे ज़्यादा सावधानी से, सबसे सही समय पर, सबसे व्यवस्थित तरीके से और बिना किसी चूक या भ्रम के, एक अदृश्य हाथ द्वारा दिया जाता है। कुछ तरह के पोषण सूखी मिट्टी से प्राप्त होते हैं, कुछ सूखी, हड्डी जैसी लकड़ी के टुकड़ों से, जबकि बहुत ज़्यादा मात्रा में दूसरे तरह के पोषण एक ही बीज से आते हैं।

इनमें से सबसे नाजुक वह है जो रक्त और अपशिष्ट पदार्थ के बीच से आता है।

आयत, निस्संदेह ईश्वर ही वह है जो सर्व-प्रदाता, सर्वशक्तिशाली और सर्वशक्तिशाली है (51:58), ईश्वर को केवल दर्शन प्रदान करने का अधिकार देती है, जबकि आयत, धरती पर कोई भी ऐसा प्राणी नहीं है जो बिना किसी बाधा के अपनी जीविका का प्रबंध ईश्वर पर निर्भर करता हो, और वह उसके हर निवास और स्वभाव (जीवन के हर चरण), और उसके रहने की अवधि, और उसके वहाँ से जाने के क्षण को जानता है। सब कुछ एक स्पष्ट पुस्तक में है (11:6), घोषणा करता है कि ईश्वर ने सभी मनुष्यों और जानवरों को उनके जीवन के लिए आवश्यक जीविका देने का बीड़ा उठाया है। इसी तरह, आयत, कितने ही प्राणी ऐसे हैं जो अपना भरण-पोषण नहीं करते, लेकिन ईश्वर उन्हें और वास्तव में तुम्हारे लिए भी भरण-पोषण करता है। वह सब कुछ सुनने वाला, सब कुछ जानने वाला है (29:60), इस तथ्य को स्थापित करता है कि यह ईश्वर ही है जो सभी शक्तिहीन, कमजोर और दुखी प्राणियों के लिए गारंटी देता है और उन्हें प्रदान करता है जो अपने जीविकोपार्जन के लिए काम करने में असमर्थ हैं, इसे अप्रत्याशित स्थानों से प्रदान करता है - वास्तव में अदृश्य से या यहाँ तक कि शून्य से भी। उदाहरण के लिए, समुद्र तल पर कीड़े और उनके बच्चे लगभग शून्य से प्रदान किए जाते हैं; सभी बच्चों को अप्रत्याशित स्रोतों से प्रदान किया जाता है, जबकि सभी जानवरों को हर वसंत में उनके जीविकोपार्जन की तरह अदृश्य से प्राप्त होता है। उपरोक्त आयत उन लोगों के लिए भी स्थापित और घोषित करती है जो हर चीज को भौतिक कारणों या प्रकृति के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं कि यह वह है जो कार्य-कारण के पर्दे के पीछे से प्रावधान प्रदान करता है। इसके अलावा, कई अन्य कुरान की आयतें और ब्रह्मांडीय प्रमाण संदेह से परे प्रदर्शित करते हैं कि यह एक ही सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान की करुणा के माध्यम से है कि सभी जीवित प्राणियों का पोषण होता है।

दरअसल, चूँकि पेड़ों को एक खास तरह के पोषण की ज़रूरत होती है, उनमें न तो शक्ति होती है और न ही इच्छाशक्ति, और इसलिए वे पूरी तरह से भगवान पर निर्भर रहते हैं, इसलिए उनका भरण-पोषण उनके पास जल्दी से जल्दी पहुँचता है। शक्तिहीन बच्चों का पोषण आश्चर्यजनक छोटे पंपों से उनके मुँह तक पहुँचता है,

वे तभी रुकते हैं जब उन्हें थोड़ी शक्ति और इच्छाशक्ति प्राप्त हो जाती है। विशेष रूप से मानव शिशुओं का पोषण उनकी माताओं के स्नेह और कोमलता से प्राप्त होता है। ये विभिन्न उदाहरण दिखाते हैं कि वैध पोषण इच्छा और शक्ति के अनुपात में नहीं होता है; बल्कि यह कमज़ोरी और नपुंसकता के संबंध में होता है, जो ईश्वर में विश्वास को प्रेरित करता है।

इच्छाशक्ति, शक्ति और चतुराई, जो लालच की ओर ले जाती है और ज़्यादातर मामलों में नुकसान का कारण बनती है, अक्सर कुछ विद्वान या साहित्यकार लोगों को भिक्षावृत्ति की ओर ले जाती है, जबकि कई अज्ञानी, असभ्य और आम लोगों की भरोसेमंद कमज़ोरी उन्हें बहुत कुछ पाने की ओर ले जा सकती है। इसी वजह से "कितने विद्वान हैं जिनका मार्ग कहीं नहीं पहुँचा; कितने अज्ञानी हैं जो धन-दौलत में घुटने तक डूबे हुए हैं।" एक कहावत बन गई है। यह दर्शाता है कि किसी व्यक्ति को शक्ति और इच्छाशक्ति के कारण वैध प्रावधान की ओर नहीं ले जाया जाता है; बल्कि, वैध प्रावधान उन लोगों को दिया जाता है जिनके श्रम और प्रयास को दया के दाता द्वारा स्वीकार्य माना जाता है: यह एक करुणा द्वारा दिया जाता है जो उनकी ज़रूरतों पर दया करता है।

अब प्रावधान दो प्रकार का है:

पहला प्रकार सच्चा प्रावधान है, जो जीवन के लिए बिल्कुल आवश्यक है: इसकी गारंटी भगवान द्वारा दी गई है। यह वास्तव में इतना नियमित और सुव्यवस्थित है कि शरीर में वसा और अन्य चीजों के रूप में संग्रहीत इस बुनियादी प्रावधान का हिस्सा, उदाहरण के लिए, कम से कम बीस दिनों तक जीवित रहने के लिए पर्याप्त है, भले ही कुछ भी न खाया जाए। जो लोग बीस या तीस दिन पूरे होने से पहले या उनके शरीर में संग्रहीत बुनियादी प्रावधान के खत्म होने से पहले भूख से मरते दिखते हैं, वास्तव में प्रावधान की कमी से नहीं बल्कि बुरी या अव्यवस्थित आदतों के कारण होने वाली बीमारी से मरते हैं।

दूसरा प्रकार वह प्रावधान है जो वास्तव में महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन जो आदत, अपव्यय और दुरुपयोग के कारण समय के साथ आवश्यक हो गया है। इस तरह का प्रावधान भगवान की गारंटी के तहत नहीं है, बल्कि उनकी उदारता पर निर्भर करता है: कभी-कभी वह इसे दे सकता है, कभी-कभी वह इसे दे सकता है।

नहीं हो सकता है।

इस दूसरे प्रकार के प्रावधान के संबंध में, वे लोग खुश हैं जो जीविका के वैध अधिग्रहण और मितव्ययिता और संतोष के गुणों को - जो स्वयं खुशी और आनंद के स्रोत हैं - पूजा और जीविका के लिए सक्रिय प्रार्थना के रूप में मानते हैं। वे ईश्वर द्वारा उन्हें जो कुछ भी दिया जाता है उसे कृतज्ञता और कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार करते हैं, और अपना जीवन खुशी से बिताते हैं।

इसके विपरीत, वे लोग अभागे हैं जो अपनी फिजूलखर्ची और लालच के कारण, जो दुख, हानि और संकट के स्रोत हैं, वैध आजीविका अर्जन को त्याग देते हैं और इसके बजाय हर दरवाजे पर दस्तक देते हैं, अपना पैसा खर्च करते हैं।

वे आलस्य, उत्पीड़न और शिकायत में इतना डूबे रहते हैं कि वे अपना जीवन नष्ट करने के लिए तैयार हो जाते हैं।

जिस तरह से पेट भोजन की मांग करता है, उसी तरह मनुष्य की पांच इंद्रियां और उनकी अन्य शक्तियां जैसे कि हृदय, आत्मा, बुद्धि और कल्पना शक्ति भी दयालु प्रदाता से अपने भोजन की मांग करती हैं और कृतज्ञता के साथ प्राप्त करती हैं। प्रत्येक का भोजन उन्हें दया के खजाने से अलग-अलग और उचित रूप में दिया जाता है, जिससे उन्हें खुशी मिलती है और वे आनंद से भर जाते हैं। वास्तव में, उन्हें अधिक उदारता से भोजन प्रदान करने के लिए, दयालु प्रदाता ने इन इंद्रियों और क्षमताओं में से प्रत्येक को अपनी दया के खजाने की कुंजी के रूप में बनाया है। उदाहरण के लिए, आंख उस खजाने की कुंजी है जिसमें ब्रह्मांड के चेहरे पर सुंदरता और सुंदरता जैसे कीमती रत्न समाहित हैं। इसी तरह, अन्य सभी क्षमताएं और इंद्रियां एक अलग दुनिया की कुंजी हैं, जो मनुष्यों को विश्वास के माध्यम से उनसे लाभ उठाने की अनुमति देती हैं।

अब हम अपनी मुख्य चर्चा की ओर आते हैं:

जिस तरह से ब्रह्मांड के सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ निर्माता ने जीवन को ब्रह्मांड का एक व्यापक सारांश या सार बनाया है, जिसमें उसके सभी उद्देश्य और उसके नामों की अभिव्यक्तियाँ केंद्रित हैं, उसी तरह उसने जीवन की दुनिया के भीतर अपने कार्यों के लिए एक व्यापक स्थान का प्रावधान भी किया है। जीवों को भूख और भोजन के स्वाद के साथ बनाने के बाद, वह उन्हें अपने प्रभु और उनकी इच्छा के प्रति आभार, कृतज्ञता और पूजा की एक स्थायी और सार्वभौमिक भावना के साथ जवाब देने के लिए प्रेरित करता है, जो ब्रह्मांड के निर्माण के लिए उनकी बुद्धिमत्ता का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य और उदाहरण है।

उदाहरण के लिए, उनके प्रभु की बुद्धि द्वारा मांगे गए दिव्य कार्यों में से एक है उनके क्षेत्र के हर हिस्से के लिए उपयुक्त प्राणियों का निर्माण करना और उनसे ब्रह्मांड को आबाद करना: स्वर्गीय क्षेत्र को वे स्वर्गदूतों और इसी तरह के अति-भौतिक प्राणियों से भर देते हैं; अदृश्य क्षेत्र को वे आत्माओं से भर देते हैं; और भौतिक दुनिया - विशेष रूप से वायुमंडल और पृथ्वी - को वे कई तरह के जीवों से भर देते हैं, हवा में पक्षियों से लेकर मैदान के मक्खियों और जानवरों तक, समुद्र में मछलियों से लेकर ज़मीन पर इंसानों तक। इन जीवों को पोषण की सहज ज़रूरत देकर, वे उन्हें अपने भरण-पोषण के लिए प्रयास करने के लिए प्रेरित करते हैं और इसे उनके लिए सुखद बनाते हैं, और इस तरह उन्हें आलस्य और सुस्ती से बचाते हैं।

यदि ज्ञान के ऐसे महत्वपूर्ण उदाहरण न होते, तो वह

पशुओं के लिए उनकी आवश्यक व्यवस्था बिना किसी प्रयास के शीघ्रता से कर दी, ठीक वैसे ही जैसे वह वृक्षों की व्यवस्था शीघ्रता से कर देता है।

यदि हम एक साथ पूरी धरती को देख पाते ताकि हम करुणामय और सर्व-प्रदाता के नामों की कृपापूर्ण अभिव्यक्तियों को देख पाते और यह देख पाते कि वे किस तरह दिव्य एकता की गवाही देते हैं, तो हम देख पाते कि करुणामय प्रदाता की स्नेहपूर्ण अभिव्यक्ति में कितनी उत्तम कृपा और मधुर सुंदरता समाहित है। उदाहरण के लिए, हम देख पाते कि कैसे, सर्दियों के अंत में जब उनके भोजन लगभग समाप्त हो जाते हैं, तो वह अपने अदृश्य दया के खजाने से पशुओं के पूरे कारवां को तरह-तरह के और सबसे स्वादिष्ट भोजन भेजता है: यह भोजन, जो अदृश्य से सहायता और उसकी करुणा का उपहार है, पौधों के हाथों, पेड़ों के मुकुटों और पतंगों के स्तनों के माध्यम से उनके पास आता है। यदि हम यह सब देख पाते, तो हम निम्नलिखित बातों को समझ पाते:

जो एक सेब बनाता है और एक मनुष्य को उदारता से प्रदान करता है, वही केवल वही हो सकता है जो एक मौसम के बाद दूसरा मौसम बनाता है और दिन के बाद रात बनाता है; वही केवल वही हो सकता है जो पृथ्वी रूपी मालवाहक जहाज को घुमाता है, तथा प्रत्येक मौसम की उपज को अपने जरूरतमंद मेहमानों तक पहुंचाता है। क्योंकि सेब के चेहरे पर सृष्टि की छाप, बुद्धि की मुहर, उसकी शाश्वत प्रार्थना की छाप और दया की छाप सभी सेबों और अन्य सभी फलों, पौधों और जानवरों पर भी पाई जा सकती है, इसलिए सेब का सच्चा मालिक और निर्माता निश्चित रूप से पृथ्वी के सभी निवासियों का सर्व-महान स्वामी और सर्व-कृपालु निर्माता होना चाहिए, जो सेब के सहकर्मी, साथी और भाई-बहन हैं। उस एक सेब का निर्माता उस विशाल धरती का भी निर्माता होना चाहिए जो वह बगीचा है जहाँ सेब उगाया जाता है, उस पेड़ का जो वह कारखाना है जहाँ उसे बनाया जाता है, उन ऋतुओं का जो वह कार्यशाला है जहाँ उसे उत्पादित किया जाता है, और वसंत और ग्रीष्म ऋतुओं का जो उसके पकने का स्थान है। संक्षेप में, प्रत्येक फल ईश्वरीय एकता की एक मुहर है जो उसके पेड़ के रचयिता और निर्माता को, उस धरती को जो उसका बगीचा है, और ब्रह्मांड की पुस्तक को ज्ञात कराती है: यह उसकी एकता को प्रदर्शित करता है और दिखाता है कि यह बगीचा या पुस्तक एक ईश्वरीय आदेश है जिस पर फलों की संख्या की एकता की मुहर लगी हुई है।

दयालु और सर्वज्ञ नामों की अभिव्यक्ति होने के कारण, रिसाले-ए-नूर ने अपने कई भागों में करुणा के सत्य के कई रहस्यों को उजागर किया है। जो पाठक इन सत्यों की अधिक विस्तृत चर्चा चाहते हैं, वे उन भागों को देख सकते हैं, जबकि हम यहाँ इस संक्षिप्त संकेत के साथ खुद को संतुष्ट करते हैं।

और इसलिए अब हमारा चौकस यात्री कहता है: "ईश्वर की स्तुति हो, क्योंकि मैंने तैंतीस सत्य देखे और सुने हैं जो मेरे रचयिता और स्वामी के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं, वह वही है जिसकी मैं हर जगह तलाश और पूछताछ कर रहा था। प्रत्येक सत्य एक पर्वत जितना मजबूत और सूर्य जितना चमकीला है, जो अंधकार में कोई बिंदु नहीं छोड़ता। उनमें से प्रत्येक, एक स्थापित तथ्य होने के नाते, उसके अस्तित्व की निर्णायक गवाही देता है, और अपनी व्यापकता के साथ प्रकट रूप में उसकी एकता को साबित करता है।

विश्वास के सभी स्तंभों को प्रमाणित करते हुए, इन सत्यों की समग्रता हमारे विश्वास को अनुकरणात्मक से जांचात्मक तक विकसित करती है; यह हमें अपने विश्वास को सत्यापित करने और ज्ञान से उत्पन्न निश्चितता से दृष्टि या अवलोकन से उत्पन्न निश्चितता तक और फिर अनुभव पर आधारित निश्चितता तक आगे बढ़ने की अनुमति देता है। सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर को है, क्योंकि यह मेरे प्रभु की ओर से एक शुद्ध उपहार के अलावा और कुछ नहीं है!”

> सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है, जिसने हमें इस तक पहुँचाया है। यदि ईश्वर ने हमारा मार्गदर्शन न किया होता, तो हम निश्चित रूप से सही मार्ग नहीं खोज पाते।
> हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आये थे। (7:43)

तीसरे भवन या मंच पर देखे गए चार महान सत्यों से जिज्ञासु यात्री को जो विश्वास की रोशनी मिली, उसके बारे में एक बहुत ही संक्षिप्त संदर्भ में, इन सत्यों के संबंध में प्रथम स्टेशन के दूसरे अध्याय में कहा गया है:

> ईश्वर के अतिरिक्त कोई देवता नहीं है, वह एक है, अद्वितीय है, जिसकी एकता और आवश्यक अस्तित्व स्पष्ट रूप से उद्घाटन के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से प्रदर्शित होता है, जो, जैसा कि वनस्पति विज्ञान और प्राणि विज्ञान द्वारा प्रमाणित किया गया है, जीवित प्राणियों की सैकड़ों-हजारों प्रजातियों के प्रकट होने में प्रकट होता है, जो पूर्ण और बिना किसी दोष के हैं; दयालुता के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से, जो सर्वव्यापी और पूर्णतः व्यवस्थित है, बिना किसी कमी के, जैसा कि स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है; प्रशासन के सत्य की उदात्तता के अवलोकन के माध्यम से, जो सभी जीवित प्राणियों को पूर्णतः व्यवस्थित ढंग से, बिना किसी त्रुटि या दोष के, अपने में समाहित करता है; और करुणा और प्रबन्ध के उदात्त व्यापक सत्य के अवलोकन के माध्यम से, जो आवश्यकता के प्रत्येक समय, बिना किसी भूल या विस्मृति के, जीविका के सभी उपभोक्ताओं को अपने में समाहित करता है। उनके दयालु, दयावान, दयावान, दयावान, कृपालु और कृपालु प्रदाता की महिमा महान है। उसके उपहार सर्वव्यापक हैं, उसकी कृपा सर्वव्यापी है, और उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे प्रभु, दयालु, अत्यन्त दयावान ईश्वर के नाम पर, हे ईश्वर, हे दयालु, हे दयालु, हमारे स्वामी मुहम्मद, उनके परिवार और उनके सभी साथियों पर रिसाले-ए-नूर के सभी अक्षरों की संख्या के अनुसार, इस दुनिया और आख़िरत में हमारे सभी जीवन के मिनटों के सभी सेकंडों से गुणा करके, मेरे पूरे जीवनकाल में मेरे शरीर में मौजूद कणों की संख्या के अनुसार शांति और आशीर्वाद प्रदान कर। मुझे और उन लोगों को क्षमा कर, जो ईमानदारी से रिसाले-ए-नूर की नकल और लेखन में मेरी मदद करते हैं, हर शांति और आशीर्वाद के लिए, और हमारे माता-पिता, हमारे आकाओं, हमारे शिक्षकों, हमारी बहनों, हमारे भाइयों और रिसाले-ए-नूर के वफादार छात्रों को, विशेष रूप से उन्हें, जो इस ग्रंथ को लिखते और नकल करते हैं, क्षमा कर। अपनी दया से हमें क्षमा कर, हे दयावानों में सबसे दयावान, आमीन। उनकी प्रार्थना का निष्कर्ष है, "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो समस्त संसारों का स्वामी है!"

नोट: चूँकि रिसाले-ए-नूर के अन्य भाग उस स्थान पर उपलब्ध नहीं थे जहाँ उपरोक्त ग्रंथ लिखा गया था, इसलिए इसमें कुछ महत्वपूर्ण बातें दोहराई गई हैं जो द वर्ड्स एंड द ग्लेम्स में शामिल हैं। ऐसा इस उम्मीद में किया गया है कि इनमें से प्रत्येक बात इस क्षेत्र के विद्यार्थियों के लिए पूरे रिसाले-ए-नूर के उद्देश्य को मजबूत करेगी।

नर्सी ने कहा

* * *

रिसाले-ए-नूर के उद्देश्य पर

हाल ही में मैंने रिसाले-ए-नूर के उद्देश्य के बारे में एक महत्वपूर्ण चर्चा सुनी। इस चर्चा का सारांश इस प्रकार है: किसी ने कहा: " रिसाले-ए-नूर हमेशा विश्वास और ईश्वरीय एकता के लिए नए-नए ग्रंथ और प्रमाण

प्रस्तुत करता रहता है। जबकि इसकी सामग्री का एक सौवाँ हिस्सा भी सबसे जिद्दी इनकार करने वाले को चुप कराने के लिए पर्याप्त है, फिर भी इसके प्रकाशन में इतनी अधिक वृद्धि का कारण क्या है?"

निम्नलिखित उत्तर दिया गया: " रिसाले-ए-नूर किसी छोटे से घर को हुए मामूली नुकसान की मरम्मत नहीं कर रहा है; यह इस्लाम को समाहित करने वाले उस विशाल किले को हुए असाध्य नुकसान की मरम्मत कर रहा है, जिसकी ईंटें पहाड़ों के आकार की हैं। यह किसी एक दिल या एक व्यक्तिगत विवेक को सुधारने का प्रयास नहीं कर रहा है; बल्कि, चमत्कारी कुरान और सच्चे विश्वास की अद्भुत दवाओं के साथ, यह प्रयास करता है कि

जनता के दिल को ठीक करना, जो एक हज़ार साल से भी ज़्यादा समय से भ्रष्टाचार के हथियारों और साधनों की वजह से बुरी तरह घायल हो चुका है। यह जनता के विवेक को भी ठीक करने की कोशिश कर रहा है, जो इस्लाम की नींव, मूल्यों और सार्वजनिक प्रतीकों या चिह्नों पर लगातार हमलों की वजह से क्षत-विक्षत होता जा रहा है, जो कि आस्था रखने वालों के लिए एक शरणस्थली और उनके लिए समर्थन और संदर्भ का बिंदु है।

"निश्चित रूप से, इस तरह के भयानक नुकसान, विनाश और घावों को संबोधित करने और ठीक करने के लिए, अनुभव के आधार पर निश्चितता के स्तर पर अविश्वसनीय रूप से मजबूत सबूत और तर्क, और कई आजमाए हुए और परखे हुए दवाइयों की आवश्यकता है। रिसाले-ए नूर, जो कुरान की चमत्कारिकता और चमत्कारी अर्थों से निकलता है, यह कार्य करता है, और यह वह साधन भी है जिसके द्वारा कोई व्यक्ति विश्वास की अनंत डिग्री के माध्यम से प्रगति करने में सक्षम है।"

मैंने इस लंबी चर्चा को ध्यानपूर्वक सुना और जब यह समाप्त हो गई, तो मैंने अपने प्रभु को अनंत धन्यवाद दिया। मैं इस विषय को यहीं समाप्त करता हूँ।

नर्सी ने कहा

नौवीं किरण

नौवीं किरण

पुनरुत्थान का एक शक्तिशाली प्रमाण

यह किरण दसवें शब्द के एक महत्वपूर्ण परिशिष्ट का पहला भाग है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अतः जब तुम संध्या में प्रवेश करो और जब तुम प्रातः में प्रवेश करो, तो अल्लाह की स्तुति करो और (घोषणा करो कि) आकाश और पृथ्वी में सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उसी के लिए है, और दोपहर में भी और जब तुम दोपहर में प्रवेश करो। वही जीवित को मुर्दों में से निकालता है और मुर्दों को जीवितों में से निकालता है और धरती को उसके मर जाने के पश्चात जीवित करता है। इसी प्रकार तुम भी मुर्दों में से निकाले जाओगे।

और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हें धरती से पैदा किया, फिर तुम एक मनुष्य बन गए, जो दूर-दूर तक फैल गया। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही संतानों में से जोड़े बनाए, ताकि तुम उनकी ओर झुको और उनमें आराम पाओ। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और कोमलता पैदा की। निश्चय ही इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो सोच-विचार करें। और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती को पैदा करना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विभिन्नता से निर्माण करना भी है।

इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो जानते हैं। और तुम्हारी रात और दिन की नींद और उसकी कृपा से जीविका प्राप्त करना भी उसकी निशानियों में से है। इसमें भी बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ध्यान रखते हैं। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हारे सामने बिजली दिखाए जो भय और आशा दोनों को उत्पन्न करे। और यह कि वह आकाश से पानी बरसाता है और उसके द्वारा धरती को उसके मर जाने के पश्चात जिलाता है।

इसमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो बुद्धि से काम लें और समझ रखें। और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश पर स्थिर हैं। अन्त में जब वह तुम्हें धरती से बुलाएगा, तो

> (तुम तुरन्त निकल आओगे।) आकाश और धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। सभी लोग नम्रतापूर्वक उसी के आज्ञाकारी हैं। वही है जो सृष्टि को सबसे पहले आरंभ करता है, फिर उसे पुनः उत्पन्न करता है, और उसे वापस भी लाता है, और यह उसके लिए सरल है। आकाश और धरती में जो भी श्रेष्ठता है, वह सर्वोच्च स्तर पर उसी की है। और वह अत्यन्त महिमावान, अत्यन्त तत्वदर्शी है। (30:17-27)

इनमें सबसे महत्वपूर्ण तर्क शामिल है

स्वर्गीय आयतें, जो विश्वास के एक ध्रुव की ओर इशारा करती हैं, इन महान पवित्र प्रमाणों में जो पुनरुत्थान की वास्तविकता को स्थापित करते हैं, इस रे में स्पष्ट किए जाएंगे। यह एक सूक्ष्म ईश्वरीय कृपा है कि मुहाकमात ("तर्क") के अंत में, जिसे उन्होंने तीस साल पहले कुरान की टिप्पणी के परिचय के रूप में लिखा था, पुराने या पूर्व सैद ने लिखा, "दो अन्य सामान्य प्रमाणों का दूसरा सारांश: यह कुरान की दो आयतों की व्याख्या करता है जो पुनरुत्थान को इंगित करती हैं। ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयालु है"... और फिर अपनी कलम नीचे रख दी, जारी रखने में असमर्थ। शारीरिक पुनरुत्थान के संकेतों और प्रमाणों की संख्या के लिए मेरे सर्व-दयालु निर्माता की प्रशंसा और धन्यवाद, उन्होंने मुझे उस कार्य को फिर से शुरू करने में सक्षम बनाया है।

नौ या दस साल पहले, ईश्वर ने मुझे दसवें और उनतीसवें शब्द प्रदान किए, दो ऐसी रचनाएँ जिनमें ईश्वरीय आदेश के कई मजबूत प्रमाण और व्याख्याएँ हैं - ईश्वर की दया के निशानों को देखो, कैसे वह पृथ्वी को उसके मरने के बाद पुनर्जीवित करता है। निस्संदेह वह ही है जो मरे हुओं को जीवित करेगा (इसी तरह), और वह हर चीज़ पर पूरी शक्ति रखता है (30:50)। दसवें और उनतीसवें शब्दों ने उन लोगों को चुप करा दिया जो पुनरुत्थान से इनकार करते थे।

अब, लगभग एक दशक बाद, उसने मुझे ऊपर उद्धृत सर्वोच्च श्लोकों की व्याख्या प्रदान की है, जो पुनरुत्थान में विश्वास के अजेय किले हैं। इसमें कुछ भाग हैं, जिनमें से पहला भाग (जिस पर हम यहाँ चर्चा करेंगे) एक परिचय के रूप में है।

भाग एक: परिचय

> इस परिचय में दो बिंदु शामिल हैं जो पुनरुत्थान में विश्वास के कई आध्यात्मिक लाभों में से एक और इसके महत्वपूर्ण व्यापक परिणामों में से एक को संक्षेप में बताते हैं। वे यह भी दिखाते हैं कि यह विश्वास मानव जीवन, विशेष रूप से सामाजिक जीवन के लिए कितना आवश्यक है, और इसके कई व्यापक प्रमाणों में से एक का सारांश प्रस्तुत करते हैं। इसमें यह भी बताया गया है कि पुनरुत्थान में विश्वास कितना स्पष्ट और निर्विवाद है।

पहला बिंदु

हम परलोक में विश्वास के अनेक तर्कों में से केवल चार का ही वर्णन करेंगे, क्योंकि यह मानव के सामाजिक और व्यक्तिगत जीवन का आधार और आधार है, तथा समस्त सुख और उपलब्धियों का आधार है।

पहला तर्क: बच्चे मानवता का एक तिहाई हिस्सा बनाते हैं। वे मृत्यु को सहन नहीं कर सकते, जो उन्हें एक भयानक त्रासदी लगती होगी, जब तक कि यह स्वर्ग के विचार से प्रभावित न हो, जो उनकी कमज़ोर और नाज़ुक आत्माओं को आध्यात्मिक शक्ति देता है। यह उन्हें उनकी प्रकृति की कमज़ोरी के बावजूद, खुशी से जीने की आशा देता है। स्वर्ग को ध्यान में रखते हुए, वे कह सकते हैं: "मेरी छोटी बहन मर गई है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गई है। वह वहाँ उड़ रही है और हमसे बेहतर जीवन का आनंद ले रही है।" यदि वे ऐसा नहीं कर सकते, तो उनके आस-पास के लोगों की मृत्यु के बारे में उनकी जागरूकता उन्हें अभिभूत कर देगी: यह उन्हें कुचल देगी

उनकी प्रतिरोध क्षमता और आंतरिक शक्ति को नष्ट कर देता है, उनकी आंखों और सभी आंतरिक क्षमताओं, हृदय, मन और आत्मा को रुला देता है, और उन्हें सबसे दयनीय और व्याकुल प्राणियों में बदल देता है।

दूसरा तर्क: बुज़ुर्गों की संख्या मानवता का एक तिहाई है । वे कब्र को सहन कर सकते हैं, जो उनसे कभी दूर नहीं होती, केवल परलोक में विश्वास करके; यह उन्हें कुछ हद तक सांत्वना देता है, क्योंकि वे अपने जीवन के अपरिहार्य विलुप्त होने को देखते हैं, जिससे वे इतने जुड़े हुए हैं, और यह तथ्य कि उनकी अनमोल और प्यारी दुनिया समाप्त हो गई है। केवल अनंत जीवन की आशा ही उन्हें उस दर्द और निराशा का सामना करने की अनुमति देती है जो मृत्यु और अलगाव की आशंका उनके बच्चे जैसे, नाज़ुक स्वभाव और आत्मा में पैदा करती है। ऐसी आशा के बिना, हमारे आदरणीय बुजुर्ग जो इतने दया के पात्र हैं, हमारे वे वृद्ध माता-पिता जिन्हें एक शांत और स्थिर हृदय की आवश्यकता है, वे हृदय और आत्मा में इतने व्याकुल और व्यथित हो जाएंगे कि उनकी दुनिया एक अंधेरी जेल और उनका जीवन एक भयानक पीड़ा प्रतीत होगा।

तीसरा तर्क: युवा लोग सामाजिक जीवन का मुख्य आधार और आधार हैं । केवल नर्क का विचार ही उन्हें अपनी भावनाओं और जुनून की तूफानी ऊर्जा, अपनी उग्र, दुष्ट-आदेश देने वाली आत्माओं को विनाशकारीता और उत्पीड़न से नियंत्रित करने और उन्हें समाज के सामूहिक हित की सेवा में मोड़ने में सक्षम बनाता है। इस डर के बिना, और युवावस्था की ऊर्जा के नशे में, वे "शक्ति ही अधिकार है" के सिद्धांत का पालन करेंगे और अपने जुनून और सनक को खुली छूट देंगे। यह दुनिया को कमजोर और शक्तिहीन लोगों के लिए नर्क में बदल देगा; यह मानव जीवन को जानवरों के स्तर तक गिरा देगा।

चौथा तर्क: परिवार हमारे सांसारिक जीवन का सबसे महत्वपूर्ण केंद्र है; यह हमारा सबसे बुनियादी संसाधन है, और हमारे सांसारिक सुख का स्वर्ग , घर और गढ़ है। प्रत्येक व्यक्ति का घर उसकी अपनी छोटी दुनिया है। हमारे घरों और परिवारों की जीवंतता और खुशी ईमानदार और समर्पित सम्मान, सच्ची दयालुता और आत्म-त्याग करने वाली करुणा पर निर्भर करती है। यह सब, बदले में, शाश्वत मित्रता और संगति पर निर्भर करता है; यह एक अमर बंधन पर निर्भर करता है, साथ ही इस विश्वास पर भी कि माता-पिता और बच्चों, भाइयों और बहनों, और पति और पत्नियों के बीच भावनाएँ और संबंध हमेशा के लिए रहेंगे।

उदाहरण के लिए, एक आदमी कह सकता है: "मेरी पत्नी अनंत दुनिया में मेरी शाश्वत साथी होगी। भले ही वह अब बूढ़ी हो गई हो और पहले की तरह शारीरिक रूप से सुंदर न हो, लेकिन उसकी शाश्वत सुंदरता परलोक में खुद को दिखाएगी। अनंत काल में उस साथ के लिए, मैं हर त्याग करूँगा और इस दुनिया में जितना हो सके उतना उस पर दया दिखाऊँगा।" इस प्रकार वह अपनी वृद्ध पत्नी को प्यार से देख सकता है

, देखभाल और करुणा जैसे कि वह एक सुंदर हूरी थी। एक रिश्ता जो कुछ घंटों की शारीरिक निकटता के बाद स्थायी अलगाव में समाप्त होता है, वह केवल मामूली, क्षणिक और असुरक्षित हो सकता है: यह केवल शारीरिक आकर्षण और यौन इच्छा के आधार पर एक सतही प्रेम और सम्मान पैदा करेगा।

अंततः, अन्य हित और शक्तिशाली भावनाएं उत्पन्न होंगी और उस सम्मान और चिंता को परास्त करके, सांसारिक स्वर्ग को पृथ्वी पर नरक में बदल देंगी।

पुनरुत्थान और परलोक के अनेक लाभों में से एक है-

मानव सामाजिक जीवन से संबंधित है। यदि इन चारों के साथ सादृश्य द्वारा कई अन्य संबंधित पहलुओं और लाभों का अनुमान लगाया जाए, तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि पुनरुत्थान की सच्चाई का एहसास और उसका घटित होना उतना ही निश्चित है जितना कि हमारा अपना

अस्तित्व और हमारी सार्वभौमिक ज़रूरतें। यह इस तर्क से भी ज़्यादा स्पष्ट होगा कि पेट की पोषण की ज़रूरत भोजन के अस्तित्व की गवाही देती है। अगर पुनरुत्थान और परलोक न होता, तो मनुष्य होने का उच्च दर्जा - एक ऐसा दर्जा जो सृष्टि के भीतर इतना महत्वपूर्ण, ऊंचा और महत्वपूर्ण है -

यह उस शव के समान हो जाएगा जिसे सूक्ष्मजीव खा जाएंगे। मानवता के व्यवस्थित जीवन, नैतिकता और समाज से जुड़े लोगों को इस मामले पर ध्यान देना चाहिए।

यदि पुनरुत्थान को नकार दिया गया तो वे इससे उत्पन्न शून्यता को किससे भरेंगे तथा मानवता के गहरे घावों को किससे भरेंगे?

दूसरा बिंदु

पुनरुत्थान की सच्चाई के असंख्य प्रमाणों के बीच, हमने विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा दिए गए समर्थन को संक्षेप में प्रस्तुत किया है। यह इस प्रकार है:

• सभी चमत्कार जो मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की पैगम्बरी की पुष्टि करते हैं, उनकी पैगम्बरी के सभी प्रमाण और उनकी सत्यता के सभी सबूत वास्तविकता को स्थापित करते हैं और गवाही देते हैं-

पुनरुत्थान की सच्चाई का प्रकटीकरण। क्योंकि सर्वशक्तिमान ईश्वर की एकता के बाद, उस महान व्यक्ति ने अपने जीवन के दौरान जो भी दावे किए, वे सभी पुनरुत्थान पर केंद्रित थे।

• इसके अलावा, अन्य सभी पैगम्बरों के सभी चमत्कार और प्रमाण जो उनकी पैगम्बरी होने की पुष्टि करते हैं और मानवता से इसकी पुष्टि करने का आग्रह करते हैं, इसी सत्य की गवाही देते हैं।

• इसके अतिरिक्त, सभी संकेत और प्रमाण जो सभी दिव्य शास्त्रों के दिव्य-लेखन को स्थापित करते हैं और इसलिए पैगम्बरों की गवाही को पूरी तरह से स्पष्ट करते हैं, इस सत्य की गवाही भी देते हैं।

• कुरान की वास्तविकता और सच्चाई को स्थापित करने वाले सभी चमत्कार और प्रमाण पुनरुत्थान की सच्चाई की प्राप्ति को भी स्थापित और प्रमाणित करते हैं। कुरान का लगभग एक तिहाई हिस्सा आख़िरत से संबंधित है: इसके अधिकांश छोटे सूरे आख़िरत को याद दिलाने वाली शक्तिशाली आयतों से शुरू होते हैं, और इसकी सच्चाई सैकड़ों आयतों में स्पष्ट या निहित रूप से व्यक्त की गई है। उदाहरण के लिए:

जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)

ऐ लोगो! अपने रब की अवज्ञा से बचो, क्योंकि अन्तिम प्रलय का प्रकोप बहुत भयानक है। (22:1)

जब धरती बहुत ज़ोर से काँप उठेगी (99:1)

जब आकाश खुल जायेगा (82:1)

जब आकाश फट जायेगा (84:1)

वे एक दूसरे से क्या पूछ रहे हैं? (78:1)

क्या उस भयानक घटना का विवरण तुम्हारे पास पहुँचा है? (88:1)

जिस तरह लगभग बीस सूरों की आरंभिक आयतें कहती हैं कि पुनरुत्थान का सत्य सृष्टि की सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य वास्तविकता है, उसी तरह कई अन्य आयतें भी उसी सत्य की पुष्टि करती हैं और उसके अन्य प्रमाण प्रदान करती हैं। यह देखते हुए कि पुनरुत्थान का सत्य इतने स्पष्ट तरीके से स्थापित किया गया है जितना कि यह कहा गया है।

कुरान के असंख्य तर्कों और प्रमाणों के द्वारा दिन के प्रकाश में प्रस्तुत करना - एक ऐसी पुस्तक जिसकी प्रत्येक आयत ने धार्मिक और प्राकृतिक विज्ञानों में असंख्य फल उत्पन्न किये हैं - क्या इस सत्य का इन्कार करना, सत्य के इन्कार के समान नहीं होगा?

सूर्य के अस्तित्व के बारे में क्या कहा जाए? क्या ऐसी बात बेतुकी नहीं होगी?

एक सम्राट कभी-कभी अपनी सेना को सिर्फ़ अपने किसी कथन की सच्चाई साबित करने के लिए युद्ध में भेजता है। तो क्या यह कल्पना की जा सकती है कि उस कथन की सच्चाई साबित हो सकती है?

सबसे पवित्र और गौरवशाली शासक के अनगिनत वचन, वादे और धमकियाँ विरोधाभासी हैं? क्या यह संभव है कि वे झूठे हों? उस गौरवशाली शासक का एक संकेत - अर्थात् कुरान - पुनरुत्थान की सच्चाई को साबित करने के लिए पर्याप्त है, खासकर यह देखते हुए कि इसने तेरह शताब्दियों से अधिक समय तक असंख्य आत्माओं, बुद्धि, दिलों और आत्माओं पर शासन किया है और उन्हें पूर्ण सत्य और धार्मिकता में शिक्षित किया है। हजारों स्पष्ट प्रमाणों के साथ इस सत्य को प्रदर्शित करने के बाद, हम इसके अलावा और क्या कह सकते हैं कि जो लोग इस सत्य को नकारना जारी रखते हैं वे नरक की आग में दंड के पात्र हैं? क्या यह शुद्ध न्याय नहीं होगा?

इसके अलावा, कुरान के अलावा सभी ईश्वरीय धर्मग्रंथ और पवित्र पुस्तकें, जिनमें से प्रत्येक एक विशिष्ट युग और समय को संबोधित किया गया था, पुनरुत्थान की सच्चाई को स्वीकार करती हैं - एक सच्चाई जिसे कुरान, सभी समयों को संबोधित करते हुए, विस्तार से और स्पष्ट तर्कों के साथ समझाता और स्थापित करता है। यहां तक कि उनके संक्षिप्त और कभी-कभी संकेतात्मक स्पष्टीकरण भी इसे इतनी शक्तिशाली रूप से पुष्ट करते हैं कि वे कुरान की शिक्षाओं का एक अटल समर्थन करते हैं।

हम यहाँ प्रार्थना के ग्रंथ, तीसरी किरण से लिया गया एक तर्क प्रस्तुत करते हैं। यह तर्क, जिसमें विश्वास के अन्य स्तंभों द्वारा अंतिम दिन में विश्वास की गवाही शामिल है - विशेष रूप से, ईश्वर के दूतों और पुस्तकों में विश्वास - सशक्त है और सभी संदेह को समाप्त करने के लिए पर्याप्त हो सकता है। इस प्रार्थना में, हम कहते हैं:

> हे मेरे दयालु प्रभु! महानतम रसूल की शिक्षा और बुद्धिमतापूर्ण कुरान की शिक्षा से मैंने यह समझ लिया है कि सभी ईश्वरीय पुस्तकें और पैगंबर - मुख्य रूप से कुरान और आपके महान रसूल - यह दावा और साक्ष्य देते हैं कि आपके सभी महिमा और कृपा के नाम, जिनकी अनुकरणीय अभिव्यक्तियाँ पूरे ब्रह्मांड में देखी जाती हैं, अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में प्रकट होते रहेंगे; कि आपकी कृपाएँ और आशीर्वाद, जिनके दयालु प्रकटीकरण और नमूने इस क्षणभंगुर दुनिया में देखे जाते हैं, अधिक उज्ज्वल रूप में खुशी के शाश्वत क्षेत्र में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे प्रेम करते हैं और जो उनसे विमुख होते हैं, वे अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप ... विमुख होते हैं, वे अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे विमुख होते हैं, वे अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे विमुख होते हैं, वे अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे विमुख होते हैं, वे अनंत काल के धाम में और भी अधिक उज्ज्वल रूप में बने रहेंगे; और जो लोग उनसे विमुख होते हैं, वे अनंत

इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में उन्हें आनंद से देखना और प्रेम से उनकी खोज करना, अनंत काल तक उनका साथ देगा।

साथ ही, उनकी नबी होने की अनगिनत प्रमाणों के आधार पर, जिनमें उनके सैकड़ों स्पष्ट चमत्कार शामिल हैं, और सैकड़ों निर्णायक प्रमाणों के आधार पर जो आपके द्वारा उतारे गए सभी शास्त्रों में मौजूद हैं, लेकिन मुख्य रूप से ज्ञानपूर्ण कुरान में, साथ ही उन वादों और धमकियों पर जो आप उनमें बार-बार दोहराते हैं; और आपके सभी पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं जैसे शक्ति, दया, अनुग्रह, बुद्धि, महिमा और अनुग्रह पर भरोसा करते हुए, जिनके लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है, और आपकी महिमा की गरिमा और आपके प्रभुत्व के प्रभुत्व पर; सभी प्रकाशवान आत्मा वाले नबी, जिनमें सबसे पहले ईश्वर के सबसे महान रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) शामिल हैं, और सभी प्रकाशवान हृदय वाले संत और प्रबुद्ध बुद्धि वाले शुद्ध, संत विद्वान, जो अपने आध्यात्मिक उद्घाटनों और अवलोकनों पर भरोसा करते हैं, साथ ही ज्ञान की निश्चितता और दृष्टि या अवलोकन की निश्चितता के बारे में अपने विश्वासों पर भरोसा करते हैं - मानवता के ये सभी प्रमुख सदस्य जिन्न और मानव जाति दोनों को मार्गदर्शन प्राप्त लोगों के लिए शाश्वत खुशी की खुशखबरी देते हैं, और वे चेतावनी देते हैं कि गुमराह लोगों के लिए नरक प्रतीक्षा कर रहा है, जबकि वे स्वयं इस खुशी और नरक पर विश्वास करने वाले और इसके गवाह बनने वाले पहले व्यक्ति हैं।

हे सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ! हे दयालु और दयावान! हे दयालु और दयावान! हे दयालु और दयावान! हे अपने वादों का पूर्णतः सच्चा!
हे गरिमा, ऐश्वर्य और महिमा से परिपूर्ण सर्वव्यापक!

पुनरुत्थान लाने में विफलता का अर्थ होगा आपके बहुत से सच्चे मित्रों का खंडन करना, आपकी बार-बार की गई धमकियों और वादों को तोड़ना, और आपके पवित्र गुणों और आवश्यक विशेषताओं को नकारना, जिससे वह अधूरा रह जाता है जो कि प्रभु के रूप में आपके प्रभुत्व की प्रकृति द्वारा अपेक्षित है; इसका अर्थ होगा आपके उन असंख्य सेवकों की परलोक की आशाओं और प्रार्थनाओं को अस्वीकार करना और व्यर्थ करना जिन्हें आप प्यार करते हैं और जो आपकी पुष्टि और आज्ञापालन करके स्वयं को आपका प्रिय बनाते हैं; इसका अर्थ यह भी होगा कि पुनरुत्थान को अस्वीकार करने में अविश्वास और गुमराह लोगों की पुष्टि करना, जो अविश्वास और अवज्ञा के माध्यम से और आपके वादों में आपका खंडन करके, आपकी महानता का अपमान करते हैं, आपकी महिमा की गरिमा पर हमला करते हैं, आपकी दिव्यता के सम्मान को ठेस पहुँचाते हैं और आपके प्रभुत्व की करुणा का अपमान करते हैं। निस्संदेह आप ऐसी विफलता से पूरी तरह मुक्त हैं और इससे असीम रूप से ऊपर हैं! मैं आपके असीम न्याय, कृपा और दया को ऐसी असीम कुरूपता और अधर्म से सर्वथा ऊपर घोषित करता हूँ। हम पूरे दिल से मानते हैं कि सभी पैगंबर - आपके सौ हज़ार से ज़्यादा सच्चे संदेशवाहक और आपके प्रभुत्व के संदेशवाहक - और पवित्र, शुद्ध विद्वान और संत आपकी दया और परोपकार के अनन्त खजाने और आपकी कृपा के बारे में अपनी गवाही में बिल्कुल सही हैं।

ज्ञान पर आधारित निश्चितता, दर्शन पर आधारित निश्चितता, तथा अनुभव पर आधारित निश्चितता के साथ स्थायित्व की दुनिया में आपके सभी सुंदर नामों की असाधारण उत्कृष्ट अभिव्यक्तियाँ। उन्होंने जो संकेत दिया है वह सत्य है तथा वास्तविकता के अनुरूप है। वे यह भी मानते हैं तथा आपके अन्य सेवकों को सिखाते हैं कि आपके नाम की सबसे बड़ी किरण परम सत्य है, जो सभी सत्यों का मूल, सूर्य तथा संरक्षक है, पुनरुत्थान का यह सबसे बड़ा सत्य है।

हे प्रभु! उनकी शिक्षाओं के कारण और उनके सम्मान में, हमें और रिसाले-ए-नूर के सभी छात्रों को पूर्ण विश्वास और हमारे सांसारिक जीवन का सुखद अंत प्रदान करें। और हमें उनकी सिफ़ारिश प्राप्त करने की अनुमति दें। आमीन!

कुरान और सभी अन्य ईश्वरीय पुस्तकों की सत्यता को स्थापित करने वाले सभी तर्क और प्रमाण, साथ ही मुहम्मद, ईश्वर के प्रिय, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और अन्य सभी नबियों की पैगंबरी को स्थापित करने वाले चमत्कार और प्रमाण भी परलोक की सच्चाई और वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं; वास्तव में, ईश्वर की एकता के बाद, परलोक की वास्तविकता वह शिक्षा है जिस पर उन्होंने सबसे अधिक जोर दिया। इसी तरह, अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व और एकता के लिए अधिकांश तर्क और प्रमाण भी सुख के निवास के अस्तित्व और प्रकटन की पुष्टि करते हैं - वह अनंत काल का क्षेत्र जहाँ ईश्वर का प्रभुत्व और दिव्यता सबसे पूर्ण रूप से प्रकट होगी। अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व के लिए, साथ ही साथ उसके अधिकांश नाम, और उसके सभी गुण और उसके आवश्यक लक्षण जैसे कि प्रभुत्व, दिव्यता, अनुग्रह, बुद्धि और न्याय निश्चित रूप से एक शाश्वत क्षेत्र - परलोक - के अस्तित्व और मृतकों के पुनरुत्थान को आवश्यक बनाते हैं।

न्यायोचित दण्ड और पुरस्कार का प्रावधान।

चूँकि एक सर्व-शाश्वत ईश्वर विद्यमान है, तो निश्चित रूप से एक परलोक भी है, जो उसकी दिव्य संप्रभुता का शाश्वत केंद्र है। चूँकि हम देखते हैं कि पूरे ब्रह्मांड में एक अत्यंत भव्य, बुद्धिमान, देखभाल करने वाला, उद्देश्यपूर्ण और पूर्ण प्रभुत्व विद्यमान है, तो निश्चित रूप से सुख का एक शाश्वत क्षेत्र होना चाहिए, जिसमें प्रवेश दिया जा सके, ताकि उस प्रभुत्व की महिमा समाप्त न हो, उसकी बुद्धि व्यर्थ न हो जाए, और विश्वासघात और उत्पीड़न से उसकी देखभाल नष्ट न हो जाए।

चूँकि ये अनंत दृश्यमान उपकार, आशीर्वाद, दयालुता और उदारता और दया के उदाहरण मृत हृदय और मन को यह तथ्य दिखाते हैं कि अदृश्य के पर्दे के पार एक दयालु और दयावान व्यक्ति विद्यमान है, इसलिए शाश्वत संसार में शाश्वत जीवन अवश्य होना चाहिए, क्योंकि ऐसे संसार का अस्तित्व ही यह दिखा सकता है कि उसकी दिव्य कृपाएँ

यह व्यर्थ नहीं है, कि उसका दान देने का कार्य वास्तव में छल का कार्य नहीं है, कि उसका अपने सेवकों पर अनुग्रह करना केवल शत्रुता के योग्य नहीं है, कि उसकी दया वास्तव में यातना नहीं है, और कि उसकी उदारता वास्तव में विश्वासघात का कार्य नहीं है। इसके अलावा, अनंत काल और चिरस्थायीता सभी उपहारों और आशीर्वादों को उनके सच्चे और परिपूर्ण रूप धारण करने की अनुमति देगी।

और हर वसंत में धरती के संकरे पन्ने पर एक शक्तिशाली कलम हमारी आँखों के सामने बिना थके एक के अंदर एक अनगिनत किताबें लिखती रहती है, बिना किसी गलती के। उस कलम के मालिक ने बार-बार वादा किया है: "मैं इस जगह से कहीं ज़्यादा विशाल जगह पर एक खूबसूरत, अविनाशी किताब लिखूँगा और इस संकरी और उलझी हुई वसंत की किताब से कहीं ज़्यादा आसानी से, जो इतने संकरे पन्ने पर लिखी गई है, और मैं तुम्हें इसे पढ़ने की इजाज़त दूँगा।" उसने अपने सभी हुक्मों में इस किताब का ज़िक्र किया है। इस लिहाज़ से इसका मसौदा पहले ही लिखा जा चुका है और क़ियामत के दिन इसे अपनी सारी अतिरिक्त बातों और फ़ुटनोट्स के साथ लिख दिया जाएगा। और लोगों के सारे आमाल इसमें शामिल किए जाएँगे।

इसके अलावा, पृथ्वी का एक विशेष महत्व है। इसके निवासियों की बहुलता और इस तथ्य के कारण कि यह असंख्य जीवों और आत्माओं वाले प्राणियों की निरंतर बदलती प्रजातियों का निवास, उत्पत्ति, कार्यशाला और प्रदर्शन और पुनरुत्थान का स्थान है, यह ब्रह्मांड का हृदय, केंद्र और मूल है; वास्तव में, यह ब्रह्मांड के निर्माण का मूल कारण है। इसके छोटे आकार के बावजूद, स्वर्गीय आदेश इसे विशाल स्वर्ग के बराबर मानते हैं, ईश्वर को स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी बताते हैं। और मानवता है, जो पृथ्वी पर हावी है। हम इसके अधिकांश प्राणियों पर प्रभुत्व रखते हैं; हम लगभग सभी सजीव प्राणियों को अपने अधीन करते हैं और अपने इर्द-गिर्द इकट्ठा करते हैं, और अपनी ज़रूरतों और इच्छाओं के अनुसार अधिकांश सृष्टि को व्यवस्थित, प्रदर्शित और अलंकृत करते हैं। हम सभी चीज़ों को उनकी अद्भुत विविधता में सूचीबद्ध और वर्गीकृत करते हैं, प्रत्येक प्रजाति को उसके अपने स्थान पर, और इस तरह से कि सभी लोग और जिन्न, स्वर्ग और ब्रह्मांड के सभी निवासी, प्रशंसा के साथ इसे देखते हैं; यहाँ तक कि ब्रह्मांड का स्वामी भी इस पर अपनी प्रशंसा भरी दृष्टि डालता है। इस प्रकार हमारा बहुत उच्च मूल्य और महत्व है, और अपनी कलाओं और विज्ञानों के माध्यम से हम दिखाते हैं कि हम ब्रह्मांड और उसके सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान फल के निर्माण का कारण हैं। हमें पृथ्वी पर शासन करने और हमारे निर्माता के नियमों के अनुसार इसे विकसित करने के लिए चुना और नियुक्त किया गया है। चूँकि हम इस दुनिया में अपने निर्माता के चमत्कारी कार्यों को सबसे उत्कृष्ट तरीके से प्रदर्शित और व्यवस्थित करते हैं, इसलिए हमें हमारे विद्रोह और अविश्वास के बावजूद यहाँ राहत दी जाती है, और हमारी सजा स्थगित कर दी जाती है।

हमारे द्वारा की गई सेवाओं के कारण हमें अस्थायी प्रवास की अनुमति दी गई है और सफलता का आशीर्वाद दिया गया है।

हालाँकि, इन गुणों से संपन्न होने के बावजूद, हम वास्तव में अपनी प्रकृति और स्वभाव की माँगों को पूरा करने के मामले में बेहद कमज़ोर और नपुंसक हैं: हमारी असंख्य ज़रूरतें हैं और हम असंख्य पीड़ाओं के अधीन हैं। और फिर भी एक सबसे शक्तिशाली, बुद्धिमान और देखभाल करने वाला शासक हमारी ज़रूरतों को हमारी शक्ति और इच्छा से परे तरीके से पूरा करता है। वह ग्रह को हर तरह के खनिज और भोजन से भरा एक भंडार बनाता है जिसकी हमें ज़रूरत है और वह सभी सामान जो हम चाहते हैं। इस प्रकार शासक पोषण करता है और देखभाल करता है

कृपया हमें आशीर्वाद दें और हमारी इच्छाएं पूरी करें।

जो प्रभु यह सब करता है, वह हमसे प्रेम करता है और स्वयं को हमारा प्रिय बनाता है।

वह शाश्वत है और उसके पास शाश्वत संसार हैं। वह सभी काम न्याय और बुद्धि से करता है। लेकिन इस सर्व-शाश्वत शासक की संप्रभुता की महिमा और उसके शासन की शाश्वतता इस क्षणभंगुर, अस्थायी दुनिया के क्षणभंगुर जीवन में समाहित नहीं हो सकती। इसके अलावा, मानवता द्वारा किए गए कई बड़े अन्याय, जो ब्रह्मांड के बुद्धिमान क्रम, न्यायपूर्ण संतुलन और सामंजस्यपूर्ण सुंदरता के प्रतिकूल और प्रतिकूल हैं, इस दुनिया में दण्डित नहीं होते, जैसा कि असंख्य लोगों द्वारा अपने उपकारकर्ता और प्रदाता के प्रति विद्रोह, विश्वासघात, इनकार और अविश्वास के साथ होता है। क्रूर और विश्वासघाती लोग आकर्षक जीवन जीते दिखाई देते हैं, जबकि उत्पीड़ित और निराश लोग दयनीय जीवन जीते हैं। लेकिन पूर्ण न्याय, जिसके निशान पूरे ब्रह्मांड में देखे जा सकते हैं, अपने स्वभाव से ही इस धारणा के बिल्कुल विपरीत है कि क्रूर और विश्वासघाती लोगों को - जो उत्पीड़ित और हताश लोगों की तरह ही मरते हैं - सर्वोच्च न्यायाधिकरण में उनके अपराधों का हिसाब देने के लिए कभी पुनर्जीवित नहीं किया जाना चाहिए।

चूँकि ब्रह्माण्ड के स्वामी ने ब्रह्माण्ड में से पृथ्वी को चुना है,

धरती से कविता और मानवजाति को चुना है, जिससे दोनों को उच्च पद और महत्व मिला है। मानवजाति में से, उसने पैगम्बरों, संतों और शुद्ध, संत विद्वानों को चुना है - सच्चे मानव जो सृष्टि के भगवान के रूप में उसके उद्देश्यों के अनुरूप हैं और विश्वास और समर्पण के माध्यम से खुद को उसके द्वारा प्रिय बनाते हैं। उसने उन्हें दोस्त और अभिभाषक के रूप में लिया है, उन्हें चमत्कारों और दिव्य सहायता से सम्मानित किया है, जबकि उनके विरोधियों को ऊपर से क्रोध भरे प्रहारों से दंडित किया है। और इन प्यारे और सबसे मूल्यवान दोस्तों में से उसने उनके नेता और गर्व के स्रोत, पैगंबर मुहम्मद को चुना है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। लंबी शताब्दियों से उसने अपनी रोशनी से पृथ्वी के आधे हिस्से और मानवता के पांचवें हिस्से को रोशन किया है। मानो ब्रह्मांड

केवल उसके लिए ही बनाए गए थे, इसके सभी महान उद्देश्य उसके द्वारा, उसके धर्म के द्वारा, और उसके द्वारा प्रकट किए गए कुरान के द्वारा प्रकट होते हैं। यद्यपि वह अपने द्वारा की गई सेवाओं के अमूल्य मूल्य के लिए अनंत पुरस्कार का हकदार था - ऐसी सेवाएँ जिन्हें करने में सामान्य लोगों को हज़ारों वर्ष लग जाते - उसे कठिनाई और संघर्ष में बिताए गए 63 वर्षों से अधिक का संक्षिप्त जीवन नहीं दिया गया था। तो क्या यह संभव है कि वह अपने सभी साथियों - अन्य पैगम्बरों - और साथियों के साथ पुनर्जीवित न हो? या कि वह अभी भी आत्मा में जीवित न हो? या कि वे मर जाएँ और अनंत विलुप्ति में विलीन हो जाएँ? संपूर्ण ब्रह्मांड और वह सत्य जिस पर यह आधारित है, उसके फिर से अस्तित्व की मांग करता है, जो कुछ भी है उसके मालिक से उसके जीवन की मांग करता है।

सर्वोच्च चिह्न, सातवीं किरण में 33 शक्तिशाली तर्कों ने यह स्थापित किया है कि ब्रह्मांड एक ही सत्ता की कृति और संपत्ति है। उन्होंने स्वयं-सिद्ध रूप से उसकी एकता और एकात्मता को भी प्रदर्शित किया है, जो उसकी सभी परिपूर्णताओं को जन्म देती है। उसकी एकता और एकात्मता के माध्यम से सभी प्राणी उसके कर्तव्य-बद्ध सैनिक और पूर्णतः आज्ञाकारी अधिकारी बन जाते हैं। और परलोक के माध्यम से, उसकी परिपूर्णताएँ हमेशा दोष रहित रहती हैं; आने वाले संसार के अस्तित्व के कारण, उसका पूर्ण न्याय कभी भी पूर्ण विश्वासघात में नहीं बदलेगा, उसकी सार्वभौमिक बुद्धि मूर्खतापूर्ण व्यर्थता में नहीं बदलेगी, या उसकी सर्व-समावेशी दया तुच्छ पीड़ा में नहीं बदलेगी।

परलोक के कारण उसकी सर्व-प्रतिष्ठित शक्ति नपुंसकता में परिवर्तित होने से बच जाती है।

निस्संदेह, और जैसा कि चर्चा किए गए सार्वभौमिक सत्यों द्वारा आवश्यक है - ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रमुख सत्य से उत्पन्न होने वाले अनेक सत्यों में से सत्य - पुनरुत्थान घटित होगा। मृतकों को पुनर्जीवित किया जाएगा और सर्वोच्च सभा के स्थान पर एकत्र किया जाएगा, और पुरस्कार और दंड का क्षेत्र अपने द्वार खोल देगा। यह सब इसलिए होगा ताकि पृथ्वी का वास्तविक महत्व और केंद्रीयता, और मानवता का सही महत्व और मूल्य वास्तव में महसूस किया जा सके। यह इसलिए होगा ताकि सर्वज्ञ शासक का न्याय, बुद्धि, दया और संप्रभुता, जो हमारा और हमारे ग्रह का निर्माता और स्वामी है, पूरी तरह और हमेशा के लिए स्थापित हो जाए। यह इसलिए होगा ताकि सर्व-स्थायी भगवान के सभी सच्चे मित्र और उत्साही प्रेमी शाश्वत विनाश से बच सकें, और उनमें से सबसे करीबी और प्रिय, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उन पवित्र सेवाओं के लिए पुरस्कृत हो सकें जिनसे उन्होंने दुनिया को सम्मानित किया। और सर्व-शाश्वत प्रभु की पूर्णताएं स्वयं को बिना किसी के प्रकट करेंगी

दोष रहित, उसकी शक्ति अयोग्यता रहित, उसकी बुद्धि मूर्खता रहित और उसका न्याय अत्याचार रहित होगा।

संक्षेप में, परलोक इसलिए अस्तित्व में है क्योंकि ईश्वर अस्तित्व में है।

ऊपर बताए गए आस्था के तीन स्तंभ - ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास, पैगम्बरत्व में विश्वास और कुरान तथा ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए अन्य धर्मग्रंथों में विश्वास - पुनरुत्थान की सच्चाई और वास्तविकता की गवाही देते हैं। इसी तरह, आस्था के शेष दो स्तंभ - फ़रिश्तों में विश्वास और ईश्वरीय आदेश और नियति में विश्वास - भी पुनरुत्थान की आवश्यकता रखते हैं और उस शाश्वत क्षेत्र की वास्तविकता की गवाही देते हैं। हम इस प्रकार स्पष्ट करेंगे:

फ़रिश्तों के अस्तित्व और उनकी इबादत के कर्तव्यों को स्थापित करने वाले सभी सबूत, साथ ही उनके बारे में अनगिनत मानवीय अवलोकन और उनसे की गई बातचीत, रूहों की दुनिया, ग़ैब की दुनिया, आख़िरत, स्थायी दुनिया और सुख और जहन्नम के निवास के अस्तित्व की भी पुष्टि करते हैं, जो भविष्य में इंसानों और जिन्नों से आबाद होंगे। क्योंकि फ़रिश्तों को ईश्वरीय अनुमति से इन दुनियाओं को देखने और उनमें प्रवेश करने की क्षमता है। सभी फ़रिश्तें जो ईश्वरीय सिंहासन के नज़दीक हैं और जो इंसानों से संवाद करते हैं, जैसे कि जिब्रील, इन निवासों में अपने अस्तित्व और अपनी यात्राओं की रिपोर्ट करने में एकमत हैं। उदाहरण के लिए, अगर हम खुद कभी अमेरिका नहीं गए हैं, तो वहाँ से लौटने वाले यात्रियों की रिपोर्ट हमें इसके अस्तित्व के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ती हैं। इसी तरह, फ़रिश्तों द्वारा दी गई रिपोर्ट, जिसमें कई निर्विवाद आख्यानों का अधिकार है, हमें आख़िरत के शाश्वत क्षेत्र के अस्तित्व के बारे में कोई संदेह नहीं छोड़ती है-

स्वर्ग और नर्क के विषय में।

छब्बीसवें वचन (ईश्वरीय आदेश और नियति पर) में निहित सभी तर्क जो विश्वास के स्तंभ को स्थापित करते हैं, पुनरुत्थान की भी पुष्टि करते हैं, इस दुनिया में हमारे सभी दर्ज किए गए कर्मों के आने वाले संसार में प्रकट होने की, और उन्हें सर्वोच्च तराजू में तौला जाने की। ब्रह्मांड में स्पष्ट व्यवस्था, नियमितता और संतुलन इस तथ्य का संकेत देते हैं कि सभी चीजों का जीवन पहले से दर्ज था और उस शाश्वत कार्यक्रम के अनुसार जीया गया था। साथ ही, प्रत्येक सजीव प्राणी का जीवन इतिहास उसकी स्मृति या उसके बीज और अन्य पट्टिका-जैसे रूपों में अंकित है; आत्मा से संपन्न प्रत्येक प्राणी, विशेष रूप से मनुष्य के कर्म, संरक्षित पट्टियों पर दर्ज हैं। ऐसा सर्वव्यापी निर्धारण, ऐसा बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण आदेश, ऐसा विस्तृत और सटीक रिकॉर्डिंग और अंकन केवल स्थायी पुरस्कार या दंड को समाप्त करने में सक्षम बनाने के लिए मौजूद है।

न्याय के दिन सर्वोच्च न्यायाधिकरण। यदि ऐसा न होता, तो इस तरह की व्यापक, सावधानीपूर्वक रिकॉर्डिंग और पंजीकरण का कोई उद्देश्य या अर्थ नहीं होता; यह भावना और वास्तविकता के विपरीत होता। इसके अलावा, यदि पुनरुत्थान नहीं होता, तो ब्रह्मांड की पुस्तक में ईश्वरीय नियति की कलम द्वारा अंकित सभी सावधानीपूर्वक स्थापित अर्थ नष्ट हो जाते। यह ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने के बराबर होगा।

संक्षेप में, फिर, आस्था के पाँच स्तंभ या लेख और उनके प्रमाण पुनरुत्थान की गवाही देते हैं और उसे ज़रूरी बनाते हैं: वे चाहते हैं कि आख़िरत का साम्राज्य प्रकट हो और अपने दरवाज़े खोले। ऐसा इसलिए है क्योंकि, अपनी विशालता और उदात्तता के अनुरूप, पुनरुत्थान की सच्चाई में इतने मज़बूत और ज़बरदस्त समर्थन हैं कि चमत्कारी क़ुरआन का लगभग एक तिहाई हिस्सा इसे समर्पित है। क़ुरआन इसे - ईश्वर में आस्था के बाद - अपने सभी सत्यों का आधार बनाता है और इसके आधार पर सब कुछ बनाता है।

दसवीं किरण

इसमें उन ग्रंथों की विषय-वस्तु का वर्णन है जो द ग्लेम्स में द फिफ्टीन्थ ग्लेम्स के बाद लिखे गए हैं। इसे रिसाले-ए-नूर के कुछ प्रमुख छात्रों ने लिखा था । चूँकि इसे एक अलग पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया था, इसलिए इसे यहाँ शामिल नहीं किया गया है।

ग्यारहवीं किरण

ग्यारहवीं किरण

विश्वास के फल पर एक ग्रंथ

यह रिसाले-ए-नूर का विधर्म और पूर्ण अविश्वास के प्रति जवाब है । यह हमारी इस कैद में हमारी सच्ची रक्षा है, क्योंकि यह और केवल यही है जो हमें यहाँ रखता है। यह ग्रंथ डेनिज़ली जेल से एक फल और स्मृति चिन्ह है, और दो शुक्रवारों का उत्पाद है।

नर्सी ने कहा

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

इसलिए वह कुछ और वर्षों तक जेल में रहा (12:42)।

इस आयत के अर्थ के अनुसार, पैगंबर जोसेफ, उन पर शांति हो, कैदियों के संरक्षक-संत या मार्गदर्शक हैं: जेल को एक तरह का "जोसेफ का स्कूल" माना जा सकता है। चूंकि यह दूसरी बार है कि रिसाले -ए-नूर के छात्रों को जेल भेजा गया है ।

जेल भेजे जाने के बाद, इस विद्यालय में कारावास से संबंधित कई मामलों का अध्ययन और अध्यापन करना आवश्यक है, जिनकी व्याख्या रिसाले-ए-नूर द्वारा की गई है। इस आशा में कि हम उनसे पूरी तरह लाभ उठा सकें, हम उनमें से पाँच या छह मामलों को संक्षेप में समझाएँगे।

पहला मामला

जैसा कि चौथे वचन में बताया गया है, हमारा सृष्टिकर्ता हमें हर दिन चौबीस घंटे जीवन के रूप में एक प्रकार की पूंजी प्रदान करता है, जिससे हम इस दुनिया और अगले दोनों में अपने जीवन के लिए आवश्यक चीजें प्राप्त कर सकते हैं। अगर हम समय व्यतीत करते हैं

यदि हम इनमें से तेईस घंटे इस अत्यंत क्षणभंगुर सांसारिक जीवन पर खर्च करते हैं और शेष एक घंटा - जो कि पाँच अनिवार्य विहित प्रार्थनाओं के लिए पर्याप्त है - परलोक के अत्यंत लंबे जीवन पर खर्च नहीं करते हैं, तो यह स्पष्ट है कि हमने बहुत बड़ी गलती की है। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि यह कितना बड़ा नुकसान होगा या हमारे अदूरदर्शी व्यवहार के परिणामस्वरूप हमारे मन और आत्मा को कितना कष्ट होगा। न केवल हमारे भविष्य के कार्य हमारे कष्ट से बर्बाद हो जाएँगे, बल्कि हम उस निराशा के कारण अपने आचरण को सुधारने में भी असमर्थ होंगे जो हमें घेर लेगी।

हालाँकि, अगर हम उस एक घंटे को पाँच अनिवार्य प्रार्थनाओं पर खर्च करते हैं, तो इससे होने वाला लाभ अतुलनीय है। कारावास की इस विपत्तिपूर्ण अवधि का प्रत्येक घंटा कभी-कभी पूरे दिन की पूजा के बराबर होगा, जबकि विहित प्रार्थनाओं के लिए समर्पित एक घंटा कई स्थायी घंटों में बदल जाएगा। इसके अलावा, हमारे दिल और आत्मा में जो निराशा और परेशानी हम महसूस करते हैं, वह फीकी पड़ने लगेगी और एक घंटे की प्रार्थना उन गलतियों के लिए प्रायश्चित का काम करेगी, जिनके कारण हमें पहली बार कारावास हुआ था, इस प्रकार उन्हें क्षमा किया जा सकेगा। इसके अलावा, यह हमें प्रशिक्षण और सुधार प्राप्त करने में भी मदद करेगा, जो कारावास का उद्देश्य है। यह कितना फायदेमंद है और यह हमारे और हमारे साथियों के लिए कितनी सुखद सांत्वना है!

जैसा कि चौथे वचन में लिखा गया है, मान लीजिए कि कोई व्यक्ति अपनी चौबीस लीरा में से पाँच या दस लीरा एक लॉटरी में दे देता है, जिसमें एक हजार लोग भाग ले रहे हैं, ताकि वह एक हजार लीरा का पुरस्कार जीत सके, लेकिन रत्नों के अनन्त खजाने के लिए टिकट खरीदने के लिए एक भी लीरा नहीं दे पाता। देखिए वह किस तरह पहले वाली की ओर भागता है, जबकि उस सांसारिक लॉटरी में उसके हजार लीरा जीतने की संभावना एक हजार में से एक से अधिक नहीं है। और देखिए वह दूसरे वाली से कैसे भागता है, जबकि एक लाख चौबीस हजार पैगम्बरों द्वारा दी गई रिपोर्टों और संतों और शुद्ध संत विद्वानों में से असंख्य सत्यवादी मुखबिरों द्वारा दी गई पुष्टि के अनुसार, एक सच्चे आस्तिक के उस 'लॉटरी' को जीतने की संभावना, जिसका पुरस्कार परलोक में अनन्त सुख है, एक हजार में से नौ सौ निन्यानवे है। अब सोचिए कि यह कितना अतार्किक है, पहले वाली की ओर भागना लेकिन दूसरे वाली से भागना!

जेल के गवर्नर और वार्डन, और वास्तव में देश के प्रशासक और सार्वजनिक व्यवस्था के संरक्षक, रिसाले-ए-नूर द्वारा प्रदान की गई इस शिक्षा से प्रसन्न होंगे, क्योंकि यह कई अवसरों पर देखा और अनुभव किया गया है कि एक हजार कैदियों का प्रबंधन और अनुशासन

धार्मिक लोग जो हमेशा नरक की जेल को अपने मन में रखते हैं, उन दस लोगों की तुलना में कहीं अधिक आसान हैं, जिनका कोई विश्वास नहीं है, जो अनिवार्य नमाज़ नहीं अदा करते हैं, जो केवल सांसारिक कारावास की परवाह करते हैं, जो वैध और अवैध के बारे में कोई विचार नहीं करते हैं, और जो अनुशासनहीन जीवन जीने के आदी हो गए हैं।

दूसरे मामले का सारांश

जैसा कि रिसाले-ए-नूर में जेनक्लिक रेहबेरी ("युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका") नामक ग्रंथ में बताया गया है , मृत्यु उतनी ही अपरिहार्य है, जितनी दिन के बाद रात या पतझड़ के बाद सर्दी। जिस तरह यह जेल उन लोगों के लिए एक अस्थायी गेस्टहाउस है जो एक के बाद एक इसमें प्रवेश करते हैं और बाहर निकलते हैं, उसी तरह पृथ्वी भी एक लंबी सड़क पर एक कारवां सराय की तरह है; यहाँ कारवां, अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए दौड़ते हुए, आगे बढ़ने से पहले रात भर रुकते हैं। निश्चित रूप से मृत्यु, जिसने पृथ्वी के सभी शहरों को सौ बार पृथ्वी की आंतों में खाली कर दिया है, हमसे जीवन की माँगों से कहीं अधिक माँग करती है। रिसाले -ए-नूर ने इस भयानक सत्य की व्याख्या की है, जिसका संक्षिप्त सारांश इस प्रकार है: चूँकि मृत्यु को समाप्त नहीं किया जा सकता है और चूँकि कब्र का द्वार बंद नहीं किया जा सकता है, इसलिए हमें एक ऐसा रास्ता ढूँढ़ना चाहिए जो हमें मृत्यु के जल्लाद द्वारा कब्र के एकांत कारावास और आने वाली दुनिया में अनंत काल के विनाश की निंदा से बचा सके; निश्चय ही

यह मानव जाति की सबसे बड़ी चिंता होनी चाहिए और निश्चय ही इस संभावना की जांच करना हमारे सर्वोत्तम हित में है?

ऐसा ही एक रास्ता है - रिसाले-ए-नूर द्वारा दिखाया गया रास्ता और कुरान की शिक्षाओं से प्रेरित रास्ता। नीचे एक संक्षिप्त सारांश दिया गया है:

मृत्यु या तो शाश्वत निष्पादन है - एक ऐसा फाँसी का तख्ता जिस पर एक व्यक्ति और उसके दोस्त और रिश्तेदार लटके रहेंगे - या यह एक तरह का प्रवेश द्वार है दूसरे, स्थायी क्षेत्र में, खुशी का एक महल जो उन लोगों के लिए तैयार किया गया है जो विश्वास रखते हैं। जहाँ तक कब्र की बात है, यह या तो एकांत कारावास का एक अँधेरा, अथाह गड्ढा है या एक ऐसा दरवाज़ा है जो इस दुनिया की जेल से बाहर की ओर एक स्थायी, रोशन बगीचे और दावत की जगह की ओर खुलता है। इस सत्य को गेन्क्लिक रेहबेरी में इस प्रकार समझाया गया है:

उदाहरण के लिए: इस जेल प्रांगण में कई फाँसी के तख्ते बनाए गए हैं, और दीवार के ठीक पीछे एक बहुत बड़ा लॉटरी कार्यालय खोला गया है; दुनिया के हर व्यक्ति ने टिकट खरीदा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि इस जेल में बंद पाँच सौ लोगों को एक-एक करके, बिना किसी अपवाद के, उस प्रांगण में बुलाया जाएगा: भागने की कोई उम्मीद नहीं है। कोई भी व्यक्ति यह सुन सकता है कि यह जेल प्रांगण कितना बड़ा है।

घोषणाएँ की जा रही हैं: “आओ और अपनी फांसी की सज़ा का दस्तावेज़ लो और फाँसी पर चढ़ो!” या “अपने हाथ में वह आदेश लो जो तुम्हें अनंत काल तक एकांत कारावास में रखने का आदेश देता है और उस दरवाज़े से अंदर जाओ!” या “बधाई हो! तुम्हारा टिकट लाखों डॉलर का है। आओ और इसे ले लो!”

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि लोग एक के बाद एक फाँसी के तख्ते पर चढ़ रहे हैं। फिर भी, जबकि कुछ लोग फाँसी के तख्ते पर केवल फाँसी के लिए चढ़ते हैं, हम जेल के प्रांगण में काम कर रहे ईमानदार अधिकारियों की रिपोर्ट से जानते हैं कि कुछ लोग फाँसी के तख्ते का इस्तेमाल सीढ़ी की तरह कर रहे हैं, और दीवार फांदकर उस पार स्थित लॉटरी कार्यालय में प्रवेश कर रहे हैं।

इस समय, दो प्रतिनिधि मंडल हमारी जेल में प्रवेश करते हैं। एक प्रतिनिधि मंडल संगीत वाद्ययंत्र, शराब और स्वादिष्ट मिठाइयाँ और पेस्ट्री लाता है, जिन्हें वे हमें खिलाने का प्रयास करते हैं। लेकिन मिठाइयाँ वास्तव में जहरीली होती हैं, क्योंकि मानव रूप में राक्षसों ने उनमें जहर मिला दिया है।

दूसरा प्रतिनिधिमंडल शिक्षा और प्रशिक्षण के कागजात, वैध खाद्य पदार्थ और वैध पेय पदार्थ लेकर आता है। इस प्रतिनिधिमंडल के सदस्य ये चीजें हमारे सामने पेश करते हैं और बड़ी गंभीरता से कहते हैं:

"पहले प्रतिनिधिमंडल द्वारा लाए गए उपहार एक परीक्षा हैं; यदि आप उन्हें स्वीकार करते हैं और खाते हैं, तो आपको वहाँ फाँसी पर लटका दिया जाएगा, जैसे कि आपने दूसरों को उनके सामने लटकते देखा है। हालाँकि, यदि आप इस देश के शासक के आदेश पर हमारे द्वारा लाए गए उपहारों को स्वीकार करते हैं, और यदि आप शिक्षा और प्रशिक्षण के इन कागजों पर लिखी प्रार्थनाएँ और प्रार्थनाएँ पढ़ते हैं, तो आपको फाँसी से बचा लिया जाएगा। बिना किसी संदेह के विश्वास करें कि आप में से प्रत्येक को शाही उपहार के रूप में लाखों की कीमत वाली लॉटरी टिकट मिलेगी। लेकिन अगर आप इन अवैध, जहरीली मिठाइयों को खाते हैं, तो इन आदेशों में लिखा है - ऐसे आदेश जिनसे हम सभी सहमत हैं - कि आप उस समय तक जहर के प्रभावों को भुगतेंगे जब तक कि आपको फाँसी पर लटकाने के लिए नहीं ले जाया जाता।"

जैसा कि इस तुलना में, विश्वास और आज्ञाकारिता के लोगों के लिए - बशर्ते कि वे सच्चे विश्वास की स्थिति में चले जाएं - एक शाश्वत और अक्षय खजाने के लिए टिकट नियत समय पर फांसी के फंदे से परे मानव भाग्य की लॉटरी से निकाला जाएगा, जिसके बारे में हम हमेशा जानते हैं। हालाँकि, जो लोग परलोक में विश्वास नहीं करते हैं और जो बुराई, गैरकानूनी कार्यों, अविश्वास और पाप में लगे रहते हैं, उनके लिए सौ प्रतिशत संभावना है कि अगर वे पश्चाताप नहीं करते हैं, तो उन्हें न्यायिक आदेश द्वारा मृत्युदंड और शाश्वत विनाश की निंदा की जाएगी। जो लोग मानव आत्मा की अमरता में विश्वास करते हैं, फिर भी वे बुराई और पाप के मार्ग पर चलते हैं, उनके लिए निन्यानबे प्रतिशत संभावना है

संभावना है कि उन्हें हमेशा के लिए एकांत कारावास की सजा दी जाएगी। इस बारे में निश्चित खबर एक सौ चौबीस हज़ार पैगम्बरों ने दी थी, जिनमें से सभी अपनी सच्चाई के सबूत के तौर पर अनगिनत चमत्कारों से लैस थे। यही खबर एक सौ चौबीस मिलियन से ज़्यादा संतों ने दी है, जो पैगम्बरों द्वारा लाई गई खबरों के निशानों और परछाइयों को आध्यात्मिक रूप से उजागर करके पहचानते हैं और पुष्टि करते हैं - जैसे कि किसी चलचित्र के पर्दे पर देखा गया हो। इसी तरह, हज़ारों-लाखों सटीक विद्वानों, इस्लामी कानून के व्याख्याकारों और सत्यनिष्ठ विद्वानों ने निर्णायक सबूतों और शक्तिशाली तर्कों के साथ, इन दो प्रतिष्ठित लोगों के समूहों द्वारा दी गई जानकारी को तर्कसंगत और तार्किक निश्चितता के साथ स्थापित किया है।

अब उस व्यक्ति की स्थिति पर विचार करें, जो किसी एक व्यक्ति की सलाह पर, जिस सुरक्षित मार्ग पर वह चल रहा था, उसे छोड़ देता है और एक लंबे तथा अधिक खतरनाक मार्ग को चुनता है, तथा पहले उल्लेखित सत्य के लोगों - उन चंद्रमाओं, सूर्यों और सितारों, मानवता के उन पवित्र नेताओं - के सामूहिक ज्ञान को नजरअंदाज कर देता है, जिन्होंने सीधा मार्ग दिखाया है जो सीधे शाश्वत सुख की ओर ले जाता है।

ऐसे व्यक्ति की स्थिति यह है: इस यात्रा पर निकलने के बाद, वह बेचारा किसी को यह कहते हुए सुनता है कि छोटा रास्ता अपनाने से खतरे की एक प्रतिशत संभावना है और सड़क के अंत में एक महीने की जेल की संभावना है। इसलिए, एक व्यक्ति की झूठी सलाह पर, हमारा यात्री छोटा रास्ता छोड़कर लंबा रास्ता अपना लेता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि यह हानिरहित लगता है, हालाँकि वास्तव में इस रास्ते में कोई लाभ नहीं है। साथ ही, असंख्य बुद्धिमान और सुविज्ञ व्यक्ति उन्हें चेतावनी देते हैं कि वे छोटे और आसान रास्तों को न छोड़ें - एक

जो, अत्यंत निश्चितता के साथ, उन्हें अंततः स्वर्ग और अनंत सुख की ओर ले जाएगा। हालाँकि, उन्होंने अपनी बातों को नज़रअंदाज़ करके अधिक कठिन, अधिक परेशानी भरा रास्ता चुना - वह रास्ता जो, निन्यानबे प्रतिशत निश्चितता के साथ, उन्हें नर्क में कैद और अनंत दुख की ओर ले जाएगा।

निश्चय ही, ऐसे दुष्ट ने अपना दिमाग, अपना दिल और अपनी आत्मा खो दी है, क्योंकि केवल एक शराबी पागल ही कुछ मच्छरों के हल्के डंक से बचकर सुरक्षित रास्ते पर भागेगा और उस मार्ग पर भागेगा जिसके किनारे ड्रेगन छिपे हुए हैं, जो उस बेचारे दुष्ट पर हमला करने और उसके अंग-भंग करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

चूँकि यह स्थिति की वास्तविकता है, इसलिए हम कैदियों को दूसरे, धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों को स्वीकार करना चाहिए ताकि हम अपने कारावास की विपत्ति का पूरा बदला ले सकें। कहने का तात्पर्य यह है कि जिस तरह से दलील दी गई है-

इस बात का पूरा भरोसा है कि एक मिनट के प्रतिशोध या कुछ मिनटों की बुराई ने हमें कई वर्षों की कैद की सजा दी है, जिससे हमारी दुनिया एक जेल बन गई है, बदला लेने के लिए हमें अपने जेल जीवन के एक या दो घंटे को एक या दो दिन की पूजा में बदल देना चाहिए। इस तरह हम उस धन्य प्रतिनिधिमंडल के उपहारों की बदौलत दो या तीन साल की सजा को बीस या तीस साल के स्थायी जीवन में बदल पाएंगे; इस तरह हम बीस या तीस साल की जेल की सजा को नरक में लाखों वर्षों की कैद से माफ़ी के साधन में बदल पाएंगे, इस प्रकार हम अपने अनंत जीवन को उस रोने के प्रतिशोध में मुस्कुराने की अनुमति दे पाएंगे जो हमारी क्षणभंगुर दुनिया की विशेषता है। यह प्रदर्शित करते हुए कि जेल प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान है, हमें अपने राष्ट्र और देश के अच्छे व्यवहार वाले, भरोसेमंद और उपयोगी सदस्य बनने की कोशिश करनी चाहिए।

जेल अधिकारियों, वार्डन और प्रशासकों को यह भी देखना चाहिए कि जिन लोगों को वे डाकू, आवारा, हत्यारे और दुराचारी मानते हैं - और इस तरह देश के लिए हानिकारक हैं - वे वास्तव में शिक्षा के इस सबसे धन्य स्थान में अध्ययनरत छात्र हैं। और उन्हें इस उदारता के लिए गर्व महसूस करना चाहिए और भगवान को धन्यवाद देना चाहिए।

तीसरा मामला

नीचे एक शिक्षाप्रद घटना का सारांश दिया गया है जिसका वर्णन जेनक्लिक रेहबेरी में किया गया है:

मैं एक बार राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस के दौरान एस्कीशेहर जेल की खिड़की के पास बैठा था। जेल के सामने वाले स्कूल की छोटी लड़कियाँ स्कूल के मैदान में खेल रही थीं और खुशियाँ मना रही थीं। अचानक, मैंने उन्हें पचास साल बाद देखा, उनकी भविष्य की परिस्थितियाँ मुझे किसी चलचित्र की तरह दिखाई दे रही थीं। मैंने देखा कि उन पचास से साठ लड़कियों में से चालीस से पचास अपनी कब्रों में धूल में मिल चुकी थीं और कष्ट सह रही थीं। बाकी दस बदसूरत सत्तर वर्षीय लड़कियाँ थीं, जिन्हें उन लोगों द्वारा तिरस्कृत किया जाता था जिनसे वे प्यार की उम्मीद कर सकती थीं, क्योंकि उन्होंने युवावस्था में अपनी पवित्रता को बनाए नहीं रखा था।

, पर

यह देखकर मैं उनकी दयनीय स्थिति देखकर रो पड़ा। जेल में मेरे कुछ दोस्तों ने मेरा रोना सुना और मुझसे पूछा कि क्या हुआ है, लेकिन मुझे उनसे कहना पड़ा कि वे मुझे कुछ समय के लिए अकेला छोड़ दें।

आपको समझना चाहिए कि मैंने जो देखा वह वास्तविक था, काल्पनिक नहीं। जिस तरह गर्मी और पतझड़ के बाद सर्दी आती है, उसी तरह जवानी की गर्मी और बुढ़ापे की पतझड़ के बाद कब्र और मध्यवर्ती क्षेत्र की सर्दी आती है। अगर कोई ऐसा उपकरण होता जो भविष्य की घटनाओं को उसी समय दिखा सकता

जिस तरह फिल्में अतीत की घटनाओं को दिखाती हैं, तो पचास साल पहले की घटनाएं वर्तमान में दिखाई जाएंगी, और गुमराह और बुरे लोगों को पचास साल बाद उनकी स्थिति दिखाई जाएगी; वे दर्द और घृणा से चिल्लाएंगे, अपने वर्तमान सुख और अवैध सुख की स्थिति पर फूट-फूट कर रोएंगे।

एस्कीशेहिर जेल में इन टिप्पणियों में व्यस्त रहने के दौरान, एक तरह का सामूहिक व्यक्तित्व, जो बुराई और गुमराही को प्रोत्साहित करता है, मेरे सामने मानव रूप में एक शैतान की तरह अवतरित हुआ। उसने कहा:

"हम जीवन के सभी सुखों और खुशियों का स्वाद लेना चाहते हैं, और दूसरों को भी उनका स्वाद चखाना चाहते हैं; हमारे काम में हस्तक्षेप न करें!"

जवाब में मैंने कहा:

"चूँकि तुम सुख और आनंद के लिए मृत्यु को याद नहीं करते, बल्कि खुद को बुराई और गुमराही में डुबो देते हो, तो यह जान लो कि तुम्हारी गुमराही की वजह से सारा अतीत मर चुका है और अस्तित्वहीन है: यह एक उजाड़ और सबसे भयानक कब्रिस्तान है, जो सड़ी हुई लाशों से भरा हुआ है। उन अनगिनत वियोगों से जो तुमने झेले हैं और अपने दोस्तों की मृत्यु से जो दर्द पैदा होता है - वह दर्द, जो तुम्हारे प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन की कोई उम्मीद नहीं होने के कारण, तुम्हारे दिल और दिमाग पर जो कुछ बचा है, उस पर एक गंभीर प्रभाव डालता है - जल्द ही उन तुच्छ नशे में धुत्त सुखों को नष्ट कर देगा जो तुम्हारे वर्तमान का निर्माण करते हैं। जहाँ तक भविष्य की बात है, तो तुम्हारे विश्वास की कमी के कारण, वह भी एक अंधेरे, मृत और उजाड़ बंजर भूमि से अधिक कुछ नहीं है।

और चूँकि वहाँ से आने वाले अभागे लोग, जो इस अस्तित्व के क्षेत्र में तथा वर्तमान में उभरने वाले हैं, उनकी गर्दन भी जल्लाद की तलवार से काट दी जाएगी तथा, तुम्हारी धारणा के अनुसार, उन्हें भी अस्तित्वहीन कर दिया जाएगा, क्योंकि तुम्हारे उनके साथ संबंध और चिंता का कारण, जो तुम्हारे एक बुद्धिमान प्राणी होने के कारण है, दुःखद चिंताएँ तुम्हारे अविश्वासी सिर पर लगातार बरसती रहेंगी, तथा तुम्हारे क्षुद्र, स्वच्छंद सुख को पहचान से परे नष्ट कर देंगी।

"यदि आप गुमराही और बुराई को त्यागकर सच्चे विश्वास और धार्मिकता के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं, तो आप विश्वास के प्रकाश से देखेंगे कि अतीत न तो अस्तित्वहीन है और न ही सड़ी हुई लाशों से भरा कब्रिस्तान है; बल्कि, यह एक वास्तविक, चमकदार दुनिया है जिसे भविष्य में बदल दिया गया है: यह अमर आत्माओं के लिए एक प्रतीक्षा कक्ष है जो आने वाली दुनिया में खुशी के महलों में प्रवेश करेंगे। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए यह कोई दर्द नहीं देता है; इसके विपरीत, किसी के विश्वास की डिग्री और ताकत के आधार पर, यह दुनिया में एक प्रकार का स्वर्गीय आनंद देता है। भविष्य भी, जब विश्वास की आंख से देखा जाता है, तो वह नहीं है

एक अँधेरा, उजाड़ बंजर भूमि, लेकिन एक ऐसी भूमि जिसके शाश्वत सुख के महलों में दावतों और उपहारों की प्रदर्शनी एक सर्व-दयालु, सर्व-करुणामयी महामहिम और परोपकारी द्वारा स्थापित की गई है - जिसके पास असीम दया और उदारता है और जो वसंत और गर्मियों को उपहारों से लदी हुई मेजों में बदल देता है। चूँकि विश्वास की चलचित्र स्क्रीन भविष्य को इस तरह से प्रकट करती है और चूँकि विश्वास यह भी जागरूकता देता है कि लोगों को मृत्यु के द्वार से वहाँ भेजा जा रहा है, इसलिए हर कोई इस दुनिया में रहते हुए उस स्थायी क्षेत्र से संबंधित किसी प्रकार के आनंद का अनुभव कर सकता है, अपने विश्वास की सीमा और शक्ति के अनुसार। निष्कर्ष रूप में, सच्चा, दर्द-मुक्त आनंद केवल विश्वास में ही पाया जा सकता है और केवल विश्वास के माध्यम से ही संभव है।

"चूंकि यह हमारी चर्चा से संबंधित है, इसलिए हम कुछ ऐसा समझाएंगे जो जेनक्लिक रेहबेरी में एक पोस्टस्क्रिप्ट के रूप में शामिल किया गया था, अर्थात् इस दुनिया में भी विश्वास द्वारा उत्पन्न हजारों लाभों और सुखों का एक उदाहरण। यह इस प्रकार है:

“उदाहरण के लिए, कल्पना कीजिए कि आपकी प्यारी इकलौती संतान मृत्यु की पीड़ा झेल रही है और आप उसकी दर्दनाक मौत के बारे में बेहद चिंतित हैं।
अचानक, खिद्र या लुकमान जैसा कोई चिकित्सक एक अद्भुत दवा लेकर आता है, जिसे वह आपके प्रियजन को देता है। आपकी प्यारी, सबसे प्यारी बच्ची मौत से मुक्त होकर अपनी आँखें खोलती है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि उसके ठीक होने और मौत से बचने पर आपको कितनी खुशी और राहत महसूस होगी?

“उदाहरण में बताए गए बच्चे की तरह, अनगिनत लोग जिनसे आप प्यार करते हैं और जिनके लिए आप चिंतित हैं, आपकी नज़र में, अतीत के कब्रिस्तान में हमेशा के लिए सड़ने वाले हैं। अचानक, लुकमान द वाइज़ की तरह, विश्वास की सच्चाई दिल की खिड़की से कब्र पर रोशनी डालती है, जिसे अनंत विनाश का एक विशाल स्थान माना जाता है। विश्वास की सच्चाई और रोशनी की बदौलत, सभी मृतक जीवन में आ जाते हैं, मानो कह रहे हों, 'हम नहीं मरे और नहीं मरेंगे; हम फिर से आपसे मिलेंगे!' इस वास्तविकता का अनुभव करने पर आपको कितनी असीम खुशी और उल्लास महसूस होगा! इस दुनिया में वही असीम खुशी और उल्लास देकर, विश्वास साबित करता है कि यह एक बीज की तरह है - एक बीज जो, अगर मूर्त हो जाए, तो एक निजी स्वर्ग, अनंत सुख का एक सच्चा तौबा-वृक्ष बन जाएगा।”

अपनी हठधर्मिता पर कायम रहते हुए, मानव रूप में उस शैतान ने इस प्रकार उत्तर दिया: "कम से कम हम अपना जीवन

जानवरों की तरह बिता सकते हैं, आनंद और मौज-मस्ती में डूबे हुए, मनोरंजन और अपव्यय में लिप्त होकर, और इन सूक्ष्म और नाजुक मामलों के बारे में अपने दिमाग से सभी विचारों को निकाल कर!"

मेरा उत्तर इस प्रकार था:

"नहीं, तुम पशु की तरह नहीं जी सकते, क्योंकि पशुओं के लिए न तो भूतकाल होता है, न भविष्यकाल। उन्हें न तो भूतकाल का दुख होता है, न पश्चाताप, न ही भविष्यकाल की चिंता या भय। पशु को तो शुद्ध सुख मिलता है। वह सुखपूर्वक रहता है, अपने रचयिता को धन्यवाद और स्तुति देता है। यहां तक कि वध होने वाला पशु भी कुछ नहीं महसूस करता। जब चाकू से उसका गला काटा जाता है, तो उसे पीड़ा होती है, लेकिन वह पीड़ा क्षणिक होती है और क्षण भर में गायब हो जाती है। इसका अर्थ यह है कि अदृश्य को अज्ञात रखना, वहां क्या होगा, यह बताए बिना ईश्वरीय दया और करुणा का महान उदाहरण है; निर्दोष पशुओं के लिए तो यह और भी बड़ा वरदान है। लेकिन मनुष्य के संवेदनशील होने के कारण, और चूंकि उसका भूतकाल और भविष्य कुछ हद तक अदृश्य से निकलता हुआ दिखाई देता है, इसलिए दृश्य जगत के पर्दे के पीछे जो कुछ छिपा है, वह पूरी तरह छिपा नहीं रह सकता; परिणामस्वरूप, हे मनुष्य, तुम पशुओं की तरह निश्चिंत और निश्चिंत होकर नहीं रह सकते। अतीत के बारे में पछतावा, जुदाई का दर्द और भविष्य की चिंताएँ आपके वर्तमान के क्षणभंगुर सुखों को राख में मिला देती हैं, जिससे वे जानवरों द्वारा भोगे जाने वाले सुखों से सौ गुना कम आकर्षक हो जाते हैं। चूँकि यह एक सच्चाई है, इसलिए या तो अपनी बुद्धि को त्याग दो, अपने आप को एक पशु बना लो, और इस तरह मोक्ष प्राप्त करो या, वैकल्पिक रूप से, सच्चे विश्वास के माध्यम से अपने होश में आओ, कुरान पर ध्यान दो, और इस क्षणभंगुर दुनिया में भी शुद्ध सुख का अनुभव करो, जो जानवरों द्वारा भोगे जाने वाले सुख से सौ गुना अधिक है।

मेरे इन शब्दों ने कुछ देर के लिए मेरे विरोधी को चुप करा दिया। लेकिन अपनी जिद में वह एक बार फिर मेरी ओर मुड़ा और बोला: "ठीक है, तो हम कम से कम पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह तो रह ही सकते हैं।"

मैंने उत्तर दिया:

"जिस तरह से आप जानवरों की तरह नहीं जी सकते, उसी तरह आप पश्चिम के अधार्मिक लोगों की तरह भी नहीं जी सकते। क्योंकि अगर वे एक पैगम्बर को भी नकारते हैं, तो वे दूसरों पर विश्वास करते हैं। भले ही वे पैगम्बरों को न पहचानें, वे ईश्वर में विश्वास कर सकते हैं। और अगर वे ईश्वर को नहीं जानते, तो भी उनके पास कुछ व्यक्तिगत विशेषताएँ और गुण हो सकते हैं, जिनके ज़रिए वे पूर्णता पाते हैं। लेकिन अगर कोई मुसलमान अंतिम पैगम्बर, ईश्वर के सबसे महान पैगम्बर, उन पर और उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिनका धर्म और मिशन सार्वभौमिक है, को नकारता है, तो वे किसकी ओर जा सकते हैं? क्योंकि वे किसी अन्य पैगम्बर को स्वीकार करने में असमर्थ होंगे और उन्हें स्वयं ईश्वर से भी मुंह मोड़ना पड़ेगा। क्योंकि ईश्वर और अन्य सभी पैगम्बरों के बारे में उनका ज्ञान पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के माध्यम से उन तक पहुँचा है;

उसके बिना, दूसरे पैगम्बरों के लिए किसी के दिल में जगह कैसे हो सकती है? यही कारण है कि जहाँ बहुत से लोगों ने, आरंभिक समय से ही, इस्लाम में प्रवेश करने के लिए अन्य धर्मों को त्याग दिया है, वहीं बहुत कम, यदि कोई भी, मुसलमान सच्चे यहूदी या ईसाई बन पाए हैं। जो मुसलमान इस्लाम को त्याग देते हैं, वे पूरी तरह से अधार्मिक बन जाते हैं: एक नियम के रूप में, उनका चरित्र भ्रष्ट हो जाता है और वे देश और राष्ट्र के लिए खतरा बन जाते हैं।”

यह तर्क सुनकर, मानव वेश में जिद्दी शैतान को कोई सहारा नहीं मिला। जवाब देने में असमर्थ, वह गायब हो गया और नरक में चला गया।

तो, जोसेफ के इस स्कूल में मेरे सहपाठियों! वास्तविकता वही है जैसा मैंने वर्णन किया है, रिसाले-ए-नूर द्वारा पुष्टि की गई है, जिसने अपने प्रमाणों के साथ, पिछले बीस वर्षों में कई जिद्दी आत्माओं की जिद को कम किया है और कई लोगों को विश्वास दिलाया है। चूंकि यह ऐसा है, इसलिए हमें विश्वास और सही आचरण के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए - एक ऐसा मार्ग जो सुरक्षित और आसान है, और जो हमारे जीवन और हमारे राष्ट्र के सदस्यों के लिए फायदेमंद है।

न केवल इस दुनिया में बल्कि अगली दुनिया में भी। खुद को व्यर्थ और अंततः दर्दनाक कल्पनाओं में लिप्त करने के बजाय, हमें अपना खाली समय कुरान की उन सूराओं को पढ़ने में बिताना चाहिए जिन्हें हमने याद किया है और उन दोस्तों से उनका अर्थ सीखना चाहिए जो उन्हें सिखा सकते हैं। हमें उन विहित प्रार्थनाओं की भरपाई करनी चाहिए जिन्हें हम अतीत में करने में विफल रहे हैं। और, एक-दूसरे के अच्छे गुणों का लाभ उठाते हुए, हमें इस जेल को एक धन्य उद्यान में बदलने की कोशिश करनी चाहिए जिसमें अच्छे चरित्र के बीज पोषित किए जा सकें।

इस तरह के धार्मिक कार्यों के साथ, हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना चाहिए ताकि जेल का शासक और संबंधित लोग दयालु स्वामी और मार्गदर्शक बन सकें, जिन्हें यूसुफ के स्कूल में लोगों को स्वर्ग के लिए तैयार करने और उनके प्रशिक्षण और शिक्षा की देखरेख करने का कर्तव्य सौंपा गया हो, न कि वे नरक के स्वर्गदूतों की तरह यातना देने वाले हों, जो अपराधियों और हत्यारों पर खड़े रहते हैं।

चौथा मामला

फिर से, इस मामले को जेनक्लिक रेहबेरी में समझाया गया है । एक बार कुछ भाइयों ने मुझसे निम्नलिखित प्रश्न पूछा जो मेरी मदद कर रहे थे:

"पचास दिनों से तुमने इस भयानक विश्व युद्ध के बारे में कुछ भी नहीं पूछा है, न ही कोई जिज्ञासा दिखाई है, जिसने पूरी दुनिया को अराजकता में डाल दिया है, भले ही यह इस्लाम और मुस्लिम दुनिया के भाग्य से निकटता से जुड़ा हुआ है। हालाँकि, कुछ धार्मिक और विद्वान लोग इस बारे में कुछ भी नहीं पूछ रहे हैं, न ही कोई जिज्ञासा दिखाई है।

दस लोग रेडियो पर ध्यानपूर्वक सुनते हैं, और परिणामस्वरूप कुछ लोग सामूहिक प्रार्थना से भी विचलित हो जाते हैं। क्या इस युद्ध से अधिक महत्वपूर्ण कोई और घटना है? या क्या इसके बारे में चिंतित रहना किसी तरह से हानिकारक है?”

मेरा उत्तर इस प्रकार था: "जीवन

की पूंजी बहुत कम है और किए जाने वाले कार्य बहुत बड़े हैं। संकेंद्रित वृत्तों की तरह, प्रत्येक व्यक्ति के पास चिंता के कुछ क्षेत्र होते हैं जो एक दूसरे के भीतर मौजूद होते हैं: उनके पास हृदय और पेट के क्षेत्र होते हैं; शरीर और घर के क्षेत्र; जिस क्वार्टर में वे रहते हैं और जिस शहर या नगर में वे रहते हैं, उसके क्षेत्र; उनके देश का क्षेत्र, पृथ्वी और मानव जाति के क्षेत्र, और सभी जीवित प्राणियों और पूरी दुनिया का क्षेत्र। प्रत्येक व्यक्ति के पास उन क्षेत्रों में से प्रत्येक में कुछ कर्तव्य हो सकते हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण और स्थायी कर्तव्य वे हैं जो निकटतम, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित हैं, जबकि सबसे कम महत्वपूर्ण और अस्थायी कर्तव्य सबसे दूर, सबसे बड़े क्षेत्र से संबंधित हैं। इस मानक के अनुसार, ऐसे कर्तव्य हो सकते हैं, जिनका महत्व और क्षेत्र एक दूसरे के व्युत्क्रमानुपाती हैं। लेकिन सबसे बड़े क्षेत्र के आकर्षण के कारण, सबसे छोटे क्षेत्र से संबंधित महत्वपूर्ण कर्तव्यों की उपेक्षा की जाती है, क्योंकि लोग अनावश्यक, तुच्छ और परिधीय मामलों में व्यस्त हो जाते हैं। यह उनके जीवन की पूंजी को व्यर्थ में नष्ट कर देता है और उन्हें अपना कीमती समय बेकार की चीजों पर बर्बाद करने के लिए मजबूर करता है। उदाहरण के लिए, जो कोई युद्ध की घटनाओं का अनुसरण करता है, वह अपने दिल में एक पक्ष का समर्थन करने लग सकता है, और परिणामस्वरूप अत्याचार को भी अनुकूल दृष्टि से देख सकता है और उसका हिस्सा बन सकता है।

"प्रश्न के पहले भाग के संबंध में, सभी लोग - विशेष रूप से मुसलमान - लगातार इस विश्व युद्ध से भी अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं का सामना कर रहे हैं, और एक ऐसा मुद्दा जो विश्व प्रभुत्व से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। वास्तव में, यदि सभी के पास जर्मनों और अंग्रेजों की संपत्ति और थोड़ी सी भी समझ होती, तो वे इसे इस मुद्दे का समाधान खोजने में खर्च कर देते। यह मुद्दा, जिसके बारे में सैकड़ों हज़ारों पैगंबरों, संतों और शुद्ध विद्वानों ने हमें बताया है, ब्रह्मांड के मालिक और संचालक द्वारा दिए गए हज़ारों वादों और प्रतिज्ञाओं पर भरोसा करते हुए, इस प्रकार है:

"हर किसी के लिए, विश्वास के कारण, जीतने की संभावना मौजूद है, एक शाश्वत संपत्ति जो पृथ्वी जितनी विशाल है, बगीचों और महलों से भरी हुई है। हालाँकि, विश्वास के बिना, वह संपत्ति हासिल नहीं की जा सकती। इस युग में, भौतिकवाद के प्रकोप के कारण कई लोग हार रहे हैं। एक निश्चित संत विद्वान, जो कुछ छिपी हुई वास्तविकताओं को उजागर करने में सक्षम थे, ने एक बार एक जिले में देखा कि चालीस लोग जो अपनी मृत्युशैया पर पड़े थे,

केवल कुछ ही जीते; बाकी हार गए। क्या कोई भी चीज, यहां तक कि पूरी दुनिया पर सत्ता और प्रभुत्व भी, ऐसी हार की भरपाई कर सकती है?

"हम रिसाले-ए-नूर के छात्र जानते हैं कि परलोक में सुख-शांति के लिए ज़रूरी कर्तव्यों को छोड़ना और उस बेहतरीन वकील को छोड़ देना जो 99 प्रतिशत लोगों को उनके केस जीतने में मदद करता है, मूर्खता होगी और इसके बजाय हम छोटी-छोटी बातों में इस तरह उलझे रहेंगे जैसे कि हम हमेशा के लिए इस दुनिया में ही रहेंगे। इस कारण से, हम रिसाले-ए-नूर के छात्र आश्वस्त हैं कि अगर हममें से हर कोई आज की तुलना में सौ गुना ज़्यादा बुद्धिमान होता, तो भी हम अपनी बौद्धिक पूंजी का इस्तेमाल उसी सही काम के लिए करते।

"यहाँ मेरे नए भाइयों से जो मेरे साथ कारावास की विपत्ति में भागीदार हैं, मैं यह कहना चाहूँगा। आप अभी तक रिसाले-ए-नूर के बारे में नहीं जान पाए हैं

साथ ही मेरे पुराने भाई भी, जो मेरे साथ इस जगह पर आए थे। उन्हें और उनके जैसे हज़ारों छात्रों को गवाह के तौर पर बुलाते हुए, मैं आपको भरोसा दिलाता हूँ कि रिसाले-ए-नूर इस दौर का सबसे बड़ा 'वकील' है, जो बुद्धिमानी भरे क़ुरआन की चमत्कारिकता से प्रेरित है और जो लोग इसका अध्ययन करते हैं, उन्हें उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण मुक़दमा जीतने में मदद कर सकता है। दरअसल, पिछले बीस सालों में इसने बीस हज़ार लोगों को सच्चा ईमान हासिल करने में मदद की है - यह अपने आप में एक गारंटी है कि उनका मुक़दमा सफल होगा। हालाँकि पिछले अठारह सालों से मेरे दुश्मनों और विभिन्न विधर्मियों और भौतिकवादियों ने सरकार के कुछ सदस्यों को मेरे खिलाफ़ क्रूरता से भड़काया है और अधिकारियों ने हमें चुप कराने के लिए हमें कैद कर लिया है, जो उन्होंने पहले भी करने की कोशिश की है, वे रिसाले-ए-नूर के स्टील के किले को बनाने वाले एक सौ तीस 'उपकरणों' में से केवल दो या तीन की ही आलोचना कर पाए हैं। दूसरे शब्दों में, रिसाले-ए-नूर उस व्यक्ति के लिए पर्याप्त है जो अपने जीवन का मुक़दमा जीतने के लिए वकील रखना चाहता है। और डरो मत, रिसाले-ए-नूर के लिए

प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता! दो या तीन अपवादों को छोड़कर, इसके सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ सरकार के प्रतिनिधियों और अन्य प्रमुख व्यक्तियों के बीच स्वतंत्र रूप से प्रसारित हो रहे हैं। भगवान की इच्छा से, एक समय आएगा जब सम्मानित गवर्नर और अधिकारी इन लाइटों को कैदियों में इस तरह वितरित करेंगे जैसे कि वे भोजन और दवा हों ताकि जेलों को वास्तव में सुधार के प्रभावी घरों में बदला जा सके।”

पांचवां मामला

जैसा कि जेनक्लिक रेहबेरी में वर्णित है , इसमें कोई संदेह नहीं है कि एक व्यक्ति की जवानी एक दिन गायब हो जाएगी: जैसे गर्मियों के बाद पतझड़ और सर्दियों का स्थान ले लेता है, और

जैसे दिन अंततः शाम और फिर रात बन जाता है, वैसे ही युवावस्था एक दिन बुढ़ापे में बदल जाएगी और मृत्यु में समाप्त हो जाएगी। सभी दिव्य-प्रकट शास्त्र हमें बताते हैं कि यदि युवा अपनी युवावस्था को धार्मिक कार्यों में बिताते हैं, पवित्रता से व्यवहार करते हैं और अच्छे आचरण की सीमाओं के भीतर कार्य करते हैं, तो वे अंततः शाश्वत युवावस्था प्राप्त करेंगे। हालाँकि, यदि वे अपनी युवावस्था को बर्बाद करते हैं और इसे व्यभिचार में खर्च करते हैं, तो वे इसे हमेशा के लिए खो देंगे। जिस तरह एक मिनट के क्रोध के परिणामस्वरूप हुई हत्या के बाद लाखों मिनट की कैद होती है, उसी तरह युवावस्था के अवैध सुख, जैसा कि हर युवा व्यक्ति अपने अनुभव से पुष्टि कर सकता है, सुख से अधिक पीड़ा युक्त साबित होंगे। इस दुनिया में ऐसे सुखों के जाने पर जो पछतावा होता है और पाप के परिणामस्वरूप अक्सर यहाँ दंड मिलता है, उसके साथ-साथ कब्र की यातना भी होती है, साथ ही यह तथ्य भी है कि व्यक्ति को परलोक में अपने दुर्व्यवहार के लिए जवाब देना होगा।

उदाहरण के लिए, अवैध प्रेम में मिलने वाला क्षणिक सुख ईर्ष्या, अलगाव और बदले में प्यार न मिलने की पीड़ा के कारण ज़हरीले शहद में बदल जाता है। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि युवा लोग अक्सर अपनी ज्यादतियों के कारण शारीरिक और मानसिक बीमारियों के साथ अस्पताल में क्यों पहुँचते हैं, या अपने दुराचार के कारण जेल में, या सलाखों और दुराचार के अड्डों में, तो आपको केवल उन जगहों पर जाना होगा। और कब्रिस्तान उन लोगों से भरे हुए हैं जो युवा मानव हृदयों की अपने उचित कर्तव्यों के प्रदर्शन के माध्यम से सच्चा पोषण पाने में असमर्थता के कारण उत्पन्न संकट के परिणामस्वरूप नष्ट हो गए। अस्पतालों और जेलों में जाएँ और पछतावे की आहें सुनें और दया के साथ उन आँसुओं को देखें जो उस युवा के लिए बहाए जाते हैं जो ज्यादतियों, दुराचार और अवैध सुख में बर्बाद हो गया है।

कुरान और ईश्वर द्वारा प्रकट किए गए सभी अन्य धर्मग्रंथों और आदेशों में हमें अपनी कई आयतों में बताया गया है कि अगर इसे अच्छे आचरण की सीमाओं के भीतर बिताया जाए, तो युवावस्था परलोक में सुरक्षित रहेगी, जहाँ ईश्वर की कृपा से यह अमर हो जाएगी। चूँकि वैध का क्षेत्र मानव आनंद के लिए पर्याप्त है, और चूँकि अवैध आनंद का एक घंटा कभी-कभी जेल में वर्षों की सज़ा का कारण बनता है, इसलिए निश्चित रूप से युवावस्था के मधुर उपहार को सही तरीके से और उस उपहार के लिए धन्यवाद के रूप में नेक आचरण की सीमाओं के भीतर बिताना महत्वपूर्ण है।

छठा मामला

निम्नलिखित ईश्वर में विश्वास के स्तम्भ के हजारों सार्वभौमिक प्रमाणों में से एक का संक्षिप्त संकेत है, जिनमें से कई, स्पष्टीकरण सहित, रिसाले-ए-नूर में पाए जा सकते हैं।

कस्तमोनू में कुछ हाई-स्कूल के छात्रों ने मुझसे पूछा: "हमें हमारे निर्माता के बारे में बताइए, क्योंकि हमारे शिक्षक उनके बारे में नहीं बोलते।" मैंने उनसे कहा: "आप जो भी विज्ञान पढ़ते हैं, वे सभी अपनी भाषा में लगातार ईश्वर, निर्माता के बारे में बोलते हैं, और उन्हें बताते हैं। अपने शिक्षकों की बात मत सुनो; उनकी बात सुनो।

“उदाहरण के लिए, एक अच्छी तरह से सुसज्जित, अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई फार्मेसी में कई दवाएं और गोलियां होती हैं, जो अलग-अलग, सटीक रूप से मापे गए घटकों से बनी होती हैं।
यह निस्संदेह एक अत्यंत कुशल और विद्वान फार्मासिस्ट के अस्तित्व की ओर संकेत करता है। उसी तरह, पृथ्वी की फार्मेसी में अनगिनत जीवनदायी उपचार और दवाइयाँ भरी पड़ी हैं। चिकित्सा विज्ञान के माध्यम से, अंधे भी उस सर्वशक्तिमान को जान सकते हैं जो पृथ्वी की सबसे बड़ी फार्मेसी का फार्मासिस्ट है।

"आइए एक और उदाहरण लें। एक अद्भुत कारखाना जो एक साधारण कपड़े से बुने हुए हज़ारों अलग-अलग कपड़े बनाता है, बिना किसी संदेह के एक निर्माता और एक कुशल यांत्रिक इंजीनियर के अस्तित्व को इंगित करता है।

इसी तरह, भगवान की फैक्ट्री, जिसे हम धरती कहते हैं, में अनगिनत हिस्से हैं और हर हिस्से में लाखों मशीनें हैं। इसमें कोई शक नहीं कि धरती नामक फैक्ट्री इंजीनियरिंग के विज्ञान के ज़रिए अपने निर्माता और मालिक के अस्तित्व को बताती है।

“एक और उदाहरण एक दुकान है जिसमें सैकड़ों अलग-अलग जगहों से लाए गए कई तरह के खाद्य पदार्थों के लिए एक सुव्यवस्थित भंडारण स्थान है। दुकान का अस्तित्व ही बदले में एक दुकान के मालिक के अस्तित्व को इंगित करता है जो उन खाद्य पदार्थों को तैयार करता है, संग्रहीत करता है और वितरित करता है। अब जिस धरती पर हम रहते हैं उसे दया के एक विशाल भंडार या एक दिव्य पोत के रूप में देखा जा सकता है जो हर साल एक विशाल परिक्रमा करता है, जिसमें असंख्य प्रजातियाँ रहती हैं जिन्हें अलग-अलग खाद्य पदार्थों की आवश्यकता होती है: जैसे-जैसे यह अपनी यात्रा पर ऋतुओं से गुज़रता है, यह वसंत ऋतु को भरता है, जो एक विशाल गाड़ी की तरह है, जिसमें बहुत सारे खाद्य पदार्थ होते हैं और उन्हें उन सभी जीवित प्राणियों तक पहुँचाता है जिनका भोजन सर्दियों के दौरान समाप्त हो गया था। यह भंडारण डिपो, जो पृथ्वी है, निश्चित रूप से, अर्थशास्त्र के विज्ञान के माध्यम से जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं, इस डिपो के मालिक, प्रबंधक और आयोजक के अस्तित्व को इंगित करता है जो पृथ्वी है और उसे प्यार करता है।

"या, उदाहरण के लिए, एक सेना की कल्पना करें जिसमें कई जनजातियाँ और राष्ट्र शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक को अद्वितीय प्रावधानों, हथियारों, वर्दी, अभ्यास और सेना से मुक्ति की आवश्यकता है। यदि इसका चमत्कार करने वाला कमांडर उनकी सभी ज़रूरतों को अपने आप पूरा करता है, बिना किसी को भूले या भ्रमित किए, तो निश्चित रूप से सेना और उसका शिविर इस कमांडर के अस्तित्व का संकेत देगा और उसे बनाएगा।

सराहना की। इसी तरह, हर वसंत में एक सेनापति अनगिनत जानवरों और पौधों की प्रजातियों की एक नई भर्ती की गई सेना को वर्दी, राशन, हथियार, प्रशिक्षण और सेना से मुक्त करने के लिए एकदम सही और नियमित तरीके से प्रदान करता है। वह कुछ भी नहीं भूलता और भ्रमित नहीं होता। वसंत की यह दिव्य सेना, सैन्य विज्ञान के माध्यम से, पृथ्वी के सबसे चौकस और समझदार शासक, उसके भगवान, प्रशासक और परम-पवित्र कमांडर के अस्तित्व को इंगित करती है, और उसे प्यार, प्रशंसा, महिमा और प्रशंसा दिलाती है।

"या फिर एक शानदार शहर की कल्पना करें जो लाखों मोबाइल इलेक्ट्रिक लैंप से जगमगाता हो और जिसमें अक्षय ईंधन और बिजली का स्रोत हो। ऐसा सेट-अप स्पष्ट रूप से एक अद्भुत कारीगर और असाधारण रूप से कुशल इलेक्ट्रीशियन की प्रतिभा को इंगित करेगा जो लैंप बनाता है, बिजली का स्रोत स्थापित करता है और ईंधन प्रदान करता है। और यह दूसरों को इस इलेक्ट्रीशियन की प्रशंसा करने और बधाई देने के लिए प्रेरित करेगा।

“अब बहुत से दीपक - ग्रह और तारे - जो महल की छत को सजाते हैं, जो कि दुनिया है, शहर में जो कि ब्रह्मांड है, पृथ्वी से हज़ार गुना बड़े हैं और एक अद्भुत गति से चलते हैं। फिर भी अपनी तेज़ी के बावजूद, वे एक दूसरे से टकराए बिना सबसे सटीक रूप से चलते हैं; वे बुझते नहीं हैं, न ही उनका ईंधन खत्म होता है। खगोल विज्ञान का विज्ञान, जिसका आप अध्ययन करते हैं, हमें बताता है कि हमारा सूर्य, जो कि दयालु भगवान के अतिथिगृह में एक दीपक या चूल्हे की तरह है, पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा है और कई अरब साल पुराना है। हर दिन जलते रहने के लिए, इसे उतना ही तेल चाहिए जितना कि पृथ्वी पर समुद्र हैं, उतना ही कोयला चाहिए जितना कि पहाड़ हैं, या उतने ही लट्ठे और लकड़ी के टुकड़े चाहिए जितने कि दस पृथ्वी पर मौजूद हैं।

"तो यह स्पष्ट है कि ऐसे दीपक अपनी प्रकाश की उंगलियों से अनंत शक्ति और संप्रभुता के अस्तित्व का संकेत देते हैं, जो बदले में, तेल, लकड़ी या कोयले के बिना सूर्य और अन्य समान सितारों को रोशन करता है, जिससे वे एक दूसरे से टकराए बिना या बुझने के बिना बहुत तेज गति से यात्रा कर सकते हैं। इस प्रकार, बिजली का विज्ञान और उन चमकदार सितारों की गवाही निस्संदेह ब्रह्मांड की सबसे बड़ी प्रकाश प्रदर्शनी के संप्रभु, प्रकाशक, निर्देशक और निर्माता के अस्तित्व का संकेत देती है, और उसे प्यार, महिमा और पूजा करती है।

"अब एक अद्भुत पुस्तक की कल्पना करें। उस पुस्तक की प्रत्येक पंक्ति के भीतर, एक और छोटी पुस्तक लिखी गई है, और प्रत्येक शब्द के भीतर, एक पूरा अध्याय - एक सूरा - एक बढ़िया कलम से अंकित किया गया है। यह पुस्तक सबसे सार्थक और अभिव्यंजक है, और इसके सभी विषय एक दूसरे की पुष्टि करते हैं।

ऐसी पुस्तक दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से दिखाती है कि यह किसी कृति का उत्पाद होना चाहिए।

विशेष कलाकार, जो असाधारण सिद्धियों, कलाओं और कौशलों से संपन्न होता है।
यह हमें लेखक की सराहना करने तथा उस पर ईश्वर के आशीर्वाद की कामना करने के लिए प्रेरित करता है।

“जो बात उदाहरण में पुस्तक के बारे में सच है, वही बात ब्रह्मांड की विशाल पुस्तक के बारे में भी सच है। उदाहरण के लिए, हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक कलम धरती के पन्नों पर सैकड़ों हज़ारों पौधों और जानवरों की प्रजातियों को उकेर रही है, जिनमें से हर एक अपने आप में एक पूरी किताब की तरह है। और वे सभी एक साथ, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि या भ्रम के उकेरे गए हैं; वे इतनी पूर्णता और सटीकता के साथ उकेरे गए हैं कि एक कविता एक पेड़ की तरह एक शब्द में संकुचित हो जाती है, और एक पूरी किताब एक बिंदु के भीतर पाई जाती है जो एक बीज है। हालाँकि ऊपर बताए गए उदाहरण में पुस्तक की तुलना में यह असीम रूप से सार्थक संग्रह है जो ब्रह्मांड है, यह मूर्त 'वृहद-कुरान', जिसके हर शब्द में ज्ञान के कई उदाहरण हैं, उस हद तक - आप जिन प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन करते हैं, उनके माध्यम से यह ब्रह्मांड की इस पुस्तक के लेखक और लेखक को उनकी अनंत पूर्णता के साथ ज्ञात कराता है। घोषणा करें-

"परमेश्वर सर्व-महान है" कहकर, यह उसे ज्ञात कराता है; "परमेश्वर सर्व-महिमावान है" कहकर उसकी पवित्रता की घोषणा करता है, यह उसका वर्णन करता है; और "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए हैं" जैसे अभिव्यक्तियों के साथ उसकी स्तुति करता है, यह उसे प्रिय बनाता है।

“वास्तव में, अपने व्यापक माप, अपने विशिष्ट दर्पण, अपनी दूरगामी दृष्टि, तथा अपने खोजपूर्ण और शिक्षाप्रद दृष्टिकोणों के माध्यम से, सैकड़ों विज्ञानों में से प्रत्येक विज्ञान ब्रह्माण्ड के सर्वशक्तिमान रचयिता को उसके नामों, गुणों और सिद्धियों के साथ परिचित कराता है।

"ऊपर वर्णित साक्ष्यों को स्पष्ट करने के लिए, जो ईश्वरीय एकता का सबसे अधिक विश्वसनीय और शानदार प्रमाण है, चमत्कारी कुरान अक्सर हमारे निर्माता को 'आकाश और पृथ्वी का स्वामी' और 'आकाश और पृथ्वी का निर्माता' जैसे शब्दों में वर्णित करता है।"

मैंने विद्यार्थियों को यह सब बताया और उन्होंने इसे स्वीकार किया तथा इसकी पुष्टि करते हुए कहा: “परमेश्वर को अनंत धन्यवाद, क्योंकि हमें एक सच्चा और पवित्र पाठ मिला है।
भगवान् तुमसे प्रसन्न हों।”

मैंने निम्नलिखित बातें जोड़ीं:

"मनुष्य एक जीवित मशीन है जो अनेक दुखों से ग्रस्त है और अनेक सुखों को जानने में सक्षम है। यद्यपि हम पूरी तरह से शक्तिहीन हैं, फिर भी हमारे पास अनंत भौतिक और आध्यात्मिक शत्रु हैं। यद्यपि हम पूरी तरह से दरिद्र हैं, फिर भी हमारी आंतरिक और बाह्य आवश्यकताएं अनंत हैं, और हम क्रमिक क्षय और अलगाव के प्रहारों से निरंतर पीड़ित हैं। लेकिन यदि, विश्वास और पूजा के माध्यम से,

हम सर्वशक्तिमान प्रभु के साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं, हमें अपने सभी शत्रुओं के विरुद्ध सहायता का स्रोत मिलेगा और हमारी सभी आवश्यकताओं के लिए सहायता का स्रोत मिलेगा। हर कोई उन उच्च पदों पर बैठे लोगों के सम्मान और पद पर गर्व करता है जिनके साथ उनका संबंध है। इस तथ्य को देखते हुए, यदि कोई असीम शक्तिशाली और दयालु प्रभु के साथ विश्वास के माध्यम से संबंध स्थापित करता है; यदि कोई पूजा के माध्यम से उनकी सेवा में प्रवेश करता है और ऐसा करके, मृत्यु के नियत समय पर फांसी की सजा को सबसे स्वागत योग्य बरी और मुक्ति में बदल देता है, तो कल्पना कीजिए कि उन्हें कितना गर्व, खुशी और संतोष महसूस होगा।”

विपत्तिग्रस्त कैदियों से मैं वही बात दोहराता हूँ जो मैंने स्कूली बच्चों से कही थी: जो लोग उसे पहचानते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, वे समृद्ध हैं, भले ही वे जेल में हों, जबकि जो लोग उसे भूल जाते हैं, वे अभागे कैदियों के समान हैं, भले ही वे महलों में रहते हों।

एक बार एक अन्यायी लेकिन भाग्यशाली व्यक्ति - अपने विश्वास और उसके बाद होने वाली शहादत के कारण भाग्यशाली - ने उन दुष्ट अपराधियों से कहा जो उसे मृत्युदंड दे रहे थे: "मुझे मृत्युदंड नहीं दिया जा रहा है; बल्कि, मुझे अपने कर्तव्यों से मुक्त कर दिया गया है और मैं अनंत सुख की ओर जा रहा हूँ। हालाँकि, अब मैं देख सकता हूँ कि तुम अनंत दंड के लिए अभिशप्त हो; यह तुम्हारे प्रति मेरे प्रतिशोध के लिए पर्याप्त है।" और यह कहते हुए कि "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," वह एक खुशहाल व्यक्ति के रूप में मर गया।

तू पवित्र है, हमारे पास कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

सातवां मामला

यह डेनिज़ली जेल में एक शुक्रवार का फल है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

क़ियामत की बात तो बस पलक झपकने के बराबर है, या उससे भी कम। निस्संदेह अल्लाह हर चीज़ पर पूरी सामर्थ्य रखता है (16:77)।

तुम्हारी रचना और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है। (31:28)

अब देखो अल्लाह की दयालुता के निशान कि कैसे वह मुर्दा ज़मीन को उसके मरने के बाद जिलाता है। निश्चय ही वही है जो मुर्दों को जिलाएगा। वह हर चीज़ पर पूर्ण सामर्थ्य रखता है (30:50)।

डेनिज़ली जेल के वे कैदी जो मुझसे संपर्क करने में सक्षम थे, उन्होंने छठे मामले में वह पाठ भी पढ़ा जो मैंने कस्तमोनू के हाई स्कूल के छात्रों को दिया था—जिन्होंने मुझसे पूछा था: “हमें हमारे सृष्टिकर्ता के बारे में बताओ।”

दृढ़ विश्वास प्राप्त करने के बाद, उन्हें परलोक के लिए तरस आया और उन्होंने मुझसे कहा: "हमें परलोक के बारे में भी सिखाओ, ताकि हमारी दुष्ट आत्माएँ और युग के शैतान हमें सीधे मार्ग से भटका न दें और फिर से जेल में न डाल दें।" और इसलिए डेनिज़ली जेल में रिसाले-ए-नूर के छात्रों और छठे मामले के पाठकों के अनुरोध ने विश्वास के स्तंभ यानी परलोक को संक्षेप में समझाना आवश्यक बना दिया है। यहाँ मैं रिसाले-ए-नूर में परलोक पर प्रासंगिक चर्चाओं का संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करूँगा :

छठे मामले में हमने आकाश और पृथ्वी से हमारे सृजन के बारे में पूछा था।
और उन्होंने उसे हमारे सामने विज्ञान की भाषा के माध्यम से सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से प्रकट किया। अपने प्रभु को जानने के बाद, हम सबसे पहले उससे आख़िरत के बारे में पूछेंगे; फिर हम अपने पैग़म्बर से पूछेंगे, फिर कुरान से, फिर दूसरे पैग़म्बरों और शास्त्रों से, फिर फ़रिश्तों से और अंत में ब्रह्मांड से।

हमारा पहला कदम है खुद ईश्वर से परलोक के बारे में पूछना। वह अपने भेजे हुए सभी पैगम्बरों के माध्यम से, पुस्तकों या धर्मग्रंथों के रूप में प्रकट किए गए आदेशों के माध्यम से, तथा अपने सभी नामों और गुणों के माध्यम से उत्तर देता है: "परलोक मौजूद है, और मैं तुम्हें वहाँ भेज रहा हूँ।" दसवें वचन ने कई दिव्य नामों पर आधारित बारह निर्णायक तर्कों के साथ परलोक की व्याख्या की है। इन व्याख्याओं से संतुष्ट होकर, हम यहाँ केवल उनके बारे में संक्षिप्त संकेत देंगे।

ऐसी कोई हुकूमत नहीं है जो उसे मानने वालों को इनाम न दे और उसके खिलाफ़ विद्रोह करने वालों को सज़ा न दे। इसलिए एक शाश्वत हुकूमत, जो पूर्ण प्रभुता की डिग्री पर है, निश्चित रूप से उन लोगों को पुरस्कृत करेगी जो विश्वास के साथ उसका पालन करते हैं और उसके आदेशों का पालन करते हैं; इसी तरह यह उन लोगों को दंडित करेगी जो अविश्वास और विद्रोह के माध्यम से उसका इन्कार करते हैं। पुरस्कार और दंड क्रमशः ईश्वर की दया और कृपा, और उसकी गरिमा और महिमा के अनुरूप दिए जाएँगे। इस प्रकार सभी संसारों के स्वामी, संप्रभु, सर्वोच्च शासक और सभी को दंडित करने वाले नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं।

इसके अलावा, हम पृथ्वी पर सार्वभौमिक दया और सर्वव्यापी करुणा और उदारता को उतनी ही स्पष्टता से देखते हैं, जितनी स्पष्टता से हम दिन के उजाले को देखते हैं। उदाहरण के लिए, हर वसंत में दया सभी फल देने वाले पेड़ों और पौधों को स्वर्ग की हूरियों की तरह सजाती है और उनके हाथों को हर तरह के फलों से भर देती है। और ऐसा लगता है जैसे ये पेड़ अपने फल हमारी ओर बढ़ाते हुए कह रहे हैं: “कृपया अपनी मदद करें

और खाओ!" दया, करुणा और उदारता हमें ज़हरीली मधुमक्खी से खाने के लिए उपचारात्मक मीठा शहद भी प्रदान करती है और बिना हाथों वाले एक छोटे से कीड़े के ज़रिए हमें सबसे मुलायम रेशम पहनाती है। वे हमारे लिए मुट्ठी भर छोटे बीजों में कई किलो भोजन भी जमा करते हैं, जिससे वे छोटे भंडार आरक्षित आपूर्ति में बदल जाते हैं। निश्चित रूप से ऐसी दया और करुणा उन प्यारे, आभारी, पूजा करने वाले विश्वासियों को हमेशा के लिए नष्ट नहीं कर देगी, जिनका वे इतने कोमलता से पालन-पोषण करते हैं? इसके बजाय, वे उन्हें दया और करुणा के और भी अधिक उज्ज्वल उपहार प्रदान करने के लिए उनके सांसारिक कर्तव्यों से मुक्त करते हैं। इस प्रकार सर्व-दयालु और सर्व-दयावान नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं, यह पुष्टि करते हुए कि स्वर्ग वास्तव में आएगा।

साथ ही, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि पृथ्वी पर सभी प्राणियों में बुद्धि का हाथ इतनी कुशलता से काम कर रहा है और घटनाएँ न्याय के मानकों के अनुसार इतनी सटीकता से घटित होती हैं कि मानव मन उनसे बेहतर किसी बुद्धि या न्याय की कल्पना ही नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, वह शाश्वत बुद्धि मानव स्मृति में, सैकड़ों शक्तियों में से एक मानवीय क्षमता जो सबसे छोटे बीज से भी बड़ी नहीं है, मनुष्य की संपूर्ण जीवन-कथा, उसे भरने वाली असंख्य घटनाओं के साथ अंकित करती है, जिससे वह वास्तव में एक छोटी सी लाइब्रेरी बन जाती है। मनुष्यों को उनके कर्मों की निरंतर याद दिलाने के लिए—कर्म जो दर्ज हैं और खुले तौर पर प्रकाशित किए जाएँगे ताकि उनका पुनरुत्थान के स्थान पर न्याय किया जा सके—वह बुद्धि हमारे कर्मों के रिकॉर्ड के नोट के रूप में, मन में इस छोटी सी लाइब्रेरी को डालती है। जहाँ तक शाश्वत न्याय की बात है, यह सभी प्राणियों को अत्यंत संतुलित और सामंजस्यपूर्ण तरीके से अंग और अंग प्रदान करता है, सूक्ष्म जीव से लेकर गैंडे तक, मक्खी से लेकर चील तक, सबसे छोटे फूल वाले पौधे से लेकर अनगिनत लाखों पौधे और फूल जो वसंत ऋतु को बनाते हैं, और प्रत्येक को कला का एक अद्भुत कार्य बनाता है। यह एक सटीक संतुलन और व्यवस्था के अनुसार, उचित अनुपात और उत्तम सुंदरता के साथ और बिल्कुल भी बर्बादी के बिना करता है। यह सभी जीवित प्राणियों को उनके जीवन के अधिकार भी सही मात्रा में देता है और अच्छी चीजों को अच्छे परिणाम और बुरी चीजों को बुरे परिणाम देता है। और आदम के समय से, उस पर शांति हो, इस न्याय ने विद्रोही और अत्याचारी लोगों को दिए गए प्रहारों के माध्यम से खुद को जोरदार तरीके से महसूस किया है। निश्चित रूप से, जैसे सूर्य दिन के उजाले से अटूट रूप से जुड़ा हुआ है, वैसे ही शाश्वत ज्ञान और शाश्वत न्याय परलोक से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं और इसके अस्तित्व को आवश्यक बनाते हैं। यह कल्पना से परे है कि वे सबसे अत्याचारी और सबसे अधिक उत्पीड़ित व्यक्ति को बिना सच्चे न्याय के समान मृत्यु की अनुमति देंगे; वे कभी भी इस तरह के अन्याय, अन्याय या बुद्धि की कमी को बर्दाश्त नहीं करेंगे। इस प्रकार सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान नाम करते हैं।

सर्वन्यायी, सर्वन्यायी और सर्वन्यायी हमारे प्रश्न का निर्णायक उत्तर देते हैं।

इसके अलावा, जब भी जीव अपनी स्वाभाविक ज़रूरतों को, जो उनकी क्षमता से परे हैं, अपनी जन्मजात क्षमताओं और अनिवार्य ज़रूरतों की भाषा के ज़रिए तलाशते हैं, जो अपने आप में एक तरह की प्रार्थना है, तो ये ज़रूरतें अदृश्य से एक अत्यंत दयालु हाथ द्वारा प्रदान की जाती हैं। इसके अलावा, मनुष्यों द्वारा की गई स्वैच्छिक मौखिक प्रार्थनाओं में से लगभग सत्तर प्रतिशत, और विशेष रूप से पैगंबरों और अन्य सबसे प्रतिष्ठित विश्वासियों द्वारा, एक ऐसे तरीके से स्वीकार की जाती हैं जो घटनाओं के सामान्य क्रम से बाहर होती हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है कि अदृश्य के पर्दे के पीछे एक ऐसा ईश्वर है जो सब कुछ सुनता और जवाब देता है, जो हर पीड़ित प्राणी की आहें और हर ज़रूरतमंद आत्मा की प्रार्थनाएँ सुनता है। वह सबसे छोटे जीव की सबसे तुच्छ ज़रूरत को देखता है और उसकी सबसे गुप्त आह सुनता है। उन पर दया करके, वह उनका उचित उत्तर देता है और उन्हें संतुष्ट करता है।

मानवजाति में से एक, ईश्वर की सबसे महत्वपूर्ण रचना है, जो अपनी प्रार्थनाओं में अनन्त जीवन के बारे में सभी मानवता की सार्वभौमिक प्रार्थना को शामिल करता है, जो सभी दिव्य नामों और गुणों और वास्तव में, पूरे ब्रह्मांड से जुड़ा हुआ है। इस प्राणी को अन्य सभी पैगम्बरों और सूर्य, सितारों और मानव जाति के नेताओं का समर्थन प्राप्त है, जो "आमीन! आमीन!" कहते हैं ताकि उसकी प्रार्थना स्वीकार हो सके।

इसके अलावा, उनके समुदाय के प्रत्येक श्रद्धालु व्यक्ति दिन में कई बार ईश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं, और अपनी प्रार्थना में "आमीन!" जोड़ते हैं। और अन्य सभी प्राणी भी उनकी प्रार्थना में भाग लेते हैं, और कहते हैं, "हे प्रभु, उसे वह दे जो वह माँगता है; हम भी वही माँगते हैं जो वह माँगता है!" जबकि ऐसे अनगिनत कारण हैं कि क्यों पुनरुत्थान अनिवार्य रूप से होना चाहिए, यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि पैगंबर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद, अनन्त जीवन और परलोक में खुशी हो - की एक ही प्रार्थना स्वर्ग के अस्तित्व और आने वाली दुनिया के निर्माण के लिए पर्याप्त है, जो ईश्वरीय शक्ति के लिए वसंत के निर्माण जितना आसान है।

इस प्रकार, क्या उत्तर देने वाले, सुनने वाले और दयावान नाम हमारे प्रश्न का उत्तर प्रदान करते हैं?

साथ ही, यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है जो सूर्य के अस्तित्व को दर्शाता है कि दृश्यमान दुनिया के पर्दे के पीछे एक अदृश्य व्यक्ति है जो पृथ्वी के नियंत्रण और प्रबंधन में, मृत्यु और पुनरुत्थान में खुद को प्रकट करता है जो ऋतुओं के आने और जाने के साथ होता है। वह एक बगीचे या यहाँ तक कि एक पेड़ की सहजता और व्यवस्था के साथ शक्तिशाली पृथ्वी का प्रशासन करता है; वह

वह शानदार वसंत को ऐसे प्रदर्शित करता है मानो वह एक ही फूल हो, और उसी सुविधा, सजावट और अनुपात की भावना के साथ; वह पौधों और जानवरों की अनगिनत प्रजातियों को ऐसे प्रदर्शित करता है मानो वे लाखों पुस्तकें हों जो पुनरुत्थान के लाखों उदाहरणों को प्रदर्शित करती हों।

शक्ति की कलम जो इन सभी चीजों को एक दूसरे के भीतर अंकित करती है, सभी आपस में मिली हुई हैं, फिर भी थोड़ी सी भी अव्यवस्था, उलझन, दोष, दोष या त्रुटि के बिना, और पूर्ण व्यवस्था और उद्देश्यपूर्णता के साथ - यह विशाल, व्यापक शक्ति असीम दया और अनंत ज्ञान के साथ काम करती है। जिसके पास वह शक्ति है, उसने मनुष्यों के लिए विशाल ब्रह्मांड को वश में किया है, सजाया है और सुसज्जित किया है जैसे कि यह एक घर था, और मनुष्यों को पृथ्वी का शासक नियुक्त किया है, उन्हें "सर्वोच्च भरोसा"50 प्रदान किया है - एक ऐसा भरोसा जिसे पहाड़, आकाश और पृथ्वी नहीं ले सकते थे, और जिससे वे डर के मारे सिकुड़ गए थे। उसने मनुष्यों को एक निश्चित सीमा तक अन्य जीवित प्राणियों पर सेनापति का पद दिया है, और उन्हें दिव्य संबोधन और वार्तालाप का प्राप्तकर्ता बनाकर सम्मानित किया है, इस प्रकार उन्हें सर्वोच्च स्थान प्रदान किया है। इसके अलावा, सभी प्रकट आदेशों में उन्होंने मानवता को परलोक में शाश्वत सुख और स्थायित्व का वादा किया है। इन सब बातों से यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवजाति के लिए, जिसे उसने इतना श्रेष्ठ और सम्मानित किया है, वह निश्चित रूप से खुशी के उस क्षेत्र को खोल देगा, जो उसकी शक्ति के लिए वसंत के निर्माण जितना ही आसान है, इस प्रकार पुनरुत्थान और अंतिम निर्णय लाएगा। इसलिए, सभी को पुनर्जीवित करने वाले, मृत्यु को दूर करने वाले, सभी को जीवित रखने वाले, स्वयं को धारण करने वाले, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ नाम हमारे प्रश्न का उत्तर देते हैं।

अगर कोई उस शक्ति पर विचार करे जो हर वसंत में सर्दियों में मर चुके सभी पेड़ों और पौधों की जड़ों को फिर से जीवित कर देती है और पुनरुत्थान के उदाहरण के रूप में लाखों पौधों और जानवरों को पैदा करती है, और अगर कोई पैगंबर मूसा (उन पर शांति हो) और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के प्रत्येक समुदाय की हजार साल की अवधि की कल्पना करता है, तो यह देखा जा सकता है कि दो हजार वसंत आने वाले पुनरुत्थान के असंख्य उदाहरण और सबूत पेश करते हैं। कोई पूरी तरह से अंधा और मूर्ख होगा जो यह कल्पना करे कि ऐसी शक्ति के लिए शारीरिक पुनरुत्थान कठिन है।

---

50 सर्वोच्च विश्वास मानव आत्मत्व या मानव होना या मानव स्वभाव है जो ईश्वर के नामों की अभिव्यक्तियों का केंद्र है जो पूरे ब्रह्मांड में प्रकट होते हैं। (ट्र.)

इसके अलावा, एक लाख चौबीस हज़ार पैगम्बरों ने, जो कि सभी मनुष्यों में सबसे प्रसिद्ध हैं, परलोक में शाश्वत सुख और स्थायित्व के सत्य को सर्वसम्मति से प्रमाणित किया है; न केवल उन्होंने इस संबंध में सर्वशक्तिमान ईश्वर के अनगिनत वादों पर भरोसा किया, बल्कि उन्होंने स्वयं अपने चमत्कारों के माध्यम से इसे साबित भी किया। इसके अलावा, असंख्य संतों ने अपने प्रकाश और आध्यात्मिक अनावरणों के माध्यम से उसी सत्य की गवाही दी है। चूँकि ऐसा है, तो निश्चित रूप से यह सत्य सूर्य की तरह स्पष्ट है, और जो लोग इस पर संदेह करते हैं, वे पागल ही होंगे।

एक या दो विद्वानों या वैज्ञानिकों की अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र के बारे में राय और निर्णय, हज़ारों लोगों के विरोधी विचारों का खंडन करने के लिए पर्याप्त हैं, जिनके पास ऐसी विशेषज्ञता नहीं है, भले ही वे अपने-अपने क्षेत्र में माहिर हों। इसी तरह, दो लोग जो किसी चीज़ के अस्तित्व की गवाही देते हैं, वे उस चीज़ का उदाहरण देकर हज़ारों लोगों को परास्त कर सकते हैं जो उसके अस्तित्व को नकारते हैं। उदाहरण के लिए, अगर दो भरोसेमंद लोग दावा करते हैं कि उन्होंने अर्धचंद्र देखा है, जो कि, मान लीजिए, रमज़ान के महीने की शुरुआत है, उस दिन जब नए चाँद का दिखना असंभव नहीं है, तो उनका दावा सत्य माना जाता है, भले ही बाकी सभी लोग इससे इनकार करें। इसके अलावा, अगर दो लोग दावा करते हैं कि धरती पर एक ऐसा बगीचा है जहाँ दूध के डिब्बे जैसे दिखने वाले नारियल उगाए जाते हैं, तो उनका दावा सत्यापित हो जाएगा यदि वे एक भी नारियल लाएँ या वैकल्पिक रूप से, वह स्थान बताएँ जहाँ नारियल पाए जा सकते हैं। हालाँकि, जो लोग इस दावे को नकारते हैं, वे अपनी बात को केवल पृथ्वी के चारों कोनों की खोज करके ही साबित कर सकते हैं ताकि यह साबित हो सके कि ऐसा कोई नारियल कहीं भी मौजूद नहीं है। इस प्रकार जो व्यक्ति यह दावा करता है कि स्वर्ग मौजूद है, वह केवल उसका एक निशान, एक छाया या एक अभिव्यक्ति प्रदर्शित करके अपने दावे को साबित कर सकता है। हालाँकि, जो लोग इसे नकारते हैं, वे केवल पूरे ब्रह्मांड की छानबीन करके और अनंत काल से लेकर अनंत काल तक, सभी समय में यात्रा करके ही अपनी बात को साबित कर सकते हैं, ताकि इसके अस्तित्व को प्रदर्शित किया जा सके। यही कारण है कि विद्वानों ने इस नियम पर सहमति व्यक्त की है कि "बशर्ते कि वे स्वाभाविक रूप से अकल्पनीय न हों, इनकार या निषेध जो किसी विशिष्ट मामले से संबंधित नहीं हैं, लेकिन जो पूरे ब्रह्मांड से संबंधित हैं, जैसे कि विश्वास के सत्य, साबित नहीं किए जा सकते हैं," और इसे एक मौलिक सिद्धांत के रूप में स्वीकार किया।

इस निर्विवाद सत्य के कारण, हज़ारों दार्शनिकों की विरोधी राय को एक भी सत्यनिष्ठ और भरोसेमंद व्यक्ति पर ज़रा भी संदेह या संदेह नहीं करना चाहिए जो विश्वास के मामलों के बारे में रिपोर्ट लाता है। तब आप समझ सकते हैं कि इसमें पड़ना कितना पागलपन है

विश्वास या आस्था के स्तंभों के बारे में संदेह - वे स्तंभ जिन पर अनगिनत हजारों पैगंबर, संत और विद्वान सहमत हुए हैं - मुट्ठी भर दार्शनिकों के इनकार के कारण, जो पूरी तरह से अपनी भौतिक इंद्रियों पर भरोसा करते हैं और जो सभी आध्यात्मिक मामलों से दूर हो गए हैं।

साथ ही, यह दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है कि हमारे अंदर और हमारे चारों ओर एक व्यापक दया, एक व्यापक बुद्धि और निरंतर अनुग्रह और कृपालुता काम कर रही है। हम प्रभुता की एक भयानक संप्रभुता, एक सटीक और उन्नत न्याय और महिमा की गरिमापूर्ण गतिविधि के निशान और अभिव्यक्तियाँ भी देखते हैं। वास्तव में, बुद्धि, जो एक पेड़ पर उतने ही ज्ञान के उदाहरण लगाती है जितने उस पेड़ पर फल और फूल होते हैं; दया, जो प्रत्येक मनुष्य को उसके अंगों, इंद्रियों और क्षमताओं की संख्या के अनुसार अनुग्रह और वरदान प्रदान करती है; और गरिमापूर्ण, दयालु न्याय, जो दलितों के अधिकारों की रक्षा करता है और नूह, हूद, सालेह और फा-राओन के विद्रोही लोगों जैसे गलत काम करने वालों को दंडित करता है, और आयत:

> और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और धरती उसके आदेश से स्थिर हैं। अन्ततः जब वह तुम्हें धरती से बुलाएगा तो तुम तुरन्त निकल आओगे। (30:25)

सभी ने अत्यंत संक्षिप्तता के साथ निम्नलिखित बातें कही हैं:

अपने बैरकों में आज्ञाकारी और अनुशासित सैनिक अपने कमांडर के बुलाते ही तुरंत उठकर अपने कर्तव्यों का पालन करने के लिए दौड़ पड़ते हैं।

बिगुल बज चुका है। इसी तरह, जब स्वर्ग और पृथ्वी के मृतक, जो शाश्वत प्रभु के आज्ञाकारी सैनिकों के लिए दो सुव्यवस्थित बैरकों की तरह हैं, महादूत इसराफिल की तुरही द्वारा बुलाए जाते हैं, तो वे तुरंत अपने शरीर की “वर्दी” पहन लेंगे और उठ खड़े होंगे। यह इस तथ्य से समान और प्रमाणित है कि सर्दियों में पृथ्वी के बैरकों में मृत पड़े लोग हर वसंत में थंडर के दूत की तुरही-धमाके के साथ इसी तरह से कार्य करते हैं। इसलिए यह असंभव है कि आधिपत्य की संप्रभुता, जिसे इस शक्तिशाली घटना से समझा जा सकता है और जिसे दसवें वचन में दृढ़तापूर्वक समझाया गया है, दया की अनंत कृपा और सुंदरता को अनंत रूप से बदसूरत क्रूरता में बदलने की अनुमति देगी, जो कि परलोक के निवास, पुनरुत्थान के क्षेत्र या सर्वोच्च सभा को अस्तित्व में नहीं लाएगी, जो कि सभी निश्चित रूप से उस दया, बुद्धि द्वारा आवश्यक और अनिवार्य हैं।

पक्षपात और न्याय। यह बिलकुल असंभव है कि बुद्धि की असीम पूर्णता को असीम रूप से बेकार और बरबादी में बदल दिया जाए, उस मधुर पक्षपात को अत्यंत कटु विश्वासघात में बदल दिया जाए, उस सटीक रूप से संतुलित और न्यायसंगत न्याय को सबसे गंभीर अत्याचार में बदल दिया जाए, उस असीम रूप से राजसी और शक्तिशाली शाश्वत संप्रभुता का पतन हो जाए और वह अपनी सारी भव्यता खो दे, और प्रभुत्व की पूर्णता को नपुंसकता या दोष से कलंकित कर दिया जाए। ऐसी बात पूरी तरह से अनुचित और अकल्पनीय होगी; यह झूठी, निषिद्ध और पूरी तरह से संभावना की सीमाओं से परे है।

चेतना वाला कोई भी व्यक्ति निश्चित रूप से समझ सकता है कि यह कितना क्रूर होगा यदि इतनी कोमलता से पोषित और बुद्धि तथा हृदय जैसी क्षमताओं से संपन्न मानवता, जो शाश्वत सुख तथा अनंत जीवन की लालसा रखती है, पूरी तरह से नष्ट हो जाए तथा शून्य में चली जाए। यह कितना विवेकपूर्ण होगा यदि मानव मस्तिष्क की असंख्य उद्देश्यपूर्ण क्षमताओं तथा अनंत क्षमताओं को शाश्वत विनाश के माध्यम से पूरी तरह से बर्बाद कर दिया जाए; यह ईश्वरीय संप्रभुता तथा प्रभुत्व की भव्यता तथा पूर्णता के कितने विपरीत होगा यदि ईश्वर को - ईश्वर न करे! - अपने असंख्य वादों को पूरा करने में विफल होने के कारण नपुंसक तथा अज्ञानी के रूप में प्रकट किया जाए। इस प्रकार दयालु, सर्वज्ञ, न्यायी, सर्वदानी तथा सर्व-संप्रभु नाम उपरोक्त सत्यों के साथ उस प्रश्न का उत्तर देते हैं जो हमने अपने सृष्टिकर्ता से परलोक के संबंध में पूछा था, तथा इसे बिना किसी संदेह के प्रमाणित करते हैं।

हम यह भी स्पष्ट रूप से देखते हैं कि संरक्षण का एक विशाल, सर्वव्यापी कार्य सृष्टि पर हावी है। यह सभी चीजों, प्राणियों और घटनाओं के असंख्य रूपों, उनके द्वारा अपने जीवन भर किए जाने वाले कर्तव्यों और उनके कर्मों को दर्ज करता है, जो उनमें प्रकट दिव्य नामों के जवाब में ईश्वर की महिमा के समान हैं, उन पट्टियों पर जो प्रतिनिधित्वों या “आदर्श” रूपों की दुनिया से संबंधित हैं, उनके बीजों में और उनकी यादों में, जो सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका के छोटे नमूने हैं, साथ ही उन विशाल पुस्तकालयों में जिन्हें मन में रखा गया है, और अन्य भौतिक और परा-भौतिक दर्पणों में, जहां वे प्रतिबिंबित होते हैं। यह उन्हें अंकित करता है, रिकॉर्ड करता है और संरक्षित करता है, और फिर, जब समय आता है तो यह हमारे सामने इन सभी अमूर्त शिलालेखों को भौतिक रूप में प्रदर्शित करता है: प्रत्येक वसंत, दिव्य शक्ति का एक शक्तिशाली फूल, ब्रह्मांड को पुनरुत्थान के एक अद्भुत सत्य की घोषणा करता है जो कविता में व्यक्त किया गया है: और जब स्क्रॉल (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) खोली जाती हैं (81:10), अरबों भाषाओं में और सैन्य बल के साथ

उदाहरणों, प्रमाणों और नमूनों के ढेर। इस तरह यह सबसे शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करता है कि सृजित प्राणी, विशेष रूप से मनुष्य, अनंत विनाश और अस्तित्वहीनता के लिए नियत नहीं हैं। बल्कि, उन्हें अनंत काल की ओर और अनंत काल तक निरंतर आगे बढ़ने, निरंतर शुद्धिकरण और शोधन के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करने और अपनी अंतहीन जन्मजात क्षमताओं द्वारा आवश्यक शाश्वत कर्तव्यों को अपनाने के लिए बनाया गया है।

हर साल हम देखते हैं कि असंख्य पौधे जो पतझड़ के प्रलय के दिन मर जाते हैं, और सभी पेड़, जड़ें, बीज और अनाज जो वसंत में पुनर्जीवित होते हैं, वे आयत का पाठ करते हैं: और जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाती हैं। पिछले वर्षों की तरह ही समान कर्तव्यों का पालन करते हुए, प्रत्येक व्यक्ति इस आयत के एक अर्थ या पहलू की अपनी भाषा में व्याख्या करता है। इस तरह, वे सभी संरक्षण के उस विशाल कार्य की गवाही देते हैं। हर चीज में आयत के चार जबरदस्त सत्य प्रदर्शित करके, वह प्रथम है, अंतिम है, सर्व-बाह्य है और सर्व-आंतरिक है (57:3), वे हमें वसंत की सहजता और निश्चितता के साथ इस संरक्षण और पुनरुत्थान की सूचना देते हैं।

ये चार नाम स्वयं को प्रकट करते हैं और सभी चीज़ों पर कार्य करते हैं, चाहे वे विशेष हों या सार्वभौमिक। उदाहरण के लिए, प्रथम नाम के प्रकटीकरण को प्राप्त करना या उसका अनुग्रह प्राप्त करना, एक बीज, जो एक छोटा सा मामला है जिसमें वृक्ष का सटीक कार्यक्रम और उसके निर्माण और विकास की दोषरहित प्रणालियाँ समाहित हैं, निस्संदेह ईश्वरीय संरक्षण की विशालता को साबित करता है।

इसी प्रकार, प्रत्येक फल, जो अंतिम नाम को प्रकट करता है, एक खजाना है जिसके बीजों में वृक्ष के सभी कर्तव्यों की सूची होती है।

इसके समान ही एक अन्य वृक्ष के जीवन के सिद्धांतों के साथ-साथ इसने भी कार्य किया है। इसलिए यह भी ईश्वरीय संरक्षण के कार्य की पूरी तरह से गवाही देता है।

वृक्ष का भौतिक रूप, जिस पर सर्वव्यापी नाम स्वयं प्रकट होता है, एक सुडौल, कुशलता से सजा हुआ वस्त्र है, जो स्वर्ग की हूरियों के बहुरंगी, सोने की कढ़ाई वाले वस्त्रों जैसा दिखता है। इस तरह यह स्पष्ट रूप से उस प्रचंड शक्ति, पूर्ण बुद्धि और दया की अद्भुत कृपा और सुंदरता को प्रदर्शित करता है जो दिव्य संरक्षण के कार्य में प्रकट होती है।

वृक्ष की आंतरिक प्रणाली, जो कि परम आन्तरिक नाम के प्रकटीकरण से सुशोभित है, एक व्यवस्थित, चमत्कारी कारखाने की तरह है, एक कार्यशाला जहाँ असंख्य रासायनिक प्रक्रियाएँ होती हैं और जिसमें भोजन का एक सटीक रूप से मापा हुआ बर्तन होता है, जो इसकी किसी भी शाखा, फल या पत्ते को पोषण के बिना नहीं छोड़ता है। यह तंत्र इतना दोषरहित है कि यह शक्ति और न्याय की पूर्णता को सभी संदेहों से परे साबित करता है

और दया और बुद्धि की कृपा और सुंदरता जो दिव्य संरक्षण के कार्य में प्रकट होती है।

इसी प्रकार, वार्षिक ऋतुओं के संबंध में, पृथ्वी एक वृक्ष के समान है।
प्रथम नाम के प्रकटीकरण के माध्यम से, पतझड़ के मौसम में ईश्वरीय संरक्षण को सौंपे गए सभी बीज और अनाज ईश्वरीय आदेशों और सिद्धांतों की सूचियों के छोटे संग्रह की तरह हैं जो पृथ्वी के पेड़ के निर्माण के संबंध में ईश्वरीय निर्धारण या नियति से निकलते हैं जो अंततः वसंत के वस्त्र पहनने पर अरबों शाखाएँ और टहनियाँ, फूल और फल देगा। ये बीज और अनाज उन कार्यों और कर्मों की सूचियाँ और छोटे रिकॉर्ड भी हैं जो पेड़ ने पिछली गर्मियों में किए हैं। यह बिल्कुल स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि वे महिमा और उदारता के एक सर्व-संरक्षक की असीम शक्ति, न्याय, बुद्धि और दया के माध्यम से काम करते हैं।

फिर पतझड़ के मौसम में, पृथ्वी का वृक्ष अपने द्वारा निभाए गए सभी कर्तव्यों को, दिव्य नामों के प्रकटीकरण के प्रत्युत्तर में किए गए सभी महिमा-गानों को, तथा अपने कर्मों के सभी अभिलेखों को, जो वसंत के आगामी पुनरुत्थान में प्रकाशित किए जाएंगे, छोटे-छोटे बक्सों में जमा कर देता है; इन्हें वह उस सर्वरक्षक महामहिम की बुद्धि के हाथों में सौंप देता है, तथा समस्त ब्रह्माण्ड के समक्ष असंख्य भाषाओं में यह कहता है कि वह अंतिम है ।

लाखों तरह के फूल खिलकर, जो पुनरुत्थान के लाखों उदाहरण और संकेत दर्शाते हैं, और जीवों के लिए दया, कृपा, करुणा और उदारता की असंख्य मेज़ें सजाकर, वृक्ष का बाहरी रूप प्रशंसा और प्रशंसा करता है, अपने फलों, फूलों और खाद्य पदार्थों की संख्या के अनुसार भाषाओं में कहता है कि वह सर्वव्यापक है । और ऐसा करके वह बिना किसी संदेह के इस सत्य को प्रदर्शित करता है: जब (प्रत्येक व्यक्ति के कर्मों की) पुस्तकें खोली जाएँगी (81:10)।

जहाँ तक इस शानदार पेड़ के अंदरूनी भाग की बात है, जैसा कि पहले बताया गया है, यह एक तरह का रसोईघर या कार्यशाला है, जिसमें कई सुव्यवस्थित मशीनें और बारीक संतुलित कारखाने पूर्ण क्रम और नियमित तरीके से चलते हैं; ये इसे एक औंस से हज़ारों किलो भोजन बनाने में सक्षम बनाते हैं जिसे भूखे लोगों को दिया जा सकता है। यह इतनी सटीकता और संतुलन के साथ काम करता है कि इसमें संयोग की कोई गुंजाइश नहीं रहती। कुछ स्वर्गदूतों की तरह जो हज़ारों भाषाओं से ईश्वर की महिमा करते हैं, इस धरती रूपी पेड़ का अंदरूनी भाग लाखों तरीकों से घोषणा करता है कि वह सर्वव्यापी है ।

अपने वार्षिक चक्र के संबंध में एक वृक्ष के समान होने के अलावा, जो उन चार नामों के माध्यम से प्रकट होने वाले दिव्य संरक्षण को पुनरुत्थान के द्वार की कुंजी बनाता है, पृथ्वी अपने संपूर्ण सांसारिक जीवन के संबंध में भी एक सुव्यवस्थित वृक्ष है; इस वृक्ष के फल परलोक के बाजार में भेजे जाते हैं। यह इन चार नामों के प्रकटीकरण का एक स्थान है जो इतना विशाल है; यह परलोक की ओर ले जाने वाला एक मार्ग है जो इतना चौड़ा है कि हमारा मन उन्हें समझने में असमर्थ है। हम केवल इतना ही कह सकते हैं:

साप्ताहिक घड़ी की सुइयां जो सेकंड, मिनट, घंटे और दिन गिनती हैं, एक दूसरे से मिलती-जुलती हैं और एक दूसरे की प्रकृति और कार्य को इंगित करती हैं। इसलिए, जो व्यक्ति सेकंड की सुई की गति को देखता है, वह अन्य सुइयों और घड़ी के तंत्र के अन्य भागों की गति को स्वीकार करने से नहीं बच सकता। इसी तरह, दिन जो इस दुनिया के सेकंड गिनते हैं, जो आकाश और पृथ्वी के सर्व-महान निर्माता की एक विशाल घड़ी है, वर्ष जो इसके मिनट गिनते हैं, शताब्दियां जो इसके घंटे दिखाती हैं, और युग जो इसके दिनों को बताते हैं - ये सभी एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं और एक दूसरे की प्रकृति और कार्य को इंगित करते हैं। अंत में, पृथ्वी की यह घड़ी, जो दुनिया के दिन, वर्ष, शताब्दियां और युग गिनती है, हमें रात के बाद भोर और सर्दी के बाद वसंत की निश्चितता के साथ सूचित करती है कि इस क्षणभंगुर दुनिया की अंधेरी सर्दी के बाद शाश्वत क्षेत्र का शानदार वसंत आएगा। और इस तरह, सर्वरक्षक, प्रथम, अंतिम, सर्वबाह्य और सर्वआंतरिक नाम उस प्रश्न का सच्चा उत्तर देते हैं जो हम अपने सृष्टिकर्ता से पुनरुत्थान के विषय में पूछते हैं।

इसके अलावा, हम देखते और समझते हैं कि मानवता:

• ब्रह्मांड के वृक्ष का अंतिम और सबसे व्यापक फल और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सच्चाई के संबंध में, इसका मूल बीज; • ब्रह्मांडीय कुरान और इसकी दिव्य आयत का सर्वोच्च संकेत

सर्वोच्च आसन 51, जो महानतम की अभिव्यक्ति को धारण करता है
ईश्वर का नाम;

51 ईश्वरीय सर्वोच्च स्थान की कुरान की आयत, जिसके संबंध में सईद नूरसी ने ब्रह्मांड में मानवता के स्थान की तुलना कुरान में इस आयत के स्थान से की है, इस प्रकार है:

हे ईश्वर, उसके सिवा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वज्ञ है, स्वयंभू है (जिससे सब जीवित हैं), उसे न नींद आती है, न ऊंघ आती है, आकाश और धरती में जो कुछ है, वह सब उसी का है। फिर कौन है जो उसके लिए सिफ़ारिश करे?

- ब्रह्मांड के महल में सबसे सम्मानित अतिथि और महल के अन्य निवासियों पर प्रबंधन का अधिकार रखने वाला सबसे सक्रिय अधिकारी;

- ब्रह्मांड के शहर में आय और व्यय की निगरानी और पृथ्वी के एक चौथाई हिस्से में बाग लगाने और खेती करने के लिए जिम्मेदार अधिकारी;

- इसका सबसे मुखर और जिम्मेदार मंत्री, सैकड़ों विज्ञानों और हजारों कलाओं और कौशलों से सुसज्जित;
- एक प्रकार का निरीक्षक, एक प्रतिनिधि जिसे समस्त अनंत काल के सम्राट द्वारा, अपनी करीबी जांच के तहत, ब्रह्मांड के दायरे में पृथ्वी के देश की देखरेख करने के लिए नियुक्त किया जाता है;

- वह जाति जिसे इसे नियंत्रित करने और तैनात करने का अधिकार दिया गया है, और जिसके कार्य, चाहे वे विशेष हों या सार्वभौमिक, सभी दर्ज किए जाते हैं;
- जीवित प्राणियों का वह विभाग है जो भार वहन करने के लिए सहमत हो गया है सर्वोच्च विश्वास, जिससे आकाश, पृथ्वी और पर्वत सभी भयभीत होकर सिकुड़ जाते हैं;

- ऐसा प्राणी जिसके सामने दो रास्ते हैं, जिनमें से एक एक ओर तो पूर्ण दुःख है, जबकि दूसरी ओर पूर्ण संतोष है;
- ईश्वर का एक सार्वभौमिक सेवक जिसे सबसे व्यापक पूजा का दायित्व सौंपा गया है;
- महानतम की अभिव्यक्ति से अनुग्रहित होने का प्रकार ब्रह्माण्ड के अधिपति का नाम;
- सभी ईश्वर के नामों का एक व्यापक दर्पण;
- ईश्वर का विशेष अंतरंग और अभिभाषक, उसके दिव्य संबोधनों और वाणी की सर्वोत्तम समझ के साथ;

- ब्रह्मांड में सभी जीवित प्राणियों में सबसे जरूरतमंद: एक दुखी प्राणी, जो अपनी अंतहीन गरीबी और नपुंसकता के बावजूद, असंख्य इच्छाएं और लक्ष्य रखता है और फिर भी असंख्य विरोधी और चीजें हैं जो उसे नुकसान पहुंचाने की धमकी देती हैं;

वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है (और जो कुछ उनके पास पहले से है और जो कुछ उनसे छिपा हुआ है) और वे उसके ज्ञान में से कुछ नहीं समझते, परन्तु जो कुछ वह चाहता है। उसका सिंहासन आकाशों और धरती को घेरे हुए है और वह उनकी रक्षा करने में थकता नहीं। वह अत्यन्त प्रभुत्वशाली, प्रभुत्वशाली है। (2:255)

- ऐसा प्राणी जो अपनी क्षमता में सबसे अधिक धन्य है, फिर भी जीवन के सुखों के संबंध में सबसे अधिक पीड़ित है, जो भयंकर पीड़ाओं के अस्तित्व से विष बन जाते हैं;

- अनंत काल से प्रार्थित शक्ति का सबसे अद्भुत चमत्कार एक;
- सृष्टि की सबसे अद्भुत उपज जिसे अनन्त जीवन की सबसे अधिक आवश्यकता है और उसे प्राप्त करने का सबसे अधिक योग्य भी है;
- ऐसा प्राणी जो अनंत प्रार्थनाओं के साथ शाश्वत सुख की खोज करता है—
  वास्तव में, यदि उन्हें इस संसार के सभी सुख दे दिए जाएं, तो भी वे अनन्त जीवन की अपनी इच्छा को रत्ती भर भी संतुष्ट नहीं कर सकेंगे;
- ऐसा प्राणी जो एक को श्रद्धा की हद तक प्यार करता है
  जो उनपर कृपा करता है और उसे प्रिय बनाता है और स्वयं भी प्रिय होता है
  उसके द्वारा;
- ऐसा प्राणी जिसकी क्षमताएं, जो स्वयं ब्रह्मांड जितनी विशाल हैं, अपने स्वभाव से ही दर्शाती हैं कि उन्हें शाश्वतता प्राप्त करने के लिए बनाया गया है।

संक्षेप में, मानवता उपरोक्त सार्वभौमिक वास्तविकताओं के माध्यम से सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम परम सत्य से बंधी हुई है, और उनके कार्यों को सर्वरक्षक द्वारा निरंतर दर्ज किया जाता है, जो सबसे छोटे जीवित प्राणी की सबसे विशेष आवश्यकता को देखता है, उसकी विनती सुनता है, और उसका जवाब देता है। मानवता के कर्म, जो पूरे ब्रह्मांड से संबंधित हैं, उस सर्वरक्षक के महान लेखकों द्वारा लिखे गए हैं, और यह मानवता ही है जो किसी भी अन्य प्राणी से अधिक उसका ध्यान आकर्षित करती है। इसे देखते हुए, निश्चित रूप से इस सबसे महान प्राणी को पुनरुत्थान और न्याय प्रदान किया जाएगा। और इस न्याय में, परम सत्य नाम के अनुसार, मानव जाति को अपने कर्तव्यों के लिए पुरस्कार या अपने अपराधों के लिए दंड मिलेगा; उन्हें अपने सभी कार्यों, सार्वभौमिक या विशेष, के लिए जवाबदेह ठहराया जाएगा, जो सर्वरक्षक नाम द्वारा दर्ज किए गए हैं। शाश्वत क्षेत्र में शाश्वत सुख के भोज कक्षों के दरवाजे खुल जाएंगे, जैसे कि शाश्वत दुख की जेल के द्वार खुल जाएंगे। वह "अधिकारी" जिसके पास इस संसार में प्राणियों की अनेक प्रजातियों का प्रबंधन है, जो उनमें हस्तक्षेप करता है और कभी-कभी उन्हें असमंजस में डाल देता है, एक बार जब वे मिट्टी में समा जाएंगे, तो उनके कार्यों के संबंध में पूछताछ से बच नहीं पाएंगे; न ही उन्हें बिना जगाए छिपने दिया जाएगा।

मक्खी की भिनभिनाहट सुनना और उसे जीवन के अधिकार देकर उसका उत्तर देना, किन्तु अनंत काल के आह्वान को अनदेखा करना जो असंख्य मानव अधिकारों से उत्पन्न होते हैं और उपरोक्त सत्यों की भाषा के माध्यम से किए जाते हैं -

आकाश और पृथ्वी में बिजली की तरह गूंजने वाले आह्वान - शुद्ध अन्याय और इन अधिकारों का उल्लंघन होगा। इसी तरह, सबसे छोटे जीव - उदाहरण के लिए, एक मक्खी के पंख - को ध्यान में रखना, लेकिन फिर मानव जाति की क्षमताओं, आशाओं और इच्छाओं की उपेक्षा करना और उन्हें बर्बाद करना, जो अनंत काल तक फैली हुई हैं, साथ ही ब्रह्मांड में अनगिनत बंधन और सत्य जो इन क्षमताओं और इच्छाओं को पोषित करते हैं - यह

यह इतना घिनौना और घृणित अत्याचार और अन्याय होगा कि सभी प्राणी जो परम सत्य, सर्व-रक्षक, सर्व-ज्ञानी, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय जैसे नामों की गवाही देते हैं, वे इसे अस्वीकार कर देंगे, इसे पूरी तरह असंभव घोषित कर देंगे। इस प्रकार ये नाम उस प्रश्न का उत्तर देते हैं जो हमने अपने निर्माता से पुनरुत्थान के बारे में पूछा था। वे कहते हैं: "जैसे हम सच्चे हैं और हमारे पास पर्याप्त वास्तविकताएँ हैं, और जो प्राणी हमारी गवाही देते हैं वे भी सच्चे हैं, वैसे ही पुनरुत्थान भी सच्चा और निश्चित है।"

मैं और अधिक लिखने वाला था, लेकिन चूंकि उपरोक्त बातें यह दिखाने के लिए पर्याप्त हैं कि पुनरुत्थान का सत्य दिन के उजाले की तरह स्पष्ट है, इसलिए मैंने यहां चर्चा को संक्षिप्त कर दिया है।

इस प्रकार, जैसा कि ऊपर वर्णित सत्यों से भी समझा जा सकता है, जिस प्रकार प्राणियों में अपनी अभिव्यक्ति और प्रतिबिम्ब के माध्यम से, सर्वशक्तिमान ईश्वर के सैकड़ों, बल्कि हजारों नाम, जो ब्रह्माण्ड से संबंधित हैं और स्वयं को उसमें प्रकट करते हैं, उस एक के अस्तित्व को स्वयं-सिद्ध रूप से सिद्ध करते हैं, जिसका वे प्रतीक हैं, उसी प्रकार वे पुनरुत्थान और परलोक को भी प्रदर्शित करते हैं, और उन्हें निश्चित रूप से सिद्ध करते हैं।

जिस प्रकार हमारा प्रभु और सृष्टिकर्ता हमें पुनरुत्थान के संबंध में हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का पवित्र, निर्णायक उत्तर अपनी सभी प्रकाशित पुस्तकों और धर्मग्रंथों तथा अपने अधिकांश नामों के माध्यम से देता है, उसी प्रकार वह अपने स्वर्गदूतों से भी उसी प्रश्न का उत्तर उनकी अपनी भाषा में देने का अनुरोध करता है:

"आदम के समय से लेकर अब तक सैकड़ों ऐसी घटनाएँ हुई हैं

हम दोनों के साथ और अन्य आत्मिक प्राणियों के साथ आपकी मुलाकात के बारे में निस्संदेह गवाही देते हैं। हमारे अस्तित्व और उन अन्य आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व, और हमारे ईश्वर के प्रति सेवाभाव और आज्ञाकारिता के अन्य असंख्य संकेत और प्रमाण भी हैं। एक दूसरे के साथ सहमति में, हमने आपके नेताओं से जब भी मुलाकात की है, उन्हें बताया है कि हम परलोक के गलियारों और उसके कुछ महलों के चारों ओर यात्रा करते हैं। हमें इसमें कोई संदेह नहीं है कि

ये सुंदर, चिरस्थायी हॉल और अच्छी तरह से सुसज्जित, सुसज्जित महल और उनके आगे के आवास उन महत्वपूर्ण मेहमानों के लिए तैयार किए गए हैं जिन्हें वहाँ ठहराया जाना है। हम आपको इसकी अविश्वसनीय खबर देते हैं।" हमारे प्रश्न के लिए स्वर्गदूतों का उत्तर ऐसा ही है।

इसके अलावा, हमारे निर्माता ने पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को सबसे महान शिक्षक, सर्वोत्तम गुरु और सबसे सच्चे मार्गदर्शक के रूप में नियुक्त किया, जो न तो भटकते हैं और न ही गुमराह करते हैं, और उन्हें अपने अंतिम संदेशवाहक के रूप में भेजा।
इस प्रकार, ताकि हम ईश्वर के बारे में अपने ज्ञान और उस पर अपने विश्वास में आगे बढ़ सकें, ज्ञान पर आधारित निश्चितता से दर्शन से उत्पन्न निश्चितता और अनुभव से उत्पन्न निश्चितता तक आगे बढ़ सकें, हमें सबसे पहले इस मालिक से वही सवाल पूछना चाहिए जो हम अपने निर्माता से पूछते हैं। क्योंकि, जिस तरह उस व्यक्ति ने अपने असंख्य चमत्कारों के माध्यम से साबित किया कि कुरान ईश्वर का सच्चा शब्द है, कुरान भी अपने चमत्कारों के चालीस पहलुओं के माध्यम से साबित करता है कि वह ईश्वर का सच्चा और सही संदेशवाहक था। दृश्यमान दुनिया की जीभ के रूप में, पैगंबर ने अपने पूरे जीवन में पुनरुत्थान की सच्चाई की घोषणा की और सभी पैगंबरों और संतों द्वारा इसकी पुष्टि की गई; कुरान, अदृश्य दुनिया की जीभ के रूप में, अंतिम दिन और उसके बाद की सच्चाई की भी घोषणा की, और अन्य सभी ईश्वरीय पुस्तकों और शास्त्रों द्वारा इसकी घोषणा की पुष्टि की गई। इस बात को देखते हुए, पुनरुत्थान का अस्तित्व सभी उचित संदेह से परे साबित होता है।

पुनरुत्थान जैसा अद्भुत विषय, जिसकी समझ सामान्य तर्क से परे है, इन दो अद्भुत गुरुओं - पैगम्बर मुहम्मद और कुरान - के निर्देश के माध्यम से सर्वोत्तम रूप से समझा जा सकता है।

प्रारंभिक पैगम्बरों ने क़ुरान की तरह पुनरुत्थान के बारे में विस्तृत तरीके से व्याख्या नहीं की, इसका कारण यह था कि वे सापेक्ष आदिमवाद के युग थे, या मानवता के "बचपन" के युग थे। जो लोग प्राथमिक शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं, उन्हें विस्तृत और जटिल व्याख्याएँ देने का कोई मतलब नहीं है।

संक्षेप में: चूंकि अधिकांश दिव्य नामों के लिए पुनरुत्थान की आवश्यकता होती है, इसलिए इन नामों के अस्तित्व को प्रदर्शित करने वाले सभी प्रमाण, कुछ हद तक पुनरुत्थान के अस्तित्व और आवश्यकता को भी प्रदर्शित करते हैं।

और चूंकि फ़रिश्ते हमें बताते हैं कि उन्होंने परलोक के शाश्वत क्षेत्र के क्षेत्रों और भवनों को देखा है, इसलिए जो प्रमाण फ़रिश्तों, आत्माओं और आत्मिक प्राणियों के अस्तित्व और पूजनीयता को स्थापित करते हैं, वे परलोक के अस्तित्व की सच्चाई को स्थापित करने में भी सहायता करते हैं।

और चूंकि ईश्वरीय एकता के बाद, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने सबसे अधिक जोर देकर जिस विषय पर जोर दिया, वह परलोक था, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रमाण और चमत्कार जो उनकी पैगम्बरी होने की गवाही देते हैं, वे परोक्ष रूप से परलोक के अस्तित्व की भी गवाही देते हैं।

और चूंकि कुरान का एक चौथाई भाग पुनरुत्थान और परलोक से संबंधित है, तथा इसकी लगभग एक हजार आयतें परलोक के प्रमाण प्रस्तुत करती हैं, इसलिए कुरान की सत्यता को स्थापित करने वाले सभी प्रमाण और तर्क अप्रत्यक्ष रूप से परलोक के अस्तित्व को भी स्थापित करते हैं।

अब देखिए कि विश्वास का यह स्तंभ कितना दृढ़ और निश्चित है!

आठवें मामले का सारांश

सातवें मामले में, हम पुनरुत्थान के संबंध में कई अलग-अलग प्राणियों से सवाल करने की योजना बना रहे थे। हालाँकि, चूँकि हमारे निर्माता के नामों द्वारा दिए गए उत्तर इतने शक्तिशाली और विश्वसनीय थे, इसलिए हमने उनसे संतुष्ट होकर किसी और से या किसी और चीज़ से सवाल करने की कोई ज़रूरत नहीं समझी।

अब, इस आठवें अंक में हम परलोक में ईमान के सौवें हिस्से के बारे में बताने की योजना बना रहे थे जो मानवता के लिए और इस दुनिया और परलोक दोनों में उनकी खुशहाली के लिए है। हालाँकि, चूँकि चमत्कारी कुरान परलोक में खुशी हासिल करने में ईमान के लाभों के बारे में और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं छोड़ता है, और चूँकि इस दुनिया में मानवता के लिए ईमान के लाभों पर रिसाले-ए-नूर में विस्तार से चर्चा की गई है, इसलिए पाठक कुरान और रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक खंडों का संदर्भ ले सकते हैं ।

यहां हम मानव के व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के संबंध में परलोक में विश्वास के सैकड़ों परिणामों में से केवल तीन या चार का सारांश प्रस्तुत करेंगे।

पहला: जिस तरह एक व्यक्ति का अपने घर से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका उससे परे की दुनिया से भी रिश्ता होता है। इसी तरह, जिस तरह उसका अपने रिश्तेदारों से रिश्ता होता है, उसी तरह उसका बाकी मानव जाति से भी रिश्ता होता है।
और जिस तरह वे इस दुनिया में एक तरह के अस्थायी स्थायित्व की इच्छा रखते हैं, उसी तरह वे अनंत काल के दायरे में एक स्थायी स्थायित्व के लिए भी उत्सुकता से तरसते हैं। जिस तरह से एक व्यक्ति भोजन के लिए अपने पेट की ज़रूरत को पूरा करने का प्रयास करता है, उसी तरह वे स्वभाव से अपने मन, हृदय, आत्मा और मानवता के रूपक पेट को पोषण प्रदान करने के लिए प्रयास करने के लिए बाध्य होते हैं। उनकी इच्छाएँ और माँगें ऐसी हैं कि अनंत काल और चिरस्थायी सुख के अलावा कुछ भी उन्हें संतुष्ट नहीं कर सकता। जैसा कि दसवें शब्द में उल्लेख किया गया है, जब मैं छोटा था तो मैंने खुद से पूछा: "क्या आप दस लाख साल तक दुनिया के शासक के रूप में जीना चाहते हैं?

क्या आप दुनिया में रहना चाहते हैं लेकिन फिर अनंत काल तक अस्तित्वहीन रहना चाहते हैं? या आप एक साधारण और कभी-कभी कठिन जीवन जीना पसंद करेंगे, लेकिन हमेशा के लिए जीना चाहेंगे?" मैंने देखा कि मेरी कल्पना हमेशा बाद वाले विकल्प को चुनती है, कहती है: "मैं हमेशा के लिए जीना चाहता हूँ, भले ही वह नर्क में हो!"

इस प्रकार, चूंकि इस संसार के सुख कल्पनाशील क्षमता को संतुष्ट नहीं करते, जो मानव सार का सेवक है, इसलिए यह निष्कर्ष निकलता है कि मानवता का व्यापक सार, अपने स्वभाव से ही, शाश्वतता से जुड़ा हुआ है।

क्योंकि असीम आशाओं और इच्छाओं से घिरे होने के बावजूद, मानवता के पास अपनी पूंजी के रूप में केवल इच्छाशक्ति की एक तुच्छ क्षमता है, क्योंकि वे पूर्ण गरीबी से त्रस्त हैं। तो, परलोक में विश्वास एक ऐसा शक्तिशाली और पर्याप्त खजाना है, खुशी और आनंद का ऐसा साधन, सहायता और लाभ का ऐसा आश्रय और स्रोत, और इस दुनिया के अंतहीन दुखों के सामने सांत्वना का ऐसा साधन है कि अगर इस दुनिया का जीवन जीना है

इसे पाने के लिए चाहे कितना भी बलिदान क्यों न देना पड़े, फिर भी यह बहुत सस्ती कीमत होगी।

इसका दूसरा फल और मानव व्यक्तिगत जीवन से संबंधित लाभ :

इसे थर्ड मैटर में समझाया गया है, और इसे गेनक्लिक रेहबेरी में फुटनोट के रूप में पाया जा सकता है।

मानवता की सबसे स्थायी और सबसे बड़ी चिंता यह है कि हम एक दिन कब्र में चले जाएंगे, जैसे हमारे मित्र और रिश्तेदार हमसे पहले चले गए हैं। एक अभागा मनुष्य जो एक मित्र के लिए अपनी आत्मा तक कुर्बान करने को तैयार है, वह कल्पना करता है कि उससे पहले कब्र में गए अनगिनत लाखों मनुष्य अनंत विनाश के लिए अभिशप्त हो चुके हैं, और यह अनुमान उन्हें नरक की यातनाएं देता है। ठीक इसी समय, आख़िरत पर ईमान प्रकट होता है, हमारी आंखें खोलता है और पर्दा उठाता है। यह हमें बताता है: "देखो!" और ईमान से देखते हुए, हम देख सकते हैं कि हमारे साथी अनंत विनाश से बच गए हैं और एक रोशनी से भरी दुनिया में खुशी से हमारा इंतज़ार कर रहे हैं; यह महसूस करते हुए, हमें एक आध्यात्मिक आनंद मिलता है जो स्वर्ग के सुखों का प्रतिबिंब है। रिसाले -ए-नूर में इस दूसरे फल की व्याख्या से संतुष्ट होकर, हम यहाँ चर्चा को समाप्त करेंगे।

तीसरा लाभ: मनुष्य अपनी श्रेष्ठ विशेषताओं, अपनी व्यापक क्षमताओं, पूजा करने की अपनी सार्वभौमिक क्षमता और अपने जीवन को बनाने वाले अस्तित्व के व्यापक क्षेत्रों के कारण अन्य जीवों से श्रेष्ठ है। हालाँकि, मनुष्य की विशेषताएँ जैसे प्रेम, उत्साह, भाईचारा और मानवता, इस क्षणभंगुर वर्तमान समय की सीमा के अनुसार अर्जित की जाती हैं, जो कि मनुष्य के व्यक्तित्व को दर्शाती हैं।

वह अतीत और भविष्य के बीच फंसा हुआ है, जो दोनों ही अंधकारमय और अस्तित्वहीन हैं।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति अपने पिता, भाई या बहन, अपने जीवनसाथी, राष्ट्र या देश से प्यार करता है और उनकी सेवा करता है, जिनमें से किसी को भी वह पहले नहीं जानता था; वे इनमें से किसी को भी इस दुनिया से चले जाने के बाद नहीं देखेंगे। चूँकि जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति का अर्थ है कि यह बहुत ही असंभव है कि कोई व्यक्ति किसी एक रिश्ते में पूरी तरह से वफ़ादारी या ईमानदारी हासिल कर पाएगा, इसलिए उनके गुण और श्रेष्ठताएँ आनुपातिक रूप से कम हो जाती हैं। फिर, ठीक उस बिंदु पर जहाँ वे जानवरों से भी निचले स्तर पर गिर जाते हैं और पहले से भी अधिक दयनीय हो जाते हैं क्योंकि उनके पास बुद्धि और तर्क है, परलोक में विश्वास इस व्यक्ति की सहायता के लिए आता है। यह वर्तमान को, जो कब्र जितना संकीर्ण है, इस हद तक विस्तृत करता है कि यह अतीत और भविष्य को समाहित करता है और अस्तित्व के एक क्षेत्र को दुनिया जितना व्यापक रूप से प्रकट करता है, जो पूर्व-अनंत काल से लेकर अनंत काल तक फैला हुआ है। यह महसूस करते हुए कि अपने जीवनसाथी, माता-पिता और भाई-बहनों के साथ संबंध स्वर्ग में अनंत काल तक जारी रहेंगे, वे इस दुनिया में रहते हुए उनसे प्यार करते हैं, उनका सम्मान करते हैं, उनकी मदद करते हैं और उन पर दया करते हैं। इस नये बोध के साथ, व्यक्ति जीवन और अस्तित्व के इस व्यापक क्षेत्र में व्याप्त रिश्तों पर आधारित ऐसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों का शोषण इस संसार के व्यर्थ मामलों और उसके क्षुद्र हितों के लिए नहीं करेगा। सच्ची निष्ठा और ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम होने पर, व्यक्ति के अच्छे गुण और उपलब्धियाँ तदनुसार विकसित होने लगती हैं, और उसकी मानवता उदात्त हो जाती है।

वे इस जीवन के आनंद में गौरैया से भी बराबरी नहीं कर सकते, लेकिन वे ब्रह्मांड के सबसे महान और सबसे खुश मेहमान बन सकते हैं, सभी जानवरों से श्रेष्ठ, साथ ही ब्रह्मांड के मालिक के सबसे प्रिय और सबसे प्रशंसित सेवक भी हो सकते हैं। चूंकि यह बात रिसाले-ए-नूर में भी स्पष्ट की जा चुकी है, इसलिए हम यहां इतने से ही संतुष्ट हैं।

परलोक में विश्वास का चौथा लाभ , जो मानव से संबंधित है

सामाजिक जीवन: रिसाले-ए-नूर की नौवीं किरण में वर्णित इस लाभ का सारांश इस प्रकार है :

बच्चे, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, वास्तव में मानव जीवन जी सकते हैं और वास्तव में मानवीय क्षमताओं को बनाए रख सकते हैं, यदि उन्हें परलोक में ईमानदारी से विश्वास हो। परलोक में विश्वास के बिना, उन्हें अपने अंतिम विस्मरण की चिंता की भरपाई करने के लिए अपने सांसारिक जीवन को तुच्छ और अर्थहीन विकर्षणों से भरने के लिए मजबूर होना पड़ता है। क्योंकि उनके आस-पास उनके जैसे बच्चों की लगातार मौतें उनके जीवन पर इतना प्रभाव डालती हैं

संवेदनशील मन और कमज़ोर दिल, जो दूरगामी इच्छाएँ संजोते हैं, और

कमज़ोर आत्माएँ, कि यह उनके लिए जीवन को यातना बना देती है और उनकी बुद्धि को पीड़ा का साधन बना देती है। हालाँकि, अगर उन्हें परलोक में विश्वास दिलाया जाता है, तो वे अपने साथियों की मृत्यु पर जो चिंताएँ महसूस करते थे, जिनसे बचने के लिए वे खुद को व्यर्थ के विकर्षणों में डुबोने की कोशिश करते हैं, वे सत्य का एहसास होने पर खुशी और उल्लास में बदल जाएँगे। परलोक में विश्वास के आधार पर वे कहेंगे: "मेरा भाई या साथी मर गया है और स्वर्ग में एक पक्षी बन गया है। वह (या वह) अब हमसे कहीं ज़्यादा उड़ रहा है और मज़े कर रहा है। और हालाँकि मेरी माँ मर गई है, वह ईश्वरीय दया के दायरे में चली गई है। एक दिन मैं उसे स्वर्ग में देखूँगा, जहाँ वह मुझे एक बार फिर अपनी बाहों में ले लेगी।" इस तरह का एहसास इन बच्चों को एक ऐसी स्थिति में जीने में सक्षम करेगा जो उन्हें मनुष्य होने के नाते उपयुक्त है।

परलोक में विश्वास करने के माध्यम से ही वृद्ध, जो मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा हैं, अपने जीवन के अपरिहार्य विलुप्त होने और इस तथ्य के सामने सांत्वना पाने में सक्षम हैं कि वे भी जल्द ही पृथ्वी की आंतों में समा जाएंगे और उनकी कीमती और प्यारी दुनिया खत्म हो जाएगी। परलोक में विश्वास के बिना, वे दयालु, सम्मानित पिता और वे कोमल, आत्म-त्यागी माताएँ दिल और आत्मा में इतनी व्याकुल और व्यथित हो जाएँगी कि उनकी दुनिया उनके लिए निराशा की जेल और जीवन पीड़ा का भारी बोझ लगने लगेगी। लेकिन परलोक में विश्वास उन्हें संबोधित करते हुए कहता है: "चिंता मत करो! एक उज्ज्वल, शाश्वत जीवन तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है और वहाँ तुम शाश्वत युवावस्था का आनंद उठाओगे। तुम अपने प्यारे बच्चों और उन रिश्तेदारों के साथ खुशी से फिर से मिलोगे जिन्हें तुमने खो दिया है। तुम्हारे सभी अच्छे कर्म सुरक्षित हैं और वहाँ तुम्हें उनके लिए पुरस्कृत किया जाएगा।" आख़िरत पर ईमान उन्हें इतनी तसल्ली और खुशी देता है कि अगर उन्हें सौ बार भी बुढ़ापा आए तो भी उन्हें निराशा नहीं होगी।

मानव जाति का एक तिहाई हिस्सा युवा वर्ग से बना है। अपनी अशांत भावनाओं और भावनाओं के कारण और अपनी साहसी बुद्धि को नियंत्रित करने में कठिनाई के कारण यदि वे परलोक में अपना विश्वास खो देते हैं और नर्क की यातनाओं को ध्यान में नहीं रखते हैं, तो समाज के ईमानदार सदस्यों की संपत्ति और सम्मान, साथ ही कमजोर और बुजुर्गों की शांति और गरिमा गंभीर रूप से खतरे में पड़ जाएगी। एक युवा एक मिनट के आनंद के लिए एक खुशहाल घर को नष्ट करने में सक्षम है, और उसके बाद की जेल की सजा उसे एक जंगली जानवर में बदल देगी। लेकिन अगर परलोक में विश्वास नहीं है

जब कोई उनकी सहायता के लिए आता है, तो वे जल्दी से अपने होश में आ जाते हैं, और सोचते हैं: "यह सच है कि सरकारी मुखबिर मुझे नहीं देख पाते और मैं उनसे छिप सकता हूँ

उन्हें, लेकिन सर्वशक्तिमान प्रभु के फ़रिश्ते, जिनके पास नरक नामक जेल है, मुझे देखते हैं और मेरे सभी बुरे कर्मों को रिकॉर्ड कर रहे हैं। मैं स्वतंत्र नहीं हूँ और मुझे अपने हाल पर छोड़ दिया गया है: मैं एक यात्री हूँ जिस पर कर्तव्य का भार है। एक दिन मैं भी बूढ़ा और कमज़ोर हो जाऊँगा।" अचानक यह व्यक्ति उन लोगों के लिए सहानुभूति और सम्मान महसूस करना शुरू कर देता है, जिन पर वे पहले बिना सोचे-समझे हमला कर देते थे।

इस सत्य की व्याख्या से संतुष्ट होकर, जो पाठक रिसाले-ए-नूर में पा सकते हैं, हम चर्चा को यहीं समाप्त करते हैं।

मानव जाति का एक और महत्वपूर्ण वर्ग है बीमार, उत्पीड़ित, गरीब, हमारे जैसे लोग जो विपत्ति से पीड़ित हैं और जेल में सड़ रहे कैदी हैं, जिन्हें कड़ी सजा दी जाती है। अगर परलोक में ईमान उनकी मदद नहीं करता, तो उनका जीवन अवश्य ही पीड़ा से भरा होगा।

बीमारी उन्हें लगातार मौत की याद दिलाती है; अत्याचारी का घमंडी विश्वासघात, जिसके सामने वे अपनी इज्जत नहीं बचा पाते, उन्हें बहुत तकलीफ देता है; गंभीर आपदाओं में संपत्ति या संतान का नुकसान बेहिसाब निराशा लाता है; और पांच या दस साल जेल में बिताने की असहनीय कठिनाई अथाह दर्द और मानसिक पीड़ा का कारण बनती है। विश्वास के बिना, ये सभी विपत्तिपूर्ण परिस्थितियाँ दुनिया को उन लोगों के लिए एक भयानक जेल में बदल देती हैं जो उन्हें अनुभव करते हैं और जीवन एक जीता जागता नरक बन जाता है। लेकिन अगर आख़िरत में विश्वास उनकी मदद करता है, तो वे राहत महसूस करना शुरू कर देते हैं और, उनके विश्वास की सीमा तक, उनकी परेशानी, निराशा, चिंता और बदला लेने की इच्छा कम हो जाती है और कभी-कभी पूरी तरह से गायब भी हो जाती है।

मैं तो यहां तक कह सकता हूं कि अगर परलोक में ईमान ने मुझे और मेरे कुछ भाइयों को इस भयानक विपत्ति में मदद न की होती जो कि इस गलत कारावास की स्थिति है, तो हम कारावास का एक दिन भी नहीं झेल पाते: यह मौत के समान असहनीय होता और शायद हमें जीवन को अलविदा कहने पर मजबूर कर देता। लेकिन ईश्वर का असीम धन्यवाद, क्योंकि अपने भाइयों के दुख को झेलने के बावजूद, जिन्हें मैं अपने जीवन जितना ही प्यार करता हूं; रिसाले-ए-नूर की हजारों प्रतियों और अपनी कीमती, सोने की परत चढ़ी पुस्तकों को खोने और उनके लिए रोने के बावजूद, जिन्हें मैं अपनी आंखों जितना ही प्यार करता हूं; और इस तथ्य के बावजूद कि मैं थोड़ा सा भी अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता था या दूसरों के द्वारा हावी नहीं हो सकता था, मैं कसम खाता हूं कि परलोक में ईमान की रोशनी और ताकत ने मुझे धैर्य, सहनशीलता, सांत्वना और दृढ़ता दी। वास्तव में, इसने मुझे मेरे कठिन परिश्रम के कष्टों को सहन करके एक बड़ा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए उत्साह दिया है, क्योंकि जैसा कि मैंने इस ग्रंथ की शुरुआत में कहा था, मैं खुद को शिक्षा के एक ऐसे स्थान का छात्र मानता था जो जोसेफ का स्कूल कहलाने के योग्य है।

बुढ़ापे में कभी-कभी होने वाली तकलीफों और बीमारियों से बचने के लिए मैं अपने सबक और अधिक लगन से और अधिक सहजता से सीख सकता था। हालाँकि, हम विषय से भटक गए हैं, और मुझे उम्मीद है कि इसके लिए मुझे माफ़ कर दिया जाएगा।

साथ ही, हर किसी का घर उनके लिए एक छोटी सी दुनिया है, शायद एक छोटा सा स्वर्ग भी। अगर परलोक में विश्वास उस घर की खुशियों का आधार नहीं है, तो उस परिवार के सदस्यों को अपने परिवार के प्रति करुणा, प्रेम और लगाव के अनुपात में पीड़ा और चिंता का सामना करना पड़ेगा।

,

उनका स्वर्ग नर्क में बदल जाएगा और उनके पास अस्थायी मनोरंजन और विकर्षणों के साथ अपने दिमाग को सुन्न करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होगा। एक शुतुरमुर्ग की तरह जो यह सोचकर रेत में अपना सिर घुसा लेता है कि वे शिकारी को दिखाई नहीं देंगे, ये बेचारे लोग इस उम्मीद में अपने सिर को लापरवाही में डुबो देते हैं कि मृत्यु, पतन और अलगाव उन्हें नहीं मिलेगा। वे अस्थायी रूप से खुद को सुन्न करके अपनी भयानक दुर्दशा से बाहर निकलने का रास्ता खोजते हैं।

उदाहरण के लिए, माँ अपने बच्चों को खतरे में देखकर लगातार काँपती रहती है, जिनके लिए वह अपनी आत्मा का बलिदान कर सकती है। बच्चे, अपने पिता या भाई-बहनों को उन विपत्तियों से बचाने में असमर्थ होने के कारण लगातार दुःख और भय महसूस करते हैं जो अक्सर परिवारों पर आती हैं। इस प्रकार, इस उथल-पुथल भरे सांसारिक जीवन में, परिवार का कथित रूप से संतुष्ट जीवन कई मामलों में अपनी खुशी खो देता है, और इस संक्षिप्त सांसारिक अस्तित्व में बनाए गए रिश्तेदारी और घनिष्ठ संबंध सच्ची निष्ठा, हार्दिक ईमानदारी, निस्वार्थ सेवा या वास्तविक प्रेम में परिणत नहीं होते हैं। अच्छे चरित्र में आनुपातिक रूप से गिरावट आती है और अक्सर पूरी तरह से खो जाता है। हालाँकि, अगर परलोक में विश्वास प्रवेश करता है और

घर को पूरी तरह से रोशन करता है: इसके सदस्य एक-दूसरे के प्रति सम्मान, प्रेम और करुणा विकसित , करते हैं, न केवल इस संक्षिप्त सांसारिक जीवन में रिश्तों की खातिर, बल्कि खुशी के शाश्वत क्षेत्र में उनके जारी रहने के लिए जो कि परलोक है। वे एक-दूसरे का सम्मान करते हैं, ईमानदारी से प्यार करते हैं; वे एक-दूसरे के प्रति वफादार होते हैं और एक-दूसरे की खामियों को नजरअंदाज करते हैं और , और करुणा दिखाएं उनके अच्छे चरित्र में भी उसी हिसाब से वृद्धि होती है। नतीजतन, घर में सच्ची मानवता की खुशी विकसित होने लगती है। चूंकि यह भी रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट किया गया है, इसलिए हम यहां चर्चा को छोटा कर देते हैं।

इसके अलावा, एक शहर उन लोगों के लिए एक बड़े घर की तरह है जो वहाँ रहते हैं। यदि उस बड़े परिवार के सदस्यों में परलोक में विश्वास नहीं है, बल्कि पाप-ईमानदारी, सौहार्द, सदाचार, आपसी प्रेम और सहायता, आत्म-बलिदान और ईश्वरीय प्रसन्नता और पारलौकिक पुरस्कार की चाहत है - जो सभी अच्छे आचरण का आधार बनते हैं - तो स्वार्थ, दिखावा, पाखंड, बनावटीपन, रिश्वतखोरी और धोखाधड़ी जैसे दुर्गुण हावी हो जाएँगे। अराजकता और बर्बरता-

सतही व्यवस्था और नाममात्र की मानवता के मुखौटे के नीचे शासन करेंगे, शहर के जीवन को विषाक्त कर देंगे। बच्चे बेकार के उपद्रवी बन जाएंगे, युवा खुद को नशे में डुबो लेंगे, शक्तिशाली लोग उत्पीड़न शुरू कर देंगे, और बुजुर्गों को रोने के लिए छोड़ दिया जाएगा।

इसी प्रकार, एक देश भी एक घर है - एक राष्ट्रीय परिवार का घर।
यदि ऐसे घर में परलोक में विश्वास व्याप्त हो, तो वहां सच्चा सम्मान, सच्ची करुणा, निःस्वार्थ प्रेम, पारस्परिक सहायता, ईमानदार सेवा, अच्छे सामाजिक संबंध, दिखावटी दान, तथा अन्य अनेक श्रेष्ठताएं और सद्गुण पनपने लगेंगे।

परलोक में विश्वास बच्चों से कहता है: "झगड़ा करना बंद करो, क्योंकि जन्नत जीतने लायक है!" और उन्हें कुरान की शिक्षा के माध्यम से आत्म-नियंत्रण सिखाता है।

यह युवाओं से कहता है: “नरक सचमुच मौजूद है: अपनी असावधानी छोड़ दो!” इस प्रकार उन्हें होश में लाया जाता है।

यह अत्याचारी से कहता है: “यदि तुम ऐसा करते रहोगे तो तुम्हें घोर यातना मिलेगी-
इस मार्ग पर चलो!” और उन्हें न्याय के आगे झुकने पर मजबूर करता है।

यह बुजुर्गों से कहता है: "आने वाले संसार में न केवल शाश्वत खुशी होगी जो इस संसार में आपके द्वारा अनुभव की जाने वाली किसी भी चीज़ से कहीं ज़्यादा होगी, बल्कि शाश्वत यौवन भी होगा। उन्हें अपने लिए जीतने की कोशिश करें!" इस प्रकार उनके आंसुओं को मुस्कुराहट में बदल दिया जाता है।

परलोक में विश्वास हर समूह, विशेष या सार्वभौमिक, में अपने अनुकूल प्रभाव दिखाता है और उन्हें प्रकाशित करता है। समाजशास्त्रियों और नैतिक दार्शनिकों को, जो मानव जाति के सामाजिक जीवन से संबंधित हैं, इस पर ध्यान देना चाहिए। यदि परलोक में विश्वास से होने वाले हजारों लाभों में से बाकी लाभ हैं

परलोक की तुलना यदि उन पाँच या छः से की जाए, जिनका हमने संक्षेप में उल्लेख किया है, तो हम समझ सकते हैं कि केवल विश्वास ही इस लोक और परलोक में सुख का साधन है।

* * *

रिसाले-ए-नूर के अट्ठाईसवें शब्द और अन्य ग्रंथों में , शारीरिक पुनरुत्थान के बारे में मौजूद बेबुनियाद संदेहों को शांत करने के लिए शक्तिशाली उत्तर दिए गए थे। जो पाठक अधिक विस्तृत चर्चा चाहते हैं, वे इन लेखों का संदर्भ ले सकते हैं; यहाँ हम निम्नलिखित संक्षिप्त संकेत के साथ खुद को संतुष्ट करेंगे:

जिस प्रकार ईश्वरीय नामों का सबसे व्यापक दर्पण भौतिकता में पाया जाता है, उसी प्रकार ईश्वर का सबसे समृद्ध और सबसे सक्रिय केंद्र भी भौतिकता में पाया जाता है।

ब्रह्मांड के निर्माण के लिए उद्देश्य भी भौतिकता में निहित है। इसी तरह, भगवान की विविध कृपाओं की सबसे बड़ी विविधता भौतिकता में निहित है, साथ ही कई लोगों द्वारा अपनी आवश्यकताओं की भाषा के माध्यम से अपने निर्माता को दी गई प्रार्थनाओं और धन्यवाद के बीजों की सबसे बड़ी बहुलता भी भौतिकता में निहित है। और आध्यात्मिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीजों की सबसे बड़ी विविधता भी भौतिकता में निहित है।

चूँकि सैकड़ों सार्वभौमिक सत्य भौतिकता में केन्द्रित हैं, इसलिए इसे गुणा करने और पृथ्वी पर उपरोक्त सत्यों के प्रकटीकरण के साथ इसे अनुकूल बनाने के लिए, सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता भौतिक अस्तित्व में प्राणियों के क्रमिक कारवां को तैयार करता है और उन्हें भयानक गति और क्रियाशीलता के साथ उस शानदार प्रदर्शनी में भेजता है। फिर वह उन्हें विदा करता है और उनके स्थान पर दूसरों को भेजता है, जिससे ब्रह्मांड का कारखाना लगातार चलता रहता है। भौतिक उत्पादों को बुनकर, वह पृथ्वी को परलोक और स्वर्ग का बीज-बिस्तर बनाता है। वास्तव में, पेट की भूख को संतुष्ट करने के लिए, वह भूख के रूप में की जाने वाली स्थायित्व की प्रार्थना को ध्यान से सुनता है और उसे स्वीकार करता है। इस प्रार्थना का उत्तर देने के लिए, वह असंख्य प्रकार के सरल भोजन और कीमती उपहार तैयार करता है, जो सभी अलग-अलग सुख पैदा करते हैं। इससे बिना किसी संदेह के यह स्पष्ट हो जाता है कि परलोक में स्वर्ग के सबसे अधिक और विविध सुख भौतिक होंगे, तथा उस शाश्वत सुख-धाम की कृपा भी भौतिक होगी, जिसकी सभी मानव जाति आकांक्षा करती है।

सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और दानशील भगवान, भूख के रूप में पेट द्वारा की गई प्रार्थना को स्वीकार करते हैं और उसे लगभग अनंत प्रकार के खाद्य पदार्थ प्रदान करके सावधानी और विचारपूर्वक उत्तर देते हैं। मनुष्य ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है और उसे पृथ्वी का शासक नियुक्त किया गया है: हम निर्माता के पसंदीदा प्राणी और उपासक हैं। तो क्या यह संभव है कि सर्वशक्तिमान और दयालु, सर्वज्ञ और दानशील भगवान, जो पेट की प्रार्थना को स्वीकार करते हैं और उसका उत्तर देते हैं, वे अनन्त क्षेत्र में सार्वभौमिक, उच्च भौतिक सुखों के लिए सभी मानवता के पेट द्वारा की गई असंख्य, सार्वभौमिक प्रार्थनाओं को स्वीकार नहीं करेंगे, जिन्हें मानवजाति द्वारा सहज रूप से वांछित और आकांक्षा की जाती है? क्या यह संभव है कि वे इसका उत्तर शारीरिक पुनरुत्थान के साथ न दें, जिससे मानवजाति को अनंत काल तक संतुष्टि मिले? क्या वे मक्खी की भिनभिनाहट सुनेंगे, लेकिन गड़गड़ाहट नहीं? क्या वह एक आम सैनिक की ज़रूरतों पर ध्यान देगा, लेकिन पूरी सेना की ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ कर देगा? ऐसा करना असीम रूप से असंभव और बेतुका होगा।

दरअसल, जैसा कि आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है: उसमें वह सब होगा जो आत्मा चाहती है और जिससे आंखें प्रसन्न होती हैं (43:71), जन्नत के लोग अपनी स्थिति के अनुरूप, भौतिक सुखों का अनुभव करेंगे, जिनसे वे सबसे अधिक परिचित हैं, जिनके नमूने उन्होंने अपने सांसारिक अस्तित्व के दौरान चखे हैं। उनके प्रत्येक अंग- जीभ, आंख, कान, इत्यादि द्वारा की गई ईमानदारी से धन्यवाद और विशेष पूजा के लिए पुरस्कार उन अंगों के लिए विशेष भौतिक सुखों के रूप में दिया जाएगा। चमत्कारी कुरान भौतिक सुखों का इतना स्पष्ट रूप से वर्णन करता है कि उनके शाब्दिक अर्थों को स्वीकार न करना असंभव है: रूपक व्याख्याओं की तलाश करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

इस प्रकार, परलोक में विश्वास के फल और परिणाम दर्शाते हैं कि जिस प्रकार पेट का अस्तित्व, प्रकृति और आवश्यकताएँ भोजन के अस्तित्व का निर्णायक प्रमाण हैं, उसी प्रकार अनंत काल के लिए मानव जाति की जन्मजात आवश्यकता और इच्छा, साथ ही उनके पास मौजूद श्रेष्ठताएँ और क्षमताएँ जो परलोक में विश्वास के परिणामों और लाभों की मांग करती हैं, आने वाले संसार और स्वर्ग तथा उसके शाश्वत भौतिक सुखों के अस्तित्व के लिए निर्विवाद प्रमाण प्रदान करती हैं। साथ ही, पूर्णताएँ और सार्थक संकेत जो ब्रह्मांड को भरते हैं, और मानवता की अस्तित्वगत वास्तविकताएँ जो इन संकेतों से संबंधित हैं, परलोक, पुनरुत्थान और स्वर्ग और नरक के खुलने के क्षेत्र के निश्चित अस्तित्व की पूरी तरह से गवाही देती हैं। इस मूलभूत सत्य को रिसाले-ए-नूर के कई ग्रंथों में स्पष्ट रूप से समझाया गया है, जिनमें विशेष रूप से दसवां, अट्ठाईसवां और उनतीसवां शब्द, और तीसरी और नौवीं किरणें शामिल हैं। अधिक विस्तृत चर्चा के लिए, पाठकों को इन लेखों का संदर्भ दिया जाता है।

कुरान में नरक का वर्णन इतना स्पष्ट और सुस्पष्ट है कि इसके बारे में और अधिक वर्णन की आवश्यकता नहीं है। इस विषय पर विस्तृत चर्चा रिसाले-ए-नूर में पाई जा सकती है; यहाँ हम एक या दो तुच्छ संदेहों को दूर करने के लिए केवल दो या तीन बिंदुओं को संक्षेप में स्पष्ट करेंगे।

पहला बिंदु: नरक का विचार भय पैदा करके विश्वास के उपरोक्त फलों के आनंद को कम नहीं करता। क्योंकि अनंत ईश्वरीय दया भयभीत व्यक्ति से कहती है:

"मेरे पास आओ! पश्चाताप के द्वार से प्रवेश करो, ताकि नरक का अस्तित्व तुम्हें डराने के बजाय, स्वर्ग के सुखों से पूरी तरह परिचित कराए और तुम्हें और उन सभी प्राणियों को, जिनके अधिकारों का हनन किया गया है, बदला लेने में सक्षम बनाए, साथ ही तुम्हें आनंद भी दे। यदि तुम गुमराही में डूब गए हो, जिससे तुम बाहर नहीं निकल सकते, तो नरक का अस्तित्व अभी भी है

यह अनन्त विनाश से कहीं अधिक बेहतर है; यह अविश्वासियों के लिए एक प्रकार की दया भी है। मनुष्य और यहां तक कि बच्चे वाले जानवर भी अपने रिश्तेदारों, संतानों और मित्रों के सुख और खुशी से आनंद प्राप्त करते हैं, और एक मामले में वे स्वयं भी खुश होते हैं।

"और इसलिए अविश्वासी भौतिकवादियों से मैं यह कहूंगा: अपने गलत मार्गदर्शन के कारण, आप या तो अनंत काल तक अस्तित्वहीन रहेंगे या फिर नर्क में प्रवेश करेंगे। जहां तक अस्तित्वहीनता की बात है, यह पूरी तरह से बुराई है, और चूंकि इसका मतलब है कि आप और आपके सभी रिश्तेदार, पूर्वज और वंशज, जिनसे आप प्यार करते हैं और जिनकी खुशी से आप भी खुश होते हैं, उनका अनंत काल तक विनाश हो जाएगा, इसलिए अनंत काल तक अस्तित्वहीनता का विचार आपके दिल और आत्मा को हज़ारों नर्कों से भी ज़्यादा पीड़ा देता है। क्योंकि अगर नर्क नहीं होता, तो स्वर्ग भी नहीं होता। आपके अविश्वास के कारण, सब कुछ अस्तित्वहीन हो जाता है। लेकिन अगर आप नर्क जाते हैं और अस्तित्व के दायरे में रहते हैं, तो आपके प्रियजन और रिश्तेदार या तो स्वर्ग में खुश रहेंगे या अस्तित्व के दायरे में किसी एक मामले में दया से अनुग्रहित होंगे। इसका मतलब यह है कि आपको इस धारणा का बचाव करना चाहिए कि नरक मौजूद है, क्योंकि इसका विरोध करना अस्तित्वहीनता का समर्थन करना है, जो बदले में असंख्य रिश्तेदारों और प्रियजनों की खुशी को नष्ट करने का समर्थन करना है।”

नरक एक भयानक, राजसी क्षेत्र है जो अस्तित्व के क्षेत्र में महामहिम के संप्रभु से संबंधित कारावास का स्थान होने का बुद्धिमान और न्यायपूर्ण कार्य करता है, जो शुद्ध अच्छा है। जेल होने का कार्य करने के अलावा, नरक के कई अन्य कर्तव्य भी हैं, कई बुद्धिमान उद्देश्यों की पूर्ति करना और चिरस्थायी क्षेत्र से संबंधित कई कार्य करना। यह कई जीवित प्राणियों, जैसे कि नरक के स्वर्गदूतों का विस्मयकारी निवास भी है।

दूसरा बिन्दु: नरक का अस्तित्व और उसकी भयानक यातनाएं ईश्वर की असीम दया, सच्चे न्याय और संतुलित बुद्धि के विपरीत नहीं हैं।
बल्कि दया, न्याय और बुद्धि इसके अस्तित्व की मांग करते हैं। एक अत्याचारी को दंडित करना जो एक हजार निर्दोष लोगों के अधिकारों को कुचलता है या एक जंगली जानवर को मारना जो सौ डरे हुए जानवरों को टुकड़े-टुकड़े कर देता है, न केवल न्यायपूर्ण है, बल्कि उत्पीड़ितों के लिए एक महान दया है। अत्याचारी को माफ करना और जंगली जानवर को मुक्त छोड़ देना, गलत तरीके से की गई दया के एक कार्य के बदले में सैकड़ों निर्दोष लोगों के प्रति दया की कमी को दर्शाता है।

जो लोग जहन्नम में प्रवेश करेंगे उनमें वे लोग भी होंगे जो पूर्णतया काफिर हैं। वे इस कारण वहां प्रवेश करेंगे कि उन्होंने ईश्वरीय नामों का इन्कार करके उनके अधिकारों का उल्लंघन किया है, और उन्होंने उल्लंघन किया है।

उन सभी प्राणियों के अधिकार जो उन नामों की गवाही देते हैं, उनकी गवाही और महिमा के उच्च कर्तव्यों को नकार कर जो वे सृष्टि में नामों के प्रकट होने के सामने निभाते हैं। साथ ही, इस तथ्य को नकार कर कि सभी प्राणी ईश्वरीय प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के दर्पण हैं और इस प्रभुत्व का जवाब पूजा के साथ देते हैं, जो कि सृष्टि के निर्माण और ब्रह्मांड के निरंतर अस्तित्व का कारण है , वे अन्य सभी प्राणियों के अधिकारों का और भी अधिक उल्लंघन करते हैं। इसलिए अविश्वास इतना बड़ा अपराध है कि

इसे माफ नहीं किया जा सकता; यह वास्तव में इस श्लोक में निहित धमकी का हकदार है: निश्चय ही, परमेश्वर क्षमा नहीं करता कि उसके साथ भागीदार हों (4:48, 116)। उस अविश्वासी को नर्क में न डालना करुणा का गलत कार्य होगा, और उन असंख्य दावेदारों से न्याय और दया को रोकना होगा जिनके अधिकारों का उल्लंघन किया गया है। जिस तरह से ये दावेदार नर्क के अस्तित्व की मांग करते हैं, उसी तरह महिमा की दिव्य गरिमा और उनकी पूर्णता की भव्यता निश्चित रूप से इसकी मांग करती है।

यदि कोई विद्रोही अपराधी जो लोगों पर हमला करता है, यह कहकर शहर के गवर्नर की गरिमा और अधिकार का अपमान करता है: "आप मुझे जेल में नहीं डाल सकते!", भले ही शहर में कोई जेल न हो, गवर्नर उस बदतमीज़ दुष्ट को कैद करने के लिए एक जेल बनवा देगा। इसी तरह, अपने अविश्वास के माध्यम से, पूर्ण अविश्वासी ईश्वर की महिमा और अधिकार पर गंभीर हमला करते हैं; अपने इनकार के माध्यम से वे उनकी शक्ति की भव्यता का अपमान करते हैं और अपने आक्रमण के माध्यम से उनके प्रभुत्व की पूर्णता को अपमानित करते हैं।

नरक के चाहे जितने भी कार्य हों या न हों, तथा चाहे इसके अस्तित्व को आवश्यक बनाने वाले बुद्धि के कितने भी कारण या उदाहरण हों, फिर भी यह ईश्वर की गरिमा और महिमा ही है जो ऊपर वर्णित अविश्वासियों के लिए नरक के निर्माण की मांग करती है।

इसके अलावा, अविश्वास का सार भी नर्क का संकेत देता है। उदाहरण के लिए, अगर विश्वास का सार मूर्त हो जाए, तो यह अपने सुखों के साथ एक निजी स्वर्ग का रूप ले लेगा और ऐसा करने से, आने वाले स्वर्ग का स्वाद मिलेगा। इसी तरह, जैसा कि पहले और रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में चर्चा की गई है, अविश्वास, पाखंड और धर्मत्याग की आध्यात्मिक पीड़ा और पीड़ा ऐसी है कि अगर उन्हें मूर्त रूप दिया जाए, तो वे अविश्वास से बंधे लोगों के लिए एक निजी नरक का रूप ले लेंगे और उन्हें आने वाले नरक का स्वाद देंगे। साथ ही, यह ध्यान में रखते हुए कि इस दुनिया के क्षेत्र में छोटे-छोटे सत्य परलोक में विस्तृत वृक्ष बनेंगे, यह जहरीला बीज जो अविश्वास है, ज़क्कुम के वृक्ष के उगने का पूर्वाभास देता है, यह कहते हुए:

"मैं ही इसका मूल हूँ। जो दुखी लोग मुझे अपने दिल में रखते हैं, उनके लिए मेरा फल ज़क्कुम के उस कड़वे पेड़ का एक निजी नमूना है। "

चूँकि अविश्वास बहुत से अधिकारों का उल्लंघन है, इसलिए यह निश्चित रूप से एक अनंत बुरा अपराध है जो अनंत दंड का हकदार होगा। मानवीय न्याय पंद्रह वर्ष के कारावास की सजा को उचित मानता है - लगभग आठ मिलियन मिनट - एक मिनट या उससे कम समय में की गई हत्या के लिए; मानवीय न्याय ऐसी सजा को सार्वजनिक हित और पूरे समाज की भलाई के अनुरूप मानता है। इसलिए, चूँकि पूर्ण अविश्वास का एक उदाहरण एक हज़ार हत्याओं के बराबर है, इसलिए एक मिनट के पूर्ण अविश्वास के लिए लगभग आठ बिलियन मिनट तक पीड़ा सहना न्याय के उस कानून के अनुरूप है। एक व्यक्ति जो अपने जीवन का एक वर्ष अविश्वास में बिताता है, वह अनगिनत अरबों मिनट तक चलने वाली सजा का हकदार है, इस प्रकार आयत का अर्थ प्रकट होता है: वे हमेशा के लिए उसमें रहेंगे (4:169; 33:65)।

बुद्धिमानीपूर्ण कुरान में स्वर्ग और नरक के चमत्कारी वर्णन तथा रिसाले-ए-नूर में उनके अस्तित्व के प्रमाण , जो उससे निकलता है और उसकी व्याख्या करता है, के कारण और अधिक स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं रह जाती।

कुरान की अनेक आयतें जैसे:

> वे (समझदार लोग) आकाश और धरती की रचना पर विचार करते हैं (और प्रार्थना करते हैं): "हमारे रब! तूने इस (ब्रह्मांड) को अकारथ नहीं बनाया। तू महिमावान है, अतः हमें आग की यातना से बचा!" (3:191)

> "हमारे रब! हमसे जहन्नम की यातना दूर कर दे। उसकी यातना तो निरंतर पीड़ा है। निश्चय ही वह अंतिम स्थान और स्थायी निवास के रूप में कितनी बुरी है!" (25:65-66)

और नबी मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और सभी अन्य नबियों और सच्चे लोगों की नर्क की सज़ा से बचने की प्रार्थना, कि "हमें नर्क की आग से बचाओ! हमें नर्क की आग से छुड़ाओ! हमें नर्क की आग से बचाओ!" - इन सब से यह स्पष्ट हो जाता है कि

मानव जाति के लिए सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि उन्हें नरक में अनंत काल तक रहने वाले विनाश से कैसे बचाया जाए। नरक एक अत्यंत महत्वपूर्ण, जबरदस्त और विस्मयकारी वास्तविकता है - जिसे कुछ लोग आंतरिक दृष्टि और आध्यात्मिक अनावरण की क्षमता से संपन्न करके देख पाए हैं, या इसकी अभिव्यक्तियों और छायाओं को देख पाए हैं। और इस तरह की दृष्टि ने उन सभी को भयभीत होकर चिल्लाने पर मजबूर कर दिया है, “हमें इससे बचाओ!”

ब्रह्मांड में अच्छाई और बुराई, सुख और दुख, प्रकाश और अंधकार, गर्मी और ठंड, सुंदरता और कुरूपता, तथा मार्गदर्शन और पथभ्रष्टता का टकराव, सह-अस्तित्व और अंतर्संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए हैं और वे ज्ञान से भरे हुए हैं। यदि बुराई न हो, तो अच्छाई का अस्तित्व अविभाज्य होगा। यदि दर्द न हो, तो सुख का कोई अर्थ नहीं होगा। अंधकार के बिना प्रकाश का कोई महत्व नहीं होगा और गर्मी की विभिन्न डिग्री केवल ठंड के अस्तित्व के माध्यम से ही महसूस की जाती हैं।

कुरूपता के माध्यम से, सुंदरता का एक सत्य हज़ार सत्य बन जाता है, और हज़ारों अलग-अलग डिग्री की सुंदरता अस्तित्व में आती है। अगर नर्क न होता, तो स्वर्ग के कई सुख छिपे रह जाते। इन उदाहरणों से अनुमान लगाते हुए हम देखते हैं कि एक मामले में हर चीज़ अपने विपरीत के माध्यम से जानी जाती है; किसी एक चीज़ में निहित एक सत्य कई अंकुर पैदा करता है और कई सत्य बन जाता है। चूँकि ये परस्पर क्रियाएँ एक दूसरे से जुड़ी होती हैं, इसलिए ये एक दूसरे से जुड़ी होती हैं।

मिश्रित प्राणी इस क्षणभंगुर निवास से शाश्वत स्थायित्व के निवास में प्रवाहित होते हैं, निश्चित रूप से, जैसे कि अच्छाई, आनंद, प्रकाश, सौंदर्य और विश्वास जैसी चीजें स्वर्ग में प्रवाहित होती हैं, वैसे ही बुराई, दर्द, अंधकार, कुरूपता और अविश्वास जैसे हानिकारक मामले नरक में प्रवाहित होते हैं। इस निरंतर अशांत ब्रह्मांड की बाढ़ इन दो झीलों में खाली हो जाती है। हम इस चर्चा को यहीं समाप्त करते हैं, पाठकों को उनतीसवें वचन के अंत में सूक्ष्म और सार्थक बिंदुओं और मामलों का संदर्भ देते हैं।

जोसेफ स्कूल में अपने साथी छात्रों से मैं यह कहना चाहूँगा: अगर हम अपनी सांसारिक कैद का फ़ायदा अच्छे कामों के लिए उठाते हैं और जैसे-जैसे हम उन कई पापों से बच जाते हैं जिन्हें यहाँ करना संभव नहीं है, अपने पिछले पापों का पश्चाताप करते हैं और अपने अनिवार्य धार्मिक कर्तव्यों का पालन करते हैं, तो हम अपनी जेल की ज़िंदगी के हर घंटे को पूरे दिन की इबादत के बराबर बना पाएँगे। अगर हम ऐसा कर पाते हैं, तो हमारी कैद उस भयानक शाश्वत कैद से बचने का सबसे अच्छा मौक़ा होगा; यह उस रोशनी से भरे स्वर्ग के दरवाज़े की हमारी कुंजी होगी। लेकिन अगर हम इस अवसर को चूक जाते हैं, तो हमारा परलोक दुखों से भर जाएगा, ठीक वैसे ही जैसे यह दुनिया दुखों से भरी है, और हमें वह सज़ा मिलेगी जो इस आयत में बताई गई है: वह (इस तरह) इस दुनिया और परलोक दोनों का नुकसान उठाता है (22:11)।

"परमेश्वर सर्व-महान है" का पुनरुत्थान से सम्बन्ध

यह भाग बलिदान के पर्व के दौरान लिखा गया था। बलिदान के इन पवित्र दिनों में, तीन सौ मिलियन (अब एक अरब से ज़्यादा) लोग एक स्वर में घोषणा करते हैं: "ईश्वर सर्व-महान है! ईश्वर सर्व-महान है!

महान! ईश्वर महान है!” ऐसा लगता है मानो धरती के साथी ग्रह आकाश में पवित्र शब्द सुन रहे हों कि ईश्वर महान है! साथ ही, अराफात की पहाड़ी पर, हज़ारों (अब लाखों) तीर्थयात्री एक स्वर में घोषणा करते हैं कि ईश्वर महान है! यह वही घोषणा है जो ईश्वर के दूत और उनके साथियों ने चौदह सौ साल पहले की थी, और यह ईश्वर की उदात्त उपाधियों पृथ्वी के स्वामी और स्वर्ग के स्वामी के माध्यम से ईश्वरीय प्रभुत्व की सार्वभौमिक अभिव्यक्ति के लिए व्यापक, सार्वभौमिक पूजा के रूप में एक प्रतिक्रिया है। मैं यह सब कल्पना करने में सक्षम था और इसके बारे में आश्वस्त हो गया।

फिर मैंने सोचा कि क्या इस पवित्र वाक्यांश का पुनरुत्थान के प्रश्न से कोई संबंध है जिस पर हम चर्चा कर रहे हैं। अचानक मेरे मन में आया कि इस पवित्र वाक्यांश के साथ-साथ इस्लामी आस्था के अन्य वाक्यांश और प्रतीक जैसे कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है; सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! और ईश्वर की महिमा सर्व-प्रसिद्ध है!, जिन्हें "स्थायी अच्छे कार्य" के रूप में संदर्भित किया जाता है, इसे एक विशेष और सार्वभौमिक तरीके से याद करते हैं और इसके साकार होने का संकेत देते हैं।

उदाहरण के लिए, वाक्यांश ईश्वर महान है! का अर्थ एक तरह से यह है कि ईश्वर की शक्ति और ज्ञान हर चीज से महान है: कुछ भी उसके ज्ञान या उसकी शक्ति के नियंत्रण और अधिकार से बच नहीं सकता। वे उन चीजों से असीम रूप से महान हैं जिनसे हम सबसे अधिक डरते हैं। इसका मतलब यह है कि उनके पास उन चीजों को पूरा करने की पूर्ण क्षमता है जो पुनरुत्थान लाने, हमें अस्तित्वहीनता से बचाने और शाश्वत खुशी प्रदान करने से कहीं अधिक महान हैं। वे ऐसी चीजें करने में सक्षम हैं जिन्हें हम अजीब, अविश्वसनीय या यहां तक कि अकल्पनीय भी मान सकते हैं। इस कारण से, जैसा कि आयत में स्पष्ट रूप से कहा गया है: आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक आत्मा के निर्माण (रचना और पुनरुत्थान) के समान है (31:28), मानव जाति का पुनरुत्थान और उनका पुनरुत्थान के स्थान पर एक साथ इकट्ठा होना उस शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि एक आत्मा का निर्माण। यह इस सत्य के संबंध में है कि, जब गंभीर आपदाओं का सामना करना पड़ता है या महत्वपूर्ण उपक्रम करने का प्रयास करते हैं, तो सभी मुसलमान कहते हैं: "ईश्वर महान है! ईश्वर महान है!" इसे अपने लिए सांत्वना, शक्ति और समर्थन का स्रोत बना रहे हैं।

जैसा कि नौवें वचन में बताया गया था, वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है!, ईश्वर सर्व-महिमावान है! और सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! विहित प्रार्थनाओं के बीज और सारांश बनाते हैं - सभी पूजाओं का चरमोत्कर्ष -

और इन प्रार्थनाओं के अर्थ पर जोर देने और उनमें किसी भी दोष की भरपाई करने के लिए, उन्हें प्रार्थना के दौरान और बाद में दोनों में शामिल किया जाता है

प्रार्थनाएँ। वे तीन सर्वोच्च सत्यों की ओर भी इशारा करती हैं और हमारे मन में उठने वाले उन सवालों के शक्तिशाली उत्तर प्रदान करती हैं जो ब्रह्मांड में दिखाई देने वाली अजीब, उत्तम और असाधारण चीज़ों को देखकर हमें होने वाले विस्मय, प्रसन्नता और विस्मय से उत्पन्न होते हैं - ऐसी चीज़ें जो हमें आश्चर्य से भर देती हैं और हमें उनके विस्मय और भव्यता के कारण धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके अलावा, जैसा कि सोलहवें वचन के अंत में उल्लेख किया गया है, एक निजी सैनिक किसी उत्सव में फील्ड मार्शल के साथ राजा की उपस्थिति में प्रवेश कर सकता है और उसे सीधे जान सकता है; हालाँकि, अन्य समय में, वह उसे केवल अपने तत्काल कमांडर के माध्यम से जानता है। इसी तरह, कुछ हद तक संतों की तरह, हज करने वाला व्यक्ति ईश्वर को उसकी उपाधियों पृथ्वी के भगवान और सभी दुनियाओं के भगवान के माध्यम से जानना शुरू कर देता है। जैसे-जैसे दिव्य भव्यता की अभिव्यक्तियों के स्तर किसी व्यक्ति के दिल में खुलते हैं, वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है! को दोहराकर वे उन सभी आश्चर्यजनक सवालों के जवाब देते हैं जो आत्मा को अभिभूत करते हैं। इसके अलावा, जैसा कि तेरहवीं झलक के अंत में समझाया गया था, वाक्यांश ईश्वर सर्व-महान है! शैतान की सबसे चालाक साजिशों के लिए सबसे प्रभावी उत्तर प्रदान करता है, उन्हें जड़ से ही काट देता है; इसी तरह यह परलोक के बारे में हमारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का भी सबसे संक्षिप्त लेकिन शक्तिशाली उत्तर देता है।

वाक्यांश "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है" भी पुनरुत्थान का सुझाव देता है और इसकी मांग करता है। यह हमें बताता है: "आखिरत के बिना, मैं वस्तुतः अर्थहीन हो जाऊंगा। क्योंकि इस वाक्यांश से मेरा मतलब यह है: अनंत काल से लेकर अनंत काल तक की सभी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर के ही हैं, चाहे उन्हें किसने और किसको अर्पित किया हो। यह केवल शाश्वत खुशी का वादा है - सर्वोच्च उदारता - जो वास्तव में उदारता को प्रचुर बनाती है और सभी सचेत प्राणियों को अस्तित्वहीनता की स्थायी आपदा से बचाती है। केवल शाश्वत खुशी में ही मेरा अस्तित्व सही अर्थ पा सकता है।"

हर आस्तिक द्वारा प्रतिदिन कम से कम एक सौ पचास बार पवित्र प्रार्थना के बाद किया जाने वाला 'सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं! ' का पाठ न केवल अपने आप में एक पूजा का कार्य है, बल्कि यह प्रशंसा और धन्यवाद की अभिव्यक्ति भी है जो पूर्व-अनंत काल से लेकर बाद के अनंत काल तक फैली हुई है: यह केवल स्वर्ग और शाश्वत सुख के लिए अग्रिम मूल्य और तत्काल शुल्क हो सकता है। उनके माध्यम से की जाने वाली प्रशंसा और धन्यवाद इस दुनिया की क्षणभंगुर कृपाओं तक सीमित नहीं हो सकती, जो क्षणभंगुरता के दर्द से ग्रसित है; लोग इन्हें सही मायने में शाश्वत कृपाओं की प्राप्ति के साधन के रूप में देखते हैं।

जहाँ तक पवित्र वाक्यांश का सवाल है, सर्व-महिमावान ईश्वर है!, जो यह घोषित करता है कि ईश्वर साझीदारों, दोषों, कमियों, अन्याय, नपुंसकता, निर्दयता, आवश्यकता या धोखे से ऊपर है - वास्तव में, कोई भी नकारात्मक विशेषता जो उसकी पूर्ण पूर्णता, अनुग्रह, सौंदर्य और महिमा के विपरीत है - यह परलोक और उसके स्वर्ग की शाश्वत खुशी की ओर भी इशारा करता है, जो उसकी कृपा, सौंदर्य और महिमा की महिमा और उसकी संप्रभुता की पूर्णता का साधन है। क्योंकि, जैसा कि पहले बताया जा चुका है, यदि कोई शाश्वत खुशी नहीं होती, तो उसकी संप्रभुता और उसकी पूर्णता, उसकी महिमा, अनुग्रह, सौंदर्य और दया दोष और दोष से कलंकित हो जाती।

इन तीन पवित्र वाक्यांशों की तरह, ईश्वर के नाम पर; ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और इसी तरह के अन्य कथन सभी आस्था के स्तंभों के बीज हैं: वे विश्वास के स्तंभों और कुरान की सच्चाइयों दोनों के सार हैं। पाँच दैनिक प्रार्थनाओं के बीज होने के अलावा, ऊपर वर्णित तीन वाक्यांश कुरान के बीज भी हैं, जो कई उज्ज्वल सूराओं की शुरुआत में शानदार रत्नों की तरह चमकते हैं। वे रिसाले-ए-नूर के सच्चे स्रोत और आधार भी हैं , जिसके कई हिस्से मेरे दिमाग में विहित प्रार्थनाओं के बाद इन वाक्यांशों को पढ़ते समय बनने लगे; वे इसकी सच्चाईयों के बीज हैं। साथ ही, पैगंबर मुहम्मद की पूजा के दृष्टिकोण से, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और उनके संदेशवाहक में शामिल संतत्व के दृष्टिकोण से, ये वाक्यांश "मुस्लिम मार्ग" के नियमित पाठ हैं। इस प्रकार, इन्हें पाँच दैनिक प्रार्थनाओं में से प्रत्येक के बाद करोड़ों विश्वासियों द्वारा दोहराया जाता है, जैसे कि वे स्मरण का एक विशाल चक्र बना रहे हों। अपने हाथों में प्रार्थना की माला लेकर, वे घोषणा करते हैं कि परमेश्वर की महिमा सर्व-प्रसिद्ध है! तैंतीस बार, सभी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है!

तैंतीस बार, और अल्लाह महान है! तैंतीस बार।

अब आप निश्चित रूप से समझ गए होंगे कि इस तरह की तिलावत कितनी पुण्यकारी और सवाबपूर्ण है, और कैसे, जैसा कि ऊपर बताया गया है, वे कुरान, विश्वास और पवित्र प्रार्थनाओं के अंश और बीज हैं।

जिस प्रकार इस ग्रंथ के आरंभ में चर्चित प्रथम विषय ने पांच दैनिक विहित प्रार्थनाओं के संबंध में एक सुखद शिक्षा प्रदान की, उसी प्रकार यह अंतिम विषय भी प्रार्थनाओं के बाद नियमित पाठ के संबंध में एक महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है।

परमेश्वर के उपकारों के लिए उसकी स्तुति हो!

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

नौवां मामला

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

रसूल उस चीज़ पर ईमान लाते हैं जो उनके रब की ओर से उन पर उतरी है और ईमान वाले भी ईमान लाते हैं। हर एक अल्लाह, उसके फ़रिश्तों, उसकी किताबों और उसके रसूलों पर ईमान लाता है। "हम उसके रसूलों में से किसी के बीच कोई भेद नहीं करते।" (आयत के अंत तक) (2:285)

एक विस्मयकारी प्रश्न और एक विशाल ईश्वरीय कृपा के प्रकट होने से उत्पन्न मन की स्थिति ने मुझे इस व्यापक, उच्च और उत्कृष्ट श्लोक के विषय में एक लंबी, सार्वभौमिक बात समझाने के लिए प्रेरित किया है।

यह पूछा गया: जबकि ईश्वर और परलोक में विश्वास, सूर्य की तरह, अविश्वास के सभी अंधकार को दूर कर देता है, ऐसा क्यों है कि यदि कोई व्यक्ति विश्वास के सत्यों में से किसी एक को अस्वीकार करता है, तो उसे अविश्वासी क्यों माना जाता है? यदि वे उस विशेष सत्य को स्वीकार नहीं करते हैं, तो उन्हें मुसलमान क्यों नहीं माना जाता है? इसके अलावा, ऐसा क्यों है कि जो व्यक्ति विश्वास के स्तंभों और सत्यों में से किसी एक को अस्वीकार करता है, उसे धर्मत्यागी माना जाता है, जो पूर्ण अविश्वास में गिर गया है और जिसने इस्लाम के समुदाय को छोड़ दिया है? निश्चित रूप से अन्य स्तंभों में उनका विश्वास उन्हें पूर्ण अविश्वास से बचाएगा?

उत्तर: विश्वास एक एकल, एकीकृत सत्य है जो छह स्तंभों से बना है: इसे विभाजित नहीं किया जा सकता। यह कुछ सार्वभौमिक है जिसे भागों में विभाजित नहीं किया जा सकता: यह एक अविभाज्य संपूर्ण है। क्योंकि विश्वास का प्रत्येक स्तंभ अन्य स्तंभों को उन प्रमाणों के साथ सिद्ध और स्थापित करता है जो इसे सिद्ध और स्थापित करते हैं।

वे सभी एक दूसरे के सर्वोच्च शक्तिशाली प्रमाण हैं। चूँकि ऐसा है, इसलिए एक अमान्य धारणा जो सभी स्तंभों को उनके सभी प्रमाणों के साथ हिला नहीं सकती, वास्तव में उन स्तंभों में से किसी एक को या यहाँ तक कि एक भी सत्य को अमान्य नहीं कर सकती; यह उन्हें अस्वीकार नहीं कर सकती। कोई व्यक्ति केवल अस्वीकृति के आवरण के नीचे जानबूझकर अपनी आँखें बंद कर सकता है - पूर्ण अस्वीकृति नहीं - और एक प्रकार का अविश्वास कर सकता है जो सरासर हठ से उपजा है। हालाँकि, वे धीरे-धीरे पूर्ण अविश्वास में पड़ जाएँगे: परिणामस्वरूप, उनकी मानवता नष्ट हो जाएगी और उनके शरीर और आत्मा दोनों को नर्क में भेज दिया जाएगा। इसलिए इस संदर्भ में, ईश्वर की कृपा से, हम इस सर्वोच्च मामले को छह बिंदुओं में संक्षिप्त सारांश और निष्कर्ष के रूप में समझाएँगे।

पहला बिंदु: ईश्वर में विश्वास, अपने स्वयं के प्रमाणों के साथ, अन्य सभी स्तंभों और परलोक में विश्वास को स्थापित करता है, जैसा कि विश्वास के फलों के सातवें मामले में स्पष्ट रूप से दिखाया गया है। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि एक पूर्व-शाश्वत और

प्रभुता की शाश्वत संप्रभुता, एक शाश्वत ईश्वरीय शासन, असीम ब्रह्मांड और उसमें मौजूद सभी चीज़ों पर इस तरह शासन करता है जैसे कि वह कोई महल, शहर या देश हो। यह संप्रभुता पृथ्वी के गोले को संतुलित और व्यवस्थित तरीके से घुमाती है, इसे ज्ञान के असंख्य उदाहरणों से बदलती है, और परमाणुओं, ग्रहों, मक्खियों और तारों को एक साथ सुसज्जित और निर्देशित करती है जैसे कि प्रत्येक एक अनुशासित, सुव्यवस्थित सेना हो; यह उन्हें लगातार प्रशिक्षित करती है और उन्हें कार्य करने, यात्रा करने और अपने आदेश और इच्छा से विभिन्न कर्तव्यों को पूरा करने के लिए प्रेरित करती है जैसे कि वे उदात्त युद्धाभ्यास या पूजा परेड में लगे हुए हों। तो क्या यह संभव है कि इस शाश्वत, शाश्वत, स्थायी संप्रभुता का कोई शाश्वत स्थान या अभिव्यक्ति का शाश्वत स्थान न हो, अर्थात परलोक? भगवान न करे! इसका अर्थ है सर्वशक्तिमान ईश्वर की प्रभुता और - जैसा कि सातवें मामले में वर्णित है - उनके अधिकांश नाम और उनके पूर्णतः आवश्यक अस्तित्व के प्रमाण सभी परलोक की आवश्यकता रखते हैं और इसकी गवाही देते हैं। तो देखें और समझें कि विश्वास के इस स्तंभ का कितना शक्तिशाली समर्थन है और इस पर ऐसे विश्वास करें जैसे कि आप इसे देख सकते हैं!

और जिस तरह आख़िरत पर ईमान के बिना खुदा पर ईमान मुमकिन नहीं है, उसी तरह उसके रसूलों और किताबों पर ईमान के बिना भी यह मुमकिन नहीं है। अपनी ख़ुदियत को ज़ाहिर करने और यह दिखाने के लिए कि उसे इबादत का एकाधिकार है, अल्लाह, जो कि सर्व-पूज्य है, ने इस ब्रह्माण्ड को एक मूर्त किताब के तौर पर बनाया है जो यह साबित करती है कि इसका रचयिता हमेशा से चाहा जाने वाला है। इस किताब का हर पन्ना अपने आप में एक छोटी किताब है जो कि अर्थों से भरी हुई है और हर पंक्ति ज्ञान से भरा हुआ पन्ना है। यह किताब एक ऐसे मूर्त क़ुरआन की तरह है जो कि अनंत सृजनात्मक “आयतों” और शब्दों, बिंदुओं और अक्षरों से भरा हुआ है, जिनमें से हर एक चमत्कार है। यह एक शानदार रहमत की मस्जिद की तरह है, जिसका अंदरूनी हिस्सा अनगिनत शिलालेखों और अलंकरणों से सजा हुआ है, और जिसके हर कोने में अलग-अलग किस्म के प्राणी हैं जो अपनी प्रकृति और अपने अस्तित्व के ईश्वरीय उद्देश्यों के अनुसार इबादत में लीन हैं। तो क्या यह संभव है कि ईश्वर, जो सर्व-पूज्य है, इस तरह से ब्रह्मांड का निर्माण करे और इस विशाल पुस्तक के अर्थ सिखाने के लिए गुरुओं को न भेजे? क्या यह संभव है कि वह उस विशाल "कुरान" की आयतों की व्याख्या करने का काम टिप्पणीकारों को न सौंपे, जो दर्शाता है कि यह अनंतकाल से चाहने वाले का काम है? क्या यह संभव है कि वह इस विशाल मस्जिद में विभिन्न तरीकों से पूजा करने वाले सभी लोगों का नेतृत्व करने के लिए इमामों को नियुक्त न करे, या वह उन गुरुओं, टिप्पणीकारों और पूजा के नेताओं को आदेश - दिव्य शास्त्र या पुस्तकें - न दे? भगवान न करे, एक लाख बार!

साथ ही, सचेत प्राणियों को अपनी दया की सुंदरता, अपनी करुणा की उत्कृष्टता और अपने प्रभुत्व की पूर्णता दिखाने के लिए ताकि वह उन्हें प्रशंसा और धन्यवाद देने के लिए प्रोत्साहित कर सके, सर्व-दयालु और सर्व-उदार निर्माता ने ब्रह्मांड को एक भोज कक्ष, एक प्रदर्शनी केंद्र और भ्रमण स्थल के रूप में बनाया है, जिसमें स्वादिष्ट उपहारों और अमूल्य, अद्भुत कलाओं की अनंत किस्में व्यवस्थित हैं। तो, क्या यह संभव है कि वह भोज में इन सचेत प्राणियों से बात न करे या अपने दूतों के माध्यम से उन्हें उनके द्वारा दिए गए उपकारों के लिए धन्यवाद के अपने कर्तव्यों और उनकी दया के प्रकटीकरण और उनके द्वारा खुद को प्यार किए जाने के जवाब में उनकी पूजा के कर्तव्यों के बारे में सूचित करने में विफल न हो? भगवान न करे, एक हजार बार!

इसके अलावा, निर्माता अपनी कला से प्यार करता है और चाहता है कि लोग उससे प्यार करें। उदाहरण के लिए, जैसा कि मानव मुख द्वारा प्राप्त होने वाले हज़ारों सुखों को ध्यान में रखकर संकेत दिया गया है, वह चाहता है कि उसकी कला को प्रशंसा और स्वीकृति मिले। और इसलिए उसने ब्रह्मांड को अमूल्य कलाओं से सजाया है और पूरे ब्रह्मांड में अपनी पारलौकिक सुंदरता के निशान इस तरह से प्रदर्शित किए हैं कि यह स्पष्ट हो जाता है कि वह खुद को जाना और प्यार करना चाहता है। तो क्या यह संभव है कि ऐसा निर्माता मानवता से बात न करे, जो ब्रह्मांड में जीवित प्राणियों का कमांडर है, उन कुछ सबसे प्रतिष्ठित लोगों के माध्यम से जिन्हें उसने संदेशवाहक के रूप में भेजा है? क्या यह बिल्कुल भी संभव है कि उसकी ललित कलाओं की सराहना न की जाए और उसके नामों की असाधारण सुंदरता को महत्व न दिया जाए? क्या यह संभव है कि उसके उन कार्यों का कोई जवाब न हो जो उसे जाना और प्यार करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं? भगवान न करे, एक लाख बार!

इसके अलावा, अपने असीम उपहारों और उपहारों के माध्यम से, जो उद्देश्य, विकल्प और इच्छा को इंगित करते हैं, सर्वज्ञ वक्ता स्पष्ट रूप से और बिल्कुल सही समय पर जीवित प्राणियों द्वारा उनकी प्राकृतिक आवश्यकताओं के लिए की गई सभी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है, साथ ही उन सभी अनुरोधों का भी जो वे अपने सहज स्वभाव की भाषाओं के माध्यम से करते हैं। तो क्या यह संभव है कि वह सबसे तुच्छ जीवित प्राणी से बात करे और उनकी सबसे तुच्छ आवश्यकताओं को संबोधित करे, फिर भी मानवजाति के आध्यात्मिक नेताओं से बात करने में विफल हो जाए या मना कर दे, जो उसकी रचनाओं में सबसे बेहतरीन हैं, जिनके पास सृष्टि का प्रबंधन करने का अधिकार है और जो पृथ्वी पर अधिकांश प्राणियों पर कमांडर के रूप में उन्हें दिए गए पद का आनंद लेते हैं? यह देखते हुए कि वह अन्य सभी जीवित प्राणियों से बात करता है, क्या उसे मनुष्यों से बात नहीं करनी चाहिए और उन्हें अपने आदेश नहीं भेजने चाहिए - दिव्य शास्त्र या पुस्तकें? भगवान न करे कि ऐसा हो!

इस प्रकार, अपनी निश्चितता और असंख्य प्रमाणों के साथ, ईश्वर में विश्वास पैगम्बरों और पवित्र पुस्तकों या धर्मग्रंथों में विश्वास को सिद्ध और स्थापित करता है।
तथ्य.

उस व्यक्ति के प्रति प्रतिक्रिया में जो अपने सभी कलाकृतियों के माध्यम से खुद को ज्ञात और प्यार करता है, और जो चाहता है और आदेश देता है कि उसका धन्यवाद किया जाए, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उसे जाना और उसे जाना, उससे प्यार किया और उसे प्यार किया, उसका धन्यवाद किया और दूसरों को भी उसका धन्यवाद करने के लिए प्रेरित किया; उन्होंने यह सब कुरान की सच्चाई के माध्यम से सबसे सही तरीके से किया, जो ब्रह्मांड को प्रतिध्वनित करता है। साथ ही, "सर्व-महिमावान ईश्वर है!" "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!" और "ईश्वर सर्व-महान है!" की उनकी घोषणाओं के साथ पैगंबर मुहम्मद ने पृथ्वी को गूंजने दिया, आकाश के माध्यम से प्रतिध्वनित किया और भूमि और समुद्र को परमानंद की ऊंचाइयों पर पहुंचा दिया। इसके अलावा, चौदह शताब्दियों के लिए पैगंबर मुहम्मद ने दुनिया के आधे हिस्से या मानव जाति के एक चौथाई हिस्से का नेतृत्व किया है, व्यापक, सार्वभौमिक पूजा के साथ निर्माता के आधिपत्य की सभी अभिव्यक्तियों का जवाब दिया है, और कुरान के संदेशों को ब्रह्मांड और सदियों के माध्यम से घोषित और सिखाकर उनके दिव्य उद्देश्यों को पूरा किया है। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने मानव जाति के सम्मान, मूल्य और कर्तव्यों का प्रदर्शन किया और अपने अनगिनत चमत्कारों के माध्यम से स्वयं निर्माता द्वारा पुष्टि की गई। तो क्या यह संभव है कि पैगम्बर मुहम्मद, जो ईश्वर की दृष्टि में इतने योग्य हैं, ईश्वर के प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ, सबसे उत्कृष्ट दूत और सबसे महान संदेशवाहक न हों? ईश्वर न करे! एक लाख बार, ईश्वर न करे!

इस प्रकार अपने सभी प्रमाणों के साथ, “मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है” की सच्चाई, “मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं” की सच्चाई को साबित और स्थापित करती है।

इसके अलावा, क्या यह संभव है कि ब्रह्माण्ड का निर्माता प्राणियों को एक दूसरे से असंख्य भाषाओं में बात करने के लिए प्रेरित करे, उनकी बातें समझे और सुने, लेकिन स्वयं मौन रहे? भगवान न करे!

इसके अलावा, क्या यह बिल्कुल भी उचित है कि वह किसी तरह के आदेश के माध्यम से ब्रह्मांड में अपने उद्देश्यों और ज्ञान के उदाहरणों की घोषणा न करे? क्या यह संभव है कि वह कुरान जैसी कोई किताब न भेजे, जो ब्रह्मांड की पहेली को सुलझाती है और सभी आत्माओं द्वारा पूछे गए तीन भयानक सवालों के सही जवाब देती है, अर्थात्: "प्राणी कहाँ से आते हैं?",

"वे कहां जा रहे हैं?", और "वे क्यों एक के बाद एक काफिले के साथ चलते हैं, कुछ देर रुकते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं?" भगवान न करे!

चमत्कारी कुरान ने मानव इतिहास की चौदह शताब्दियों को प्रकाशित किया है। यह हर घंटे करोड़ों सम्मानित भाषाओं में प्रसारित होता है और लाखों लोगों के दिलों में अपनी पवित्रता के साथ अंकित होता है जो इसे याद करते हैं। अपने नियमों के माध्यम से यह मानव जाति के एक बड़े हिस्से को नियंत्रित करता है, उनकी आत्माओं, मन, हृदय और मन को शिक्षित, शुद्ध और निर्देशित करता है। जैसा कि रिसाले-ए-नूर के कुछ हिस्सों में दिखाया गया है, कुरान में चमत्कारीता के चालीस पहलू हैं। उन्नीसवें पत्र में यह समझाया गया है कि इनमें से प्रत्येक पहलू के माध्यम से कुरान मानव जाति के एक अलग वर्ग या स्तर को संबोधित करता है। इसके अलावा, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो स्वयं कुरान का चमत्कार हैं, अपने कई चमत्कारों के माध्यम से निर्णायक रूप से साबित करते हैं कि कुरान ईश्वर का वचन है। तो क्या यह संभव है कि यह चमत्कारी कुरान शाश्वत वक्ता और सर्व-स्थायी निर्माता का वचन और आदेश न हो?

भगवान न करे! एक लाख बार, भगवान न करे!

अर्थात्, अपने सभी प्रमाणों के साथ, ईश्वर में विश्वास सिद्ध करता है और स्थापित करता है कि कुरान ईश्वर का वचन है।

इसके अलावा, क्या यह संभव है कि सर्व-प्रतापी शासक, जो लगातार पृथ्वी को जीवित प्राणियों से भरता और खाली करता है और हमारे इस संसार को चेतन प्राणियों से आबाद करता है ताकि खुद को जाना जाए, पूजा जाए और महिमामंडित किया जाए - यह संभव है कि वह स्वर्ग और सितारों को खाली और रिक्त छोड़ दे, उनके लिए उपयुक्त निवासियों का निर्माण किए बिना और उन्हें इन ऊंचे महलों में बसाए बिना; क्या यह संभव है कि वह अपनी सबसे विस्तृत भूमि में अपने प्रभु की संप्रभुता को सेवकों, राजसी लोगों, अधिकारियों, दूतों, लेफ्टिनेंटों, पर्यवेक्षकों, दर्शकों, उपासकों या विषयों के बिना छोड़ दे? भगवान न करे! स्वर्गदूतों की संख्या के लिए, भगवान न करे!

इसके अलावा, सर्वज्ञ शासक, सर्वज्ञ और सर्व-करुणामयी ने ब्रह्मांड को एक पुस्तक के रूप में लिखा है; वह पेड़ों की पूरी जीवन-कथा और घास और पौधों के जीवन-कर्तव्यों को उनके बीजों में अंकित करता है। उसने सचेत प्राणियों के जीवन को उनकी स्मृतियों में सटीक रूप से दर्ज किया है, जो सरसों के बीज जितनी छोटी हैं; वह अपने सभी प्रभुत्वों और अपनी संप्रभुता के सभी क्षेत्रों में होने वाली सभी क्रियाओं और घटनाओं को असंख्य तस्वीरों के साथ संरक्षित करता है। वह पूर्ण न्याय, ज्ञान और न्याय की अभिव्यक्ति और प्राप्ति की अनुमति देने के लिए शक्तिशाली स्वर्ग और नर्क, सर्वोच्च पुल और न्याय के सर्वोच्च तराजू बनाता है।

दया, जो उनके प्रभुत्व की सबसे महत्वपूर्ण नींव में से एक है।

क्या यह संभव है कि जो यह सब करता है, वह ब्रह्माण्ड से संबंधित मानव जाति के सभी कार्यों को दर्ज न करे? क्या यह संभव है कि वह उनके कर्मों को दर्ज न करे ताकि उन्हें पुरस्कृत या दंडित किया जा सके, न ही उनके अच्छे और बुरे कर्मों को ईश्वरीय नियति की पट्टियों पर लिखे?

भगवान न करे! ईश्वरीय निर्धारण या नियति की सर्वोच्च पट्टिका पर अंकित अक्षरों की संख्या, भगवान न करे!

इस प्रकार ईश्वर में विश्वास की सच्चाई, देवदूतों में विश्वास और ईश्वरीय नियति या नियति में विश्वास दोनों की सच्चाई को साबित और स्थापित करती है। विश्वास के स्तंभ एक दूसरे को उसी तरह से साबित और स्थापित करते हैं जैसे सूरज दिन के उजाले को दिखाता है और दिन का उजाला सूरज को दिखाता है।

दूसरा बिन्दु: ईश्वर द्वारा उतारी गई पुस्तकों और पैगम्बरों - विशेषकर कुरान और पैगम्बर मुहम्मद - द्वारा किए गए सभी दावे पाँच या छह बुनियादी बिन्दुओं पर आधारित हैं, जिन्हें वे लगातार सिखाने और साबित करने का प्रयास करते रहे हैं। उनकी पैगम्बरी और सत्यता की गवाही देने वाले सभी प्रमाण और सबूत इन बुनियादी बातों से संबंधित हैं और उनकी सत्यता की पुष्टि करते हैं।

ये मूलभूत बातें हैं ईश्वर में विश्वास, परलोक में विश्वास, तथा आस्था के अन्य स्तंभों में विश्वास।

कहने का मतलब यह है कि विश्वास के छह स्तंभों को अलग करना संभव नहीं है। हर एक स्तंभ बाकी को साबित करता है और वे सभी एक दूसरे की आवश्यकता और आवश्यकता को पूरा करते हैं। छह स्तंभ मिलकर एक पूरे का निर्माण करते हैं जो बिल्कुल अविभाज्य है। एक शक्तिशाली पेड़ पर विचार करें - जैसे कि स्वर्ग का तूबा पेड़ - जिसकी जड़ें स्वर्ग में हैं। उस शक्तिशाली पेड़ की प्रत्येक शाखा, फल और पत्ती उसके सार्वभौमिक, अटूट जीवन पर निर्भर करती है।

जो व्यक्ति उस शक्तिशाली जीवन को, जो सूर्य के समान स्पष्ट है, अस्वीकार नहीं कर सकता, वह उससे जुड़ी हुई एक भी पत्ती के जीवन को अस्वीकार नहीं कर सकता। यदि कोई उसे अस्वीकार करता है, तो वृक्ष अपनी शाखाओं, फलों और पत्तियों की संख्या के अनुसार उनका खंडन करेगा, और वह व्यक्ति चुप हो जाएगा। विश्वास, अपने छह स्तंभों के साथ, इसी के समान है।

इस मामले की शुरुआत में, मेरा इरादा छत्तीस बिंदुओं में विश्वास के छह स्तंभों को स्पष्ट करना था, प्रत्येक स्तंभ एक बिंदु में छह उप-खंडों के साथ था। मैं शुरुआत में इस भयानक प्रश्न का विस्तृत उत्तर देने का भी इरादा रखता था, लेकिन कुछ अप्रत्याशित परिस्थितियों ने हस्तक्षेप किया। हालाँकि, मुझे लगता है कि पहला बिंदु पर्याप्त आधार प्रदान करता है, जिससे आगे की व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है, खासकर उन लोगों के लिए जो तीव्र बुद्धि रखते हैं।

अब तक यह पूरी तरह से समझ में आ गया होगा कि अगर कोई मुसलमान ईमान के किसी स्तंभ को नकारता है, तो वह पूरी तरह से अविश्वास में पड़ जाएगा। दूसरे धर्मों से अलग, इस्लाम अपने ईमान के स्तंभों को अतुलनीय व्यापकता के साथ स्पष्ट करता है, और ईमान के स्तंभ एक दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। एक मुसलमान जो पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) को नहीं पहचानता और उनकी पुष्टि नहीं करता, वह ईश्वर को उनके गुणों के साथ पहचानने में भी विफल रहेगा और परलोक को नहीं जान पाएगा। एक मुसलमान का ईमान शक्तिशाली और अडिग प्रमाणों पर आधारित होता है, जो इतने असंख्य होते हैं कि इनकार करने का कोई बहाना नहीं होता: ये प्रमाण मानवीय तर्क को उन्हें स्वीकार करने के लिए मजबूर करते हैं।

तीसरा बिंदु: मैंने एक बार कहा था “सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!”, और एक ऐसे दिव्य उपहार की तलाश की जो इसके असीम व्यापक अर्थ के बराबर हो। अचानक मेरे दिमाग में यह वाक्य आया:

"ईश्वर में विश्वास के उपहार के लिए, उसके आवश्यक अस्तित्व, उसकी एकता, उसके गुणों और नामों के लिए, पूर्व-अनंत काल से लेकर अनंत काल तक उसके नामों की अभिव्यक्तियों की संख्या के लिए ईश्वर को सभी धन्यवाद।"

मैंने देखा कि यह पूरी तरह से उचित था।

दसवाँ मामला: एमिरदाग का फूल52

कुरान में स्पष्ट दोहराव के बारे में उठाई गई आपत्तियों का निम्नलिखित उत्तर प्रेरक है।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

मेरी व्यथित स्थिति के कारण भले ही यह भ्रमित और खराब तरीके से व्यक्त किया गया हो, लेकिन निम्नलिखित कुरान की चमत्कारिकता के एक पहलू पर एक चिंतन है। हालाँकि मुझे इसे स्पष्ट रूप से व्यक्त करना मुश्किल लगता है, क्योंकि यह कुरान से संबंधित है, यह शिक्षाप्रद होगा और चिंतन की ओर ले जाएगा। इसे एक चमकीले, अमूल्य रत्न के आवरण के समान माना जा सकता है। इसलिए, चढ़ाए जा रहे रत्न पर विचार करें, न कि उसके जर्जर आवरण पर। मैंने इसे रमजान के कुछ दिनों के दौरान कुछ तेज़ी और संक्षिप्तता के साथ लिखा था, जब मैं कुपोषित और बीमार था, इसलिए कृपया इसमें जो भी कमियाँ हों, उन्हें क्षमा करें।

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

कुरान शाश्वत वक्ता की , सबसे पहले, सबसे महान और सबसे अधिक समझने वाले से- सार्वभौमिक प्रभुता के छह दर्जे जारी करता है। यह सबसे पहले, उस व्यक्ति के व्यापक दर्जे को संबोधित करता है जिसने इसे मानव जाति के नाम पर प्राप्त किया, वास्तव में पूरे ब्रह्मांड के लिए। इसका उद्देश्य मानवता का मार्गदर्शन करना है

52 अफ्योन प्रांत (पश्चिमी तुर्की) का एक जिला जहाँ सईद नूरसी कुछ समय तक रहा था। (ट्र.)

इसके प्रकट होने के समय से लेकर समय के अंत तक। इसलिए इसमें शामिल है

ब्रह्मांड के रचयिता की प्रभुता के बारे में पूरी तरह से सार्थक और व्यापक व्याख्याएँ, जो इस दुनिया और आख़िरत, धरती और आसमान और अनंत काल का स्वामी है, और सभी प्राणियों के प्रशासन से संबंधित दिव्य नियमों का स्पष्टीकरण। यह कुरान की इन और इसी तरह की अन्य विशेषताओं के कारण है कि यह दिव्य प्रवचन इतना व्यापक और ऊंचा है, और इसलिए इतना समावेशी और चमत्कारी है - इतना कि इसके सबसे स्पष्ट, शाब्दिक अर्थ भी जो साधारण लोगों के सरल दिमाग को लक्षित करते हैं, जो कुरान के संबोधित करने वालों का सबसे बड़ा समूह बनाते हैं, उन लोगों में से उन लोगों को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त है जिन्होंने समझ के उच्चतम और सबसे परिष्कृत स्तरों को प्राप्त किया है। यहां तक कि इसके आख्यान ऐतिहासिक कहानियों का संग्रह नहीं हैं जो केवल एक निश्चित उम्र के लोगों को सिखाने के लिए प्रकट हुए थे, बल्कि यह सार्वभौमिक सिद्धांतों के संग्रह के रूप में हर उम्र और समझ और सीखने के सभी स्तरों को संबोधित करता है और प्रकट होता है। उदाहरण के लिए, फिरौन या आद और समूद के लोगों को उनके पापों के लिए दी गई सज़ाओं का वर्णन करते हुए, और गलत काम करने वालों के खिलाफ़ अपनी कड़ी धमकियों के साथ, यह सभी अत्याचारियों और अपराधियों को, जिनमें हमारे समय के भी शामिल हैं, उनके अत्याचार और गलत कामों के परिणामों के बारे में चेतावनी देता है। अब्राहम और मूसा जैसे पैगम्बरों की अंतिम जीत का उल्लेख करके, उन पर शांति हो, यह सभी युगों के अन्यायी विश्वासियों को सांत्वना देता है।

चमत्कारी अभिव्यक्ति वाला कुरान अतीत को पुनर्जीवित करता है, जो कि असावधानी और गुमराही में फंसे लोगों के लिए एक अकेला और भयावह क्षेत्र, एक अंधेरा और बर्बाद कब्रिस्तान है। यह पिछली शताब्दियों और युगों को शिक्षा के जीवित पन्नों में बदल देता है, एक अद्भुत, सजीव क्षेत्र में जो कि सीधे प्रभु के नियंत्रण में है - एक ऐसा क्षेत्र जिसका हमारे साथ महत्वपूर्ण संबंध है। हमें उन समयों में वापस ले जाकर या उन्हें सिनेमा के पर्दे पर दिखाए गए दृश्यों की तरह हमारे सामने प्रदर्शित करके, कुरान हमें अपनी अनूठी और सबसे बेहतरीन और चमत्कारी शैली में शिक्षा देता है। उसी तरह, यह ब्रह्मांड की वास्तविक प्रकृति को दर्शाता है। गुमराह लोग इसे एक अंतहीन, बेजान, एकाकी और भयावह जगह के रूप में देखते हैं, जो क्षय और अलगाव से भरा हुआ है, जबकि कुरान इसे शाश्वत रूप से चाहने वाले की एक किताब, दयालु का शहर और एक ऐसा स्थान दिखाता है जहाँ प्रभु की कला के कार्य प्रदर्शित होते हैं। इसमें निर्जीव वस्तुएं सजीव प्राणी बन जाती हैं जो अपने विशेष कर्तव्यों का पालन करती हैं और संचार की एक आदर्श प्रणाली के अंतर्गत एक दूसरे की सहायता करती हैं।

यह सबसे शानदार कुरान, जो फरिश्तों, जिन्नों और इंसानों को ईश्वरीय ज्ञान के बारे में सबसे बेहतरीन तरीके से ज्ञान और शिक्षा देता है, में ऐसी पवित्र विशिष्टताएँ हैं जो ऐसी हैं कि इसका एक अक्षर कभी दस, कभी सौ और कभी हज़ार या हज़ारों पुण्य लाता है। अगर सभी जिन्न और इंसान अपनी प्रतिभाएँ एक साथ मिला लें, तो वे किसी भी तरह से कुरान की बराबरी करने वाली कोई चीज़ नहीं बना पाएँगे। यह सभी लोगों और पूरे ब्रह्मांड से सबसे उचित तरीके से बात करता है; यह लाखों लोगों के दिमाग पर लगातार और बड़ी आसानी से अंकित है; इसे जितनी बार भी पढ़ा जाए, यह अपने श्रोताओं को कभी बोर या थका नहीं करता; इसके समान वाक्यों और वाक्यांशों के बावजूद जो कुछ लोगों को भ्रमित कर सकते हैं, बच्चे इसे आसानी से याद कर लेते हैं; यह बीमार और मरने वाले लोगों को खुशी और शांति देता है, जिनके लिए कुछ मानवीय शब्द सुनना भी बड़ी परेशानी का कारण बनता है। कुरान अपने छात्रों को खुशी प्राप्त करने का कारण बनता है

इस दुनिया और अगली दुनिया दोनों में.

कुरान ने इसे लिखने वाले की अनपढ़ प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, तथा दिखावे या दिखावे के किसी भी संकेत के बिना, अपनी शैलीगत प्रवाह और शुद्धता को बनाए रखा है, जबकि आम जनता की समझ के स्तर को कभी नज़रअंदाज़ नहीं किया है। साथ ही यह लोगों को ईश्वरीय शक्ति के असाधारण चमत्कारों और ईश्वरीय ज्ञान के सार्थक उदाहरणों के बारे में बताता है, जो आकाश और पृथ्वी में होने वाली सभी घटनाओं का आधार हैं, जिससे मार्गदर्शन की पुस्तक के रूप में इसकी स्थिति की कृपा के भीतर चमत्कारीता का एक बढ़िया पहलू प्रदर्शित होता है।

कुरान यह दर्शाता है कि यह प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है, शाश्वत मोक्ष का आह्वान है, तथा ईश्वर की एकता की घोषणा है, जिनमें से सभी को पुनरावृत्ति की आवश्यकता है। परिणामस्वरूप यह इस या उस वाक्य या कहानी को दोहराता है, तथा संबोधित करने वालों के कई अलग-अलग समूहों या श्रेणियों को कई अर्थ देता है, तथा अपने पाठकों को सूचित करता है कि इसका रचयिता छोटी से छोटी और सबसे महत्वहीन चीजों और घटनाओं के प्रति भी दया का भाव रखता है, तथा उन्हें अपनी इच्छा और नियंत्रण के क्षेत्र में शामिल करता है। इस्लाम की स्थापना और उसके कानूनों के विधान में पैगंबर के साथियों से जुड़ी सबसे विशेष या प्रतीत होने वाली तुच्छ घटनाओं पर भी ध्यान देकर, यह सार्वभौमिक सिद्धांत प्रस्तुत करता है और सुझाव देता है कि वे घटनाएँ ऐसे कार्य करती हैं जैसे कि वे बीज हों, जो इस्लाम की स्थापना और उसके कानून में कई महत्वपूर्ण फल पैदा करने के लिए नियत हों। इस तरह, यह अपनी चमत्कारिकता के एक और पहलू को प्रदर्शित करता है।

जब ज़रूरतें बार-बार व्यक्त की जाती हैं, तो जवाबों को भी उसी के अनुसार दोहराया जाना चाहिए। इसलिए, कुरान उन कई सवालों के जवाब देता है जो इसके अवतरण के तेईस वर्षों के दौरान बार-बार पूछे गए थे और समझ और ज्ञान के सभी स्तरों को संतुष्ट करने का प्रयास करता है। यह साबित करने के लिए कि सभी चीज़ें, छोटे कणों से लेकर विशाल सितारों तक, एक ही के नियंत्रण में हैं और वह प्रलय के दिन ब्रह्मांड को नष्ट कर देगा ताकि इसे एक नया रूप प्रदान कर सके, इसकी जगह पर परलोक का असाधारण क्षेत्र स्थापित कर सके; दिमागों में एक शक्तिशाली और सर्वव्यापी क्रांति स्थापित करने के लिए, जो ब्रह्मांड के निर्माण के उद्देश्यों और परिणामों के लिए, मानवीय अन्याय और गलत कामों के सामने ईश्वरीय क्रोध और प्रकोप का प्रदर्शन करेगा, जो ब्रह्मांड, पृथ्वी और आकाश को क्रोध से भर देता है, कुरान कुछ आयतों और वाक्यांशों को दोहराता है जो असंख्य प्रमाणों के निष्कर्ष हैं और जो हजारों निष्कर्षों के समान भारी हैं। ऐसे मामलों में, पुनरावृत्ति कुरान की चमत्कारिकता का एक अत्यंत शक्तिशाली पहलू है, इसकी वाक्पटुता और इसकी भाषा की सुंदरता का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण है जो विषय-वस्तु की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

उदाहरण के लिए, जैसा कि चौदहवीं झलक और रिसाले-ए-नूर के पहले शब्द में बताया गया है, वाक्यांश ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, दयालु है, जो कुरान में कुल 114 बार आता है - अत-तौबा को छोड़कर हर सूरा की शुरुआत में और एक बार अन-नमल नामक सूरा के बीच में - यह एक सच्चाई है जो धरती को ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन के साथ-साथ ब्रह्मांड के सभी क्षेत्रों से जोड़ती है, इस प्रकार ब्रह्मांड को रोशन करती है। चूंकि हर किसी को इसकी निरंतर आवश्यकता होती है, इसलिए इसे लाखों बार दोहराना उचित है। हमें इसकी न केवल हर दिन, उसी तरह से आवश्यकता होती है, जिस तरह से हमें रोटी की आवश्यकता होती है, बल्कि हर पल, उसी तरह से जैसे हमें ऑक्सीजन और प्रकाश की आवश्यकता होती है।

दूसरा उदाहरण है " तेरा रब वह है जो महिमावान, प्रभुत्वशाली, दयावान है", जिसमें हज़ारों सत्यों की शक्ति है और जिसे सूरतुश्शूअरा में आठ बार दोहराया गया है। यह पैगम्बरों की अंतिम विजय और मुक्ति तथा उनके विद्रोही लोगों की बर्बादी के बारे में बताता है। यदि, ब्रह्मांड की रचना के उद्देश्यों या परिणामों के लिए, ईश्वर की सार्वभौमिक प्रभुता के नाम पर, और लोगों को यह सिखाने के लिए कि रब की महिमा और गरिमा के लिए अपराधियों का विनाश और उसकी दया के लिए पैगम्बरों की विजय और मुक्ति की आवश्यकता है, तो इस वाक्य को हज़ारों बार दोहराया जाए, तब भी इसकी आवश्यकता होगी। इस प्रकार यह कुरान की वाक्पटुता का एक संक्षिप्त और चमत्कारी पहलू है।

और ये आयतें: तुम दोनों अपने रब की कौन-कौन सी नेमतों से इनकार करोगे? (55:13) और उस दिन इनकार करनेवालों के लिए अफ़सोस है (77:15), जो अपनी-अपनी सूरों में बार-बार दोहराई गई हैं , वे युगों-युगों से जिन्नों और इंसानों के सामने और आकाशों और धरती में उन सभी लोगों की कृतघ्नता, अविश्वास और अन्याय के बारे में दोहराई गई हैं, जिनके अधर्म के कारण आकाश और धरती का क्रोध भड़कता है, जो सृष्टि के परिणामों को बिगाड़ते हैं और ईश्वरीय प्रभु की महिमा के सामने अवमानना और इनकार करते हैं। वे सभी प्राणियों के अधिकारों के हनन की भी निंदा करती हैं। चूँकि वे एक सार्वभौमिक शिक्षा का निर्माण करती हैं, जिसमें एक हज़ार सत्यों की शक्ति है, इसलिए यदि इन दो आयतों को हज़ारों बार भी दोहराया जाए, तो भी यह पर्याप्त नहीं होगा। इसलिए यह दोहराव संक्षिप्तता और अनुग्रह और सौंदर्य में वाक्पटुता की चमत्कारिकता का एक शानदार उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इसके अलावा, कुरान से प्रेरित अल-जौशानुल-कबीर (महान ढाल) के रूप में जाने जाने वाले पैगंबर की प्रार्थना में सौ खंड हैं, जिनमें से प्रत्येक इन शब्दों के साथ समाप्त होता है: आप महान हैं! आपके अलावा कोई ईश्वर नहीं है।

दया! दया! हमें आग से बचाओ! इन वाक्यों में ईश्वर की एकता की पुष्टि है, जो ब्रह्मांड में सबसे बड़ा सत्य है। यह पुष्टि सभी सृजित प्राणियों के अपने प्रभु के प्रति महानतम कर्तव्यों में से सबसे बड़ी है, अर्थात् महिमा, प्रशंसा, और उसे सर्व-पवित्र तथा सभी दोषों से मुक्त घोषित करना, जो कि बहुदेववादियों द्वारा उसे दिए गए गुणों से ऊपर है। यह मानवता के लिए अनन्त दण्ड से बचने की प्रार्थना भी है, जो कि हमारी सबसे तात्कालिक चिंता होनी चाहिए और ईश्वर के प्रति हमारी दासता तथा उसके समक्ष हमारी असहायता का अपेक्षित परिणाम है। और इसलिए, भले ही हम इन वाक्यांशों को हज़ारों बार दोहराएँ, फिर भी यह पर्याप्त नहीं होगा।

इस प्रकार, कुरान में ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के कारण पुनरावृत्तियाँ शामिल हैं। अवसर और साहित्यिक वाक्पटुता की माँगों के अनुसार, और समझने में आसानी के लिए, यह कभी-कभी एक पृष्ठ में ईश्वरीय एकता की सच्चाई को बीस बार व्यक्त करता है, चाहे वह स्पष्ट रूप से हो या निहित रूप से। फिर भी, यह अपने श्रोता को कभी बोर नहीं करता; बल्कि, यह अर्थ को लागू करता है और अपने पाठक को देता है

प्रोत्साहन.

मक्का और मदीना में अवतरित सूराएँ एक दूसरे से इस प्रकार भिन्न हैं :

वाक्पटुता और चमत्कारीपन, तथा विस्तार और संक्षिप्तता की डिग्री में। मक्का के लोग मुख्य रूप से कुरैशी बहुदेववादी और अशिक्षित जनजाति-पुरुष थे। इसे देखते हुए, कुरान एक उच्च शैली के साथ सशक्त, वाक्पटु और संक्षिप्त भाषा का उपयोग करता है, जो इसकी सच्चाई को बेहतर ढंग से स्थापित करने के लिए कुछ बिंदुओं को दोहराता है।

मक्का के सूरों में, विश्वास के स्तंभ और ईश्वरीय एकता की अभिव्यक्तियों की श्रेणियाँ और डिग्री बार-बार एक सशक्त, जोरदार, संक्षिप्त और सबसे चमत्कारी भाषा में व्यक्त की गई हैं। वे दुनिया की शुरुआत और अंत, ईश्वर के अस्तित्व और परलोक के आगमन को शक्तिशाली प्रमाणों के साथ साबित करते हैं और न केवल एक पृष्ठ पर, या एक श्लोक, वाक्य या शब्द में, बल्कि कभी-कभी एक अक्षर में भी व्यक्त किए जाते हैं, शब्द क्रम में इतने सूक्ष्म परिवर्तनों के माध्यम से, निश्चित लेखों के उपयोग या गैर-उपयोग के माध्यम से या कुछ शब्दों, वाक्यांशों और वाक्यों को शामिल करने या छोड़ने के माध्यम से कि साहित्यिक वाक्पटुता की कला के स्वामी आश्चर्यचकित हो गए हैं।

मक्का अध्यायों की उत्कृष्ट वाक्पटुता और संक्षिप्तता की चर्चा इशारतुल-एजाज़ और पच्चीसवें शब्द में की गई है, जो कुरान की चमत्कारिक अद्वितीयता के चालीस पहलुओं की व्याख्या करते हैं।

पैगंबर के मिशन के दूसरे चरण के दौरान मदीना में प्रकट हुए सूरा मुख्य रूप से विश्वासियों, यहूदियों और ईसाइयों को संबोधित हैं। वाक्पटुता के नियमों और मार्गदर्शन की व्यावहारिक आवश्यकता के अनुसार, विश्वास के स्तंभों और सिद्धांतों के बजाय, वे शरिया के कानूनों और आदेशों को सरल, स्पष्ट और विस्तृत भाषा में समझाने पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। हालाँकि, कुरान की अनूठी, अद्वितीय शैली में, व्याख्याएँ आमतौर पर विश्वास, ईश्वरीय एकता या परलोक से संबंधित एक ऊंचे, शक्तिशाली वाक्य या वाक्यांश के साथ समाप्त होती हैं, इस प्रकार उन्हें ईश्वर और अंतिम दिन में विश्वास से जोड़कर उनके प्रति आज्ञाकारिता सुनिश्चित की जाती है। ऐसा करके, कुरान कुछ विशेष घटनाओं का भी आधार बनाता है जिस पर शरिया के कानूनों की सार्वभौमिकता स्थापित होती है।

वाक्पटुता के उच्च पहलू को समझने के लिए तथा कुछ श्लोकों के अंत में आने वाले वाक्यांशों में पाई जाने वाली सूक्ष्मताओं को समझने के लिए, जैसे कि ईश्वर के पास हर चीज पर पूर्ण शक्ति है; ईश्वर को सभी चीजों का पूरा ज्ञान है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-ज्ञानी है; वह सर्व-महिमावान और सर्वशक्तिमान है, सर्व-दयालु है, पाठक पच्चीसवें वचन में द्वितीय प्रकाश की दूसरी किरण का संदर्भ ले सकते हैं।

इस्लाम के गौण सिद्धांतों और सामाजिक कानूनों की व्याख्या करते हुए, कुरान अपने पाठकों का ध्यान अचानक उच्च, सार्वभौमिक सत्यों की ओर आकर्षित करता है, उन्हें शरिया के पाठ से ईश्वरीय एकता के पाठ की ओर ले जाता है, और एक सरल शैली से एक उच्चतर शैली में बदल जाता है। ऐसा करने में यह हर अवसर पर मार्गदर्शन के अपने उद्देश्य को प्रदर्शित करता है और खुद को कानून और ज्ञान की पुस्तक, पंथ, विश्वास, चिंतन, आह्वान, प्रार्थना और ईश्वरीय संदेश के आह्वान की पुस्तक के रूप में दिखाता है। इस प्रकार, कुरान के मदीना अध्याय

इनमें अत्यंत चमत्कारी वाक्पटुता और भाषा की शुद्धता प्रदर्शित है जो मक्कन अध्यायों में विद्यमान शैलियों से भिन्न है।

उदाहरण के लिए, भगवान को तुम्हारे या मेरे या उसके (तुम्हारा , मेरा , उसका , उसका भगवान) या दुनियाओं (दुनियाओं का भगवान) के साथ संशोधित करके, कुरान क्रमशः, एक व्यक्ति के साथ उसके विशेष संबंध में भगवान की एकता को उसके भगवान (अहादिया) के रूप में या पूरी सृष्टि के साथ उसके सार्वभौमिक संबंध में उसकी एकता (वहीदिया) की घोषणा करता है। मेरे भगवान या तुम्हारे भगवान का उपयोग करते हुए , यह भगवान को उनकी विशेष चौकसी और करुणा के परिप्रेक्ष्य से पेश करता है, जबकि दुनिया के भगवान का उपयोग करते हुए, यह उन्हें उनकी सभी महिमा के साथ पेश करता है, पूर्व (अहादिया) के भीतर उत्तरार्द्ध (वहीदिया) को व्यक्त करता है। कभी-कभी जब कुरान आंख की पुतली में एक अणु को देखता और ठीक करता है, तो वह उसी "हथौड़े" का उपयोग करके आकाश में सूर्य को ठीक करता है और इसे स्वर्ग की आंख बनाता है।

उदाहरण के लिए, इन शब्दों में: उसने आकाश और धरती को बनाया है (57:4), और वही रात को दिन में बदलता है और वही दिन को रात में बदलता है (57:6), कुरान आम लोगों की समझ को ध्यान में रखता है, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो उनमें से अनपढ़ हैं। हालाँकि, यह आयतों का समापन इस प्रकार करता है: वह हृदयों में जो कुछ भी है, उसका पूरा ज्ञान रखता है (57:6); इसका अर्थ है: "पृथ्वी और आकाश की शानदार रचना और प्रशासन के साथ-साथ, वह लोगों के दिलों में जो कुछ भी होता है, उसका भी पूरा ज्ञान रखता है।" इस प्रकार, साधारण लोगों को लक्षित करने वाली भाषण की सरल शैली यहाँ सभी के मार्गदर्शन के लिए एक उच्च और आकर्षक संबोधन के रूप में प्रकट होती है।

प्रश्न: कभी-कभी एक महत्वपूर्ण सत्य सतही दृष्टिकोण से छिपा रह सकता है। साथ ही, एक सामान्य घटना के वर्णन को सार्वभौमिक सिद्धांत या ईश्वरीय एकता के पहलू के साथ समाप्त करने का कारण हमेशा आसानी से नहीं समझा जा सकता है। कुछ लोग इस कुरानिक शैली को दोषपूर्ण मान सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह वर्णन करने के बाद कि कैसे पैगंबर जोसेफ, उन पर शांति हो, अपने भाई को हिरासत में लेने में कामयाब रहे (12: 69-76), कुरान एक महान सिद्धांत का उल्लेख करता है: ज्ञान के हर मालिक से ऊपर (हमेशा) एक और ज्ञानी होता है।

वाक्पटुता के नियमों के दृष्टिकोण से, यह वास्तविक संदर्भ से असंबंधित प्रतीत होता है। इसका क्या कारण है?

उत्तर : कुरान विश्वास, चिंतन और आह्वान की पुस्तक है, साथ ही कानून, ज्ञान और मार्गदर्शन की पुस्तक भी है; इसलिए इसमें कई "पुस्तकें" हैं। इस कारण से, लंबे और मध्यम लंबाई के सूरा के कई पन्नों और अंशों में, जिनमें से प्रत्येक एक छोटा कुरान है, कई शिक्षाओं और उद्देश्यों का अनुसरण किया जाता है। उदाहरण के लिए, सर्व-व्यापकता को व्यक्त करने के लिए

और ईश्वरीय प्रभुत्व की शानदार अभिव्यक्तियाँ, चूँकि यह ब्रह्मांड की महान पुस्तक की एक तरह की प्रतिलिपि या प्रतिबिंब है, कुरान हर उस अवसर पर निर्देश देता है जो ईश्वर के ज्ञान, ईश्वरीय एकता के पहलुओं और विश्वास की सच्चाइयों से संबंधित है। जब भी कोई उपयुक्त अवसर आता है, चाहे वह कितना भी महत्वहीन क्यों न लगे, कुरान अलग-अलग शिक्षाओं की व्याख्या करता है, इस प्रकार उस अवसर का उपयोग नए निर्देश प्रस्तुत करने या कुछ सार्वभौमिक नियमों या सिद्धांतों को प्रकट करने के लिए करता है। यह चर्चा के लिए पूरी तरह से मेल खाता है और कुरान की वाक्पटुता को बढ़ाता है।

प्रश्न: चाहे स्पष्ट रूप से हो या परोक्ष रूप से, कुरान ईश्वरीय एकता, परलोक और मानवता के बारे में ईश्वर के निर्णय पर बहुत अधिक ध्यान देता है। ऐसा क्यों है?

उत्तर : क़ुरआन मानवता को ईश्वर के अस्तित्व, ईश्वरीय एकता, तथा ब्रह्मांड पर उसके पूर्ण नियंत्रण और उसमें होने वाले परिवर्तनों, उथल-पुथल और क्रांतियों के बारे में सिखाने के लिए अवतरित हुआ; यह इन सत्यों के बारे में सभी संदेहों को दूर करने और उन लोगों की हठधर्मिता को तोड़ने के लिए अवतरित हुआ जो इन्हें पुष्ट करने से कतराते रहते हैं। यह मानवता को, जिसने पृथ्वी के प्रतिनिधि के रूप में सर्वोच्च ट्रस्ट को धारण करना स्वीकार किया है, जिस पर उन्हें ईश्वरीय नियमों के अनुसार शासन करना और विकास करना है, शाश्वत सुख या विनाश से संबंधित मानवता के कर्तव्यों के सबसे शक्तिशाली और सबसे महत्वपूर्ण पहलुओं में निर्देश देने के लिए भी अवतरित हुआ।

मानवता से कुरान के निर्देशों की पुष्टि करवाने तथा उनसे संबंधित सबसे आवश्यक मामलों पर सहमति प्राप्त करने के लिए, यदि कुरान को इन मामलों पर लाखों बार भी ध्यान केन्द्रित करना पड़े, तो यह समय या शब्दों की बर्बादी नहीं होगी; इन्हें बिना किसी ऊब के बार-बार पढ़ा और अध्ययन किया जाएगा।

उदाहरण के लिए, हम सूरतुल-बुरूज में पढ़ते हैं :

> जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे कर्म किए, उनके लिए ऐसे जन्नत हैं जिनमें नहरें बहती होंगी, यही बड़ी सफलता है (85:11)

यह श्लोक हमें सिखाता है कि मृत्यु, जो हमेशा हमारे सामने मौजूद रहती है, वह ऐसी चीज है जो हमें, हमारी दुनिया को और हमारे प्रियजनों को अनंत विनाश से बचाती है, क्योंकि यह हमें एक शानदार, अनंत जीवन की ओर ले जाती है। भले ही इस श्लोक को अरबों बार दोहराया जाए, और अगर इसे उतना ही महत्व दिया जाए जितना पूरे अस्तित्व को दिया जाता है, तब भी यह इतना अधिक नहीं होगा कि इसका महत्व कम हो जाए या इसका अर्थ कम हो जाए। इस तरह की अनगिनत, अमूल्य बातें सिखाने और लोगों को साबित करने और जागरूक करने की कोशिश में

ब्रह्मांड को लगातार बदलने और नया बनाने वाले भयानक क्रांतियों में से, कुरान इन मामलों की ओर बार-बार ध्यान आकर्षित करता है, या तो स्पष्ट रूप से या संकेतों के माध्यम से। चूँकि वे प्रकाश, वायु, भोजन और दवा जैसी देन हैं - ऐसी चीजें जिनकी हमें हमेशा ज़रूरत होती है और जिन्हें निरंतर नवीनीकरण और ताज़गी की आवश्यकता होती है - यह तथ्य कि उन्हें कुरान में इतनी बार दोहराया गया है, ईश्वरीय कृपा का एक उदाहरण है।

इसके अलावा, निम्नलिखित पर भी विचार करें:

कुरान ऐसी धमकियों को गंभीरता से, गुस्से से और जोरदार ढंग से दोहराता है-

छंदों को इस प्रकार लिखें:

> अत्याचारियों के लिए दुखद यातना है (14:22)
>
> जिन लोगों ने इनकार किया, उनके लिए जहन्नम की आग है (35:36)।

जैसा कि रिसाले-ए-नूर में विस्तार से चर्चा की गई है , मानवता का अविश्वास ब्रह्मांड और उसके अधिकांश प्राणियों के अधिकारों का इतना जघन्य उल्लंघन है कि यह पृथ्वी को क्रोधित करता है और तत्वों को क्रोधित करता है। यही कारण है कि वे अविश्वासियों को बाढ़ और इसी तरह की आपदाओं से मारते हैं।

जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है

> जब वे उसमें डाले जाएंगे, तो वे उसकी कर्कश सांस सुनेंगे (जिससे वे अंदर खींचे जाएंगे) जैसे वह उबल रही हो, लगभग क्रोध से फटने वाली... (67:7–8)

नरक अविश्वासियों से इतना अधिक उग्र है कि इसका वर्णन इस प्रकार किया गया है मानो यह नरक हो।

क्रोध से लगभग फटने वाला। यदि मानवता की भौतिक तुच्छता के परिप्रेक्ष्य से नहीं, बल्कि अविश्वासी के गलत कामों की महानता और अविश्वास की भयावहता को एक जघन्य अपराध और असीम आक्रामकता के रूप में देखते हुए, और अपने विषयों के अधिकारों के महत्व के साथ-साथ अविश्वासियों के अविश्वास और अधर्म में कुरूपता को दिखाने के लिए, ब्रह्मांड का संप्रभु ऐसे अपराधों का एक अरब बार वर्णन और निंदा करता है, तो भी इसे दोष नहीं माना जाएगा। अनगिनत लोगों ने चौदह शताब्दियों से हर दिन इन शब्दों को अत्यंत उत्सुकता के साथ और बिना किसी ऊब या थकान के पढ़ा है।

हर दिन, हर व्यक्ति के लिए एक दुनिया गायब हो जाती है और एक नई दुनिया का द्वार खुल जाता है। इस प्रकार आवश्यकता से और हमारे प्रत्येक क्षणभंगुर को प्रकाशित करने की इच्छा से हज़ार बार दोहराते हुए कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है

दुनिया में, हम प्रत्येक पुनरावृत्ति को हर बदलते दृश्य के लिए एक दीपक बनाते हैं। उसी तरह, कुरान में शाश्वत संप्रभु की पुनरावृत्ति का एक कारण यह भी है

धमकियाँ और सज़ाएँ अक्सर मानवता की हठधर्मिता को तोड़ने और उन्हें उनकी विद्रोही शारीरिक आत्मा से मुक्त करने का प्रयास करती हैं। इस प्रकार यह उन्हें बदलते दृश्यों और नई-नई भर्ती की गई दुनियाओं को काला करने से रोकने, उनके जीवन के दर्पण में प्रतिबिंबित उनकी छवियों को विकृत करने और उन क्षणभंगुर दृश्यों को उनके विरुद्ध मोड़ने से रोकने का प्रयास करती है जो परलोक में उनके लिए गवाही देंगे। इस कारण से, शैतान भी कुरान में धमकियों की गंभीर और जोरदार पुनरावृत्ति को अनुचित नहीं मानता।

ये धमकियाँ दर्शाती हैं कि नरक की यातनाएँ उन लोगों के लिए शुद्ध न्याय हैं जो उनकी ओर ध्यान नहीं देते।

एक अन्य उदाहरण पैगम्बरों की कहानियों का दोहराव है, विशेष रूप से मूसा (उन पर शांति हो) की कहानी।

ऐसी कहानियों में ज्ञान और लाभ के कई उदाहरण हैं। कुरान मुहम्मद के संदेशवाहक होने के प्रमाण के रूप में सभी पिछले पैगम्बरों की पैगम्बरी को दर्शाता है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। इसका मतलब यह है कि सच्चाई के दृष्टिकोण से, कोई भी मुहम्मद के संदेशवाहक होने से इनकार नहीं कर सकता जब तक कि वह अन्य सभी पैगम्बरों को नकार न दे। साथ ही, चूंकि हर कोई हर बार कुरान को खोलकर पूरा नहीं पढ़ सकता, इसलिए इसमें इन कहानियों को, विश्वास के आवश्यक तत्वों के साथ, लगभग सभी लंबी और मध्यम लंबाई वाली सूराओं में शामिल किया गया है, इस प्रकार प्रत्येक सूरा एक लघु कुरान की तरह बन जाती है।

ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि साहित्यिक वाक्पटुता के सिद्धांतों द्वारा इसकी मांग की जाती है और इसलिए भी कि कुरान यह दिखाना चाहता है कि पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - लोगों में सबसे महत्वपूर्ण और ब्रह्मांड में सबसे महान घटना हैं।

इस्लाम में आस्था की औपचारिक घोषणा- कलिमातुत-तौहीद- यह है कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है और मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। कुरान मुहम्मद के व्यक्तित्व को सर्वोच्च दर्जा देता है और चूंकि इस घोषणा का एक हिस्सा- मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं- आस्था के छह स्तंभों में से चार की ओर इशारा करता है , इसलिए इसे अक्सर पहले भाग के बराबर माना जाता है, अर्थात ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है। मुहम्मद का संदेशवाहक होना ब्रह्मांड का सबसे बड़ा सत्य है, एक व्यक्ति के रूप में वह ईश्वर की रचनाओं में सबसे महान हैं, और उनका सामूहिक व्यक्तित्व और पवित्र पद, जिसे मुहम्मदी सत्य के रूप में जाना जाता है, इस दुनिया और परलोक दोनों का सबसे चमकीला सूर्य है। रिसाले-ए-नूर में कई प्रमाणों में से जो दिखाते हैं कि वह इस तरह के असाधारण पद को प्राप्त करने के कितने योग्य हैं, निम्नलिखित कुछ हैं:

"कारण जैसा कर्ता होता है" नियम के अनुसार, उसके समुदाय द्वारा किए गए अच्छे कार्यों की संख्या के बराबर पुरस्कार की राशि दी जाती है।

भविष्य में क्या करेंगे, यह पैगम्बर मुहम्मद के खाते में जोड़ दिया गया है। चूंकि उन्होंने अपने द्वारा लाए गए प्रकाश से ब्रह्मांड को प्रकाशित किया, इसलिए न केवल जिन्न, मानवता और फ़रिश्ते, बल्कि आकाश और पृथ्वी भी उनके ऋणी हैं। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि पौधे और जानवर अपनी क्षमता और आवश्यकता की जीभ के माध्यम से जो प्रार्थना करते हैं, वह स्वीकार की जाती है। इससे पता चलता है कि मुहम्मद के समुदाय के लाखों धर्मी लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार की जानी चाहिए। वे सदियों से दिन में कई बार ईश्वर से प्रार्थना करते रहे हैं कि उन पर शांति और आशीर्वाद बरसाए और उन्हें वही सवाब दे जो उन्होंने कमाया है। इसके अलावा, उनके अच्छे कामों के रिकॉर्ड में उनके अनुयायियों द्वारा कुरान के पाठ से अनगिनत प्रकाश भी शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक अक्षर दस, सौ या एक हज़ार सवाब लाता है।

यह जानते हुए कि उनका सामूहिक व्यक्तित्व - मुहम्मद- सत्य - भविष्य में जन्नत के एक धन्य, विस्तृत वृक्ष की तरह होगा, और उन्हें एक व्यक्ति के रूप में उस राजसी वृक्ष का बीज मानते हुए, अदृश्य के सर्वज्ञ ने अपने कुरान में उन्हें सबसे अधिक महत्व दिया है। अपने फरमान में उन्होंने दूसरों के लिए उनकी आज्ञाकारिता और उनके सुन्नत या मार्ग पर चलकर उनकी सिफ़ारिश का सम्मान प्राप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया है और इसे मानवता के सबसे महत्वपूर्ण और गंभीर मामले के रूप में पुष्टि की है।

इस प्रकार, चूंकि कुरान में दोहराए गए सत्यों का इतना बड़ा मूल्य है, इसलिए स्वस्थ, अदूषित स्वभाव वाला कोई भी व्यक्ति यह प्रमाणित कर सकता है कि इसके दोहराव में एक शक्तिशाली और व्यापक चमत्कार पाया जा सकता है, जब तक कि कोई व्यक्ति भौतिकवाद के कारण हृदय की किसी बीमारी या विवेक के रोग से ग्रस्त न हो, और इसलिए उसे निम्नलिखित नियम के अंतर्गत शामिल किया जाता है:

> एक व्यक्ति अपनी बीमार आँखों के कारण सूर्य के प्रकाश को नकारता है,
> बीमारी के कारण मुँह मीठे पानी का स्वाद लेने से इंकार कर देता है।

दो समापन टिप्पणियाँ

पहला: बारह साल पहले, मैंने सुना कि इस्लाम के सबसे खतरनाक और जिद्दी दुश्मन ने कुरान के खिलाफ एक साजिश रची थी और इसका अनुवाद करने का आदेश दिया था ताकि "लोग इसकी दोहराव को देख सकें और समझ सकें कि यह वास्तव में क्या है।" वह कैनोनिकल प्रार्थनाओं में मूल अरबी के स्थान पर अनुवाद को प्रतिस्थापित करने का भी इरादा रखता था। हालाँकि, जैसा कि रिसाले -ए-नूर निर्णायक रूप से दिखाता है, कुरान का सटीक अनुवाद असंभव है। कोई भी अन्य भाषा अरबी भाषा के बेहतरीन गुणों और सूक्ष्मताओं को संरक्षित नहीं कर सकती है, यह देखते हुए कि यह व्याकरण और वाक्यविन्यास में कितनी सख्त और सटीक है।

अनुवाद कुरान के चमत्कारिक रूप से अद्वितीय शब्दों और वाक्यांशों का स्थान ले सकता है, जो अर्थ में अत्यंत व्यापक हैं, और जिनके प्रत्येक अक्षर में दस से लेकर एक हजार तक गुण हैं।

रिसाले -ए-नूर ने मस्जिदों में केवल कुरान के अनुवादों को पढ़ने की योजना को भी बाधित कर दिया। लेकिन चूंकि उस विधर्मी द्वारा सिखाए गए पाखंडी लोग शैतान के नाम पर कुरान के सूरज को बुझाने का रास्ता तलाशते रहते हैं, इसलिए मुझे एमिरदाग का फूल लिखने के लिए मजबूर होना पड़ा। हालाँकि, चूँकि मैं लंबे समय से लोगों से नहीं मिला हूँ, इसलिए मुझे हाल ही में हुए घटनाक्रमों के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

दूसरा: डेनिज़ली जेल से रिहा होने के बाद, मैं प्रसिद्ध होटल शेहिर की सबसे ऊपरी मंजिल पर बैठा था। मेरे सामने के सुंदर बगीचों में चिनार के पेड़ों की पत्तियों, शाखाओं और तनों का सुंदर नृत्य, प्रत्येक हवा से छूए गए दरवेशों के घेरे की तरह उत्साहपूर्ण गति से, मेरे दिल को पीड़ा दे रहा था, जो पहले से ही अपने भाइयों से अलग होने और खुद को अकेला पाकर दुखी था। अचानक मुझे पतझड़ और सर्दी का ख्याल आया, और एक तरह की असावधानी ने मुझे जकड़ लिया। मुझे उन सुंदर, झूमते चिनार और खुशमिजाज जीवों पर इतना दया आ गई कि मेरी आँखों से आँसू बहने लगे। चूँकि वे मुझे ब्रह्मांडीय मुखौटे के अलंकृत आवरण के नीचे छिपी हुई मृत्यु और वियोग की याद दिलाते थे, मृत्यु और वियोग से भरी दुनिया का दुःख मुझे अपनी गिरफ़्त में ले गया और मुझे निचोड़ने लगा। लेकिन फिर मुहम्मदी सत्य का प्रकाश आया और उस दुःख को खुशी में बदल दिया। वास्तव में, मैं मुहम्मद साहब के व्यक्तित्व के प्रति हमेशा आभारी हूँ, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, उस समय मुझे जो सहायता और सांत्वना मिली, उस प्रकाश की असीम कृपा का केवल एक उदाहरण मेरे लिए, सभी विश्वासियों और सभी के लिए था। यह इस प्रकार था:

मुझ पर हावी हो चुकी असावधानी ने मुझे दिखा दिया था कि ये

धन्य और नाजुक जीव केवल गर्मी के मौसम में एक उद्देश्यहीन और निष्फल जीवन में दिखाई देते हैं। उनकी हरकतें खुशी के कारण नहीं थीं; बल्कि वे मृत्यु, अलगाव और अस्तित्वहीनता की यात्रा के विचार से कांप रहे थे। यह दृष्टिकोण स्थायित्व की मेरी भावुक इच्छा, सुंदरता के प्रति मेरे प्रेम और सभी प्राणियों और जीवित चीजों के प्रति मेरी करुणा के लिए बहुत हानिकारक था। इस तरह की सोच ने दुनिया को एक तरह के नर्क में और मेरी बुद्धि को यातना के साधन में बदल दिया। लेकिन ठीक उसी समय, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मानवता के लिए एक उपहार के रूप में लाए गए प्रकाश ने पर्दा उठा दिया और दिखाया कि विलुप्त होने, अस्तित्वहीनता, शून्यता, व्यर्थता या अलगाव के बजाय, इन चीजों का अस्तित्व

चिनार के पेड़ों के उतने ही अर्थ और उद्देश्य थे जितने उनके पत्तों की संख्या थी। इसके अलावा, इससे पता चला कि उनके पास कई कर्तव्य थे और उनके जीवन से कई परिणाम निकले, जो इस प्रकार हैं:

एक प्रकार का नाम सर्व-महान निर्माता के नाम से संबंधित है। उदाहरण के लिए, हर कोई एक इंजीनियर की सराहना करता है और उसे बधाई देता है जो एक असाधारण मशीन बनाता है। अपने कार्यों को ठीक से करने से, मशीन को बदले में अपने इंजीनियर को बधाई और सराहना करते हुए कहा जा सकता है। ब्रह्मांड में हर सृजित प्राणी एक ऐसी मशीन है और अपने निर्माता को बधाई और सराहना करता है।

चिनार के पेड़ों जैसी चीज़ों में बुद्धिमत्ता का एक और उदाहरण यह है कि उनमें से प्रत्येक एक पाठ जैसा दिखता है, जिसका अध्ययन करने पर, सचेत जीवों को ईश्वर का ज्ञान मिलता है। इन जैसे प्राणियों के मन में अपने अर्थों को छोड़कर, और इन प्राणियों की यादों में अपने रूपों को छोड़कर, साथ ही साथ प्रतिनिधित्व की दुनिया या "आदर्श रूपों" और अदृश्य दुनिया के अभिलेखों की पट्टियों पर, वे भौतिक दुनिया को अदृश्य दुनिया के लिए छोड़ देते हैं। दूसरे शब्दों में, वे स्पष्ट अस्तित्व से वंचित हो जाते हैं और कई अस्तित्व प्राप्त करते हैं जो अर्थों, उनके पीछे छिपे ज्ञान और सचेत प्राणियों के ज्ञान और अदृश्य क्षेत्र से संबंधित होते हैं।

चूँकि ईश्वर का अस्तित्व है और उसका ज्ञान सभी चीज़ों को समाहित करता है, इसलिए निश्चित रूप से वास्तविकता में या किसी आस्तिक की दुनिया में गैर-अस्तित्व, शाश्वत विनाश या शून्यता जैसी कोई चीज़ नहीं हो सकती। हालाँकि, एक अविश्वासी की दुनिया गैर-अस्तित्व, अलगाव और विलुप्ति जैसी धारणाओं से भरी हुई है।

जैसा कि प्रसिद्ध कहावत है: "जिसके लिए ईश्वर है उसके लिए सब कुछ मौजूद है; जिसके लिए ईश्वर नहीं है उसके लिए कुछ भी मौजूद नहीं है।"

संक्षेप में, तो जिस तरह से विश्वास हमें मरने पर अनन्त दंड से बचाता है, उसी तरह यह हर किसी की विशेष दुनिया को अनन्त विलुप्ति और शून्यता के अंधकार से बचाता है। अविश्वास, विशेष रूप से ईश्वर का इनकार, व्यक्ति को और उसकी विशेष दुनिया को मृत्यु के भय से नष्ट कर देता है, उन्हें अंधेरे, नारकीय गड्ढों में डाल देता है और उनके जीवन के सुखों को दर्द में बदल देता है। जो लोग इस दुनिया को परलोक से ज़्यादा पसंद करते हैं, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिए।

उन्हें या तो इस दुष्कर समस्या का समाधान ढूंढना चाहिए या फिर विश्वास को स्वीकार कर लेना चाहिए, जिससे वे स्वयं को एक भयंकर शाश्वत हानि से बचा सकें।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

आपका भाई जिसे आपकी प्रार्थनाओं की सख्त जरूरत है और वह आपको बहुत याद करता है,

नर्सी ने कहा

ग्यारहवाँ मामला

ईमान के पवित्र वृक्ष के सैकड़ों अनगिनत फलों, विशेष और सार्वभौमिक, जिनमें से एक है स्वर्ग, दूसरा है शाश्वत सुख और तीसरा है ईश्वर का दर्शन, को रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में समझाया गया है। इच्छुक पाठकों को इन भागों की ओर संकेत करते हुए, हम यहाँ इसके सार्वभौमिक स्तंभों के बजाय इसके सबसे छोटे और विशेष फलों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करेंगे।

एक दिन प्रार्थना करते हुए, "हे मेरे प्रभु! गेब्रियल, माइकल, इसराफिल और अजराईल की वंदना करते हुए, और उनकी सिफ़ारिश के ज़रिए, मुझे इंसानों और जिन्न की बुराई से बचाओ!" जब मैंने अजराईल का ज़िक्र किया तो मुझे ख़ास तौर पर खुशी और सुकून महसूस हुआ - मौत के महादूत का नाम और वह जो आम तौर पर लोगों को डर से काँपने पर मजबूर कर देता है। "सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए है!"

मैंने कहा, और उसके प्रति सच्चे प्रेम का अनुभव करने लगा। मैं स्वर्गदूतों में विश्वास के कुछ ही फलों के बारे में बहुत ही संक्षेप में बताऊँगा, साथ ही अन्य स्तंभों में विश्वास के कुछ विशेष फलों के बारे में भी बताऊँगा। वे इस प्रकार हैं:

एक फल: हर किसी की सबसे कीमती संपत्ति जिसे वे बचाने की पूरी कोशिश करते हैं, वह है उनकी आत्मा। मुझे बहुत खुशी हुई कि मैंने इसे एक शक्तिशाली और भरोसेमंद हाथ - अज़राएल को सौंप दिया, जिससे इसे लक्ष्यहीनता से बचाया जा सका और इसे खोने या नष्ट होने से बचाया जा सका। फिर मुझे वे फ़रिश्ते याद आए जो इंसानी हरकतों को रिकॉर्ड करते हैं, और मैंने देखा कि उनके अस्तित्व से इस तरह के कई मीठे फल मिलते हैं।

दूसरा फल: हर कोई गद्य, कविता या फिल्म निर्माण के माध्यम से अपने सार्थक कथनों या कार्यों को सहेजने की उत्सुकता से कोशिश करता है, इस प्रकार वह जो कहता या करता है उसे अमर बना देता है। और अगर उनके कर्मों से स्वर्ग में अनंत फल प्राप्त होने हैं, तो वे उन्हें सहेजने के लिए और भी अधिक उत्सुक होते हैं। यह तथ्य कि रिकॉर्डिंग करने वाले फ़रिश्ते लोगों के कंधों पर बैठकर उन कर्मों को रिकॉर्ड करते हैं जो उन्हें शाश्वत पुरस्कार दिलाएंगे और जिन्हें लोग अनंत क्षेत्र में अनंत दृश्यों के रूप में देखेंगे, मुझे इतना प्यारा और सुखद लगा कि मैं इसका वर्णन नहीं कर सकता।

तीसरा फल: फिर, जब सांसारिक अधिकारियों ने मुझे सामाजिक जीवन से जुड़ी हर चीज़ से अलग कर दिया था, मुझे मेरी सभी किताबों, दोस्तों, सहायकों और मुझे सांत्वना देने वाली चीज़ों से दूर रखा था, और जब मैं निर्वासन से कुचला जा रहा था और खाली दुनिया मेरे चारों ओर ढह रही थी, तो स्वर्गदूतों में विश्वास के कई फलों में से एक मेरी मदद के लिए आया। इसने मेरी दुनिया को खुश कर दिया और मेरे जीवन को हल्का कर दिया, इसे स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों से भर दिया, और

मेरे आस-पास की हर चीज़ को खुशी से मुस्कुराता हुआ देखना। इसने यह भी दिखाया कि गुमराह लोगों की दुनिया उजाड़, खालीपन और अंधेरे में रोती है।

चौथा फल: इस फल का आनंद लेते हुए, मेरी कल्पना ने विश्वास के कई फलों में से एक को प्राप्त किया और उसका स्वाद चखा, अर्थात पैगम्बरों में विश्वास। अचानक, सभी भूतपूर्व पैगम्बरों में मेरा विश्वास इतना शक्तिशाली हो गया मानो मैं वास्तव में उनके बीच रहा हूँ, जिसने भूतकाल को प्रकाशित कर दिया, मेरे विश्वास को विस्तृत किया और उसे सार्वभौमिकता प्रदान की। इसने पैगम्बरों की मुहर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, की शिक्षाओं को पुष्ट करने का भी काम किया, जो भूतकाल के पैगम्बरों की संख्या के बारे में विश्वास के बारे में हैं, इस प्रकार शैतानी लोगों को चुप करा दिया।

फिर मेरे मन में एक सवाल आया, जिसकी चर्चा तेरहवीं झलक में भी की गई है, शैतान से बचने के लिए परमेश्वर की शरण लेने में जो बुद्धिमत्ता है, उसके बारे में। यह इस प्रकार था:

प्रश्न: यद्यपि मार्ग पर चलने वालों को इन जैसे असंख्य मीठे फलों और लाभों, अच्छे कर्मों के उत्तम परिणामों और अत्यंत दयावान रहमान की दयालु सहायता से सहायता और बल मिलता है, फिर भी ऐसा क्यों है कि गुमराह लोग अक्सर उन्हें पराजित करने में सफल हो जाते हैं? कभी-कभी बीस काफ़िर सौ ईमान वालों को क्यों कुचल देते हैं?

उत्तर: इस बारे में सोचते समय, मुझे कुरान की शैतान की कमज़ोर साज़िशों के बारे में जोरदार चेतावनियाँ याद आईं, और कैसे यह हमें बार-बार याद दिलाता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ईमान वालों के साथ है और उनकी सहायता के लिए फ़रिश्तों को भेजता है। इस मामले को रिसाले-ए-नूर में कहीं और विस्तार से समझाया गया है और इसलिए हम यहाँ इसका सिर्फ़ संक्षिप्त उल्लेख करेंगे।

ऐसा हो सकता है कि जब एक भी आगजनी करने वाला व्यक्ति किसी महल में आग लगाने की कोशिश करता है, तो महल केवल सौ लोगों की सुरक्षा के प्रयासों से ही खड़ा रह सकता है, सौ लोग जो कानून की पूरी ताकत का सहारा लेते हैं। क्योंकि इसके अस्तित्व की तरह, महल का अस्तित्व भी इसके सभी भागों के निरंतर अस्तित्व के साथ-साथ इसके अस्तित्व के लिए आवश्यक सभी स्थितियों और कारणों की उपस्थिति से ही संभव है। हालाँकि, इसका विनाश और अस्तित्वहीनता एक भी स्थिति के न होने से हो सकती है।

जिस तरह एक महल को एक ही माचिस से ध्वस्त किया जा सकता है, उसी तरह जिन्न और मानवता के बीच शैतानी लोग तुलनात्मक रूप से आसानी से व्यापक विनाश और तबाही मचा सकते हैं। सभी बुराई और पाप का आधार और मूल अस्तित्वहीनता और विनाश है। उनका स्पष्ट अस्तित्व वास्तविक अस्तित्वहीनता और विनाश को ढकता है - यानी, हालांकि बुराई और पाप वास्तव में मौजूद प्रतीत होते हैं, वास्तव में वे अच्छाई की अनुपस्थिति हैं और इसलिए शुद्ध अस्तित्वहीनता हैं।

इस प्रकार जिन्न और मानवता में से शैतानी लोग एक बहुत बड़ी ताकत का सामना करने में सक्षम हैं, जो वास्तव में एक बहुत ही कमज़ोर ताकत है, इस प्रकार सत्य के लोगों को लगातार ईश्वर के दरबार में शरण लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इसी कारण से, कुरान ने अच्छे लोगों की सुरक्षा को अत्यधिक महत्व दिया है। यह उनके समर्थन के स्रोत के रूप में निन्यानबे ईश्वरीय नाम प्रदान करता है और उन्हें इन दुश्मनों का डटकर सामना करने का सख्त आदेश देता है।

इस उत्तर से एक महान सत्य और एक विस्मयकारी विषय का आधार उजागर हुआ।
स्वर्ग सभी अस्तित्व की दुनिया की फसलों को प्रदर्शित करता है और दुनिया में बोए गए बीजों को अंकुरित करता है और अनन्त पौधों या पेड़ों में विकसित करता है। इसी तरह, अस्तित्वहीनता और शून्यता के असंख्य भयानक संसारों के दुखद परिणामों को प्रदर्शित करने के लिए, नर्क इन संसारों के उत्पादों को जला देता है और ब्रह्मांड को गैर-अस्तित्व की दुनिया से गंदगी से साफ करता है।

लेकिन यह एक ऐसा विषय है जिस पर हम अन्यत्र चर्चा करेंगे।

पाँचवाँ फल: स्वर्गदूतों पर विश्वास के फल का एक और उदाहरण

मुनकर और नकीर के नाम से जाने जाने वाले "सवाल करने वाले स्वर्गदूतों" के बारे में : मैंने एक बार कब्र में

प्रवेश करने की कल्पना की थी, क्योंकि एक दिन, हर किसी की तरह, मैं भी कब्र में प्रवेश करूंगा। जब मैं वहाँ लेटा था, उस अंधेरे, ठंडे, संकीर्ण गड्ढे की वीरानी और निराशा से भयभीत था, तो स्वर्गदूतों की प्रजाति में से मुनकर और नकीर नामक दो धन्य मित्र प्रकट हुए और मुझसे बातचीत करने लगे। एक के बाद एक, आत्माओं की दुनिया की ओर खिड़कियाँ खुलने से कब्र और मेरा दिल दोनों ही खुल गए, रोशन हो गए और गर्म हो गए। मैं इस काल्पनिक स्थिति से खुशी से भर गया, यह जानते हुए कि मैं भविष्य में ऐसा कुछ अनुभव करूँगा और मैंने दिल से धन्यवाद दिया।

बताया गया कि एक मदरसा छात्र जो अरबी पढ़ रहा था, उसकी मृत्यु हो गई।
मुनकर और नकीर के सवाल के जवाब में , जिन्होंने उससे पूछा था कि “तुम्हारा रब कौन है?” उसने एक पल के लिए कल्पना की कि वह फिर से मदरसे में आ गया है और उसने जवाब दिया: “शब्द ‘कौन’ विषय है और ‘तुम्हारा रब’ इसका विधेय है; अब मुझसे कुछ कठिन पूछो!” उसके जवाब ने फरिश्तों और दूसरी रूहों और एक संत व्यक्ति को हँसाया जो इस घटना को दुनिया से देख रहा था, और ईश्वरीय दया के प्रतीकात्मक चेहरे पर मुस्कान ला दी। ईश्वर की इच्छा से, छात्र को पीड़ा से मुक्ति मिल गई। मुझे उम्मीद है कि रिसाले -ए-नूर के एक शहीद छात्र स्वर्गीय हाफ़िज़ अली की तरह, जो विश्वास के फल नामक ग्रंथ का अध्ययन और उत्साहपूर्वक नकल करते हुए जेल में मर गए , और इस ग्रंथ में बताए गए सत्य के साथ मुनकर और नकीर के सवालों का जवाब दिया , हम रिसाले-ए-नूर के छात्र के रूप में भी

मुनकर द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों का उत्तर देने की क्षमता से संपन्न होना
और नकीर ने शक्तिशाली प्रमाणों के साथ रिसाले-ए नूर में समझाया।

छठा फल: फ़रिश्तों पर विश्वास करने से मिलने वाला एक और छोटा सा फ़ायदा सांसारिक सुख से जुड़ा है। एक मासूम बच्चे ने, जिसने इस्लामी दैनिक जीवन से जुड़ी एक पुस्तिका से अपने विश्वास का पाठ सीखा था, एक बार अपने छोटे भाई की मौत पर रो रहे दूसरे बच्चे से कहा: “मत रोओ! शुक्र मनाओ, क्योंकि तुम्हारा भाई जन्नत में चला गया है और अब फ़रिश्तों के साथ है। वह वहाँ का आनंद ले रहा है और हमसे बेहतर समय बिता रहा है। वह फ़रिश्तों की तरह उड़ रहा है और हर चीज़ को देख रहा है।” इन शब्दों से उसने अपने दोस्त के शोकाकुल आँसुओं को खुशी भरी मुस्कान में बदल दिया।

ठीक उस रोते हुए बच्चे की तरह, इस दुख भरी सर्दी में मुझे दो मौतों की दर्दनाक खबर मिली। एक मेरे भतीजे फुआद की मौत थी, जो देश के सबसे सफल हाई स्कूल के छात्रों में से एक था और जिसने रिसाले -ए-नूर द्वारा अध्ययन और सिखाए गए सत्यों को प्रकाशित किया था। दूसरी मेरी बहन अलीमा हनीम की मौत थी, जो हज के दौरान काबा की परिक्रमा करते समय मर गई थी। जब मेरे दो रिश्तेदारों की मौत मुझे रुला रही थी, जैसा कि अब्दुर्रहमान की मौत ने किया था, जिसका वर्णन बुजुर्गों के लिए आशा और सांत्वना के ग्रंथ (यानी छब्बीसवीं किरण) में किया गया है, मैंने अपने दिल में विश्वास की रोशनी से देखा कि मासूम फुआद और उस नेक औरत के साथी जन्नत के फरिश्ते और हूरें थे , और वे इस दुनिया के खतरों और पापों से बच गए थे। उस भयंकर दुःख के स्थान पर अपार हर्ष का अनुभव करते हुए मैंने उन दोनों को तथा फुआद के पिता अब्दुलमसीद को तथा अपने आपको भी बधाई दी तथा दयालुतम ईश्वर को धन्यवाद दिया। इसे यहाँ दोनों मृतकों के लिए दया की प्रार्थना के रूप में उल्लेख किया गया है।

रिसाले-ए-नूर में सभी तुलनाएं और विवरण विश्वास के उन फलों का वर्णन करते हैं जो इस दुनिया और अगली दुनिया में खुशी के साधन हैं।
इस दुनिया में जीवन की खुशियों और सुखों की तुलना में, ये सार्वभौमिक और व्यापक फल बताते हैं कि उनका विश्वास हर आस्तिक को हमेशा के लिए खुशी दिलाएगा; वास्तव में, यह अंकुर पैदा करने और उस तरह से विकसित होने के लिए बाध्य है। इन असंख्य सार्वभौमिक फलों में से पाँच को इकतीसवें वचन के अंत में स्वर्गारोहण के फल के रूप में वर्णित किया गया था, जबकि पाँच को चौबीसवें वचन की पाँचवीं शाखा में उदाहरण के रूप में शामिल किया गया है।

हमने शुरू में कहा था कि विश्वास के प्रत्येक स्तंभ के असंख्य फल हैं, और इन स्तंभों की समग्रता का एक फल

एक है विशाल स्वर्ग, जबकि दूसरा है शाश्वत सुख, और फिर एक और, शायद सबसे मधुर, ईश्वर का दर्शन है। इसके अलावा विश्वास के कुछ फल जो दोनों दुनिया में खुशी के साधन हैं, उनका वर्णन तुलना में किया गया है जो बत्तीसवें वचन के अंत में आता है।

सातवां फल: ईश्वरीय आदेश और भाग्य पर विश्वास करने से भी इस संसार में बहुमूल्य फल प्राप्त होते हैं। इसका प्रमाण सुप्रसिद्ध शास्त्रों में देखा जा सकता है।

यह कहते हुए कि "जो कोई भी ईश्वरीय नियति में विश्वास करता है, वह दुःख से सुरक्षित रहता है।" ईश्वरीय नियति में विश्वास का एक सार्वभौमिक फल, ईश्वरीय निर्णय और नियति पर ग्रंथ के अंत में दिए गए बेहतरीन उदाहरण में समझाया गया है, जो दो पुरुषों के बारे में है जो एक महल के सुंदर बगीचे में प्रवेश करते हैं। मेरे पास अनगिनत व्यक्तिगत अनुभव हैं, जिन्होंने मुझे आश्वस्त किया है कि ईश्वरीय नियति में विश्वास की कमी इस सांसारिक जीवन की खुशी को नष्ट कर देती है। जब भी मैं ईश्वरीय नियति के दृष्टिकोण से गंभीर दुर्भाग्य पर विचार करता हूं, तो मैं देखता हूं कि दुर्भाग्य बहुत हल्का हो जाता है। मैं अक्सर आश्चर्य करता हूं कि जो लोग इसमें विश्वास नहीं करते हैं वे कैसे जीवित रह सकते हैं!

आठवां फल: स्वर्गदूतों में विश्वास के स्तंभ के सार्वभौमिक फलों में से एक का उल्लेख बाईसवें वचन के दूसरे स्टेशन में इस प्रकार किया गया है: महादूत अजराइल, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने ईश्वर से कहा: "जब मैं मरने वालों की आत्माओं को पकड़ने का अपना कर्तव्य पूरा करूंगा, तो आपके सेवक मुझसे नाराज होंगे और मेरे बारे में शिकायत करेंगे।"

परमेश्ंवर ने उत्तर दिया: “मैं बीमारियों और विपत्तियों को तुम्हारे कर्तव्यों को ढकने के लिए एक परदा बना दूँगा, ताकि मेरे सेवकों की शिकायतें इन घटनाओं पर केंद्रित हों, न कि तुम पर।”

इन पर्दों की तरह, अजराइल का कर्तव्य भी एक पर्दा है, ताकि अनुचित शिकायतें सर्वशक्तिमान ईश्वर की ओर न की जाएं। क्योंकि हर कोई मृत्यु की बुद्धि, दया, सुंदरता और लाभों को नहीं समझ सकता: लोग केवल इसका बाहरी चेहरा देखते हैं और आपत्ति और शिकायत करना शुरू कर देते हैं। यह इसलिए है कि अनुचित शिकायतें परम दयालु ईश्वर की ओर न की जाएं, इसलिए अजराइल के कार्य पर पर्दा डाला गया है। ठीक उसी तरह, सभी स्वर्गदूतों के कार्य, वास्तव में सभी स्पष्ट कारणों के कार्य, शक्ति के हाथ को ढकने वाले परदे हैं, ताकि दिव्य शक्ति की गरिमा और पवित्रता और दिव्य दया की सर्वव्यापी प्रकृति उन चीजों के संबंध में संरक्षित की जाती है जिनकी आवश्यक सुंदरता स्पष्ट नहीं है और जिनकी बुद्धि समझ में नहीं आती है; उन्हें संरक्षित किया जाता है ताकि वे आपत्तियों का लक्ष्य न बनें, और ताकि जो लोग चीजों को सतही रूप से देखते हैं, वे दिव्य शक्ति को ऐसी चीज के रूप में न देखें जो आधारहीन, तुच्छ या क्रूर चीजों में व्यस्त है।

जैसा कि रिसाले-ए-नूर में स्पष्ट रूप से चर्चा की गई थी , कोई भी कारण या एजेंट चीजों के निर्माण या नियंत्रण में कोई आवश्यक भूमिका नहीं निभा सकता है, और हर चीज में सबसे स्पष्ट रूप से ईश्वरीय एकता की छाप होती है। आविष्कार और सृजन केवल ईश्वर के लिए विशेष हैं; कारण केवल एक पर्दा हैं। देवदूत जैसे सचेत प्राणी अपनी आंशिक, सीमित इच्छा-शक्ति और अपने अस्तित्व के लिए ईश्वरीय उद्देश्य के अनुसार कुछ कर्तव्यों को पूरा करने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। इसे "अधिग्रहण" कहा जाता है।53 वे जो करते हैं वह एक तरह की पूजा है जिसे वे अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों के रूप में पेश करते हैं।

> ईश्वर की गरिमा और महानता यह मांग करती है कि मन की दृष्टि में कारण शक्ति के हाथ को ढकने के लिए पर्दे हैं;
>
> जबकि ईश्वरीय एकता और एकरूपता यह मांग करती है कि कारणों की सृष्टि में कोई रचनात्मक भूमिका नहीं होती।

जिस प्रकार सृष्टि के कार्यों में नियोजित फ़रिश्ते और प्रत्यक्ष कारण ईश्वरीय शक्ति को दोषों और प्रत्यक्ष बुराई के आरोपण से बचाने के साधन हैं, जिन्हें कुछ लोग चीज़ों या घटनाओं में देखते हैं, जिनकी आवश्यक सुंदरता और ज्ञान के उदाहरण अदृश्य या अज्ञात हैं; वे ईश्वर को पवित्र करने, किसी भी कमी या ग़लती से उनकी पूर्ण स्वतंत्रता पर विश्वास करने और घोषणा करने के साधन हैं, उसी प्रकार मनुष्यों और जिन्नों में से हानिकारक तत्व और शैतानी व्यक्ति बुरे कामों और गैर-अस्तित्व से संबंधित कार्यों में नियोजित होते हैं ताकि वे ईश्वरीय शक्ति को अन्याय या अनुचित आपत्तियों और शिकायतों के आरोपण से बचाने में सहायता कर सकें। वे ब्रह्मांड में सभी दोषों और दोषों से पूरी तरह मुक्त होने के रूप में सर्वशक्तिमान ईश्वर की महिमा का मार्ग प्रशस्त करने में भी मदद करते हैं। क्योंकि दोष और दोष गैर-अस्तित्व या किसी चीज़ से उत्पन्न होते हैं।

पर्याप्त योग्यता की कमी, विनाश से या कुछ कर्तव्यों को पूरा करने में विफलता से, ये सभी गैर-अस्तित्व की ओर ले जाते हैं और उन कार्यों से उत्पन्न होते हैं जो विनाश या गैर-अस्तित्व लाते हैं। दोष और खामियाँ इन शैतानी और बुरे आवरणों को दी जाती हैं; आपत्तियाँ और शिकायतें उन पर निर्देशित की जाती हैं, और इस प्रकार वे ऐसे साधन के रूप में कार्य करते हैं जिसके द्वारा सर्वशक्तिमान ईश्वर को सभी दोषों से पूर्णतः मुक्त घोषित किया जाता है।

वास्तव में, अस्तित्वहीनता से संबंधित बुरे और विनाशकारी कार्यों के लिए किसी उल्लेखनीय शक्ति या ताकत की आवश्यकता नहीं होती है: कुछ तुच्छ कार्य, कुछ तुच्छ शक्ति, या यहां तक कि किसी कर्तव्य का गैर-प्रदर्शन भी महान विनाश का कारण बन सकता है।

---

[53] "अधिग्रहण" मानवता और जिन्न जैसे जिम्मेदार प्राणियों के स्वैच्छिक कार्यों को दर्शाता है जो निश्चित परिणाम देते हैं और जिसके लिए वे जिम्मेदार होते हैं। (ट्र.)

और व्यापक गैर-अस्तित्व। इसके बावजूद, यह अक्सर माना जाता है कि बुराई करने वालों के पास वास्तविक शक्ति और क्षमता होती है, भले ही वे गैर-अस्तित्व पैदा करने के अलावा कोई भूमिका नहीं निभाते हैं और मामूली नुकसान के अलावा कोई शक्ति नहीं रखते हैं।" लेकिन चूंकि बुराइयाँ गैर-अस्तित्व से उत्पन्न होती हैं, इसलिए बुराई करने वाले उनके एजेंट हैं। यदि वे बुद्धिमान " अधिग्रहण करना- प्राणी हैं, तो वे उचित रूप से परिणाम भुगतते हैं। दूसरे शब्दों में, बुरे कर्म करने वाले उनके एजेंट या कर्ता हैं।

हालाँकि, चूँकि अच्छे कर्म और कार्य अस्तित्व के साधन हैं और उनसे संबंधित हैं, जो लोग उन्हें करते हैं वे उनके सच्चे कर्ता नहीं हैं: बल्कि, वे साधन हैं जिनके माध्यम से ईश्वरीय अनुग्रह स्वयं प्रकट होता है; बुद्धिमान कुरान कहता है कि उनका पुरस्कार भी विशुद्ध रूप से ईश्वरीय अनुग्रह है: जो कुछ भी आपके साथ अच्छा होता है, वह ईश्वर की ओर से होता है; और जो कुछ भी बुराई आपके साथ होती है, वह आपकी ओर से होती है (4:79)।

संक्षेप में: अस्तित्व की दुनिया और गैर-अस्तित्व की असंख्य दुनियाएँ

अस्तित्व का टकराव, स्वर्ग और नर्क जैसे फल पैदा करता है। अस्तित्व की सभी दुनियाएँ घोषणा करती हैं, “सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं!” इस प्रकार उन्हें पूर्णता के सभी गुणों को पूर्ण डिग्री में रखने की घोषणा करते हैं, जबकि अस्तित्व की सभी दुनियाएँ घोषणा करती हैं, “सर्व-महिमावान ईश्वर है!” इस प्रकार ईश्वर को सभी दोषों और अन्याय से पूरी तरह मुक्त घोषित करते हैं। स्वर्गदूत और राक्षस, अच्छे और बुरे के उदाहरणों के साथ, जिसमें लाभकारी प्रेरणाएँ और शैतानी फुसफुसाहटें शामिल हैं जो दिल में प्रवेश करती हैं, सभी एक दूसरे के खिलाफ संघर्ष करते हैं। और जब ये टकराव होते हैं, तो स्वर्गदूतों में विश्वास का एक फल अचानक प्रकट होता है, जो ब्रह्मांड को रोशन करता है। हमें आयत की एक रोशनी दिखाते हुए: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है (24:35), यह हमें स्वाद चखाता है कि यह फल कितना मीठा है।

नौवां फल: स्वर्गदूतों पर विश्वास का एक और सार्वभौमिक फल है

चौबीसवें और उनतीसवें वचनों में पाया जाता है।

ब्रह्मांड के हर कोने में, अस्तित्व के हर क्षेत्र में और हर चीज़ में, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, प्रभुता की दयालु महिमा है, जो खुद को ज्ञात और प्यार करती है। और निश्चित रूप से उस महिमा, उस करुणा और खुद को ज्ञात और प्यार करने की इच्छा का जवाब धन्यवाद और व्यापक, सचेत पूजा के साथ देना आवश्यक है, उन्हें सभी दोषों से मुक्त घोषित करना। यह केवल अनगिनत देवदूत हैं जो अचेतन निर्जीव प्राणियों और सार्वभौमिक तत्वों की ओर से यह कर्तव्य निभा सकते हैं; वे एकमात्र प्राणी हैं जो पृथ्वी पर हर जगह, इसके मूल से लेकर प्लीएडेस और उससे आगे तक उस प्रभुता की संप्रभुता की बुद्धिमान, राजसी गतिविधि का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं।

उदाहरण के लिए, दर्शन के निर्जीव, निष्प्राण नियम पृथ्वी के निर्माण और उसके "प्राकृतिक" कर्तव्यों को अंधकारमय और उजाड़ दिखाते हैं। हालाँकि, इब्न अब्बास ने इस्राएल के बच्चों के पहले के पैगम्बरों के संदर्भ में बताया है कि पृथ्वी दो फ़रिश्तों के कंधों पर बैठी है जिन्हें थौर (बैल) और हुत कहा जाता है।

(मछली)। इस कथन के अनुसार, ये देवदूत पृथ्वी की देखरेख करते हैं। इसके अलावा, दूसरी दुनिया से संबंधित सखरा नामक पदार्थ को पृथ्वी की आधारशिला कहा जाता है और इसका उपयोग पृथ्वी के एक निश्चित हिस्से को स्वर्ग में बदलने में किया जाएगा। यह एक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है जिससे कोई कथन का वास्तविक अर्थ समझ सकता है, अर्थात पृथ्वी इन प्राणियों के कंधों पर टिकी हुई है जिन्हें थावर और हट के रूप में जाना जाता है।

दुर्भाग्य से, इस आलंकारिक वर्णन को समय के साथ शाब्दिक रूप से लिया जाने लगा, और इसने पूरी तरह से तर्कहीन रूप ले लिया, जबकि स्वर्गदूतों में विश्वास का फल पृथ्वी, इसकी रचना और कर्तव्यों को प्रकाशित करता है। चूँकि स्वर्गदूत पृथ्वी और चट्टान और ग्लोब के केंद्र के माध्यम से उसी तरह यात्रा करते हैं जैसे वे हवा के माध्यम से यात्रा करते हैं, न तो उन्हें और न ही पृथ्वी को भौतिक चट्टानों, या उन्हें सहारा देने के लिए मछली या बैल की आवश्यकता होती है!

साथ ही, चूँकि पृथ्वी पर जितने भी जीव हैं, उतने ही सिर के साथ ईश्वरीय महिमा का गान किया जाता है, उन प्रजातियों के सदस्यों की संख्या के अनुसार जीभों के साथ, और उन सदस्यों के अंगों, पत्तियों और फलों की संख्या के अनुसार, तो निश्चित रूप से इस शानदार, अचेतन "प्राकृतिक" पूजा को सचेत रूप से प्रस्तुत करने और इसे ईश्वरीय न्यायालय में पेश करने के लिए, चालीस हज़ार सिर वाला एक नियुक्त देवदूत होगा, जो अपनी चालीस हज़ार जीभों में से प्रत्येक के साथ ईश्वर की महिमा करेगा, और प्रत्येक जीभ चालीस हज़ार ईश्वरीय महिमा का उच्चारण करेगी। विश्वसनीय रिपोर्टर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने हमें इसे एक सत्य के रूप में सूचित किया। यह दर्शाता है कि स्वर्गदूतों का अस्तित्व और असाधारण प्रकृति, जैसे कि गेब्रियल, उन पर शांति हो, जो मानवता के साथ ईश्वर के रिश्ते को संप्रेषित और प्रकट करते हैं, जो ब्रह्मांड के निर्माण का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम है; इसराफिल और अजराइल, उन पर शांति हो, जो जीवित प्राणियों की दुनिया में निर्माता की भयानक गतिविधि का प्रतिनिधित्व करते हैं और उसे आराधना के साथ देखते हैं, जैसे कि जीवन देना, जीवन को बहाल करना, और मृत्यु के माध्यम से कर्तव्यों का निर्वहन करना; माइकल, उस पर शांति हो, जो दयालु ईश्वर द्वारा अपने प्राणियों के लिए प्रदान की जाने वाली व्यवस्था को देखने के अलावा, जो जीवन के क्षेत्र में दया का सबसे व्यापक और आनंददायक कार्य है, सचेत रूप से अचेतन धन्यवाद का प्रतिनिधित्व करता है। इन जैसे स्वर्गदूतों का अस्तित्व और असाधारण प्रकृति और उनकी आत्माओं की अमरता ईश्वरीय प्रभुत्व की संप्रभुता और भव्यता के कारण आवश्यक है।

उनका और जिस प्रजाति से वे संबंधित हैं उनका अस्तित्व उतना ही निश्चित है जितना कि संप्रभुता और भव्यता का अस्तित्व जिसे ब्रह्मांड में सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। स्वर्गदूतों से संबंधित अन्य मामलों को इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है।

कृपा और महिमा के सर्वशक्तिमान ने पृथ्वी पर जीवित प्राणियों की लाखों प्रजातियों का निर्माण किया है; उसने बहुत अधिक मात्रा में आत्माओं वाले प्राणियों का निर्माण किया है, यहाँ तक कि निम्न और सड़े हुए पदार्थों से भी, और उनसे ब्रह्मांड को भर दिया है। अपनी कला के चमत्कारों के संबंध में वह उन्हें यह घोषित करने के लिए प्रेरित करता है: "ईश्वर ने क्या चमत्कार किए हैं! ईश्वर कितना धन्य है और उसके आशीर्वाद कितने महान हैं! ईश्वर सर्व-महिमावान है!", और उसकी दया के उपहारों के संबंध में: "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं! सभी धन्यवाद ईश्वर को! ईश्वर सर्व-महान है!" इसलिए, निश्चित रूप से, उसने विशाल स्वर्ग के लिए उपयुक्त निवासियों और आत्मिक प्राणियों का निर्माण किया है, ऐसे प्राणी जो कभी विद्रोह नहीं करते और निरंतर आराधना करते हैं। स्वर्ग को खाली न छोड़ते हुए, उसने असंख्य विभिन्न प्रकार के स्वर्गदूतों का निर्माण किया है, जो संख्या में पशु प्रजातियों से कहीं अधिक हैं। उनमें से कुछ बारिश की बूंदों और बर्फ के टुकड़ों पर सवार होते हैं और अपनी-अपनी भाषाओं में ईश्वरीय कला और दया की सराहना करते हैं। अन्य लोग चलते हुए तारों पर सवार होकर अंतरिक्ष में अपनी यात्रा के दौरान, ईश्वर की महिमा के रूप में तथा प्रभुता की महानता, गरिमा और वैभव के संबंध में उनकी एकता की घोषणा के रूप में अपनी पूजा की घोषणा संसार के समक्ष करते हैं।

आदम के समय से लेकर अब तक सभी धर्मग्रंथों और धर्मों का स्वर्गदूतों के अस्तित्व और पूजा के बारे में सहमत होना, तथा स्वर्गदूतों के साथ मनुष्यों की बातचीत और मुलाकातों के बारे में सभी युगों में अनगिनत सर्वसम्मत विवरण यह साबित करते हैं कि उनका अस्तित्व उतना ही निश्चित है जितना कि अमेरिका के लोगों का अस्तित्व, जिन्हें हमने कभी नहीं देखा; यह भी स्पष्ट है कि स्वर्गदूतों का संबंध हमसे है।

अब आओ और विश्वास के प्रकाश के माध्यम से इस सार्वभौमिक फल का अनुभव करो: देखो कि यह कैसे ब्रह्मांड को एक छोर से दूसरे छोर तक भरता है, इसे सुशोभित करता है और इसे एक विशाल मस्जिद या पूजा स्थल में बदल देता है। जबकि वैज्ञानिक भौतिकवाद और नास्तिक दर्शन ब्रह्मांड को ठंडा, बेजान, अंधेरा और उजाड़ दिखाते हैं, विश्वास प्रकट करता है कि यह जीवन और प्रकाश से भरा है। यह दर्शाता है कि यह सचेत, परिचित और सबसे सुखद है, जो विश्वास करने वाले लोगों को इस दुनिया में रहते हुए अपने विश्वास की डिग्री के अनुसार, अनंत जीवन के सुखों की अभिव्यक्ति का अनुभव करने की अनुमति देता है।

निष्कर्ष: ईश्वर की एकता से उत्पन्न ब्रह्माण्ड में एकता के कारण, वही शक्ति, वही नाम, वही ज्ञान,

और वही कला ब्रह्मांड के हर हिस्से में व्याप्त है, और सभी जीव, व्यक्तिगत रूप से या एक प्रजाति के रूप में, अपने स्वभाव की भाषाओं के माध्यम से निर्माता की एकता, उसके पूर्ण नियंत्रण और अधिकार, उसकी रचनात्मकता, प्रभुत्व और पवित्रता की घोषणा करते हैं। उसी तरह, उसने स्वर्गदूतों को बनाया है और उनके साथ स्वर्ग को आबाद किया है, जिससे वे अपनी पूजा की भाषाओं के माध्यम से उन महिमाओं का प्रतिनिधित्व और पेशकश करते हैं जो सभी अचेतन प्राणी अपनी स्वभाव की भाषाओं के माध्यम से पेश करते हैं। स्वर्गदूत कभी भी ईश्वरीय आदेश के विपरीत कार्य नहीं करते हैं। शुद्ध उपासना के अलावा, वे सृजन के नाम पर कुछ भी नहीं करते हैं, न ही वे किसी भी चीज़ में हस्तक्षेप करते हैं जब तक कि उन्हें अनुमति न दी जाए; वे तब तक हस्तक्षेप भी नहीं कर सकते जब तक कि उन्हें अनुमति न दी जाए। वे इस बात को पूरी तरह से प्रकट करते हैं कि स्वर्गदूतों का अर्थ केवल उनके सम्मानित सेवक हैं

(21:26) और जो आदेश उन्हें दिया जाता है, वे उसे पूरा करते हैं (66:6)

बारहवीं किरण

बारहवीं किरण

डेनिज़ली और अफ़्योन में स्थानीय अधिकारियों को लिखे गए सैद नूरसी के पत्रों या उनके साथ बातचीत से उद्धरण और चयन

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

Wई एक ऐसा समुदाय है जिसके सदस्य एक दूसरे से बंधे हुए हैं विश्वास के माध्यम से। हमारे सदस्य, पूरे सम्मान के साथ, दिन में पाँच बार विहित प्रार्थनाओं के माध्यम से इस समुदाय के प्रति अपना लगाव दिखाते हैं। वे एक-दूसरे की प्रार्थनाओं और आध्यात्मिक लाभों में सहायता करने के लिए तत्पर रहते हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम विश्वासियों को एक निश्चित, सत्यापित तरीके से कुरान की सच्चाई सिखाएँ, ताकि हम और वे दोनों अनंत विनाश और कब्र के मध्यवर्ती क्षेत्र में अनंत काल के एकांत कारावास से बच सकें। हमारा किसी भी सांसारिक राजनीतिक समाज, गुप्त समिति या गुप्त संगठन से कोई संबंध नहीं है।

अगर हममें सांसारिक मामलों में हस्तक्षेप करने की कोई इच्छा होती, तो यह कभी गुप्त नहीं रह पाती। इसलिए, अगर कुछ लोगों ने पिछले अठारह वर्षों में हमारे द्वारा कोई अप्रिय व्यवहार देखे बिना ही हम पर गुप्त उद्देश्यों के लिए साजिश रचने का आरोप लगाया है, तो यह केवल हमारे प्रति उनकी नफरत या हमारे प्रति उनके किसी विशेष द्वेष के कारण ही हो सकता है।

रिसाले -ए-नूर पर मेरे या मेरे कुछ भाइयों के दोषों के कारण हमला नहीं किया जाना चाहिए। इसका स्रोत, आखिरकार, कुरान है, और कुरान ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से बंधा हुआ है।

इसके अलावा, रिसाले-ए-नूर इस देश को बहुमूल्य सेवाएं प्रदान करता रहा है और इसलिए हमारी किसी भी व्यक्तिगत गलती के लिए उसे दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए।
वास्तव में, इस पर हमला करने से देश को अपूरणीय क्षति हो सकती है, जिससे देश को इसकी सेवाओं से वंचित होना पड़ सकता है। इसके छात्र शेख सईद या मेनेमन जैसे विद्रोही आंदोलनों में भाग लेने के बारे में कभी नहीं सोचते।

संक्षेप में: जिस प्रकार हम सांसारिक दुनिया में हस्तक्षेप नहीं करते, उसी प्रकार सांसारिक लोगों को भी हमारे विश्वास की सेवा तथा हमारे उन कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए जिनका उद्देश्य परलोक में अनन्त जीवन प्राप्त करना है।

नर्सी ने कहा

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

सज्जनो!

हम इस अटल निश्चय के साथ जानते हैं कि दो गुणा दो चार होते हैं कि हम ईमान वालों के लिए मौत शाश्वत विनाश से कर्तव्यों से मुक्ति में बदल गई है, और जो लोग गुमराही का अनुसरण करते हैं और हमारा विरोध करते हैं क्योंकि हम ईमान वाले और कुरान के सेवक हैं, उनके लिए मौत या तो शाश्वत मृत्युदंड है यदि उनका परलोक में निश्चित विश्वास नहीं है, या अंधकारमय और चिरस्थायी एकांत कारावास है यदि वे परलोक में विश्वास करते हैं लेकिन इसके बजाय बुराई और गुमराही के मार्ग पर चलना चुनते हैं। क्या इस दुनिया में मानवता के लिए शाश्वत दंड से मुक्ति से अधिक महत्वपूर्ण कोई बात है? चूँकि ऐसा नहीं है, इसलिए हमें खत्म करने का प्रयास न करें! भले ही आप हमारा विरोध करें, लेकिन मानवता की हमारी सहज भावनाएँ यह माँग करती हैं कि हम उन लोगों पर दया करें जो लगातार गुमराही का अनुसरण करते हैं और उन लोगों को खत्म करने का प्रयास करते हैं जो दूसरों की शाश्वत खुशी के लिए काम करते हैं, केवल इसलिए कि वे निश्चित रूप से दूसरी दुनिया में जाएँगे और अपने गलत कामों के कारण कष्ट उठाएँगे। मैं इसे सभी के सामने साबित करने के लिए तैयार हूँ, जिसमें सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक और दार्शनिक भी शामिल हैं। मैं विश्वास के फलों पर ग्रंथ (11वीं किरण) को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। इसे ध्यान से पढ़ें और अध्ययन करें, और यदि आपका हृदय - आपकी शारीरिक आत्मा आपका अपना मामला है - मेरी कही गई बातों की पुष्टि नहीं करता है, तो मैं चुप रहूँगा।

नर्सी ने कहा

* * *

54 सईद नूरसी ने 1925 में दक्षिण-पूर्वी तुर्की में और 1930 में पश्चिमी तुर्की के इज़मिर के एक जिले मेनेमेन में हुए उकसावे वाले विद्रोही आंदोलनों का उल्लेख किया है। (ट्र.)

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

उन्होंने मुझसे पूछा: "आप गणतंत्र के बारे में क्या सोचते हैं?" मैंने जवाब दिया: "अगर आप मेरी ज़िंदगी की कहानी देखेंगे, तो आप देखेंगे कि मैं आप में से किसी से भी पहले एक धार्मिक गणतंत्रवादी था। मैं एक निर्जन कब्र में एकांतवास में रह रहा था। कोई मेरे लिए सूप लाता और मैं अपने कमरे में चींटियों को सब्ज़ियाँ देता, सूप के पानी में अपनी रोटी डुबोकर संतुष्ट हो जाता। जो लोग इसके बारे में सुनते वे मुझसे इसके बारे में पूछते, और मैं उनसे कहता: "चींटियों और मधुमक्खियों के ये राष्ट्र गणतंत्र की तरह हैं: मैं चींटियों को उनके गणतंत्रवाद के सम्मान में अपने सूप में सब्ज़ियाँ और अनाज देता हूँ।"

तो फिर उन्होंने कहा: "आप इस्लाम के शुरुआती नेताओं का विरोध कर रहे हैं।" मैंने जवाब दिया: "सही मार्ग पर चलने वाले खलीफा एक गणतंत्र के खलीफा और राष्ट्रपति दोनों थे। निश्चित रूप से अबू बकर सच्चे, ईश्वर उनसे प्रसन्न हो, एक ऐसे गणतंत्र के राष्ट्रपति थे जिसमें पैगंबर के सबसे प्यारे साथी रहते थे, जिनमें वे दस साथी भी शामिल थे जिन्हें जन्नत का वादा किया गया था।55 और यह कोई अर्थहीन उपाधि नहीं थी: अबू बकर और दूसरे सही मार्ग पर चलने वाले खलीफा एक धार्मिक गणतंत्र के नेता थे, जिसकी आधारशिला सच्चे न्याय और विवेक और भाषण की स्वतंत्रता पर रखी गई थी।"

नर्सी ने कहा

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

हमारा कभी भी कोई राजनीतिक संगठन या तरीक़ा स्थापित करने का कोई इरादा नहीं रहा है : हमने सिर्फ़ अपने विश्वास को बचाने के लिए काम करने की कोशिश की है। हमने एक दूसरे के साथ सिर्फ़ विश्वास के बंधन और भाईचारे (और बहनचारे) के ज़रिए रिश्ते बनाए हैं जो इस विश्वास के परिणामस्वरूप पैदा होते हैं। विशेषज्ञ रिपोर्ट कहती है: "सैद नूरसी और रिसाले-ए- नूर के छात्रों के लेखन में ऐसा कुछ भी स्पष्ट या निहित नहीं है जो यह सुझाव देता हो कि उनका धर्म या पवित्र मामलों का दुरुपयोग करने, राज्य सुरक्षा के उल्लंघन को प्रोत्साहित करने या कोई राजनीतिक संगठन स्थापित करने का कोई इरादा है। सैद नूरसी के ग्रंथ निष्कपट और राजनीतिक रूप से निःस्वार्थ दोनों हैं, और किसी भी तरह से सिद्धांत से अलग नहीं हैं-

---

55 पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से वर्णित है कि निम्नलिखित दस व्यक्ति स्वर्ग जाएंगे: अबू बकर, उमर, उस्मान, अली (पैगंबर के बाद चार सही मार्गदर्शित खलीफा), साद इब्न अबी वक्कास, जुबैर इब्न अव्वम, तल्हा इब्न उबैदुल्लाह, अब्दुर-रहमान इब्न औफ, अबू उबैदा इब्नुल-जर्राह, और सईद इब्न ज़ैद।

(अबू दाऊद, "सुन्ना" 27; अत-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 26.) (ट्र.)

विद्वत्ता और धर्म के सिद्धांत। उनमें स्पष्ट रूप से ऐसा कुछ भी नहीं है जो धर्म का शोषण करता हो या किसी राजनीतिक संगठन के गठन से संबंधित हो। छात्रों के बीच और छात्रों और सईद नूरसी के बीच पत्र-व्यवहार इस सामान्य प्रवृत्ति से पूरी तरह सहमत हैं। ग्रंथ कुरान की आयतों या पैगंबरी परंपराओं के सही अर्थों की व्याख्या करते हैं। ये तुलनाओं और दृष्टांतों का उपयोग करके ईश्वर, पैगंबर और पुनरुत्थान में विश्वास को समझाने के लिए लिखे गए कार्य हैं। इनमें देश के बुजुर्गों और युवाओं के लिए नैतिक निर्देश भी शामिल हैं, जिसमें उनके अपने जीवन के अनुभवों से चुनी गई शिक्षाप्रद घटनाओं का उपयोग किया गया है।”

धर्म केवल आस्था में ही नहीं है, इसमें धार्मिक कार्य भी शामिल हैं। क्या कारावास का भय या सरकारी जासूस द्वारा पकड़े जाने का भय लोगों को ऐसे जघन्य पाप और अपराध करने से रोकने के लिए पर्याप्त है जो समाज में जहर घोलते हैं, जैसे हत्या, व्यभिचार, चोरी, शराब पीना और जुआ? अगर ऐसा होता, तो हर घर में या हर किसी के पास एक पुलिसवाला या जासूस स्थायी रूप से तैनात होना चाहिए, ताकि विद्रोही आत्माएं इन घृणित कार्यों को करने से खुद को रोक सकें। हालाँकि, रिसाले -ए-नूर ने हर किसी के बगल में एक स्थायी अमूर्त निवारक रखा है - एक निवारक जो विश्वास और जो अच्छा है उसे आदेश देने और जो नाजायज़ है उसे मना करने के कर्तव्य से आता है। नरक और ईश्वरीय प्रकोप की भयानक जेल के अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए लोग खुद को बुराई से बचाने में सक्षम हैं।

नर्सी ने कहा

* * *

सज्जनो!

दोस्ती, भाईचारे या बहन के साथ मिलना-जुलना और शाश्वत खुशी के लिए ईमानदारी से सामाजिक संबंध सामाजिक जीवन की आधारशिला और मानव स्वभाव की एक अनिवार्य आवश्यकता है; वे लोगों के बीच एक शक्तिशाली और सबसे महत्वपूर्ण बंधन बनाते हैं, पारिवारिक जीवन से लेकर कबीले, राष्ट्र, धर्म और मानवता के जीवन तक। उनमें से प्रत्येक भौतिक और अभौतिक चीजों के हमलों का सामना करने के लिए एक समर्थन बिंदु और सांत्वना के साधन के रूप में कार्य करता है जो चिंता और नुकसान का कारण बनते हैं - ऐसी चीजें जो लोगों को उनके मानवीय और धार्मिक कर्तव्यों को पूरा करने से रोकती हैं और जिन्हें व्यक्ति स्वयं नहीं रोक सकते हैं। चूंकि ये सामाजिक संबंध और सभाएं राजनीति से संबंधित नहीं हैं और केवल विश्वास की सच्चाई और कुरान की शिक्षाओं का अध्ययन करने के लिए मौजूद हैं, जो दोनों दुनिया में खुशी की ओर ले जाने के लिए निश्चित हैं, उन्हें प्रकृति में राजनीतिक होने का आरोप लगाना एक कार्य है

यह सरासर धोखा या जानबूझकर की गई दुश्मनी है। यह न केवल इस्लाम के लिए शत्रुतापूर्ण है, बल्कि यह हमारे समाज और देश और पूरी मानवता के लिए भी हानिकारक है।

नर्सी ने कहा

* * *

राजनीति में गैर-भागीदारी

रिसाले-ए-नूर में जो दया, विवेक, सत्य और सत्य के प्रति समर्पण है, वह हमें राजनीति में शामिल होने से रोकता है। क्योंकि राजनीति में शामिल होने से अक्सर निर्दोष लोगों के साथ अन्याय होता है या वे विपत्तियों से पीड़ित होते हैं, जो अन्यायपूर्ण है। कुछ लोगों ने मुझसे पूछा कि मैं इससे क्या मतलब रखता हूँ, तो मैंने कहा: इस वर्तमान तूफानी सदी में, आधुनिक सभ्यता से पैदा हुए अहंकार और जातिवाद, विश्व युद्ध से उभरे सैन्य तानाशाही और गुमराही से पैदा हुई निर्दयता ने इस तरह के अत्यधिक अत्याचार और अत्यधिक

निरंकुशता को जन्म दिया है कि अगर सत्य के लोग शारीरिक बल के माध्यम से अपने अधिकारों की रक्षा करें, तो वे या तो हार जाएंगे या उन्हें और अधिक अत्याचार करना पड़ेगा और इस बहाने से कई निर्दोष लोगों को मरना पड़ेगा कि वे विरोधी पक्ष के पक्ष में हैं। क्योंकि जो लोग अहंकार, जातिवाद और निर्दयता की भावना से काम करते हैं और हमला करते हैं, वे किसी एक-दो लोगों की गलती के कारण किसी छोटे-मोटे बहाने से बीस-तीस लोगों पर हमला करके उन्हें नष्ट कर देते हैं। यदि सत्यवादी लोग धर्म और न्याय के लिए उसी पर हमला करें, जिसने उन पर हमला किया है, तो वे तीस नुकसानों के बदले में केवल एक जीतते हैं और फिर खुद को परास्त पाते हैं। यदि सत्यवादी लोग भी अन्यायपूर्ण नियम के अनुसार एक-दो लोगों की गलती के कारण बीस-तीस लोगों को कुचल दें, तो वे सत्य के नाम पर घोर अन्याय करेंगे।

यही कारण है कि हम कुरान के आदेशों का पालन करते हुए राजनीति से दूर रहते हैं और सरकार में हस्तक्षेप करने से इनकार करते हैं। इस प्रमुख सिद्धांत का पालन करते हुए, हम अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने से भी बचते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि सत्य और अधिकार हमारे पक्ष में हैं। इसके अलावा, चूँकि सांसारिक सब कुछ क्षणभंगुर और गुज़रने वाला है, चूँकि मृत्यु कभी गायब नहीं होगी, चूँकि कब्र का दरवाज़ा बंद नहीं होता है, और चूँकि ईश्वर की खातिर झेली गई कठिनाइयाँ दया में बदल जाती हैं, इसलिए हम पूरी तरह से धैर्य और कृतज्ञता के साथ ईश्वर पर भरोसा करते हैं, और चुप रहते हैं... और मृत्यु नहीं मरती और कब्र का दरवाज़ा बंद नहीं होता।

नर्सी ने कहा

तेरहवीं किरण

तेरहवीं किरण

सैद नूरसी द्वारा अपने विद्यार्थियों को लिखे गए पत्रों से उद्धरण और चयन

इस रे में 1943 और 1944 में सैद नूरसी द्वारा अपने छात्रों को भेजे गए पत्र शामिल हैं। ये अत्यंत मूल्यवान पत्र रिसाले-ए-नूर के महान प्रयासों को दर्शाते हैं।

उसके नाम में उसकी महिमा है!

हे प्रिय विश्वासयोग्य भाइयो!

मैं तुम्हें अपने पूरे दिल और आत्मा से शक्ति और भाग्य की धन्य रात पर बधाई देता हूं जो बीत चुकी है और आने वाले त्योहार ('ईद) पर , और मैं तुम्हें सबसे दयालु दयालु की एकता और करुणा पर सौंपता हूं। हालांकि प्रसिद्ध कहावत के अनुसार, "जो कोई भी ईश्वरीय भाग्य में विश्वास करता है वह दुःख से सुरक्षित है," मैं आपको सांत्वना की आवश्यकता के रूप में नहीं देखता। मुझे लगता है कि मैंने इस आयत में हमारी स्थिति का एक अप्रत्यक्ष संदर्भ देखा है: इसलिए अपने रब के फैसले की प्रतीक्षा करो, क्योंकि तुम हमारी निगरानी में हो; और अपने रब की स्तुति उसकी प्रशंसा के साथ करो (52:48), जो पूर्ण सांत्वना देता है। यह इस प्रकार है:

जब हम दुनिया को भूलकर शांतिपूर्ण रमज़ान मनाने के बारे में सोच रहे थे, तो यह अकल्पनीय और पूरी तरह से असहनीय दुर्भाग्य हमारे साथ घटित हुआ। हालाँकि, मैंने देखा है कि यह हम सभी के लिए शुद्ध अनुग्रह है-

मेरे लिए, रिसाले-ए-नूर के लिए, आपके लिए और हमारे मुबारक महीने रमज़ान के लिए, और

हमारे बीच जो भाईचारा है, उसके लिए मैं अपने लिए इसके अनेक लाभों में से केवल दो या तीन का वर्णन करूंगा।

पहला: तीव्र उत्साह और ईमानदारी, तथा रमजान के दौरान ईश्वर की शरण में जाने और उनसे प्रार्थना करने से मेरी गंभीर बीमारी दूर हो गई और मैं काम करने लगा।

दूसरा: इस साल आप सभी से मिलने और आपके साथ रहने की मेरी तीव्र इच्छा थी। मैं आप में से केवल एक को देखने और इस्पार्टा आने के लिए उन कठिनाइयों को झेलने के लिए सहमत होता जो मैं अब झेल रहा हूँ।

तीसरा: कस्तमोनू में और यहाँ आने के रास्ते में हमने जो भी दर्दनाक घटनाएँ और परिस्थितियाँ झेलीं, और जिन्हें हम यहाँ भी झेल रहे हैं, वे अचानक एक असाधारण तरीके से बदल रही हैं; मेरी सभी आशंकाओं के विपरीत, कृपा का एक हाथ खुद को प्रकट करता है, जिससे मैं यह कहने पर मजबूर हो जाता हूँ: “अच्छाई उसी में है जिसे ईश्वर चुनता है।” कृपा का यह हाथ कुछ लापरवाह और उच्च श्रेणी के सांसारिक लोगों को रिसाले-ए-नूर पढ़ने के लिए प्रेरित करता है, जिसे पढ़ने में मेरा मन सबसे अधिक व्यस्त रहता है, और यह ध्यानपूर्वक इसकी जीत के लिए नए रास्ते खोलता है।

अपनी पीड़ाओं को सहने की कोशिश करते हुए, आप में से हर एक के द्वारा झेले गए दर्द और तकलीफ़ मुझे सबसे ज़्यादा परेशान कर रही थी। हालाँकि, यह आपदा हमारे यहाँ जीवन के हर घंटे को दस घंटों की इबादत के बराबर बना देती है, और चूँकि रमज़ान का मुबारक महीना एक घंटे को पुण्य के सौ घंटों के बराबर बनाता है, इसलिए यहाँ हमारा हर घंटा पुण्य के हज़ार घंटों की इबादत में बदल जाता है। इसलिए, तुम पर तरस खाने और तुम्हारी हालत पर रोना रोने के बजाय, मैं तुम्हें बधाई देता हूँ। क्योंकि तुम जैसे सच्चे लोग, जिन्हें रिसाले -ए-नूर ने पूरी तरह से सिखाया है, जानते हैं कि यह दुनिया व्यापार की एक क्षणभंगुर जगह है; ऐसे लोग अपने ईमान और आख़िरत में अपने जीवन की खातिर सब कुछ कुर्बान कर देते हैं। इस प्रकार मैं तुम्हारी दृढ़ता की सराहना करता हूँ और घोषणा करता हूँ: "कुफ़्र और गुमराही के अलावा सभी स्थितियों के लिए अल्लाह की प्रशंसा और धन्यवाद हो!"

मुझे पूरा यकीन है कि ऐसे फ़ायदे हैं, सिर्फ़ मेरे लिए ही नहीं बल्कि आपके लिए, हमारे भाईचारे के लिए, रिसाले-ए-नूर के लिए और हमारे मुबारक रमज़ान के लिए, कि अगर ग़ैब से पर्दा हटा दिया जाए, तो हम यह कहने पर मज़बूर हो जाएँगे: "हे ईश्वर, आपका शुक्र है! यह ईश्वरीय आदेश हमारे लिए आपकी कृपा का एक उदाहरण है।"

इस स्थिति के लिए जो लोग ज़िम्मेदार हैं, उन्हें दोष मत दीजिए। इस आपदा के लिए बहुत पहले से ही व्यापक और भयावह योजनाएँ बनाई जा रही थीं, लेकिन इसने हमें बहुत हल्के ढंग से मारा है। ईश्वर की इच्छा से, यह भी जल्दी ही गुज़र जाएगा। इस प्रकार, आयत के संदेश के अनुसार: यह अच्छी तरह से हो सकता है

और हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें पसंद न हो, लेकिन वह तुम्हारे लिए अच्छी हो, और हो सकता है कि कोई चीज़ तुम्हें पसंद हो, लेकिन वह तुम्हारे लिए बुरी हो। अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते (2:216), अतः तुम दुःखी न हो।

नर्सी ने कहा

* * *

मेरे प्यारे भाइयो!

मैं आपके करीब होने से बहुत खुश हूँ। कभी-कभी मैं कल्पना करता हूँ कि मैं आपसे बात कर रहा हूँ और यह मुझे सांत्वना देता है। जान लो कि अगर यह संभव होता, तो मैं गर्व और खुशी से आपकी सभी कठिनाइयों को सहन करता। आपकी वजह से, मैं इसपार-ता और उसके आस-पास के इलाकों से लेकर उसके पत्थरों और मिट्टी तक से प्यार करता हूँ।

मैं तीन मामलों में कह सकता हूँ कि मैं इस्पार्टा से हूँ। मैं इसे ऐतिहासिक रूप से साबित नहीं कर सकता, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि सईद के पूर्वज, जो इस्पार्टा के उप-जिले (बिटलिस में) में दुनिया में आए थे, यहीं से वहाँ गए थे।

और इस्पर्टा प्रांत ने मुझे ऐसे सच्चे भाई-बहन दिए हैं कि मैं न केवल अपने भाई अब्दुलमसीद और अपने भतीजे अब्दुर्रहमान को, बल्कि उनमें से प्रत्येक के लिए अपने आप को भी खुशी से बलिदान करने को तैयार हूँ।

मुझे लगता है कि इस समय पृथ्वी पर ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो इससे कम कष्ट झेल रहा हो।
उनके दिल, आत्मा और दिमाग रिसाले-ए- नूर के छात्रों से ज़्यादा मज़बूत हैं। क्योंकि एक निश्चित, सत्यापित विश्वास की रोशनी के कारण, रिसाले-ए-नूर के छात्रों के दिल, आत्मा और दिमाग को परेशानी नहीं होती। जहाँ तक शारीरिक कष्टों की बात है, वे रिसाले-ए-नूर की शिक्षाओं से जानते हैं कि वे क्षणिक और तुच्छ दोनों हैं, और पुरस्कार देते हैं, और एक ऐसा साधन हैं जिसके द्वारा विश्वास के कारण सेवा अन्य चैनलों में विकसित हो सकती है, और इसलिए वे इन कठिनाइयों का सामना कृतज्ञता और धैर्य के साथ करते हैं। वे अपने व्यवहार से साबित करते हैं कि एक निश्चित, सत्यापित विश्वास इस दुनिया में भी खुशी की ओर ले जाता है। वे कहते हैं "आइए देखें कि भगवान क्या करते हैं, क्योंकि जो कुछ भी वह करते हैं, वह अच्छा होता है," और इन क्षणिक कठिनाइयों को दया के स्थायी उदाहरणों में बदलने के लिए दृढ़ता से काम करते हैं।

दयालुओं में भी दयालु ईश्वर ऐसे भाइयों की संख्या बढ़ाए, उन्हें इस देश के लिए गौरव और खुशी का कारण बनाए, तथा उन्हें स्वर्ग की सबसे ऊंची मंजिल में अनंत सुख प्रदान करे।

आमीन!

नर्सी ने कहा

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा है!

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

मैं आपको धार्मिक उत्सव पर एक बार फिर बधाई देता हूँ। इस बात से दुखी न हों कि हम व्यक्तिगत रूप से नहीं मिल सकते; वास्तव में हम हमेशा साथ हैं और ईश्वर की इच्छा से हम अनंत काल के मार्ग पर एक दूसरे का साथ देंगे। मेरा मानना है कि आस्था की सेवा में आपको जो शाश्वत गुण और आत्मा और हृदय के गुण और आनंद प्राप्त होते हैं, वे उन अस्थायी, क्षणिक दुखों और परेशानियों को कम कर देते हैं, जिन्हें आप आज झेल रहे हैं। अब तक ऐसे कोई लोग नहीं हुए हैं, जिन्होंने रिसाले-ए-नूर की तरह कम कठिनाइयों का सामना किया हो।

ऐसी पवित्र सेवा में छात्रों को शामिल करें। वास्तव में, स्वर्ग सस्ता नहीं है। लोगों को पूर्ण अविश्वास से बचाना, जो इस दुनिया और परलोक दोनों के जीवन को नष्ट कर देता है, इस समय बहुत महत्वपूर्ण है। यदि कुछ परेशानियाँ हैं, तो उनका सामना उत्साह, धन्यवाद और धैर्य के साथ किया जाना चाहिए। चूँकि हमारा निर्माता, जिसने हमें नियुक्त किया है, वह सर्व-दयालु और सर्व-बुद्धिमान है, इसलिए हमें अपने साथ आने वाली हर चीज़ को त्याग और खुशी के साथ, और उसकी दया और बुद्धि पर पूरी तरह भरोसा करते हुए सामना करना चाहिए।

यह आपके भाई की ओर से आपको प्राप्त होता है, जो अपनी सभी प्रार्थनाओं में प्रथम पुरुष बहुवचन का प्रयोग करते हुए - उदाहरण के लिए, "हमें मुक्ति प्रदान करें; हम पर दया करें; हमारी रक्षा करें" - आप सभी को बिना किसी अपवाद के उनमें सम्मिलित करता है; वह हमारी आध्यात्मिक साझेदारी के सिद्धांत के अनुसार कार्य करता है, मानो हम एक ही आत्मा वाले अनेक शरीर हों; वह आपकी परेशानियों के बारे में आपसे अधिक चिंतित है; और वह आपकी सामूहिक व्यक्तित्व से सहायता, दृढ़ता और मध्यस्थता की प्रतीक्षा करता है।

नर्सी ने कहा

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाई, रेफ़ेट बे!

चूँकि आपके विद्वान प्रश्न पत्रों में निहित कई महत्वपूर्ण सत्यों की कुंजी बन गए हैं , इसलिए मैं उनके प्रति उदासीन नहीं रह सकता। आपके इस अंतिम प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर इस प्रकार है:

चूँकि कुरान एक शाश्वत घोषणा है जो मानवता के सभी वर्गों और उपासकों के सभी समूहों को संबोधित करती है, इसलिए इसमें निश्चित रूप से कई अर्थ और अर्थ के स्तर होने चाहिए। कुछ कुरानिक टिप्पणीकार केवल सबसे सामान्य या सबसे स्पष्ट अर्थ चुनते हैं, या वे जो पैगंबर के किसी आवश्यक कार्य या पुष्टि किए गए अभ्यास को व्यक्त करते हैं, उन पर शांति हो और

आशीर्वाद। उदाहरण के लिए, उनमें से कुछ ने समझा है कि और रात के समय में भी उसकी स्तुति करो (52:49) देर रात की प्रार्थना (तहज्जुद) को इंगित करता है, जो एक महत्वपूर्ण सुन्नत है, और वाक्यांश सितारों की वापसी पर (52:49) से वे उस अतिरिक्त प्रार्थना का संकेत समझते हैं जो सुबह की विहित प्रार्थना से पहले की जाती है, जो पैगंबर का एक महत्वपूर्ण अभ्यास है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। हालाँकि, पहले वाक्य के कई अन्य अर्थ हैं। मेरे भाई! आपसे बातचीत बंद नहीं होती।

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

बहुत-बहुत हार्दिक बधाई! पहले के समय में मेरे पैतृक क्षेत्र में हम 56 का उपयोग करते थे। अब मैं अरफा के दिन सूरतुल इखलास को एक हजार बार पढ़ूंगा ।

मैं इसे पहले दिन पाँच सौ बार और खुद अरफा के दिन पाँच सौ बार पढ़ सकता हूँ। जो लोग ऐसा करने में सक्षम महसूस करते हैं, वे इसे एक ही दिन - अरफा के दिन पढ़ सकते हैं। मैं आप सभी को व्यक्तिगत रूप से नहीं देख सकता और आप सभी से बात नहीं कर सकता, लेकिन अधिकांश समय मैं ईश्वर से प्रार्थना करते हुए आप सभी से बात करने में सक्षम हूँ, कभी-कभी नाम लेकर।

* * *

मेरे प्यारे भाइयो!

आज सुबह तस्बीहात पढ़ते हुए मेरा दिल हाफ़िज़ तवफ़िक़ के लिए तरस से भर गया, यह जानते हुए कि यह दूसरी बार है जब मुसीबतें उसे घेर रही हैं। फिर अचानक मेरे मन में आया कि मुझे उसे बधाई देनी चाहिए! ज़्यादा सावधानी बरतने के बहाने से उसने अपने अहम पद और रिसाले-ए-नूर की सेवा में अपने बड़े हिस्से से थोड़ा पीछे हटना चाहा था। लेकिन उसकी सेवा की पवित्रता और महत्व ने उसे एक बार फिर उसी बड़े हिस्से और विशाल पुण्य को अपने अधिकार में लेने के लिए प्रेरित किया। किसी को थोड़े से क्षणिक कष्ट और कठिनाई के कारण इतने बड़े आध्यात्मिक सम्मान से दूर नहीं रहना चाहिए।

वास्तव में, मेरे भाईयों, सब कुछ बीत जाता है, और जब वह बीत जाता है, तो यदि वह सुख और आनन्द था, तो वह कुछ भी नहीं रह जाता, केवल आहें ही रह जाती हैं।

---

56 'अरफा' का दिन धार्मिक त्यौहार से एक दिन पहले का दिन है। (ट्र.)

57 तस्बीहात सर्वशक्तिमान ईश्वर की महिमा, प्रशंसा और महिमा का पाठ है। जो प्रार्थनाएँ विहित प्रार्थनाओं के बाद पढ़ी जाती हैं वे हैं सुभानल्लाह (सर्वशक्तिमान ईश्वर है), अल-हम्दु लिल्लाह (सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है), और अल्लाहु अकबर (ईश्वर महान है)। प्रत्येक को 33 बार पढ़ा जाता है। (ट्र.)

अफसोस। लेकिन अगर यह पवित्र सेवा के लिए सहन किया गया कष्ट और कठिनाई है, तो यह इस दुनिया और परलोक दोनों में ऐसे सुखद लाभ देगा कि कष्ट शून्य हो जाएगा। आप में से एक को छोड़कर, मैं सबसे बुजुर्ग हूं, और यह मैं ही हूं जिसे सबसे ज्यादा परेशानियां घेरती हैं। फिर भी मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं अपनी स्थिति से संतुष्ट हूं और इसे पूरे धैर्य, कृतज्ञता और सहनशीलता के साथ स्वीकार करता हूं। विपत्तियों का सामना करते समय कृतज्ञता उन्हें धैर्य के साथ सहन करने और इस दुनिया और परलोक दोनों के लिए उनके लाभों के लिए मिलने वाला पुरस्कार है।

* * *

मेरे प्यारे भाइयो!

विश्वास के फलों के "मामलों" को पूरा करने में बाधा डालने वाली बाधाओं के गायब होने के साथ , ईश्वर की इच्छा से प्रकाश के ग्रंथों (रिसाले-ए नूर) का लेखन और प्रतिलिपिकरण फिर से शुरू हो जाएगा। मैं इस आपदा को ईश्वरीय नियति और निर्णय के दृष्टिकोण से देखता हूँ, क्योंकि इस तरह से चीजों को देखने से मुसीबतें दया के उदाहरणों में बदल जाती हैं। जैसा कि द ट्वेंटी-टी-सिक्सथ वर्ड - ईश्वरीय नियति और निर्णय पर ग्रंथ में समझाया गया था - हर घटना के दो कारण होते हैं। एक स्पष्ट कारण है: लोग अपने निर्णय इसी के आधार पर लेते हैं और परिणामस्वरूप अक्सर गलत करते हैं या भटक जाते हैं। दूसरा मामले की सच्चाई है, जिसके अनुसार ईश्वरीय नियति न्याय करती है: यह उन सभी घटनाओं में न्याय के साथ कार्य करती है जिनमें मनुष्य गलत करते हैं।

उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को उस चोरी के लिए अन्यायपूर्ण तरीके से जेल भेजा जाता है जो उसने नहीं की है। हालाँकि, ईश्वरीय नियति भी इस व्यक्ति को कारावास की सजा देती है, लेकिन उस अपराध के लिए जो उसने किया है लेकिन छिपा हुआ है। इस प्रकार, ईश्वरीय नियति न्यायपूर्ण तरीके से कार्य करती है जहाँ मनुष्य अन्याय करता है।

इस बात को ध्यान में रखते हुए, वर्तमान दुःख के दो कारण हैं, जिनमें से दैवीय उद्देश्य गेहूँ को भूसे से, हीरे को शीशे से, आस्थावान भक्तों को उन लोगों से अलग करना है जो अपने विश्वास में अस्थिर हैं, तथा विशुद्ध रूप से ईमानदार लोगों को उन लोगों से अलग करना है जो अपने अहंकार और स्वार्थ को त्यागने में असमर्थ हैं।

पहला यह कि छात्रों के एक समूह के रूप में आपकी शक्तिशाली एकजुटता और आपकी ईमानदार और उल्लेखनीय सेवा ने कुछ राजनेताओं सहित सांसारिक लोगों के संदेह को जगाया है; यही कारण है कि उन्होंने इस तरह से हमारे साथ अन्याय किया है।

दूसरा: चूँकि आप में से हर व्यक्ति अपने आप में इस पवित्र सेवा के लिए अपनी योग्यता को पूरी ईमानदारी और पूर्ण एकजुटता के साथ प्रदर्शित नहीं कर सकता था, इसलिए ईश्वरीय नियति ने हमारे लिए यह दायित्व निर्धारित करते समय इस बात पर विचार किया।

वर्तमान में दुख है। हालाँकि, ईश्वरीय नियति का निर्णय शुद्ध न्याय के भीतर शुद्ध दया है, क्योंकि इसने उन भाइयों को एक साथ आने के लिए प्रेरित किया है जो एक-दूसरे को बहुत याद करते थे और इसने उनकी कठिनाइयों को पूजा में और उनके नुकसान को दान में बदल दिया है। इसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया है; परिणामस्वरूप, आपके द्वारा कॉपी किए गए ग्रंथों को व्यापक पाठक मिलेंगे। साथ ही, यह पीड़ा अधिक प्रभावी ढंग से दिखाएगी कि सांसारिक संपत्ति, बच्चे और आराम क्षणभंगुर हैं: हम किसी भी स्थिति में कब्र में प्रवेश करते समय उन्हें पीछे छोड़ देंगे। इसलिए, अपने अनंत जीवन को नुकसान न पहुँचाने के लिए, हमें धैर्यपूर्वक सहन करने की आदत डालनी चाहिए। इस तरह आप भविष्य के विश्वासियों के लिए वीर रोल मॉडल होंगे; आप उनके नेता भी हो सकते हैं।

लेकिन एक बात है जो मुझे रुकने पर मजबूर करती है। अगर एक भी उंगली घायल हो जाए, तो आंख, दिमाग और दिल अपने महत्वपूर्ण कर्तव्यों की उपेक्षा करते हैं और उसी में व्यस्त हो जाते हैं। इसी तरह, हमारे परेशान जीवन हमारे दिल और आत्मा को उनके घावों से व्यस्त रखते हैं। उदाहरण के लिए, जब मुझे दुनिया को भूल जाना चाहिए था, तब परिस्थितियों ने मुझे एक खास गुप्त समाज के खिलाफ संघर्ष में व्यस्त कर दिया। मुझे इस संभावना से सांत्वना मिली कि सर्वशक्तिमान ईश्वर इस लापरवाही की स्थिति को एक तरह के बौद्धिक प्रयास के रूप में स्वीकार कर सकते हैं।

मुझे रिसाले-ए-नूर के सम्मानित शिक्षक हाफ़िज़ महमद के भाई अली गुल का अभिवादन प्राप्त हुआ। मैं उन्हें, उनके सभी साथी ग्रामीणों और सावा के सभी लोगों, चाहे वे जीवित हों या मृत, को शुभकामनाएँ और प्रार्थनाएँ भेजता हूँ।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

आपकी दृढ़ता और दृढ़ता गुप्त समाजों और पाखंडियों द्वारा रची गई सभी योजनाओं को विफल कर देती है।

सचमुच, मेरे भाइयों, इसे छिपाने की कोई ज़रूरत नहीं है: ये विधर्मी रिसाले-ए-नूर और उसके छात्रों की तुलना कुछ गूढ़ आंदोलनों से करते हैं। उनका उद्देश्य

उनका उद्देश्य हमें खंडित करना और तितर-बितर करना है, और इसलिए वे हम पर उसी प्रकार के षडयंत्र के साथ हमला करते हैं, जिसके साथ उन्होंने अन्य आंदोलनों को अवरुद्ध किया है।

पहला: वे हमें डराने और धमकाने का प्रयास करते हैं, तथा उन आंदोलनों में, साथ ही हममें भी दोष ढूंढने का प्रयास करते हैं।

दूसरा: वे अपने नेताओं और उनके अनुयायियों में दोष ढूंढने का प्रयास करते हैं।
जिन्हें वे बाद में प्रचारित कर सकते हैं।

तीसरा: वे भौतिकवादी दर्शन और सभ्यता के आकर्षक दुर्गुणों और सुखदायी लेकिन अचेत करने वाले विषों से उन्हें लुभाकर उन्हें भ्रष्ट करने की कोशिश करते हैं। वे उनकी एकता को नष्ट करने की कोशिश करते हैं, उनके नेताओं के नाम को विश्वासघाती झूठों से कलंकित करते हैं और विज्ञान और दर्शन के कुछ सिद्धांतों के साथ उनके विचारों को बदनाम करते हैं। हालाँकि, रिसाले-ए-नूर का मार्ग पूरी ईमानदारी और अहंकार के त्याग पर आधारित है; यह मुसीबतों में दया और दर्द में स्थायी सुख खोजने की खोज पर आधारित है, और क्षणिक, अनैतिक सुखों में घोर दुखों के अस्तित्व को दिखाने पर आधारित है; यह सिखाना है कि विश्वास इस दुनिया में भी असंख्य सुखों का साधन है, और उन मामलों और सत्यों की शिक्षा देना है जिन तक किसी दर्शन का हाथ नहीं पहुँच सकता। चूँकि इसका मार्ग ऐसा है, इसलिए ईश्वर की इच्छा से, इसके खिलाफ रची गई सभी विश्वासघाती योजनाएँ विफल हो जाएँगी।

* * *

मेरे प्यारे भाइयो!

कल रात जब मैं अपनी नियमित प्रार्थना पढ़ रहा था, तो कुछ अन्य लोग मुझे सुन सकते थे। मैं उत्सुकता से सोच रहा था कि क्या जोर से की गई प्रार्थना से उसका पुण्य कम हो जाएगा। फिर मुझे इमाम अल-ग़ज़ाली की एक प्रसिद्ध उक्ति याद आई: "कभी-कभी खुले में प्रार्थना करना गुप्त रूप से प्रार्थना करने से बेहतर होता है।" यानी, अगर कोई व्यक्ति ज़ोर से प्रार्थना करता है या बिना दिखावा किए या सांसारिक लाभ प्राप्त किए बिना खुले तौर पर प्रार्थना करता है, और अगर दूसरों को इससे लाभ होता है, तो वे इसका अनुकरण करने के लिए प्रेरित होते हैं या असावधानी से जागते हैं, या अगर यह इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों को प्रदर्शित करने और आस्था के सम्मान को बनाए रखने का एक साधन बन जाता है, तो ज़ोर से प्रार्थना करना या खुले तौर पर प्रार्थना के स्वैच्छिक कार्य करना बहुत अधिक हो सकता है।

अधिक मेधावी.

* * *

मेरे भाइयो!

यदि आपको सांत्वना देने के लिए पहले लिखे गए छोटे-छोटे पत्र, जैसे कि यह, समय-समय पर पढ़े जाएं; यदि ईमान के फल, विशेष रूप से इसके अंतिम "मामलों" का एक साथ अध्ययन किया जाए; यदि रिसाले-ए-नूर में शामिल किसी भी मामले पर चर्चा की जाए, जो आपको याद है, तो ईश्वर की इच्छा से, यह आपको धार्मिक विज्ञान के छात्र होने का सम्मान दिलाएगा। इमाम अश-शफी जैसे प्रमुख व्यक्ति, ईश्वर उन्हें पवित्र करे, ने इसे सबसे अधिक महत्व देते हुए कहा, "(धार्मिक) विज्ञान के छात्रों की नींद भी खराब होती है

पूजा के रूप में गिना जाता है।" जो भी परिस्थितियाँ हैं, जो कुछ भी होता है, उन्हें अनदेखा कर देना चाहिए जब ऐसे उच्च सत्यों का अध्ययन करने की संभावना हो। वास्तव में हमें इन परेशानियों पर खुशी से मुस्कुराना चाहिए।

जहाँ तक हमारे ज़रूरतमंद दोस्तों के परिवारों और उनके भरण-पोषण की ज़िम्मेदारी का सवाल है, तो क़ुरआन और ईमान का यह नियम है कि हमें उन लोगों का ख़याल रखना चाहिए जो मुश्किलों और ग़रीबी के मामले में हमसे कमतर या ग़रीब हैं और उन लोगों का भी जो ईमान और रूहानियत के मामले में हमसे ज़्यादा तरक्की पर हैं। जो लोग ऐसा करने में सक्षम हैं, वे अस्सी फ़ीसदी लोगों से बेहतर हैं। शिकायत करने के बजाय उन्हें अस्सी गुनाह शुक्र अदा करना चाहिए। परिवार अपने सच्चे पालनहार के हवाले हैं, (जिस पर हमें भरोसा करना चाहिए)। चूँकि हक़ीकत यही है, इसलिए हमें कहना चाहिए कि अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना बढ़िया संरक्षक है! और शुक्र अदा करना चाहिए।

* * *

मेरे भाइयो!

मुझे आज सुबह जो कुछ हुआ, उसे स्पष्ट करना है। बीस वर्षों से मैं विधर्मी दार्शनिकों के दृष्टिकोणों पर विचार कर रहा हूँ और अपने आप से पूछ रहा हूँ कि कुरान से हमने जो स्पष्ट सत्य ग्रहण किया है, उसके बारे में वे क्या आपत्तियाँ प्रस्तुत कर सकते हैं। सच में मुझे कोई भी कमज़ोरी नहीं मिलती, जिसे मेरी अपनी शारीरिक आत्मा या शैतान और दार्शनिक हमले के बहाने के रूप में इस्तेमाल कर सकें।

हम एक ऐसे सत्य के लिए काम कर रहे हैं जो अडिग, ऊंचा, विशाल, श्रेष्ठ और अमूल्य है - इतना कि अगर कोई इसके लिए अपनी जान भी कुर्बान कर दे, तो भी कीमत सस्ती होगी। इसे देखते हुए, हमें अपने सामने आने वाली सभी मुसीबतों, संकटों और शत्रुताओं का पूरी दृढ़ता के साथ जवाब देना चाहिए। हमारे दुश्मन भी कई धोखेबाज़ होजा, शेख और जाहिर तौर पर धर्मपरायण लोगों के साथ हमारा सामना करने की कोशिश कर सकते हैं। हमें उनके हमलों के सामने अपनी एकता और एकजुटता बनाए रखनी चाहिए, और न तो उनके बारे में चिंता करनी चाहिए और न ही उनसे बहस करनी चाहिए।

नर्सी ने कहा

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

कस्तमोनू में एक धर्मपरायण, धार्मिक व्यक्ति ने शिकायत की: "मैं (रिसाले-ए नूर के घेरे में प्रवेश करने के बाद) गिर गया हूँ ; मैंने अपनी पूर्व आध्यात्मिक स्थिति, अपनी रोशनी और प्रकाश खो दिया है।" मैंने उससे कहा:

"यह वास्तव में हो सकता है कि आप आगे बढ़ गए हैं, पीछे रोशनी, सुख और आध्यात्मिक अनावरण छोड़ गए हैं, जिसने आपके अहंकार को खुश किया होगा, जिससे विश्वास और अच्छे कर्मों का फल जो परलोक में अनुभव किया जाना चाहिए, इस दुनिया में रहते हुए चखा जा सकता है, जिससे आपकी आत्म-केंद्रितता भड़क उठी होगी। विनम्रता, नम्रता, आत्म-हीनता और अहंकार और क्षणभंगुर सुखों के त्याग के माध्यम से शायद आप एक उच्च पद पर पहुंच गए हैं।" वास्तव में, एक महत्वपूर्ण दिव्य अनुग्रह उस व्यक्ति को वास्तव में उस अनुग्रह को महसूस करने की अनुमति नहीं देना है जिसने अभी तक अपने अहंकार को नहीं छोड़ा है ताकि वे घमंडी या अभिमानी न बनें।

मेरे भाईयों! इस वास्तविकता को देखते हुए, जो लोग उस व्यक्ति की तरह सोचते हैं, या जो दूसरों की अच्छी राय से मिलने वाली शानदार स्थिति पर विचार करते हैं, वे आपकी ओर देखेंगे और जब वे देखेंगे कि आपके बीच जो छात्र विनम्रता, आत्म-हीनता और सेवा के परिधान में दिखाई देते हैं, वे सामान्य, साधारण लोग हैं, तो वे कहेंगे: "क्या ये वे लोग हैं जो सत्य के नायक माने गए हैं जो पूरी दुनिया को चुनौती देने के लिए तैयार हैं? वे पृथ्वी पर कौन हैं ? वे कैसे वे लोग हो सकते हैं जो इस समय ऐसी पवित्र सेवा कर रहे हैं जो संत भी नहीं कर सकते हैं?" यदि वे मित्र हैं, तो उन्हें निराशा का अनुभव होगा; यदि वे विरोधी हैं, तो वे अपने विरोध को उचित पाएंगे।

नर्सी ने कहा

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

विश्वास के फल (11वीं किरण) पर ग्रंथ महत्वपूर्ण और अत्यंत मूल्यवान दोनों है। मुझे उम्मीद है कि समय के साथ यह विश्वास और कुरान के लिए काफी उपयोगी होगा। आप इसके महत्व को अच्छी तरह से समझ गए होंगे, बशर्ते कि आपने इस अध्ययन स्थल को इसके पाठों से वंचित न किया हो।

कई अनुभवों ने मुझे यह पक्का यकीन दिलाया है कि रिसाले-ए-नूर के ज़रिए ईमान और कुरान की खिदमत करने से तकलीफ़ें कम होती हैं और दिल में खुलापन आता है। जब मैं इसे पढ़ने या लिखने में व्यस्त नहीं होता, तो तकलीफ़ें दोगुनी हो जाती हैं और मैं छोटी-छोटी बातों पर परेशान हो जाता हूँ। हालाँकि कई वजहों से मुझे लगा कि हुसरे, हाफ़िज़ अली और ताहिरी सबसे ज़्यादा परेशान होंगे, लेकिन मैंने देखा कि वे और उनके करीबी लोग सबसे ज़्यादा संयम, शांति, समर्पण और दिल की शांति से भरे हुए थे। मैंने खुद से पूछा कि ऐसा क्यों है, और अब मुझे इसका जवाब पता है। आप देखिए, वे सिर्फ़ अपने असली कर्तव्यों में व्यस्त हैं और वे किसी और चीज़ में व्यस्त नहीं हैं।

किसी भी तुच्छ या अलाभकारी बात से विचलित नहीं होते। वे ईश्वरीय नियति और निर्णय के निर्णयों पर सवाल नहीं उठाते और वे न तो आडंबरपूर्ण हैं और न ही आलोचनात्मक, दोनों ही स्थितियाँ अहंकार से उत्पन्न होती हैं। उन्होंने रिसाले -ए-नूर के छात्रों को सम्मानित किया है और अपनी आत्म-संयम, दृढ़ता और आंतरिक संतोष के साथ अनगिनत विधर्मियों के सामने उस धन्य कार्य की नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया है। सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे सभी भाइयों को उनकी पूर्ण विनम्रता और आत्म-हीनता के कारण सच्ची गरिमा और वीरता का आशीर्वाद दें। आमीन!

* * *

मेरे भाइयो!

इस समय संसार की उपेक्षा और प्रेम से उत्पन्न एक भयंकर अहंकार व्याप्त है। इसलिए सत्य के लोगों को अहंकार और स्वार्थ का परित्याग कर देना चाहिए। यदि रिसाले -ए-नूर के विद्यार्थी अपने अहंकार की बर्फ को अपने सामूहिक व्यक्तित्व के साझा कुंड में घोल दें, तो ईश्वर की इच्छा से वे इस तूफान से नहीं हिलेंगे। दरअसल, पाखंडियों का एक आजमाया हुआ तरीका यह है कि जो लोग एक निश्चित सामाजिक स्थिति का आनंद लेते हैं, उन्हें किसी छोटी-सी समस्या में फंसाकर उन्हें चिढ़ाते हैं और एक-दूसरे के प्रति आलोचनात्मक बनाते हैं। उन्हें एक-दूसरे से लड़ने के लिए प्रेरित करके वे उनका मनोबल नष्ट कर देते हैं। फिर पाखंडी लोग अपनी शक्ति खो चुके लोगों पर बहुत आसानी से प्रहार कर सकते हैं और इस तरह उन्हें नष्ट कर सकते हैं। चूंकि रिसाले-ए-नूर के विद्यार्थी प्रेम, एकता और "भाईचारे में आत्म-विनाश" के मार्ग पर चल रहे हैं, इसलिए ईश्वर की इच्छा से वे अपने विरोधियों की चालों को राख में मिला देंगे।

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

एक बार एक आध्यात्मिक मार्गदर्शक के इतने शिष्य थे कि सरकार उन्हें संभावित राजनीतिक खतरे के रूप में देखती थी और उनके समुदाय को तितर-बितर करना चाहती थी। आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने सरकार से कहा: "मेरे पास केवल डेढ़ अनुयायी हैं और इससे ज़्यादा नहीं। अगर आप चाहें, तो हम इसे परख सकते हैं।" इसलिए उसने एक बड़ा तंबू लगाया और अपने सभी हज़ार शिष्यों को वहाँ इकट्ठा किया। उसने उनसे कहा: "मैं तुम्हें परखने जा रहा हूँ। जो कोई भी ईमानदारी से मेरा शिष्य होगा और मेरी आज्ञा का पालन करेगा, वह स्वर्ग जाएगा।" उसने उन्हें एक-एक करके तंबू में बुलाना शुरू किया। लेकिन उसने एक भेड़ को गुप्त रूप से कटवा दिया था, और भेड़ के खून से ज़मीन ढक गई थी, जिसका उद्देश्य यह दिखावा करना था कि मार्गदर्शक ने अपने पसंदीदा शिष्य को मार डाला है और उसे स्वर्ग भेज दिया है।

जब हज़ारों अनुयायियों ने खून देखा, तो उन्होंने मार्गदर्शक की बात नहीं मानी और उसकी निंदा करने लगे। केवल एक आदमी आगे बढ़ा और बोला, “मैं तुम्हारे लिए बलिदान हो जाऊँ।” फिर एक महिला भी आगे बढ़ी, जबकि बाकी लोग तितर-बितर हो गए। मार्गदर्शक ने सरकारी अधिकारियों से कहा: “अब आपने खुद ही देख लिया है कि मेरे केवल डेढ़ अनुयायी हैं!”58

सर्वशक्तिमान ईश्वर का अनंत धन्यवाद कि इन परेशानियों और कठिनाइयों के कारण रिसाले-ए-नूर को अपने केवल डेढ़ छात्रों को खोना पड़ा। इस्पार्टा और उसके आस-पास के वीरों के प्रयासों से, हज़ारों लोग उनकी जगह लेने के लिए आगे आए हैं।

* * *

एक बार एक गैर-मुस्लिम ने चालाकी से एक सूफी नेता का उत्तराधिकारी बनने का रास्ता अपनाया और भाईचारे के शिष्यों का मार्गदर्शन करना शुरू कर दिया। उसके प्रशिक्षण में अनुयायी आगे बढ़ने लगे, लेकिन फिर उनमें से एक को पता चला कि उनके मार्गदर्शक में गंभीर गिरावट आई है। समझदार होने के कारण, मार्गदर्शक ने अपने शिष्य से कहा: "तो तुम समझ गए।" लेकिन शिष्य ने कहा: "चूंकि मैं आपके मार्गदर्शन का पालन करके इस पद पर पहुंचा हूं, इसलिए अब से मैं आपके और भी करीब आऊंगा।" उसने अपने मार्गदर्शक के उद्धार के लिए सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रार्थना की, जो अचानक आगे बढ़ने लगा और आध्यात्मिक उत्कृष्टता में अपने सभी शिष्यों को पीछे छोड़ते हुए उनका सच्चा मार्गदर्शक बन गया। इसका मतलब है कि कभी-कभी एक शिष्य अपने मार्गदर्शक का मार्गदर्शक बन जाता है। जो वास्तव में अच्छा और सराहनीय है वह यह है कि जब कोई अपने भाई को बुराई या पाप में डूबा हुआ देखता है, तो वह उसका साथ नहीं छोड़ता, बल्कि भाईचारे के बंधन को मजबूत करता है और दोस्त को सुधारने की कोशिश करता है। यह वफादार और वफादार व्यक्ति की असली विशेषता है। पाखंडी लोग ऐसी परिस्थितियों का फ़ायदा उठाते हैं और विश्वासियों की एकजुटता को नष्ट करने के लिए, वे एक-दूसरे के बारे में उनकी अच्छी राय को खराब करते हैं, यह कहते हुए: "देखो, जिन लोगों को तुम इतना महत्व और महत्व देते हो, वे तो बस आम, साधारण लोग हैं।" किसी भी मामले में, हम जो दुर्भाग्य झेलते हैं, ईश्वर की इच्छा से, महत्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न होंगे जो सभी विश्वासियों को लाभान्वित करेंगे। इसी तरह की घटनाएँ जो कुछ अन्य लोगों के साथ उनकी राजनीतिक आकांक्षाओं या अन्य कारणों से होती हैं, वे समान परिणाम नहीं दे सकती हैं।

* * *

58 चूँकि महिलाएँ कुछ धार्मिक दायित्वों के लिए जिम्मेदार नहीं होतीं, जैसे कि शुक्रवार की सामूहिक प्रार्थना, तथा मासिक धर्म के दौरान और प्रसव के बाद रक्तस्राव के दौरान उन्हें उन धार्मिक दायित्वों से छूट दी जाती है, जो वे सामान्य रूप से निभाती हैं, इसलिए आध्यात्मिक मार्गदर्शक ने उन्हें आधा अनुयायी माना। (ट्र.)

चूँकि ओल्ड सैड की रचना लेमेट59 की शुरुआत में अजीबोगरीब हस्ताक्षर मेरी वर्तमान परिस्थितियों और मेरे सत्तरवें वर्ष के साथ एक छोटे से बदलाव के साथ मेल खाता है, इसलिए मैंने इसे यहाँ शामिल किया है। यदि आप इसे उपयुक्त समझते हैं, तो आप इसे विश्वास के फलों और छोटे अक्षरों के अंत में जोड़ सकते हैं।

उस अजीब हस्ताक्षर में निम्नलिखित पंक्तियाँ हैं:

प्रार्थी

मैं एक उजड़ी हुई कब्र हूँ, जिसमें ढेर लगे हैं
सैद अपने पापों और दुखों के साथ उनहत्तर लोगों की मृत्यु का कारण बना।
सत्तरवाँ पत्थर उस कब्र के लिए है;
वे सब मिलकर इस्लाम के पतन पर रोते हैं।
मुझे आशा है कि भविष्य का आकाश और पृथ्वी
हम सब मिलकर इस्लाम के स्पष्ट, चमकते हाथों के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे।
क्योंकि इसकी ताकत इसके विश्वास और आशीर्वाद में निहित है,
यह सभी प्राणियों को शांति और सुरक्षा प्रदान करता है।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा करे।

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

एक दूसरे के बारे में शिकायत करना अन्यायपूर्ण, निरर्थक और हानिकारक है; वास्तव में, यह रिसाले-ए-नूर के प्रति एक प्रकार की नाराजगी महसूस करने के बराबर है। सावधान! प्रमुख छात्रों की कुछ गतिविधियों को इस दुर्भाग्य का कारण मानना और उन पर क्रोध महसूस करना विश्वास की सच्चाइयों को सीखने पर पछतावा करना है। यह किसी भी शारीरिक दुर्भाग्य से कहीं अधिक विपत्ति है। मैं कसम खाता हूँ कि हालाँकि मैं आप में से किसी से भी बीस या तीस गुना अधिक इस दुर्भाग्य से पीड़ित हूँ, क्योंकि उन्होंने शुद्ध इरादों के साथ काम किया है, मैं उनसे नाराज़ नहीं होऊँगा, भले ही दुर्भाग्य दस गुना अधिक हो। जो घटनाएँ बीत चुकी हैं, उन पर आपत्ति करना भी व्यर्थ है, क्योंकि वे अब समाप्त हो चुकी हैं और चली गई हैं।

मेरे भाईयों! चिंता व्यक्ति के दुर्भाग्य को दोगुना कर देती है; यह हृदय में शारीरिक विपत्ति की जड़ भी रोप देती है। इससे भी बदतर, यह ईश्वरीय नियति की आलोचना और ईश्वरीय दया को दोष देने जैसा है। हर चीज का अपना अच्छा पक्ष होता है:

---

59 इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और इसे ग्लेम्स ऑफ ट्रुथ—प्रिस्क्रिप्शन्स फॉर ए हेल्दी सोशल लाइफ, तुगरा बुक्स, 2010, न्यू जर्सी में प्रकाशित किया गया। (ट्र.)

वहाँ सभी चीज़ें ईश्वरीय दया की अभिव्यक्ति हैं, और ईश्वरीय नियति अत्यंत न्याय और बुद्धि के साथ काम करती है। चूँकि ऐसा है, इसलिए हमारे द्वारा किए जा रहे पवित्र कार्य के परिणामस्वरूप हमें होने वाली छोटी-मोटी परेशानियों को महत्व देना व्यर्थ है, जो विश्वासियों के पूरे समूह से संबंधित है।

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

अत्यन्त दयावान दयालु का अनन्त धन्यवाद हो कि उसने इन परिस्थितियों में

असाधारण समय और इस अजीब जगह में, आपके माध्यम से उसने हमें धार्मिक विज्ञान के छात्र होने का सम्मानित सम्मान प्राप्त करने और उनके रूप में महत्वपूर्ण सेवाएं करने की अनुमति दी है। यह संबंधित है कि, शहीदों की तरह, धार्मिक विज्ञान के कुछ उत्साही और गंभीर छात्र जो अपने अध्ययन में व्यस्त रहते हुए मर जाते हैं, वे अपने कब्र में होने पर भी खुद को जीवित मानते हैं और अभी भी अध्ययन में लगे हुए हैं। वास्तव में, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, जब मुनकर और नकीर ने व्याकरण और वाक्यविन्यास का अध्ययन करते हुए मरने वाले एक छात्र से पूछा, "तुम्हारा भगवान कौन है?" छात्र ने उत्तर दिया: "'कौन' विषय है, और 'तुम्हारा भगवान' इसका विधेय है।" उसने एक व्याकरणिक उत्तर दिया, खुद को अभी भी धार्मिक मदरसा में होने का विश्वास करते हुए। इसी तरह, मेरा मानना है कि दिवंगत हाफ़िज़ अली को धार्मिक विज्ञान के छात्रों की वही स्थिति प्राप्त है; वह जीवित रहते हुए रिसाले-ए-नूर में व्यस्त थे और अब शहीदों की श्रेणी और उनके जीवन के स्तर पर हैं। मैं अक्सर उनके लिए और महमद ज़ुह-डू और हाफ़िज़ महमद के लिए प्रार्थना करता हूँ, और कहता हूँ: "हे भगवान! उन्हें ईमान की सच्चाइयों और कुरान के रहस्यों के साथ क़ियामत तक पूर्ण खुशी और संतुष्टि में व्यस्त रख। आमीन !”

* * *

मेरे प्रिय एवं विश्वासयोग्य भाइयो!

इस तरह की हदीसें रूपक हैं: कुछ का सामान्य अर्थ होता है और वे इतिहास में समान समय, स्थान या घटनाओं के लिए लागू होती हैं, जबकि अन्य केवल विशेष समय, स्थान या घटनाओं से संबंधित होती हैं। आप जिस बारे में पूछ रहे हैं वह इराक और हिजाज़ में शुरुआती मुस्लिम समुदाय के उथल-पुथल से संबंधित है। अब्बासिद काल के दौरान, कई सांप्रदायिक रुझान उभरे, जैसे मुताज़िला, राफ़िदा, जबरिया और विभिन्न विधर्मी आंदोलन, जो विभिन्न आड़ में सामने आए। इन गड़बड़ियों के दौरान, जो शरिया और इस्लामी पंथ के लिए हानिकारक थे, बुखारी, मुस्लिम, अबू हनीफा, शफीई, इमाम मलिक जैसी कई प्रतिष्ठित मुस्लिम हस्तियां

अहमद इब्न हंबल, इमाम अल-ग़ज़ाली, अब्दुल-कादिर अल-जिलानी और जुनैद अल-बगदादी असहमति और विरोध को समाप्त करने के लिए उभरे। असंतुष्टों पर उनकी जीत लगभग तीन सौ वर्षों तक चली, लेकिन गुमराह संप्रदायों के अनुयायियों ने अपनी गुप्त गतिविधियाँ जारी रखीं और राजनीतिक साधनों से मुस्लिम समुदाय के सिर पर मंगोल आक्रमण की विपत्ति लाद दी। कुछ हदीसें इस विपत्ति की ओर इशारा करती हैं। इसलिए, इसका अनुमान लगाते हुए, यह कहना उचित है कि चूँकि आज मुस्लिम दुनिया द्वारा झेली गई विपत्ति सभी पिछली विपत्तियों से भी बदतर है, इसलिए कई हदीसों और कुरान की कई आयतों में इसका संदर्भ शामिल है।

इसके अलावा, ऐसी हदीसें भी हैं जो मुस्लिम समुदाय के सभी चरणों की ओर इशारा करती हैं। इतिहास के दौरान घटित कुछ विशेष घटनाएँ हदीसों या उनकी विषय-वस्तु के व्यापक अर्थ के पहलुओं को उजागर करती हैं जो उन्हें इंगित करती हैं। रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में इस तरह की रूपक हदीसों की व्याख्याएँ पढ़ी जा सकती हैं , साथ ही यह भी बताया गया है कि उनकी व्याख्या कैसे की जानी चाहिए। उन्हें समझने और व्याख्या करने के लिए उपयोग किए जाने वाले बुनियादी सिद्धांत विशेष रूप से चौबीसवें शब्द और पाँचवीं किरण में बताए गए हैं।

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

मैं महसूस करता हूं कि सत्य को स्पष्ट करना आवश्यक है ताकि आप एक दूसरे पर अहंकार या विश्वासघात का आरोप न लगाएं।

मैं देखता था कि कुछ महान संत जिन्होंने अहंकार को पूरी तरह त्याग दिया था और दुष्ट आत्मा के प्रभाव से बच गए थे, वे अपनी आत्मा के बारे में लगातार शिकायत करते रहते थे। इससे मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। बाद में मुझे पूरी तरह समझ में आया कि जब दुष्ट आत्मा मर जाती है, तो उसके उपकरण व्यक्ति के स्वभाव और भावनाओं के विभिन्न पहलुओं को सौंप दिए जाते हैं, ताकि आत्मा के साथ पुण्य संघर्ष मृत्यु तक जारी रहे। वे महान संत, तब इस दुश्मन की शिकायत कर रहे थे, जो दुष्ट आत्मा का उत्तराधिकारी है।

इसके अलावा, आध्यात्मिक मूल्य, पद और सद्गुण इस दुनिया से संबंधित नहीं हैं, इसलिए वे खुद को महसूस नहीं करते हैं। वास्तव में, चूँकि उच्चतम पद पर बैठे कुछ लोग उस महान ईश्वरीय कृपा के बारे में नहीं जानते हैं जो उन्हें दी गई है, वे वास्तव में खुद को बाकी सभी लोगों की तुलना में अधिक दुखी और दिवालिया मानते हैं। यह दर्शाता है कि चमत्कार-कार्य, अनावरण, आध्यात्मिक आनंद और रोशनी, जिन्हें अधिकांश लोग पराकाष्ठा का प्रतिनिधित्व करते हैं

आध्यात्मिक पूर्णता का अर्थ वास्तव में उस आध्यात्मिक मूल्य या पद या उन्हें मापने का पैमाना नहीं हो सकता। यह इस तथ्य से सिद्ध होता है कि यद्यपि पैगंबर के साथियों के जीवन का एक घंटा, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अन्य संतों के जीवन के पूरे दिन के बराबर था, या शायद चालीस दिनों की कठिन परीक्षा के बराबर था, लेकिन उनमें से हर किसी को संतों के समान असाधारण अवस्था या ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ।

मेरे भाइयो, सावधान रहो! अपनी दुष्ट आत्माओ को गलत तुलना करके और अपने भाइयों के बारे में बुरा सोचकर धोखा न देने दो; उन्हें आत्माओं को प्रशिक्षित करने की रिसाले-ए-नूर की क्षमता पर संदेह करने की अनुमति न दें।

* * *

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों!

सामी बे ने मुझे बताया कि होमा के हमारे एक भाई, अली नामक एक छात्र की मृत्यु हाफ़िज़ अली के साथ ही हुई थी। होमा के नायकों में से एक, मेहमद अली ने भी मुझे इस बारे में बताने के लिए लिखा था। इसलिए मैंने अपनी कई प्रार्थनाओं में उस अली को महान शहीद हाफ़िज़ अली का साथी बनाया है।

हाल ही में हमसे जुड़ी एक महिला ने सपना देखा कि हमारे तीन भाई मर गए हैं। इस सपने की व्याख्या यह है कि ये दो अली और मुस्तफा, जो जेल में रिसाले-ए-नूर के अनुयायी बनना चाहते थे, लेकिन उन्हें फांसी दे दी गई, हम सबकी जगह परलोक चले गए और हमारी भलाई के लिए कुर्बान हो गए।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा है!

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

आयत: क्या वह व्यक्ति जो (आत्मा में) मरा हुआ था, फिर हमने उसे जीवित कर दिया और उसके लिए एक प्रकाश बना दिया जिसके द्वारा वह लोगों के बीच चलता-फिरता है, क्या वह उस व्यक्ति के समान है जो अंधकार की गहराइयों में खो गया हो, जहाँ से वह निकल नहीं सकता? (6:122) वर्तमान समय की ओर संकेत करता प्रतीत होता है। जो लोग सांसारिक जीवन और अपनी शारीरिक भूख की संतुष्टि के पक्षधर हैं, वे हम पर इसलिए अत्याचार करते हैं क्योंकि हम उनके विश्वदृष्टिकोण और जीवन शैली को महत्व नहीं देते, वे चाहते हैं कि यदि संभव हो तो हमें समाप्त कर दिया जाए, या कम से कम हमें एक बड़ी सज़ा दी जाए।

हालाँकि, वे इसके लिए कोई कानूनी मंजूरी पाने में असमर्थ हैं। जहाँ तक हमारा सवाल है, हम उन्हें मृत्यु दिखाते हैं, वह पर्दा जो अनंत जीवन के द्वार को ढकता है, और उन्हें होश में लाने की कोशिश करते हैं। हम उन्हें बचाने के लिए अपनी पूरी ताकत से काम करते हैं

अनन्त दण्ड या मृत्युदण्ड से या परलोक में अनन्त एकान्त कारावास से। भले ही मुझे भयंकर कष्ट सहने पड़ें

क्योंकि उनके ध्यान में महत्वपूर्ण ग्रंथ आ चुके हैं, और भले ही वे लोग जो हमें इन परेशानियों में डालते हैं और हमारा खात्मा चाहते हैं

यदि हम मृत्यु के अनन्त विनाश से बच जाते, तो मेरा हृदय और मेरी आत्मा दोनों ही इन कष्टों को सह लेते। कहने का तात्पर्य यह है कि हम दोनों लोकों में उनकी खुशी चाहते हैं और इसके लिए प्रयास करते हैं, जबकि वे हमारी मृत्यु की कामना करते हैं और हमें समाप्त करने के बहाने खोजते हैं। लेकिन हम उनके हाथों पराजित नहीं होते, क्योंकि मृत्यु की वास्तविकता, जो सूर्य की तरह स्पष्ट है, प्रतिदिन हजारों लोगों से मिलने आती है और गुमराह लोगों के लिए हजारों अनन्त मृत्युदंड या एकान्त कारावास के आदेश और घोषणाएँ प्रदर्शित करती है।

चूंकि यह वास्तविकता है, इसलिए अब हम उनसे तथा अन्य सभी लोगों से निम्नलिखित बातें कहेंगे:

हम मृत्यु के साथ आने वाली अनन्त सजा से मुक्ति चाहते हैं, जो हमारे लिए प्रतीक्षा कर रही है, या कब्र में एकांत कारावास के अंधेरे से, जो हमारे लिए अपना द्वार खोल देगा और हमें बिना किसी संदेह के अपनी गहराई में बुलाएगा। हम आपको उस भयानक, अपरिहार्य आपदा से मुक्ति दिलाने में भी मदद करना चाहते हैं। राजनीति और सांसारिक मामले, जो आपके विचार में सबसे महत्वपूर्ण मुद्दे हैं, हमारे लिए बहुत कम महत्व रखते हैं। वास्तव में, सत्य के दृष्टिकोण से, और उन लोगों के लिए जो सीधे ऐसे मामलों से संबंधित नहीं हैं, वे अर्थहीन, महत्वहीन और किसी भी तरह से मूल्यहीन हैं। हालाँकि, हम जो आवश्यक मानवीय कर्तव्य निभाने की कोशिश कर रहे हैं, वे वास्तव में और अनिवार्य रूप से सभी लोगों से हर समय संबंधित हैं। और इसलिए जो लोग हमारे इस कार्य को पसंद नहीं करते हैं और इसे रोकना चाहते हैं, उन्हें बेहतर होगा कि वे मृत्यु को रोक दें और कब्र का दरवाजा हमेशा के लिए बंद कर दें!

* * *

मेरे प्रिय विश्वासपात्र भाइयो!

रिसाले-ए-नूर के संबंध में सरकार द्वारा मांगी गई विशेषज्ञ रिपोर्ट

यह पुष्टि करता है कि इसका सबसे बड़ा हिस्सा विश्वास से संबंधित है और यह ज्ञान और सच्ची विद्वता पर आधारित है। यह कहता है कि सईद अपने विचारों को ईमानदारी और गंभीरता से समझाता है, और उसकी शक्ति किसी समाज, किसी तरीक़े या सरकार के विरोध में किसी पार्टी को स्थापित करने के किसी प्रयास में निहित नहीं है, जिससे उसका कोई लेना-देना नहीं है। बल्कि, उसकी शक्ति और उसके कार्यों की ताकत जरूरतमंदों को कुरान की सच्चाई सिखाने की उसकी प्रबल इच्छा और उत्साह से उपजी है।

विशेषज्ञों की समिति, जिसमें दो दार्शनिक, नेकाती और यूसुफ़, और यूसुफ़ ज़िया नामक एक आधुनिकतावादी धार्मिक विद्वान शामिल थे, ने मुझे और मेरे सभी भाइयों को हमारे खिलाफ़ लगाए गए निराधार आरोपों से पूरी तरह से बरी कर दिया है। उन्होंने कहा: "वे (यानी रिसाले-ए-नूर के छात्र) अपने विश्वास और अपने परलोक के लिए सईद के विद्वत्तापूर्ण और ज्ञानपूर्ण कार्यों का पालन करते हैं।

उनके पत्राचार, उनकी पुस्तकों या ग्रंथों में सरकार के खिलाफ किसी भी तरह की साजिश का स्पष्ट या निहित संकेत नहीं है।"

उनकी एकमात्र आलोचना हमारे धर्म में नवीनताओं के बारे में मेरे कुछ विचारों के बारे में है, और मेरी राय है कि हमारी शताब्दी में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें चूँकि इस्लाम की सच्चाइयाँ नहीं बताई गई हैं, इसलिए उन्हें "अंतराल" के लोगों के समान माना जा सकता है।[60] खासकर यदि ये लोग धार्मिक ईसाई हैं जो युद्ध के शिकार हैं, तो उन्हें परलोक में बचाया जा सकता है और उन्हें किसी प्रकार से शहीद माना जा सकता है।

नर्सी ने कहा

---

[60] "अंतराल" के लोग वे हैं जो ऐसे समय या स्थान पर रहते हैं जहाँ सीधे मार्ग के बारे में सच्चा ज्ञान प्राप्त करना उनके लिए असंभव है। (ट्र.)

चौदहवीं किरण

चौदहवीं किरण

सैद नूरसी द्वारा कुछ अधिकारियों, अपने विद्यार्थियों और मित्रों को लिखे गए पत्रों से उद्धरण और चयन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हम उसी से सहायता चाहते हैं।

I लगभग बीस वर्षों से एकांत में रह रहा हूँ।

इतने लम्बे समय में, राजनीति से मेरा कोई सम्बन्ध या जुड़ाव रहा हो, इसका लेशमात्र भी संकेत कभी नहीं मिला। यदि मेरे आचरण में कोई अनियमितता होती तो वह अवश्य प्रकट होती। संसार में कहीं भी ऐसे संन्यासी नहीं होते, जो केवल परलोक में अपने जीवन के बारे में ही सोचते हों, ऐसी बातों की चिंता करते हों।

हम रिसाले-ए-नूर के छात्र रिसाले-ए-नूर को सांसारिक लाभ का साधन नहीं बनाते हैं : भले ही वे हमें पूरी कायनात एक प्लेट में परोस दें, हम कभी भी सांसारिक लाभ के लिए रिसाले का दुरुपयोग नहीं करेंगे। इसके अलावा, कुरान हमें राजनीति में शामिल होने से सख्त मना करता है। क्योंकि रिसाले-ए-नूर का कर्तव्य , सबसे शक्तिशाली और निर्णायक सबूतों के आधार पर, पूर्ण अविश्वास के सामने कुरान की आस्था की सच्चाई को दिखाना और समझाना है, जो शाश्वत जीवन को नष्ट कर देता है और सांसारिक जीवन को एक भयानक जहर में बदल देता है। चूँकि हमारा उद्देश्य कुरान की सेवा करना है, इसलिए हम रिसाले-ए-नूर को किसी और चीज़ का साधन नहीं बना सकते।

हम निम्नलिखित कारणों से कभी भी राजनीति में हस्तक्षेप नहीं कर सकते:

सबसे पहले, क्योंकि इससे यह धारणा बनेगी कि हम राजनीतिक प्रचार के साधन के रूप में उनका दुरुपयोग कर रहे हैं, हम कुरान की हीरे जैसी सच्चाई को लोगों के दिलों में कांच के टुकड़ों के बराबर मूल्य देकर धोखा नहीं दे सकते।

आँखें।

दूसरा: दया, सत्य, अधिकार और विवेक - वे मूल तत्व जिन पर रिसाले-ए-नूर का मार्ग स्थापित है - हमें राजनीतिक हस्तक्षेप और राज्य के मामलों में हस्तक्षेप से पूरी तरह से रोकते हैं। कल्पना कीजिए कि एक या दो अधार्मिक लोगों के घर में सात या आठ निर्दोष आत्माएँ हैं - बच्चे, बीमार और बूढ़े - जो पूरी तरह से अविश्वास में पड़ गए हैं और वे आघात और विपत्तियों के पात्र हैं। अगर इन एक या दो लोगों की वजह से उस घर पर आघात और विपत्तियाँ आती हैं, तो उन निर्दोष आत्माओं को भी कष्ट होगा। इसलिए, चूँकि राजनीतिक हस्तक्षेप से मिलने वाले परिणाम हमेशा संदिग्ध रहेंगे, इसलिए हमें राजनीतिक हस्तक्षेप के माध्यम से समाज के जीवन में हस्तक्षेप करने से पूरी तरह से मना किया गया है, जो न केवल राज्य को बल्कि सार्वजनिक व्यवस्था को भी नुकसान पहुँचाएगा।

तीसरा: इस देश और राष्ट्र के सामाजिक जीवन को इन अजीब समय के दौरान अराजकता से बचाने के लिए, पाँच सिद्धांत आवश्यक हैं: सम्मान, करुणा, निषिद्ध (हराम) से बचना, सुरक्षा, अराजकता का त्याग और कानून का पालन करना। इस दृष्टिकोण से विचार करने पर, यह स्पष्ट है कि रिसाले-ए-नूर इन पाँच सिद्धांतों को सबसे शक्तिशाली और पवित्र तरीके से स्थापित और मजबूत करता है, इस प्रकार सार्वजनिक व्यवस्था की नींव को संरक्षित करता है। इसका सबसे स्पष्ट प्रमाण यह है कि पिछले बीस वर्षों में रिसाले-ए-नूर ने लगभग एक लाख लोगों को इस राष्ट्र के हानिरहित, लाभकारी सदस्य बनाने में मदद की है। इस्पार्टा और कस्तमोनू के प्रांत इस बात की गवाही देते हैं। इसका मतलब यह है कि जो लोग रिसाले-ए-नूर को बदनाम करते हैं या उसके रास्ते में बाधाएँ डालते हैं , वे जाने-अनजाने में अराजकता के पक्ष में इस्लाम और राष्ट्र के साथ विश्वासघात कर रहे हैं।

यदि आप मुझ पर आपकी सरकार या नियमों का विरोध करने का आरोप लगाते हैं, तो मैं यह कहूंगा:

किसी चीज़ को अस्वीकार करना एक बात है; उसे अपने दिल में स्वीकार न करना दूसरी बात है; और उसके अनुसार काम न करना बिलकुल अलग बात है। सत्ता में बैठे लोग सिर्फ़ इस बात पर ध्यान देते हैं कि कोई क्या करता है, न कि इस बात पर कि कोई अपने दिल में क्या सोचता है, उसे मंज़ूरी देता है या उसे नापसंद करता है। सभी सरकारों के विरोधी होते हैं जो सरकार या सार्वजनिक व्यवस्था में हस्तक्षेप नहीं करते। वास्तव में, खलीफ़ा उमर के शासन में रहने वाले ईसाई, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, अपने धर्म का पालन करने के लिए स्वतंत्र थे, भले ही उन्होंने शरिया और कुरान के कानून को अस्वीकार कर दिया हो।

विचार और अंत:करण की स्वतंत्रता के सिद्धांत का पालन किया जाना चाहिए, और जब तक वे सार्वजनिक व्यवस्था को प्रभावित नहीं करते, यदि कुछ नागरिक, जिनमें रिसाले-ए-नूर के छात्र भी शामिल हैं, विद्वानों के आधार पर सरकार का विरोध करते हैं, तो कानून को उन पर कोई प्रभाव नहीं डालना चाहिए।

यदि आप धर्म-विरोधी आधार पर कार्य करते हैं और हम पर धार्मिक होने का आरोप लगाते हैं, तो मैं यह कहूंगा:

यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि कोई भी राष्ट्र धर्म के बिना अस्तित्व में नहीं रह सकता। और अगर वह राष्ट्र पूर्ण अविश्वास में बना रहता है, तो वह इस दुनिया में नरक की आग से भी अधिक भयंकर यातनाएँ देता है और उन्हें सहता है।

अगर, भगवान न करे, कोई मुसलमान धर्मत्यागी हो जाए, तो वे पूर्ण अविश्वास में पड़ जाते हैं; वे अज्ञेयवाद की स्थिति में नहीं रह सकते, जो उन्हें कम से कम आशा और राहत की एक किरण तो दे ही सकता है। साथ ही, वे अधार्मिक पश्चिमी लोगों की तरह नहीं हो सकते। और जीवन के भौतिक सुखों के मामले में, वे जानवरों से बहुत नीचे गिर जाएंगे, क्योंकि जानवरों को अतीत और भविष्य का कोई बोध नहीं होता।

उनके गलत मार्गदर्शन के कारण, सभी भूतपूर्व और भविष्य के प्राणियों की मृत्यु, तथा यह विचार कि वे उनसे हमेशा के लिए अलग हो जाएंगे, उनके हृदय को निरंतर चिंता से भर देते हैं। यदि प्रकाश उनके हृदय में प्रवेश कर जाए और वे विश्वास करने लगें, तो वे असंख्य मित्र अचानक जीवित हो उठेंगे।

वे अपनी भाषा के माध्यम से कहेंगे: "हम नष्ट नहीं हुए और हम नहीं मरे।", इस प्रकार पूर्व धर्मत्यागी के नारकीय दर्द को स्वर्गीय सुख में बदल दिया जाएगा। चूँकि स्थिति की वास्तविकता ऐसी ही है, इसलिए हमारे मार्ग में बाधाएँ न डालें क्योंकि हम कुरान और ईमान की सेवा करने का प्रयास करते हैं।

मैं आंतरिक मामलों और न्याय के मंत्रियों से यह कहता हूं: एगिरदिर का एक आदमी, जो रिसाले-ए-नूर का छात्र नहीं है, एक सार्जेंट जेंडरमे से बहस कर रहा था। क्योंकि इस व्यक्ति के पास मेरा एक महत्वहीन पत्र पाया गया था, आपने मुझे एक सौ बीस अन्य लोगों के साथ गिरफ्तार कर लिया और हमें चार महीने तक जेल में रखा जब तक कि हम बरी नहीं हो गए। उनमें से अधिकांश लोग गरीब हैं और अपने परिवारों की आजीविका कमाने के लिए काम करने से वंचित थे, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें हजारों लीरा का नुकसान हुआ। किस सांसारिक कानून और सिद्धांत के अनुसार आप इस तरह की कार्रवाई को सही ठहरा सकते हैं? किस सांसारिक कानून और सिद्धांत के अनुसार निर्दोष लोगों को गिरफ्तार किया जा सकता है और जेल में बंद किया जा सकता है, न कि उस अपराध के लिए जो उन्होंने वास्तव में किया है, बल्कि उस अपराध के लिए जो अधिकारियों के अनुसार, वे भविष्य में संभवतः कर सकते हैं?!

मेरा दूसरा सवाल: कुरान कहता है कि कोई भी व्यक्ति बोझ उठाने वाला न तो किसी दूसरे का बोझ उठाता है और न ही उसे उठाने के लिए कहा जाता है (6:164)। दूसरे शब्दों में, यह एक ऐसा व्यक्ति है जो किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाता है।

कानून का सार्वभौमिक सिद्धांत है कि किसी को भी किसी अन्य द्वारा किए गए अपराध के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता और न ही दंडित किया जा सकता है। यदि किसी व्यक्ति को उसके भाई के दोषों के लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता है, तो न्याय के किस कानून के अनुसार मुझे और उन गरीब किसानों और कारीगरों को ठंड में सिर्फ इसलिए गिरफ्तार करना उचित माना गया क्योंकि उनमें से किसी के पास मेरा एक पत्र मिला था, या इसलिए कि किसी ने कहीं मेरी कोई पुस्तक पढ़ी थी जो गणतंत्र की स्थापना से लगभग एक दशक पहले कुछ हदीसों को समझाने के लिए लिखी गई थी? किस विशेष कानून के अनुसार आप इन लोगों को हजारों लीरा खोने का कारण बता सकते हैं, वह भी केवल निराधार अटकलों के आधार पर? कृपया मुझे इन कानूनों के बारे में बताएं - यदि वास्तव में वे मौजूद हैं - ताकि हम कोई गलत कदम न उठाएँ।

मेरा तीसरा सवाल: अगर कई ग्रंथों में से किसी एक में कुछ वाक्य या पैराग्राफ हैं जो कानून के अनुरूप नहीं हैं, तो उन वाक्यों या पैराग्राफ को सेंसर किया जा सकता है, और बाकी के ग्रंथों को स्वतंत्र रूप से प्रसारित करने की अनुमति दी जानी चाहिए। तो, अदालत में हमारे बरी होने के बावजूद, गणतंत्र की सरकार के किस सिद्धांत के अनुसार सभी ग्रंथों को जब्त किया जा सकता है और उन लोगों को गिरफ्तार किया जा सकता है जो मेरे बुढ़ापे की एकाकी सर्दियों में मेरी सेवा करते हैं?

चूँकि, अंतरात्मा की स्वतंत्रता के कानून के अनुसार, गणतंत्र के सिद्धांत अधार्मिक लोगों के साथ हस्तक्षेप नहीं करते हैं, निश्चित रूप से उन्हें उन धार्मिक लोगों के साथ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए जो राजनीति और दूसरों के सांसारिक मामलों में शामिल नहीं हैं, जो सांसारिक लोगों के साथ विवादों से बचते हैं और जो लोगों के विश्वास और परलोक तथा देश की भलाई के लिए उपयोगी रूप से प्रयास करते हैं। जो लोग इस देश पर शासन करते हैं, वे धर्मपरायणता और धार्मिकता पर प्रतिबंध नहीं लगा सकते, जो इस देश के लिए भोजन और दवा की तरह ही आवश्यक हैं।

मैं देश, राष्ट्र और सार्वजनिक सुरक्षा के लाभ के लिए लोगों को निम्नलिखित बातों की याद दिलाना अपना देशभक्तिपूर्ण कर्तव्य समझता हूं। इस तरह से कई लोगों को अपमानित करना क्योंकि उनका मुझसे और रिसाले -ए-नूर से थोड़ा सा संबंध है , उन लोगों को सरकार के खिलाफ कर सकता है जो धार्मिक रूप से देश और इसकी सुरक्षा के लिए लाभकारी हैं। एक लाख से अधिक लोग हैं जिनका विश्वास रिसाले-ए-नूर के माध्यम से बचा लिया गया है और जो राष्ट्र के लिए हानिरहित, फिर भी अत्यधिक लाभकारी नागरिक बन गए हैं। वे समाज के हर स्तर से आते हैं; उनमें से कुछ सरकारी विभागों में काम करते हैं, अपने जीवन को संयमित और ऐसे तरीके से जीते हैं जिससे पूरे समाज को लाभ होता है। यह आवश्यक है कि इन लोगों को अपमानित या अलग-थलग करने के बजाय संरक्षित किया जाए। जो अधिकारी अन्यथा कार्य करते हैं वे सार्वजनिक व्यवस्था को नुकसान पहुंचा रहे हैं और इस देश के नुकसान के लिए काम कर रहे हैं।

एक महत्वपूर्ण सिद्धांत

रिसाले-ए-नूर के छात्रों के बीच यह एक आवश्यक सिद्धांत है कि वे राजनीति, प्रशासन के मामलों या सरकारी गतिविधियों में शामिल न होने की पूरी कोशिश करें, क्योंकि उनके लिए कुरान की ईमानदारी से सेवा करना किसी भी चीज़ से अधिक महत्वपूर्ण है।

इसके अलावा, राजनीतिक उथल-पुथल के मौजूदा माहौल में राजनीति में प्रवेश करने वाला कोई भी व्यक्ति अपनी स्वतंत्रता या ईमानदारी को बनाए रखने में सक्षम नहीं है: राजनीतिक भागीदारी अनिवार्य रूप से उनके हितों का फायदा उठाएगी और उनकी सेवा की पवित्रता को भ्रष्ट करेगी। साथ ही, इस युग के संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता, जिसमें अत्याचार और निरंकुशता का सबसे गंभीर रूप व्याप्त है, को एक व्यक्ति की गलती के कारण विरोधी पक्ष के कई निर्दोष समर्थकों को कुचलने की आवश्यकता होगी। जो लोग उनसे अपेक्षित तरीके से कार्य नहीं करते हैं, वे निश्चित रूप से पराजित होंगे। इसके अलावा, यह उन लोगों को यह धारणा देगा कि जिन्होंने दुनिया की खातिर अपने धर्म को त्याग दिया है, या जिन्होंने धर्म का शोषण किया है, उन्हें यह धारणा मिलेगी कि कुरान की पवित्र सच्चाई, जो किसी सांसारिक लाभ के लिए साधन नहीं हो सकती, राजनीतिक प्रचार के उद्देश्यों के लिए शोषण की जा रही है। राजनीति हमेशा लोगों को विभाजित करती है, जबकि धर्म उन्हें एकजुट करता है: लोगों का हर वर्ग - समर्थक और विरोधी, अधिकारी और आम लोग - सभी को उन पवित्र सच्चाइयों की समान रूप से आवश्यकता है और उन्हें उनका हिस्सा मिलना चाहिए। निष्कर्ष के तौर पर, रिसाले-ए-नूर के छात्रों को राजनीति से पूरी तरह दूर रहना चाहिए। उन्हें समाज के किसी भी वर्ग के साथ संघर्ष नहीं करना चाहिए और न ही किसी भी तरह से उनसे जुड़ना चाहिए, ताकि वे पूरी तरह से निष्पक्ष रह सकें।

एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत

करुणा मेरे और रिसाले-ए-नूर के मार्ग का आधार है : यह तीस वर्षों से मेरा मुख्य सिद्धांत रहा है। इस कारण से, ताकि निर्दोषों को कोई नुकसान न पहुंचे, मैं उन अत्याचारियों को शाप देने से बचता हूं, जो मुझे सताते हैं। यहां तक कि जब मैं उन लोगों में से कुछ पर गुस्सा महसूस करता हूं जो मुझे क्रूर घृणा और विद्वेष के कारण सताते हैं, तो करुणा मुझे शाप देने से रोकती है, शारीरिक रूप से तो दूर की बात है। यह सोचकर कि उनके पास या तो निर्दोष बुजुर्ग माता-पिता या बच्चे हो सकते हैं जो उनके कारण नुकसान उठा सकते हैं, मैं उनके खिलाफ कुछ भी करने का प्रयास नहीं करता। कभी-कभी मैं उन्हें माफ भी कर देता हूं।

इसी करुणा के कारण मैं कभी भी सरकारी कामों में दखल नहीं देता और न ही सार्वजनिक व्यवस्था को बिगाड़ने वाला कुछ करता हूँ। इसके अलावा, मैंने अपने सभी दोस्तों को यह सलाह इतनी दृढ़ता से दी है कि कुछ निष्पक्ष पुलिस अधिकारी भी मेरे साथ हैं।

तीन प्रांतों के छात्रों को यह स्वीकार करना पड़ा है: " रिसाले-ए-नूर के ये छात्र नैतिक पुलिस की तरह हैं: वे सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा को बनाए रखते हैं।" इस तथ्य के हजारों गवाहों के अलावा, रिसाले-ए-नूर के छात्रों ने बीस साल के अनुभव से इसकी पुष्टि की है: इन हजारों छात्रों में से कोई भी पुलिस द्वारा दर्ज किसी भी घटना में शामिल नहीं रहा है। इसलिए उनके साथ ऐसा व्यवहार करना पूरी तरह से गैरकानूनी है जैसे कि वे किसी क्रांतिकारी समिति के सदस्य हों, या उन्हें बदनाम करना और अपमानित करना जैसे कि वे अपराधी हों।

एक महत्वपूर्ण मामला

ईश्वर का अनंत धन्यवाद कि तीस साल पहले, उसकी कृपा और कुरान के ज्ञान से, मुझे एहसास हुआ कि इस दुनिया की क्षणभंगुर प्रसिद्धि और महिमा कितनी मूल्यहीन और निरर्थक है। तब से मैं अपनी सारी शक्ति के साथ अपनी दुष्ट आत्मा से संघर्ष करने की कोशिश कर रहा हूं ताकि अहंकार, दिखावा और दिखावे से बच सकूं। यह मेरे सभी दोस्तों को पता है। मैं लोगों के ध्यान, प्रशंसा और प्रशंसा से भी भागने की कोशिश करता हूं, साथ ही उनके द्वारा मेरे लिए बताए गए किसी भी आध्यात्मिक पद से भी। मैं अपने सच्चे दोस्तों को यह समझाने की भी पूरी कोशिश करता रहा हूं कि मेरे पास प्रशंसा के लायक कोई गुण नहीं है, और यह मैं उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाकर करता हूं। अगर प्रशंसा करने लायक कोई गुण है, तो वह रिसाले -ए-नूर के छात्रों के सामूहिक व्यक्तित्व का है।

इस तथ्य के बावजूद, मुझे किसी ऐसे पत्र के लिए कभी भी जिम्मेदार नहीं ठहराया जाना चाहिए जो किसी के पास से मिला हो या किसी दूसरे शहर में लिखी गई किताब के लिए, जिससे मेरा कोई संबंध नहीं है। जिस पत्र पर सवाल उठाया गया है, उसमें मेरे हस्ताक्षर जाली थे, जबकि किताब में किसी लेखक का नाम नहीं है। दुनिया का कोई भी कानून और कोई भी सभ्य राजनीतिक व्यवस्था इसकी अनुमति नहीं देगी।

कुछ महत्वपूर्ण वास्तविकताएँ

पहला: अधिकांश पैगम्बर पूर्व में, एशिया में प्रकट हुए, जबकि अधिकांश दार्शनिक पश्चिम में उभरे। यह शाश्वत ईश्वरीय नियति का संकेत है कि एशिया में धर्म प्रमुख है और दर्शन अधीनस्थ है।

इसे देखते हुए, भले ही एशिया में शासन करने वाले लोग धार्मिक न हों, उन्हें धर्म के लिए काम करने वालों के काम में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए; बल्कि, उन्हें सक्रिय रूप से उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।

दूसरा : बुद्धिमान कुरान पृथ्वी के मुखिया की बुद्धि और उसकी विचार शक्ति है। यदि, ईश्वर न करे, कुरान पृथ्वी के मुखिया की बुद्धि और उसकी विचार शक्ति से अलग हो जाए।

पृथ्वी का सिर, पृथ्वी पागल हो जाएगी। यह कहना उचित है कि अपने सिर को तर्क से खाली करके, यह किसी अन्य ग्रह से टकराएगा और सर्वनाश की घोषणा करेगा। कुरान एक जंजीर है, एक "ईश्वर की रस्सी" जो पृथ्वी को दिव्य सर्वोच्च सिंहासन से बांधती है। यह सामान्य गुरुत्वाकर्षण के नियम से अधिक पृथ्वी की रक्षा करता है। इस प्रकार, रिसाले -ए-नूर, जो कि शानदार कुरान पर एक सच्ची और शक्तिशाली टिप्पणी है, एक विशाल ईश्वरीय उपकार है जो इस देश में बीस वर्षों से अपनी प्रभावशीलता का प्रदर्शन कर रहा है। इसलिए सरकार को इसकी रक्षा करनी चाहिए और लोगों को इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

न्याय का एक सिद्धांत

न्याय, जिसका न्याय विभाग को अक्षरशः पालन करना चाहिए, यह अपेक्षा करता है कि उसके पास अपील करने वाले सभी लोगों के अधिकारों को बिना किसी भेदभाव के संरक्षित किया जाए और न्याय विभाग सही और न्यायपूर्ण के लिए अथक प्रयास करे। यही कारण है कि अपनी खिलाफत के दौरान, इमाम अली, ईश्वर उनसे प्रसन्न हों, एक यहूदी के साथ अदालत में बैठे और उन पर एक साथ मुकदमा चलाया गया। साथ ही, एक न्यायप्रिय मुख्य न्यायाधीश ने एक अधिकारी को सजा सुनाते समय अपराधी के प्रति क्रोध प्रदर्शित करते देखा और उसे तुरंत नौकरी से निकाल दिया। खेद से भरे हुए, उन्होंने टिप्पणी की: "जो लोग कानून को लागू करते समय इस तरह से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं, उन्होंने आज तक बहुत बड़ी गलतियाँ की हैं।"

यानी कानून का पालन करने वाले को क्रोध नहीं दिखाना चाहिए: अगर वह क्रोध करता है, तो वह अन्याय कर रहा है। अगर वह क्रोध में मृत्युदंड का पालन करता है, तो वह खुद एक तरह का हत्यारा बन जाता है। इस्लामी न्याय यही मांग करता है।

एक अनुस्मारक

रिसाले-ए-नूर में बताई गई सच्चाइयों का लोगों की नज़रों में मूल्य कम करने के लिए हमारे गुप्त शत्रु यह अफ़वाह फैलाते हैं कि मैंने महदी होने का दावा किया है, या वे इस बदनामी को फैलाने के लिए रिसाले को ही एक साधन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। मेरे पचहत्तर साल के जीवन-विशेषकर इसके पिछले तीस साल-और प्रकाश के सभी ग्रंथ (रिसाले-ए-नूर), और वे हज़ारों लोग जिन्होंने मेरे साथ सच्ची दोस्ती बनाए रखी है, इस बात के गवाह हैं कि मैंने कभी भी अपनी क्षमता की सीमाओं को इस हद तक नहीं लांघा कि मैं ऐसा दावा करने की हिम्मत भी कर सकूँ; न ही मैंने कभी विश्वास की सच्चाइयों को पद, प्रतिष्ठा या प्रसिद्धि पाने का साधन बनाया है। इसके विपरीत, रिसाले -ए-नूर के छात्र अच्छी तरह जानते हैं कि मैं हमेशा अपना सब कुछ त्यागने के लिए तैयार रहा हूँ-अपनी आत्मा,

मेरा अस्तित्व, मेरा संसार - ताकि मैं लोगों की आस्था के लिए अपनी पूरी ताकत से उनकी सेवा कर सकूँ। वे यह भी जानते हैं और गवाही देंगे कि मेरी दुष्ट आत्मा के संबंध में मैंने हमेशा खुद को वास्तव में दुखी, महत्वहीन और अपने छात्रों से बहुत कमतर समझा है, जिनकी मदद और प्रार्थनाओं को मैंने हमेशा मांगा है। और भले ही, मेरे बारे में उनकी अत्यधिक अच्छी राय के कारण, कुछ छात्र मुझे एक पद देते हैं और अतिशयोक्तिपूर्ण तरीके से मेरी प्रशंसा करते हैं - जैसा कि छात्रों और उनके गुरु के बीच सदियों पुरानी परंपरा है - क्या इसे अपराध माना जाना चाहिए, खासकर अगर मैंने कभी इसकी मांग या स्वीकार नहीं किया?

राजनीति और कुछ अन्य व्यक्तिगत मामलों के प्रति उदासीनता

> उनसे कुछ लोगों ने कहा कि देखो, वे लोग तुम्हारे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं, अतः उनसे डरो। किन्तु इससे उनका ईमान और अधिक बढ़ गया और उन्होंने कहा कि अल्लाह ही हमारे लिए काफ़ी है, वह कितना अच्छा रक्षक है। (3:173)

> यह पत्र ईश्वरीय आदेश के अनुसार लिखा गया है, अतः उससे नम्रतापूर्वक बात करो! (20:44)

आगे जो लिखा गया है वह कई लोगों द्वारा पूछे गए एक सवाल का जवाब है। आम तौर पर, मुझे ऐसे सवालों का जवाब देना पसंद नहीं है, क्योंकि मैंने अपने से जुड़ी हर चीज़ को सर्वशक्तिमान ईश्वर पर निर्भर रहने के लिए बाध्य कर दिया है। हालाँकि, चूँकि मैं अपनी निजी दुनिया में अकेला नहीं रह गया हूँ, इसलिए मुझे दुनियावी मामलों की ओर अपना रुख करने के लिए मजबूर होना पड़ा है, अपने लिए नहीं बल्कि अपने दोस्तों और अपने बच्चों को बचाने के लिए।
सांसारिक लोगों के निराधार संदेह और उत्पीड़न से। इस कारण से मैं अपने मित्रों, सांसारिक लोगों और अधिकारियों को पाँच बिंदुओं में अपनी स्थिति स्पष्ट करने के लिए बाध्य हूँ।

पहला बिंदु: वे मुझसे पूछते हैं कि मैंने राजनीति से क्यों दूरी बना ली है ?
और मैं इसमें बिल्कुल भी शामिल नहीं हूं।

उत्तर: पुराने या भूतपूर्व सईद कुछ हद तक राजनीति में शामिल थे; वास्तव में, राजनीति के माध्यम से धर्म और शिक्षा की सेवा करने की आशा के साथ, उन्होंने खुद को व्यर्थ में थका दिया। अंततः उन्हें यह समझ में आ गया कि राजनीतिक मार्ग संदेह, नुकसान और परेशानियों से भरा है: यह मेरे लिए जोखिम भरा और अनावश्यक था, और यह निश्चित रूप से मुझे मेरे सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों को पूरा करने से रोक देगा। क्योंकि राजनीति में ज्यादातर झूठ होता है, और इसमें झूठ है।

हमेशा यह संभावना बनी रहती है कि हम अनजाने में ही दुश्मनों के हाथों का हथियार बन जाएं।

इसके अलावा, जो व्यक्ति राजनीति में प्रवेश करता है, वह या तो किसी चीज के पक्ष में होता है या उसके खिलाफ; वह या तो समर्थक होता है या विपक्ष में। यदि मैं किसी सफल राजनीतिक गुट का समर्थक होता और उसमें भाग लेता, तो चूंकि मैं कोई अधिकारी या सांसद नहीं हूं, इसलिए राजनीति में काम करना मेरे लिए अनावश्यक, बेकार और निरर्थक होगा।61 मुझे राजनीति में शामिल होने की कोई आवश्यकता नहीं है, तो मैं इसमें व्यर्थ भाग क्यों लूं? यदि मुझे विपक्ष की ओर से राजनीति में शामिल होना होता, तो मैं या तो विचारों से या बल से ऐसा करता। यदि यह विचारों से होता, तो मेरी कोई आवश्यकता नहीं होती: मुद्दे सभी स्पष्ट हैं और सभी उन्हें उतना ही जानते हैं जितना मैं; उन पर बार-बार चर्चा करना निरर्थक है। और यदि मैं सत्ता पक्ष का बलपूर्वक विरोध करूं और परेशानी खड़ी करूं, तो यह हो सकता है कि मैं एक ऐसे लक्ष्य के लिए हजारों पाप कर रहा हूं, जिसकी धार्मिकता पर सवाल उठाया जा सकता है और जिसकी प्राप्ति, वैसे भी, संदिग्ध है। इस प्रकार एक व्यक्ति के कारण कई लोग पीड़ित हो सकते हैं।

चूँकि उसका विवेक उसे पाप करने या अपराध करने की अनुमति नहीं देता था

एक ऐसे लक्ष्य की खातिर पाप करने के लिए निर्दोष, जिसके साकार होने की दस में से एक संभावना है, ओल्ड सैड ने राजनीति छोड़ दी। उन्होंने धूम्रपान, समाचार पत्र पढ़ना और दूसरों के साथ राजनीति के बारे में बातचीत करना भी छोड़ दिया। आठ सालों से मैंने न तो कोई समाचार पत्र पढ़ा है और न ही कोई समाचार पत्र सुना है, और मैं किसी को इसके विपरीत दावा करने की हिम्मत नहीं देता। हालाँकि, ओल्ड सैड एक दिन में आठ समाचार पत्र पढ़ते थे!

इसके अलावा, पिछले पाँच सालों से मैं अधिकारियों की कड़ी निगरानी में हूँ, इसलिए अगर किसी को मेरी राजनीति में थोड़ी भी भागीदारी दिखी हो, तो उसे सामने आकर बताना चाहिए। मेरे जैसे व्यक्ति के लिए जो अपनी बात खुलकर कहता है, जिसे दुनिया से कोई लगाव नहीं है, और जिसकी मूल रणनीति कोई चाल नहीं चलने की है, उसके विचार आठ दिन तो क्या, आठ साल भी गुप्त नहीं रह सकते! अगर उनमें राजनीति के प्रति थोड़ी भी रुचि और इच्छा होती, तो जांच-पड़ताल की कोई जरूरत नहीं होती, क्योंकि वह अपनी बात छतों से चिल्लाकर कह देते!

दूसरा बिन्दु: न्यू सईद राजनीति से इतनी सख्ती से क्यों बचता है?

---

61 तुर्की में एकदलीय शासन के दौरान सरकारी अधिकारी सत्तारूढ़ पार्टी के सदस्य होते थे। (ट्र.)

जवाब: वह ईमान और कुरान की सेवा करने के लिए राजनीति से पूरी तरह दूर रहता है, जो सबसे शुद्ध, सबसे सच्ची, सबसे महत्वपूर्ण और सबसे शानदार सेवा है। वह इससे दूर रहता है ताकि सांसारिक जीवन के कुछ वर्षों की खातिर अनंत जीवन प्राप्त करने के लिए किए गए प्रयासों को अनावश्यक रूप से बलिदान न कर दे, जिसकी अवधि वैसे भी अनिश्चित है। वह कहता है:

> मैं बूढ़ा हो रहा हूं और मुझे नहीं पता कि मैं कितने दिन जीवित रहूंगा, इसलिए सबसे महत्वपूर्ण बात जो मुझे करनी चाहिए वह है अपने अनंत जीवन के लिए काम करना।
> शाश्वत जीवन प्राप्त करने का प्राथमिक साधन विश्वास है, जो शाश्वत सुख की कुंजी है, और इसलिए हमें विश्वास के लिए काम करना चाहिए। हालाँकि, चूँकि इस्लाम चाहता है कि हम ईश्वर द्वारा हमें दी गई सभी नेमतों के साथ लोगों के लाभ के लिए भी काम करें, इसलिए मैं शिक्षा के माध्यम से उनकी सेवा करने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ। सेवा या तो मानवता के सांसारिक सामाजिक जीवन या उनके विश्वास के लिए निर्देशित होती है। मैं उनके सांसारिक सामाजिक जीवन में उनकी सेवा करने में असमर्थ हूँ। इसके अलावा, ऐसे तूफानी समय में, मानव सांसारिक जीवन की सेवा करना बेहद मुश्किल है, जैसा कि उसे किया जाना चाहिए, और इसलिए, मैं विश्वास के कारण की सेवा करना पसंद करता हूँ, जो सबसे महत्वपूर्ण, सबसे आवश्यक तरीका है, और सबसे सुरक्षित और सबसे सही भी है।
>
> मैं विश्वास की सेवा का द्वार खुला छोड़ता हूँ ताकि विश्वास की जो सच्चाई मैंने अपनी आत्मा में अर्जित की है और अनुभव की है, उसे दूसरे लोग भी प्राप्त कर सकें। मुझे उम्मीद है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर इस सेवा को स्वीकार करेंगे और इसे मेरे पिछले पापों का प्रायश्चित बनाएँगे। शैतान के अलावा, कोई भी, चाहे वह आस्तिक हो या नास्तिक, ईश्वरीय संदेश के सच्चे पुष्टिकर्ता या भौतिकवादी, इस सेवा का विरोध करने का अधिकार नहीं रख सकता। क्योंकि दुनिया में किसी भी चीज़ की तुलना विश्वास की कमी से नहीं की जा सकती। गलत काम, अपव्यय, अपराध और दूसरे बड़े पापों में दुष्टतापूर्ण, शैतानी आनंद हो सकता है, लेकिन अविश्वास में किसी भी तरह का आनंद नहीं है। यह बस दर्द के भीतर दर्द, अंधेरे के भीतर अंधेरा, पीड़ा के भीतर पीड़ा है।

जरा सोचिए कि मेरे जैसे किसी व्यक्ति के लिए यह कितना अनुचित होगा -
अकेले, संसार से कोई लगाव न रखते हुए, और अपने पिछले पापों का प्रायश्चित करने के लिए आतुर होकर - इस वृद्धावस्था में राजनीति के अनावश्यक और खतरनाक खेलों में शामिल होने के लिए शाश्वत जीवन और आस्था की सेवा के लिए प्रयास करना छोड़ देना! एक पागल भी समझ सकता है कि ऐसा कदम तर्क और बुद्धि के कितने विपरीत होगा।

यदि आप पूछें कि ईमान और कुरान की सेवा करना मुझे राजनीति से क्यों रोकता है,
मैं यह कहूंगा:

> ईमान की सच्चाई और कुरान हीरे की तरह हैं। अब, अगर मैं राजनीति में शामिल हो जाऊं, तो भोली-भाली जनता सोचेगी कि

मैं उन्हें राजनीतिक प्रचार के साधन के रूप में इस्तेमाल कर रहा हूँ ताकि ज़्यादा से ज़्यादा समर्थक जीत सकूँ। नतीजतन, वे उन हीरों को कांच के टुकड़े के रूप में देखने लग सकते हैं। इसलिए राजनीति में मेरा शामिल होना लोगों की नज़र में इन हीरों के अवमूल्यन में योगदान देगा।

अब, ऐ दुनियावी लोगों! तुम इतनी दृढ़ता से मेरा विरोध क्यों करते हो? अगर तुम कहो, "वे तुम्हें सईद-ए-कुर्दी कहते हैं; हो सकता है कि तुम्हारे जातीय झुकाव और उद्देश्य हमारे हितों के अनुकूल न हों," तो मैं इस प्रकार उत्तर दूंगा:

सज्जनों! पुराने और नए लोगों ने जो लिखा है, वह सार्वजनिक डोमेन में प्रसारित है और बिल्कुल स्पष्ट है। मैं उन्हें इस तथ्य के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत करता हूं कि हमारे धर्म के निर्णायक निर्णय के अनुसार, "इस्लाम ने अज्ञानता के समय से चली आ रही जातिवाद और नस्लवाद की पूरी तरह निंदा की है और उसे समाप्त कर दिया है," मैंने हमेशा जातिवाद और जातिवाद को, जो एक तरह की पश्चिमी बीमारी है, जहर की तरह माना है। यह यूरोप है जिसने मुस्लिम समुदाय को इस बीमारी से संक्रमित किया है ताकि उसे विभाजित करके उस पर शासन किया जा सके।

मेरे छात्र और अन्य लोग जो मुझसे संपर्क में हैं, वे जानते हैं कि मैं उस बीमारी को ठीक करने के लिए अपनी पूरी कोशिश कर रहा हूं।

ऐसा क्यों है कि आप हर घटना को मुझे परेशान करने का बहाना बनाते हैं? सार्वजनिक भलाई के किस सिद्धांत और नियम के अनुसार आप मुझे हर मोड़ पर परेशान करना उचित समझते हैं? यह देश के पूर्व में एक सैनिक को पश्चिम में एक सैनिक द्वारा की गई गलती के लिए दंडित करने जैसा है, सिर्फ इस तथ्य के कारण कि वे एक ही सेना से संबंधित हैं। यह बगदाद के एक दुकानदार को इस्तांबुल में एक व्यापारी द्वारा किए गए अपराध के लिए दोषी ठहराने जैसा है, सिर्फ इसलिए कि वे दोनों एक ही व्यवसाय में हैं। कौन सी अंतरात्मा ऐसी बात की अनुमति देगी और यह सामान्य ज्ञान के साथ कैसे मेल खाता है?

तीसरा बिंदु: मेरे मित्र जो मेरे स्वास्थ्य की चिंता करते हैं और इस बात पर आश्चर्यचकित हैं कि मैं हर विपत्ति का सामना मौन धैर्य के साथ करता हूँ, वे निम्नलिखित प्रश्न पूछते हैं: "आप अपने ऊपर आने वाली कठिनाइयों और परेशानियों को कैसे सहन कर सकते हैं, जबकि पहले आप बहुत घमंडी थे और थोड़ा सा भी अपमान सहन नहीं कर सकते थे?"

जवाब: दो छोटी-छोटी कहानियां सुनिए और आपको अपना जवाब मिल जाएगा।
उत्तर:

पहला: दो साल पहले एक निर्देशक ने मेरी पीठ पीछे मेरे बारे में अपमानजनक और तिरस्कारपूर्ण बातें कीं। उसने जो कहा, वह बाद में मुझे सुनाया गया। करीब एक घंटे तक पुरानी कहावतें चलती रहीं और मैं जो कुछ भी कहा गया, उससे प्रभावित हुआ।

फिर, सर्वशक्तिमान ईश्वर की दया से, मेरे मन में यह तथ्य आया, जिसने मेरे दुख को दूर कर दिया और मुझे उस व्यक्ति को माफ़ करने के लिए मजबूर कर दिया। यह तथ्य मेरे मन में तब आया जब मैं अपनी आत्मा से निम्नलिखित बातें कह रहा था:

> अगर उस आदमी के अपमान और मेरे उन दोषों का जिक्र मेरी दुष्ट आत्मा से संबंधित था, तो भगवान उससे प्रसन्न हो, क्योंकि उसने मेरी उन खामियों को उजागर किया है, जिनके बारे में मैं नहीं जानता था। अगर वह सच बोल रहा था, तो वह मेरी आत्मा को प्रशिक्षित करने का साधन था और वह कारण था कि मैं खुद को अहंकार से बचाने के लिए प्रेरित हुआ। अगर उसने जो कहा वह झूठ था, तो उसने मुझे दिखावे और अनुचित प्रसिद्धि से बचाने में मदद की, जो दिखावे का स्रोत है।

> मैं अपनी आत्मा के साथ सामंजस्य नहीं बना पाया हूँ, क्योंकि मैंने उसे प्रशिक्षित नहीं किया है। अगर कोई मुझसे कहे कि मेरी गर्दन पर या मेरी बगल में बिच्छू है, तो मैं उसका आभारी रहूँगा, नाराज़ नहीं होऊँगा। लेकिन अगर उस आदमी का अपमान मेरे विश्वास और कुरान की सेवा करने के मेरे कर्तव्य के विरुद्ध हो, तो मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि मैं उसे उस शानदार कुरान के मालिक के पास भेज दूँगा जिसने मुझे काम पर रखा है। वह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। अगर उस आदमी का इरादा सिर्फ़ मुझे शाप देना और मेरा अपमान करना या मेरा चरित्र खराब करना था, तो भी मुझे इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। क्योंकि मैं निर्वासित हूँ, अजनबी हूँ, और मेरे हाथ बंधे हुए हैं: यह मेरा कर्तव्य नहीं है कि मैं खुद अपना सम्मान बहाल करने की कोशिश करूँ। बल्कि, ऐसी घटना इस गाँव के अधिकारियों को चिंतित करेगी जहाँ मैं एक मेहमान हूँ और निगरानी में हूँ। किसी व्यक्ति के मेहमान का अपमान करना उस व्यक्ति से संबंधित है, मेहमान से नहीं: यह मेजबान है जिसे अपने मेहमान की रक्षा करनी चाहिए।

चूँकि हकीकत यही है, इसलिए मेरा दिल हल्का हो गया। मैंने कहा, "मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूँ। बेशक अल्लाह बंदों को अच्छी तरह देखता है (40:44)" और सोचा कि यह घटना हुई ही नहीं। दुर्भाग्य से बाद में यह बात स्पष्ट हो गई कि कुरान ने उसे माफ नहीं किया है।

दूसरी घटना: इस साल मैंने एक घटना के बारे में सुना। हालाँकि मैंने घटना के घटित होने के बाद ही उसका संक्षिप्त विवरण सुना, लेकिन मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया गया मानो मेरा उससे कोई करीबी रिश्ता रहा हो। मैंने किसी से पत्र-व्यवहार नहीं किया था, और अगर किया भी था, तो मैंने किसी मित्र को आस्था के किसी मुद्दे पर बहुत कम ही पत्र लिखा था। वास्तव में, मैंने अपने भाई को चार साल में केवल एक पत्र लिखा है। मैं दूसरों से घुलने-मिलने से बचने की कोशिश करता हूँ और “सांसारिक” लोग भी मुझे ऐसा करने से रोकते हैं।

किसी भी स्थिति में, मैं अपने साथ जो भी घटित होगा, उसके प्रति उसी प्रकार का धैर्य और सहनशीलता प्रदर्शित करने के लिए कृतसंकल्प हूं, जैसा मैंने दुर्व्यवहार के प्रति किया था।

मुझे बहुत कष्ट सहना पड़ा और जिसका जिक्र मैंने ऊपर किया है।

मैं यही सोचता और कहता हूं:

> यदि यह दुर्व्यवहार, कष्ट और उत्पीड़न जो मुझ पर ढाया जा रहा है, मेरी दोषपूर्ण आत्मा के कारण है, तो मैं इसे क्षमा करता हूँ। मुझे आशा है कि इससे मेरी आत्मा का सुधार होगा और यह मेरे पापों का प्रायश्चित होगा। मैंने संसार के अतिथिगृह में ईश्वर के असंख्य उपकार चखे हैं: यदि मैं इसकी परीक्षाएँ भोगता हूँ, तो भी मैं धन्यवाद देता रहूँगा। यदि ईमान और कुरान के कारण मेरी सेवा के कारण "सांसारिक" मुझे परेशान करते हैं, तो मुझे अपना बचाव करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय मैं इसे सर्वशक्तिमान, सर्व-शक्तिशाली ईश्वर के पास भेजता हूँ। यदि वे लोगों को मेरे विरुद्ध करना चाहते हैं और मेरी अनुचित प्रसिद्धि को बदनाम करना चाहते हैं, जो निराधार और ईमानदारी को नष्ट करने वाली है, तो ईश्वर उनका भला करे! क्योंकि मैं अपने जैसे लोगों के लिए सार्वजनिक ध्यान और प्रसिद्धि को हानिकारक मानता हूँ। जो लोग मेरे संपर्क में हैं, वे जानते हैं कि मैंने कभी नहीं चाहा कि मुझे सम्मान दिया जाए; वास्तव में, मैं इससे घृणा करता हूँ। मैंने अपने एक प्रिय मित्र को भी कई बार अत्यधिक सम्मान देने के लिए फटकारा है। अगर मुझे बदनाम करने और सार्वजनिक रूप से मुझे अपमानित करने का उनका उद्देश्य विश्वास की सच्चाई और कुरान पर हमला करना है, जिसे मैं समझाने की कोशिश करता हूं, तो यह व्यर्थ है। क्योंकि कुरान के सितारों पर पर्दा डालना असंभव है।

> जो व्यक्ति अपनी आंखें बंद कर लेता है, वह केवल स्वयं को ही देखने से रोकता है: वह दूसरों के लिए प्रकाश को लुप्त नहीं कर सकता।

चौथा बिन्दु: “सांसारिक” लोग मुझसे पूछते हैं कि मैं कैसे जीता हूँ और क्या खाता हूँ ।

जवाब: मैं मितव्ययिता के सिद्धांतों और उससे मिलने वाली प्रचुरता के अनुसार जीता हूँ। मैं अपने भरण-पोषण करने वाले के अलावा किसी पर निर्भर नहीं हूँ और मैंने यह निर्णय लिया है कि मैं किसी और का ऋणी नहीं बनूँगा। जो व्यक्ति प्रतिदिन सौ या चालीस पैरा (सेंट) पर जीवनयापन करता है, वह निश्चित रूप से किसी का ऋणी नहीं होता।

मैं इस मामले को स्पष्ट नहीं करना चाहता था: यह पूरा मामला अप्रिय है, क्योंकि इससे मुझे गर्व या अहंकार की भावना हो सकती है। लेकिन चूंकि "दुनियादारी" मुझसे इस बारे में संदेहास्पद तरीके से सवाल करती है, इसलिए मैं इस प्रकार उत्तर देता हूं:

मेरे पूरे जीवन में, वास्तव में बचपन से ही, यह मेरा सिद्धांत रहा है कि मैं लोगों से कुछ भी न लूँ - ज़कात भी शामिल है - और अपनी आजीविका के लिए उनका ऋणी न बनूँ। मेरे मूल क्षेत्र के लोग और जो लोग मुझे अन्य स्थानों पर जानते हैं, वे इस बात से पूरी तरह वाकिफ हैं। निर्वासन के इन पाँच वर्षों के दौरान, कई मित्रों ने ईमानदारी से कोशिश की है कि मैं उनका उपहार स्वीकार करूँ, लेकिन मैंने उनमें से किसी से कुछ भी स्वीकार नहीं किया।

इसलिए, यदि लोग मुझसे पूछें, “तो आप अपना जीवन कैसे चलाते हैं?” तो मैं उत्तर देता हूँ: मैं मितव्ययिता से और उससे मिलने वाली प्रचुरता पर जीवन व्यतीत करता हूँ।”

पिछले छह सालों से एक बुशल गेहूँ - जो छत्तीस रोटियों के लिए काफी है - मेरे लिए काफी है। और अभी भी कुछ बचा हुआ है: यह कितने समय तक चलेगा, मुझे नहीं पता।

रमजान के आखिरी महीने में, मैंने तीन रोटियां और एक किलो से थोड़ा अधिक चावल से काम चलाया; चावल रमजान खत्म होने के दो सप्ताह बाद खत्म हुआ।

पहाड़ पर तीन महीने तक एक किलो से अधिक मक्खन और थोड़ी सी रोटी मेरे लिए तथा समय-समय पर मुझसे मिलने आने वाले मेहमानों के लिए पर्याप्त थी।

यह कोट जो मैं पहन रहा हूँ, मैंने सात साल पहले सेकेंड हैंड खरीदा था।
पिछले पाँच सालों में मैंने कपड़ों, अंडरगारमेंट्स, जूतों और मोज़ों पर साढ़े चार लीरा से ज़्यादा खर्च नहीं किया है। मितव्ययिता, ईश्वरीय दया और उसके परिणामस्वरूप मिलने वाली प्रचुरता ही पर्याप्त है।

ऐसे कई अन्य उदाहरण और वास्तविकताएं हैं और इस गांव के लोग उनमें से अधिकांश के बारे में जानते हैं। मैं उनका उल्लेख गर्व से नहीं कर रहा हूं, बल्कि इसलिए कर रहा हूं क्योंकि लोगों ने मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर किया है। और यह मत सोचिए कि ये बहुतायत के उदाहरण जिनके बारे में मैं बात कर रहा हूं, वे मेरी ओर से किसी अच्छाई का परिणाम हैं: वे या तो उन सच्चे दोस्तों के लिए ईश्वरीय कृपा थी जो मुझसे मिलने आए थे या किसी के लिए एक एहसान था।

कुरान की सेवा; या तो वे मितव्ययिता से होने वाले प्रचुर लाभ थे या वे मेरे पास मौजूद चार बिल्लियों के भरण-पोषण के लिए आते हैं, जो ईश्वरीय नामों का जाप करती हैं "हे दयालु! हे दयालु!", जिससे मुझे लाभ होता है। यदि आप उनकी शोकाकुल म्याऊँ को ध्यान से सुनें, तो आप समझ जाएँगे कि वे कह रही हैं, "या रहीम! या रहीम! "

बिल्लियों के बारे में सोचते हुए मुझे उस मुर्गी की याद आती है जिसे मैं पालता हूँ। इस सर्दी में, वह हर दिन दया के खजाने से मेरे लिए एक अंडा लाती थी, कुछ अपवादों को छोड़कर। एक दिन वह मेरे लिए दो अंडे लेकर आई और मैं हैरान रह गया। मैंने अपने दोस्तों से पूछा "यह कैसे हो सकता है?" उन्होंने जवाब दिया: "शायद यह ईश्वरीय उपहार है।" मुर्गी के पास एक छोटा चूजा भी है जिसे उसने गर्मियों में निकाला था। इसने रमज़ान की शुरुआत में अंडे देना शुरू किया और चालीस दिनों तक जारी रखा: जब-जब माँ मुर्गी अंडे देना बंद करती, तो छोटा अंडा देना शुरू कर देता, इस तरह मैं कभी भी अंडे के बिना नहीं रहता।

पाँचवाँ बिन्दु: चूँकि यह संसार क्षणभंगुर है और जीवन छोटा है; चूँकि यहाँ अनन्त जीवन पाने के लिए अनेक आवश्यक कर्तव्य करने होते हैं; चूँकि यह अतिथिगृह जो संसार है, बिना स्वामी के नहीं है, तथा इसका एक बहुत ही बुद्धिमान और उदार संचालक है; चूँकि न तो अच्छाई और न ही बुराई बिना प्रतिफल के रहती है; चूँकि इस आयत के अनुसार: ईश्वर किसी प्राणी पर उसकी क्षमता के अनुसार ही भार डालता है (2:286), कोई जिम्मेदारी ऐसी नहीं है जिसे पूरा न किया जा सके; चूँकि सुरक्षित मार्ग हानिकारक मार्ग से बेहतर है; चूँकि सांसारिक मित्र और प्रतिष्ठा केवल कब्र के द्वार तक ही रहती है, तो निश्चय ही सबसे सुखी व्यक्ति वह है जो अपने पापों से छुटकारा पा लेता है।

जो इस दुनिया की दौड़ में परलोक को नहीं भूलता। सबसे सुखी वह व्यक्ति है जो इस क्षणभंगुर सांसारिक जीवन के लिए परलोक का त्याग या विनाश नहीं करता। सबसे सुखी वह व्यक्ति है जो तुच्छ चीजों पर अपना जीवन बर्बाद नहीं करता, बल्कि जो खुद को अतिथि मानता है और अतिथिगृह के मालिक के अनुसार कार्य करता है, इस प्रकार कब्र का द्वार सुरक्षित रूप से खोलता है और शाश्वत सुख में प्रवेश करता है।

इन वास्तविकताओं के कारण ही मैं अपने ऊपर होने वाली परेशानियों और अन्यायों पर ध्यान नहीं देता। मुझे नहीं लगता कि वे मेरे ध्यान के लायक हैं और इसलिए मैं दुनिया में हस्तक्षेप नहीं करता।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

आप पर शांति, ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

मैं कैदियों और उन लोगों के लिए तीन बिंदुओं के रूप में सांत्वना का एक प्रभावी स्रोत प्रस्तुत करूंगा जो ईमानदारी और निष्ठा से उनकी मदद करते हैं तथा बाहर से आने वाले उनके भोजन की निगरानी करते हैं।

पहला बिन्दु: जेल में बिताया गया प्रत्येक दिन दस दिन की पूजा के बराबर फल प्रदान कर सकता है, तथा उसके फल के संबंध में, ये क्षणभंगुर घंटे स्थायी घंटों में परिवर्तित हो सकते हैं, तथा कुछ वर्षों की सजा लाखों वर्षों की अनन्त कारावास से मुक्ति का साधन बन सकती है।

जेल में बंद विश्वासी दिन में पाँच बार प्रार्थना करके, अपने पापों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगकर, और धैर्यपूर्वक ईश्वर को धन्यवाद देकर यह सबसे महत्वपूर्ण और मूल्यवान लाभ प्राप्त कर सकते हैं। जेल कुछ पापों के लिए एक बाधा है; यह उन्हें रोकता है।

दूसरी बात: जिस तरह सुख के चले जाने से दुख आता है, उसी तरह दुख के चले जाने से सुख आता है। बीते हुए सुखद और आनंदमय दिनों के बारे में सोचते ही हर किसी को अफसोस और लालसा होती है और वह दुख की सांस लेता है।

जब अतीत के विपत्तिपूर्ण और दर्दनाक दिनों को याद करते हैं, तो हर कोई खुशी महसूस करता है क्योंकि वे चले गए हैं, भगवान का शुक्रिया अदा करता है कि ऐसे दिन बीत गए हैं और उनका इनाम खत्म हो गया है, और राहत की सांस लेता है। इसका मतलब है, एक घंटे का अस्थायी दर्द आत्मा में एक अमूर्त आनंद छोड़ जाता है, जबकि एक घंटे का आनंद दर्द छोड़ जाता है।

यही सच्चाई है। दुर्भाग्य के बीते घंटे और उनका दर्द गायब हो चुका है, जबकि भविष्य में कल्पित संकट के दिन अभी तक नहीं आए हैं। दर्द शून्य से या जो मौजूद नहीं है उससे नहीं आता है। इसलिए,

आज लगातार खाना-पीना इस डर से कि शायद भविष्य में हमें भूख और प्यास लगेगी, पूरी तरह से पागलपन है। इसी तरह, इस समय अतीत और भविष्य के दर्द के बारे में सोचना मूर्खता है - ऐसे दर्द जो मौजूद नहीं हैं - और, परिणामस्वरूप, अधीर हो जाना, अपनी दोषपूर्ण आत्मा को अनदेखा करना और ऐसा व्यवहार करना जैसे कि हम ईश्वर के बारे में शिकायत कर रहे हैं। अगर हम अतीत और भविष्य के बारे में चिंता करने में अपने धैर्य के अनमोल भंडार को बर्बाद नहीं करते हैं, जिनमें से कोई भी मौजूद नहीं है, तो इससे हमारा मौजूदा दर्द दस गुना कम हो जाएगा।

यह कोई शिकायत नहीं है: "जोसेफ के स्कूल" में मेरे प्रवास की इस तीसरी अवधि के दौरान, कुछ दिनों तक शारीरिक और आध्यात्मिक कष्ट और बीमारी ने मुझे कुचलना शुरू कर दिया, जो मुख्य रूप से कुरान की सेवा न कर पाने की निराशा से उत्पन्न हुई थी और इस तरह की अन्य चीजें जो मैंने पहले कभी अनुभव नहीं की थीं। हालाँकि, जब ईश्वरीय कृपा ने मुझे यह सच्चाई दिखाई, तो मैंने अपनी कष्टदायक बीमारी और कारावास को स्वीकार कर लिया। चूँकि कब्र के दरवाजे पर प्रतीक्षा करने वाले मेरे जैसे गरीब आदमी के लिए यह बहुत लाभदायक है कि वह संभावित असावधानी के एक घंटे को दस घंटे की इबादत में बदल दे, इसलिए मैंने ईश्वर का धन्यवाद किया।

तीसरी बात: कैदियों की ज़रूरतों को दयापूर्वक पूरा करने, उनके भोजन का प्रबंध करने और उनके आध्यात्मिक घावों को शांत करने से बहुत बड़ा सवाब मिलता है। उन्हें बाहर से भेजा गया भोजन परोसने से भी वही आध्यात्मिक सवाब मिलता है जो उस भोजन को दान में देने से मिलता है। यह सवाब जेल के पहरेदारों और जेल के अंदर और बाहर से इसमें योगदान देने वालों के अच्छे कामों के रिकॉर्ड में जुड़ जाता है। अगर कैदी बूढ़े, बीमार, गरीब या बिना सहारे या सुरक्षा के हैं, तो ऐसी दान-पुण्य का सवाब कई गुना बढ़ जाता है। हालाँकि, इस बहुमूल्य लाभ को पाने के लिए, व्यक्ति को प्रतिदिन विहित प्रार्थनाएँ करनी चाहिए ताकि उनकी सेवा केवल ईश्वर के लिए हो। इसके अलावा, व्यक्ति को ईमानदारी, करुणा और प्रसन्नता के साथ कैदियों की मदद करने में तत्पर रहना चाहिए, और इस तरह से कि वे खुद को आपके प्रति बाध्य महसूस न करें।

जेनक्लिक रेहबेरी (युवाओं के लिए मार्गदर्शिका) से एक संक्षिप्त परिशिष्ट

उसके नाम में उसकी महिमा है!

कैदियों को रिसाले-ए-नूर को पढ़ने और समझने से मिलने वाली सांत्वना की बहुत आवश्यकता है , विशेष रूप से उन युवाओं को जिन्हें अपने जीवन का सर्वश्रेष्ठ समय जेल में बिताने की सजा दी गई है: उन्हें इसकी उतनी ही आवश्यकता है जितनी कि उन्हें रोटी की।

युवा वर्ग तर्क के बजाय भावनाओं से प्रेरित होता है। भावना और इच्छाएं अंधी होती हैं: वे परिणाम नहीं देखते और भविष्य के ढेरों सुखों के बजाय तत्काल सुख के एक औंस को प्राथमिकता देते हैं। वे एक मिनट की संतुष्टि या बदला लेने के लिए हत्या करते हैं, और फिर परिणामस्वरूप दर्दनाक कारावास के अनगिनत घंटे भुगतते हैं। एक महिला के साथ बलात्कार करने में बिताया गया एक घंटा, जेल के डर और बनाए गए दुश्मनों के कारण जीवन भर की खुशी को नष्ट कर सकता है।

युवा लोग कई तरह की मुसीबतों का सामना करते हैं, जिसकी वजह से वे जीवन की मिठास को सबसे कड़वे और पश्चाताप से भरे जीवन में बदल देते हैं। खास तौर पर, उत्तर में एक विशाल और शक्तिशाली राज्य अपने युवाओं के जुनून का दुरुपयोग कर रहा है और अपने तूफानों से इस सदी की नींव हिला रहा है। इसने भावनात्मक रूप से प्रेरित युवाओं के लिए ईमानदार, मासूम लोगों की खूबसूरत बेटियों और पत्नियों को वैध बना दिया है। पुरुषों और महिलाओं को सार्वजनिक स्नानघरों में एक-दूसरे के साथ घुलने-मिलने की अनुमति देकर, यह अनैतिकता को बढ़ावा देता है। यह आवारा लोगों को भी स्वतंत्र रूप से उपयोग करने और यहां तक कि अमीरों की संपत्ति को लूटने की अनुमति देता है। इस आपदा के सामने हर कोई कांपता है।

इस युग में, सभी मुस्लिम युवाओं को वीरतापूर्वक कार्य करना चाहिए और इस दोतरफा हमले का जवाब तीखी "तलवारों" से देना चाहिए, जैसे कि रिसाले-ए-नूर के "विश्वास के फल" और "युवाओं के लिए एक मार्गदर्शिका"। अन्यथा उनका भविष्य ख़तरे में पड़ जाएगा।

इस दुनिया और अगली दुनिया दोनों में उनकी खुशियाँ नष्ट हो जाएँगी, और दोनों दुनियाएँ यातना और दुख के दयनीय क्षेत्रों में बदल जाएँगी।

अगर वे अपनी ऊर्जा और जुनून का दुरुपयोग करते हैं, तो वे अपनी ज्यादतियों के कारण जेल में बंद हो जाएंगे और जब वे बूढ़े हो जाएंगे तो उन्हें कड़वे पछतावे से भर दिया जाएगा। लेकिन अगर वे कुरान की शिक्षा और इस्लामी सच्चाइयों से खुद को सुरक्षित रखते हैं, जिनमें से कुछ को रिसाले-ए-नूर में समझाया गया है, तो वे वास्तव में वीर युवा, पूर्ण मनुष्य, समृद्ध मुसलमान और, कुछ मामलों में, बाकी सभी जीवित प्राणियों पर प्रभुत्व प्राप्त करेंगे।

अगर जेल में बंद युवा लोग प्रतिदिन पाँच विहित प्रार्थनाओं पर सिर्फ़ एक घंटा बिताएँ और उन पापों को न करने के अलावा, जिन्हें करने से जेल उन्हें रोकती है, उन पापों से बचने का स्वतंत्र रूप से चुनाव करें जो अभी भी संभव हैं, और उन गलतियों के लिए ईश्वर से क्षमा माँगें जिनके कारण उन्हें जेल जाना पड़ा, तो सभी को - उनके देश, रिश्तेदारों और उनके भविष्य को - लाभ होगा। अपनी युवावस्था के दस या पंद्रह साल इस तरह गुज़ारने से, वे एक शाश्वत, शानदार युवावस्था प्राप्त करेंगे। चमत्कारी कुरान और सभी प्रकट धर्मग्रंथ इस सत्य को सबसे स्पष्ट रूप से घोषित करते हैं।

यदि युवा लोग ईश्वर की आज्ञाकारिता के सीधे मार्ग पर चलकर युवावस्था के सुखद आशीर्वाद के लिए अपना आभार प्रकट करते हैं, तो आशीर्वाद बढ़ता है और शाश्वत होने के साथ और भी अधिक आनंददायक हो जाता है। हालांकि, यदि वे कृतघ्न हैं, तो वे विपत्ति, दर्द और दुःख से घिरे रहेंगे: उनकी युवावस्था एक दुःस्वप्न की तरह हो जाएगी और फिर गायब हो जाएगी। वे बिना किसी उद्देश्य के जीवन व्यतीत करेंगे, न केवल खुद को, बल्कि अपने रिश्तेदारों, राष्ट्र और देश को भी नुकसान पहुंचाएंगे।

अगर कैदियों में से जो अन्यायपूर्ण तरीके से जेल में बंद हैं, वे रोजाना की प्रार्थना करते हैं, तो वे पाएंगे कि सलाखों के पीछे बिताया गया हर घंटा एक दिन की इबादत के बराबर है। उनकी कोठरियाँ उनके लिए एकांतवास की जगह बन जाएँगी। उन्हें पुराने ज़माने के उन धर्मपरायण लोगों के समान भी माना जा सकता है जो खुद को इबादत के लिए समर्पित करने के लिए गुफाओं में चले जाते थे।

जो लोग गरीब या बूढ़े या बीमार हैं और फिर भी विश्वास की सच्चाई जानने की कोशिश करते हैं, वे पाएंगे कि जेल में बिताया गया हर घंटा पूजा के बीस घंटों के बराबर होगा। जेल एक आराम गृह, मित्रता, प्रशिक्षण और शिक्षा का स्थान जैसा लगेगा। जेल में रहना उन्हें बाहर की तुलना में अधिक खुशी भी दे सकता है, क्योंकि वहाँ वे भ्रमित होंगे और पाप द्वारा हमला किया जाएगा। यदि वे जेल में रहते हुए शिक्षित हो जाते हैं, तो पूर्व हत्यारे या बदला लेने वाले लोग पश्चाताप करने वाले, परिपक्व और अच्छे व्यवहार वाले लोगों के रूप में रिहा होंगे जो अपने देश को लाभ पहुँचा सकते हैं। जिन लोगों ने डेनिज़ली जेल में रिसाले-ए नूर से नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त की , उन्होंने जल्दी ही यह पद प्राप्त कर लिया। इसे देखने वाले अधिकारियों ने कहा: "पंद्रह सप्ताह का ऐसा कार्यक्रम हमेशा उन्हें पंद्रह साल तक कैद करने से बेहतर होता है।"

चूंकि मृत्यु कभी गायब नहीं होती और नियत समय अज्ञात है, यह किसी भी समय आ सकती है; चूंकि कब्र को बंद नहीं किया जा सकता और लोग लगातार उसमें प्रवेश करते हैं, एक के बाद एक काफिले, एक संक्षिप्त जीवन के बाद, जो तेजी से बीत जाता है; और चूंकि कुरान में कहा गया है कि विश्वासियों को मृत्यु का अनुभव सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के रूप में होता है और विश्वास उन्हें अनन्त दंड से बचाता है, जबकि अविश्वासियों को मृत्यु का अनुभव फांसी की सजा के रूप में होता है जो उन्हें अनन्त पीड़ा और अपने प्रियजनों और अन्य सभी प्राणियों से कभी न खत्म होने वाले अलगाव की ओर ले जाती है - निश्चित रूप से, सबसे अधिक सुखी लोग वे हैं जो धैर्यपूर्वक ईश्वर को धन्यवाद देते हैं और जेल में अपने समय का लाभ उठाते हुए, कुरान की सेवा और सीधे मार्ग पर विश्वास करने के लिए आवश्यक नैतिक और धार्मिक शिक्षा का उपयोग करते हैं।

जो लोग भोग विलास के आदी हैं, उनसे मैं यही कहना चाहूँगा। मैं अब सत्तर वर्ष का हो गया हूँ। हजारों अनुभवों और प्रमाणों से मैंने यह निश्चित रूप से जान लिया है कि सच्चा भोग, शुद्ध सुख, दुःख-रहित आनन्द और खुशी केवल विश्वास और उसके सत्य के दायरे में ही मिलती है। एक सांसारिक सुख में अनेक पीड़ाएँ हैं: जैसे एक अंगूर के लिए दस थपकी देना जीवन के स्वाद को बिगाड़ देता है।

उन अभागे लोगों से जो कारावास की पीड़ा झेलते हैं, मैं यह कहना चाहूँगा। चूँकि यहाँ आपकी दुनिया शोक से भरी है और आपका जीवन कड़वा है, इसलिए जेल में बिताए अपने समय का लाभ उठाएँ ताकि आपको परलोक में शोक न करना पड़े और ताकि आपका अनंत जीवन मधुर हो सके। जिस तरह से भीषण युद्ध की परिस्थितियों में एक घंटे की निगरानी कभी-कभी पूजा के एक वर्ष के बराबर होती है, उसी तरह जेल में बिताए गए प्रत्येक घंटे की कठिनाई कई गुना बढ़ जाती है और कठिनाई को दया में बदल देती है।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा है!

मेरे साथी कैदियों और धर्म मित्रों!

मैं तुम्हें एक ऐसी सच्चाई बताता हूँ जो तुम्हें सांसारिक यातना और परलोक की यातना दोनों से बचाएगी। वह इस प्रकार है:

मान लीजिए कि किसी व्यक्ति ने किसी के भाई या उसके किसी रिश्तेदार को मार दिया है। बदला लेने से मिलने वाला एक मिनट का आनंद लाखों मिनट की परेशानी और जेल की पीड़ा का कारण बनता है। और मारे गए व्यक्ति के रिश्तेदारों द्वारा बदला लेने का डर, साथ ही खुद को दुश्मन के सामने पाकर चिंता, उनके जीवन से सारी खुशियाँ छीन लेती हैं। वे डर और गुस्से दोनों की पीड़ा झेलते हैं। इसका एक ही समाधान है, और वह है सुलह, जिसका कुरान आदेश देता है और सत्य, वास्तविकता, मानवता और मुसलमान होने की आवश्यकता और प्रोत्साहन देता है।

अगर सुलह नहीं होती है, तो दोनों पक्ष हमेशा भय और बदले की पीड़ा झेलते हैं। इसी वजह से इस्लाम कहता है: "एक मोमिन को दूसरे मोमिन से तीन दिन से ज़्यादा नाराज़ नहीं रहना चाहिए।" अगर हमारे उदाहरण में हत्या दुश्मनी या प्रतिशोध की वजह से नहीं हुई है और अगर किसी पाखंडी उपद्रवी ने झगड़े को बढ़ावा दिया है, तो जल्दी से जल्दी शांति स्थापित करना ज़रूरी है। नहीं तो छोटी-मोटी मुसीबत बड़ी हो जाती है और बढ़ती जाती है। अगर दोनों पक्ष शांति स्थापित कर लेते हैं और हत्यारा पश्चाताप करता है और मारे गए व्यक्ति के लिए लगातार प्रार्थना करता है, तो दोनों पक्षों को बहुत फ़ायदा होगा और वे बहुत कुछ हासिल करेंगे।

भाई-भाई बन जाओ। एक भाई की मृत्यु के बाद पीड़ित पक्ष को धर्म में कई भाई मिल जाएँगे। वे ईश्वरीय नियति और आदेश के प्रति समर्पित हो जाएँगे और अपने शत्रु को क्षमा कर देंगे। विशेष रूप से, चूँकि उन्होंने रिसाले -ए-नूर की शिक्षाएँ प्राप्त की हैं, इसलिए अपने लाभ और शांति के लिए, और रिसाले-ए-नूर से उनके संबंध के कारण उनके बीच उत्पन्न भाईचारे के लिए , उन्हें अपने बीच विद्यमान विद्वेष को त्याग देना चाहिए।

तुम्हें मालूम होना चाहिए कि डेनिज़ली जेल में वे सभी कैदी, जिनके बीच दुश्मनी थी, अंततः रिसाले-ए-नूर से सीखे गए सबक की बदौलत भाई बन गए । इससे अधार्मिक और अपराधी भी उन्हें बधाई देने लगे और सभी कैदियों ने राहत महसूस की। मैंने खुद देखा है कि एक आदमी की वजह से सौ आदमी यहाँ मुसीबत में फँस जाते हैं और डर के मारे बाहर खुली हवा में जाने से मना कर देते हैं। उस आदमी का ऐसा व्यवहार सरासर अत्याचार है। एक सच्चे विवेक वाला मर्दाना आस्तिक किसी छोटी-सी गलती या किसी मामूली फायदे के लिए सैकड़ों दूसरे आस्तिक को नुकसान नहीं पहुँचा सकता। अगर वे कोई गलती करते हैं और नुकसान पहुँचाते हैं, तो उन्हें तुरंत पश्चाताप करना चाहिए।

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा है!

मेरे प्यारे, वफादार भाईयों!

आज मुझे आपके कारण बेचैनी और दुःख महसूस हुआ। जब मैं अपने उन भाइयों के लिए दुःखी था जिनकी आजीविका सीमित है, तो एक शुभ स्मृति, एक सत्य और कुछ शुभ समाचारों ने मुझे सांत्वना दी। वे इस प्रकार हैं:

"तीन महीने" पाँच दिन में शुरू होंगे: तीन मुबारक महीने जो अगर इबादत से भरे हों तो वाकई पुण्य के पात्र हैं। क्योंकि अगर किसी और समय में नेक काम का सवाब दस गुना है, तो रजब के महीने में यह सौ गुना से भी ज़्यादा है, शाबान में यह तीन सौ गुना से भी ज़्यादा है और रमज़ान में यह हज़ार गुना तक बढ़ जाता है। रमज़ान में शुक्रवार को यह एक हज़ार से भी ज़्यादा होता है और शक्ति और भाग्य की रात में यह तीस हज़ार तक भी पहुँच सकता है! इसलिए, इन तीन महीनों में खर्च करना निश्चित रूप से बहुत फ़ायदेमंद है - जो व्यापार के लिए एक पवित्र बाज़ार की तरह हैं

इसके बाद, सत्य और उपासना के लोगों के लिए एक असाधारण प्रदर्शन, और विश्वासियों के लिए अस्सी साल का जीवन प्राप्त करने का साधन - इस स्कूल में

यूसुफ़ कहते हैं, "जो किसी के लाभ को दस गुना बढ़ा देता है। जो भी कष्ट सहे जाते हैं, वे शुद्ध दया हैं। जैसा कि इबादत के मामले में होता है, वैसा ही रिसाले-ए-नूर की सेवा के मामले में भी होता है, जिसका लाभ पाँच गुना बढ़ जाता है। जो लोग इस अतिथिगृह में प्रवेश करते हैं और फिर यहाँ से चले जाते हैं, वे रिसाले-ए-नूर के पाठों को अधिक लोगों तक पहुँचाने का साधन हैं। कभी-कभी एक व्यक्ति की ईमानदारी बीस लोगों के लाभ का कारण बन जाती है।

अगर रिसाले-ए-नूर के ज़रिए हासिल की गई ईमानदारी उन बदकिस्मत कैदियों तक फैलती है, जिनका स्वभाव राजनीति की ओर झुका हुआ है और जिन्हें वास्तव में रिसाले-ए-नूर में मिलने वाली तसल्ली की बहुत ज़रूरत है, तो झेली गई मुश्किलें और तकलीफ़ें कोई मायने नहीं रखतीं। आजीविका की समस्या के बारे में, चूँकि ये तीन महीने आख़िरत के लिए बाज़ार हैं, इसलिए मैं इससे सहज महसूस करने लगा, और यह समझने लगा कि त्योहार के दिन तक यहाँ रहना कई अन्य रिसाले-ए-नूर के लिए एक बड़ा उपकार है।

छात्र आपके बाहरी व्यवसाय में आपकी सहायता करेंगे।
नर्सी ने कहा

* * *

उसके नाम में उसकी महिमा सर्व-प्रसिद्ध है।

मेरे प्रिय, सत्यनिष्ठ, विश्वासयोग्य और दयालु भाइयो!

इन भयानक परिस्थितियों में, मेरे मन में यह शिकायत आई: "हमें इतना कष्ट क्यों सहना पड़ता है? इससे हमारे काम को क्या लाभ होगा?"

उत्तर इस प्रकार होना चाहिए: इस कठोर परीक्षा से गुजरना; अत्यंत संवेदनशील तराजू पर कई बार तौला जाना ताकि यह समझा जा सके कि हमारा वास्तविक स्वरूप सोना है या पीतल; हर दृष्टि से कठोर परीक्षा से गुजरना तथा तीन-चार बार अधिक सूक्ष्म छलनी से गुजरना ताकि यह स्पष्ट हो सके कि हमारी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्माएँ हमारी सेवा में भागीदार हैं या हमारे साथ छल कर रही हैं - ये सब हमारी सेवा के लिए अत्यंत आवश्यक हैं, जो विशुद्ध रूप से और केवल सत्य के नाम पर होनी चाहिए, ताकि ईश्वरीय नियति और प्रभु की कृपा इसकी अनुमति दे। क्योंकि इस तथ्य से सभी ने समझ लिया है कि हमारी सेवा इस प्रकार प्रदर्शित हुई है।

परीक्षण और परीक्षा के क्षेत्र में हठी, अन्यायी शत्रुओं के सामने जो कई बहाने बनाकर काम करते हैं कि हमारी सेवा में कोई छल, अहंकार, द्वेष, सांसारिक या व्यक्तिगत हित नहीं है: यह पूरी तरह से ईमानदार है और इसका स्रोत शुद्ध सत्य है। अगर यह छिपा रहता, तो यह कई गलत व्याख्याओं और झूठे निष्कर्षों का शिकार हो सकता था। विश्वासियों का समूह

इस पर भरोसा नहीं होता। वे सोचते: "वे हमें धोखा दे रहे होंगे," और उनमें से कुलीन वर्ग को भी संदेह होता। यह कल्पना करते हुए कि हम भी अपने आप को उसी तरह बेच रहे होंगे जैसे कुछ आध्यात्मिक पद वाले लोग जनता का विश्वास जीतने के लिए करते हैं, वे हमारी सेवा की ईमानदारी के बारे में संदेह में रहेंगे। वैसे भी, हम जो परीक्षाएँ और क्लेश झेलते हैं, उनके कारण सबसे जिद्दी और हठी लोग भी हमारी सेवा की ईमानदारी और ईमानदारी को स्वीकार करने लगे हैं। यदि आप एक कठिनाई झेलते हैं, तो आपका लाभ, ईश्वर की इच्छा से, हज़ार गुना है।

नर्सी ने कहा

पांचवी किरण

पांचवी किरण

अन्त समय में होने वाली घटनाओं से सम्बन्धित कुछ हदीसें

चालीस साल से भी अधिक समय पहले, समय के अंत के संकेतों के बारे में लगभग बीस मामलों की व्याख्या लिखी गई थी और इसे मुहाकेमत में ज़ुल-क़रनैन और गोग और मागोग की बाधा के बारे में चर्चा के लिए एक परिशिष्ट के रूप में शामिल किया गया था। [62] इसे अब एक प्रिय मित्र के लिए संपादित किया गया है, और यहाँ पाँचवीं किरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

नोट: परिचय का उद्देश्य बेहतर ढंग से समझने के लिए, परिचय के बाद के विषयों को पहले पढ़ा जाना चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

A कुरान की आयत का सूक्ष्म अर्थ अब वास्तव में, इसके संकेत पहले ही आ चुके हैं (47:18) विश्वासियों के जनसमूह के विश्वास की रक्षा करने और इसे संदेह से बचाए रखने के लिए लिखा गया था।

कुरान की रूपक आयतों की तरह, कुछ हदीसें उन घटनाओं के बारे में हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे समय के अंत में घटित होंगी। उन्हें उसी तरह से नहीं समझाया जा सकता है जैसे कि उन आयतों को जो अर्थ और विषय-वस्तु में स्पष्ट या स्पष्ट हैं; परिणामस्वरूप, हर कोई उन्हें समझ नहीं सकता। उन्हें समझाने के बजाय, उनकी व्याख्या की जाती है। आयत के अनुसार कोई भी इसकी व्याख्या नहीं जानता

62 इसका अंग्रेजी में अनुवाद किया गया और इसे रीजनिंग्स, ए की टू अंडरस्टैंडिंग द कुरान्स एलोक्वेंस, तुगरा बुक्स, न्यू जर्सी, 2008 के नाम से प्रकाशित किया गया। (ट्रांस.)

ईश्वर और जो लोग ज्ञान में दृढ़ हैं (3:7) को छोड़कर, ऐसी घटनाओं का सही अर्थ केवल तभी समझा जा सकता है जब वे घटनाएँ वास्तव में घटित हो चुकी हों; जो लोग ज्ञान में दृढ़ हैं, वे कहते हैं, "हम इस पर विश्वास करते हैं; सब कुछ हमारे प्रभु की ओर से है," और उनमें छिपी हुई सच्चाइयों को उजागर करते हैं।

परिचय

इस पाँचवीं किरण में एक परिचय और तेईस विषय हैं। परिचय में पाँच बिंदु हैं।

पहला बिंदु

चूँकि आस्था और धार्मिक जिम्मेदारी एक परीक्षा, एक परीक्षण और एक प्रतियोगिता है, जो मानव की स्वतंत्र इच्छा की सीमाओं के भीतर होती है, इसलिए उनसे संबंधित सैद्धांतिक मामले जो अस्पष्ट, गहन और सावधानीपूर्वक अध्ययन और अनुभव की आवश्यकता वाले हैं, वे स्पष्ट नहीं हो सकते। न ही वे इतने बाध्यकारी हैं कि हर किसी को लगे कि उन्हें समझना या पुष्टि करनी चाहिए। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस दुनिया के अबू बकर63 सबसे ऊँचे से ऊँचे उठ सकते हैं, जबकि अबू जहल64 सबसे नीचे से नीचे गिर सकते हैं। यदि कोई स्वतंत्र इच्छा नहीं है, तो कोई जिम्मेदारी और जवाबदेही नहीं है। यह इस बुद्धिमान उद्देश्य के कारण है कि पैगंबरों को शायद ही कभी चमत्कार करने की अनुमति दी गई थी। इसके अलावा, जिम्मेदारी के इस क्षेत्र में, दुनिया के अंत के संकेत, जिनमें से प्रत्येक को केवल उसके नियत समय पर ही पहचाना जा सकेगा, कुरान की रूपक आयतों की तरह, व्याख्या के लिए खुले हैं। एकमात्र अपवाद पैगंबर-परंपरा है जो कहती है कि सूरज पश्चिम में उगेगा। यह इतना स्पष्ट होगा कि हर कोई इसे पुष्टि करने के लिए मजबूर हो जाएगा; इसके घटित होने के साथ ही पश्चाताप का द्वार बंद हो जाएगा, तथा विश्वास के दावे और क्षमा-याचना अब स्वीकार नहीं की जाएगी। यदि ऐसा न होता, तो अबू बकर और अबू जहल इसकी पुष्टि करने में बराबर होते। यहां तक कि यीशु की वापसी, उन पर शांति हो, और यह अहसास कि वह व्यक्ति वास्तव में यीशु है, वह भी विश्वास से आने वाली अंतर्दृष्टि का विषय होगा: जब यीशु वापस आएगा, तो हर कोई इसके बारे में नहीं जान पाएगा या उसकी वापसी पर विश्वास नहीं करेगा। इसी तरह, भयावह अंजीर-

---

63 अबू बकर (मृत्यु, 634) इस्लाम अपनाने वाले पहले वयस्क और ईश्वर के सबसे करीबी साथी हैं।
संदेशवाहक। वह पहले खलीफा भी थे। (ट्र.)

64 अबू जहल, एक नाम जिसका अर्थ है अज्ञानता का पिता, वह उपाधि है जो ईश्वर के रसूल ने अमर इब्न हिशाम को अविश्वास में उनके पक्षपाती हठ और रसूल के विरोध के कारण दी थी। उन्होंने बद्र की लड़ाई में कुरैश सेना की कमान संभाली थी, जो 624 में मुसलमानों और मक्का के बहुदेववादियों के बीच हुई थी। वह इस लड़ाई में मारे गए। (ट्र.)

दज्जाल (ईसा विरोधी) और सुफियान (दज्जाल जो मुसलमानों में प्रकट होगा) जैसे लोग स्वयं को ऐसा नहीं जान पाएंगे।

दूसरा बिंदु

पैगम्बर (सल्लल्लाहू अलैहि व सल्लम) पर जो कुछ अदृश्य बातें अवतरित की गईं, उनमें से कुछ को विस्तार से बताया गया। पैगम्बर किसी भी तरह से उनमें परिवर्तन या हस्तक्षेप नहीं कर सकते थे - उदाहरण के लिए, कुरान की आयतें और हदीसें कुदसी65 जो अर्थ और विषय-वस्तु में स्पष्ट हैं।

अन्य, जैसे कि कुछ ब्रह्मांडीय घटनाओं और भविष्य की घटनाओं के बारे में परंपराएं, जो विश्वास के तत्वों में शामिल नहीं हैं, रूपक या संक्षेप में प्रकट की गईं, और उनकी विस्तृत व्याख्याएं पैगंबर की अंतर्दृष्टि और समझ से संदर्भित की गईं। अपनी वाक्पटुता का उपयोग करते हुए, हमारे पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, दृष्टांतों के माध्यम से और मानवीय जिम्मेदारी के ज्ञान के अनुरूप तरीके से इनका स्पष्टीकरण करते थे। उदाहरण के लिए, जब वह एक बार कुछ लोगों से बात कर रहे थे, तो एक गहरी गड़गड़ाहट सुनाई दी। उन्होंने कहा: "यह एक चट्टान की आवाज़ है जो सत्तर वर्षों से नरक की ओर लुढ़क रही है और अभी नरक के गड्ढे में आकर रुकी है।"66 इस अजीब व्याख्या को देने के पाँच मिनट बाद, कोई आया और बोला: "हे ईश्वर के रसूल! फलां पाखंडी मर गया है। वह सत्तर साल का था और नरक में चला गया।" इससे पैगंबर के ऊंचे, वाक्पटु शब्दों का अर्थ पता चला।

नोट: भविष्य की वे घटनाएँ जो ईमान की सच्चाईयों का हिस्सा नहीं हैं, नबी की नज़र में महत्वहीन थीं।

तीसरा बिंदु

इसमें दो सूक्ष्म मुद्दे शामिल हैं।

पहला: चूँकि कुछ हदीसें जो तुलना या रूपक के रूप में कही गई थीं, समय के साथ आम लोगों द्वारा शाब्दिक रूप से ली जाने लगी हैं, इसलिए वे वास्तविकता के अनुरूप नहीं लगती हैं। हालाँकि वे शुद्ध सत्य हैं, लेकिन ऐसा प्रतीत नहीं होता है कि वे सत्य हैं। उदाहरण के लिए, दो फ़रिश्ते जिन्हें थौर (बैल) और हुत (मछली) कहा जाता है,67 जो धरती को उसी तरह उठाते हैं जैसे कुछ अन्य फ़रिश्ते।

---

65 हदीस कुदसी एक पैगंबरी परंपरा है जो पैगंबर पर उनके अर्थ और शब्दों दोनों के साथ उतरी थी, लेकिन कुरान में शामिल नहीं है। (ट्र.)

66 मुस्लिम, "जन्ना" 31, "पाखंडी" 15; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 2:371।

67 स्पष्टीकरण के लिए, देखें द रीज़निंग, पृ. 54-56.

स्वर्गदूत जो सर्वोच्च सिंहासन धारण करते हैं, उन्हें वास्तविक विशाल बैल और वास्तविक विशाल मछली के रूप में माना जाने लगा है।

दूसरा: कुछ हदीसें सिर्फ़ मुसलमानों के बहुमत, या इस्लामिक राज्य, या खिलाफत की राजधानी को संदर्भित करती हैं, लेकिन उन्हें दुनिया के सभी लोगों को संदर्भित करने के लिए समझा गया है। हालाँकि कुछ मामलों में विशिष्ट होने के बावजूद, उन्हें सार्वभौमिक और सामान्य माना गया है। उदाहरण के लिए, यह पैगंबर से संबंधित है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो: "एक समय आएगा जब कोई भी व्यक्ति जो अल्लाह! अल्लाह! कहेगा, वह नहीं बचेगा।"68

अर्थात्, जिन स्थानों पर ईश्वर के नाम का उल्लेख किया जाता है, उन्हें बंद कर दिया जाएगा, और नमाज़ के लिए अज़ान और इकामा (सामूहिक प्रार्थना की शुरुआत की घोषणा) तुर्की भाषा में पढ़ी जाएगी।69

चौथा बिंदु

जिस प्रकार अनेक कारणों और बुद्धिमत्ता के उदाहरणों के कारण अदृश्य मामलों जैसे कि मृत्यु की नियत घड़ी को गुप्त रखा जाता है, उसी प्रकार प्रलय का दिन, जो मानवजाति और पशु जगत की मृत्यु की नियत घड़ी है और जो संसार के अंत का प्रतीक है, को भी गुप्त रखा गया है।

वास्तव में, यदि मृत्यु का नियत समय लोगों को ज्ञात होता, तो जीवन का पहला आधा भाग पूरी तरह से असावधानी में और दूसरा आधा भाग पूरी तरह से भय में बीतता, क्योंकि हर दिन मृत्यु के फाँसी की ओर एक और कदम बढ़ाया जाता। यह आशा और भय के बीच की स्थिति में रहने से उत्पन्न होने वाले बुद्धिमान और लाभकारी संतुलन को नष्ट कर देता। इसी प्रकार, यदि प्रलय का दिन, जो संसार की मृत्यु का नियत समय है, ज्ञात होता, तो प्रारंभिक और मध्य युग परलोक के विचार से केवल थोड़ा ही प्रभावित होते, जबकि अंतिम दिन घोर भय में बीतते। सांसारिक जीवन में कोई सुख या मूल्य नहीं रह जाता; न ही ईश्वर की पूजा, जो स्वेच्छा से और आशा और भय के बीच की स्थिति में की जाने वाली क्रिया है, कोई महत्व या बुद्धिमत्ता रखती। इसके अलावा, यदि संसार की मृत्यु का नियत समय प्रकट हो जाता, तो विश्वास के कुछ सत्य स्पष्ट हो जाते और सभी को उनकी पुष्टि करनी पड़ती, इस प्रकार मानवीय जिम्मेदारी और बुद्धि के रहस्य को नकार दिया जाता।

---

[68] मुस्लिम, "आस्था" 234; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 35.

69 इस परंपरा की व्याख्या इस तरह भी की गई है कि समय के अंत से ठीक पहले कोई भी ऐसा व्यक्ति नहीं बचेगा जो ईश्वर में विश्वास करता हो, और अविश्वासियों के सिर पर प्रलय का दिन आएगा। नीचे चौथा मामला देखें। (ट्र.)

विश्वास का प्रभुत्व और उद्देश्य, जो मानवीय पसंद और स्वतंत्र इच्छा के प्रयोग से अभिन्न रूप से बंधे हुए हैं।

ऐसे अनेक बुद्धिमानीपूर्ण उद्देश्यों के लिए ही अदृश्य से संबंधित मामलों को छिपाया जाता है। परिणामस्वरूप, विश्वासी अपनी मृत्यु और अपने निरंतर जीवन तथा कार्य दोनों को इस संसार और परलोक दोनों के लिए मानते हैं।

बाद में। चूंकि वे यह भी जानते हैं कि दुनिया का अंत किसी भी युग में और किसी भी समय हो सकता है, या यह कि दुनिया जारी रह सकती है, वे दोनों इस दुनिया की क्षणभंगुरता के भीतर अनन्त जीवन के लिए काम करते हैं और दुनिया को विकसित करने के लिए मेहनत करते हैं जैसे कि वे कभी मरने वाले नहीं थे।

इसके अलावा, अगर विपत्तियों का समय पहले से ही बता दिया जाता, तो लोगों को इनके पूर्वानुमान से इस तरह से तकलीफ होती जो खुद विपत्ति से भी कहीं ज़्यादा भयानक होती। इसलिए ईश्वरीय बुद्धि और दया ने उनके घटित होने के समय को छिपा दिया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि भविष्य की अधिकांश घटनाओं में बुद्धि के ये और कई अन्य उदाहरण हैं, इसलिए भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी करना आम तौर पर निषिद्ध है। इस सिद्धांत के अनादर और अवज्ञा से बचने के लिए, कि ईश्वर के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता, जिन लोगों ने ईश्वरीय अनुमति और शिक्षा के साथ अदृश्य के बारे में मानवीय ज़िम्मेदारी और विश्वास की सच्चाइयों से संबंधित समाचारों के अलावा अन्य समाचार दिए हैं, उन्होंने ऐसा केवल सांकेतिक और अप्रत्यक्ष रूप से किया है। यहां तक कि पैगम्बर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, के बारे में खुशखबरी, जो तौरात, भजन और सुसमाचार में दिखाई देती है, एक हद तक छिपी हुई और अस्पष्ट है; परिणामस्वरूप, इन शास्त्रों के कुछ अनुयायियों ने उन अंशों के अलग-अलग अर्थ लगाए हैं और पैगम्बर मुहम्मद पर विश्वास नहीं करते हैं। तथापि, चूंकि मानवीय उत्तरदायित्व की घटना में निहित बुद्धिमत्ता यह आवश्यक बनाती है कि धर्म और विश्वास के सिद्धांतों से संबंधित मामलों को बार-बार और स्पष्ट रूप से व्यक्त किया जाए, इसलिए चमत्कारिक रूप से वाक्पटु कुरान और उसका गौरवशाली संवाहक, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, परलोक के मामलों को विस्तार से बताता है, और भविष्य की सांसारिक घटनाओं को केवल संक्षेप में बताता है।

पांचवां बिंदु

चूँकि दोनों दज्जालों के समय से संबंधित चमत्कार - मसीह विरोधी जो ईसाई जगत में प्रकट होगा और सुफ़यान जो मुसलमानों के बीच प्रकट होगा - उनके संबंध में वर्णित किए गए हैं, और इसलिए इन चमत्कारों को उनके व्यक्तित्व से उत्पन्न माना जाता है, प्रासंगिक कथाएँ अस्पष्ट हो गई हैं और उनके वास्तविक अर्थ अस्पष्ट हो गए हैं।

इसका एक उदाहरण विमान और रेलगाड़ी से यात्रा करने का संकेत है।70

यह भी कहा गया है कि जब सुफियान मर जाता है, तो उसकी सेवा करने वाला शैतान
वह इस्तांबुल के ओबिलिस्क से पूरी दुनिया को यह खबर सुनाएगा।

बुल, इस प्रकार सभी को सूचित करेगा कि वह मर चुका है। कहने का तात्पर्य यह है कि यह समाचार रेडियो द्वारा प्रसारित किया जाएगा, जो कि युग का एक आश्चर्य है और शैतानों को भी छोड़ देता है
आश्चर्य में.

इसके अलावा, चूँकि मसीह विरोधी शासन की विचित्र अवस्थाएँ और भयावह गतिविधियाँ, तथा उसके द्वारा स्थापित समिति और सरकार, उसके व्यक्तित्व के सम्बन्ध में वर्णित की गई हैं, इसलिए उनका वास्तविक अर्थ अस्पष्ट हो गया है। उदाहरण के लिए, यह वर्णित किया गया है कि "वह इतना शक्तिशाली और दीर्घजीवी होगा71 कि केवल यीशु, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, ही उसे मार सकेगा; किसी और के पास शक्ति नहीं होगी।"72 अर्थात्, एक शुद्ध, श्रेष्ठ, ईश्वरीय रूप से प्रकट धर्म जो उसके मार्ग और लालची शासन को नष्ट कर देगा, यीशु के अनुयायियों के बीच प्रकट होगा, और यह वह धर्म है जो कुरान का अनुसरण करेगा और उसके साथ एक हो जाएगा जब यीशु, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, उतरेंगे और मसीह विरोधी के अधार्मिक आधिपत्य को मिटा देंगे। वास्तव में, एक मात्र कीटाणु या इन्फ्लूएंजा जैसी छोटी बीमारी भी मसीह विरोधी की मृत्यु का कारण बन सकती है।

इसके अलावा, कुछ कथावाचकों की अपनी गलत समझ और तर्क के आधार पर की गई टिप्पणियों और निष्कर्षों को कुछ हदीसों के शब्दों के साथ भ्रमित किया गया है। नतीजतन, उन्हें हदीसों का हिस्सा माना गया है, और बाद के अर्थ अस्पष्ट हो गए हैं। ऐसी हदीसों की सामग्री वास्तविकता के अनुरूप नहीं लगती है और उन्हें अलंकारिक हदीसों या कुरान की अलंकारिक आयतों की तरह व्याख्या करने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, चूँकि पहले के समय में व्यक्तिगत राय हावी थी और सामूहिक भावना या सामाजिक सामूहिकता आज की तरह विकसित नहीं थी, इसलिए समुदाय की व्यापक गुणवत्ता और बड़े पैमाने पर किए गए कार्यों का श्रेय उन व्यक्तियों को दिया जाता था जो उनका नेतृत्व करते थे। असाधारण, सार्वभौमिक विशेषताओं के योग्य और उपयुक्त होने के लिए, उन व्यक्तियों का कद बहुत बड़ा होना चाहिए और उनके पास इतनी शक्ति और ताकत होनी चाहिए जो वास्तव में संभव से सौ गुना अधिक हो; कम से कम उन्हें इस तरह से वर्णित किया गया है।

---

70 इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नाफ, 7:496-497।

71 इब्न अबी शायबा, उक्त, 7:496; अत-तबारानी, अल-मुजम अल-कबीर, 11:313।

72 मुस्लिम, "फ़ितन" 34, 110; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 59, 62; अबू दाऊद, "मलाहिम" 14.

चूंकि यह बिल्कुल भी यथार्थवादी नहीं है, इसलिए वर्णन अस्पष्ट हो जाता है, जिसके लिए व्याख्या की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, हालाँकि दो दज्जालों के कुछ अलग-अलग गुण और अवस्थाएँ हैं, लेकिन लोग यह नहीं समझ पाए हैं कि उनमें से किसका उल्लेख उन रिवायतों में किया गया है जो बिना किसी भेदभाव के उनका उल्लेख करते हैं; नतीजतन, एक को दूसरे के साथ भ्रमित किया जा सकता है। इसी तरह, महान महदी, जो समय के अंत में प्रकट होगा, के लिए जिम्मेदार अवस्थाएँ, गुण और उपलब्धियाँ, महदी के बारे में रिवायतों में पहले के महदियों का जिक्र करने वाले रिवायतों से मेल नहीं खाती हैं , और इसलिए रिवायतें अस्पष्ट हो गई हैं। इमाम अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, केवल दज्जाल (सुफ़यान) का उल्लेख करते हैं जो मुसलमानों के बीच प्रकट होगा।

परिचय यहीं समाप्त होता है। अब हम विषय पर आगे बढ़ते हैं।

फिलहाल, ईश्वरीय सहायता से, भविष्य की कुछ घटनाओं से संबंधित सैकड़ों कथाओं में से केवल तेईस की ही अत्यंत संक्षिप्त व्याख्या की जाएगी, क्योंकि उन्हें विधर्मियों द्वारा आम लोगों के विश्वासों को भ्रष्ट करने के इरादे से प्रसारित किया गया है।

विधर्मियों की धारणा के विपरीत, आस्था को कोई नुकसान न पहुँचाने के अलावा, इनमें से प्रत्येक आख्यान पैगंबर के चमत्कार को दर्शाता है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। चूँकि उनका सही अर्थ प्रदर्शित और स्पष्ट किया गया है, मैं ईश्वरीय दया की प्रार्थना करता हूँ कि प्रत्येक लोगों के विश्वास को मजबूत करने का एक महत्वपूर्ण साधन होगा और मैं अपने दयालु भगवान से मेरी गलतियों और त्रुटियों को क्षमा करने की प्रार्थना करता हूँ।

पांचवी किरण का दूसरा स्टेशन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

इस स्टेशन में तेईस मामले शामिल हैं।

पहला मामला

इसमें कहा गया है: “ अंत समय के महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक, सुफ़यान का हाथ छेदा जाएगा।”

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, इसका एक अर्थ यह है: चूँकि वह बहुत ज़्यादा फ़िज़ूलखर्च है, और फ़िज़ूलखर्ची में लिप्त है, इसलिए सूफ़ियान अपनी चीज़ों को बचा नहीं पाता और वे बरबाद हो जाती हैं। एक कहावत है: "फ़लाँ हाथ में छेद है," जिसका अर्थ है कि वह व्यक्ति बहुत फ़िज़ूलखर्च है।

इस प्रकार, हदीस यह संकेत देती है और चेतावनी देती है कि सूफ़ियान अपव्यय को प्रोत्साहित करके तीव्र लालच और महत्वाकांक्षा को भड़काएगा। मानव शोषण करके

इस संबंध में कमजोरियों को वह अपने अधीन कर लेगा। हदीस में भविष्यवाणी की गई है कि खर्चीले लोग उसके जाल में फंसकर उसके गुलाम बन जाएंगे।

दूसरा मामला

एक रिवायत में कहा गया है: “समय के अंत में एक डरावना व्यक्ति प्रकट होगा, सुबह उठेगा और उसके माथे पर लिखा होगा, 'यह एक अविश्वासी है।'”73

जबकि ईश्वर हर मामले में सबसे सही जानता है, इसका अर्थ इस प्रकार लगाया जा सकता है: सूफ़ियान एक ऐसा सिर का कपड़ा पहनेगा जो अविश्वासियों की निशानी है, और वह हर किसी को इसे पहनने के लिए मजबूर भी करेगा। हालाँकि, चूँकि वह लोगों को कानून के द्वारा इसे अपनाने के लिए मजबूर करेगा, और यह देखते हुए कि विचाराधीन सिर का कपड़ा विश्वासियों के सिर के चारों ओर सजदा करने के लिए बनाया गया है (जो सजदा करते हैं), ईश्वर से यह आशा की जाती है कि यह "मुस्लिम" हो जाएगा, ताकि जो लोग इसे अनिच्छा से पहनते हैं वे अविश्वासी न बन जाएँ।

तीसरा मामला

एक रिवायत है: "अंत काल में निरंकुश शासकों और विशेष रूप से दज्जाल के पास झूठे स्वर्ग और नर्क होंगे।"74

जबकि ज्ञान ईश्वर के पास है, एक संभावित व्याख्या इस प्रकार है: वर्णन से संकेत मिलता है कि जेल और हाई स्कूल (जहाँ लड़के और लड़कियाँ एक साथ पढ़ते हैं), जो सरकारी इमारतों के बीच हैं, (और मनोरंजन के स्थान) एक दूसरे के बगल में मौजूद होंगे - एक जन्नत के बगीचों की एक बदसूरत प्रतिकृति होगी जहाँ जन्नत के लोगों के पास शुद्ध सेवक और जीवनसाथी होंगे, और दूसरा एक कालकोठरी और यातना कक्ष होगा।

चौथा मामला

हदीस में वर्णित है कि एक समय ऐसा आएगा कि अल्लाह! अल्लाह! कहने वाला कोई नहीं बचेगा।75

जबकि ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता, इसकी व्याख्या इस प्रकार है: वे स्थान जहाँ लोग ईश्वर का आह्वान करते हैं और उनके नामों का पाठ करते हैं, धार्मिक स्कूलों (मदरसे) के साथ बंद कर दिए जाएँगे, और इस्लाम के सार्वजनिक पेशों में अल्लाह के अलावा किसी अन्य नाम का उपयोग किया जाएगा, जैसे कि अल्लाह को पुकारना।

---

73 अल-बुखारी, "तौहीद" 17; मुस्लिम, "फ़ितन" 101-103। 74 अल-बुखारी, "अंबिया" 3; मुस्लिम, "फ़ितन" 104, 109।

[75] मुस्लिम, "आस्था" 234; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 35.

प्रार्थना और इकामा (सामूहिक प्रार्थना की शुरुआत की घोषणा)। इसका मतलब यह नहीं है कि सारी मानवता पूर्ण अविश्वास में पड़ जाएगी, क्योंकि ईश्वर को नकारना ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने जितना ही तर्कहीन है। न ही यह मान लेना उचित है कि अधिकांश मानव जाति, अकेले उनमें से सभी, ईश्वर को नकार देंगे। अधिकांश अविश्वासी ईश्वर को नकारते नहीं हैं: वे केवल उसके गुणों के बारे में गलत हैं।

एक और व्याख्या यह हो सकती है: ताकि विश्वासियों को दुनिया के अंतिम विनाश के आतंक का अनुभव न हो, अंत आने से कुछ समय पहले उनकी आत्माओं को ले जाया जाएगा। फिर अविश्वासियों के सिर पर प्रलय का दिन आएगा।

पांचवां मामला

एक रिवायत है: "अंत काल में कुछ लोग, जैसे दज्जाल, ईश्वरत्व का दावा करेंगे और दूसरों को उनके सामने सजदा करने के लिए मजबूर करेंगे।"76

जबकि भगवान ही सबसे बेहतर जानते हैं, एक व्याख्या यह है: जिस तरह एक खानाबदोश सरदार जो राजा को अस्वीकार करता है, वह अपने और अन्य सरदारों के लिए उनकी शक्ति के अनुपात में राज-पद ग्रहण करता है, उसी तरह जो लोग प्रकृतिवाद और भौतिकवाद के स्कूलों का नेतृत्व करने आते हैं, वे अपने आप में अपनी शक्ति के अनुपात में एक प्रकार का आधिपत्य कल्पना करते हैं। और अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए, वे अपने लोगों को अपने और अपनी मूर्तियों के सामने श्रद्धापूर्वक झुकने के लिए मजबूर करते हैं।

छठा मामला

इसमें कहा गया है: “अंत काल में ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह में निहित भ्रष्टाचार और अव्यवस्था इतनी भयानक होगी कि कोई भी अपनी आत्मा को रोक नहीं पाएगा।”77 इसी कारण से तेरह (अब चौदह) शताब्दियों से, पैगंबर के मार्गदर्शन का अनुसरण करते हुए, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मुस्लिम समुदाय ने उस भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से ईश्वर की शरण ली है। “हम दज्जाल के भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से और अंत काल के भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से ईश्वर की शरण लेते हैं,”78 कब्र की यातनाओं से शरण लेने के बाद मुस्लिम समुदाय का नियमित आह्वान रहा है।

---

76 मुस्लिम, "फ़ितन" 112; इब्न माजा, "फ़ितन" 33.

77 इसी तरह के कथनों के लिए देखें, अबू दाऊद, "मलाहिम" 14; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 18:220–221.

78 अल-बुखारी, "अज़ान" 149; मुस्लिम, "मसाजिद" 129.

जबकि ईश्वर हर मामले में सबसे सही जानता है, इस कथन की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: समय के अंत में भ्रष्टाचार आत्माओं को आकर्षित करेगा और उन्हें मोहित करेगा। लोग स्वेच्छा से, बल्कि उत्सुकता से इसमें लिप्त होंगे। उदाहरण के लिए, रूस में, पुरुष और महिलाएँ सार्वजनिक स्नानघरों में एक साथ नग्न स्नान करते हैं। और चूँकि महिलाओं में अपनी सुंदरता दिखाने की एक मजबूत प्रवृत्ति होती है, इसलिए वे स्वेच्छा से खुद को इस तरह के भ्रष्टाचार में डालती हैं और भटक जाती हैं। जो पुरुष सुंदरता के प्रति आसक्त होते हैं, वे अपनी ही शारीरिक आत्माओं से हार जाते हैं और नशे में चूर होकर आग में गिर जाते हैं और जल जाते हैं। उस समय के आकर्षक मनोरंजन, गंभीर पाप और नवाचार, जैसे कि नृत्य और फिल्में, इन शारीरिक आत्माओं को पतंगों की तरह अपने चारों ओर खींचते हैं, उन्हें नशे में डालते हैं। लेकिन अगर यह पूरी तरह से जबरदस्ती से होता है, तो इच्छाशक्ति नकार दी जाती है और इसे पाप नहीं माना जाता है।

सातवां मामला

एक रिवायत है: " सुफ़यान एक प्रख्यात विद्वान होगा, और वह अपनी विद्वत्ता के कारण गुमराही में पड़ जाएगा। बहुत से अन्य विद्वान उसका अनुसरण करेंगे।"79

जब तक ज्ञान ईश्वर के पास है, तब तक व्याख्या यह है कि यद्यपि राजाओं के विपरीत उसके पास सत्ता, जाति या समुदाय का समर्थन, साहस और धन जैसे प्रभुता के साधन नहीं हैं, फिर भी सूफ़ियान अपनी चतुराई, कुशल षड्यंत्रों और राजनीतिक कौशल के माध्यम से अपना स्थान प्राप्त करेगा; अपनी बुद्धि से वह कई अन्य विद्वानों के मन को मोहित कर लेगा, जिससे वे उसके विचारों और कार्यों की पुष्टि और समर्थन करेंगे। वह अनेक शिक्षकों को अपना समर्थक बना लेगा और धार्मिक शिक्षा से रहित शिक्षा प्रणाली स्थापित करने का पुरजोर प्रयास करेगा।

आठवां मामला

रिवायतों में बताया गया है कि दज्जाल की भयंकर भ्रष्टता और अव्यवस्था मुसलमानों में होगी, यही कारण है कि सम्पूर्ण मुस्लिम समुदाय ने इससे बचने के लिए ईश्वर की शरण ली है।80

जबकि अल्लाह के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता, एक व्याख्या इस प्रकार है: मुसलमानों में जो दज्जाल प्रकट होगा वह अलग है। वास्तव में, इमाम की तरह

---

79 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:216; इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, 7:491.

80 अल-बुखारी, "अज़ान" 149; मुस्लिम, "मसाजिद" 129.

अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, कुछ कठोर विद्वानों ने राय दी है कि 81 वह मुसलमानों के बीच प्रकट होगा कि मुसलमानों का दज्जाल सुफियान है।

मुसलमान और धोखे से अपना काम अंजाम देंगे। काफ़िरों का बड़ा दज्जाल अलग है। जो अवज्ञा के कारण मारे जाते हैं

महान दज्जाल की निरंकुश शक्ति और अत्याचार के आगे झुकने वाले लोग शहीद हो जाते हैं, जबकि जो लोग अनिच्छा से आज्ञापालन करते हैं वे न तो अविश्वासी हैं और न ही पापी।

नौवां मामला

कथाओं में, सूफ़ियान से जुड़ी घटनाओं और महत्वपूर्ण भविष्य की घटनाओं को दमिश्क और अरब के क्षेत्र में घटित होते हुए दर्शाया गया है।82

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, एक व्याख्या यह है: चूंकि इस्लाम के शुरुआती दौर में खिलाफत के केंद्र इराक, दमिश्क और मदीना में थे, इसलिए कथावाचकों ने इन घटनाओं की व्याख्या इस्लामी सरकार के केंद्र के करीब होने के रूप में की, जैसे कि यह हमेशा ऐसा ही रहने वाला था, और उन्होंने अलेप्पो और दमिश्क का उल्लेख किया। उन्होंने हदीस की संक्षिप्त भविष्यवाणियों में अपनी व्याख्याएँ जोड़ीं ।

दसवां मामला

कथाओं में उन आकृतियों की असाधारण शक्ति का उल्लेख है जो समय के अंत में प्रकट होंगी।83

जबकि ज्ञान ईश्वर के पास है, इसकी व्याख्या यह है: वे उस विशाल सामूहिक व्यक्तित्व का संकेत हैं जिसका प्रतिनिधित्व वे आकृतियाँ करती हैं। एक बार, रूस को हराने वाले जापानी कमांडर-इन-चीफ को एक तस्वीर में प्रशांत महासागर में एक पैर और पोर्ट आर्थर के किले में दूसरे पैर के साथ दिखाया गया था। सामूहिक व्यक्तित्व की विशालता उस व्यक्ति में दर्शाई गई है जो इसका प्रतिनिधित्व करता है, और उसके चित्रों या उसकी याद में बनाई गई विशाल मूर्तियों में। जहाँ तक उनकी असाधारण विशाल शक्ति का सवाल है, चूँकि उनके द्वारा किए जाने वाले अधिकांश कार्य विनाशकारी और पशु तृष्णा से संबंधित हैं, इसलिए उनके पास असाधारण शक्ति प्रतीत होती है। क्योंकि विनाश आसान है: एक माचिस एक गाँव को जला सकती है। जहाँ तक पशु तृष्णा का सवाल है, चूँकि वे कामुक आत्माओं को मोहित करते हैं, इसलिए उनकी व्यापक रूप से तलाश की जाती है।

---

81 नुऐम इब्न हम्माद, फ़ितन, 1:246; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 4:547.

82 इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, 7:496; अद-दयालामी, अल-मुस्नद, 2:237.

83 इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, 7:496; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 11:313।

ग्यारहवाँ मामला

एक कथन है, जिसमें कहा गया है: "समय के अंत में एक आदमी चालीस महिलाओं की देखभाल करेगा।"84

यद्यपि परमेश्वर ही सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है, फिर भी इसकी व्याख्या दो तरीकों से की जा सकती है।

सबसे पहले, उस समय वैध विवाह कम हो जाएगा या, जैसा कि साम्यवादी रूस में हुआ था, वह लगभग गायब हो जाएगा। जो एक महिला से बंधन से भाग जाएगा, वह स्वतंत्र महसूस करेगा, और चालीस अभागी महिलाओं का चरवाहा बन जाएगा।

दूसरा, यह इस तथ्य की ओर इशारा करता है कि भ्रष्टाचार और अव्यवस्था के इस समय में, अधिकांश पुरुष युद्धों में मारे जा चुके होंगे, और किसी कारण से पैदा होने वाले अधिकांश बच्चे लड़कियाँ होंगी। इसके अलावा, महिलाओं को मिलने वाली पूर्ण स्वतंत्रता उनकी वासना को इतना भड़का देगी कि वे प्रजनन के मामले में अपने पुरुषों पर श्रेष्ठता प्राप्त कर लेंगी। चूँकि इसका परिणाम यह होगा कि वे अपने बच्चों को अपने जैसा बना लेंगी, इसलिए ईश्वरीय निर्णय के माध्यम से लड़कियाँ अधिक संख्या में होंगी।

बारहवाँ मामला

रिवायतों में कहा गया है: " दज्जाल का पहला दिन एक वर्ष होगा, उसका दूसरा दिन एक महीना होगा, उसका तीसरा दिन एक सप्ताह होगा, और उसका चौथा दिन एक दिन होगा।"85

जबकि ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता, इसकी दो तरह से व्याख्या की जा सकती है

तौर तरीकों:

पहली व्याख्या: यह इस संभावना की ओर इशारा करता है कि महान दज्जाल उत्तरी ध्रुव के पास या उत्तर की ओर दिखाई देगा। उत्तरी ध्रुव के करीब पूरा साल एक दिन और एक रात का होता है। अगर कोई गर्मियों में ट्रेन से दक्षिण की ओर एक दिन की यात्रा करता है, तो वह ऐसे क्षेत्र में आता है जहाँ एक महीने तक सूरज नहीं डूबता। अगर वे कार से दक्षिण की ओर एक दिन और आगे बढ़ते हैं, तो सूरज पूरे एक हफ्ते तक दिखाई देता है। जब मैं रूस में युद्ध बंदी था, तो मैं इस क्षेत्र के करीब था। इसका मतलब है कि कथन चमत्कारिक रूप से भविष्यवाणी करता है कि महान दज्जाल उत्तर से दक्षिण की ओर हमला करेगा।

दूसरी व्याख्या: महान दज्जाल और मुसलमानों में आने वाले दज्जाल दोनों ही निरंकुशता के तीन दौर से गुज़रेंगे। अपने पहले दिन, यानी अपनी हुकूमत के पहले दौर में, वे इतने बड़े काम करेंगे कि आम तौर पर तीन सौ सालों में भी नहीं हो सकते।

अपने दूसरे दिन, अर्थात् अपने शासन की दूसरी अवधि में, वे यह कार्य करेंगे

---

84 अल-बुखारी, "ज़काह" 9; मुस्लिम, "ज़काह" 59.

85 मुस्लिम, "फ़ितन" 110; एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 59; अबू दाऊद, "मलाहिम" 14.

ऐसे काम जो सामान्य रूप से तीस साल में नहीं किए जा सकते। अपने तीसरे दिन या अवधि में, वे जो बदलाव करेंगे, वे सामान्य परिस्थितियों में दस साल में नहीं किए जा सकते। हालाँकि, अपने चौथे दिन या अवधि में, वे सामान्य शासकों की तरह होंगे, कोई महत्वपूर्ण काम नहीं करेंगे और केवल यथास्थिति बनाए रखने की कोशिश करेंगे। इस बारे में पैगंबर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने हमें बड़ी वाक्पटुता से सूचित किया है।

तेरहवां मामला

एक निश्चित, ठोस कथन है जो कहता है: "यीशु, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, महान दज्जाल को मार देगा।"86

यद्यपि ज्ञान ईश्वर के पास है, फिर भी इस परम्परा के दो पहलू हैं:

पहला पहलू: यह केवल एक अद्भुत व्यक्ति ही हो सकता है जिसके पास चमत्कारों की शक्ति हो और सभी लोगों की स्वीकृति हो जो भयानक दज्जाल को मार सकता है और उसके मार्ग को बदल सकता है, जो चमत्कारों के माध्यम से खुद को सुरक्षित रखेगा जो धीरे-धीरे उसे उसके अहंकार और इनकार के कारण विनाश की ओर ले जाएगा - जादू, सम्मोहन शक्ति, आध्यात्मिकता और हर किसी को अपने जादू के अधीन करने की क्षमता जैसे चमत्कार। और इस प्रकार वह व्यक्ति जो उसे हराएगा वह यीशु होगा, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, अधिकांश मानव जाति का पैगंबर, जिसका अधिकांश मिशन महान दज्जाल की गतिविधियों से संबंधित होगा।

दूसरा पहलू: जिस तरह महान दज्जाल को ईसा की "तलवार" से मारा जाएगा, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, यह ईसा के सच्चे धर्मपरायण अनुयायी ही हैं जो भौतिकवाद और अधर्म के विशाल सामूहिक व्यक्तित्व को मार देंगे जिसे दज्जाल स्थापित करेगा। ईसा के सच्चे धर्मपरायण अनुयायी सच्ची ईसाईयत के सार को इस्लाम के सार के साथ मिला देंगे और अपनी संयुक्त शक्ति से दज्जाल को नष्ट कर देंगे , वास्तव में उसे मार देंगे। कथन: "ईसा आएंगे और अनिवार्य प्रार्थनाओं में महदी का अनुसरण करेंगे ,"87 इस एकता और कुरान की संप्रभुता और उसके पालन की ओर इशारा करता है।

चौदहवाँ मामला

एक रिवायत में कहा गया है: “ दज्जाल को यहूदियों से महत्वपूर्ण शक्ति प्राप्त होगी।
यहूदियों में से बहुत से लोग स्वेच्छा से उसका अनुसरण करेंगे।”88

---

86 मुस्लिम, "फ़ितन" 110; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 59, 62; अबू दाऊद, "मलाहिम" 14.

87 मुस्लिम, "आस्था" 247; अहमद इब्न हनबल, अल-मुस्नद, 3:345, 367।

88 मुस्लिम, "फ़ितन" 33, 124; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:224.

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, हम कह सकते हैं कि इस कथन में जो भविष्यवाणी की गई है वह रूस में आंशिक रूप से पहले ही घटित हो चुकी है। यहूदी, जिन्हें हर राज्य द्वारा सताया गया था, बड़ी संख्या में जर्मनी में एकत्र हुए, और अपना बदला लेने के लिए, क्रांतिकारी कम्युनिस्ट समिति की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ट्रॉट्स्की, एक सबसे भयानक व्यक्ति, ने रूसी सेना का नेतृत्व संभाला, और फिर लेनिन के बाद सरकार, जो साम्यवाद के प्रसार में अग्रणी प्रकाश था। एक अर्थ में, उन्होंने रूसी विरासत को आग लगा दी जो एक हजार वर्षों से हासिल की गई थी। यह महान दज्जाल की समिति और उसके कुछ कार्यों का प्रतिनिधित्व करता है। उन्होंने अन्य देशों में भी इसी तरह की उथल-पुथल मचाई है, और बहुत सारी परेशानियाँ पैदा की हैं।

पंद्रहवां मामला

गोग और मागोग से जुड़ी घटनाओं का कुरान में संक्षिप्त रूप से उल्लेख किया गया है (18:98-99; 21:96), और कुछ पैगंबरी परंपराओं में उनके बारे में कुछ विवरण हैं।[89] परंपराओं में विवरण कुरान के संक्षिप्त विवरणों की तरह स्पष्ट नहीं हैं जो अर्थ और सामग्री में स्पष्ट हैं। नतीजतन, उन्हें व्याख्या की आवश्यकता होती है; वास्तव में, उन्हें टिप्पणी की आवश्यकता होती है क्योंकि कथाकारों की अपनी व्याख्याएँ ग्रंथों के साथ मिल गई हैं।

जबकि ईश्वर के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता, गोग और मागोग से जुड़ी घटनाओं की एक व्याख्या इस प्रकार है। एशिया के पूर्व या उत्तर-पूर्व में कुछ हमलावर जनजातियाँ, जिन्हें कुरान की स्वर्गीय भाषा में " याजूज और माजूज (गोग और मागोग)" कहा जाता है, कुछ अन्य जनजातियों के साथ मिलकर एशिया और यूरोप पर कई बार कब्ज़ा कर चुकी हैं। संबंधित कथन इस तथ्य की ओर इशारा करते हैं कि वे भविष्य में दुनिया में बड़ी अराजकता भी पैदा करेंगे। वास्तव में, वर्तमान समय में भी, साम्यवाद से पैदा हुए अनार-चिस्टों की महत्वपूर्ण संख्या उनके बीच दिखाई देती है।

समाजवाद फ्रांसीसी क्रांति द्वारा लगाए गए स्वतंत्रतावाद के बीज से उभरा। कुछ पवित्र मूल्यों को नष्ट करते हुए, समाजवाद द्वारा विकसित विचार बोल्शेविज्म में बदल गए। और क्योंकि बोल्शेविज्म ने और भी पवित्र नैतिक, आध्यात्मिक और मानवीय मूल्यों को भ्रष्ट कर दिया, इसलिए इसके द्वारा बोए गए बीज अनिवार्य रूप से अराजकता पैदा करेंगे, जो किसी भी सीमा या प्रतिबंध को नहीं पहचानती। क्योंकि अगर सम्मान और करुणा मानव हृदय को छोड़ देते हैं, तो बुद्धिमत्ता और चतुराई ऐसे दिल वाले लोगों को क्रूर जानवरों में बदल देती है: वे कर सकते हैं

[89] मुस्लिम, "फ़ितन" 1-3, "अश्रतुस-सा'ह" 1, "दज्जाल" 11; एट-तिर्मिधि, "फ़ितन" 23, 59।

अब राजनीति के माध्यम से शासन नहीं किया जा सकेगा। अराजकता के विकास के लिए सबसे उपयुक्त भूमि वे उत्पीड़ित, भीड़भाड़ वाले लुटेरे कबीले होंगे जो सभ्यता और शासन दोनों के मामले में पिछड़े हुए हैं।

इस विवरण में फिट होने वाले लोग कुछ खास जनजातियाँ हैं जिन्होंने चीन की महान दीवार का निर्माण करवाया, जो दुनिया के सात अजूबों में से एक है। गोग और मागोग के बारे में कुरान के संक्षिप्त कथनों की व्याख्या करते हुए, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने चमत्कारिक और सटीक रूप से उनके उद्भव की भविष्यवाणी की।

सोलहवाँ मामला

यीशु द्वारा दज्जाल को मारने के सम्बन्ध में एक वर्णन में कहा गया है कि दज्जाल का आकार बहुत बड़ा होगा - वह एक मीनार से भी ऊँचा होगा, जबकि यीशु - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - उसकी तुलना में बहुत छोटे होंगे।90

जबकि ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता, एक व्याख्या यह है: यह इस तथ्य की ओर संकेत है कि नायकों का आध्यात्मिक समुदाय जो विश्वास के प्रकाश के माध्यम से यीशु को पहचान लेगा और उसका अनुसरण करेगा, वह दज्जाल की शक्तिशाली वैज्ञानिक और सैन्य सेनाओं की तुलना में संख्या में बहुत कम होगा।

सत्रहवाँ मामला

एक रिवायत में कहा गया है: "जिस दिन दज्जाल प्रकट होगा, सारी दुनिया सुन लेगी।"91
वह चालीस दिनों में दुनिया भर की यात्रा करेगा और एक असाधारण गधा प्राप्त करेगा।”92

जबकि अल्लाह ही सबसे बेहतर जानता है, बशर्ते कि ऐसी कहानियाँ पूरी तरह से प्रामाणिक हों, वे चमत्कारिक ढंग से भविष्यवाणी करते हैं कि दज्जाल के समय , संचार और परिवहन के साधन इतने उन्नत हो चुके होंगे कि एक घटना एक दिन में पूरी दुनिया को सुनाई देगी। इसकी घोषणा रेडियो पर की जाएगी और इसे पूर्व और पश्चिम में सुना जाएगा, और सभी अखबारों में इसके बारे में पढ़ा जाएगा। एक आदमी चालीस दिनों में पूरी दुनिया की यात्रा करेगा और सात महाद्वीपों और असंख्य देशों को देखेगा। ये कहानियाँ

इस प्रकार उन्होंने टेलीग्राफ, टेलीफोन, रेडियो, रेलगाड़ियों और हवाई जहाजों के बारे में उनके प्रकट होने से कई शताब्दियों पहले ही चमत्कारिक रूप से भविष्यवाणी कर दी थी।

इसके अलावा, दज्जाल को दज्जाल की उपाधि से नहीं , बल्कि एक निरंकुश सम्राट के रूप में जाना जाएगा। और वह भूमि पर कब्ज़ा करने के लिए नहीं बल्कि लोगों को परेशान करने के लिए यात्रा करेगा।

---

90 इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, 7:496; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 11:313।

91 अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 4:573.

92 इब्न अबी शायबा, अल-मुसन्नफ़, 7:496; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 11:313।

भ्रष्टाचार और अव्यवस्था और लोगों को गुमराह करने के लिए। उसका वाहन या गधा या तो एक रेलगाड़ी होगी - जिसका एक कान या सिर एक नारकीय अग्निकुंड है, और दूसरा कान एक झूठा स्वर्ग है, जो खूबसूरती से सजाया और सुसज्जित है; वह अपने दुश्मनों को उसके ज्वलंत सिर पर और अपने दोस्तों को दावत के सिर पर भेजेगा93 - या एक भयानक ऑटोमोबाइल, या हवाई जहाज, या... (चुप्पी!)

अठारहवाँ मामला

एक रिवायत में कहा गया है: "यदि मेरी क़ौम सीधी राह पर चलती रही, तो उसके पास एक दिन होगा।" यानी, आयत के अनुसार, एक दिन - जिसकी माप तुम्हारे हिसाब से एक हज़ार साल है (32:5), वह हज़ार साल तक प्रभुत्व और वैभव रखेगा। "यदि वह सीधी राह पर नहीं चलती, तो उसके पास आधा दिन होगा।"94 यानी, वह केवल पाँच सौ साल तक प्रभुत्व और विजय प्राप्त करेगी।

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, यह कथन दुनिया के अंत की खबर नहीं देता है, बल्कि इस्लाम के विजयी शासन और खलीफा के शासन की खबर देता है। यह चमत्कारी भविष्यवाणी सच साबित हुई। क्योंकि अब्बासिद खलीफा के अंत में इसके शासक अभिजात वर्ग ने अपना रास्ता खो दिया था, इसलिए खलीफा (अरब मुसलमानों द्वारा प्रतिनिधित्व) पाँच सौ साल से अधिक नहीं चला। लेकिन चूँकि आम तौर पर मुस्लिम समुदाय सीधे रास्ते से नहीं भटका, इसलिए ओटोमन खलीफा इसकी सहायता के लिए आया और 20वीं सदी की शुरुआत तक इसकी सरकार की सेवा की। हालाँकि, चूँकि ओटोमन राजनेता राज्य के बाद के दौर में अपनी दिशा बनाए रखने में असमर्थ थे, इसलिए अपने सही अर्थों में, खलीफा उनके ज़रिए केवल पाँच सौ साल ही जीवित रह सका। अपने अंत के साथ, ओटोमन राज्य ने हदीस की चमत्कारी भविष्यवाणी की पुष्टि की।

उन्नीसवाँ मामला

महदी के बारे में अलग-अलग कहानियाँ हैं , अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, जो अंत समय की निशानियों में से एक हैं और जो पैगंबर के परिवार से होंगे। वास्तव में, कुछ विद्वानों और संतों ने यह राय व्यक्त की है कि वह पहले ही प्रकट हो चुके हैं।

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है कि क्या सही है, इन विभिन्न कथाओं की एक व्याख्या यह है: महान महदी के पास कई कार्य होंगे। वह अपने साथ बहुत से काम लेकर जाएगा।

---

93 अल-बुखारी, "अंबिया" 3; मुस्लिम, "फ़ितन" 104, 109।

94 अबू दाऊद, "मलाहिम" 18; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:170।

राजनीति, धार्मिक जीवन और सरकार के क्षेत्र में अपने कर्तव्यों का पालन करेंगे और जीवन के कई अलग-अलग क्षेत्रों में ईश्वर की खातिर प्रयास करेंगे। इसी तरह, चूंकि निराशा के समय में हर सदी को ईश्वरीय दया के माध्यम से मनोबल को मजबूत करने के लिए एक तरह के महदी की आवश्यकता होती है , इसलिए हर युग में, या शायद हर सदी में पैगंबर के वंशजों में से एक तरह का महदी प्रकट हुआ है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने पूर्वजों के कानून को संरक्षित करने और उनकी सुन्नत को पुनर्जीवित करने के लिए। उदाहरण के लिए, सरकार के क्षेत्र में अब्बासिद खलीफा अल-महदी95 की तरह, और धार्मिक जीवन के क्षेत्र में गौथुल-आज़म अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, शाह नक्शबंद, चार आध्यात्मिक ध्रुव96 और बारह इमाम97 की तरह , कई महदी जैसे व्यक्ति प्रकट हुए हैं और उन्होंने महान महदी के कुछ कार्यों को पूरा किया है। चूंकि पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने इन और इसी तरह के अन्य व्यक्तियों और उनके मिशनों की ओर ध्यान आकर्षित किया, इसलिए महदी के बारे में आख्यानों में वृद्धि हुई और विभिन्न भिन्न रूप धारण कर लिए। इस कारण से, कुछ सत्यवादी कहते हैं कि महदी

पहले ही प्रकट हो चुका है।

दुनिया में कोई भी परिवार इतनी एकजुटता में नहीं है, कोई भी जनजाति इतनी सहमति में नहीं है, कोई भी समुदाय या समाज इतना प्रबुद्ध नहीं है, जितना कि पैगम्बर के परिवार का जनजाति, समुदाय और समाज है।

पैगम्बर के परिवार ने सैकड़ों पवित्र नायकों को जन्म दिया है और मुस्लिम समुदाय में हजारों आध्यात्मिक नेताओं को जन्म दिया है, और कुरान की सच्चाई के जीवित सार और इस्लाम के विश्वास और सम्मान के प्रकाश के साथ पोषित और परिपूर्ण किया गया है। इसलिए यह पूरी तरह से उचित है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के शरीयत और सुन्ना को पुनर्जीवित करके और समय के अंत में कुरान की सच्चाई को घोषित करके और उन्हें अमल में लाकर, उन्हें दुनिया के सामने महान महदी , उनके कॉमरेड के पूर्ण न्याय और सच्चाई को प्रदर्शित करना चाहिए।

---

[95] खलीफा मुहम्मद अल-महदी (744-785) प्रमुख अब्बासिद खलीफाओं में से एक थे। वह लगभग दस वर्षों तक शांति और समृद्धि के साथ विशाल मुस्लिम राज्य पर शासन करने में सक्षम थे। (ट्र.)

[96] यह आम तौर पर स्वीकार किया जाता है कि चार आध्यात्मिक ध्रुव अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, सैय्यद अह-मद अर-रुफई, सैय्यद अहमद अल-बदावी और सैय्यद इब्राहिम अद-दसुकी हैं। रुफैया सूफी संप्रदाय के संस्थापक सैय्यद अहमद इब्न अली इब्न याह्या अर-रुफई (1120-1184) इस्लाम के सबसे प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित संतों में से एक हैं। सैय्यद अहमद अल-बदावी (1198-1275) इस्लाम के इतिहास में एक और प्रमुख संत थे। बदाविया सूफी संप्रदाय के संस्थापक, उनका जन्म मोरक्को के फ़ेज़ में हुआ था और उनकी मृत्यु मिस्र के तांता में हुई थी। सैय्यद इब्राहिम अद-दसुकी (1235-1277) मिस्र में रहते थे। एक महान संत होने के अलावा, वे धार्मिक विज्ञान में भी पारंगत थे। (ट्र.)

97 बारह इमाम कानून के बारह स्कूलों के संस्थापक हैं, जिनमें इमाम अबू हन-इफ़ा, इमाम अश-सफ़ी, इमाम मालिक इब्न अनस और इमाम अहमद इब्न हंबल शामिल हैं। (ट्र.)

यह एक अपरिहार्य आवश्यकता है, जो मानव सामाजिक जीवन के सिद्धांतों द्वारा अपेक्षित है।

बीसवाँ मामला

यह सूर्य के पश्चिम में उदय होने और धरती से एक जीवित प्राणी के उभरने से संबंधित है जिसे दब्बतुल-अर्द या "पृथ्वी का जानवर" कहा जाता है।99

पश्चिम में उगता हुआ सूरज दुनिया के अंत का एक स्पष्ट संकेत होगा, और क्योंकि यह एक स्पष्ट स्वर्गीय घटना होगी, यह पश्चाताप के द्वार के बंद होने का संकेत होगा, क्योंकि पश्चाताप स्वतंत्र इच्छा और तर्क का कार्य है। इसलिए, इस कथन का अर्थ स्पष्ट है और इसे किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, हम पश्चिम में उगते सूरज के स्पष्ट कारण के बारे में निम्नलिखित टिप्पणियाँ जोड़ सकते हैं:

जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, कुरान, जो वास्तव में पृथ्वी की बुद्धि है, समय के अंत में उसके सिर से गायब हो जाएगी और परिणामस्वरूप, पृथ्वी पागल हो जाएगी। ईश्वर की अनुमति से, यह किसी अन्य ग्रह से टकराएगी और इसका चक्कर उलट जाएगा। ईश्वरीय इच्छा से, पश्चिम से पूर्व की ओर इसकी यात्रा पूर्व से पश्चिम की ओर उलट जाएगी, और सूर्य पश्चिम में उगना शुरू हो जाएगा। वास्तव में, यदि कुरान का गुरुत्वाकर्षण, जो ईश्वर की दृढ़ रस्सी है,

जो पृथ्वी को सूर्य से और धरती को ईश्वरीय सर्वोच्च सिंहासन से बांधता है, टूट जाता है, तो पृथ्वी को बांधे रखने वाला बंधन ढीला पड़ जाएगा। परिणामस्वरूप पृथ्वी चक्कर खाकर पागल हो जाएगी: अपनी सामान्य गति के उलट होने के कारण, सूर्य पश्चिम में उदय होगा। किसी अन्य ग्रह से टकराने के कारण, ईश्वरीय आदेश पर प्रलय का दिन शुरू हो जाएगा।

जहाँ तक दब्बतुल-अर्द का सवाल है, उसके अस्तित्व का संकेत कुरान में बहुत ही संक्षिप्त रूप से दिया गया है।100 अन्य मामलों की तरह, इस समय मुझे इसके बारे में विस्तृत जानकारी नहीं है। मैं केवल इतना कह सकता हूँ: जबकि ईश्वर के अलावा कोई भी अदृश्य को नहीं जानता, टिड्डियों और

पिस्सुओं ने पृथ्वी पर आक्रमण किया।

फिरौन के लोग,101 जबकि कुछ अज्ञात पक्षियों के झुंड ' हम ख़रीदते हैं-

98 अल-बुखारी, "तफ़सीरु सूरा 6" 9; मुस्लिम, "ईमान" 157.

99 मुस्लिम, "फ़ितन" 39-40; एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 21।

100 जब उनके विषय में जो बात कही गई है उसके पूरा होने का समय आएगा तो हम उनके लिए धरती से एक जीवधारी उत्पन्न करेंगे जो उनसे बातें करेगा। निश्चय ही लोग हमारी आयतों और आयतों पर ईमान नहीं लाएँगे। (27:82)

101 अतः हमने उनपर बाढ़ें और टिड्डियाँ और कीड़े और मेंढक और ख़ून बरसाए, ये सब एक के बाद एक स्पष्ट निशानियाँ थीं, फिर भी वे अहंकारी बने रहे और वे अपराधी लोग थे, जो पाप करने में लगे हुए थे (7:133)।

बिया ने अब्राहा के लोगों पर सज़ा बरसाई, जो काबा को नष्ट करने की कोशिश कर रहे थे।102 इसी तरह, जो लोग दज्जाल के भ्रष्टाचार में फंस गए हैं, ईश्वर के खिलाफ़ विद्रोह करते हैं और ईश्वरीय सीमाओं का उल्लंघन करते हैं, और जो गोग और मागोग की अराजकता के माध्यम से भ्रष्टाचार और बर्बरता पर उतरते हैं, जानबूझकर और स्वेच्छा से अधर्म, अविश्वास और कृतघ्नता में पड़ जाते हैं, उन्हें होश में लाने के लिए, एक जानवर धरती से प्रकट होगा और उनका सामना करेगा और उनका सफाया कर देगा। हालाँकि ईश्वर सबसे बेहतर जानता है, वह जानवर एक प्रकार का जानवर है। क्योंकि भले ही वह एक विशाल प्राणी हो, लेकिन ऐसा संभव नहीं है कि एक ही जानवर एक ही समय में हर जगह मौजूद हो। इसका मतलब है कि यह वास्तव में जानवरों की एक भयानक प्रजाति होगी। जैसा कि आयत से संकेत मिलता है ... सिवाय इसके कि धरती पर रेंगने वाला एक जीव उसकी [सुलैमान की] लाठी को कुतर रहा था (जब तक कि वह टूट न जाए) (34:14), यह हो सकता है कि वह जानवर एक तरह की दीमक की तरह हो जो मनुष्यों के शरीर के हर हिस्से में घुसकर, उनके दांतों से लेकर उनके नाखूनों तक, उनकी हड्डियों को ऐसे कुतरती है जैसे लकड़ी कुतरती हो। विश्वासियों के विश्वास के आशीर्वाद के कारण इससे बचने और उनके द्वारा बुराइयों और दुर्व्यवहारों से दूर रहने के संदर्भ में, आयत उस जीव को विश्वास के संबंध में बोलती है।

हे हमारे प्रभु, यदि हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोषी न मानना (2:286)।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

पिछले बीस मामलों के अतिरिक्त तीन संक्षिप्त मामले

पहला मामला

प्रश्न: रिवायतों में पैगम्बर ईसा (उन पर शांति हो) और दोनों दज्जालों को "मसीहा" कहा गया है;103 सभी रिवायतों में कहा गया है: "हम मसीहा एंटीक्रिस्ट (अल-मसीहुद-दज्जाल) के भ्रष्टाचार और अव्यवस्था से ईश्वर की शरण लेते हैं !"104 इसका क्या मतलब और बुद्धिमत्ता है?

---

102 क्या तुमने सोचा कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ कैसा व्यवहार किया? क्या उसने उनकी बुरी चालों को व्यर्थ नहीं कर दिया? उसने उन पर पक्षियों के झुंड उतारे, जो धरती में अज्ञात थे, और उन्हें पकी हुई मिट्टी के पत्थरों से मारते रहे (जो उनके लिए दण्ड का प्रतीक था), फिर उसने उन्हें खाए हुए और रौंदे हुए अनाज के खेत के समान कर दिया (105:1-5)।

103 अल-बुखारी, "अंबिया" 48; मुस्लिम, "विश्वास" 273-275। 104 अल-बुखारी, "अज़ान"
149; मुस्लिम, "मसाजिद" 129; अबू दाऊद, "गलत" 148-149।

जवाब: जबकि ईश्वर ही सबसे बेहतर जानता है, इसमें बुद्धिमत्ता यह है: उनके "बोझ" को हल्का करने और नई परिस्थितियों में शरिया का पालन करना आसान बनाने के लिए, ईश्वर के आदेश पर, पैगम्बर ईसा (उन पर शांति हो) ने मूसा के कानून के कुछ बोझिल अध्यादेशों को निरस्त कर दिया, जिससे कुछ ऐसी चीजें वैध हो गईं जो अब तक अवैध थीं। इसी तरह, लेकिन ईश्वर और उसके कानून के खिलाफ विद्रोह की भावना में और शैतान के आदेश पर और उसके प्रलोभनों के माध्यम से, महान दज्जाल ईसाई कानून के आदेशों को रद्द कर देगा और ईसाइयों के सामाजिक जीवन को एक साथ रखने वाले बंधनों को नष्ट करके, वह अराजकता और गोग और मागोग के आगमन के लिए जमीन तैयार करेगा। इसी तरह, सुफियान - दज्जाल जो मुसलमानों के बीच दिखाई देगा - शैतान और उसकी दुष्ट-आज्ञाकारी आत्मा की साज़िशों और बहकावे के माध्यम से, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के शरिया के कुछ शाश्वत आदेशों को रद्द करने की कोशिश करेगा। मानवजाति के भौतिक और आध्यात्मिक बंधनों को नष्ट करके, और लापरवाह, नशे में धुत्त, चक्कर खाए हुए लोगों को मुक्त करके, वह सामाजिक जीवन की चमकदार जंजीरों को खोल देगा, जैसे सम्मान और करुणा। लोगों को ऐसी स्वतंत्रता देकर जो वास्तव में शुद्ध निरंकुशता है, उन्हें सड़ांध भरी वासना के दलदल में एक दूसरे पर गिरने की अनुमति देकर, वह सबसे भयानक अराजकता का रास्ता खोल देगा। तब लोगों को नियंत्रण में रखने के लिए सबसे दमनकारी निरंकुशता के अलावा कोई रास्ता नहीं होगा।

दूसरा मामला

प्रश्न: रिवायतों में दो दज्जालों की असाधारण उपलब्धियों, उनकी असाधारण शक्ति और महिमा का उल्लेख है। भविष्यवाणी की गई है कि कुछ बदकिस्मत लोग उन्हें एक तरह का देवता भी मानेंगे। इसका कारण क्या है?

जवाब: जब तक ज्ञान ईश्वर के पास है, तब तक उनकी उपलब्धियाँ महान और असाधारण होंगी, क्योंकि ऐसे कामों में ज़्यादातर विनाश और भूख को उत्तेजित करना शामिल होगा। यह इस वजह से है कि जिस आसानी से दोनों दज्जाल इन असाधारण कामों को अंजाम देते हैं, एक रिवायत में हमें बताया गया है: "उनका एक दिन एक साल के बराबर है।" यानी जो काम वे एक साल में करते हैं, वह आम तौर पर तीन सौ साल में भी नहीं हो सकता।

निम्नलिखित चार कारणों और दृष्टिकोणों से उनकी शक्ति अलौकिक प्रतीत होती है:

पहला दृष्टिकोण और कारण: उनके अहंकार और विद्रोह के कारण उन्हें धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जाने की परमेश्वर की इच्छा के परिणामस्वरूप, जो सुखद चीजें और प्रगति उनकी शक्ति के माध्यम से प्राप्त होती हैं

उनके निरंकुश, विशाल राज्यों में बहादुर सेनाएँ और सक्रिय लोग अन्यायपूर्ण तरीके से उनके नाम पर रखे जाएँगे; इससे बदले में दूसरे लोग यह सोचेंगे कि इन व्यक्तियों में हज़ारों लोगों की शक्ति है। लेकिन अधिकार के अनुसार, किसी समुदाय के कार्यों के माध्यम से प्राप्त होने वाली सहमती वाली चीज़ें, सम्मान और योग्यताएँ उस समुदाय के सदस्यों के बीच बाँटी जानी चाहिए, और किसी भी बुराई, विनाश या हानि को नेता की नासमझी, दोषों और दूरदर्शिता की कमी के लिए जिम्मेदार ठहराया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कोई बटालियन किसी शहर पर विजय प्राप्त करती है, तो लाभ और सम्मान उनकी संगीनों की बदौलत होता है। हालाँकि, यदि दोषपूर्ण योजना और दूरदर्शिता की कमी के कारण कोई नुकसान होता है, तो यह आमतौर पर कमांडर की गलती होती है।

इस प्रकार, सत्य और वास्तविकता के इस मूल सिद्धांत के बिल्कुल विपरीत, चूँकि सकारात्मक प्रगति और सुखद उपलब्धियों का श्रेय ऐसे भयानक नेताओं को दिया जाता है, और किसी भी अप्रिय विकास या बुराई का श्रेय उनके दुर्भाग्यपूर्ण लोगों को दिया जाता है, यह ईश्वर की इच्छा है कि वे अपने अहंकार और विद्रोह के कारण धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जाएँ। इस प्रकार, ऐसे व्यक्ति जो वास्तव में सार्वजनिक निंदा के पात्र हैं, वे सभी लापरवाह और लापरवाह लोगों द्वारा प्रिय होते हैं।

दूसरा दृष्टिकोण और कारण: चूँकि दोनों दज्जाल सबसे कठोर निरंकुशता, सबसे क्रूर अत्याचार और सबसे अधिक हिंसा और आतंक का प्रयोग करते हैं, इसलिए ऐसा प्रतीत होता है कि उनके पास बहुत बड़ी शक्ति है। उनकी निरंकुशता ऐसी है कि वे कानूनों के पर्दे के पीछे हर किसी के विवेक और पवित्र मूल्यों में हस्तक्षेप करते हैं, उनके जीवन की हर चीज को निर्देशित करते हैं, यहाँ तक कि उन्हें क्या पहनना चाहिए, यहाँ तक कि उन्हें क्या पहनना चाहिए। मुझे लगता है कि पिछली (19वीं) सदी के अंत और पिछली (20वीं) सदी के आरंभ में स्वतंत्रता के चाहने वाले मुसलमान और तुर्की लोगों ने इस भयानक निरंकुशता को पहले से ही भाँप लिया था और इस पर तीर चलाकर हमला कर दिया था। लेकिन वे बुरी तरह गुमराह हो गए और गलत मोर्चे पर गलत लक्ष्य पर हमला कर दिया। दज्जालों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली अत्याचार और जबरदस्ती ऐसी है कि वे एक आदमी के कारण सौ गाँवों को तबाह कर देते हैं, सैकड़ों निर्दोष लोगों को दंडित करते हैं और उन्हें जबरन पलायन करवाकर बर्बाद कर देते हैं।

तीसरा दृष्टिकोण और कारण: चूँकि दोनों दज्जाल कुछ गुप्त समितियों की सहायता प्राप्त करेंगे जो कि उन पर आक्रमण करने की भयंकर इच्छा रखती हैं।

इस्लाम और ईसाई धर्म से बदला लेंगे और महिलाओं की मुक्ति को पर्दे के रूप में इस्तेमाल करेंगे और चूंकि मुसलमानों के बीच प्रकट होने वाले दज्जाल कुछ गुप्त ठिकानों को भी धोखा देंगे और उनका समर्थन हासिल करेंगे, इसलिए उन्हें जबरदस्त शक्ति रखने वाला माना जाएगा। साथ ही, कुछ संतों के आध्यात्मिक अनावरणों से यह समझा जा सकता है कि सुफ़यान नामक दज्जाल जो नेतृत्व करने के लिए आएगा

मुस्लिम सरकार में एक योग्य, बुद्धिमान और मेहनती प्रधान वजीर (प्रधानमंत्री) होगा जो दिखावे का शौकीन नहीं होगा और जो व्यक्तिगत पद और प्रतिष्ठा को महत्व नहीं देगा। उसके पास एक साहसी, बलवान, दृढ़ और ऊर्जावान सेनापति भी होगा जो प्रसिद्धि की चाह में नहीं डूबेगा। सूफियान उस वजीर और सेनापति को अपने अधीन कर लेगा। इस बात का फायदा उठाकर कि वे दिखावे को महत्व नहीं देते, वह उनकी असाधारण उपलब्धियों का श्रेय अपने नाम करवाएगा, साथ ही सेना और सरकार द्वारा किए गए सुधारों और उन्नति का भी, जो विश्व युद्ध द्वारा लाए गए परिवर्तनों से उत्पन्न गंभीर आवश्यकता से प्रेरित हैं; वह अपने प्रशंसकों द्वारा यह घोषणा और प्रचार करवाएगा कि उसके पास एक भयानक और असाधारण शक्ति है।

चौथा दृष्टिकोण और कारण: महान दज्जाल में मंत्रमुग्ध करने वाले, करिश्माई गुण होंगे, जबकि मुसलमानों के बीच प्रकट होने वाले दज्जाल में भी सम्मोहन शक्ति होगी, लेकिन केवल एक आंख में। यह घोषणा करके कि " दज्जाल एक आंख से अंधा होगा,"105 पैगंबर की परंपराएं उनकी आंखों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। यानी महान दज्जाल में से एक आंख अंधी होगी, जबकि दूसरे दज्जाल की एक आंख उसकी दूसरी आंख की तुलना में अंधी होगी। यानी, चूंकि दोनों पूर्ण रूप से अविश्वासी होंगे, इसलिए उनके पास वास्तव में केवल एक आंख होगी, और वह आंख इस दुनिया तक ही सीमित होगी; उनके पास ऐसी कोई आंख नहीं होगी जिससे वे आख़िरत या अपने कार्यों के परिणामों को देख सकें। मुझे एक बार दज्जाल का दर्शन हुआ जो मुसलमानों के बीच प्रकट होने वाला है। मैंने अपनी आँखों से देखा कि उसकी एक आँख में मंत्रमुग्ध करने वाली सम्मोहन शक्ति थी, और मैं समझ गया कि वह इस्लाम धर्म का पूर्ण रूप से इनकार करने वाला होगा। वह धार्मिक मूल्यों पर उस दुस्साहस और अहंकार के साथ हमला करेगा जो पूर्ण इनकार से उपजा है। लेकिन चूंकि आम लोगों को मामले की सच्चाई पता नहीं होगी, इसलिए वे मान लेंगे कि उसके पास असाधारण शक्ति और साहस है।

इसके अलावा, चूँकि एक गौरवशाली, वीर राष्ट्र के पास अपनी हार के समय एक सफल, प्रसिद्ध, भाग्यशाली और चालाक नेता होगा, इसलिए उसके गुप्त और भयानक सत्य को ध्यान में रखे बिना, वे अपनी वीरता के लिए उसकी प्रशंसा करेंगे; वे उसे अपना नेता मानेंगे और उसके अपराधों को अनदेखा करेंगे। हालाँकि, यह रवायतों से समझा जा सकता है कि ईमान की रोशनी और अपनी आत्माओं में कुरान के माध्यम से, वीर सेना और धार्मिक राष्ट्र सच्चाई को देखेंगे और उस नेता द्वारा किए गए भयानक नुकसान की भरपाई करने की कोशिश करेंगे।

---

105 मुस्लिम, "फ़ितन" 104, 105; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:201।

तीसरा मामला

इसमें तीन घटनाएं हैं, जिनमें से प्रत्येक सबक से भरी है।

पहली घटना: एक बार, ईश्वर के सबसे महान् रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने उमर (अल्लाह उनसे प्रसन्न हो) को गैर-मुस्लिम बच्चों के एक समूह में से एक बच्चे की ओर इशारा किया और कहा: “यह उनकी ही छवि है!” उमर ने कहा: “तो मैं उसे मार डालूँगा!” लेकिन ईश्वर के रसूल ने घोषणा की: “यदि वह सूफ़ियान है , तो तुम उसे नहीं मार सकते। और यदि वह नहीं है, तो उसकी छवि को मारकर उसे नहीं मारा जा सकता।”106

यह वर्णन संकेत करता है कि उसके शासन काल में सुफ़यान की छवि अनेक रूपों में प्रकट होगी, तथा वह मुस्लिम भूमि में गैर-मुस्लिमों के बीच जन्म लेगा।107 यह विचित्र बात है कि यद्यपि उमर, अल्लाह उस पर प्रसन्न हो, इस विषय पर इतना दृढ़ था कि वह सुफ़यान जैसा दिखने वाले एक बच्चे को मारने के लिए तैयार था , वह [अर्थात उमर] सुफ़यान में से एक होगा।

सबसे अधिक प्रशंसा, सराहना और अत्यधिक प्रशंसा करता है।

दूसरी घटना: बहुत से लोग कहते हैं कि दज्जाल जो मुसलमानों के बीच आएगा, वह सूरतुतुतिन (अध्याय 95) के अर्थ के बारे में बहुत उत्सुक होगा, जो अंजीर और जैतून से शुरू होता है, और इसके बारे में पूछेगा।

यह अजीब बात है कि अगली सूरा- सूरतुल-अलक में आयत, "नहीं, वास्तव में, मनुष्य अनियंत्रित और विद्रोही है" (96:6), जो "अपने रब के नाम से पढ़ो जो पैदा करता है" से शुरू होती है , सूफ़ियान के समय और व्यक्तित्व की ओर इशारा करती है , और बाद की आयतों (9-10) में यह भी संकेत देती है कि वह मस्जिदों और उन लोगों के खिलाफ़ बहुत घमंड से गाली देगा जो पवित्र नमाज़ पढ़ते हैं। दूसरे शब्दों में, वह आदमी, जिसकी सफलताएँ उसे विनाश की ओर ले जाएँगी, समझता है कि एक छोटा सूरा उसके बारे में है, लेकिन वह उलझन में पड़ जाता है और इसके बजाय अपने पड़ोसी का दरवाज़ा खटखटाता है।

तीसरी घटना: एक रिवायत में कहा गया है: " सुफ़यान खुरासान के आसपास के क्षेत्र में दिखाई देंगे।"108

जबकि ईश्वर के अलावा अदृश्य को कोई नहीं जानता, इस कथन की व्याख्या इस प्रकार है: जब महानतम रसूल -उन पर शांति और आशीर्वाद हो - ने यह समाचार दिया, तो तुर्क, जो पूर्व के सबसे साहसी, संख्या में और शक्तिशाली लोग थे और जो नायक बनने वाले थे-

---

106 मुस्लिम, "फ़ितन" 95; एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 63.

107 मुस्लिम, "फ़ितन" 33; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:224. एट-तिर्मिज़ी, "फ़ितन" 57; इब्न माजा,

108 "फ़ितन" 33.

इस्लाम की सेना खुरासान के आसपास थी और अभी तक अनातोलिया में अपनी मातृभूमि नहीं बना पाई थी। उस समय वे जिस क्षेत्र में पाए गए थे, उसका उल्लेख करके हदीस यह संकेत दे सकती है कि सूफ़ियान तुर्कों के बीच दिखाई देंगे।

यह बहुत ही अजीब बात है कि सूफ़ियान , भले ही थोड़े समय के लिए ही सही, तुर्कवाद और तुर्की राष्ट्र का इस्तेमाल करने की कोशिश करेंगे, जो सात सौ सालों से कुरान और मुस्लिम धार्मिकता के हाथ में एक सम्माननीय, चमकती हीरे की "तलवार" रहा है, इस्लाम के कुछ सार्वजनिक प्रतीकों के खिलाफ़। लेकिन वह सफल नहीं होगा और पीछे हट जाएगा। यह इस बात से समझा जा सकता है कि

कथा है कि वीर सेना उसके हाथ से अपनी बागडोर ले लेगी।

ईश्वर के अतिरिक्त अदृश्य को कोई नहीं जानता।

और परमेश्वर ही सबसे अच्छा जानता है कि क्या सही है।

पंद्रहवीं किरण

पंद्रहवीं किरण

उज्ज्वल सबूत

इसमें दो “स्टेशन” शामिल हैं।

यह पाठ एक ऐसा ग्रंथ है जो सतही तौर पर तो बहुत छोटा है, लेकिन वास्तव में यह बहुत शक्तिशाली, विस्तृत और बहुत महत्वपूर्ण है। यह कुरान और ईमान का एक पर-आदिसल फल है, जो ज्ञान पर आधारित निश्चितता और दृष्टि या अवलोकन पर आधारित निश्चितता के स्तर पर मेरे चिंतनशील विचार के जीवन और रिसाले -ए-नूर के अमूर्त जीवन के संयोजन से उत्पन्न हुआ है, जो जांच और सत्यापन पर आधारित है।

पहला स्टेशन

यह बीसवें पत्र का संक्षिप्त सारांश है। इसमें तीन भाग हैं।

भाग एक

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हम उसी से सहायता चाहते हैं।

T रिसाले-ए- नूर के छात्र पढ़ाने की पूरी कोशिश कर रहे हैं

प्रकाश के सबक जहाँ कहीं भी हों। हालाँकि, युवा और बुजुर्ग लोग जो समाचार पत्र पढ़ते हैं, जो कम्युनिस्ट रूस के भयानक हमलों के बारे में लिखते हैं

ईश्वर के इनकार को ईश्वर के अस्तित्व और एकता में विश्वास के बारे में इसके निश्चित, शक्तिशाली निर्देश की अधिक आवश्यकता है। मैं एक संक्षिप्त लेख लिखने के बारे में सोच रहा था

निम्नलिखित शानदार घोषणा से जो सबक मिलता है उसका सारांश
ईश्वर का अस्तित्व और एकता हमें यह शिक्षा देती है - एक घोषणा जिसे हर सुबह की प्रार्थना के बाद दस बार पढ़ा जाना चाहिए:

> अल्लाह के सिवा कोई पूज्य नहीं, वह एक है, उसका कोई साझी नहीं, वही प्रभुता संपन्न है, उसी के लिए प्रशंसा है, वही जीवन देता है और मारता है, वही सर्वज्ञ है, वह कभी नहीं मरता, उसके हाथ में सब भलाई है, वह हर चीज़ पर पूर्ण अधिकार रखता है, और उसी की ओर लौटना है।

ईश्वरीय एकता के इस कथन में ग्यारह शुभ समाचार और विश्वास के ग्यारह प्रमाण हैं। मैं संक्षेप में प्रमाणों को इंगित करूँगा और उनके आगे के स्पष्टीकरण और उनके द्वारा दी गई शुभ सूचना को बीसवें पत्र और रिसाले-ए-नूर के अन्य प्रासंगिक भागों में संदर्भित करूँगा।

पहला वाक्य : ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है

यहाँ प्रमाण सर्वोच्च संकेत, सातवीं किरण नामक ग्रंथ है। सर्वोच्च संकेत सभी प्राणियों की समग्रता में तैंतीस विशाल, सर्वसम्मत, सार्वभौमिक प्रमाणों की ओर संकेत करता है। प्रत्येक सार्वभौमिक प्रमाण में असंख्य तर्कों की ओर संकेत करते हुए, सबसे पहले आकाश और सितारों के शब्दों के साथ, फिर पृथ्वी, जानवरों और पौधों के वाक्यों के साथ, फिर ब्रह्मांड और उसकी सभी सामग्रियों की समग्रता के संदेशों के साथ, और समय, आकस्मिकता और परिवर्तन के भीतर अस्तित्व में आने की वास्तविकताओं के माध्यम से, यह अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व और एकता को दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट रूप से साबित करता है। जो लोग अडिग विश्वास और अधर्म और अराजकता का मुकाबला करने के लिए एक अटूट तलवार की तलाश करते हैं, उन्हें सर्वोच्च संकेत का संदर्भ लेना चाहिए।

दूसरा वाक्यांश: (वह) एक है

इस वाक्यांश में प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

ब्रह्मांड के हर पहलू में एकता स्पष्ट है। उदाहरण के लिए, ब्रह्मांड एकता प्रदर्शित करता है क्योंकि यह एक पूरी तरह से सुव्यवस्थित शहर, एक शानदार महल, एक सार्थक, भौतिक पुस्तक और एक मूर्त कुरान है, जिसका हर छंद, अक्षर और बिंदु चमत्कारी है। इसी तरह, चूंकि महल का दीपक और अग्नि-कुण्ड (सूर्य) एक ही है, और इसका कैलेंडर-दीप (चंद्रमा)109 एक है, और इसके जल-वाहक स्पंज (बादल) एक ही हैं।

---

109 कैलेंडर का चिराग चाँद है। क़ुरआन कहता है: (ऐ रसूल) लोग तुमसे नये चाँद के बारे में पूछते हैं। कह दो: "वे लोगों के लिए समय-अवधि और हज के लिए चिह्न हैं।" (2:189)

एक ही संरचना और प्रकृति है, और चूंकि इसमें शामिल लाखों अन्य चीजें सभी एक और एक ही हैं, यह निर्णायक रूप से साबित करता है कि शहर, महल, पुस्तक और शक्तिशाली मूर्त कुरान का मालिक, आयोजक, शासक और लेखक अस्तित्व में है, एक और एकल है।

तीसरा वाक्य: उसका कोई साथी नहीं है

इसमें प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

सर्वोच्च चिन्ह का स्रोत, स्वामी और आधार यह महान आयत है, कहो: "यदि उनके अनुसार, उसके अलावा कोई अन्य पूज्य होते, तो वे निश्चित रूप से सर्वोच्च सिंहासन (सृष्टि के प्रभुत्व) के स्वामी तक पहुँचने का मार्ग खोजते।"
(17:42)।" यह अपने आप में एक सर्वोच्च संकेत है। अर्थात, यदि ईश्वर के पास कोई साझीदार या अन्य प्रतिनिधि होते जो सृष्टि में भाग लेते या प्रभुता में हस्तक्षेप करते, तो ब्रह्मांड का क्रम नष्ट हो जाता। हालाँकि, हर चीज़ में पूर्ण व्यवस्था, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, विशेष हो या सार्वभौमिक, सबसे छोटी मक्खी के पंख से लेकर आँख की पुतली की कोशिका तक, हवा में उड़ने वाले असंख्य पक्षियों और सौर मंडल तक, ऐसे किसी भी साझीदार की असंभवता और गैर-मौजूदगी के लिए निर्णायक और निर्विवाद सबूत प्रदान करती है। यह अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व और एकता की भी स्व-साक्ष्य रूप से गवाही देता है।

चौथा वाक्य: प्रभुता उसी की है

इस वाक्यांश में पाए गए व्यापक प्रमाण का अत्यंत संक्षिप्त संकेत निम्नलिखित है:

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक छिपा हुआ, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ निर्देशक और नियंत्रक है जो धरती को एक कृषि योग्य खेत बनाता है, जो हर बसंत में उस विशाल खेत में सैकड़ों हज़ारों प्रजातियों के पौधों के बीज बोता है, जो सभी एक साथ मिल जाते हैं। फिर वह उन्हें एकदम सही क्रम में काटता है

, और बिना किसी भ्रम के इस क्षेत्र से लाखों जानवरों की प्रजातियों को उनकी ज़रूरतों के हिसाब से दया और बुद्धि के हाथ से भोजन और राशन वितरित करता है। वह अपने विशाल, समृद्ध साम्राज्य में और विशेष रूप से पृथ्वी के चेहरे पर ये कार्य करता है।

इसलिए, जो लोग इस सर्वज्ञ और परम दयालु निर्देशक, नियंत्रक और मालिक को नहीं पहचानते, वे पृथ्वी को उसकी उपज सहित अस्वीकार करने के लिए बाध्य होते हैं, जैसा कि मूर्ख सोफिस्टों ने किया है।

पाँचवाँ वाक्य: सारी प्रशंसा उसी की है

यह इस वाक्यांश में बहुत व्यापक प्रमाण का एक संक्षिप्त संकेत है:

हम अपनी आँखों से देखते हैं और अपने मन से स्पष्ट रूप से समझते हैं कि एक दयालु, दयालु प्रदाता और दान देने वाला इस ब्रह्मांड के शहर, पृथ्वी के इस चौथाई भाग, मनुष्यों और पशुओं के इन बैरकों पर शासन, पर्यवेक्षण और रखरखाव करता है। क्योंकि सचेत प्राणियों को उसकी कृपा के बदले में केवल उसकी स्तुति और धन्यवाद करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, वह पृथ्वी को एक व्यापारी जहाज और एक रेलगाड़ी बनाता है जो भोजन लाती है; वह वसंत को सैकड़ों हजारों प्रकार के खाद्य पदार्थों और स्तनों नामक संरक्षित पदार्थों से भरे एक वैगन में बदल देता है, जो उन्हें उन जरूरतमंद जीवों तक पहुँचाता है जिनका भोजन सर्दियों के अंत तक समाप्त हो गया है। थोड़ी सी भी बुद्धि वाला कोई भी व्यक्ति यह पुष्टि करेगा कि यह एक दयालु प्रदाता का काम है। हालाँकि, जो इस बात की पुष्टि नहीं करता है, बल्कि इनकार करने में भटक जाता है, वह एक मूर्ख, हानिकारक प्राणी है, जिसे पृथ्वी के चेहरे पर सभी नियमित उपहारों और निर्दिष्ट खाद्य पदार्थों को अस्वीकार करने के लिए मजबूर किया जाएगा, जो प्रशंसा और धन्यवाद के साधन हैं।

छठा वाक्य : केवल वही जीवन देता है

इस वाक्यांश में प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत:

दसवें वचन में तथा रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में यह स्पष्ट रूप से समझाया गया है कि पृथ्वी पर प्रत्येक बसंत ऋतु में लाखों विभिन्न प्रजातियों से बनी एक शानदार सेना पुनर्जीवित होती है, जिनमें से प्रत्येक में अनंत सदस्य होते हैं। उनका जीवन तथा उनकी जो भी आवश्यकता होती है, उन्हें पूर्ण क्रम तथा नियमितता के साथ दिया जाता है, इस प्रकार सर्वोच्च पुनरुत्थान के सैकड़ों-हजारों उदाहरण तथा चिह्न प्रदर्शित होते हैं। ये सभी असंख्य विभिन्न जीव पूर्ण संतुलन तथा क्रम में बिना विस्मृति, त्रुटि तथा भ्रम के जीवन में पुनर्जीवित होते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि वे सभी परस्पर मिश्रित हैं। जीवों की वे लाखों प्रजातियां अपने असंख्य सदस्यों के साथ, जो अपने रूप, कला तथा आजीविका के संबंध में सभी भिन्न हैं, वीर्य की बूंदों से अस्तित्व में आती हैं, जो सभी समान होती हैं; अथवा पृथ्वी में दबे बीजों से, जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं; अथवा मक्खियों के छोटे-छोटे अंडों से, जो सभी समान होते हैं; या, हवा के पक्षियों के मामले में, तरल पदार्थ या अंडे से, जो या तो एक दूसरे के समान हैं या केवल थोड़े अलग हैं। इसलिए, जो व्यक्ति यह निष्कर्ष नहीं निकालता है कि यह एक सर्व-जीवित और आत्मनिर्भर, जीवन का सर्वज्ञ दाता है

और सृष्टिकर्ता जिसने धरती और वसंत के पन्नों पर सैकड़ों हज़ारों अलग-अलग "पुस्तकें" लिखी हैं, सभी एक साथ, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि के, पूरी तरह से, और जो असीम सावधानी और बुद्धिमत्ता के साथ काम करता है और काम करता है - वह व्यक्ति निश्चित रूप से खुद को और सभी जीवित प्राणियों को नकारने के लिए बाध्य है जो प्रत्येक वसंत में सजीव पृथ्वी और अंतरिक्ष में समय की डोरी से जुड़े हुए हैं। वास्तव में, ऐसा व्यक्ति जीवित प्राणियों में सबसे मूर्ख और दुखी होना चाहिए।

सातवां वाक्यांश: और मृत्यु का कारण बनता है

इस वाक्यांश में निहित प्रमाण का एक संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

जब लाखों पौधों की प्रजातियों को मृत्यु के नाम पर उनके कर्तव्यों से मुक्त किया जा रहा है, प्रत्येक प्रजाति और उनके सभी सदस्यों के कार्यों के रजिस्टर, और उनके द्वारा किए गए हर काम की सूची और अगले वसंत में वे जो कुछ भी करेंगे -

उनके बीज, जो एक तरह से उनकी आत्माएँ हैं - सभी को उनके स्थानों पर सर्व-महान संरक्षक की बुद्धि के हाथों में सौंप दिया जाता है। इसलिए, जो कोई भी सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता, सर्व-जीवित और अमर को नहीं पहचानता है, वह जो अंजीर के पेड़ का जीवन-इतिहास लिखता है, जिसके विवरण एक बड़ी मात्रा में भर सकते हैं, उसके छोटे-छोटे बीजों में - जिनमें से प्रत्येक एक अमर आत्मा की तरह है और पेड़ के जीवन को "नियंत्रित" करने वाले सभी नियमों को धारण करता है - उस व्यक्ति को मूर्ख नहीं कहा जा सकता है; बल्कि, वे नरक की आग को भड़काने वाले शैतानों से भी अधिक नीच हैं, और उन्हें अनंत काल तक मृत्युदंड दिया जाएगा।

जिस तरह यह स्पष्ट रूप से असंभव है कि ऊपर वर्णित सार्वभौमिक, व्यापक और बुद्धिमान कार्य, जिनमें असंख्य चमत्कार और चमत्कार शामिल हैं और जो चर्चित वाक्यांश में प्रमाणों को चिह्नित करते हैं, उन्हें करने वाले के बिना अस्तित्व में हो सकते हैं, उसी तरह, उन्हें अंधे, बहरे, नपुंसक, अचेतन, बेजान, भ्रमित या अव्यवस्थित भौतिक कारणों से जोड़ना अकल्पनीय और अनुचित है, हज़ारों बार। इसके लिए आवश्यक है कि पृथ्वी के प्रत्येक कण में असीम शक्ति और बुद्धि हो, साथ ही सभी पौधों और फूलों को आकार देने और उन्हें आवश्यक उपकरण प्रदान करने के लिए एक असाधारण सार्वभौमिक शिल्प कौशल हो। इसके अलावा, जैसा कि तेरहवें वचन में "वह: दिव्य एकता का एक बिंदु" में समझाया गया है, हवा के प्रत्येक अणु में प्राणियों द्वारा किए गए या बोले गए सभी भाषणों और रेडियो और टेलीफोन पर बोले गए सभी शब्दों को जानने और फिर उन्हें अन्य अणुओं तक पहुँचाने की क्षमता होनी चाहिए।

यहां तक कि एक दानव भी किसी को इस तरह के शानदार विचार को स्वीकार करने के लिए मजबूर कर सकता है। इसलिए, अविश्वास और इनकार के लिए उचित सजा, जो तर्क और सत्य से इतनी दूर है कि यह सभी प्राणियों के खिलाफ अपमान और हमला है, केवल भयानक नरक हो सकता है, जिसकी सजा शुद्ध न्याय है।

आठवाँ वाक्य : वह सर्वव्यापी है और कभी नहीं मरता

इस वाक्यांश में प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

उदाहरण के लिए, जिस तरह से असंख्य छोटे-छोटे सूर्य समुद्र की सतह पर या बहती नदी के किनारे झागों में प्रतिबिम्बित होते हैं और आकाश में एक ही सूर्य के अस्तित्व की गवाही देते हैं, उसी तरह, झागों से गायब होकर और उनकी जगह नए झागों के आने से, वे एक ही सूर्य के स्थायित्व की गवाही देते हैं। इसी तरह, ब्रह्मांड के निरंतर बदलते समुद्र की सतह पर, हमेशा नवीनीकृत, असीम अंतरिक्ष में, सूक्ष्म कणों या परमाणुओं के क्षेत्र में और समय की नदी में, जो सभी घटनाओं और क्षणभंगुर प्राणियों को अपने आलिंगन में रखती है और उनके साथ बहती है, लगातार और तेजी से आगे बढ़ती है और फिर अपने स्पष्ट कारणों के साथ मर जाती है। हर दिन, हर साल, एक ब्रह्मांड मरता है और एक नया ब्रह्मांड उसकी जगह लेता है। चूँकि यात्रा करने वाले संसारों और बहते हुए ब्रह्मांडों की उपज निरंतर परमाणुओं के क्षेत्र में काटी जाती है, तो निश्चित रूप से, जैसे कि उनमें प्रतिबिंबित झाग और छोटे सूर्य अपने गायब होने और फिर से प्रकट होने से एक शाश्वत सूर्य की ओर इशारा करते हैं, इन असंख्य प्राणियों और अनंत उत्पादों की मृत्यु (नए द्वारा प्रतिस्थापित किए जाने वाले), उनके स्पष्ट कारणों के साथ पूर्ण क्रम में उनका निर्वहन, सूर्य की स्पष्टता और निश्चितता के साथ एक सर्व-जीवित, अमर एक के आवश्यक अस्तित्व और एकता की गवाही देते हैं: एक शाश्वत सूर्य, एक सर्व-स्थायी निर्माता, एक सबसे शुद्ध और पवित्र कमांडर। सभी प्राणी इस सत्य की गवाही ब्रह्मांड के अस्तित्व की तुलना में हज़ार गुना अधिक स्पष्टता और निश्चितता से देते हैं।

अब तक आप निश्चित रूप से समझ गए होंगे कि वह व्यक्ति कितना बहरा, मूर्ख और आक्रामक है जो इन ऊंची आवाजों और शक्तिशाली गवाहियों को नहीं सुनता या उन पर ध्यान नहीं देता जो ब्रह्मांड को भर देती हैं।

नौवां वाक्य: उसके हाथ में सब भलाई है

इस वाक्यांश में निहित प्रमाण का संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

हम देखते हैं कि ब्रह्माण्ड में प्रत्येक क्षेत्र या सत्ता, प्रत्येक स्तर, प्रत्येक व्यक्ति, शारीरिक अंग, यहाँ तक कि प्रत्येक शरीर की प्रत्येक कोशिका में भी एक विशेष गुण है।

एक भण्डार या डिपो जिसमें जीविका की आरक्षित आपूर्ति होती है और एक क्षेत्र या खजाना जो शरीर की सभी आवश्यकताओं का उत्पादन और सुरक्षा करता है। क्योंकि बिल्कुल सही समय पर, पूर्ण व्यवस्था और संतुलन में, और पूर्ण बुद्धि और अनुग्रह के साथ इन सभी जरूरतमंद प्राणियों को उनकी शक्ति और इच्छा के बाहर एक छिपे हुए हाथ द्वारा उनकी आवश्यकताएँ दी जाती हैं।

उदाहरण के लिए, पहाड़ों में मनुष्य और अन्य जीवित प्राणियों के लिए आवश्यक सभी खनिज और रसायन होते हैं, साथ ही जीवन के लिए आवश्यक सभी चीजें भी होती हैं। जिस तरह वे संपूर्ण भण्डार और खजाने हैं जो किसी के आदेश और संगठन से संचालित होते हैं, उसी तरह धरती भी एक कृषि योग्य खेत, एक फसल, एक रसोईघर है, जो एक सर्वज्ञ प्रदाता की शक्ति के माध्यम से संपूर्ण व्यवस्था और नियमितता के साथ उन सभी जीवित प्राणियों का पोषण करती है। वास्तव में, जिस तरह से मनुष्य और उसके शरीर के सभी अंगों और अंगों में भण्डार और भंडार होते हैं, और यहां तक कि एक छोटी सी कोशिका में भी एक छोटा सा भंडार होता है, उसी तरह यह दुनिया आख़िरत की दुनिया का भंडार है- इस्लाम और सच्ची मानवता की दुनिया, जो अच्छाई, सुंदरता और रोशनी पैदा करती है जो स्वर्ग का क्षेत्र और भंडार है, जबकि सभी बुराइयाँ, जो सभी कुरूपता और अविश्वास के प्रकार पैदा करती हैं और जो अस्तित्वहीनता से आती हैं और अस्तित्व की पूरी तरह से अच्छी दुनियाओं को प्रदूषित करती हैं, वे नरक का भंडार हैं। और सितारों की गर्मी का भंडार नरक है, जबकि रोशनी का खजाना स्वर्ग है। इस प्रकार, उन सभी अनंत खजानों का जिक्र करते हुए, वाक्यांश उसके हाथ में सब अच्छा है एक सबसे शानदार सबूत प्रदर्शित करता है।

यह वाक्यांश, कथन के साथ कि आकाश और पृथ्वी की कुंजियाँ उसकी हैं (39:63), किसी भी ऐसे व्यक्ति को जो पूरी तरह अंधा नहीं है, ईश्वरीय प्रभुत्व और एकता का एक असीम रूप से व्यापक, अद्भुत प्रमाण इंगित करता है। उदाहरण के लिए, इन असंख्य खजानों और भंडारों में से कुछ पर विचार करें जो इस प्रकार हैं: जैसे कि "जाग जाओ!" की उनकी आज्ञा और उनकी इच्छा की कुंजी के साथ, एक सर्वज्ञ निर्देशक और नियंत्रक जो बीजों और अनाजों की कुंजियाँ रखता है - छोटे-छोटे भंडार जिनमें सभी आवश्यक उपकरण और विशाल वृक्षों या दीप्तिमान फूलों की योजनाएँ और कार्यक्रम होते हैं - एक बीज के छोटे दरवाजे को पूर्ण संतुलन और क्रम में खोलता है, उसी तरह बारिश की कुंजी के साथ, जो पृथ्वी का खजाना है, वह बिना किसी गलती के सभी बीजों को खोलता है, उन छोटे-छोटे भंडारों को जिनमें पौधों का "वीर्य द्रव" होता है, साथ ही वीर्य और अंडों की बूंदों के छोटे-छोटे भंडारों को भी खोलता है; फिर इन्हें विकसित होने और जानवरों, पक्षियों और उड़ने वाले कीड़ों की उत्पत्ति के रूप में कार्य करने का आदेश मिलता है। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि जो इन सभी खजानों और भंडारों को खोलता है, वह बुद्धि, इच्छा, दया और विकल्प के हाथ से सभी खजाने और भंडार, भौतिक भी खोलता है

और गैर-भौतिक, सार्वभौमिक और विशेष, ब्रह्मांड में, प्रत्येक की अपनी विशेष कुंजी है, अपने स्वयं के हृदय, मन, शरीर और पेट पर विचार करें, जिनमें से प्रत्येक आपके लिए एक भंडार है, और आपका बगीचा और वसंत, जो पृथ्वी का फूल है, और उसके फूल और फल हैं। देखें कि वे कैसे एक छिपे हुए हाथ द्वारा पूर्ण क्रम, संतुलन, दया और बुद्धि के साथ खोले जाते हैं, प्रत्येक के पास एक अलग कुंजी है जो "हो!" के कार्यक्षेत्र से आती है और यह है। वह छिपा हुआ हाथ एक औंस से भी कम वजन वाले एक छोटे से बॉक्स से पाउंड - कभी-कभी सैकड़ों पाउंड - भोजन बनाता है और उन्हें जीवित प्राणियों को दावत के रूप में प्रस्तुत करता है। क्या यह संभव है कि अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, लक्ष्यहीन संयोग, या बेजान, अज्ञानी, नपुंसक कारण ऐसे असीम, व्यवस्थित, जानकार और विवेकपूर्ण कार्य में कोई भूमिका निभा सकते हैं? क्या यह संभव है कि वे इस तरह की पूरी तरह से बुद्धिमान, पूरी तरह से मौका-मुक्त कला में, ऐसे सटीक, पूरी तरह से संतुलित निपटान में, और प्रशासन, पालन-पोषण और रखरखाव के ऐसे पूरी तरह से न्यायपूर्ण कार्यों में किसी भी तरह की भूमिका निभा सकें? क्या कोई भी प्राणी जो सभी प्राणियों को एक साथ नहीं देख सकता और उनका प्रशासन नहीं कर सकता, या ग्रहों और तारों सहित सूक्ष्म कणों को अपने नियंत्रण में नहीं रख सकता, इस व्यवस्था और शासन में हस्तक्षेप कर सकता है, जो हर तरह से बुद्धिमत्तापूर्ण, चमत्कारी और संतुलित है?

जैसा कि छंद लगभग क्रोध से फटने वाला (६७:८) में कहा गया है, नरक उस व्यक्ति पर क्रोध से उबलता है जो सर्व-दयालु निदेशक और नियंत्रक, सर्व-ज्ञानी भगवान को नहीं पहचानता है, जिनके हाथ में सभी अच्छाई है और जिनके पास सभी चीजों की कुंजी है, और जो परिणामस्वरूप इनकार में भटक जाता है: यह क्रोध में उबलता है, मूक वाक्पटुता की जीभ के माध्यम से घोषणा करता है: "वह मेरी असीम पीड़ा का हकदार है और कभी भी दया के योग्य नहीं है।"

दसवाँ वाक्य: और उसके पास पूरी शक्ति है

सब पर

इस वाक्यांश में प्रमाण का अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

इस विश्वरूपी अतिथिगृह में आने वाला प्रत्येक चेतन प्राणी ज्यों ही अपनी आंखें खोलता है, वह देखता है कि एक शक्ति ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपनी मुट्ठी में जकड़ रखा है और उस शक्ति के भीतर अनंत, शाश्वत, सर्वव्यापी ज्ञान है, जो कभी किसी चीज को भ्रमित नहीं करता, साथ ही एक अत्यंत सटीक बुद्धि और अनुग्रह है, जो कभी भी लक्ष्यहीन या संतुलन के बिना कार्य नहीं करता। जिस प्रकार वह शक्ति एक कण को अनेक कार्यों में नियोजित करती है, उसे इधर-उधर घुमाती है, उसी प्रकार वह एक आनंदित मेवलेवी दरवेश की तरह पृथ्वी के गोले को भी एक वर्ष में चौबीस हजार वर्ष की दूरी तय करवाती है, उसी नियम के अनुसार। उसी समय और उसी नियम के अनुसार जिससे वह पृथ्वी को एक वर्ष में चौबीस हजार वर्ष की दूरी तय करवाती है।

मनुष्य और पशु ऋतुओं की उपज हैं, यह सूर्य को एक शटल या चरखा के रूप में उपयोग करता है, जिससे यह अपने केंद्र के चारों ओर आनंदपूर्वक और एक तरह से घूमता है जो एक शक्तिशाली गुरुत्वाकर्षण पैदा करता है, ग्रहों को - सौर मंडल की सेना को - विभिन्न कार्यों में पूर्ण क्रम और संतुलन के साथ नियोजित करता है। उसी समय और बुद्धि के उसी नियम के अनुसार, वही शक्ति पृथ्वी के चेहरे के पृष्ठ पर "पुस्तकें" लिखती है जो सैकड़ों-हजारों प्रजातियों की हैं, एक दूसरे के भीतर, बिना किसी त्रुटि या भ्रम के, इस प्रकार मृतकों के सर्वोच्च पुनरुत्थान के हजारों उदाहरण प्रदर्शित करती हैं। उसी समय, वह शक्ति हवा के पृष्ठ को लिखने और मिटाने के लिए एक पट्टिका में बदल देती है। हवा के सभी परमाणुओं को, जो कलम की नोक या लेखन बनाने वाले बिंदुओं की तरह हैं, इच्छा और आदेश द्वारा उनके लिए निर्दिष्ट कार्यों में नियोजित करते हुए, यह उन सभी को ऐसी क्षमता प्रदान करता है कि प्रत्येक सभी शब्दों और भाषण को इस तरह ग्रहण करता है जैसे कि वह उन्हें जानता हो, और उन्हें बिना किसी भ्रम के प्रसारित करता है। यह प्रत्येक को एक छोटे कान और एक छोटी जीभ के रूप में नियोजित करता है, जिससे यह साबित होता है कि वायु तत्व ईश्वरीय इच्छा और आदेश के लिए एक "सिंहासन" है।

इस प्रकार, जैसा कि इस संक्षिप्त संकेत में बताया गया है, वह जो ब्रह्माण्ड को एक सुव्यवस्थित शहर, एक सुव्यवस्थित अपार्टमेंट-बिल्डिंग और गेस्ट-हाउस और एक चमत्कारी पुस्तक या कुरान बनाता है, वह ज्ञान के संतुलन और बुद्धि की व्यवस्था के साथ ब्रह्माण्ड से लेकर सूक्ष्म कणों तक सभी स्तरों, क्षेत्रों और प्राणियों के समूहों को अपने नियंत्रण में रखता है, उन्हें निर्देशित और नियंत्रित करता है। वह सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय है जो अपनी शक्ति के भीतर अपनी बुद्धि और दया को प्रदर्शित करता है और अपने पूर्ण प्रभुत्व के भीतर अपने अस्तित्व और एकता को सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से प्रकट करता है। अतः जो लोग उस दयालु और दयावान को उसके द्वारा स्वयं को प्रकट करने के बदले में विश्वास के माध्यम से नहीं पहचानते, जो उसके द्वारा स्वयं को प्रेम किए जाने के बदले में उसकी उपासना के माध्यम से प्रेम नहीं करते, और उसके उपकारों के बदले में उसका धन्यवाद या प्रशंसा नहीं करते - ये मानव रूप में राक्षस, जो उसे पहचानने और उससे प्रेम करने, या उसका धन्यवाद और प्रशंसा करने की कोशिश करने के बजाय, इनकार के माध्यम से उसके प्रति एक प्रकार की शत्रुता को बढ़ावा देते हैं; वे छोटे निम्रोद और फिरौन हैं और निश्चित रूप से अनंत यातना के योग्य हैं।

ग्यारहवाँ वाक्यांश: और उसके लिए घर वापसी है

इसका अर्थ यह है कि जैसे प्राणी उसकी उपस्थिति के लिए प्रस्थान करेंगे और शाश्वत संसार - परलोक - तथा सुख के शाश्वत क्षेत्र की ओर बढ़ेंगे, वैसे ही

वह ब्रह्मांड में सभी प्राणियों का आश्रय भी है। भौतिक कारणों की सभी जंजीरें उसमें समाप्त होती हैं और उसकी शक्ति पर टिकी होती हैं। वे सभी उसकी शक्ति के कार्यों के लिए केवल पर्दे हैं - अनुचित शिकायतों के खिलाफ उसकी पवित्र शक्ति की गरिमा और महिमा को सुरक्षित रखने के लिए पर्दे। सृष्टि में उनका कोई भी हिस्सा नहीं है। यदि उसकी इच्छा और आज्ञा न हो, तो कुछ भी, एक कण भी नहीं, हिल या कार्य नहीं कर सकता। इस वाक्यांश में प्रमाण का एक बहुत ही संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है: सबसे पहले: हम दसवें शब्द और उसके परिशिष्ट, उनतीसवें शब्द, विश्वास के फलों के सातवें पदार्थ (ग्यारहवीं किरण), तीसरी किरण (प्रार्थना का ग्रंथ), और विश्वास के संबंध में रिसाले-ए-नूर के ग्रंथों का उल्लेख करते हैं, यह तथ्य कि पुनरुत्थान होगा और यह कि परलोक और शाश्वत जीवन आने वाले वसंत की तरह निस्संदेह और स्पष्ट रूप से लाया

जाएगा। सचमुच, इन ग्रंथों ने इस विश्वास के स्तम्भ को इस तरह से, इतने प्रमाणों के साथ सिद्ध किया है कि वे सबसे हठी इनकार करने वालों को भी यह मानने के लिए मजबूर कर देते हैं कि परलोक का अस्तित्व उतना ही निश्चित है

इस संसार के अस्तित्व के रूप में।

दूसरा: चमत्कारिक रूप से वाक्पटु कुरान का एक तिहाई हिस्सा
क़यामत और आख़िरत के बारे में अपने सभी दावों को क़ुरआन ने अपने ऊपर आधारित किया है। इसलिए क़ुरआन के सभी चमत्कारी पहलू और इसके ईश्वरीय वचन होने के प्रमाण भी आख़िरत के अस्तित्व की गवाही देते हैं। इसी तरह, मुहम्मद (उन पर शांति और बरकत हो) की नबूवत के सभी चमत्कार और उनकी नबूवत के सभी अन्य प्रमाण और उनकी सच्चाई के सबूत भी आख़िरत और आख़िरत की वास्तविकता की गवाही देते हैं। अपने पूरे जीवन में इस महान व्यक्ति का सबसे लगातार दावा आख़िरत के बारे में था; इसी तरह, अन्य सभी चौबीस हज़ार नबियों (उन पर शांति हो) ने भी मानव जाति को अनंत क्षेत्र में हमेशा की खुशी की खुशखबरी दी, इसे अनगिनत चमत्कारों और स्पष्ट प्रमाणों के साथ साबित किया। इसलिए, उनके नबूवत और सच्चाई को साबित करने वाले सभी चमत्कार और प्रमाण भी आख़िरत और शाश्वत जीवन की गवाही देते हैं, जो ईश्वर के अस्तित्व और एकता के बाद उनका निरंतर और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत था। इसके अलावा, विश्वास के अन्य स्तंभों को प्रमाणित करने वाले सभी साक्ष्य भी पुनरुत्थान की वास्तविकता और खुशी के क्षेत्र के खुलने की गवाही देते हैं।

तीसरा: अपनी पूर्णता, अपनी शक्ति और अपने प्रभुत्व को प्रदर्शित करने के लिए, एक महाप्रतापी निर्माता, एक परम दयालु और सुंदर निर्माता, एक पूर्ण परमेश्वर ने ब्रह्मांड को उसके सभी परमाणुओं, ग्रहों, भागों के साथ बनाया है।

और प्रत्येक कार्य को एक कार्य पर, वास्तव में, अनेक कार्यों पर, निरंतर और पूर्ण बुद्धि के साथ करता है। साथ ही, अपने नामों के अनंत, सतत प्रकटीकरण को प्रदर्शित करने के लिए, वह एक के बाद एक काफिले, वास्तव में, एक के बाद एक दुनिया को यात्रा करने वाले संसार और प्राणियों के समूहों को इस दुनिया के अतिथि-गृह और परीक्षण के क्षेत्र में भेजता है, जो सांसारिक जीवन है।

परलोक की फिल्मों के लिए उनके सभी चित्रों, कर्मों और अवस्थाओं को कैमरों से रिकॉर्ड करने के बाद, जो प्रतिनिधित्व या “आदर्श” रूपों की दुनिया में स्थापित किए गए हैं और मध्यवर्ती क्षेत्र (भौतिक और अभौतिक क्षेत्रों के बीच) से संबंधित हैं, वह उन्हें उनके कर्तव्यों से मुक्त कर देता है ताकि अन्य जनजातियों, काफिलों और बहने वाली या यात्रा करने वाली दुनियाओं द्वारा उसी कार्य के लिए उनका अनुसरण किया जा सके और ताकि वे उसके नामों की अभिव्यक्तियों के दर्पण बन सकें। तो क्या यह संभव है कि मनुष्यों के लिए कोई पुरस्कार और दंड का क्षेत्र न हो, कोई पुनरुत्थान और अंतिम निर्णय न हो, जो चेतना और बुद्धि के साथ इस क्षणभंगुर दुनिया में निर्माता के सभी उद्देश्यों के लिए प्रतिक्रिया दें, और अपनी पूरी क्षमता के साथ, उसे प्यार करें और उसे प्यार करें, उसे पहचानें और उसे जानें, और जो परलोक में अनंत सुख के लिए उससे अंतहीन प्रार्थना करते हैं, और जो बुद्धि होने के कारण, अनंत पीड़ाएँ सहते हैं और अपने पूरे अस्तित्व, आत्मा और क्षमताओं के साथ अनंत जीवन, जो शुद्ध आनंद है, की लालसा करते हैं? भगवान न करे! भगवान न करे, एक लाख बार!

चूँकि यह संक्षिप्त संकेत, इसके प्रमाणों सहित, रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों में विस्तार से मिलता है, इसलिए हम आपको उनका संदर्भ देते हैं और इस लंबी कहानी को यहीं समाप्त करते हैं।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

भाग दो: सूरतुल-फातिहा के अर्थ का संक्षिप्त सारांश

यह रिसाले-ए-नूर के छात्रों के लिए एक संक्षिप्त अनुकरणीय पाठ है :

एक विहित प्रार्थना के दौरान सूरतुल-फातिहा पढ़ते समय , मेरे मन में यह विचार आया कि इसके सागर से एक बूंद और इसके सूर्य के प्रकाश में सात रंगों से एक चमक को संक्षेप में समझाया जाना चाहिए। दरअसल, हमने इस पवित्र खजाने से कुछ बहुत ही मधुर और सुंदर संकेत बाईसवें पत्र के एक भाग में लिखे हैं, विशेष रूप से "नून (हम) नबुदु (हम पूजा करते हैं)" और आठ प्रतीकों (रुमु-ज़ात-ए-थमनिया) और (कुरान की) चमत्कारिकता के संकेतों (इशारतुल-

इजाज), जो कुरान की व्याख्या की कुंजी है, और रिसाले-ए-नूर के कुछ अन्य भागों में। हालाँकि, मैंने प्रार्थना के दौरान अपने विचारों को लिखना ज़रूरी समझा, लेकिन सिर्फ़ इस बारे में कि कैसे अल-फ़ातिहा, कुरान का वह बहुत ही प्यारा सारांश या अंश, विश्वास के स्तंभों और उसके प्रमाणों को एक बहुत ही संक्षिप्त सारांश के रूप में और ऊपर भाग एक के तरीके से इंगित करता है। इसलिए, रिसाले-ए-नूर के दो या तीन ग्रंथों में ईश्वर के नाम पर वाक्यांश का संदर्भ देते हुए, मैं सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है:

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का पालनहार है, अत्यन्त दयावान, दयावान, क़ियामत के दिन का स्वामी है। हम तेरी ही बन्दगी करते हैं और तुझसे ही सहायता चाहते हैं। हमें सीधे मार्ग पर चला, वह मार्ग जो उन लोगों का है जिन पर तूने अनुग्रह किया है, न कि उन लोगों का जो तेरे प्रकोप के भागी हुए हैं और न उन लोगों का जो पथभ्रष्ट हैं।

पहला वाक्य : सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है

इस वाक्यांश में विश्वास की सच्चाई के प्रमाण का एक बहुत ही संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

उद्देश्यपूर्ण दान और उपकार, जो प्रशंसा और धन्यवाद के कारण हैं, जिनमें विशेष रूप से रक्त और मल के बीच के स्थान से शिशुओं को शुद्ध, स्वच्छ, पौष्टिक दूध भेजना, उद्देश्यपूर्ण उपहार और भेंट, और दयालु उपकार और दावतें शामिल हैं, पृथ्वी को, वास्तव में, ब्रह्मांड को भर देती हैं। इनके लिए जो कीमत चुकानी पड़ती है वह यह है कि जब कोई इनका सेवन करना शुरू करता है, तो उसे "भगवान के नाम से" कहना चाहिए; अंत में "सभी प्रशंसा और उपकार भगवान के लिए हैं" और बीच में उपहार में देने की क्रिया को समझना और उसके माध्यम से अपने भगवान को पहचानना चाहिए। अपने आप पर, अपने पेट और अपनी इंद्रियों पर विचार करें! देखें कि उन्हें कितनी चीजों, कितने उपहारों की आवश्यकता है! देखें कि प्रशंसा और धन्यवाद की कीमत पर वे कितना भोजन और आनंद चाहते हैं। इसे देखें और फिर सभी जीवित प्राणियों की तुलना अपने आप से करें। इस प्रकार, इन सर्वव्यापी अनुदानों के प्रत्युत्तर में मौखिक रूप से तथा जन्मजात स्वभाव की वाणी के माध्यम से की गई अंतहीन प्रशंसा, दिन के प्रकाश की तरह स्पष्ट रूप से उस एक के अस्तित्व तथा सार्वभौमिक प्रभुत्व को दर्शाती है, जिसकी पूजा की जाती है तथा जिसकी प्रशंसा की जाती है, जो एक दयालु दाता है।

दूसरा वाक्यांश : जगत का प्रभु

इस वाक्यांश में निहित प्रमाण का एक बहुत ही संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि ब्रह्मांड में हज़ारों नहीं बल्कि लाखों दुनियाएँ हैं, छोटे-छोटे ब्रह्मांड हैं, जिनमें से ज़्यादातर एक के अंदर एक हैं। हालाँकि इन सभी के प्रशासन और रखरखाव की परिस्थितियाँ अलग-अलग हैं-

वे इतने पूर्ण रूप से व्यवस्थित, अनुरक्षित और प्रशासित हैं कि ब्रह्मांड, एक पृष्ठ की तरह, और ये सभी दुनियाएँ, एक पंक्ति की तरह, निरंतर उनकी दृष्टि में हैं, और उनकी शक्ति और नियति की कलम से लिखी, नवीनीकृत और परिवर्तित की जाती हैं। हर पल, विशेष और सार्वभौमिक दोनों तरह के प्रमाण - सूक्ष्म कणों की संख्या और उनसे बने प्राणियों की अनंत गवाही - दुनिया के भगवान के आवश्यक अस्तित्व और एकता के सामने आते हैं जो इन लाखों दुनियाओं, इन यात्रा करने वाले ब्रह्मांडों को एक अनंत ज्ञान, बुद्धि और एक असीम सर्वव्यापी दया के साथ एक अनंत प्रभुत्व के भीतर संचालित करते हैं। जो व्यक्ति इस प्रभुता को नहीं समझता और पुष्टि नहीं करता, जो इस प्रभुता को नहीं समझता और नहीं देखता, जो परमाणुओं के क्षेत्र से लेकर सौरमंडल और आकाशगंगा तक, तथा शरीर की कोशिकाओं से लेकर पृथ्वी के भण्डार तक, तथा सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड तक सभी प्राणियों का एक ही नियम और एक ही बुद्धि से पालन और प्रशासन करता है, ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से अपने आपको अंतहीन यातना का पात्र बनाता है और दया पाने का कोई भी अधिकार त्याग देता है।

तीसरा वाक्य : सर्व दयालु, सर्व करुणामय

इस वाक्यांश में प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

असीम दया का अस्तित्व और वास्तविकता ब्रह्मांड में उतनी ही स्पष्ट रूप से दिखाई देती है जितनी कि सूर्य का प्रकाश। जिस तरह प्रकाश सूर्य के अस्तित्व की गवाही देता है, उसी तरह यह सर्वव्यापी दया अदृश्य के पर्दे के पीछे एक सर्व-दयालु और सर्व-करुणामयी की गवाही देती है।

दया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्रावधान है, और इसी कारण से सर्व-दयालु को सर्व-प्रदाता भी कहा जाता है। प्रावधान एक सर्व-दयालु प्रदाता की ओर इतनी स्पष्टता से संकेत करता है कि चेतना का एक अंश भी रखने वाला व्यक्ति उसे पुष्टि करने के लिए बाध्य हो जाता है। उदाहरण के लिए, वह सभी जीवित प्राणियों, विशेष रूप से असहाय और युवा लोगों को, पृथ्वी और वायुमंडल में, अत्यंत अद्भुत तरीके से भोजन भेजता है जो उनकी इच्छा और शक्ति से परे है, बीजों, तरल पदार्थ की बूंदों और मिट्टी के कणों से, जो सभी एक दूसरे से मिलते जुलते हैं। वह पक्षियों को उनके कमजोर, उड़ने में असमर्थ चूजों के लिए भोजन की तलाश में ले जाता है

पेड़ों की चोटी पर घोंसलों में और उन्हें लाने के लिए। वह भूखी शेरनी को उसके शावकों के अधीन कर देता है ताकि वह जो मांस पाती है उसे न खाए बल्कि बदले में उन्हें दे दे। वह मनुष्यों और छोटे जानवरों की संतानों को स्तनों के नल से कवथर के पानी की तरह मीठा, पौष्टिक, शुद्ध सफेद दूध भेजता है, बिना किसी अन्य शारीरिक स्राव से प्रदूषित हुए, और उनकी मदद करने के लिए माताओं की कोमलता के साथ इसे पूरक करता है। इसी तरह के अद्भुत तरीके से, वह सभी पेड़ों को उचित पोषण देता है, जिन्हें एक निश्चित प्रकार के भोजन की आवश्यकता होती है, और इसलिए वह मनुष्यों को उनकी शारीरिक और गैर-शारीरिक इंद्रियों, उनके दिमाग, दिल और आत्माओं को संतुष्ट करने के लिए "खाद्य पदार्थों" की एक विस्तृत मेज प्रदान करता है। यह ऐसा है जैसे ब्रह्मांड में हर तरह के भोजन से लदी सैकड़ों हज़ारों मेज़ें हैं, जो गुलाब की पंखुड़ियों और मकई के पत्तों के आवरण की तरह एक दूसरे के भीतर लिपटी हुई हैं। अनेक प्रकार की विशिष्ट और सार्वभौमिक भाषाओं के साथ, तथा मेजों, भोजन और उन पर रखे उपहारों की संख्या के अनुसार, ब्रह्माण्ड उन सभी लोगों को, जो पूर्ण रूप से अंधे नहीं हैं, एक अत्यन्त दयालु, दयावान और दानशील प्रदाता की ओर संकेत करता है।

यदि यह कहा जाए कि इस संसार में विपत्तियाँ, कुरूपताएँ और बुराइयाँ उस सर्वव्यापी दया के विपरीत हैं और इसे दूषित करती हैं।

उत्तर: इस अत्यंत जटिल प्रश्न का सम्पूर्ण और संतोषजनक उत्तर रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में दिया गया है , जैसे कि दिव्य नियति पर ग्रंथ (और छब्बीसवाँ शब्द)। आपको उनका संदर्भ देते हुए, हम यहाँ केवल एक संक्षिप्त संदर्भ देते हैं:

प्रत्येक तत्व, प्रत्येक प्राणी की प्रजाति, प्रत्येक प्राणी के अनेक कर्तव्य होते हैं, विशेष और सार्वभौमिक, और उनमें से प्रत्येक कर्तव्य अनेक परिणाम और फल देता है। ये परिणाम और फल अधिकांश मामलों में लाभकारी, सुंदर, अच्छे और दयालु होते हैं। उनमें से केवल कुछ, जो स्पष्ट रूप से बदसूरत और हानिकारक हैं, उन लोगों को मिलते हैं या होते हैं जिनमें अपने अंदर की अच्छाई को ग्रहण करने और उसे अच्छे के लिए उपयोग करने की आवश्यक क्षमता नहीं होती है, और जो गलत तरीके से कार्य करते हैं या जो दंड और अनुशासन के पात्र हैं, या जिनमें अच्छे के अनेक फल उत्पन्न करने की क्षमता होती है ताकि वे उन्हें विकसित कर सकें। उनमें दिखने में एक छोटी सी बुराई और कुरूपता होती है; उनमें दया की कमी दिखाई देती है। लेकिन अगर छोटी सी बुराई के अस्तित्व को न रखने के लिए किसी तत्व या सार्वभौमिक प्राणी को दया द्वारा अपना कर्तव्य करने से रोका जाए, तो उसके अन्य सभी अच्छे और सुंदर परिणाम अस्तित्व में नहीं आएंगे। चूंकि एक अच्छाई का अस्तित्व न होना बुराई है और सुंदरता का विनाश कुरूपता है, इसलिए बुराई, कुरूपता और निर्दयता संख्या में घटित होगी-

इन परिणामों में से बहुत से लोग हैं। इस प्रकार, बुराई और निर्दयता के सैकड़ों उदाहरण सिर्फ़ इसलिए किए जाएँगे ताकि एक बुराई न हो, और यह पूरी तरह से प्रभु की बुद्धि, लाभ और दया के विपरीत होगा। उदाहरण के लिए, बर्फ, ठंड, आग और बारिश जैसे सार्वभौमिक तत्वों के सैकड़ों लाभ और अच्छे उद्देश्य हैं। अगर अपने स्वयं के चयन या दुरुपयोग के माध्यम से, लापरवाह या नासमझ लोग इन तत्वों के कारण खुद को नुकसान पहुँचाते हैं - उदाहरण के लिए, अगर वे आग में हाथ डालते हैं और फिर कहते हैं कि आग बनाने में कोई दया नहीं है, तो आग के असंख्य अच्छे, लाभकारी और दयालु उपयोग उनका खंडन करेंगे और उन्हें चुप करा देंगे।

इसके अलावा, स्वार्थी मानवीय इच्छाएँ और नीच भावनाएँ, जो परिणामों के प्रति अंधी हैं, वे दया, संप्रभुता और आधिपत्य के नियमों का मूल्यांकन करने के लिए मानदंड, मापदंड या संतुलन नहीं हो सकतीं जो ब्रह्मांड में लागू हैं। हर कोई चीजों को अपने दर्पण के रंग के अनुसार देखता है।

जो व्यक्ति क्रूर और अंधकारमय हृदय वाला होता है, वह ब्रह्मांड को रोता हुआ, कुरूप, अंधकारमय और न्याय से रहित देखता है। लेकिन अगर वे विश्वास की नज़र से ब्रह्मांड को देखें, तो वे इसे एक विशाल मानव के रूप में देखेंगे, जो दया से मुस्कुराता है और स्वर्ग की हूर (युवती) की तरह सत्तर हज़ार सुंदर वस्त्रों में लिपटा हुआ है, जो दया, भलाई और ज्ञान से सिले हुए हैं। वे देखेंगे कि मानव जाति एक छोटा ब्रह्मांड है, और प्रत्येक व्यक्ति एक छोटा संसार है। वे अपने पूरे दिल और आत्मा से कहेंगे: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो संसारों का स्वामी है; वह अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है; वह न्याय के दिन का स्वामी है!"

चौथा वाक्य : न्याय के दिन का स्वामी

इस वाक्यांश के प्रमाण का एक बहुत ही संक्षिप्त संकेत निम्नलिखित है:

प्रथम: प्रथम स्टेशन के अंत में दिए गए सभी प्रमाण जो "और उसी की ओर घर वापसी है" तथा पुनरुत्थान और परलोक की सच्चाई की गवाही देते हैं, वे विश्वास की व्यापक सच्चाई की भी गवाही देते हैं जिसे "प्रलय के दिन का स्वामी" इंगित करता है।

दूसरा: जैसा कि दसवें वचन के अंत में कहा गया है, जिस प्रकार इस ब्रह्मांड के निर्माता की शाश्वत प्रभुता, दया, बुद्धि, कृपा, सौंदर्य, महिमा और पूर्णता, उसके अन्य सभी गुणों और नामों के साथ, निश्चित रूप से परलोक की मांग करती है, कुरान भी अपनी हजारों आयतों और वचनों के साथ परलोक में शाश्वत जीवन की गवाही देता है।

सबूत। पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और सभी

अन्य पैगम्बर भी अपनी अवतरित पुस्तकों या धर्मग्रंथों के माध्यम से उसी सत्य की ओर संकेत करते हैं, जिनमें से प्रत्येक असंख्य प्रमाणों से परिपूर्ण है। इसलिए, जो व्यक्ति परलोक के अनन्त जीवन में विश्वास नहीं करता, वह इस दुनिया में खुद को एक प्रकार के नरक में डालता है - एक ऐसा नरक जो अज्ञानता से उत्पन्न होता है-

और उन्हें लगातार पीड़ा का सामना करना पड़ता है। जैसा कि एक गाइड में वर्णित है
युवाओं के लिए, उनके क्षय, मृत्यु और अलगाव के माध्यम से, सभी अतीत और भविष्य की घटनाएं और प्राणी लगातार अविश्वासी के दिल और आत्मा पर अंतहीन दर्द की वर्षा करते हैं, जिससे उन्हें वास्तव में वहां जाने से पहले नरक की यातनाओं से गुजरना पड़ता है।

तीसरा: "न्याय का दिन" (यौमूद-दीन) एक विशाल और
पुनरुत्थान का शक्तिशाली प्रमाण। हालाँकि, इसमें निहित प्रमाणों को इंगित करने की यहाँ कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों ने सैकड़ों शक्तिशाली तर्कों के साथ साबित कर दिया है कि पुनरुत्थान और सर्वोच्च सभा की सुबह और वसंत निश्चित रूप से आएगा जैसे कि दिन रात के बाद और वसंत सर्दियों के बाद आता है।

पाँचवाँ वाक्य : हम केवल आपकी ही आराधना करते हैं
और हम केवल आपसे ही सहायता चाहते हैं

इस वाक्य में निहित प्रमाण को बताने से पहले, मुझे कल्पना की एक सच्ची यात्रा को संक्षेप में बताना चाहिए, जिसका वर्णन ट्वेंटी-
नौवां पत्र. यह इस प्रकार था:

जैसा कि रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में स्पष्ट किया गया है , विशेष रूप से इशारतुल-एजाज़ (चमत्कार के संकेत), जो कुरान की व्याख्या के लिए प्रकाश की कुंजी है, और रुमुज़ात-ए-तमानिया (आठ प्रतीक), जब मैंने सूरतुल-फ़तह के अंत में चार या पाँच चमत्कारी भविष्यवाणियाँ और आयत में एक ऐतिहासिक चमत्कार पाया, तो आज हम केवल तुम्हारे शरीर को बचाएंगे

(10:92), साथ ही कुरान के कई शब्दों में चमत्कारों की झलक और यहां तक कि कुरान के कुछ अक्षरों में भी चमत्कारों के बिन्दु, जो कि पवित्र प्रार्थना के दौरान सूरतुल-फातिहा का पाठ करते हैं, मेरे मन में यह प्रश्न आया: इस आयत में , कब प्रथम पुरुष एकवचन के स्थान पर , केवल तेरी ही हम उपासना करते हैं और केवल तुझसे ही सहायता मांगते हैं, हमें क्यों प्राथमिकता दी गई है?

अचानक उस "नन" (हम) के दरवाजे से एक चौड़ा रास्ता खुल गया , जो मुझे कल्पना की यात्रा पर ले गया। मैंने दृष्टि या अवलोकन के आधार पर निश्चितता की डिग्री पर महान महत्व और विशालता को समझा

सामूहिक रूप से विहित प्रार्थना करने के लाभ, और यह कि यह एक अक्षर एक चमत्कार है। यह इस प्रकार था:

इस्तांबुल में बायजीद मस्जिद में सामूहिक प्रार्थना करते समय मैंने कहा: “हम केवल आपकी ही पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं।” मैंने देखा कि मस्जिद में उपस्थित जनसमूह भी यही आयत पढ़ रहा था और उसके सभी सदस्य “हमें मार्गदर्शन प्रदान करें!” की प्रार्थना में भाग ले रहे थे, जो मेरी प्रार्थना की पुष्टि कर रही थी।

फिर एक और दृश्य दिखाई दिया और मैंने देखा कि इस्तांबुल की सभी मस्जिदें एक विशाल बायज़ीद मस्जिद बन गई थीं। उनके सभी लोग चिल्ला रहे थे: "हम सिर्फ़ आपकी पूजा करते हैं और सिर्फ़ आपसे ही मदद मांगते हैं," मेरी तरह, मेरी पुष्टि और विनती पर अपनी मुहर लगाते हुए और उनसे "आमीन!" कहते हुए।

फिर, जब मुझे लगा कि वे मेरे लिए मध्यस्थ का रूप ले रहे हैं, तो मेरी कल्पना में एक और दृश्य दिखाई दिया। मैंने देखा कि इस्लाम की दुनिया ने एक विशाल मस्जिद का रूप ले लिया है, जिसमें मक्का और काबा मेहराब के रूप में हैं , मस्जिद में वह जगह जहाँ इमाम खड़ा होता है। नमाज़ अदा करने वाले मुसलमानों की सभी पंक्तियाँ उस पवित्र जगह की ओर मुँह करके खड़ी थीं। मेरी तरह वे भी कह रहे थे "हम सिर्फ़ आपकी पूजा करते हैं और सिर्फ़ आपसे ही मदद माँगते हैं। हमें सीधे रास्ते पर ले चलो!" हर कोई सबके नाम पर प्रार्थना कर रहा था और एक ही कारण की पुष्टि कर रहा था, और ऐसा करके सभी को अपने लिए मध्यस्थ बना रहा था।

फिर, जब मैं सोच रहा था कि "इतने विशाल समुदाय का उद्देश्य और मार्ग गलत नहीं हो सकता और इसकी प्रार्थनाएँ निश्चित रूप से अस्वीकृत नहीं की जातीं - यह किसी भी शैतानी संदेह को खारिज करता है," और सामूहिक रूप से प्रार्थना करने के विशाल लाभों की पुष्टि करते हुए, एक और दृष्टि मेरे सामने आई। मैंने देखा कि ब्रह्मांड एक विशाल मस्जिद है जिसमें जीवों की असंख्य जातियाँ अपने जीवन और अस्तित्व के तरीके से और सहज स्वभाव की भाषा के माध्यम से प्रार्थना कर रही थीं। महामहिम के सर्व-पूज्य एक के सर्वव्यापी आधिपत्य के प्रति व्यापक पूजा के साथ प्रतिक्रिया करते हुए, प्रत्येक राष्ट्र अन्य सभी द्वारा प्रस्तुत दिव्य एकता की गवाही और पुष्टि की पुष्टि कर रहा था।

यह देखते हुए, एक और दृश्य सामने आया। मैंने देखा कि जैसे ब्रह्माण्ड रूपी वृहद मानव कह रहा था: "केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं," अपनी प्रवृत्ति की जीभ से, अपने घटक भागों से क्षमता और सहज आवश्यकता की जीभ से इसकी घोषणा करते हुए, और सचेतन प्राणी इसे मौखिक रूप से उच्चारण करते हुए, सभी इस प्रकार विभक्त हो रहे थे।

सृष्टिकर्ता की दयालु प्रभुता के समक्ष अपनी पूजनीय दासता निभाते हुए, मेरे शरीर के सभी परमाणु, क्षमताएं और इंद्रियां भी वही प्रदर्शित कर रही थीं, प्रत्येक अपनी आवश्यकता और समर्पण की जीभ के माध्यम से सृष्टिकर्ता की प्रभुता पर अपनी निर्भरता व्यक्त कर रहा था। इस प्रकार, उन्होंने भी दिखाया कि वे ईश्वरीय इच्छा और आदेश के अनुसार कार्य कर रहे थे और उन्हें हर पल अपने सृष्टिकर्ता की कृपा, दया और सहायता की आवश्यकता थी। सामूहिक रूप से प्रार्थना करने के पवित्र रहस्य और नन के सुंदर चमत्कार दोनों को विस्मय में देखने के बाद , मैंने नन के उसी द्वार से अपनी यात्रा छोड़ी, जिससे मैं प्रवेश किया था। "सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं!" मैंने कहा। इसके बाद, मैं उन तीन मंडलियों और मेरे इन सभी साथियों, बड़े और छोटे के लिए, श्लोक का पाठ करने का आदी हो गया, केवल आपकी ही हम पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता मांगते हैं।

अब हम परिचय समाप्त कर चुके हैं और अपने मुख्य विषय पर आ गए हैं। यह इस बात का संक्षिप्त संकेत है कि हम केवल आप ही की उपासना करते हैं और केवल आप ही से सहायता मांगते हैं:

सबसे पहले: हम अपनी आँखों से देखते हैं कि ब्रह्मांड में, और विशेष रूप से पृथ्वी पर, एक विस्मयकारी, निरंतर और नियमित दिव्य गतिविधि है, जिसके भीतर एक दयालु, संगठित, पोषण करने वाला और पूर्ण प्रभुत्व सक्रिय रूप से या मौखिक रूप से या जन्मजात असंतोष की भाषा के माध्यम से की गई मदद और विनती के लिए पूर्ण ज्ञान और अनुग्रह के साथ प्रतिक्रिया करता है। इसके अलावा, प्रभुत्व की इस सक्रिय प्रतिक्रिया के भीतर, स्वस्थ बुद्धि और विश्वास की आँखें देखती हैं, और सभी प्रकट शास्त्र और पैगंबर दिखाते हैं, कि एक पूर्ण दिव्यता की अभिव्यक्तियाँ और सार्वभौमिक रूप से पूजे जाने का गुण सभी प्राणियों द्वारा की जाने वाली पूजा के हजारों रूपों का जवाब देता है - विशेष रूप से चेतन प्राणी - और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मनुष्यों की जन्मजात पूजा और उनकी इच्छा के माध्यम से की जाने वाली पूजा दोनों का।

दूसरा: नन ऑफ़ ना'बुडू द्वारा दर्शाई गई और ऊपर वर्णित तीनों मण्डलियाँ अपनी अलग-अलग जन्मजात या स्वैच्छिक पूजा-अर्चना में एक साथ लगी हुई हैं। यह निस्संदेह ईश्वर के सर्व-पूज्य होने के प्रति एक आभारी प्रतिक्रिया है और पूजा की एक सर्व-पवित्र वस्तु के अस्तित्व के लिए एक निर्विवाद, असीम प्रमाण है। इसके अलावा, नन ऑफ़ नास्ताइन ("हम" में "हम मदद मांगते हैं") का अर्थ है कि ऊपर वर्णित तीन मण्डलियाँ - यानी, पूरे ब्रह्मांड और मण्डली के बीच से प्रत्येक समूह और प्रत्येक व्यक्ति

जीवित शरीर के अणु-उससे प्रार्थना करें और कार्य तथा स्वभाव दोनों से उससे सहायता मांगें। यह सभी संदेहों से परे एक सर्व-दयालु निर्देशक और आयोजक के अस्तित्व की गवाही देता है जो उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहता है, और जो उनकी प्रार्थना को स्वीकार करके उत्तर देता है। उदाहरण के लिए, जैसा कि तेईसवें वचन में बताया गया है, पृथ्वी पर सभी प्राणियों की तीन प्रकार की प्रार्थनाओं की अद्भुत, अप्रत्याशित स्वीकृति स्पष्ट रूप से एक सर्व-दयालु प्रभु और प्रार्थना का उत्तर देने वाले की गवाही देती है। वास्तव में, हम अपनी आँखों के सामने देखते हैं कि अनाज और बीज अपनी जन्मजात आवश्यकता की जीभ के माध्यम से अपने निर्माता से अंकुर और पेड़ बनने के लिए कहते हैं और उनकी प्रार्थना स्वीकार की जाती है।

इसी तरह हम यह भी देखते हैं कि जीव-जंतु अपनी जीविका और अपनी अन्य आवश्यकताओं के लिए जो प्रार्थना अपनी जन्मजात आवश्यकता की जीभ से करते हैं, वह भी स्वीकार की जाती है। बिल्कुल सही समय पर, अचेतन जीव मदद के लिए अपनी पुकार के लिए तत्पर हो जाते हैं। यह एक सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता के अस्तित्व की स्पष्ट गवाही देता है।

इस प्रकार, वर्णित दो प्रकार की प्रार्थनाओं के साथ - जन्मजात क्षमता की जीभ के माध्यम से की गई प्रार्थना और जन्मजात आवश्यकता की जीभ के माध्यम से की गई प्रार्थना - मनुष्यों द्वारा कही गई मौखिक प्रार्थनाओं की स्वीकृति, और विशेष रूप से पैगम्बरों और प्रतिष्ठित लोगों की प्रार्थनाओं की अद्भुत स्वीकृति, केवल आपसे ही हम सहायता मांगते हैं, में निहित दिव्य एकता के प्रमाण को प्रमाणित करती है।

छठा वाक्य: हमें सीधे मार्ग पर ले चलो

इस वाक्यांश में प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

जिस तरह दो जगहों के बीच सबसे छोटा रास्ता और दो बिंदुओं के बीच खींची गई सबसे छोटी रेखा सबसे सीधी और सबसे प्रत्यक्ष होती है, उसी तरह आध्यात्मिक पथों में सबसे सीधा और सबसे प्रत्यक्ष पथ सबसे छोटा और सबसे आसान होता है। उदाहरण के लिए, रिसाले-ए-नूर में विश्वास और अविश्वास के मार्गों के बीच की गई सभी तुलनाएँ निर्णायक रूप से प्रदर्शित करती हैं कि विश्वास और ईश्वरीय एकता का मार्ग बेहद छोटा, सीधा, सीधा और आसान है, जबकि अविश्वास और इनकार के मार्ग न केवल बेहद खतरनाक हैं, बल्कि बेहद लंबे, घुमावदार, पेचीदा और कठिन भी हैं। यानी, अविश्वास और ईश्वर के साथ साझेदारों की संगति इस बुद्धिमान ब्रह्मांड में स्वीकार्य नहीं है जहाँ सब कुछ सबसे सीधे, सबसे आसान और सबसे छोटे मार्ग पर चलता है, जबकि विश्वास और ईश्वरीय एकता की सच्चाईयाँ सूर्य की तरह ही आवश्यक और अनिवार्य हैं।

इसके अलावा, मानवीय नैतिकता और आचरण में सबसे छोटा, सुरक्षित, आसान और सबसे लाभदायक मार्ग सीधे मार्ग द्वारा स्थापित किया गया मार्ग है और चरम सीमाओं के बीच मध्यम, मध्यम मार्ग का अनुसरण करता है।

उदाहरण के लिए, अगर तर्क की शक्ति को बुद्धि से अलग कर दिया जाए, जो कि मध्यम मार्ग है, और संयम से भटक जाए, तो यह दो चरम सीमाओं में से किसी एक में गिर जाता है: हानिकारक जनवाद और धूर्तता, या विनाशकारी मूर्खता और मूर्खता। इन लंबे और कष्टदायक रास्तों पर इसे सभी तरह की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

इसी प्रकार, यदि क्रोध की शक्ति - आत्मरक्षा की शक्ति - साहस या वीरता के मार्ग का अनुसरण नहीं करती है, जो कि मध्यम मार्ग है, तो वह या तो सबसे अधिक हानिकारक, दमनकारी क्रोध और अत्याचार की चरम सीमा पर पहुंच जाती है या फिर एक नीच, दर्दनाक कायरता और भीरुता की विपरीत चरम सीमा पर पहुंच जाती है। सीधे मार्ग से भटक जाने के परिणामस्वरूप, उसे अंतःकरण की निरंतर पीड़ा सहनी पड़ती है।

और अगर पशुवत लालसा या वासना की शक्ति पवित्रता के सुरक्षित मध्य मार्ग को खो देती है, तो वह या तो एक भयावह, शर्मनाक व्यभिचार और अनैतिकता की चरम सीमा पर पहुँच जाती है या फिर शीतलता या शारीरिक इच्छाओं की कमी की विपरीत चरम सीमा पर पहुँच जाती है। वह खुद को उपहारों में निहित आनंद से वंचित कर लेती है और उस आध्यात्मिक बीमारी की पीड़ा को झेलती है।

इस प्रकार, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन के सभी मार्गों में से सीधा मार्ग सबसे आसान, सबसे छोटा और सबसे लाभदायक है। जबकि सीधा मार्ग खो जाने पर जो मार्ग अपनाए जाते हैं, वे लम्बे, हानिकारक और विपत्तियों से भरे होते हैं।

परिणामस्वरूप, जबकि गाइड अस टू द स्ट्रेट पाथ प्रार्थना और उपासना का एक व्यापक उदाहरण है, यह ईश्वरीय एकता, ज्ञान में शिक्षा और नैतिक प्रशिक्षण का प्रमाण भी दर्शाता है।

सातवाँ वाक्यांश : उन लोगों का मार्ग
जिस पर आपने कृपा की है

इस वाक्यांश में निहित प्रमाण का एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

सबसे पहले: यह आयत, ... जिन पर ईश्वर ने अनुग्रह किया है - पैगम्बर, और सच्चे लोग (ईश्वर के मार्ग के प्रति वफादार और जो कुछ वे करते और कहते हैं उसमें सच्चे), और गवाह (जो छिपे हुए ईश्वरीय सत्य को देखते हैं और अपने जीवन से उसकी गवाही देते हैं), और धर्मी लोग (अपनी सभी बातों और कार्यों में, और सब कुछ सही करने के लिए समर्पित) (4:69), इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करते हैं: "वे कौन हैं जिन पर उसने अनुग्रह किया है?" इस उत्तर के साथ, जो चारों कथनों को स्पष्ट करता है।

मानव जाति के बीच ऐसे लोगों के समूह जो सीधे मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं, आयत इन समूहों के नेताओं की ओर भी संकेत करती है। “पैगंबरों” से पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, को पैगंबरों के नेता के रूप में संदर्भित किया जा रहा है; “सच्चे” से जिसका मुख्य रूप से मतलब है वह अबू बकर सत्यवादी हैं; “गवाहों” से उमर, उस्मान और अली का उल्लेख किया जा रहा है; और “धर्मी लोगों” से अली के बेटे हसन का उल्लेख किया जा रहा है। इस प्रकार यह भविष्यवाणी करके कि अबू बकर, उमर, उस्मान, अली और हसन पैगंबर के बाद खलीफा होंगे, और यह कि उमर, उस्मान और अली शहीद होकर इस्लाम की सत्यता की गवाही देंगे, आयत चमत्कार की एक झलक दिखाती है।110

दूसरा: ईश्वरीय एकता का सत्य, जिसका दावा मानव जाति के इन सबसे श्रेष्ठ, सत्यनिष्ठ और ईमानदार समूहों ने आदम के समय से ही अपनी पूरी ताकत के साथ किया है और असंख्य प्रमाणों, चमत्कारों, आश्चर्यों, प्रमाणों और प्रकाशों का उपयोग करके सिखाया है, और जिसके प्रमाण को अधिकांश मानव जाति ने पुष्टि की है, वह निश्चित रूप से सूर्य के समान स्पष्ट है।

सैकड़ों-हजारों चमत्कारों और प्रमाणों के साथ, मानव जाति के इन प्रमुख सदस्यों ने ईश्वरीय एकता और सृष्टिकर्ता के अनिवार्य अस्तित्व जैसे परम सत्य को सिद्ध किया है और सर्वसम्मति से उन पर सहमति व्यक्त की है।

यह सबसे निर्विवाद प्रमाण है। क्योंकि मानव जाति ब्रह्मांड का सबसे महत्वपूर्ण फल है, जिसे इस धरती पर शासन करने और इसे विकसित करने के लिए नियुक्त किया गया है; और यह जीवित प्राणियों में सबसे श्रेष्ठ है और इसमें सबसे व्यापक क्षमता है। और ये चार समूह मानव जाति के सबसे सच्चे और पुष्ट मार्गदर्शक हैं, और पूर्णता में इसके नेता हैं। इसलिए, जो लोग इन सिद्ध व्यक्तियों द्वारा विश्वास किए गए सत्य को नहीं पहचानते या अस्वीकार करना चुनते हैं, वे ब्रह्मांड और दुनिया से लिए गए साक्ष्यों के साथ इसके अस्तित्व को साबित करते हैं।

---

110 अबू बकर, उमर, उस्मान और अली, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के चार प्रमुख साथी थे। अबू बकर उनके सबसे करीबी, वफादार साथी थे और उनके बाद खलीफा चुने गए थे। उमर, जो अपने न्याय, ईमानदारी और सूझबूझ के लिए विश्वव्यापी रूप से प्रसिद्ध थे; उस्मान, जिनके साथ पैगम्बर ने अपनी दो बेटियों को एक के बाद एक विवाह में दिया था, अपनी शुद्धता, दया और उदारता के लिए जाने जाते थे; अली ने पैगम्बर की प्यारी बेटी फातिमा से शादी की और पैगम्बर के वंशजों के पिता थे और अपनी बहादुरी, गहन ज्ञान और बुद्धिमत्ता के लिए प्रसिद्ध थे। ये सभी अबू बकर के बाद खलीफा चुने गए थे। हसन अली के सबसे बड़े बेटे थे और अपने छोटे भाई हुसैन के साथ पैगम्बर के दो सबसे प्रिय पोते थे और पैगम्बर के वंशज उनसे उत्पन्न हुए। हसन को अली के बाद खलीफा चुना गया, लेकिन छह महीने बाद उन्होंने मुआविया के पक्ष में इस्तीफा दे दिया। अबू बकर, उमर, उस्मान और अली और कई लोगों के अनुसार हसन को सही मार्ग पर चलने वाले खलीफा के रूप में जाना जाता है और पसंद किया जाता है। (ट्र.)

इसके भीतर के सभी प्राणी, एकमत होकर और ज्ञान की निश्चितता, दर्शन की निश्चितता और अनुभव की निश्चितता के स्तर पर - क्या ये अभागे व्यक्ति अपने अड़ियल अविश्वास में अनंत अपराध नहीं कर रहे हैं? क्या वे अनंत दंड के पात्र नहीं हैं?

आठवाँ वाक्य : उन लोगों का नहीं जिन्होंने

(तेरा) क्रोध और न ही उन लोगों का जो भटक गए हैं

इस वाक्यांश में निहित प्रमाण का संक्षिप्त संकेत इस प्रकार है:

सर्वसम्मत रिपोर्टों और कुछ घटनाओं, तथ्यों और अवलोकनों के आधार पर, मानव इतिहास और पवित्र शास्त्र हमें निम्नलिखित के बारे में स्पष्ट और निश्चित तरीके से जानकारी देते हैं:

जैसा कि हज़ारों घटनाओं से साबित होता है, पैग़म्बरों को, जो सीधे मार्ग के लोग हैं, अदृश्य से चमत्कारिक सहायता प्राप्त हुई; जो उन्होंने मांगा वह उन्हें बिल्कुल वैसा ही मिला, जबकि उनके अविश्वासी शत्रुओं को क्रोध और आकाशीय आघातों का सामना करना पड़ा। यह बिना किसी संदेह के दर्शाता है कि ब्रह्मांड और उसके भीतर मानव जाति के पास एक ऐसा सर्वज्ञ, न्यायी, कृपालु, दयावान, महिमावान, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी शासक और प्रभु है - जिसने, जैसा कि इतिहास में दर्ज है, नूह, इब्राहीम, मूसा, हूद और सालेह जैसे कई पैग़म्बरों को विजय और मुक्ति प्रदान की, उन पर शांति हो, जबकि आद और समूद जैसे कई अत्याचारी और अविश्वासी लोगों और फिरौन के लोगों पर इस दुनिया में पैग़म्बरों के खिलाफ़ उनके विद्रोह के लिए भयानक आकाशीय आघात किए।

आदम के समय से, उस पर शांति हो, दो शक्तिशाली संघर्ष

हम तक कई धाराएँ पहुँची हैं। एक है पैगम्बरों और उनके सच्चे, ईमान वाले अनुयायियों की, जिन्होंने सीधे रास्ते पर चलकर इस दुनिया में सच्ची खुशी पाई है और परलोक में भी मिलेगी। चूँकि वे सीधे रास्ते पर चलते हुए ब्रह्मांड की सच्ची सुंदरता और व्यवस्था के अनुसार सीधे और ईमानदारी से काम करते हैं, इसलिए उन्हें ब्रह्मांड के स्वामी के उपहार और इस दुनिया और परलोक में खुशी दोनों ही प्राप्त होती हैं। मनुष्य जाति के स्वर्गदूतों या उससे भी ऊपर के स्तर तक पहुँचने का साधन होने के नाते, ईमान की सच्चाइयों के , और पूर्णता माध्यम से वे इस दुनिया में एक तरह का स्वर्ग और परलोक में आनंद प्राप्त करते हैं, इस प्रकार दूसरों को भी इन्हें प्राप्त करने में मदद करते हैं।

जहाँ तक दूसरी धारा का सवाल है, चूँकि यह सीधे रास्ते से भटक जाती है और किसी भी चरम पर पहुँच जाती है, तर्क को यातना का साधन बना देती है, यह मानवता को जानवरों से भी नीचे गिरा देती है। इसके अलावा, अपने गलत कामों के परिणामस्वरूप इस दुनिया में ईश्वरीय प्रकोप के प्रहारों से पीड़ित होने के अलावा, क्योंकि तर्क मानव जाति को सभी प्राणियों से जोड़ता है, वे ब्रह्मांड को सामान्य शोक का स्थान और जीवित प्राणियों के वधगृह के रूप में देखते हैं, जो लगातार शून्य में गिर रहे हैं; वे इसे सबसे बदसूरत और भ्रमित के रूप में देखते हैं, और यह उनकी आत्माओं और विवेक को इस दुनिया में एक सतत नरक में पीड़ित करता है, यह सुनिश्चित करता है कि वे अगले में अनन्त पीड़ा के लिए अभिशप्त हैं।

इस प्रकार, सूरतुल-फातिहा की अंतिम आयत , "उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की है, न कि उन लोगों का जिन पर तेरा क्रोध आया है और न ही वे जो भटक गए हैं, हमें इन दो शक्तिशाली धाराओं के बारे में बताती है। यह रिसाले-ए-नूर में विश्वास और अविश्वास के बीच सभी तुलनाओं का स्रोत, आधार और शिक्षक भी है। चूँकि रिसाले-ए-नूर के ग्रंथ इस आयत को सैकड़ों तुलनाओं के साथ समझाते हैं, इसलिए हम आपको आगे की व्याख्या के लिए उनका संदर्भ देते हैं, और यहाँ इस संक्षिप्त संकेत के साथ काम चलाते हैं।

नौवां वाक्यांश : अमीन

इसका एक अत्यंत संक्षिप्त संकेत निम्नलिखित है:

नन (हम) नबुदु (हम पूजा करते हैं) और नस्ताइन (हम मदद मांगते हैं) में हमें तीन महान मण्डलियों (पांचवें वाक्यांश में उल्लिखित) की ओर संकेत करते हैं, विशेष रूप से उन लोगों की मण्डली जो इस्लाम की दुनिया की मस्जिद में ईश्वरीय एकता में विश्वास करते हैं और लाखों लोग एक ही समय में प्रार्थना करते हैं: इसमें हम भी शामिल हैं और, चूंकि हम और वे दोनों एक ही शब्द पढ़ते हैं, इसलिए यह हम सभी के लिए एक-दूसरे की प्रार्थना, पुष्टि और मध्यस्थता का हिस्सा प्राप्त करने का रास्ता खोलता है। बदले में, "आमीन" शब्द के माध्यम से, हम विश्वास करने वाले उपासकों की उस मण्डली की प्रार्थनाओं में शामिल होते हैं और उनका समर्थन करते हैं, जो वे कहते हैं उसकी पुष्टि करते हैं और यह दलील देते हैं कि उनकी मध्यस्थता और मदद के लिए अनुरोध स्वीकार किए जा सकते हैं। इस प्रकार, यह हमारी व्यक्तिगत पूजा, प्रार्थना और विनती को सार्वभौमिक, व्यापक पूजा में बदल देता है, जिससे हम सार्वभौमिक आधिपत्य का जवाब देने में सक्षम होते हैं। अर्थात्, विश्वास और इस्लामी एकता के भाईचारे और बहनचारे के रहस्य के माध्यम से, विहित प्रार्थनाओं के समय मुस्लिम दुनिया की मस्जिद में लाखों लोगों की एकता के बंधन के माध्यम से, और

आध्यात्मिक संचार के माध्यम से, सूरतुल-फातिमा के अंत में “अमीन” सार्वभौमिकता प्राप्त कर लेता है और लाखों “अमीन” बन सकता है।111

सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

भाग तीन

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और हम उसी से सहायता मांगते हैं

परिचय

यह सूरतुल-फातिहा और विश्वास की गवाही की घोषणा का पहला भाग था - मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है - जिसने मुझे इस रे का दूसरा भाग लिखने के लिए प्रेरित किया। अब मुझे विश्वास की घोषणा के दूसरे वाक्यांश द्वारा यह तीसरा भाग लिखने के लिए प्रेरित किया गया है, अर्थात मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, और सूरतुल-फातिहा के अंत में निम्नलिखित उदात्त आयतों द्वारा , जिसमें पाँच चमत्कारी भविष्यवाणियाँ हैं।

111 इस प्रकार, यदि प्रत्येक व्यक्ति की अपनी-अपनी डिग्री के अनुसार, एक साधारण व्यक्ति को इस पवित्र सत्य से बीज के समान एक छोटा सा हिस्सा मिलता है, तो एक सिद्ध व्यक्ति जो आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ चुका है, उसे ताड़ के पेड़ के समान हिस्सा मिल सकता है। लेकिन एक व्यक्ति जो आगे नहीं बढ़ा है, उसे फातिहा * पढ़ते समय जानबूझकर इन अर्थों को याद नहीं करना चाहिए, ताकि यह ईश्वरीय उपस्थिति के उनके एहसास को ख़राब न करे। जब वे इस तरह के स्तर पर आगे बढ़ेंगे, तो ये अर्थ, किसी भी मामले में, खुद को स्पष्ट कर देंगे।

* हमने अपने गुरु से पूछा कि उपरोक्त फुटनोट में “जानबूझकर” का क्या मतलब था, और हम यहाँ वही उत्तर लिख रहे हैं जो हमें मिला:

"मैं समझता हूँ कि फ़ातिहा और तशह्हुद के व्यापक, उच्च अर्थों पर जानबूझकर नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से और विस्तार से नहीं - जो ईश्वरीय उपस्थिति के प्रति एक प्रकार की असावधानी का कारण बनता है - बल्कि संक्षिप्त और संक्षिप्त रूप से, असावधानी को दूर करता है और पूजा और प्रार्थनाओं को एक चमक प्रदान करता है। यह प्रार्थना, फ़ातिहा और तशह्हुद के उच्च मूल्य को पूरी तरह से प्रदर्शित करता है। फ़ुटनोट में "जानबूझकर याद न करने" का अर्थ यह है कि कभी-कभी विस्तृत अर्थों में व्यस्त होने के कारण व्यक्ति प्रार्थना को भूल जाता है, जिससे ईश्वरीय उपस्थिति का एहसास कम हो जाता है। लेकिन मुझे लगता है कि अप्रत्यक्ष रूप से और संक्षिप्त रूप से उन पर विचार करने से बहुत लाभ मिलता है।"

रिसाले-ए-नूर के छात्रों के नाम पर हस्ताक्षरित ,

छोटा सुन्दर बारहसिंघ

> वही है जिसने अपने रसूल को ईश्वरीय मार्गदर्शन और सत्य धर्म के साथ भेजा, ताकि उसे सभी धर्मों पर प्रभुत्व प्रदान करे।
> अल्लाह के लिए गवाही काफ़ी है। मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं और जो लोग उनके साथ हैं, वे काफ़िरों के मुक़ाबले में दृढ़ और अटल हैं और आपस में दयालू हैं। तुम उन्हें (नमाज़ में) रुकूअ और सजदा करते हुए देखते हो, अल्लाह से कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हो। उनके चेहरों पर सजदे के निशान हैं। तौरात में उनका यही वर्णन है और इंजील में भी उनका यही वर्णन है : जैसे बीज ने अंकुर निकाला, फिर उसे मज़बूत किया और फिर अपने तने पर मज़बूती से खड़ा हो गया, और बोनेवालों को ख़ुश किया, कि उनके ज़रिए वह काफ़िरों को क्रोध से भर देता है। अल्लाह ने उनमें से जितने भी लोग ईमान लाए और अच्छे कर्म किए, उनसे क्षमा और बहुत बड़ा प्रतिफल देने का वादा किया है। (48:28-29)

इन आयतों से संबंधित विवरण, स्पष्टीकरण और प्रलेखित प्रमाण उन्नीसवें पत्र - मुहम्मद के चमत्कार - में पाए जा सकते हैं।

और अरबी में अल-हिज्बुन-नूरी। यहाँ मैं संक्षेप में और संक्षिप्त रूप से, संकेतों के शीर्षक के तहत, अल-हिज्बुन-नूरी का सारांश और ईश्वर की एकता या विश्वास की घोषणा के हिस्से का एक प्रकार का अनुवाद लिखूंगा, मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, जिसे मैं नमाज़ के बाद लगातार पढ़ता हूँ और जो अरबी में लिखा गया था।

पहला संकेत

पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिन्होंने ब्रह्मांड के स्वामी और उनकी शाश्वत दिव्यता और अनंत कृपाओं के प्रभुत्व की अभिव्यक्ति के लिए सार्वभौमिक पूजा और शिक्षा के साथ प्रतिक्रिया व्यक्त की, ब्रह्मांड के लिए सूर्य की तरह ही आवश्यक हैं। क्योंकि वे मानव जाति के सर्वोच्च गुरु और इसके सबसे महान पैगंबर हैं, दुनिया का गौरव हैं, और ईश्वरीय संबोधन से सम्मानित हैं: "यदि आप नहीं होते, तो मैं दुनियाओं का निर्माण नहीं करता।"[112] मुहम्मदी सत्य - वह सत्य जिसे उन्होंने अपने जीवन में अपनाया है।

मुहम्मद - दुनिया की रचना का कारण थे, और इसका परिणाम और सबसे उत्तम फल हैं। साथ ही, ब्रह्मांड से जुड़ी वास्तविकताएँ, जैसे कि इसकी सच्ची पूर्णताएँ, इसका सर्व-सुंदर और दयालु महामहिम के सामने रखे गए स्थायी दर्पणों में शामिल होना, उनके नामों की अभिव्यक्तियाँ, उनके बुद्धिमान, उद्देश्यपूर्ण कार्यों के कर्तव्य-बद्ध कार्य, और उनके सबसे सार्थक-

---

[112] 'अलियु'एल-कारी, अल-असरारू'एल-मारफु'आ, 385।

पूर्ण संदेश, इसका स्थायी संसार का बीज धारण करना, तथा यह तथ्य कि इसका परिणाम परलोक तथा सुख का क्षेत्र होगा जिसके लिए सभी चेतन प्राणी तरसते हैं - ब्रह्मांड के अस्तित्व से जुड़ी ये सभी वास्तविकताएं पैगंबर मुहम्मद के पास मौजूद सर्वोच्च सत्य तथा ईश्वर के दूत के रूप में उनके मिशन के माध्यम से साकार होती हैं। चूंकि ऐसा है, इसलिए ब्रह्मांड उनकी संदेशवाहकता को सबसे शक्तिशाली तथा निर्णायक रूप से प्रमाणित करता है। इसके अलावा, गैर-अस्तित्व, शून्यता, शाश्वत निष्पादन तथा पूर्ण विनाश से बचने के लिए, समस्त मानवजाति, वास्तव में सामान्य रूप से सभी चेतन प्राणी, तथा मुसलमान, तथा विशेष रूप से इस्लाम की दुनिया, निरंतर तथा ईमानदारी से अपनी व्यापक प्रकृति की सभी शक्तियों, अपनी सभी क्षमताओं की भाषाओं, तथा अपनी सभी प्रार्थनाओं, उपासनाओं तथा विनतियों के साथ शाश्वत स्थायी जीवन की खोज करते हैं। चूँकि यह मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरियत और मुहम्मदी सत्य है जो सबसे शक्तिशाली तरीके से अनन्त जीवन की निश्चित खुशखबरी देते हैं, यह मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरियत और मुहम्मदी सत्य दोनों की गवाही देता है और पुष्टि करता है कि वह मानवता का गौरव और सबसे महान प्राणी हैं। इसके अलावा, नियम के अनुसार: "कारण कर्ता या कर्ता की तरह है," करोड़ों विश्वासियों द्वारा हर दिन किए गए सभी अच्छे कर्मों के बराबर मुहम्मद के अच्छे कर्मों के रिकॉर्ड में दर्ज किए जाते हैं, और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का एक व्यक्ति उस स्तर (पूर्णता) तक पहुँचता है जो अरबों नेक उपासकों की सार्वभौमिक पूजा और दीप्ति के बदले में दिए गए इनाम से मिलता है। यह उस महान व्यक्ति (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरियत का एक और सबसे शक्तिशाली प्रमाण है।

दूसरा संकेत

निम्नलिखित में बीस से अधिक साक्ष्यों का उल्लेख है, जिन पर मैं अपने नियमित पाठ के दौरान विचार करता हूँ:

> मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं, जो अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ और विश्वसनीय हैं, तथा यह बात उनकी अशिक्षित होने के बावजूद भी, एक आदर्श धर्म, धार्मिक जीवन और शरीयत के साथ, सबसे दृढ़ विश्वास, पंथ और उपासना के साथ, सबसे ऊंचे आह्वान, प्रार्थनाओं और दुआओं के साथ, सबसे व्यापक संदेश के साथ, और पूर्ण दृढ़ता और अद्वितीय फलदायी चमत्कारों के साथ, उनके अचानक प्रकट होने की गवाही से प्रमाणित होती है।

पहली गवाही: यह मुहम्मद के पैगम्बर होने का प्रमाण है जो उनकी ग्यारह विशेषताओं और कथनों से आता है जिनका उल्लेख इस पुस्तक में किया गया है।

उपरोक्त अभिव्यक्तियाँ.

• यह पैगम्बर मुहम्मद की एक अद्वितीय विशेषता है कि यद्यपि वह पढ़ना या लिखना नहीं जानते थे, फिर भी वह अचानक और बिना किसी अनुभव के एक ऐसे धर्म के साथ प्रकट हुए जिसने चौदह शताब्दियों से अधिक समय तक विद्वानों और दार्शनिकों को आश्चर्यचकित किया है और प्रकट धर्मों में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। • यह भी अद्वितीय है कि इस्लाम, जो उनकी रिपोर्ट, शब्दों, कार्यों और आचरण से उभरा है, ने हर समय लाखों लोगों की आत्माओं, मन और दिमाग को शिक्षित और प्रशिक्षित किया है, और उन्हें आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रेरित किया है। • इसके

अलावा, उनका एक और अद्वितीय गुण यह है कि वह एक ऐसे शरिया के साथ प्रकट हुए जो इतना उत्कृष्ट है कि चौदह शताब्दियों तक इसने शासन किया है

यह अपने न्यायपूर्ण कानूनों से मानवजाति के पांचवें हिस्से को भौतिक और आध्यात्मिक प्रगति की ओर ले जाता है।

• साथ ही, वह व्यक्ति - उस पर शांति और आशीर्वाद हो, एक ऐसे विश्वास, पंथ और दृढ़ विश्वास के साथ प्रकट हुआ, जो इतना ऊंचा था कि सत्य के सभी लोग उसके विश्वास के स्तर से प्रकाशित और पोषित हुए और सभी ने एकमत से पुष्टि की कि उसका विश्वास सबसे ऊंचा और मजबूत था।

• इसके अलावा, यह तथ्य कि उस समय उनके असंख्य विरोधियों के विरोध के बावजूद उन्हें अपने संदेश और मिशन के बारे में ज़रा भी चिंता, संदेह या संदेह नहीं हुआ, यह भी दर्शाता है कि वे विश्वास की शक्ति और सार्वभौमिकता में बेजोड़ हैं। • ईश्वर की उनकी पूजा और ईश्वर के प्रति उनकी दासता ऐसी थी कि वे पूजा और दासता के सभी स्तरों और

आयामों को समाहित करते थे। किसी की नकल किए बिना, उन्होंने पूजा के सूक्ष्मतम बिंदुओं और आयामों का पालन किया, सबसे बड़ी अशांति और खतरों के समय में भी अपनी पूजा के कर्तव्य को पूरी तरह से पूरा किया। यह भी उनकी अतुलनीय विशेषताओं में से एक था।

• उन्होंने अपने सृष्टिकर्ता से प्रार्थना, प्रार्थना और विनती करने में ऐसी उत्कृष्टता प्रदर्शित की कि आज तक कोई भी व्यक्ति उनके स्तर तक नहीं पहुंच पाया, जबकि चौदह शताब्दियों से लगातार और परस्पर सहायक विचार और शिक्षाएं उनके पास हैं।

उदाहरण के लिए, अल-जौशानुल-कबीर की प्रार्थना में , जिसमें एक हजार एक दिव्य नामों को मध्यस्थ के रूप में लिया गया है, वह हमें अपने सृष्टिकर्ता से इस प्रकार परिचित कराता है कि उसके बाद से उसके समान कोई अन्य प्रार्थना अस्तित्व में नहीं आई।

संक्षेप में कहें तो ईश्वर के ज्ञान में भी वह बेमिसाल है। उसने लोगों को इतनी दृढ़ता से इस्लाम की ओर बुलाया और अपने पैगम्बर होने का ऐलान इतनी हिम्मत से किया कि यद्यपि उसकी क़ौम, उसके चाचा, दुनिया की महान शक्तियां और पिछले धर्मों के अनुयायी सभी उसका विरोध करते थे और उसके विरुद्ध थे, फिर भी उसने जरा भी डर या संकोच नहीं दिखाया, बल्कि उसने उन सभी को चुनौती दी और अपना काम सफलतापूर्वक पूरा किया। यह भी एक बेमिसाल विशेषता थी।

ये आठ अद्भुत, अद्वितीय गुण उनकी सत्यनिष्ठा और नबूवत के बहुत शक्तिशाली प्रमाण हैं। वे यह भी दर्शाते हैं कि उनकी पूर्ण गंभीरता और दृढ़ विश्वास, और उनकी पूर्ण विश्वसनीयता और सत्यनिष्ठा के बारे में पूर्ण निश्चय है। तशह्हुद में हर दिन इस्लाम की दुनिया, लाखों ज़बानों में यह घोषणा करती है: "ऐ पैगम्बर, आप पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत और बरकत भी हो।" यह उनकी नबूवत के प्रति समर्पण और उनके द्वारा लाई गई शाश्वत खुशी की खुशखबरी की पुष्टि करता है। कृतज्ञता और दायित्व की भावना के साथ यह कहते हुए: "ऐ पैगम्बर, आप पर सलामती हो!" उस निश्चित मार्ग के सामने जो शाश्वत जीवन की ओर ले जाता है, जिसे सभी मानव जाति गहन तड़प के साथ खोजती है, मुस्लिम समुदाय का प्रत्येक सदस्य आत्मा में उनसे मिलने जाता है और लाखों, बल्कि अरबों लोगों की ओर से उन्हें बधाई देता है।

दूसरी गवाही: यह बीस सार्वभौमिक गवाहियों में से एक है और इसमें कई अन्य गवाहियां सम्मिलित हैं।

मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा विश्वास के सभी सत्यों की गवाही के माध्यम से अपनी पूर्ण सत्यता के लिए विश्वसनीय हैं...

यानी ईमान के छह स्तंभों की सच्चाई और जीवन में उनका एहसास मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की पैगम्बरियत की पक्की गवाही देते हैं। उनके जीवन का सामूहिक व्यक्तित्व, उनके सभी दावों का आधार और उनकी नबूवत का सार ये छह स्तंभ हैं। इस प्रकार, ईमान के स्तंभों की सच्चाई और एहसास की गवाही देने वाले सभी सबूत साबित करते हैं कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निश्चित रूप से ईश्वर के दूत हैं और वह अपने दावों में सच्चे थे। सबूत

आख़िरत की सच्चाई के लिए ईमान के अन्य स्तंभों का विवरण ' ईमान के फल' और 'दसवें शब्द' के परिशिष्ट में दिया गया है; और प्रत्येक स्तंभ अपने प्रमाणों के साथ उसके पैग़म्बर होने का प्रमाण है।

तीसरी सार्वभौमिक गवाही: यह एक गवाही है जिसमें शामिल है हजारों अन्य साक्ष्य.

> मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सच्चे हैं, तथा अपने व्यक्तित्व की गवाही के माध्यम से विश्वसनीय हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जिसकी पुष्टि उनके सैकड़ों चमत्कारों और सिद्धियों और उनके उत्कृष्ट चरित्र से होती है।

अर्थात्: यह व्यक्ति, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने लिए सूर्य के समान तेजस्वी था। अपने सैकड़ों चमत्कारों और सिद्धियों तथा अपने सर्वोच्च चरित्र और नैतिकता के माध्यम से वह अपने स्वयं के संदेशवाहक और सत्यनिष्ठा की सबसे शक्तिशाली रूप से गवाही देता है।

मुहम्मद के चमत्कार नामक ग्रंथ में उनके चमत्कारों को ठोस कथनों के आधार पर सिद्ध , लगभग तीन सौ किया गया है। उदाहरण के लिए, जैसा कि आयतों में स्पष्ट रूप से कहा गया है, और चाँद फट गया (54:11), और जब तुमने फेंका, तो यह तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका; बल्कि भगवान ने फेंका (8:17), चाँद उनके हाथ की एक उंगली के हिलने से दो टुकड़ों में विभाजित हो गया;113 उसी हाथ से उसने एक मुट्ठी भर धूल हमलावर दुश्मन सेना पर फेंकी, जो फिर पीछे मुड़ी और धूल से अंधी हो गई।114 उसी हाथ की पाँच उंगलियों से पाँच झरनों में पानी बह निकला, जिससे प्यासे लोगों की एक पूरी सेना को पीने के लिए पर्याप्त पानी मिल गया, जिन्होंने इस चमत्कार की गवाही दी। यह अद्भुत घटना अन्य स्थानों पर दो बार और दोहराई गई।115 इसके अलावा, उसी हाथ की हथेली में छोटे-छोटे कंकड़ भी परमेश्वर की महिमा कर रहे थे, मानो वे मानव हों, और कह रहे थे: “परमेश्वर की महिमा सर्व-प्रसिद्ध है!”116 विद्वानों के अनुसार, वास्तव में, सैकड़ों, लगभग एक हजार ऐसे चमत्कारों का उल्लेख विश्वसनीय कथाओं में किया गया है, जिनमें से कुछ का उल्लेख अनेक विश्वसनीय व्यक्तियों की रिपोर्टों में मिलता है।

इसके अलावा, दोस्त और दुश्मन दोनों के अनुसार, पैगंबर मुहम्मद के पास प्रशंसनीय गुण और सबसे उत्कृष्ट चरित्र था;117 यह भी माना जाता है

---

113 अल-बुखारी, "मनक़िब" 27; मुस्लिम, "पाखंडी" 43-48।

114 मुस्लिम, "जिहाद" 81; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:303।

115 अल-बुख़ारी, "मनक़िब" 25; मुस्लिम, "फ़दाएल" 6, 7. 116 अल-बुख़ारी, अल-तारिखु'एल-कबीर, 8:442; अल-बज़ार, अल-मुस्नद, 9:431.

117 चौथे खलीफा अली, जो साहस के नायक थे, कहते हैं: "जब हम युद्ध से भयभीत हो गए, तो हमने ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की शरण ली।"

सभी सत्यनिष्ठ लोगों ने, जिन्होंने उनका अनुसरण करके आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त की है और सत्य को इस निश्चितता के साथ प्राप्त किया है कि पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की उपलब्धियाँ सर्वोच्च श्रेणी की थीं। मुस्लिम जगत की ऐतिहासिक आध्यात्मिक और बौद्धिक उपलब्धियाँ, जो उनके द्वारा बताए गए धर्म पर भरोसा करके प्राप्त की गईं, साथ ही शक्तिशाली इस्लाम की सच्चाइयाँ, उनकी असाधारण पूर्णता का एक और प्रमाण हैं। इसका निश्चित रूप से यह अर्थ है कि यह व्यक्ति, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने स्वयं के संदेशवाहक होने की सबसे शानदार और सार्वभौमिक तरीके से गवाही देता है।

चौथी गवाही: इसमें अनेक शक्तिशाली गवाहियाँ सम्मिलित हैं।

मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं, अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा कुरान की गवाही, जिसमें असंख्य सत्य और प्रमाण हैं, के कारण विश्वसनीय हैं।

अर्थात्, अपनी असंख्य सच्चाइयों और प्रमाणों के साथ, चमत्कारपूर्ण व्याख्या वाला कुरआन मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी और सत्यता की गवाही देता है।

कुरान चालीस मामलों में चमत्कारी है और इसने चौदह शताब्दियों को प्रकाशित किया है, तथा अपने अपरिवर्तनीय नियमों के माध्यम से मानव जाति के पांचवें भाग पर शासन किया है।
इसके अलावा, इसके अवतरण के समय से ही इसने अपने सभी विरोधियों को इसके जैसा या इसके सबसे छोटे सूरा का एक अनुमान भी पेश करने की चुनौती दी है, फिर भी किसी ने कभी हिम्मत नहीं की, या ऐसा कुछ भी पेश करने में सक्षम नहीं रहा। इसके अलावा, और जैसा कि सर्वोच्च संकेत में स्पष्ट रूप से समझाया गया है, कुरान के छह पहलू प्रकाशमान हैं और संदेह से भेद नहीं सकते: इसका ईश्वर का वचन होना छह सर्वोच्च स्तरों के प्रमाणों द्वारा समर्थित है, और यह छह अटल सत्यों पर आधारित है। इसके अलावा, कुरान को हर पल करोड़ों लोगों द्वारा उत्साह और सम्मान के साथ पढ़ा जाता है, और हजारों याद करने वालों के दिलों में सबसे अधिक श्रद्धा के साथ अंकित किया जाता है। सभी मुसलमानों का विश्वास और गवाही, विश्वास और इस्लाम के सभी सत्यों के लिए कुरान की गवाही पर आधारित है और विश्वास और इस्लाम के सभी विज्ञान इससे निकलते हैं। जिस तरह यह सभी पिछले प्रकट शास्त्रों (उनके मूल रूप में ईश्वर के शब्द होने के रूप में) की पुष्टि करता है, उसी तरह कुरान भी उनके द्वारा पुष्टि की जाती है। इस प्रकार, अपनी सारी सच्चाईयों और ईश्वर का वचन होने के सभी प्रमाणों के साथ, महान कुरान गवाही देता है-

---

यहाँ तक कि उनके शत्रुओं ने भी इस बात की पुष्टि कर दी कि मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - सबसे साहसी व्यक्ति थे।

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सत्यता और संदेशवाहक होने का उत्सव मनाएं।

पांचवीं, छठी, सातवीं और आठवीं सार्वभौमिक गवाहियाँ

मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं, अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा विश्वसनीय हैं, अल-जौशाऊल-कबीर की गवाही के कारण जो अपने संकेतों की पवित्रता के कारण, रिसाले-ए-नूर अपने प्रमाणों की शक्ति के कारण, अतीत की संकेतों की सर्वसम्मतता के कारण जो भावी पैगम्बर की ओर संकेत करती है, तथा भविष्य की हजारों घटनाओं की पुष्टि के कारण।

अर्थात्, अल-जौशनुल-कबीर, जो एक हज़ार एक ईश्वरीय नामों को स्पष्ट रूप से या संकेतात्मक रूप से इंगित करता है, एक अद्भुत प्रार्थना है जो एक मामले में कुरान से निकलती है। यह उन सभी अन्य प्रार्थनाओं से श्रेष्ठ है जो ईश्वर के ज्ञान में आगे बढ़ चुके लोगों द्वारा लिखी या संकलित और पढ़ी जाती हैं। यह एक प्रार्थना है जिसे महादूत गेब्रियल ने युद्ध के दौरान पैगम्बर को पढ़ने की सलाह दी थी। इस प्रकार, इसमें शामिल सभी सत्य और प्रभु के सभी बिल्कुल सटीक विवरण मुहम्मद की पैगम्बरियत और सच्चाई की गवाही देते हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। इसके अलावा, अपने एक सौ तीस भागों के साथ, रिसाले-ए-नूर, जो कुरान पर आधारित है और मुहम्मद की पैगम्बरियत के सभी सत्यों को तर्कसंगत और तार्किक रूप से स्थापित करता है, दार्शनिक रूप से गूढ़ और जटिल मामलों को सबसे उचित और आसान तरीके से सिखाता है, जैसे कि वे स्पष्ट रूप से देखने योग्य या आंखों से पहचाने जा सकते हैं। इस प्रकार, रिसाले-ए-नूर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी और सत्यनिष्ठा का एक सार्वभौमिक प्रमाण भी है।

इसके अलावा, अतीत - उनके जन्म से पहले - उनके पैगम्बर होने का एक सार्वभौमिक गवाह था, क्योंकि कई असाधारण घटनाएँ जिन्हें इर्शासत के रूप में जाना जाता है, जो उनकी पैगम्बरी की शुरुआत से पहले हुई थीं और जो विश्वसनीय चैनलों के माध्यम से वर्णित उनकी जीवनी की किताबों और इतिहास में वर्णित हैं, उनके पैगम्बर होने की पुष्टि करती हैं। ये कई अलग-अलग प्रकार की हैं। उनमें से कुछ का उल्लेख नीचे किया जाएगा, जबकि अन्य उन्नीसवें पत्र (मुहम्मद के चमत्कार) और विभिन्न ऐतिहासिक कार्यों में ठोस कथाओं के रूप में संबंधित हैं।

उदाहरण के लिए, पैगंबर के जन्म के समय के करीब, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, अबाबील के झुंड के पंजों से पत्थरों की बारिश हुई
(अरब में अज्ञात एक प्रकार का पक्षी) अब्राहम की सेना के सिर पर,

अबीसीनिया का यमनी गवर्नर, जो काबा को नष्ट करने आया था;118
पैगम्बर मुहम्मद के जन्म की रात को काबा की सभी मूर्तियाँ ढह गईं119 और फारसी सम्राट खुसरो का महल नष्ट कर दिया गया120
पारसियों की अग्नि, जो उनके अग्नि मंदिरों में एक हजार वर्षों से लगातार जल रही थी, भी उसी रात बुझ गयी।121

भिक्षु बहिरा122 और हलीमा अस-सादिया ने बताया कि जब मुहम्मद छोटे बालक थे, तब बादलों ने उनकी छाया की थी।123 ऐसी अनेक घटनाओं ने उनके पैगम्बर होने की भविष्यवाणी उनके स्वयं पैगम्बर होने की घोषणा करने से पहले ही कर दी थी।

इसके अलावा, ऐसी कई घटनाएँ थीं जिनके बारे में उन्होंने भविष्य में, यानी उनकी मृत्यु के बाद, होने की भविष्यवाणी की थी। कुछ भविष्यवाणियाँ उनके परिवार और साथियों तथा मुस्लिम विजयों के बारे में थीं। इनमें से लगभग अस्सी का उल्लेख ऐतिहासिक दस्तावेजों और पैगंबर की जीवनी के आधार पर उनके प्रामाणिक स्रोतों के साथ, उन्नीसवें पत्र (मुहम्मद के चमत्कार) में किया गया है। ये सभी भविष्यवाणियाँ - उदाहरण के लिए, कुरान पढ़ते समय 'उथमान, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो' की शहादत;124 कर्बला में हुसैन, अल्लाह उनसे प्रसन्न हो, की शहादत;125 सीरिया,126 और ईरान,127 और इस्तांबुल की विजय;128 अब्बासिद वंश का उदय 129 और चंगेज और हुलगु130 के हाथों उसका अंततः विनाश - सच साबित हुई हैं। और इसलिए, उनकी अन्य भविष्यवाणियों के साथ, जो या तो सच हो गई हैं या अभी भी सच होनी बाकी हैं, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सत्यता को साबित करने के लिए, भविष्य - उनकी मृत्यु के बाद का समय - भी मुहम्मद की पैगंबरी और उनके दावे की सत्यता को शक्तिशाली और सार्वभौमिक तरीके से प्रमाणित करता है।

---

118 इब्न हिशाम, अस-सिरातून-नबविया, 1:168 -173; इब्न साद, अत-तबकातुल-कुबरा, 1:91-92।

119 अल-बहाकी, अद-दलैलु'एन-नुबुव्वा, 1:19; अस-सुयुति, अल-हसैसुल-कुबरा, 1:81। अल-बहाकी, उक्त., 1:19, 126; अबू नुअयम, एड-

120 दलैलु'न-नुबुव्वा, 139. अल-बहाकी, उक्त, 1:19, 126; अबू नुअयम, उक्त., 139.

121

122 एट-तिर्मिज़ी, "मनक़िब" 3; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 2:672.

123 इब्न साद, अत-तबकातुल-कुबरा, 1:112; क़दी 'इयाज़, अश-शिफ़ा, 1:368. अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 3:110;

124 क़ादी 'इयाज़, अश-शिफ़ा, 1:339।

125 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 3:242, 256; अल-हकीम, अल-मुस्ताद्रक, 3:197. 126 अल-बुखारी, "फदैलु मदीना," 5; मुस्लिम, "हज" 496 -497. 127 अल-बुखारी, "जिहाद" 157; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 5:86-87।

128 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 4:335; अल-बुखारी, अल-तारिखु'एल-कबीर, 2:81; अल-हकीम, अल-मुस्तद्रक, 4:468.

129 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:209; अल-बहाकी, अद-दलैलु'एन-नुबुव्वा, 6:517। अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 4:4; इब्न अशूर, अत-तहरीर

130 वा'त-तनवीर, 8:423।

नौवीं, दसवीं, ग्यारहवीं और बारहवीं गवाहियाँ

> मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं, अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा मुहम्मद के परिवार के सदस्यों द्वारा उनके सत्यनिष्ठ होने की गवाही के माध्यम से विश्वसनीय हैं, जो अनुभव के आधार पर निश्चितता के स्तर पर उनके विश्वास की शक्ति के माध्यम से है, तथा उनके साथियों द्वारा उनके दर्शन या अवलोकन के आधार पर उनके पूर्ण विश्वास के माध्यम से, तथा शुद्ध विद्वानों द्वारा उनके ज्ञान के आधार पर उनके अन्वेषण और सत्यापन की शक्ति के माध्यम से, तथा आध्यात्मिक ध्रुवों द्वारा उनके सत्यापित प्रकाशनों और अनावरणों के आधार पर उनके रसूल होने पर उनकी सहमति के माध्यम से।

अर्थात् मुहम्मद की सच्चाई के सार्वभौमिक प्रमाणों में से-
उनके दावे की पूर्णता और सत्यता निम्नलिखित हैं:

नौवां: मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के परिवार के सदस्यों को पैगंबर के वर्णन के अनुसार सम्मानित किया जाता है: "मेरे समुदाय के विद्वान इसराइल के बच्चों के पैगंबरों की तरह हैं"131 (जिस मिशन को वे निभाते हैं और निभाते हैं, बेशक, रहस्योद्घाटन प्राप्त करने के अलावा)। उनका उल्लेख अब्राहम (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के परिवार के पैगंबरों के साथ भी किया जाता है, जब ईश्वर की कृपा और शांति उन पर बुलाई जाती है। अनुभव पर आधारित उनके पूर्णतया निश्चित विश्वास, उनके आध्यात्मिक अनावरण, प्रकाश और दर्शन, उनके चमत्कारी कार्यों और असाधारण मार्गदर्शन से उन्होंने मुस्लिम समुदाय, महान संतों, आध्यात्मिक स्तंभों और इस परिवार के इमामों, जैसे अली, हसन, हुसैन और पैगम्बर के परिवार के शेष बारह इमामों132, और व्यक्तियों जैसे ग़ौथुल-आज़म अब्दुल-कादिर अल-जिलानी, अहमद अर-रुफई, अहमद अल-बदावी, इब्राहीम अद-दसूकी और अबुल-हसन अश-शदीली133 को प्रदान किया है - इन सभी ने अपने विश्वास और साक्ष्यों के माध्यम से मुहम्मद -उन पर शांति और आशीर्वाद हो, और उनकी पैगम्बरी की सत्यता की पुष्टि की है।

---

131 अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 4:384.

132 बारह इमाम हैं: 'अली इब्न अबी तालिब, अली का पुत्र हसन, अली का पुत्र हुसैन, अली ज़ैनुल-
'हुसैन का पुत्र आबिदीन, 'अली ज़ैनु'एल-'आबिदीन का पुत्र मुहम्मद अल-बाकिर, मुहम्मद अल-बाकिर का पुत्र जाफ़र अस-सादिक, जाफ़र अस-सादिक का पुत्र मूसा काज़िम, 'अली अर-रिज़ा' मूसा काज़िम के पुत्र, मुहम्मद अत-ताक़ी 'अली अर-रिज़ा के पुत्र, 'अली अन-नक़ी मुहम्मद अत-ताक़ी के पुत्र, हसन अल-अस्करी 'अली अन-नक़ी के पुत्र, मुहम्मद अल-महदी' अली एन के पुत्र -नकी. (ट्र.)

133 शेख हसन अश-शादिली (1195-1258): इस्लाम के अग्रणी, सबसे प्रसिद्ध संतों में से एक। वे टुनस में रहते थे और तीर्थयात्रा के लिए मक्का की अपनी अंतिम यात्रा के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने शादिलिया की स्थापना की, जो सबसे महत्वपूर्ण सूफी बिरादरी में से एक है। (ट्र.)

दसवीं बात: शुरू में अनपढ़ बेडौइन होने के बावजूद, पैगम्बर के साथियों ने, जिन्हें पैगम्बरों के बाद सबसे श्रेष्ठ और सम्मानित समूह माना जाता है, मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की रोशनी का लाभ उठाया और थोड़े समय में मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के बहुत बड़े क्षेत्र पर न्याय के साथ शासन किया, स्पेन से चीन तक फैली खिलाफत पर शासन किया। उन्होंने उस समय की विश्व-शक्तियों को हराया और तत्कालीन उन्नत, शिक्षित और सभ्य राष्ट्रों के स्वामी, शिक्षक, न्यायाधीश और न्यायप्रिय प्रशासक बन गए, जिससे वह सदी खुशहाली के युग में बदल गई। पैगंबर के आचरण के हर पहलू की जांच करने के बाद, और अपनी आंखों से देखे गए कई चमत्कारों की शक्ति के माध्यम से, उन्होंने अपनी पुरानी दुश्मनी और अपने पूर्वजों के तरीकों को त्याग दिया, उनमें से कई - खालिद इब्न वालिद134 और इक्रीमा इब्न अबी जहल135 - ने अपने पूर्वजों की जनजातीयता को त्याग दिया। उन्होंने दिल और आत्मा से इस्लाम को अपनाया और सच्चे समर्पण और त्याग की भावना से मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सच्चाई और उनकी पैगम्बरियत पर विश्वास किया, जो कि दर्शन या अवलोकन पर आधारित निश्चितता की हद तक थी। यह एक अटल, सार्वभौमिक प्रमाण है।

ग्यारहवां: हजारों स्पष्ट तर्कों और निश्चित प्रमाणों के आधार पर, हजारों सजग विद्वानों ने, जिनमें विशेष रूप से शीर्ष स्तर के धार्मिक विद्वान शामिल हैं, जिन्हें शुद्ध, सत्यवादी कहा जाता है, और इब्न सिना (एविसेना)136 और इब्न रुश्द (एवरोएस)137 जैसे प्रतिभाशाली दार्शनिक , प्रत्येक ने अपने-अपने तरीके का पालन करते हुए, सत्य में विश्वास किया है।

---

134 खालिद इब्न वालिद (592?–642) मानव इतिहास के सबसे प्रसिद्ध, अजेय सेनापतियों में से एक हैं। वह मक्का की सेना के कमांडर थे, जिन्होंने 625 में उहुद की लड़ाई के दूसरे चरण में मुसलमानों को पीछे धकेल दिया था। उन्होंने 627 में हुदैबिया की संधि के बाद इस्लाम धर्म अपना लिया। उन्होंने पैगंबर की मृत्यु के बाद धर्मत्यागी असंतुष्टों के खिलाफ़ विजयी लड़ाई लड़ी, यरमुक में बीजान्टिन को हराया और सीरिया और अनातोलिया के कई शहरों पर विजय प्राप्त की। (ट्र.)

135 अबू जहल के बेटे इक्रीमा इब्न अबी जहल (मृत्यु, 635) अपने पिता की तरह इस्लाम और ईश्वर के रसूल (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सबसे कट्टर दुश्मनों में से एक थे। मक्का की विजय के बाद वे मुसलमान बन गए। वे यरमुक की लड़ाई में शहीद हो गए। (ट्र.)

136 अबू अली इब्न सिना (एविसेना) (980-1037): इस्लामी परंपरा के स्वर्ण युग के सबसे प्रमुख दार्शनिकों, गणितज्ञों और चिकित्सकों में से एक। पश्चिम में उन्हें उनके प्रसिद्ध चिकित्सा ग्रंथ अल-क़ानून ("कैनन") के लिए "चिकित्सकों के राजकुमार" के रूप में भी जाना जाता है।
लैटिन अनुवादों में, उनकी रचनाओं ने कई ईसाई दार्शनिकों को प्रभावित किया, जिनमें सबसे उल्लेखनीय थॉमस एक्विनास थे। (ट्र.)

१३७ इब्न रुश्द, मुहम्मद इब्न अहमद (११२६-११९८ ई.) प्रारंभिक इस्लामी दर्शन, इस्लामी धर्मशास्त्र, मालिकी कानून और न्यायशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान, अरबी संगीत सिद्धांत के एक मास्टर थे।

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सत्यता और उनके पैगम्बरत्व की डिग्री निश्चितता आधारित ज्ञान पर आधारित है। उनकी गवाही इतनी सर्वव्यापी है कि कोई भी उनका विरोध नहीं कर सकता जब तक कि उनकी बुद्धि इन सभी महान विचारकों, या शायद उनसे भी अधिक का संयोजन न हो।

रिसाले -ए-नूर को इन असंख्य विद्रोहों में से अंतिम में गिना जा सकता है।
गवाहों.

बारहवां: प्रकाश, दर्शन, और अनावरण या आध्यात्मिक खोज के आधार पर, आध्यात्मिक "ध्रुव", जो सत्यनिष्ठ लोगों में सबसे गहन हैं और जिनमें से प्रत्येक ने अपने निर्देशन के घेरे में खींचा है-

मुस्लिम समुदाय के एक महत्वपूर्ण हिस्से को अपने असाधारण मार्गदर्शन और चमत्कारी कार्यों से आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करते हुए - इन सभी ध्रुवों ने अपनी आध्यात्मिक प्रगति में यह समझ लिया है कि मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ईश्वर के दूत थे, कि वे अपने दावों में पूरी तरह से सच्चे थे, और उनकी सत्यता बहुत उच्च स्तर की थी। उनके पैगंबर होने के बारे में उनकी सर्वसम्मत और परस्पर सहायक गवाही ऐसी पुष्टि करती है कि कोई भी व्यक्ति जिसने अभी तक उन सभी के बराबर पूर्णता की डिग्री प्राप्त नहीं की है, उसे रद्द करने में सक्षम नहीं है।

तेरहवीं गवाही: इसमें चार सार्वभौमिक, निश्चित,
और अत्यंत व्यापक प्रमाण:

> मुहम्मद ईश्वर के संदेशवाहक हैं, जो अपनी घोषणाओं और वादों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा अतीत की गवाहियों, द्रष्टाओं, कुछ विशेष प्रकार के आत्मिक प्राणियों और ज्ञानियों की सहमत भविष्यवाणियों, तथा पिछले पवित्र धर्मग्रंथों में पूर्ववर्ती संदेशवाहकों और पैगम्बरों के बारे में मुहम्मद के संदेशवाहक होने की शुभ सूचना की गवाही के माध्यम से विश्वसनीय हैं।

उपरोक्त अनुच्छेद का संक्षिप्त विवरण यहां दिया जाएगा; अधिक विस्तृत विवरण, जिसमें संचरण की प्रासंगिक श्रृंखलाएं शामिल हैं, मुहम्मद के चमत्कार (उन्नीसवां पत्र) के अंत में पाया जा सकता है।

इतिहास और हदीस तथा जीवनी की पुस्तकों में ऐसी सुदृढ़ कथाएं हैं, जिनमें से कुछ विश्वसनीय कथावाचकों की कई शृंखलाओं पर आधारित हैं, जो बताती हैं कि अतीत में मानव जाति के बीच सबसे प्रमुख और प्रसिद्ध

वह विज्ञान, चिकित्सा, खगोल विज्ञान, भूगोल, गणित और भौतिकी के क्षेत्र में भी जाने जाते थे। वह स्पेन में रहते थे और उनकी मृत्यु मोरक्को में हुई। उन्हें पश्चिम में उनके लैटिनकृत नाम एवर-रोज़ से जाना जाता था। उन्हें पश्चिमी यूरोप में धर्मनिरपेक्ष विचार के संस्थापक पिता के रूप में वर्णित किया गया है।
उन्होंने विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 70 रचनाएँ लिखीं। (अनुवाद)

कई बार, खास तौर पर पैगंबरों और ज्ञानियों, द्रष्टाओं और कुछ जिन्नों ने सर्वसम्मति से, स्पष्ट रूप से और बार-बार मुहम्मद के आने की भविष्यवाणी की, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। इन हजारों भविष्यवाणियों में से सबसे शक्तिशाली और निश्चित उन्नीसवें पत्र में मुहम्मद के चमत्कार शीर्षक से विस्तृत है। पाठक को उस ग्रंथ का संदर्भ देते हुए, यहाँ हम केवल एक संक्षिप्त संकेत देते हैं:

प्रकट किए गए धर्मग्रंथों - तौरात, स्तोत्र और सुसमाचार - में सैकड़ों आयतों में से बीस आयतें जो मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी के संबंध में लगभग स्पष्ट हैं, उन्नीसवें पत्र (मुहम्मद के चमत्कार) में वर्णित हैं। हुसैन अल-जिसरी138 ने इन पुस्तकों में मुहम्मद की पैगम्बरी का संकेत देने वाली सौ आयतें खोजीं, यहूदियों और ईसाइयों द्वारा उनमें किए गए कई भ्रष्टाचारों और परिवर्तनों के बावजूद, और उन्हें अपनी पुस्तक में दर्ज किया।

कई विश्वसनीय कथावाचकों द्वारा प्रसारित एक ठोस कथन के अनुसार, द्रष्टाओं, और विशेष रूप से शिक्क और सतीह, जो जिन्न और आत्मिक प्राणियों के माध्यम से अदृश्य के बारे में जानकारी देने में सक्षम थे,139 ने स्पष्ट रूप से हिजाज़ में एक पैगम्बर के प्रकट होने की भविष्यवाणी की थी, और कहा था कि वह फ़ारसी साम्राज्य को नष्ट कर देगा। इसी तरह, काब इब्न लुअय, एक ज्ञानी और पैगम्बर के पूर्वजों में से एक, उस समय के कई अन्य ज्ञानियों और संतों के साथ, जैसे कि यमन और अबीसीनिया के शासक, सैफ़ इब्न धी यज़ान और तुब्बा ने स्पष्ट रूप से मुहम्मद के पैगम्बर होने की भविष्यवाणी की, और अपनी कविता में इसका ऐलान किया।140 इनमें से सबसे महत्वपूर्ण और सत्य उन्नीसवें पत्र में शामिल हैं। उनमें से एक

राजाओं ने तो यहाँ तक कहा: "मैं इस राज्य पर शासन करने की अपेक्षा मुहम्मद का सेवक बनना अधिक पसंद करूँगा।"141 एक अन्य ने कहा: "यदि मैं उन्हें देखने के लिए पर्याप्त समय तक जीवित रहता, तो मैं उन्हें देख सकता था।"

138 हुसैन अल-जिसरी (1845-1909) का जन्म और मुख्य रूप से लेबनान में ही रहा। वह इस्लामी विज्ञान में पारंगत थे और प्राकृतिक विज्ञान में उनकी रुचि थी। उन्होंने एक मदरसा स्थापित किया जहाँ दोनों तरह के विज्ञान पढ़ाए जाते थे। धार्मिक और समकालीन मुद्दों पर उनके विचार सैद नूरसी से काफी मिलते-जुलते थे। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचना रिसालती हमीदिया है। (अनुवाद)

139 इस्लाम से पहले, ईश्वर ने कुछ जिन्न और अन्य प्रकार की आत्माओं को स्वर्ग में जाने की अनुमति दी थी ताकि वे फ़रिश्तों की बातचीत सुन सकें। उन्होंने जो सुना उसे द्रष्टाओं तक पहुँचाया, जिन्हें आज माध्यम कहा जाता है। हालाँकि, जब कुरान का अवतरण शुरू हुआ, तो ईश्वर ने जिन्न और अन्य प्रकार की आत्माओं को फ़रिश्तों की बातें सुनने की अनुमति नहीं दी। (अनुवाद)

140 देखें इब्न हिशाम, अस-सिरातून-नबाविया, 1:29-30, 124-129, 158, 190-192; इब्न साद, अत-तबकातुल-कुबरा, 1:158-159; इब्न कथिर, अल-बिदया वान-निहाया, 2:244; अल-बहाकी, अद-दलैलु'एन-नुबुव्वा, 1:126-130, 2:12; अबू नुअयम, विज्ञापन-दलैलु'एन-नुबुव्वा, 90, 97-98, 125-128। (ट्र.)

141 अबू दाऊद, "जनाईज़" 58; अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:461।

उसका चचेरा भाई होता।"142 इससे उसका मतलब था कि वह उसका एक आत्म-त्यागी सेवक और मंत्री होता, जैसे अली इब्न अबी तालिब थे।
पैगम्बर की जीवनी के इतिहास और पुस्तकों में इन सभी भविष्यवाणियों को शामिल किया गया है, जिससे पता चलता है कि ज्ञानियों ने मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो - की सत्यता और उनके संदेशवाहक होने की शक्तिशाली, सार्वभौमिक गवाही के साथ पुष्टि की है।

इसके अलावा, इन ज्ञानियों और भविष्यवक्ताओं की तरह, हतीफ नामक आत्माएं , जिन्हें सुना तो जा सकता है लेकिन देखा नहीं जा सकता, ने मुहम्मद के पैगम्बर होने के बारे में स्पष्ट भविष्यवाणियां कीं। इसके अलावा, उनके पैगम्बर होने की भविष्यवाणी करके, कई अन्य प्राणियों और वस्तुओं ने भी उनके पैगम्बर होने और उनकी सच्चाई की पुष्टि की: जानवरों को मूर्तियों के लिए बलि दी गई और उन पर शिलालेखों के साथ, खुद मूर्तियाँ और कब्र के पत्थर गवाही देते हैं, इतिहास की भाषा के माध्यम से गवाही देते हैं।

चौदहवीं गवाही: मूलतः अरबी भाषा में लिखी गई यह गवाही ब्रह्माण्ड की शक्तिशाली गवाही को इंगित करती है:

> मुहम्मद ईश्वर के संदेशवाहक हैं, जो अपनी घोषणाओं और वचनों में सदैव सत्यनिष्ठ हैं, तथा मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की सर्वव्यापी संदेशवाहकता के प्रति ब्रह्माण्ड की गवाही के माध्यम से विश्वसनीय हैं, इसके सभी उद्देश्यों और इसमें निहित ईश्वरीय उद्देश्यों के साथ, इन उद्देश्यों और इसमें निहित ईश्वरीय उद्देश्यों की प्राप्ति, इसके मूल्य की स्थापना और इसके कर्तव्यों का पालन, इसकी सुंदरता और पूर्णता की अभिव्यक्ति, और इसके सत्यों में ज्ञान की प्राप्ति मानव जाति के अस्तित्व और मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की संदेशवाहकता पर निर्भर है, क्योंकि उनकी संदेशवाहकता ने इन्हें प्रकट किया और उनकी प्राप्ति का साधन थी। यदि उनकी संदेशवाहकता न होती, तो यह पूर्ण ब्रह्माण्ड, यह महान और शाश्वत अर्थपूर्ण पुस्तक, व्यर्थ हो जाती: इसके अर्थ लुप्त हो जाते और इसकी पूर्णताएँ पूरी तरह से क्षीण हो जातीं, जो कि कई कारणों से असंभव है।

सर्वोच्च चिन्ह (सातवीं किरण) में, उपरोक्त अनुच्छेद की व्याख्या निम्नलिखित तरीके से की गई है:

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड अपने निर्माता, लेखक और लेखक को इंगित करता है—वह एक है जिसने इसे बनाया है, इसे व्यवस्थित किया है, और जो इसे प्रशासित करता है, और जो इसे सजाने, निर्धारित करने और योजना बनाने में, इसे निर्देशित करता है और बनाए रखता है

---

142 इब्न कथिर, अल-बिदया वान-निहाया, 2:166; तफसीरू'एल- कुरान, 4:145; अल-कुर्तुबी, अल-जामी' ली-अहकामीएल- कुरान, 16:145।

चाहे वह महल हो, किताब हो, प्रदर्शनी हॉल हो या कला दीर्घा हो, लेकिन वहाँ भी एक महान संदेशवाहक, एक सच्चा खोजकर्ता, एक सख्त गुरु और एक वफादार शिक्षक होना चाहिए जो सृष्टि में दिव्य उद्देश्यों को समझेगा और उन्हें प्रकट करेगा। इसके लिए एक ऐसे व्यक्ति के अस्तित्व की आवश्यकता है जो ब्रह्मांड के परिवर्तनों और रूपांतरणों में निहित प्रभुत्व के ज्ञान के उदाहरणों को सिखाएगा, और जो इसके कर्तव्यपूर्ण गतियों के परिणामों की घोषणा करेगा, इसके अंतर्निहित मूल्य और इसके भीतर के प्राणियों की पूर्णता की घोषणा करेगा। यह संदेशवाहक, खोजकर्ता, गुरु और शिक्षक अविश्वसनीय प्रश्नों का उत्तर भी देगा, जैसे: ये प्राणी कहाँ से आते हैं? वे कहाँ जा रहे हैं?

वे यहाँ क्यों आ रहे हैं? वे यहाँ कुछ समय क्यों रुकते हैं और फिर चले जाते हैं? इस तरह से वह उस वृहद पुस्तक के अर्थों और उसके निर्माण और संचालन की घटनाओं की व्याख्या करेगा, जो सभी उसके निर्माता और निर्देशक की ओर संकेत करते हैं। इस प्रकार, ब्रह्मांड मुहम्मद की सत्यता की गवाही देता है, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, एक शक्तिशाली और सार्वभौमिक तरीके से; यह वह था जिसने इन कर्तव्यों को किसी से भी बेहतर तरीके से निभाया, और वह ब्रह्मांड के निर्माता का सर्वोच्च और सबसे वफादार अधिकारी था। इस प्रकार ब्रह्मांड पुष्टि करता है: "मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं।"

मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) द्वारा लाए गए प्रकाश के माध्यम से, ब्रह्मांड की प्रकृति, मूल्य और पूर्णताएं ज्ञात होती हैं, और इसके भीतर के प्राणियों के कर्तव्यों, परिणामों और मूल्य के साथ-साथ इस तथ्य को भी जाना जा सकता है कि वे निर्माता के कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी हैं।

ऊपर से नीचे तक, ब्रह्मांड अर्थ से भरे दिव्य संदेशों का संग्रह, प्रभु का मूर्त कुरान और सर्व-महिमावान के कार्यों का एक शानदार प्रदर्शन साबित हुआ है। अन्यथा यह एक उजाड़, भ्रमित खंडहर बन गया होता - शोक का एक भयानक स्थान, जो क्षय, मृत्यु, अस्तित्वहीनता और शून्यता के अंधेरे के पर्दे के नीचे ढह रहा होता। यह इस सत्य का परिणाम है कि ब्रह्मांड की पूर्णता, इसमें बुद्धिमान परिवर्तन और रूपांतरण, और इसके शाश्वत अर्थ सभी शक्तिशाली तरीके से घोषणा करते हैं: "हम गवाही देते हैं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं!"

पंद्रहवीं गवाही: मूल रूप से अरबी में लिखी गई इस गवाही में कई पवित्र गवाहियाँ हैं। यह मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी की पवित्र गवाही को दर्शाता है, जो अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के दयालुता के कार्यों और कार्यों से निकलती है, जो ब्रह्मांड को निर्देशित और नियंत्रित करता है, और जिसकी इच्छा, आदेश और शक्ति के माध्यम से सभी परिवर्तन और रूपांतरण होते हैं।

साथ ही समस्त गति और विश्राम, समस्त जीवन और मृत्यु, समस्त ब्रह्माण्ड में, सूक्ष्मतम कणों से लेकर ग्रहों तक, घटित होते हैं।

> मुहम्मद ईश्वर के संदेशवाहक हैं, जो अपनी घोषणाओं और वादों में हमेशा सच्चे हैं, और ब्रह्मांड के मालिक, निर्माता, निर्देशक और नियंत्रक की गवाही के माध्यम से मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी के लिए विश्वसनीय हैं, उनकी दया के कार्यों और उनके प्रभुत्व के कार्यों के साथ। उनकी दया के कार्यों में ये तथ्य शामिल हैं कि ईश्वर ने मुहम्मद को चमत्कारिक रूप से वाक्पटु कुरान भेजा, कि उन्होंने मुहम्मद के हाथों से कई तरह के चमत्कार दिखाए, कि उन्होंने सभी परिस्थितियों में मुहम्मद की मदद की और उनकी रक्षा की और धर्म और उसकी सभी सच्चाइयों को कायम रखा, और यह कि ईश्वर ने मुहम्मद को उच्च सम्मान और सम्मान के स्थान पर उठाया, उन्हें सभी प्राणियों से ऊपर रखा; यह सब दृश्यमान और अवलोकनीय है। उनकी प्रभुता के कार्यों में से यह है कि ईश्वर ने मुहम्मद की पैगम्बरी को ब्रह्माण्ड में एक आध्यात्मिक सूर्य बनाया, उन्होंने मुहम्मद द्वारा प्रस्तुत धर्म को अपने बन्दों की सम्पूर्णताओं का स्रोत और सूचकांक बनाया, ईश्वर ने अपने सत्य को अपनी दिव्यता के प्रकटीकरण के लिए एक व्यापक दर्पण बनाया और ईश्वर ने मुहम्मद को ऐसे कर्तव्य सौंपे जो ब्रह्माण्ड में प्राणियों के अस्तित्व के लिए दया, बुद्धि और न्याय के समान अपरिहार्य हैं, तथा उतने ही आवश्यक हैं जितने कि भोजन, पानी, हवा और प्रकाश।

इस सबसे निश्चित, व्यापक और पवित्र गवाही का विवरण रिसाले-ए-नूर में पाया जा सकता है ; यहां हम इसका केवल संक्षिप्त और संक्षिप्त अर्थ ही देंगे।

हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि ब्रह्मांड में उनके सामान्य कार्यों और कर्मों में से, उनके न्याय, बुद्धि, दया, अनुग्रह और संरक्षण के अनुसार, और उनके प्रभुत्व के एक सामान्य अभ्यास के रूप में, सर्वशक्तिमान ईश्वर अच्छे लोगों की रक्षा करते हैं और गलत काम करने वालों और झूठ बोलने वालों पर प्रहारों की वर्षा करते हैं। 143 इस प्रकार, जैसा कि “उनकी दयालुता के कार्यों” द्वारा मांग की गई है:

• उन्होंने मुहम्मद को चमत्कारिक रूप से प्रभावशाली कुरान का ज्ञान दिया,
उस पर शांति और आशीर्वाद हो;

---

[143] घटनाओं को उनके सभी कारणों और परिणामों के साथ समझने वाली सार्वभौमिक दृष्टि से रहित होने के कारण, हम ब्रह्मांड में होने वाली हर घटना में ईश्वरीय न्याय को नहीं समझ पाते। जबकि सर्वशक्तिमान ईश्वर सांसारिक जीवन से जुड़े लोगों के कर्मों के संबंध में दुनिया में पूर्ण न्याय करता है - सांसारिक जीवन के ईश्वरीय नियमों के अनुसार हर किसी को वह मिलता है जिसके वे हकदार हैं - वह आमतौर पर "धार्मिक" अच्छे या बुरे कर्मों के प्रतिफल को परलोक पर छोड़ देता है, भले ही वह उन सच्चे विश्वासियों की मदद करता है जो उसके मार्ग का सावधानीपूर्वक पालन करते हैं और उसके द्वारा भेजे गए धर्म और उसके द्वारा स्थापित सांसारिक जीवन के नियमों के अनुसार कार्य करते हैं। (अनुवाद)

- उसने उसे विभिन्न प्रकार के लगभग एक हजार चमत्कार प्रदान किये;
- उन्होंने सभी खतरनाक परिस्थितियों और स्थितियों में अत्यंत करुणा के साथ उसकी रक्षा की, यहाँ तक कि कबूतर और मकड़ी के माध्यम से भी;144

- उन्होंने उसे उसके सभी कर्तव्यों में पूर्ण सफलता दिलाई;
- उसने अपने धर्म को उसकी सारी सच्चाइयों के साथ कायम रखा है,
- और इसे पृथ्वी और मानवजाति पर हावी होने दिया।
- मुहम्मद को सभी प्राणियों से ऊपर सम्मान का स्थान देकर, मानव जाति के सभी श्रेष्ठतम व्यक्तियों से श्रेष्ठ एक स्थायी स्वीकार्यता का दर्जा देकर और, जैसा कि मित्र और शत्रु दोनों ने समान रूप से सहमति व्यक्त की है, सर्वोच्च चरित्र और गुण प्रदान करके, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मानव जाति के पांचवें भाग को अपना समुदाय बनाया। ये सभी बातें उनकी सत्यनिष्ठा और पैगम्बर होने की सबसे निर्णायक गवाही देती हैं।

- हम "प्रभुता के कार्यों" के दृष्टिकोण से यह भी देखते हैं कि इस दुनिया के निर्देशक और नियंत्रक ने मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की रसूलियत को ब्रह्मांड में एक सूर्य बनाया है, और जैसा कि रिसाले -ए-नूर में स्पष्ट रूप से समझाया गया है, उन्होंने इसके साथ सभी प्रकार के अंधकार को दूर कर दिया है और इसके प्रकाशमान सत्यों को दिखाया है, और सभी चेतन प्राणियों, वास्तव में पूरे ब्रह्मांड को, शाश्वत जीवन के खुशखबरी से आनंदित किया है।

- उन्होंने अपने धर्म को सभी स्वीकार्य उपासना-योग्य लोगों की पूर्णता का स्रोत और सूचकांक तथा उनकी उपासना-कृतियों के लिए एक सुदृढ़ कार्यक्रम भी बनाया है।

- पुनः, जैसा कि कुरान और अल-जौशानुल-कबीर द्वारा प्रदर्शित किया गया है, उसने मुहम्मदी सत्य या मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) के सत्य को बनाया है, जो उनका सामूहिक, आध्यात्मिक व्यक्तित्व है, जो उनकी दिव्यता की अभिव्यक्तियों के लिए एक व्यापक दर्पण है।

- इसके अलावा, जैसा कि उपर्युक्त सत्यों से संकेत मिलता है, और इस तथ्य से कि चौदह शताब्दियों तक हर दिन उसने अपने समुदाय के सभी अच्छे कर्मों का समतुल्य प्राप्त किया है, और उसके कार्यों और मानव सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन में उसके कर्मों के निशानों से उसने उसे मानव जाति का सर्वोच्च नेता, स्वामी और अधिकारी बनाया है।

---

144 अहमद इब्न हनबल, अल-मुसनद, 1:348; 'अब्दु'र-रज्जाक, अल-मुसन्नाफ, 5:389; अत-तबरानी, अल-मुजामु'एल-कबीर, 11:407; 20:443.

• इसके अलावा, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुहम्मद को उत्कृष्ट, पवित्र कर्तव्यों के साथ मानव जाति की सहायता के लिए भेजा, और मनुष्यों को अपने धर्म145 की सभी सच्चाइयों के साथ-साथ दया, बुद्धि, न्याय, भोजन, हवा, पानी और प्रकाश की आवश्यकता के रूप में बनाया।

और इसलिए, यह देखते हुए कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी की पवित्र गवाही दी है, बारह सार्वभौमिक, निर्णायक प्रमाणों के साथ, जिनका अब तक उल्लेख किया गया है और पंद्रहवीं गवाही में उनका सारांश दिया गया है, क्या यह संभव है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) की पैगम्बरी, जिसे ब्रह्मांड के मालिक की इन बारह गवाहियों द्वारा समर्थित किया गया है, जो एक मक्खी के पंख या एक फूल की पंखुड़ी के आदेश से उदासीन नहीं है - क्या यह संभव है कि यह पैगम्बरी ब्रह्मांड का सूर्य न हो?

वर्णित पंद्रह सार्वभौमिक साक्ष्यों में से प्रत्येक में कई साक्ष्य हैं, और चमत्कारों की भाषा के माध्यम से तीसरे में लगभग एक हजार साक्ष्य हैं, इस प्रकार यह घोषणा "मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं" को सबसे शक्तिशाली और निर्णायक रूप से साबित करता है, और इसकी वास्तविकता, मूल्य और महत्व को प्रदर्शित करता है, ताकि दिन में पांच बार तशह्हुद में - प्रार्थना का बैठे हुए भाग - इस्लाम की दुनिया करोड़ों जीभों के साथ ब्रह्मांड के सामने इस तथ्य की घोषणा करती है।

इसके अलावा, अरबों विश्वासियों ने बिना किसी हिचकिचाहट के स्वीकार किया है और पुष्टि की है कि मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) का सत्य, जो उस घोषणा का आधार है, ब्रह्मांड का मूल बीज है, इसके निर्माण का कारण है, और इसका सबसे उत्तम फल है। इसके अलावा, ब्रह्मांड का

---

145 अपनी बुढ़ापे और बदहाली में मैंने मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) द्वारा लाए गए आध्यात्मिक प्रावधान का एक लाखवाँ हिस्सा ही महसूस किया। अगर मैं सक्षम होता, तो मैं लाखों ज़बानों से उन पर ईश्वर की कृपा और शांति का आह्वान करके उनका शुक्रिया अदा करता। यह इस तरह था:

> मैं अलगाव और क्षय से बहुत पीड़ित हूँ, लेकिन दुनिया और उसमें मौजूद वे चीज़ें जो मुझे प्रिय हैं, मुझे छोड़कर चली जाती हैं। मुझे पता है कि मैं भी चला जाऊँगा। और यह केवल मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) से सुनकर, अनंत सुख और अनंत जीवन की खुशखबरी सुनकर ही संभव है कि मैं उस गंभीर दर्द और आत्मा को झकझोर देने वाली निराशा से बच जाऊँ और मुझे पूरी तरह से सांत्वना मिले।
>
> वास्तव में, जब मैं प्रार्थना के बैठे हुए भाग में कहता हूँ: "आप पर शांति हो, हे पैगम्बर, और ईश्वर की दया और आशीर्वाद हो!" , तो मैं न केवल उनके प्रति निष्ठा व्यक्त कर रहा हूँ, बल्कि उनके मिशन के प्रति अपनी समर्पण और आज्ञाकारिता की घोषणा भी कर रहा हूँ, और उन्हें उनके कर्तव्य के लिए बधाई दे रहा हूँ, और उनके द्वारा अनंत सुख की खुशखबरी के लिए एक तरह से धन्यवाद और प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहा हूँ। सभी मुसलमान हर दिन पाँच बार ये बधाई देते हैं।

स्वामी, सर्वशक्तिमान, महामहिम ने मुहम्मद के उस आध्यात्मिक सामूहिक व्यक्तित्व को, जिन पर शांति और आशीर्वाद हो, अपने प्रभुत्व की संप्रभुता का सबसे जोरदार संदेशवाहक और ब्रह्मांड के ताबीज और सृष्टि की पहेली का सटीक खुलासा करने वाला बनाया है; उसने उन्हें अपनी कृपा और दया का एक चमकदार उदाहरण और अपनी करुणा और प्रेम की एक वाक्पटु भाषा बनाया है; उसने उन्हें शाश्वत जीवन और शाश्वत क्षेत्र में खुशी की खुशखबरी का सबसे शक्तिशाली लाने वाला बनाया है, और उसने उन्हें अपने दूतों में अंतिम और महानतम बनाया है।

जो व्यक्ति इस सत्य से संतुष्ट नहीं है या जो इस सत्य से आसक्त नहीं है,

जो लोग इसे महत्व देते हैं, उन्हें यह समझना चाहिए कि वे कितनी बड़ी भूल, मूर्खता और अपराध कर रहे हैं तथा उन्हें कितनी भयंकर हानि हो रही है।

इस प्रकार, जैसा कि भाग दो में संकेत दिया गया है, जिस प्रकार सूरतुल-फातिहा ईश्वरीय एकता की सच्चाई के लिए निर्णायक प्रमाण प्रस्तुत करता है, जो इस कथन में व्यक्त किया गया है: "मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है", जिसे तशह्हुद में पढ़ा गया है , उसी प्रकार यह तीसरा भाग भी संदेशवाहक होने की वास्तविकता के लिए शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करता है, जैसा कि इस कथन में व्यक्त किया गया है: "मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद ईश्वर के संदेशवाहक हैं", जिसे तशह्हुद में भी पढ़ा गया है , और इस पर असंख्य पुष्टिकारी हस्ताक्षरों की मुहर लगाई गई है।

हे दयालुओं में भी परम दयालु! अपने महानतम दूत की वंदना में-

सेंगर, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, हमें उनकी सिफ़ारिश से अनुग्रहित करें, हमें उनकी सुन्नत का पालन करने में सक्षम बनाएं, और हमें खुशी के शाश्वत क्षेत्र में उनके परिवार और साथियों का पड़ोसी बनाएं! आमीन। आमीन। आमीन।

हे ईश्वर! उन पर, उनके परिवार और साथियों पर, कुरान के अक्षरों की संख्या के अनुसार, चाहे वे पढ़े गए हों या लिखे गए हों, आशीर्वाद और शांति प्रदान करें। आमीन।

तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

दूसरा स्टेशन

ईश्वर के नाम पर, जो अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान है

और हम उसी से सहायता मांगते हैं

सूरतुल-फातिहा की अंतिम आयत में निहित सत्यों में से एक , जो मार्गदर्शन और सीधे मार्ग पर चलने वालों की तुलना गुमराह और विद्रोह करने वालों से करती है, और जो सभी तुलनाओं का स्रोत है।

रिसाले -ए-नूर की इस भावना को सूरतुन्-नूर की निम्नलिखित आयत में भी अत्यंत अद्भुत ढंग से व्यक्त किया गया है :

> ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। उसके प्रकाश का उदाहरण एक आले के समान है जिसमें एक दीपक है; दीपक एक क्रिस्टल में है, और क्रिस्टल एक मोती के समान चमकता हुआ सितारा है, जो एक धन्य जैतून के पेड़ के तेल से प्रकाशित होता है जो न तो पूर्व का है और न ही पश्चिम का। तेल
>
> वह तो अपने आप ही प्रकाशमान हो जाएगा, यद्यपि उसे कोई आग छू भी न सके। प्रकाश ही प्रकाश है! अल्लाह जिसे चाहता है, अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखाता है। अल्लाह लोगों को दृष्टान्त सुनाता है। अल्लाह को हर चीज़ का पूरा ज्ञान है। (24:35)

और इस श्लोक द्वारा:

> या उनके काम ऐसे हैं जैसे अँधेरे के परदे एक गहरे समुद्र को उसकी गहराइयों में ढके हुए हों, और एक लहर से ढके हुए हों, जिसके ऊपर एक लहर हो, जिसके ऊपर एक बादल हो: अँधेरे के परदे एक दूसरे के ऊपर ऐसे जमा हुए हों कि जब कोई अपना हाथ बढ़ाता है तो उसे मुश्किल से दिखाई देता है। जिसके लिए अल्लाह ने कोई प्रकाश नहीं नियुक्त किया, उसके पास कोई प्रकाश नहीं है। (24:40)

पहली आयत रिसाले-ए-नूर (प्रकाश के ग्रंथ) को "नूर" (प्रकाश) नाम दिए जाने का मुख्य कारण थी। द सुप्रीम साइन (अयातु-अल-कुबरा) में यात्री ने अपने निर्माता की खोज, पता लगाने और उसके बारे में जानने के लिए पूरे ब्रह्मांड और सभी प्राणियों से सवाल किए। वे उसे तैंतीस तरीकों और निर्णायक प्रमाणों के माध्यम से ज्ञान और दृष्टि या अवलोकन पर आधारित निश्चितता की डिग्री तक जानते थे। इस अथक, अतृप्त यात्री ने सदियों और आकाश और पृथ्वी के विभिन्न स्तरों के माध्यम से अपने दिमाग, दिल और कल्पना के साथ यात्रा की, पूरे विश्व का निरीक्षण किया जैसे कि यह एक ही शहर हो। अपने तर्क को कभी कुरान और कभी दर्शन पर ध्यान केंद्रित करते हुए, और कल्पना की शक्तिशाली दूरबीन के माध्यम से सबसे दूर के स्तरों को देखते हुए, यात्री ने सच्चाई को वैसे ही देखा जैसा कि वे वास्तविकता में हैं और कुछ हद तक हमें द सुप्रीम साइन में उनके बारे में बताया।

अब, यात्री ने अपनी कल्पना की यात्रा में जिन अनेक दुनियाओं और स्तरों में प्रवेश किया, जो प्रकृति में प्रतिनिधित्वात्मक और पूरी तरह से वास्तविकता के अनुरूप थी, उनमें से केवल तीन को यहाँ संक्षेप में समझाया गया है ताकि सूरतुल-फातिहा के अंत में तुलना के केवल एक पहलू को स्पष्ट किया जा सके। यह तर्क की शक्ति से संबंधित है। यात्री के अन्य दर्शन और अन्य तुलनाएँ रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों में पाई जा सकती हैं।

पहला उदाहरण निम्नलिखित के समान है

यात्री, जो केवल अपने सृष्टिकर्ता को खोजने और उसका ज्ञान प्राप्त करने के लिए संसार में आया है, अपने तर्क को इस प्रकार संबोधित करता है: “हमने अपने सृष्टिकर्ता के विषय में सब कुछ पूछा है और हमें पूरी तरह से संतोषजनक उत्तर प्राप्त हुए हैं।

अब, जैसा कि कहावत में कहा गया है: "सूर्य के बारे में जानने के लिए हमें सूर्य से ही पूछना होगा," हम अपने निर्माता के बारे में ज्ञान प्राप्त करने के लिए आगे की यात्रा करेंगे, उनके पवित्र गुणों, जैसे ज्ञान, इच्छा और शक्ति, और उनके दृश्यमान कार्यों और उनके नामों की अभिव्यक्तियों के माध्यम से।" और इस तरह यात्री दुनिया में प्रवेश करता है। फिर

गुमराह लोगों की तरह - जो सूरतुल-फातिहा के अंत में वर्णित दूसरी धारा या मार्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं - वे पृथ्वी के जहाज पर सवार होते हैं। वे विज्ञान और दर्शन के चश्मे पहनते हैं जो कुरान की बुद्धिमत्ता का पालन नहीं करते हैं, और भूगोल के कार्यक्रम के साथ असंगत दिखते हैं जो कुरान का नक्शा नहीं बनाते हैं।

वे निम्नलिखित देखते हैं:

पृथ्वी एक अनंत शून्य में एक तोप-गैर-गेंद से सत्तर गुना तेज गति से यात्रा कर रही है, एक वर्ष में बीस हजार साल की दूरी तय कर रही है। इसने अपने ऊपर लाखों प्रजातियों के दुखी, असहाय जीवों को ले लिया है। यात्री को एहसास होता है कि अगर पृथ्वी एक मिनट के लिए भी अपना रास्ता भटक जाए, या किसी भटके हुए तारे से टकरा जाए, तो यह टूटकर अंतरिक्ष में बिखर जाएगी, और ये सभी दुखी जीव शून्य और अस्तित्वहीन हो जाएँगे।

आयत में संकेतित धारा की भयानक विपत्ति को देखते हुए, न तो उन लोगों की जिन पर तेरा प्रकोप हुआ है, न ही उन लोगों की जो भटक गए हैं, और अंधेरे के पर्दों की घुटन भरी उदासी जो एक अथाह समुद्र को उसकी गहराई में ढक रही है, यात्री चिल्लाता है: "हाय! हमने क्या किया? हम इस भयानक जहाज पर क्यों चढ़े? हम कैसे बच सकते हैं?" फिर अंधे दर्शन के चश्मे को तोड़ते हुए, यात्री उन लोगों की धारा में शामिल हो जाता है जिन्हें आपने (सच्चे मार्गदर्शन के साथ) अनुग्रहित किया है। अचानक कुरान की बुद्धि उनकी सहायता के लिए आती है, उनके तर्क को एक दूरबीन प्रदान करती है जो हर चीज की सटीक सच्चाई दिखाती है। "अब देखो!" यह कहता है। यात्री देखता है और निम्नलिखित देखता है:

“आकाश और पृथ्वी का प्रभु” नाम आकाश में सूर्य की तरह उदय होता है

उसकी निशानी है कि वही है जिसने धरती को तुम्हारे वश में कर दिया। अतः तुम उसके कंधों पर से होकर चलो-फिरो और उसकी रोज़ी खाओ (67:15)।

---

146 यह श्लोक अर्थ में चमत्कारी है। यह पृथ्वी की तुलना एक ऐसे जानवर से करता है जो अपने लाभ के लिए मानव जाति के अधीन रहा है, हालाँकि वह अंतरिक्ष में बहुत तेज़ी से यात्रा करता है। इसके कंधे इसकी ऊँची भूमि या पहाड़ हैं, जहाँ मनुष्यों के लिए भोजन जमा पाया जाता है। (अनुवाद)

पृथ्वी को एक सुव्यवस्थित और सुरक्षित जहाज की तरह बनाया है, इसे जीवित प्राणियों के साथ-साथ उनके प्रावधान से भर दिया है, और इसे ब्रह्मांड के महासागर में सूर्य के चारों ओर यात्रा करने के लिए प्रेरित किया है ताकि असंख्य लाभ और ज्ञान के उदाहरण प्राप्त हों, और ऋतुओं की उपज को उन लोगों तक पहुंचाएं जिन्हें प्रावधान की आवश्यकता है। भगवान ने दो स्वर्गदूतों थावर (बैल) और हट (मछली) को जहाज के कप्तान के रूप में नियुक्त किया है; वे भगवान के शानदार क्षेत्र के माध्यम से, सर्वशक्तिमान निर्माता के प्राणियों और मेहमानों के आनंद के लिए इसे अपनी यात्रा पर चलाते हैं। यात्री समझता है कि यह इस सत्य को इंगित करता है कि ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है, और इस प्रकार इस नाम की अभिव्यक्तियों के माध्यम से अपने निर्माता को ज्ञात करता है जो प्रकाश है। अपने पूरे दिल और आत्मा के साथ यात्री चिल्लाता है: "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता भगवान, दुनिया के भगवान के लिए है

दूसरा उदाहरण

दुनिया भर की यात्रा में यात्री जो देखता है उसका दूसरा उदाहरण इस प्रकार है:

पृथ्वी के जहाज को छोड़कर यात्री जानवरों और मानव जाति की दुनिया में प्रवेश करता है। वे उस दुनिया को प्राकृतिक विज्ञान के चश्मे से देखते हैं जो आत्मा से रहित है, और निम्नलिखित देखते हैं:

इन असंख्य प्राणियों की ज़रूरतें अनंत हैं और वे अनगिनत हानिकारक शत्रुओं और निर्दयी घटनाओं के निरंतर हमले के अधीन हैं, जबकि उनके पास इतनी पूंजी है जिससे वे अपनी ज़रूरतों का केवल हज़ारवाँ, बल्कि लाखोंवाँ हिस्सा ही पूरा कर सकते हैं। उनकी शक्ति भी शायद इन हानिकारक चीज़ों से लड़ने के लिए ज़रूरी शक्ति का दस लाखवाँ हिस्सा है। एक बुद्धिमान प्राणी होने के कारण और अपने साथियों के प्रति दया के कारण उनसे जुड़ाव महसूस करते हुए, यात्री उनकी भयानक दुर्दशा में उन पर दया करता है और उनके लिए इतना दुखी होता है कि वे नारकीय पीड़ा सहते हैं। वे इस अभागे संसार में आने के लिए हज़ार बार पछताने लगते हैं कि अचानक कुरान की बुद्धिमता की एक चमक उनकी मदद के लिए आती है, उन्हें उन लोगों की दूरबीन देती है जिन पर आपने कृपा की है, और कहती है: "देखो!" यात्री इसके माध्यम से देखता है और देखता है कि ईश्वर की अभिव्यक्ति के माध्यम से आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है, असंख्य दिव्य नाम, जैसे कि दयालु, दयालु, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-प्रदान करने वाला, सर्व-दान देने वाला, सर्व-दान देने वाला, सर्व-संरक्षक प्रत्येक सूर्य की तरह आयतों के संकेतों में उग रहे हैं: कोई जीवित प्राणी ऐसा नहीं है जिसे वह अपने माथे के बाल से पकड़े न रहे (11:56);

बहुत से जीवधारी ऐसे हैं जो अपने लिए कुछ नहीं रखते, परन्तु अल्लाह उन्हें और तुम्हारे लिए भी भोजन उपलब्ध कराता है (29:60); निश्चय ही हमने आदम की सन्तान को सम्मान दिया (29:70), और नेक और धर्मपरायण लोग सदैव सुख के बागों में रहेंगे (82:13)। वे मनुष्यों और पशुओं की दुनिया को दया और उपकारों से भरकर उसे एक प्रकार की अस्थायी जन्नत में बदल देते हैं। अब यात्री समझ जाता है कि ये आयतें यह सुनिश्चित करती हैं कि इस शानदार, शिक्षाप्रद अतिथिगृह के सर्व-दयालु मेजबान को पूरी तरह से जाना जाए। यात्री एक हजार बार दोहराता है, सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जो सारे संसारों का पालनहार है!

तीसरा उदाहरण

यात्रा के दौरान यात्री द्वारा किये गए सैकड़ों अवलोकनों में से तीसरा उदाहरण इस प्रकार है:

जो यात्री अपने निर्माता को उसके नामों और गुणों के माध्यम से जानना चाहता है, वह अपने मन और कल्पना से कहता है: "आओ! अपने शरीर को धरती पर छोड़कर, हम आत्माओं और फ़रिश्तों की तरह स्वर्ग में चढ़ेंगे। हम स्वर्ग के निवासियों से अपने निर्माता के बारे में पूछेंगे।" उनकी आत्मा उनकी कल्पना पर चढ़ती है, उनका मन उनके विचारों पर चढ़ता है, और साथ में वे स्वर्ग में चढ़ जाते हैं। वे खगोल विज्ञान को अपना मार्गदर्शक मानते हैं और उस दर्शन की दृष्टि से देखते हैं जो धर्म और उन लोगों की धारा पर ध्यान नहीं देता है जिन्होंने आपके क्रोध को भड़काया है और जो भटक गए हैं। यात्री निम्नलिखित देखता है:

हज़ारों आकाशीय पिंड और ज्वलंत तारे, जिनमें से प्रत्येक पृथ्वी से हज़ार गुना बड़ा है और तोप के गोले से सौ गुना तेज़ गति से घूम रहा है, अनजाने में, बेजान, लक्ष्यहीन होकर घूम रहा है। अगर इनमें से कोई पिंड एक सेकंड के लिए भी अपना रास्ता भूल जाता है, तो वह उस अनंत अंतरिक्ष में किसी दूसरे अचेतन पिंड से टकरा जाएगा, जिससे प्रलय के दिन की तरह घोर भ्रम और अराजकता पैदा हो जाएगी।

जिस ओर भी वे देखते हैं, यात्री भय और निराशा से भर जाता है: उन्हें हज़ार बार इस बात का अफसोस होता है कि वे स्वर्ग में चढ़ गए हैं। उनका मन और कल्पना अत्यंत व्यथित और भ्रमित हैं।

मन और कल्पना चिल्लाते हैं: "हमारा कर्तव्य है कि हम सुंदर सत्यों को देखें और उन्हें इंगित करें। हम अब ऐसे नारकीय रूप से बदसूरत और पीड़ादायक तमाशे देखना या जानना नहीं चाहते; हम इस कार्य से पीछे हटते हैं!" फिर अचानक, ईश्वर के प्रकटीकरण के माध्यम से स्वर्ग और पृथ्वी का प्रकाश, "आकाश और पृथ्वी का निर्माता", "अधीनता " जैसे कई नाम प्रकट होते हैं

सूर्य और चंद्रमा का”, और “सर्वलोक का पालनहार” प्रत्येक सूर्य की तरह आयतों की निशानियों में उदय होते हैं जैसे और हमने सबसे निचले आकाश (दुनिया के स्वर्ग) को दीपों से सजाया है (67:5); तो क्या वे कभी अपने ऊपर के आकाश को नहीं देखते कि हमने उसे कैसा बनाया और सजाया है? (50:6), और ... फिर उसने (अपने ज्ञान, इच्छा, शक्ति और अनुग्रह को) आकाश की ओर निर्देशित किया, और उसे सात आकाशों में बनाया (2:20)। वे सभी आकाशों को प्रकाश और फ़रिश्तों से भर देते हैं, इसे एक विशाल मस्जिद और सैन्य छावनी में बदल देते हैं। यात्री उन लोगों की धारा में प्रवेश करता है जिन पर आपने उपकार किया है, और उन लोगों से बच जाता है जो भटक गए हैं और अंधकार के पर्दे एक अथाह समुद्र को उसकी गहराई में ढक रहे हैं। यात्री एक सुव्यवस्थित, सुंदर और शानदार भूमि देखता है, जो स्वयं स्वर्ग के समान अद्भुत है। यह देखकर कि उसके निवासी सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता को ज्ञात कर रहे हैं, यात्री के मन और कल्पना का मूल्य हजार गुना बढ़ जाता है, और साथ ही उनका कार्य भी।

रिसाले-ए-नूर का हवाला देते हुए यात्री की अन्य टिप्पणियों, जो इन तीनों के साथ तुलनीय हैं, और अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के ज्ञान जो उसके नामों के प्रकटीकरण के माध्यम से प्राप्त होता है, यहाँ हम केवल कुछ संक्षिप्त संकेतों का उल्लेख करेंगे। दुनिया भर के उस यात्री की तरह, हम ज्ञान, इच्छा और शक्ति के कार्यों और अभिव्यक्तियों के माध्यम से ब्रह्मांड के निर्माता से बहुत संक्षेप में परिचित होने की कोशिश करेंगे, जो उनके सात पवित्र गुणों में से तीन हैं। विस्तृत व्याख्या के लिए, हम आपको रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों का संदर्भ देते हैं।

ईश्वरीय ज्ञान के प्रमाण

निम्नलिखित अंश, जो मूल रूप से अरबी में है, मेरे नियमित पाठ का एक अंश है। यह "ईश्वर महान है" (अल्लाहु अकबर) के तैंतीस पदों में से तीन की व्याख्या करता है। यह ब्रह्मांड में दिव्य ज्ञान, इच्छा और शक्ति की अभिव्यक्तियों को समझने और देखने तथा दृष्टि या अवलोकन के आधार पर निश्चितता की डिग्री पर उनमें विश्वास प्राप्त करने का मार्ग खोलता है। यह इन तीन विशेषताओं के माध्यम से ज्ञान पर आधारित निश्चितता की डिग्री पर अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के अस्तित्व और एकता की पुष्टि की ओर भी ले जाता है।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

कह दो, "सारी प्रशंसा और कृतज्ञता अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपनी कोई सन्तान बनाई,
न राज्य में कोई साझीदार बनाया, न वह सब अभावों से ऊपर है, न सब वस्तुओं से।

और उसकी महानता का गुणगान करो (17:111)।”

ईश्वर सर्व-महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी वस्तुओं से बड़ा है, क्योंकि वह सभी वस्तुओं को अपने सार के लिए अपरिहार्य, सर्वव्यापी ज्ञान से जानता है। उसकी सर्वव्यापकता और सर्वसमावेशीपन के कारण, तथा इस तथ्य के कारण कि अस्तित्व सार्वभौमिकता की मांग करता है और ज्ञान का प्रकाश अस्तित्व के संपूर्ण क्षेत्र को अपने में समाहित कर लेता है, उससे कुछ भी छिपाया या बच नहीं सकता।

संपूर्ण सृष्टि में जो कुछ भी देखा जाता है, जैसे कि सटीक, मापा हुआ क्रम और संतुलित व्यवस्था, एक व्यवस्थित माप और उचित संतुलन, सर्वव्यापी और उद्देश्यपूर्ण ज्ञान, सभी को शामिल करने वाला और विशेष अनुग्रह, सुव्यवस्थित आदेश और फलदायी निर्धारण, नियत अंतिम लक्ष्य और निश्चित, नियमित प्रावधान, कुशल सटीकता और दोषहीनता, और मनभावन, अलंकृत देखभाल और ध्यान (जो सभी चीजों को दिया जाता है), साथ ही बिल्कुल सही क्रम, सामंजस्य, व्यवस्था, सटीकता, संतुलन और माप, साथ ही पूर्ण सहजता के साथ भेद - ये सभी अदृश्य और सभी चीजों के जानने वाले के व्यापक ज्ञान की गवाही देते हैं। क्या वह जो पैदा करता है उसे न पता हो? वह अत्यंत सूक्ष्म, सर्वज्ञ है (67:14)।

यदि किसी के कार्य में कला की सुन्दरता उसकी चेतना को घोर अन्धकारमय रात्रि में जुगनू के अत्यल्प प्रकाश के समान सूचित करती है, तो मानवता की रचना उसके रचयिता के ज्ञान को, दोपहर के समय सूर्य के तेज के समान सूचित करती है।

जिस प्रकार दया अपने आप को सूर्य के समान स्पष्ट रूप से प्रावधान के चमत्कारों के माध्यम से प्रकट करती है और अदृश्य के पर्दे के पीछे एक दयालु और दयावान के अस्तित्व को निर्णायक रूप से सिद्ध करती है, उसी प्रकार ज्ञान के उदाहरणों और चीजों में व्यवस्था और संतुलन के फलों के माध्यम से, ज्ञान, जिसका उल्लेख सैकड़ों कुरान की आयतों में किया गया है और जो, एक तरह से, दिव्य सत्ता के सात पवित्र गुणों में से प्रमुख है, सूर्य के प्रकाश की तरह खुद को प्रकट करता है, जो सभी चीजों के ज्ञानी एक के अस्तित्व को निश्चितता के साथ ज्ञात कराता है। मनुष्यों की व्यवस्थित और मापी गई कलाओं के बीच तुलना, जो उनकी चेतना और ज्ञान को इंगित करती हैं और उनकी सुंदर रचना, जो उनके निर्माता के ज्ञान और बुद्धि को इंगित करती हैं, एक अंधेरी रात में जुगनू की छोटी चमक और दोपहर में सूर्य के व्यापक प्रकाश के बीच तुलना की तरह है।

147 ईश्वर के लिए सबसे उत्कृष्ट वर्णन यह है कि ईश्वरीय सत्ता के लिए ज्ञान उसी प्रकार अपरिहार्य है, जैसे सूर्य के लिए उसका प्रकाश अपरिहार्य है।

पैगंबर के स्वर्गारोहण के दौरान पवित्र वार्तालाप

अब ईश्वरीय ज्ञान के प्रमाणों की व्याख्या करने से पहले हम संक्षेप में उस पवित्र वार्तालाप का उल्लेख करेंगे जो पैगम्बर के स्वर्गारोहण के समय हुआ था, जो यह दर्शाता है कि ज्ञान के गुण के प्रकट होने के कारण सभी जीवित और निर्जीव प्राणी अपने पालनहार को हम तक पहुँचाते हैं। सभी जीवित प्राणियों की ओर से दूत बनकर और सभी प्राणियों की ओर से अभिवादन करने के अर्थ में, पैगम्बर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने उस रात कहा: "सभी प्रशंसात्मक और आभारी पूजा (जो सभी जीवित प्राणियों द्वारा अपने जीवन के माध्यम से की जाती है) ईश्वर की है; और इसी तरह बधाई और प्रशंसात्मक पूजा (विशेष रूप से सभी जीवित प्राणियों द्वारा, विशेष रूप से उनके बीजों या अंडों के माध्यम से की जाती है); और सभी पवित्र और विनम्र पूजा (सभी सचेत प्राणियों द्वारा की जाती है); और सभी सचेत, पूजनीय और उत्साही पूजा (जो ईमान वाले और ज्ञानी मनुष्यों, जिन्नों और फ़रिश्तों द्वारा की जाती है)।" इस प्रकार उन्होंने उनके उपहारों को उनके निर्माता को प्रस्तुत किया।

अर्थात् ऊपर वर्णित चार वाक्यों अर्थात् अत-तही-य्यत, अल-मुबारकात, अस-सलावत, अत-तय्यिबात के साथ, उन्होंने ईश्वर को चार मुख्य जीव समूहों की प्रशंसा, कृतज्ञता, बधाई, प्रशंसा, पवित्रता, आज्ञाकारिता, आराधना और उत्साहपूर्ण पूजा प्रस्तुत की, जो शाश्वत ज्ञान की अभिव्यक्तियों पर आधारित हैं। यही कारण है कि यह पाठ, इस पवित्र वार्तालाप के व्यापक अर्थ में जो स्वर्गारोहण के दौरान हुआ था, सभी मुसलमानों के लिए तशाह-हुद का अनिवार्य हिस्सा बन गया है । उस पवित्र वार्तालाप की विस्तृत व्याख्या रिसाले-ए-नूर में पाई जा सकती है , लेकिन हम इसका एक अर्थ चार बहुत ही संक्षिप्त संकेतों के रूप में समझाएंगे।

पहला है अत-तहियातु लिल्लाह। इसका संक्षिप्त अर्थ इस प्रकार है:

उदाहरण के लिए, यदि कोई कुशल कारीगर अपने गहन ज्ञान और चमत्कारी बुद्धि से कोई अद्भुत मशीन बनाता है, तो उसे देखने वाला हर व्यक्ति उसकी सराहना करता है और उसे बधाई देता है, तथा उसे प्रशंसा और प्रशंसा के रूप में भौतिक और अमूर्त उपहार प्रदान करता है। मशीन भी, कुशल कारीगर के उद्देश्यों, साथ ही उनकी अद्भुत, सूक्ष्म कला, कौशल और ज्ञान को प्रदर्शित करके, और बिल्कुल वांछित तरीके से काम करके, अपने अस्तित्व की भाषा के माध्यम से कारीगर की सराहना करती है और बधाई देती है, वास्तव में अपने निर्माता को अमूर्त उपहार प्रदान करती है।

इसी प्रकार, ब्रह्माण्ड में सभी जीवधारी, व्यक्तिगत रूप से तथा भिन्न-भिन्न गुणों के कारण एक-दूसरे से पृथक हैं।

ये सभी प्राणी हर दृष्टि से चमत्कारी, अद्भुत मशीनें हैं। मनुष्य, जिन्न और फ़रिश्ते अपने अस्तित्व और जीवन की भाषा के माध्यम से अपने सर्वशक्तिमान निर्माता की प्रशंसा करते हैं, जो हर चीज़ का एक दूसरे से संबंध देखता है और प्रत्येक के जीवन के लिए आवश्यक सभी चीज़ों को जानता है, और उन्हें सही समय पर प्रत्येक तक पहुँचाता है; यह वही है जो अपने व्यापक ज्ञान की गहन और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के माध्यम से खुद को प्रकट करता है। वे घोषणा करते हैं: "अत-तहियातु लि'ल्लाह (सभी प्रशंसात्मक और आभारी पूजा ईश्वर के लिए है)।" पूजा की भावना में वे अपने जीवन की कीमत सीधे अपने निर्माता को अर्पित करते हैं, जो सभी प्राणियों को उनकी सभी अवस्थाओं के साथ जानता है। स्वर्गारोहण की रात को, सभी जीवित प्राणियों के नाम पर, पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा: "सभी प्रशंसात्मक और आभारी पूजा ईश्वर के लिए है!" जब अनिवार्यतः विद्यमान उस परमेश्वर को उसकी उपस्थिति में नमस्कार किया जाता था, तथा सभी प्रकार के जीवित प्राणियों की ओर से कृतज्ञतापूर्वक धन्यवाद, उपहार और शुभकामनाएं दी जाती थीं।

जिस तरह एक साधारण, अच्छी तरह से डिज़ाइन की गई और अच्छी तरह से काम करने वाली मशीन अपने क्रम और संतुलन से निस्संदेह एक कुशल कारीगर के अस्तित्व को प्रदर्शित करती है, उसी तरह ब्रह्मांड को भरने वाली असंख्य जीवित मशीनें भी ज्ञान के हज़ारों चमत्कार प्रदर्शित करती हैं। इस प्रकार, ज्ञान की अभिव्यक्ति होने के कारण, जीवित प्राणी अपने शाश्वत निर्माता के आवश्यक अस्तित्व और उसके सर्व-पूज्य होने की गवाही देते हैं। अगर हम मशीन की उसके निर्माता या कारीगर के प्रति गवाही की तुलना जुगनू की कमज़ोर चमक से करें, तो अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के प्रति उनकी गवाही सूर्य के प्रकाश की तरह चमकदार है।

स्वर्गारोहण से दूसरा पवित्र शब्द अल-मुबारकात है ।

एक हदीस के अनुसार , विहित प्रार्थनाएँ आस्तिक का स्वर्गारोहण[148] हैं और पैगंबर मुहम्मद के सर्वोच्च स्वर्गारोहण की अभिव्यक्ति के साथ सम्मानित हैं, उन पर शांति और आशीर्वाद हो। और चूँकि पूरे ब्रह्मांड में यात्री (सर्वोच्च संकेत में) पाता है कि उनके निर्माता के पास हर दुनिया में अदृश्य के बारे में सब कुछ जानने का गुण है, इसलिए हम यात्री के साथ चलेंगे और धन्य चीजों की व्यापक दुनिया में प्रवेश करेंगे, जो उन्हें देखने वालों को यह कहने पर मजबूर कर देती हैं: "भगवान उन्हें आशीर्वाद दें! भगवान के आशीर्वाद कितने महान हैं!" यात्री की तरह, हम "धन्य प्राणियों" की दुनिया का अवलोकन करेंगे, मुख्य रूप से आत्माओं वाले प्राणियों के मासूम, धन्य शिशु, और जीवित प्राणियों के बीज, जो कि ईश्वर के छोटे कंटेनर हैं।

---

[148] अस-सुयुति, शरहु सुनन-ए इब्न माजा, 313; अल-मुनावी, फ़ैदुल-कादिर, 1:497.

उनके जीवन के कार्यक्रम; उनका अध्ययन करने के माध्यम से हम अपने सृष्टिकर्ता को उसके पवित्र ज्ञान गुण की चमत्कारी, सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के माध्यम से ज्ञान के आधार पर निश्चितता की सीमा तक जानने का प्रयास करेंगे।

हम अपनी आँखों से देखते हैं कि एक सर्वज्ञ और सर्वज्ञ परमेश्वर के ज्ञान के माध्यम से, ये सभी मासूम, नवजात शिशु और धन्य छोटे खजाने और पात्र - सामूहिक रूप से और व्यक्तिगत रूप से - अचानक जाग उठते हैं और अपनी रचना के उद्देश्य को साकार करने के लिए आगे बढ़ते हैं। वे उन लोगों को प्रेरित करते हैं जो उन्हें सत्य की आँखों से देखते हैं: "भगवान इन पर हज़ार गुना आशीर्वाद दें! भगवान ने क्या असीम चमत्कार किए हैं!"

उदाहरण के लिए, सभी बीज, अंडे, शुक्राणु और अनाज, व्यक्तिगत रूप से और सामूहिक रूप से, निम्नलिखित पंद्रह भाषाओं के माध्यम से अपने निर्माता के कौशल और उनके चमत्कारी ज्ञान के चमत्कारों को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करते हैं, जो अदृश्य के सर्वज्ञ, उनके अनिवार्य रूप से विद्यमान होने को ज्ञात करते हैं।

सूर्य के समान स्पष्ट रूप से निर्माता:

- उनमें सटीक, मापी गई क्रमबद्धता और संतुलित व्यवस्था होती है- ज्ञान द्वारा स्थापित;
- यह व्यवस्था पूर्णतया संतुलित माप पर आधारित है, जो स्पष्ट कौशल का परिणाम है;
- संतुलन स्थापित होता है और निरंतर पुनर्व्यवस्था के माध्यम से जारी रहता है;
- पुनर्व्यवस्था निरंतर माप और संतुलन के माध्यम से की जाती है नृत्य;
- मापन और संतुलन पूर्ण विभेदन और पोषण के साथ-साथ होता है, जो प्रत्येक प्राणी को उसके साथी प्राणियों से जानबूझकर अलग करने को प्रदर्शित करता है;
- यह विभेदीकरण और पोषण कार्यों के भीतर होता है अलंकरण और कलात्मक सजावट;
- अलंकरण बुद्धिमान, उपयुक्त और परिपूर्ण रूपों और सदस्यों को देने के भीतर होता है;
- यह रूप देने का कार्य जीविका के इच्छुक लोगों के स्वाद को संतुष्ट करने के लिए, तथा उन खाद्य प्राणियों और फलों के मांस और खाद्य भागों में अंतर लाने के लिए होता है;
- ये अंतर चमत्कारी और विविध डिजाइनों और कढ़ाई के माध्यम से महसूस किए जाते हैं, जो ज्ञान को प्रतिबिंबित करते हैं;
- डिजाइन और कढ़ाई को सुखद गंध और स्वादिष्ट स्वाद के साथ जोड़ा जाता है जो सभी अलग हैं;

- ये सभी एक साथ घटित होते हैं, लेकिन पूर्ण क्रम और पूर्ण अव्यवस्था के साथ।
  सेर्नमेंट,
- और अत्यंत शीघ्रता और पूर्ण प्रचुरता के साथ,
- फिर भी बिना किसी गलती या त्रुटि के;
- यह अद्भुत वास्तविकता पूरे समय एक समान है।

यह सजीवता के इन व्यापक और शानदार प्रमाणों के कारण है प्राणियों को उनके निर्माता के प्रति समर्पित करते हुए कि स्वर्गारोहण की रात को, सभी प्राणियों की ओर से बोलते हुए, पैगंबर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने कहा " अल-मुबारकात (सभी बधाई और प्रशंसात्मक पूजा [विशेष रूप से सभी जीवित प्राणियों द्वारा की गई और उनके बीज या अंडे के माध्यम से)" जब उन्होंने अनिवार्य रूप से अस्तित्व में रहने वाले को बधाई दी।

तीसरा शब्द अस-सलावत है ।

पैगंबर मुहम्मद, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, ने अपने सर्वोच्च स्वर्गारोहण के दौरान इस पवित्र शब्द का उच्चारण किया, और करोड़ों विश्वासी इसे हर दिन कम से कम दस बार ईश्वरीय दरबार में पेश करते हैं जब वे विहित प्रार्थनाओं के दौरान तशह्हुद करते हैं, जिसे "विश्वासियों का स्वर्गारोहण" कहा जाता है। वास्तव में वे इसे ब्रह्मांड में घोषित करते हैं। स्वर्गारोहण की सच्चाई को थर्टी-फर्स्ट वर्ड में एक शक्तिशाली और निर्णायक तरीके से समझाया गया है, यहाँ तक कि हठी, भौतिकवादी इनकार करने वालों के लिए भी, जिन्हें यह आंशिक रूप से संबोधित करता है। यहाँ, बहुत संक्षेप में, हम विभिन्न प्रकार के चेतन प्राणियों और आत्माओं वाले प्राणियों की विचित्र दुनिया पर एक नज़र डालेंगे, जो स्वर्गारोहण के इस तीसरे शब्द के व्यापक अर्थ को दर्शाता है। ऐसा करने में हम अपने निर्माता की पूर्ण दया और करुणा, और उनके अस्तित्व और एकता के संदर्भ में उनकी शक्ति और सर्वव्यापी इच्छा की विशालता को उनके शाश्वत ज्ञान की अभिव्यक्ति के माध्यम से समझने की कोशिश करेंगे।

हम इस दुनिया में देखते हैं कि आत्मा वाले सभी प्राणी, चाहे सचेत रूप से और तर्कसंगत रूप से या अन्यथा, जानते हैं कि उनकी पूर्ण नपुंसकता और कमजोरी के बावजूद, उनके खिलाफ असंख्य विरोधी और हानिकारक चीजें हैं, और उनकी असीम गरीबी और अभाव के बावजूद उनकी अंतहीन ज़रूरतें और इच्छाएँ हैं। चूँकि उनकी शक्ति और पूंजी इनमें से हज़ारवें हिस्से को भी पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं है, इसलिए वे अपनी पूरी ताकत से चिल्लाते और रोते हैं, और अपनी प्रकृति के प्रवचन के माध्यम से वे विनती और विनती करते हैं। उनमें से प्रत्येक अपनी विशेष आवाज़ और भाषा के साथ आह्वान, विनती, एक तरह की प्रार्थनाएँ और न्यायालय से अपील करता है

वह जो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान है। हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि एक सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ परमेश्वर जो पुकारने वालों की सभी ज़रूरतों को समझता है, उनकी परेशानियों और दुर्दशा को समझता है और उनकी दलीलों और सहज प्रार्थनाओं को सुनता है, उनकी सहायता के लिए आता है और उनकी सभी इच्छाएँ पूरी करता है। वह उनके विलापों को मुस्कुराहटों में और उनकी पुकार को धन्यवाद में बदल देता है। यह बुद्धिमान, जानकार, दयालु सहायता ज्ञान और दया के प्रकटीकरण के माध्यम से वास्तव में शानदार तरीके से प्रकट करती है, वह जो प्रार्थनाओं का उत्तर देता है और मदद करता है, वह जो सर्व-उदार और सर्व-दयालु है। अपने सर्वोच्च स्वर्गारोहण के दौरान, पैगंबर मुहम्मद (उन पर शांति और आशीर्वाद हो) ने कहा: "सभी पवित्र और विनम्र पूजा (सभी सचेत प्राणियों द्वारा की गई), और सभी सचेत, आराध्य और उत्साही पूजा (विश्वासी और ज्ञानी मनुष्यों, जिन्न और स्वर्गदूतों द्वारा की गई) ईश्वर के लिए है," जबकि आत्माओं के साथ प्राणियों की दुनिया की सभी प्रार्थनाएँ और पूजाएँ केवल ईश्वर को अर्पित की जाती हैं। पैगंबर मुहम्मद का समुदाय प्रार्थनाओं के दौरान इन अभिव्यक्तियों को पढ़ता है, जो कम आरोहण हैं।

चौथा पवित्र शब्द है "अत-तैय्यिबत लि'ल्लाह!"

पवित्र शब्द अत-तैय्यिबात (सभी जागरूक, आराध्य और उत्साही पूजा) मनुष्यों, जिन्न, फ़रिश्तों और अन्य प्रकार के आत्मिक प्राणियों के अच्छे शब्दों, कर्मों और पूजा को संदर्भित करता है, जो ईश्वर के ज्ञान और विश्वास के लोग हैं, और जो सार्वभौमिक चेतना के साथ, अपने अच्छे शब्दों, कर्मों और पूजा के कार्यों के साथ ब्रह्मांड को सुशोभित करते हैं। वे हमेशा सुंदरता की दुनिया की ओर मुड़े रहते हैं और शाश्वत, बिल्कुल सुंदर और दयालु एक की अनंत सुंदरता और ब्रह्मांड को सुशोभित करने वाले उनके नामों की शाश्वत सुंदरता को पूरी तरह से समझते हैं; वे जुनून, जोश और सार्वभौमिक आराधना के साथ उनका जवाब देते हैं। जैसा कि यह शब्द उज्ज्वल विश्वास, उसके बारे में व्यापक ज्ञान और प्रशंसा और प्रशंसा की भावना के साथ, उनके द्वारा उत्पन्न सुगंधित सुगंधों के साथ, स्वर्गारोहण के दौरान निर्माता को पेश किया गया था, मुस्लिम समुदाय इसे बिना थके हर दिन तशाह-हुद के दौरान दोहराता है।

ब्रह्मांड अनंत, शाश्वत सौंदर्य और कृपा का दर्पण है, और इसकी अभिव्यक्तियाँ इसमें समाहित हैं। ब्रह्मांड की सभी सुंदरता और पूर्णताएँ उस शाश्वत सौंदर्य से आती हैं और उसके साथ अपने संबंध के माध्यम से सुंदर और मूल्यवान बन जाती हैं। अन्यथा ब्रह्मांड एक खंडहर, दुखों का घर बन जाएगा। उस संबंध का क्या अर्थ है, यह मनुष्यों, स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों के ज्ञान और पुष्टि के माध्यम से समझा जा सकता है, जो हैं

ईश्वर की प्रभुता के संदेशवाहक और उद्घोषक। उन संदेशवाहकों की सुन्दर, मधुर प्रशंसा और स्तुति को सर्वत्र प्रसारित करने के लिए, जिसकी वे पूजा करते हैं, तथा उन्हें सर्वोच्च सिंहासन की ओर भेजने के लिए और दिव्य न्यायालय में ये अच्छे शब्द प्रस्तुत करने के लिए, यह बहुत संभव है कि वायु तत्व को वास्तव में एक विचित्र और उल्लेखनीय स्थिति दी गई है, जिसके कारण उसके परमाणु, कर्तव्यनिष्ठ सैनिकों की तरह, छोटी-छोटी जीभ और कान बन जाते हैं।

इस प्रकार, जिस प्रकार मनुष्य और देवदूत अपने विश्वास और पूजा के माध्यम से सर्वशक्तिमान, सर्वपूज्य को ज्ञात कराते हैं, उसी प्रकार उन प्रत्येक उद्घोषक को सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड से जुड़ा एक सूक्ष्म जगत बनाकर

व्यापक क्षमताओं, अद्भुत क्षमताओं और ज्ञान की सूक्ष्मताओं के माध्यम से, जो उसने उन्हें दी हैं, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ स्वयं को शानदार तरीके से प्रकट करते हैं। उदाहरण के लिए, मानव मस्तिष्क में अखरोट के आकार के स्थान में कई अद्भुत मशीनें बनाकर - अर्थात् स्मृति, कल्पना और विचार जैसी क्षमताएँ - और स्मृति को एक बड़ी लाइब्रेरी में बदलकर, भगवान अपने शाश्वत ज्ञान के प्रकटीकरण के माध्यम से खुद को सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से दिखाते हैं।

ईश्वरीय ज्ञान के पक्ष में पंद्रह तर्क

उपर्युक्त

अब हम ऊपर ईश्वरीय ज्ञान के प्रमाण शीर्षक के अंतर्गत जो कुछ कहा गया है उसका संक्षिप्त अर्थ बताएँगे। यह मूलतः अरबी भाषा में है, तथा सर्वव्यापक ज्ञान का एक व्यापक प्रमाण है, जिसमें पंद्रह तर्क हैं। हम उनका संक्षिप्त विवरण देंगे।

पंद्रह तर्कों में से पहला: एक सटीक, मापा हुआ सुव्यवस्था और संतुलित व्यवस्था अर्थात्, सभी प्राणियों में देखी गई मापा हुआ सुव्यवस्था और संतुलित
व्यवस्था एक सर्वव्यापी ज्ञान की गवाही देती है। हर चीज में -

ब्रह्माण्ड की समग्रता से, जो एक सुव्यवस्थित महल की तरह है, जिसमें हमारे चारों ओर सौरमंडल और वायुमंडल है, वायु तत्व है, जिसके परमाणु शब्दों और ध्वनियों के प्रसारण में एक अद्भुत क्रम प्रदर्शित करते हैं, और पृथ्वी के साथ, जहाँ हर वसंत में सैकड़ों-हजारों विभिन्न प्रजातियाँ पूर्ण क्रम और नियमितता के साथ विकसित होती हैं, सभी जीवित प्राणियों के अंगों, शारीरिक प्रणालियों, कोशिकाओं और परमाणुओं तक -

इसमें पूर्णतया संतुलित सुव्यवस्था और व्यवस्था है जो केवल गहन, व्यापक और अचूक ज्ञान का ही कार्य हो सकता है। यह परीक्षण-

अत्यंत स्पष्ट और निर्णायक रूप से सर्वव्यापी ज्ञान को प्राप्त करता है
ढंग।

दूसरा तर्क: एक व्यवस्थित उपाय और उचित संतुलन

ब्रह्मांड के सभी प्राणियों में, हर चीज़ में, चाहे वह विशेष हो या सार्वभौमिक, अंतरिक्ष के खगोलीय पिंडों से लेकर रक्त में मौजूद लाल और सफ़ेद कणिकाओं तक, एक सबसे व्यवस्थित माप और उचित संतुलन या सामंजस्य होता है। यह एक सर्वव्यापी ज्ञान की स्व-स्पष्ट और निर्णायक रूप से गवाही देता है। उदाहरण के लिए, हम देखते हैं कि एक मक्खी या मनुष्य के अंग, सदस्य और शारीरिक प्रणालियाँ, यहाँ तक कि शरीर की कोशिकाएँ और रक्त में मौजूद लाल और सफ़ेद कणिकाएँ भी इस तरह से स्थित हैं कि वे एक-दूसरे के साथ पूर्ण सामंजस्य में हैं, एक संतुलन और माप के साथ जो इतना बढ़िया है कि यह किसी भी तरह से संभव नहीं है कि जिसके पास अनंत ज्ञान का अभाव है, वह उन्हें ये स्थितियाँ दे सकता है।

सभी सजीव और निर्जीव प्राणियों में, सूक्ष्म कणों से लेकर सौरमंडल के ग्रहों तक, इतने पूर्ण संतुलन और इतने नियमित और अचूक माप का अस्तित्व, एक सर्वव्यापी ज्ञान की सबसे शानदार गवाही देता है। इसका मतलब यह है कि ज्ञान के सभी प्रमाण सर्वज्ञ के अस्तित्व के भी प्रमाण हैं। चूँकि यह असंभव है कि कोई विशेषता उस चीज़ के बिना हो जिसे वह योग्य बनाती है, इसलिए ज्ञान के सभी प्रमाण शाश्वत सर्वज्ञ के आवश्यक अस्तित्व का एक शक्तिशाली और सबसे निर्णायक प्रमाण बनते हैं।

तीसरा तर्क: सर्वसमावेशी, उद्देश्यपूर्ण ज्ञान

ब्रह्मांड में सभी सृजनात्मकता और क्रियाकलापों में, तथा सभी परिवर्तनों में, जीवन की पुनर्स्थापना में, प्राणियों को कर्तव्यों में नियोजित करने में तथा उनसे मुक्त होने में, सभी व्यक्तिगत प्राणियों और प्रजातियों में ऐसे कार्य, लाभ और उद्देश्य होते हैं जो इतने सुविचारित होते हैं कि उनमें संयोग के लिए कोई स्थान नहीं होता। हम देखते हैं कि जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान नहीं है, वह किसी भी तरह से उनका रचयिता या निर्माता होने का दावा नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए, यद्यपि यह केवल मांस का एक टुकड़ा है, जीभ, जो मानव शरीर के लगभग सौ अंगों में से एक है, स्वयं असंख्य सजीव प्राणियों में से केवल एक है, अपने मूल कर्तव्यों के माध्यम से ज्ञान, परिणाम, फल और उपयोग के सैकड़ों उदाहरणों का साधन है। भोजन को चखने का इसका कर्तव्य सभी अलग-अलग स्वादों को पहचानना और शरीर और पेट को उनके बारे में सूचित करना और ईश्वरीय दया के रसोई-घरों का सटीक निरीक्षक होना है। बोलने का इसका कर्तव्य हृदय, आत्मा और मन के लिए एक सटीक व्याख्याकार और टेलीफोन एक्सचेंज होना है।

वाणी का ज्ञान। इन दो बुनियादी कर्तव्यों के साथ, जीभ सबसे शानदार और निर्णायक रूप से एक सर्वव्यापी ज्ञान की गवाही देती है।

यदि एक ही भाषा अपने उद्देश्यों और फलों के माध्यम से ऐसा प्रमाण प्रस्तुत करती है, तो असंख्य भाषाएं तथा सजीव और निर्जीव प्राणी, दोपहर के सूर्य की स्पष्टता और निश्चितता के साथ अनंत ज्ञान की गवाही देते हैं।

वे घोषणा करते हैं कि उस अद्भूत सर्वज्ञ के ज्ञान की सीमा के बाहर, तथा उसकी बुद्धि और इच्छा के बाहर कुछ भी नहीं है।

चौथा तर्क: सर्वव्यापी, विशेष उपकार

चेतन प्राणियों की दुनिया में सभी जीवित प्राणियों पर, प्रत्येक प्रजाति और व्यक्ति पर, विशेष रूप से और उचित रूप से, प्रदान की गई दया और सुरक्षा के उदाहरण और अनुग्रह, एक सर्वव्यापी ज्ञान की ओर स्वतः-स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं और एक सर्वज्ञ दयालु के आवश्यक अस्तित्व के असंख्य प्रमाण प्रदान करते हैं, जो जानता है कि अनुग्रह प्राप्त करने वालों और उनकी आवश्यकताओं को क्या है।

[नोट: अरबी अंश के शब्दों की व्याख्या, जो मेरे नियमित आह्वान का सार है और जिसे मैं सारांशों का सारांश कहता हूँ, उन सत्यों को इंगित करता है जिन्हें रिसाले -ए- नूर - जिसका स्रोत कुरान में है - ने कुरान की आयतों की झलकियों और विशेष रूप से ज्ञान, इच्छा और शक्ति के प्रमाणों से लिया है। विद्वानों के प्रमाण, जो अरबी शब्दों से संकेतित हैं, गहन रूप से व्याख्या किए गए हैं। इसका मतलब यह है कि इनमें से प्रत्येक विद्वान प्रमाण कुरान की कई आयतों द्वारा दिए गए एक संकेत और एक बढ़िया बिंदु की व्याख्या करता है।]

अपने मुख्य विषय पर लौटते हुए, हम स्पष्ट रूप से देखते हैं कि एक सर्वज्ञ और सर्व-दयालु है, जो हमें और सभी अन्य प्राणियों को आत्माओं के साथ जानता है, और उन्हें जानकर, उन पर दयापूर्वक रक्षा करता है। वह उनकी सभी ज़रूरतों और दलीलों को भी जानता है, और इन्हें जानकर, अपने अनुग्रहों के साथ उनकी सहायता करता है। असंख्य उदाहरणों में से एक: मनुष्यों पर आम तौर पर या विशेष रूप से किए गए अनुग्रह, और जो प्रावधान, दवाओं और खनिजों के रूप में आते हैं, वे सबसे स्पष्ट रूप से एक सर्वव्यापी ज्ञान की ओर इशारा करते हैं और प्रदान किए गए खाद्य पदार्थों, दवाओं और खनिजों की संख्या के लिए एक सर्व-दयालु और सर्व-दयालु के अस्तित्व की गवाही देते हैं। बुद्धिमानी और उद्देश्यपूर्ण कार्य, जैसे कि मनुष्यों को खिलाना, और विशेष रूप से कमजोरों और शिशुओं को, पेट की रसोई से शरीर के प्रत्येक कोशिका और अंग के लिए आवश्यक पोषक तत्वों को पहुँचाना, और यह तथ्य कि पहाड़ फ़ार्मेसी और स्टोर की तरह हैं

मानवता के लिए आवश्यक सभी खनिजों के लिए - ये सभी केवल एक सर्वव्यापी ज्ञान के माध्यम से ही संभव हैं। लक्ष्यहीन संयोग, अंधी शक्ति, बहरी प्रकृति, बेजान, अचेतन कारण और सरल, व्यापक तत्व किसी भी तरह से ब्रह्मांड को बनाए रखने, प्रशासित करने, पूर्व-सेवा करने या व्यवस्थित करने में कोई भूमिका नहीं निभा सकते हैं, ये सभी ज्ञान, बोध, बुद्धि, करुणा और अनुग्रह को दर्शाते हैं। स्पष्ट "प्राकृतिक" कारणों को केवल पूर्ण रूप से सर्वज्ञ एक के ज्ञान और बुद्धि की सीमाओं के भीतर, उसके आदेश पर और उसकी अनुमति से, दिव्य शक्ति की गरिमा को ढंकने के लिए एक आवरण के रूप में नियोजित किया जाता है।

पांचवां और छठा तर्क: आदेशों को सुव्यवस्थित करना या व्यवस्थित करना और फलदायी निर्धारण

सभी चीजें, खास तौर पर पौधे, पेड़, जानवर और मनुष्य, ईश्वरीय आदेश और नियति के सिद्धांतों के कारण इतने बुद्धिमान, सुव्यवस्थित, अच्छी तरह से मापे गए और आनुपातिक रूप दिए गए हैं, जो दो तरह के शाश्वत ज्ञान हैं, कि वे कला से भरे हुए हैं, कुशल कलात्मकता के साथ काटे गए हैं, प्रत्येक के कद के लिए पूरी तरह से उपयुक्त तरीके से सिले गए हैं, और पूरी तरह से फिट हैं। ये व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से एक अनंत ज्ञान की ओर इशारा करते हैं और अनगिनत तरीकों से एक सर्वज्ञ निर्माता की गवाही देते हैं।

असंख्य उदाहरणों में से, एक वृक्ष और एक मानव व्यक्ति पर विचार करें। हम देखते हैं कि यह फल देने वाला वृक्ष और वह मनुष्य, जिसके अनेक अंग या शाखाएँ हैं, अदृश्य दिशासूचक यंत्रों और ज्ञान की सूक्ष्म कलम द्वारा बाह्य और आंतरिक दोनों तरह से सीमांकित किए गए हैं, और उनके प्रत्येक अंग को पूर्णतः व्यवस्थित रूप प्रदान किए गए हैं, ताकि वे अपेक्षित फल और परिणाम उत्पन्न कर सकें और अपनी सृष्टि के उद्देश्य के अनुसार अपेक्षित कर्तव्यों का पालन कर सकें। तदनुसार, चूँकि यह केवल अनंत ज्ञान के द्वारा ही संभव हो सकता है, इसलिए वे - पौधों और पशुओं की संख्या के लिए - एक निर्माता और रूप देने वाले, एक सर्वज्ञ निर्धारक के आवश्यक अस्तित्व और असीम ज्ञान की गवाही देते हैं, जो सभी चीज़ों के अंतर्संबंधों को जानता है और उन्हें ध्यान में रखता है, और जानता है कि अपने शाश्वत ज्ञान के दिशासूचक यंत्र और कलम के माध्यम से प्रत्येक वृक्ष और मनुष्य को उनके बाह्य और आंतरिक भागों सहित, व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से, बुद्धिमानी से कैसे परिभाषित किया जाए।

सातवां और आठवां तर्क: नियत अंतिम लक्ष्य और निश्चित, नियमित प्रावधान

ज्ञान के महत्वपूर्ण उदाहरणों के कारण, मृत्यु के नियत अंतिम समय या घड़ियाँ तथा जीवित प्राणी द्वारा उपभोग की जाने वाली भोजन-सामग्री की मात्रा।

जीवन भर में होने वाले सभी कामों को छिपाकर रखा जाता है और ऐसा लगता है कि वे अनिर्दिष्ट हैं। हालाँकि, हर जीव के जीवन का अंतिम लक्ष्य शाश्वत ईश्वरीय आदेश और नियति की नोटबुक में निर्धारित होता है: इसे न तो आगे लाया जा सकता है और न ही विलंबित किया जा सकता है। इसी तरह, ऐसे कई प्रमाण हैं जो दिखाते हैं कि हर जीव का प्रावधान भी नियुक्त और निर्धारित है, जो कि आदेश और नियति की पट्टियों पर अंकित है। उदाहरण के लिए, यह सर्वज्ञ संरक्षक के बुद्धिमान नियम के माध्यम से है कि एक विशाल वृक्ष मर जाता है और अपने बीज को पीछे छोड़ देता है, जो एक अर्थ में उसकी आत्मा है, जो अपने स्थान पर अपने कर्तव्यों को जारी रखता है। इसी तरह, शिशुओं और बच्चों का पोषण, दूध, आंतों में रक्त और मल के बीच से उत्पन्न होना शुरू होता है और बहता है

स्तनों से उनके मुंह में, शुद्ध और स्वच्छ। यह निर्णायक रूप से संयोग के हस्तक्षेप को खारिज करता है और स्पष्ट रूप से दिखाता है कि ऐसी घटना एक सर्वज्ञ और सर्व-करुणामय प्रदाता के दयालु कानून के माध्यम से होती है। तुलनात्मक रूप से, ये दो छोटे उदाहरण सभी जीवित प्राणियों और आत्माओं वाले प्राणियों पर लागू किए जा सकते हैं।

इसका मतलब यह है कि वास्तव में मृत्यु का नियत समय निर्दिष्ट और निर्धारित है और प्रत्येक जीवित प्राणी की व्यवस्था नियति की नोटबुक में निर्धारित और दर्ज की गई है। लेकिन ज्ञान के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरणों के लिए, नियत समय और व्यवस्था दोनों को अदृश्य के पर्दे के पीछे रखा जाता है और वे अज्ञात, अनिर्दिष्ट और स्पष्ट रूप से संयोग से बंधे हुए प्रतीत होते हैं। क्योंकि यदि मृत्यु का नियत समय लोगों के लिए सूर्य के उदय और अस्त होने जितना स्पष्ट होता, तो जीवन का पहला आधा भाग पूरी तरह से असावधानी में व्यतीत होता और परलोक के लिए काम न करने में बर्बाद हो जाता, जबकि दूसरा आधा भाग भयानक भय में बीतता, जिसमें लोगों को लगता कि वे हर दिन मृत्यु की फांसी की ओर एक और कदम बढ़ा रहे हैं, जिससे उनकी मृत्यु की आपदा सौ गुना बढ़ जाती है। इस और अन्य कारणों से लोगों पर आने वाली आपदाएँ और दुनिया का अंतिम विनाश, जो कि मृत्यु का नियत समय है, दयापूर्वक अदृश्य के पर्दे के पीछे अज्ञात छोड़ दिया गया है।

जहाँ तक प्रावधान की बात है, चूँकि जीवन के बाद यह वरदानों का सबसे बड़ा खजाना है, धन्यवाद और प्रशंसा की सबसे समृद्ध खान है और पूजा, प्रार्थना और विनती का सबसे व्यापक स्रोत है, इसे स्पष्ट रूप से अस्पष्ट छोड़ दिया गया है और ऐसा लगता है कि यह संयोग से बंधा हुआ है। क्योंकि इस तरह से ईश्वरीय न्यायालय में लगातार शरण लेने, प्रार्थना और विनती, और प्रशंसा और धन्यवाद के माध्यम से प्रावधान की तलाश करने का द्वार नहीं है।

बंद हो गया। यदि वास्तव में प्रावधान स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया होता, तो इसकी प्रकृति पूरी तरह से बदल गई होती। कृतज्ञता, कृतज्ञतापूर्ण याचिकाओं और प्रार्थनाओं, वास्तव में विनम्र पूजा के द्वार बंद हो गए होते।

नौवां और दसवां तर्क: कुशल सटीकता और दोषहीनता, और मनभावन, अलंकृत देखभाल और ध्यान

अर्थात्, प्रत्येक प्राणी में, विशेष रूप से उन सभी सुंदर प्राणियों में जो वसंत में पृथ्वी पर शाश्वत सौंदर्य और कृपा की अभिव्यक्तियाँ प्रदर्शित करते हैं, जिनमें विशेष रूप से फूल, फल, छोटे पक्षी और मक्खियाँ, और विशेष रूप से चमकते हुए उड़ने वाले कीड़े शामिल हैं - उनकी रचना, रूप और अंगों में, कोई ऐसी चमत्कारी कुशलता और सटीकता, ऐसी अद्भुत कला, दोषहीनता और उत्कृष्टता, और इतने प्रकार के आकार और छोटे तंत्र देख सकता है जो उनके निर्माता की चमत्कारी दक्षता को दर्शाते हैं कि वे निश्चित रूप से एक सच्चे व्यापक ज्ञान का संकेत देते हैं, और - अभिव्यक्ति में कोई गलती न हो - ज्ञान की एक अत्यंत कुशल क्षमता, जो यह प्रमाणित करती है कि यादृच्छिक संयोग या अचेतन, भ्रमित कारणों का उनमें कोई हिस्सा होना असंभव है। वाक्यांश, "मनभावन, अलंकृत देखभाल और ध्यान" का अर्थ है कि ये सुंदर प्राणी इतने मनभावन तरीके से सजे हुए हैं, इतने मधुर तरीके से अलंकृत हैं, और इतनी आकर्षक कला की सुंदरता से युक्त हैं कि यह स्पष्ट है कि उनका निर्माता अनंत ज्ञान के माध्यम से काम करता है। वह हर चीज में सबसे अच्छा तरीका जानता है, और सचेत प्राणियों को उत्तम शिल्प कौशल की सुंदरता और उस सुंदरता की पूर्णता दिखाने की इच्छा रखता है। वह सबसे तुच्छ फूल और सबसे छोटी मक्खी को सबसे बड़ी सावधानी, कौशल और कला के साथ बनाता और आकार देता है, और उन्हें सबसे बड़ा महत्व देता है। यह चौकस अलंकरण और सौंदर्यीकरण स्वयं-स्पष्ट रूप से एक असीम और सर्वव्यापी ज्ञान का संकेत देता है; वे अनगिनत तरीकों से एक सर्वज्ञ और सर्व-सुंदर निर्माता के आवश्यक अस्तित्व की गवाही देते हैं।

ग्यारहवाँ तर्क, जिसमें वास्तव में पाँच सार्वभौमिक तर्क शामिल हैं-

टिप्पणियाँ:

> पूर्ण सहजता के साथ पूर्णतया उत्तम व्यवस्था, संतुलन, माप और भेद; तथा वस्तुओं का उनकी पूर्ण प्रचुरता के बावजूद दृढ़ता और सटीकता के साथ सृजन, तथा पूर्ण गति के बावजूद पूर्ण संतुलन और माप के साथ, तथा उनकी अनंत सीमा के बावजूद पूर्ण सौंदर्य और कला के साथ, तथा अनंत दूरियों के बावजूद पूर्ण अनुरूपता के साथ, तथा इस तथ्य के बावजूद कि वे सभी परस्पर मिश्रित हैं, पूर्ण भेद के साथ सृजन।

यह तर्क उपरोक्त अरबी अंश के अंत में दिए गए प्रमाण का बेहतर रूप है, लेकिन गंभीर बीमारी के कारण, इसमें दिए गए प्रमाणों में से केवल पांच या छह का ही संक्षेप में उल्लेख किया जाएगा।

सबसे पहले: हम पूरी धरती पर देखते हैं कि अद्भुत जीवित तंत्र बनाए जाते हैं, कुछ तुरंत और कुछ एक या दो मिनट में, एक व्यवस्थित और मापा हुआ तरीके से, जिनमें से प्रत्येक अपने साथियों से अलग होता है; यह सबसे बड़ी आसानी से किया जाता है, जो एक पूर्ण ज्ञान और कौशल से उत्पन्न होता है। यह एक अनंत ज्ञान को इंगित करता है और कला में कुशल ज्ञान से उत्पन्न होने वाली आसानी के अनुपात में उस ज्ञान की पूर्णता की गवाही देता है।

दूसरा: परिपूर्ण और पूर्णतः कलात्मक आविष्कार, जो बिना किसी भ्रम के, अत्यधिक प्रचुरता और बहुलता में विद्यमान हैं, एक अनंत शक्ति के भीतर असीम ज्ञान की ओर संकेत करते हैं, तथा असंख्य तरीकों से उस एक की गवाही देते हैं जो पूर्णतः ज्ञानी और शक्तिशाली है।

तीसरा: आविष्कार जिनमें पूर्ण संतुलन और माप होता है, चाहे वे कितनी भी तीव्र गति से बनाए गए हों, वे असीम ज्ञान की ओर संकेत करते हैं तथा असंख्य तरीकों से एक पूर्ण ज्ञानी और पूर्ण शक्तिशाली व्यक्ति की गवाही देते हैं।

चौथा: धरती के विशाल भाग पर असंख्य जीवों को उनकी विशालता के बावजूद, अत्यंत कुशलता, अलंकरण और कला की सुंदरता के साथ बनाया जाना, एक सर्वव्यापी ज्ञान की ओर संकेत करता है जो किसी भी चीज़ को भ्रमित नहीं करता, जो सभी चीज़ों को एक साथ देखता है, और जिसके लिए कोई भी चीज़ किसी अन्य चीज़ के लिए बाधा नहीं है। साथ ही, वे जीव व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से इस बात की गवाही देते हैं कि वे उस एक की कलाकृतियाँ हैं जो सभी चीज़ों को जानने वाला है, एक परम शक्तिशाली है।

पाँचवाँ: एक प्रजाति के सदस्यों का अस्तित्व में आना जो एक दूसरे से बहुत दूर हैं, एक पूर्व में, एक पश्चिम में, एक उत्तर में, और एक दक्षिण में, एक ही तरह से, और एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं लेकिन अलग-अलग व्यक्तित्व के साथ। यह केवल उस एक की अनंत शक्ति के माध्यम से ही हो सकता है जो पूर्ण रूप से जानने वाला और पूर्ण रूप से शक्तिशाली है, जो पूरे ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है और अपने अनंत ज्ञान के माध्यम से सभी प्राणियों को उनकी सभी अवस्थाओं के साथ समाहित करता है, इस प्रकार एक सर्वव्यापी ज्ञान का संकेत देता है और अदृश्य के सर्वज्ञ होने की गवाही देता है।

छठी बात: बहुत सी जीवित प्रणालियाँ भ्रमित करने वाली परिस्थितियों और अंधेरे स्थानों में बनाई जाती हैं। उदाहरण के लिए, बीज बिना किसी भ्रम के, अपनी समानताओं के बावजूद, जमीन के नीचे अंकुरित और विकसित होते हैं।

सभी को एक चमत्कारी ढंग से एक साथ मिलाया जा रहा है, किसी भी तरह की किसी भी चीज़ की उपेक्षा किए बिना, साथ ही उनकी सभी विशिष्ट विशेषताओं के साथ। यह सूर्य की तरह स्पष्ट रूप से शाश्वत ज्ञान को इंगित करता है और दिन के उजाले की तरह स्पष्ट रूप से उस व्यक्ति की रचनात्मकता और प्रभुत्व की गवाही देता है जो पूरी तरह से शक्तिशाली और पूरी तरह से जानने वाला है। इसका अधिक विस्तृत विवरण रिसाले-ए-नूर में पाया जा सकता है, और इसलिए यहाँ हम एक लंबी कहानी को छोटा करते हैं।

अब हम "वसीयत" के विषय पर चर्चा करते हैं, जो कि सारांश में है
सारांश:

ईश्वरीय इच्छा के प्रमाण

> ईश्वर सर्व-महान है - शक्ति और ज्ञान में सभी चीज़ों से महान, क्योंकि वह सर्व-इच्छुक है। वह जो चाहता है, वह घटित होता है; वह जो नहीं चाहता, वह घटित नहीं होता। प्रत्येक प्राणी अपने विशिष्ट सार, विशेष गुणों, व्यक्तिगत प्रकृति, और विशिष्ट पहचान और रूप के साथ, असीम संभावनाओं और भ्रमित संभावनाओं के भीतर बेहतरीन और सबसे सटीक क्रम के साथ बनाया गया है, हस्तक्षेप करने वाले और परस्पर विरोधी तत्वों के बीच जो बाढ़ की तरह अव्यवस्थित रूप से बहते हैं, और अपने असंख्य साथियों के बीच जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हैं, अव्यवस्था का एक और कारण है। इसके अलावा, प्रत्येक प्राणी एक सटीक, परिपूर्ण और नियमित क्रम के अधीन है, और उसके सभी अंग और अंग एक संवेदनशील, सटीक संतुलन और माप के साथ नियुक्त और उससे जुड़े हुए हैं। इसके अलावा, प्रत्येक जीवित प्राणी को एक सुडौल, सुंदर और अनोखा चेहरा दिया गया है, और उसके सभी अलग-अलग अंग और अंग सरल, बेजान पदार्थ से जीवित और परिपूर्ण कला के साथ बनाए गए हैं। उदाहरण के लिए, एक इंसान को तरल पदार्थ की एक बूंद से सैकड़ों अलग-अलग अंगों के साथ बनाया जाता है; एक पक्षी को एक साधारण अंडे से कई अलग-अलग अंगों और अंगों के साथ बनाया जाता है और एक चमत्कारी रूप में तैयार किया जाता है; और एक पेड़ को एक छोटे से बीज से बनाया जाता है जिसमें साधारण, बेजान कार्बन, नाइट्रोजन, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन, साथ ही इसकी शाखाएँ और टहनियाँ और कई अन्य अंग और भाग होते हैं; फिर इसे एक व्यवस्थित, फलदायी रूप में तैयार किया जाता है। यह साबित करता है कि उल्लिखित सभी तथ्य केवल सर्वशक्तिमान और सर्व-महिमावान की इच्छा, पसंद, इच्छा और निर्णय के माध्यम से संभव हैं। इसी तरह, एक प्रजाति के सदस्यों के बीच शारीरिक संरचनाओं और बुनियादी प्रणालियों में पत्राचार से पता चलता है कि उनका निर्माता एक और अद्वितीय है। साथ ही, यह तथ्य कि प्रत्येक सदस्य दूसरों से अलग और अलग है, यह दर्शाता है कि एक और अद्वितीय निर्माता जो चाहता है वह करता है और जैसा चाहता है वैसा ही न्याय करता है।

यह सब ईश्वरीय इच्छा का सार्वभौमिक प्रमाण है, जिसमें अनेक तर्क सम्मिलित हैं। साथ ही, ईश्वरीय ज्ञान के सभी उपर्युक्त प्रमाण भी सत्य हैं।

ईश्वरीय इच्छा के लिए भी प्रमाण हैं। प्रत्येक प्राणी ज्ञान और इच्छा की अभिव्यक्तियाँ और कार्य एक दूसरे के भीतर प्रदर्शित करता है। ईश्वरीय इच्छा के लिए एक प्राणी की निर्विवाद गवाही दर्शाती है कि सभी प्राणी ईश्वरीय इच्छा की गवाही देते हैं, जो सभी चीज़ों को शामिल करती है, सूर्य की तरह स्पष्ट निश्चितता के साथ, और यह कि वे एक सर्वशक्तिमान, सर्व-इच्छुक व्यक्ति के आवश्यक अस्तित्व के असंख्य प्रमाणों का गठन करते हैं।

ऊपर वर्णित दिव्य ज्ञान के सभी प्रमाण दिव्य इच्छा के भी प्रमाण हैं, क्योंकि दोनों दिव्य शक्ति के साथ मिलकर कार्य करते हैं।
एक के बिना दूसरा अस्तित्व में नहीं रह सकता। जिस तरह से एक प्रजाति के सदस्यों के शारीरिक अंगों के बीच सभी पत्राचार और अनुरूपताएं यह संकेत देती हैं कि उनका निर्माता एक और एक ही है, उनके चेहरे की विशेषताओं में बुद्धिमान और उद्देश्यपूर्ण अंतर और भेद निश्चित रूप से संकेत देते हैं कि उनके एक और अद्वितीय निर्माता के पास पूर्ण इच्छा है, जो वह चाहता है, जिस तरह से वह चाहता है। वह हर चीज को इच्छा और पसंद के साथ और कुछ खास उद्देश्यों के लिए बनाता है।

ईश्वरीय इच्छा के बारे में चर्चा यहीं समाप्त होती है। मेरा इरादा यह लिखने का था
इस संबंध में और भी कई महत्वपूर्ण बातें हैं, लेकिन चूंकि बीमारी के कारण मेरा दिमाग थक गया है, इसलिए इसे किसी और समय के लिए स्थगित करना होगा।

दिव्य शक्ति

> ईश्वर सर्व-महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीजों से बड़ा है, क्योंकि वह सभी चीजों पर सर्वशक्तिमान है, उसके पास एक निरपेक्ष, सर्वव्यापी शक्ति है जो सर्व-शुद्ध और पवित्र सार के लिए आवश्यक और आंतरिक रूप से अपरिहार्य है। इसलिए यह असंभव और अकल्पनीय है कि इस शक्ति का कोई विपरीत हो जो इसमें हस्तक्षेप कर सके। इसके अलावा, वह शक्ति पूरी तरह से क्रम-निर्धारण से मुक्त है: उसके सामने परमाणु और तारे, भाग और संपूर्ण, विशेष और सार्वभौमिक, बीज और वृक्ष, ब्रह्मांड और मानवता समान हैं, जैसा कि पूर्ण क्रम, संतुलन, माप, सामंजस्य, भेद और सटीकता द्वारा पुष्टि की जाती है जो पूर्ण सहजता, प्रचुरता, गति और अंतर्संबंध के साथ या उसके बावजूद देखी जा सकती हैं। यह चमक और पारदर्शिता जैसे अस्तित्वगत तथ्यों के कारण है - दिव्य शक्ति पदार्थ से मुक्त है और जिन चीजों के साथ शक्ति व्यवहार करती है उनका आयाम अमूर्त, चमकदार और पारदर्शी है - और चीजों के बीच पारस्परिकता और अंतर्संबंध, और सृष्टि में सटीक संतुलन, व्यवस्था और आज्ञाकारिता है। यह ईश्वरीय एकता की सहायता, स्रोत की एकता से आने वाली सहजता और ईश्वरीय एकता या अद्वितीयता की अभिव्यक्ति के कारण भी है। यह इसलिए भी है क्योंकि उसका अस्तित्व पूर्णतः ईश्वरीय एकता है।

आवश्यक है और वह स्वयं ही विद्यमान है; क्योंकि वह पूर्णतया पदार्थ से मुक्त है और सृजित से सर्वथा भिन्न है, और इसलिए भी कि वह अप्रतिबंधित, अविभाज्य और स्थान से असंबद्ध है। ऐसा इसलिए भी है क्योंकि उसे कोई बाधा नहीं पहुंचाता; बल्कि, (हमारे शरीर में शिराओं या विद्युत का संचालन करने वाले धातु के तारों या अन्य सूक्ष्म शक्तियों की तरह), जो चीजें बाधा और रुकावट पैदा करने वाली मानी जाती हैं, वे वास्तव में सुविधा के साधन के रूप में कार्य करती हैं (हालांकि उसे अपने आदेशों का संचालन या निष्पादन करने में किसी सहायता की आवश्यकता नहीं है)। जो कुछ भी वह बनाता है, उसमें कला का एक ही गुण होता है- परमाणु, अंश, विशेष, बीज और मानव किसी भी तरह से तारे, समग्र, सार्वभौमिक, वृक्ष और ब्रह्मांड से कम सुंदर या कम कलात्मक नहीं हैं। जो बाद वाले को बनाता है, वह पहले वाले को भी बनाता है। इसके अलावा, उन बड़े सार्वभौमिकों के संबंध में जो विशेषों को घेरते हैं और उन संपूर्णों को जो भागों को घेरते हैं, वे व्यक्तिगत भाग और विशेष जो घेरे जाते हैं, उदाहरण के लिए, एक बीज की तरह हैं जिसमें एक विशाल वृक्ष छोटे अक्षरों से अंकित होता है, या उन बूंदों की तरह जो उन्हें घेरती हैं या निचोड़ती हैं। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि बड़ी संस्थाएँ और सार्वभौमिक छोटी, घिरी हुई चीज़ों और विशिष्टताओं के निर्माता की मुट्ठी में हैं जिन्हें वे घेरते हैं: वह अपने ज्ञान के तराजू से सार्वभौमिक को विशेष में शामिल करता है या सम्मिलित करता है, और अपनी बुद्धि के सिद्धांतों के साथ सार्वभौमिक से विशेष को छानता है। "महिमा के कुरान" की प्रतिलिपि जो ईथर के कणों के साथ एक परमाणु में अंकित है, सितारों और सूर्यों की स्याही से आकाश के पन्नों पर लिखी गई "महानता के कुरान" की प्रतिलिपि से वाक्पटुता या कला के चमत्कारों में कम नहीं है। इसी तरह, ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में, एक गुलाब वाक्पटुता या कला की सुंदरता में मोती जैसे सितारे से कम नहीं है; न ही एक चींटी हाथी से कम है और न ही एक कीड़ा एक कीड़ा से कम है। इसके अलावा, चीजों के निर्माण में बिल्कुल सही गति और आसानी गुमराह लोगों को रचनात्मक निर्माण को आत्म-निर्माण के साथ भ्रमित करने का कारण बनती है, जिसमें अंतहीन असंभवताएं शामिल हैं और यह सभी संभावनाओं और धारणाओं से परे है। जबकि चीजों के निर्माण में सबसे अधिक और सही गति और आसानी सही मार्गदर्शन वाले लोगों को इस निश्चितता की ओर ले जाती है कि ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में सितारे और छोटे परमाणु एक ही हैं, उनकी महिमा सर्वोपरि है! और उनके अलावा कोई देवता नहीं है, और वे सर्व-महान हैं।

ईश्वरीय शक्ति के सर्वोच्च विषय से संबंधित इस लेख को संक्षेप में समझाने से पहले, मैं एक सत्य व्यक्त करना आवश्यक समझता हूँ। वह इस प्रकार है:

ईश्वरीय शक्ति का अस्तित्व ईश्वर के अस्तित्व से अधिक निश्चित है।

ब्रह्मांड। वास्तव में, हर एक प्राणी ईश्वरीय शक्ति का मूर्त रूप है: वे सभी दृष्टि के आधार पर निश्चितता की हद तक उस शक्ति के अस्तित्व को प्रदर्शित करते हैं। वे अनगिनत तरीकों से परम सत्ता की गवाही देते हैं

शक्तिशाली एक, वह जो उस शक्ति द्वारा योग्य है। उस शक्ति को और अधिक प्रमाणों के साथ साबित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो करना बाकी है वह दिव्य शक्ति के बारे में एक विस्मयकारी सत्य को साबित करना है, जो कि श्लोक में घोषित किया गया है, आपकी रचना और आपका पुनरुत्थान एक ही आत्मा के (सृजन और पुनरुत्थान) के समान है

(31:28) यह सत्य पुनरुत्थान और सर्वोच्च समागम का सबसे मजबूत आधार है, ईमान के सबसे महत्वपूर्ण आधारों में से एक है, तथा विश्वास और कुरान की सच्चाइयों के असंख्य मामलों को समझने के लिए सबसे आवश्यक साधन है। चूँकि हर कोई तर्क के माध्यम से इस तक पहुँचने का रास्ता नहीं खोज पाया है, इसलिए कुछ लोग ईश्वरीय शक्ति के बारे में भ्रमित रह गए हैं या यहाँ तक कि इसे नकार दिया है।

प्रश्नगत आधार या बुनियाद, साधन और सत्य, उपरोक्त आयत का अर्थ या विषय-वस्तु है। अर्थात्: "ऐ मनुष्यों और जिन्नों! तुम सबका क़यामत के दिन पुनः निर्माण और जीवित करना मेरी शक्ति के लिए उतना ही आसान है जितना कि एक व्यक्ति का निर्माण और पुनरुत्थान!"

दिव्य शक्ति वसंत को उतनी ही आसानी से पैदा करती है जितनी आसानी से वह एक फूल को पैदा करती है। विशेष और सार्वभौमिक, छोटा और बड़ा, अनेक और कुछ भी उस शक्ति के लिए समान हैं। वह ग्रहों को उतनी ही आसानी से घुमाती है जितनी आसानी से वह परमाणुओं को घुमाती है।

उपरोक्त अंश इस अद्भुत वास्तविकता का सबसे निर्णायक, शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत करता है। इसमें नौ चरण शामिल हैं, जिनका आधार निम्नलिखित द्वारा दर्शाया गया है:

> ईश्वर सर्व-महान है, शक्ति और ज्ञान में सभी चीज़ों से बड़ा है, क्योंकि वह सभी चीज़ों पर पूर्ण, सर्वव्यापी शक्ति के साथ सर्वशक्तिमान है, जो सर्व-शुद्ध और पवित्र सार के लिए आवश्यक और आंतरिक रूप से अपरिहार्य है। इसलिए, यह असंभव और अकल्पनीय है कि उस शक्ति का कोई विपरीत हो जो उसमें हस्तक्षेप कर सके। इसके अलावा, वह शक्ति पूरी तरह से क्रम-विभाजन से मुक्त है: उसके सामने परमाणु और तारे, भाग और संपूर्ण, विशेष और सार्वभौमिक, बीज और वृक्ष, ब्रह्मांड और मानवता समान हैं।

अर्थात्, सर्वशक्तिमान ईश्वर की शक्ति इस अर्थ में निरपेक्ष है कि वह सब कुछ करने में सक्षम है, क्योंकि वह सभी चीजों को अपने में समाहित करती है। यह अनिवार्य रूप से विद्यमान एक के लिए आवश्यक है; तर्क के संदर्भ में, यह उसके लिए आंतरिक रूप से अपरिहार्य है और यह असंभव है कि इसे उससे अलग किया जाए। चूँकि सर्व-शुद्ध और पवित्र सार में ऐसी अपरिहार्य शक्ति है, इसलिए इसका विपरीत - नपुंसकता - निश्चित रूप से इसमें किसी भी तरह से हस्तक्षेप नहीं कर सकती। नपुंसकता किसी भी तरह से सर्वशक्तिमान सार को खराब नहीं कर सकती। चूँकि किसी चीज़ में डिग्री का अस्तित्व उसके विपरीत के हस्तक्षेप के माध्यम से होता है - उदाहरण के लिए, डिग्री

और गर्मी के स्तर ठंड के हस्तक्षेप से और सुंदरता की डिग्री कुरूपता के हस्तक्षेप से मौजूद हैं - नपुंसकता, इस आवश्यक शक्ति के विपरीत, किसी भी तरह से इसके करीब नहीं आ सकती। इसलिए, उस परम शक्ति में कोई डिग्री या ग्रेड नहीं हो सकता। चूँकि इसमें कोई डिग्री नहीं हो सकती, इसलिए तारे और परमाणु उस शक्ति के सामने बराबर हैं और उसके लिए भाग और पूरे के बीच या एक व्यक्ति और एक प्रजाति के बीच कोई अंतर नहीं है।

इस प्रकार, उस शक्ति के लिए एक बीज, एक विशाल वृक्ष या पूरे ब्रह्मांड को पुनर्जीवित करना उतना ही आसान है; उस शक्ति के लिए एक अकेले मानव व्यक्ति और पुनरुत्थान पर आत्माओं वाले सभी प्राणियों को पुनर्जीवित करना उतना ही आसान है। बड़े और छोटे, बहुत से और कुछ के बीच कोई अंतर नहीं है। इस सत्य के निर्णायक प्रमाण पूर्ण कला, व्यवस्था, सामंजस्य, संतुलन, भेद और प्रचुरता हैं जो हम चीजों के निर्माण में देखते हैं, चाहे वे जिस गति और सहजता से बनाई गई हों या नहीं।

प्रथम चरण: ....जैसा कि पूर्ण व्यवस्था, संतुलन और माप, सामंजस्य, विशिष्टता और परिशुद्धता द्वारा पुष्टि की जाती है, जो पूर्ण सहजता, प्रचुरता, गति और अंतर्मिश्रण के साथ या उसके बावजूद भी देखी जा सकती है।

यह चरण पहले ही ऊपर समझाया जा चुका है।

दूसरा चरण: ऐसा अस्तित्वगत तथ्यों जैसे कि चमक और पारदर्शिता के कारण है - दिव्य शक्ति पदार्थ से मुक्त है और जिन वस्तुओं के साथ शक्ति का संबंध है उनका आयाम अभौतिक, चमकदार और पारदर्शी है - और वस्तुओं के बीच पारस्परिकता और अंतर्संबंध है, और सृष्टि में सटीक संतुलन, व्यवस्था और आज्ञाकारिता है।

इस अनुच्छेद का विस्तृत विवरण दसवें वचन, उनतीसवें वचन और बीसवें पत्र के अंतिम भाग में पाया जा सकता है; यहाँ हम इसे बहुत संक्षेप में समझाएँगे।

चूँकि सूर्य एक प्रकाश-प्रसारक वस्तु है, इसलिए प्रभु की शक्ति के माध्यम से, इसका प्रकाश और छवि समुद्र की पूरी सतह और उसके सभी बुलबुले या झागों में उतनी ही आसानी से और एक ही पल में प्रवेश कर जाती है, जितनी आसानी से वे कांच के एक टुकड़े में प्रवेश करती हैं। इसे देखते हुए, प्रकाश के प्रकाश की बिल्कुल पदार्थ-मुक्त शक्ति के लिए आकाश और सितारों को बनाना और घुमाना उतना ही आसान है जितना कि मक्खियों और परमाणुओं को बनाना और उन्हें घुमाना: इनमें से कोई भी इसे कम से कम कठिनाई नहीं देता है।

इसके अलावा, पारदर्शिता की गुणवत्ता के कारण , सूर्य का प्रकाश और छवि एक ही पारदर्शी चीज़ में समान आसानी से मौजूद हैं - एक छोटे से दर्पण में या उदाहरण के लिए, आंख की पुतली में - उसी तरह, जैसे कि, दिव्य आदेश के माध्यम से, वही प्रकाश और छवि किसी भी पारदर्शी चीज़ पर प्रतिबिंबित होती है।

सभी चमकती हुई चीजें, पारदर्शी वस्तुएं, पानी की बूंदें और पूरे समुद्र की सतह पर। इसी तरह, चूंकि चीजों के आंतरिक चेहरे या अमूर्त आयाम और प्रकृति पारदर्शी और चमकदार हैं, इसलिए परम शक्ति पूरे पशु साम्राज्य को उसी सहजता से बनाती है जैसे वह एक व्यक्ति के निर्माण में खुद को प्रकट करती है: बहुतों और कुछ के बीच, महान और छोटे के बीच कोई अंतर नहीं है।

इसके अलावा, संतुलन की गुणवत्ता के कारण , यदि समान वजन के दो अखरोटों को बिल्कुल सटीक तराजू के एक जोड़े पर रखा जाए जो पहाड़ों को तौलने के लिए पर्याप्त बड़े हों, और अखरोटों में से एक में थोड़ा सा बीज डाला जाए, तो यह एक पलड़े को पहाड़ की चोटी जितना ऊंचा उठा देगा और दूसरे को उसी आसानी से घाटी की तलहटी में गिरा देगा। यदि, दो अखरोटों के बजाय, समान वजन के दो पहाड़ों को पलड़ों में रखा जाए, और उनमें से एक में एक अखरोट जोड़ा जाए, तो यह एक पलड़े को आसमान की ओर उठा देगा जबकि दूसरे को घाटी की तलहटी में गिरा देगा। धर्मशास्त्र (कलाम) के विशेषज्ञ कहते हैं: "संयोग का अर्थ है दो संभावनाओं की समानता।" यानी, अगर उनके अस्तित्व या गैर-अस्तित्व को अनिवार्य बनाने वाली कोई चीज़ नहीं है, तो जिन चीज़ों का अस्तित्व और गैर-अस्तित्व आंतरिक रूप से आवश्यक नहीं है, वे इस संबंध में समान हैं कि वे मौजूद हैं या नहीं। कुछ या बहुत, बड़े या छोटे इस संयोग और समानता के संबंध में समान हैं। इस प्रकार, जीव आकस्मिक हैं, और चूँकि वे आकस्मिक हैं, इसलिए उनका अस्तित्व और अनस्तित्व बराबर है। ऐसा होने के कारण, अनिवार्य रूप से विद्यमान एक की असीम शाश्वत शक्ति के लिए सभी आकस्मिक प्राणियों को अस्तित्व देना उतना ही आसान है जितना कि एक आकस्मिक प्राणी को अस्तित्व देना। इस प्रकार, यह तथ्य कि शाश्वत दिव्य शक्ति सभी आकस्मिक प्राणियों को उतनी ही आसानी से अस्तित्व देती है जितनी आसानी से एक आकस्मिक प्राणी को अस्तित्व देती है, अनस्तित्व के संतुलन को नष्ट कर देती है या आकस्मिक प्राणियों के अस्तित्व या अनस्तित्व के बीच समानता को उनके अस्तित्व के पक्ष में हटा देती है; यह शक्ति प्रत्येक आकस्मिक वस्तु को एक उपयुक्त अस्तित्व के साथ सुसज्जित करती है। जब प्राणी के जीवन के कर्तव्य पूरे हो जाते हैं, तो शक्ति बाहरी अस्तित्व के अपने वस्त्र को हटा देती है और उसे स्पष्ट अनस्तित्व में भेज देती है; हालाँकि, वास्तव में यह एक ऐसा अस्तित्व है जो उसके ज्ञान के क्षेत्र में रहता है। इसका मतलब यह है कि अगर चीज़ों को परम शक्तिशाली के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो वसंत का निर्माण एक फूल के निर्माण जितना आसान हो जाता है, और पुनरुत्थान पर सभी मानव जाति को जीवन में लाना एक आत्मा को जीवन में लाने जितना आसान है। लेकिन, अगर उन्हें "प्राकृतिक" कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक फूल को बनाना वसंत जितना ही मुश्किल हो जाता है और एक मक्खी को बनाना सभी जीवित प्राणियों जितना ही मुश्किल हो जाता है।

साथ ही, सृष्टि में व्यवस्था या सुव्यवस्था के कारण , किसी बड़े जहाज या हवाई जहाज को अपनी उंगली से बटन दबाकर चलाना उतना ही आसान है जितना कि अपनी उंगली से चाबी घुमाकर घड़ी की मुख्य स्प्रिंग को चलाना। इसी तरह, चूँकि सभी चीज़ें, चाहे वे सार्वभौमिक हों या विशिष्ट, बड़ी हों या छोटी, बहुत हों या कम, प्रत्येक को ईश्वर के शाश्वत ज्ञान और बुद्धि के सिद्धांतों और नियमों तथा ईश्वरीय इच्छा की सार्वभौमिक अभिव्यक्तियों और विशिष्ट सिद्धांतों के माध्यम से एक अमूर्त साँचा, एक विशिष्ट माप और अनुपात तथा विशेष सीमाएँ दी गई हैं, वे ईश्वरीय ज्ञान द्वारा स्थापित व्यवस्था की सीमाओं के भीतर कार्य करते हैं और ईश्वरीय इच्छा के नियमों से बंधे होते हैं। अतएव, अपनी असीम शक्ति के द्वारा सौरमण्डल को घुमाना तथा पृथ्वी रूपी जहाज को उसकी वार्षिक कक्षा में घुमाना उस परमशक्तिशाली के लिए उतना ही सरल है, जितना कि शरीर में रक्त का संचार करना, रक्त में लाल तथा सफेद कणिकाओं को चलाना, तथा कणिकाओं के सूक्ष्म परमाणुओं को पूर्ण क्रम में तथा विवेकपूर्ण उद्देश्यों के लिए चलाना। द्रव की एक बूंद से वह बिना किसी कठिनाई के ब्रह्माण्ड के नमूने पर एक मनुष्य को, उसके अद्भुत अंगों सहित, उत्पन्न करता है। इसका अर्थ यह है कि यदि इसे अनन्त, असीम शक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए, तो ब्रह्माण्ड की रचना एक मनुष्य के निर्माण के समान सरल है। परन्तु यदि इसे उस शक्ति के लिए जिम्मेदार न ठहराया जाए, तो एक मनुष्य को उसके अद्भुत अंगों, अंगों तथा इन्द्रियों सहित उत्पन्न करना उतना ही कठिन होगा, जितना कि सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करना।

आज्ञाकारिता और अनुपालन के सिद्धांतों के कारण , "आगे बढ़ो!" की आज्ञा से एक सेनापति एक निजी सैनिक को आक्रमण करने के लिए प्रेरित करता है; उसी आज्ञा से, वह समान सहजता से एक पूरी सेना को युद्ध में आगे बढ़ा सकता है। इसी प्रकार, सभी प्राणी, स्वतंत्र इच्छा से संपन्न लोगों को छोड़कर, ईश्वरीय इच्छा के नियमों के पूर्णतः आज्ञाकारी हैं: वे कर्तव्यनिष्ठ सैनिकों की तुलना में हजारों गुना अधिक आज्ञाकारी हैं और सहज उत्सुकता के साथ सृष्टि और जीवन के बारे में भगवान की आज्ञाओं के अधीन हैं, और वे हमेशा शाश्वत ज्ञान और बुद्धि द्वारा निर्धारित सीमाओं के भीतर कार्य करते हैं। इस प्रकार, ईश्वरीय शक्ति के लिए वसंत ऋतु में जीवों की एक पूरी सेना बनाना और उन्हें उनके कर्तव्य सौंपना उतना ही आसान है जितना कि एक जीव को इस आज्ञा के माध्यम से अस्तित्व प्रदान करना: "अस्तित्व से अस्तित्व में आओ और अपने जीवन के कर्तव्य को शुरू करो!" ईश्वरीय ज्ञान द्वारा निर्धारित तरीके से और ईश्वरीय इच्छा द्वारा निर्दिष्ट रूप में। इसका अर्थ यह है कि यदि सब कुछ उसी शक्ति का परिणाम है, तो परमाणुओं की पूरी सेना और तारों की टुकड़ियों का निर्माण उतना ही आसान है, जितना कि ब्रह्मांड का निर्माण।

एक परमाणु और एक तारे का निर्माण। हालांकि, अगर इसे "प्राकृतिक" कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाए, तो किसी जानवर की आंख या मस्तिष्क की पुतली में एक परमाणु का निर्माण, साथ ही कई अद्भुत कार्य करने की उसकी क्षमता, जानवरों की एक पूरी सेना के निर्माण जितना ही मुश्किल होगा।

तीसरा चरण: यह भी दिव्य एकता की सहायता के कारण है, स्रोत की एकता से आने वाली सहजता के कारण है, तथा दिव्य एकता या विशिष्टता की अभिव्यक्ति के कारण है।

यानी, अपने सभी विषयों पर अपनी स्वतंत्र संप्रभुता के कारण और इस तथ्य के कारण कि उसके सभी विषय केवल उसके आदेशों का पालन करते हैं, एक शासक के लिए कई राष्ट्रों वाले एक बड़े साम्राज्य पर शासन करना उतना ही आसान है जितना कि एक गाँव के लोगों पर शासन करना। जिस स्रोत से कानून या नियम जारी होते हैं, उसकी एकता के कारण राष्ट्र के सदस्य, सेना के सैनिकों की तरह, बिना किसी भ्रम के शासक का पालन करते हैं और कानूनों को आसानी से लागू किया जाता है। हालाँकि, अगर सरकार को विभिन्न शासकों के हाथों में छोड़ दिया जाए, तो भ्रम की स्थिति पैदा हो जाएगी और एक गाँव पर शासन करना पूरे देश पर शासन करने जितना ही मुश्किल हो जाएगा।

और चूँकि आज्ञाकारी राष्ट्र एक ही शासक पर निर्भर है, उसकी शक्ति और उसके सैन्य बल तथा उसके उपकरणों के भंडार पर निर्भर है, सेना का प्रत्येक सदस्य किसी शत्रु राजा को बंदी बना सकता है तथा अपनी व्यक्तिगत शक्ति से कहीं अधिक कार्य कर सकता है। शासक के साथ उसका संबंध उसे अत्यंत दुर्जेय शक्ति प्रदान करता है, जिससे वह महान कार्य कर सकता है। लेकिन यदि यह संबंध टूट जाता है, तो वह अपनी विशाल शक्ति खो देता है तथा केवल अपनी छोटी शक्ति तथा अपनी पीठ पर रखे हथियारों और गोला-बारूद की सीमा तक ही कार्य कर सकता है। यदि उसे शासक के साथ अपने संबंध की शक्ति पर भरोसा करके किए गए सभी कार्यों को करने की आवश्यकता होती, तो उसे पूरी सेना की शक्ति के साथ-साथ शासक के सभी हथियारों और गोला-बारूद के भंडार को अपने पास रखना पड़ता।

उसी तरह, चूँकि सर्वशक्तिमान निर्माता और अनंत काल का सम्राट पूरी सृष्टि पर अद्वितीय, पूर्ण-स्वतंत्र संप्रभु है, इसलिए वह ब्रह्मांड को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक शहर बनाता है, वह वसंत को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी आसानी से वह एक बगीचा बनाता है, और वह पुनरुत्थान के समय सभी मृतकों को उतनी ही आसानी से जीवित करता है जितनी आसानी से वह वसंत में एक सांसारिक बगीचे के पेड़ों की पत्तियों, फूलों और फलों को बनाता है। वह एक बड़े बाज की तरह आसानी से एक मक्खी बनाता है और ब्रह्मांड की तरह एक व्यक्तिगत इंसान बनाता है। इसके विपरीत, अगर "प्राकृतिक" कारणों को जिम्मेदार ठहराया जाए, तो एक बीज को बनाना उतना ही मुश्किल होगा जितना कि एक गैंडे को, और एक फल के टुकड़े को बनाना उतना ही मुश्किल होगा जितना कि एक विशाल पेड़ को।

इसके लिए तो यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक परमाणु जो अद्भुत कार्य करता है,

जीवित प्राणी के शरीर को वह आँख दी जानी चाहिए जो सब कुछ देखती हो और वह ज्ञान दिया जाना चाहिए जो सब कुछ जानता हो, ताकि वह उन सूक्ष्म, परिपूर्ण और महत्वपूर्ण कर्तव्यों का पालन कर सके।

इसके अलावा, स्रोत की एकता में पूर्ण सहजता है। क्योंकि यदि सेना को एक स्रोत, एक कारखाने से सुसज्जित किया जाता है, तो सभी सैनिकों को सुसज्जित करना उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक सैनिक को सुसज्जित करना। हालाँकि, यदि सेना के उपकरणों की व्यवस्था में कई अलग-अलग हाथ हस्तक्षेप करते हैं, और विभिन्न कारखानों से अलग-अलग सामान की आपूर्ति की जाती है, तो एक सैनिक का उपकरण केवल एक हजार कठिनाइयों के साथ तैयार किया जा सकता है, और, विभिन्न अधिकारियों के हस्तक्षेप के कारण, एक सैनिक को सुसज्जित करना उतना ही कठिन होगा जितना कि एक हजार को। इसके अलावा, यदि एक हजार सैनिकों की कमान एक ही अधिकारी को दी जाती है, तो एक मामले में यह एक अकेले सैनिक के लिए आसान हो जाता है, जबकि यदि इसे दस अधिकारियों या स्वयं सैनिकों पर छोड़ दिया जाता है, तो आदेश भ्रमित और विरोधाभासी हो जाते हैं, और यदि कभी निष्पादित भी होते हैं, तो बहुत कठिनाई से ही निष्पादित होते हैं।

फिर भी अगर सभी चीज़ों को एकता के एक ही व्यक्ति के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है - वह जो पूरी तरह से और व्यक्तिगत रूप से दोनों तरह से सृष्टि पर पूर्ण अधिकार रखता है - तो वे एक ही चीज़ की तरह आसान हो जाती हैं; अगर उन्हें कारणों के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो एक भी जीवित प्राणी को बनाना पूरी धरती जितना मुश्किल हो जाता है, या असंभव भी हो जाता है। इसका मतलब है कि एकता में आसानी या सुविधा आवश्यकता की डिग्री पर है - ऐसी कि यह किसी चीज़ के अस्तित्व और शासन को आवश्यक बनाती है। और कई हाथों के हस्तक्षेप से जो कठिनाई पैदा होती है वह असंभवता के बराबर होती है।

यदि दिन और रात का क्रमिक, सटीक रूप से गणना करके प्रत्येक का लंबा और छोटा होना, या ग्रहों की चाल और वर्ष के मौसमों का परिवर्तन, किसी एक आयोजक या अधिकारी पर छोड़ दिया जाए, तो वह अद्वितीय और पूर्ण-स्वतंत्र कमांडर पृथ्वी को, जो उसका सैनिक है, बस आदेश देता है कि "उठो, घूमो और यात्रा करो!" इस शाही आदेश का अभिभाषक होने पर उसे जो खुशी और आनंद मिलता है, वह परमानंद में मेवलेवी दरवेश की तरह दो गतियों के साथ, आसानी से दैनिक और वार्षिक परिवर्तनों और सूर्य की स्पष्ट, काल्पनिक गतियों का साधन बन जाता है, इस प्रकार एकता द्वारा उत्पन्न पूर्ण सुविधा का प्रदर्शन करता है। लेकिन यदि प्रश्नगत परिवर्तन और गतियों को किसी एक कमांडर पर न छोड़ कर, ग्रहों, सूर्य और पृथ्वी के कई अलग-अलग कारणों और सनक पर छोड़ दिया जाए, और पृथ्वी से कहा जाए: "जहाँ हो वहीं रुक जाओ और हिलो मत!", तो हर रात और हर साल पृथ्वी, सूर्य और ग्रह, और

यहां तक कि हज़ारों विशाल आकाशगंगाएँ जो किसी तरह सौर मंडल से जुड़ी हुई हैं, उन्हें अनगिनत प्रकाश वर्ष पार करने होंगे ताकि ये स्वर्गीय और सांसारिक परिणाम - जैसे कि मौसम और दिन और रात का परिवर्तन - घटित हो सकें। यह इतना मुश्किल होगा कि असंभव होगा।

ईश्वरीय एकता या अद्वितीयता के प्रकटीकरण के कारण... वाक्यांश एक अत्यंत सूक्ष्म, गहन और व्यापक सत्य को इंगित करता है। इसका विस्तृत विवरण और प्रमाण रिसाले-ए-नूर में पाया जा सकता है; यहाँ हम तुलना के माध्यम से केवल एक बिंदु को रेखांकित करेंगे।

एक ही समय में पूरी पृथ्वी को प्रकाशित करके, सूर्य ईश्वरीय एकता का उदाहरण प्रस्तुत करता है, (जो कि एक ही समय में पूरे ब्रह्मांड में भगवान के नामों के सर्वव्यापी प्रकटीकरण द्वारा चिह्नित है), जबकि अपनी छवि और सात रंगों वाले प्रकाश के माध्यम से जो हर पारदर्शी चीज़ में दिखाई देता है, जैसे कि दर्पण, यह ईश्वरीय एकता या विशिष्टता का उदाहरण बनाता है, (जो कि चीज़ों पर भगवान के नामों की विशेष अभिव्यक्ति व्यक्तिगत रूप से इंगित करती है)। यदि सूर्य के पास ज्ञान, शक्ति या इच्छा होती, और कांच के टुकड़े और पानी की बूंदें और बुलबुले जिनमें छोटे सूर्य दिखाई देते हैं, उनमें आवश्यक क्षमता होती, तो ईश्वरीय इच्छा के नियम के माध्यम से, अपने सभी गुणों के साथ एक वास्तविक सूर्य एक ही समय में प्रत्येक चीज़ में मौजूद होता। पृथ्वी के चेहरे पर सभी चीज़ों में इसकी एक साथ उपस्थिति इसकी सभी अभिव्यक्तियों के साथ एक ही चीज़ में या उसके आस-पास मौजूद होने की शक्ति में कोई कमी नहीं लाएगी; प्रभु की शक्ति के आदेश और आदेश के माध्यम से यह वास्तव में व्यापक अभिव्यक्तियों का कारण होगा, इस प्रकार एकता या अद्वितीयता में असाधारण सहजता का प्रदर्शन करेगा।

इसी तरह, जिस तरह अपनी एकता को प्रकट करते हुए, सर्वशक्तिमान निर्माता अपने ज्ञान, इच्छा और शक्ति के माध्यम से हर जगह मौजूद और सब कुछ देख रहा है, जो एक साथ सभी चीजों को शामिल करता है, उसी तरह अपनी एकता या अद्वितीयता को प्रकट करते हुए, वह अपने नामों और गुणों के साथ सभी चीजों में व्यक्तिगत रूप से मौजूद है - विशेष रूप से चेतन में - ताकि वह बड़ी आसानी से एक पल में एक चील के नमूने पर एक मक्खी और ब्रह्मांड के नमूने पर एक इंसान बना सके। वह जीवित प्राणियों को इतने चमत्कारी तरीके से बनाता है कि अगर सभी कारण एक साथ मिलें, तो वे एक बुलबुल या एक मक्खी भी नहीं बना सकते। और जिस तरह बुलबुल को बनाने वाला वही है जो सभी पक्षियों को बनाता है, उसी तरह जो एक इंसान को बनाता है, वही पूरे ब्रह्मांड को बनाता है।

चौथा और पाँचवाँ चरण: .... ऐसा इसलिए भी है क्योंकि उसका अस्तित्व परम आवश्यक है और वह स्वयं ही विद्यमान है; क्योंकि वह पूर्णतः मुक्त है

वह पदार्थ से पूर्णतया भिन्न है, तथा इसलिए भी कि वह अप्रतिबंधित, अविभाज्य है, तथा स्थान से असंबद्ध है।

इस अनुच्छेद के केवल एक या दो बिंदुओं को यहां संक्षेप में समझाया जाएगा।

सर्वशक्तिशाली को सर्वथा आवश्यक अस्तित्व का दर्जा प्राप्त है, जो कि अस्तित्व के सभी स्तरों में सबसे अधिक दुर्जेय, स्थिर और शक्तिशाली है। उसका अस्तित्व भी शाश्वत है, सभी समय और स्थान से परे। इसके अलावा, वह पदार्थ से पूरी तरह मुक्त है और सार और प्रकृति दोनों में सृजित से पूरी तरह भिन्न है। इस प्रकार, उसकी शक्ति के संबंध में, तारों का निर्माण और प्रबंधन सूक्ष्म कणों के निर्माण और प्रबंधन जितना ही आसान है; मृतकों का पुनरुत्थान वसंत लाने जितना ही आसान है, और पुनरुत्थान पर सभी मृतकों को जीवित करना एक आत्मा को जीवित करने जितना ही आसान है। क्योंकि एक नाखून के आकार की वस्तु जो अस्तित्व के शक्तिशाली स्तरों पर एक प्रजाति से संबंधित है, वह अस्तित्व के एक असार स्तर से एक पहाड़ को पकड़ सकती है और उसका संचालन कर सकती है। उदाहरण के लिए, शक्तिशाली, बाहरी अस्तित्व के स्तर से एक दर्पण या स्मृति की क्षमता प्रतिनिधित्व या "आदर्श" रूपों की दुनिया के अस्तित्व के स्तर से क्रमशः सौ पहाड़ या एक हजार किताबें पकड़ सकती है, जो कमजोर और असार है, और इस प्रकार उन पर नियंत्रण रखती है। इसलिए, चाहे "आदर्श" या प्रतिनिधि अस्तित्व शक्ति के मामले में बाहरी, भौतिक अस्तित्व के स्तर से कितना ही निम्न क्यों न हो, आकस्मिक प्राणियों का बनाया हुआ, आकस्मिक अस्तित्व शाश्वत, आवश्यक अस्तित्व से असीम रूप से अधिक निम्न और कमजोर है। नतीजतन, इसके एक छोटे से प्रकटीकरण के माध्यम से, वह पवित्र अस्तित्व आकस्मिक प्राणियों की दुनिया से एक दुनिया को नियंत्रित कर सकता है। अफसोस की बात है कि मेरी बीमारी और कुछ अन्य महत्वपूर्ण कारण मुझे आगे की व्याख्या करने की अनुमति नहीं देते हैं, इसलिए हम पाठक को रिसाले-ए-नूर के प्रासंगिक भागों में इस लंबी सच्चाई और इसके बारीक बिंदुओं के विस्तार और किसी अन्य समय के लिए संदर्भित करते हैं।

छठा चरण: ऐसा इसलिए भी है क्योंकि कुछ भी उन्हें बाधित नहीं करता; बल्कि, (हमारे शरीर में नसों या धातु के तारों की तरह जो बिजली या अन्य सूक्ष्म शक्तियों का संचालन करते हैं), जो चीजें बाधाएं और रुकावटें पैदा करने वाली मानी जाती हैं, वे वास्तव में सुविधा के साधन के रूप में कार्य करती हैं (हालांकि उन्हें अपने आदेशों का संचालन या निष्पादन करने में किसी की मदद की आवश्यकता नहीं है)।

अर्थात् ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर के नियम की अभिव्यक्ति के कारण
सृष्टि और जीवन का दिव्य आदेश, जिसे विज्ञान "जीवन की गाँठ या नाभिक" कहता है, एक विशाल वृक्ष की अचेतन, कठोर शाखाएँ और टहनियाँ आवश्यक पदार्थों और खाद्य पदार्थों के लिए बाधा या रुकावट नहीं बनती हैं

जो जीवन के उस केंद्रक से उसके फल, पत्ते या फूल तक जाते हैं, जो वृक्ष का मुख्य स्रोत और पेट है; बल्कि, वे कार्य को सुगम बनाते हैं। इसी प्रकार, वे सभी चीजें जो ब्रह्मांड के निर्माण में बाधा उत्पन्न करने वाली मानी जाती हैं, इच्छा की अभिव्यक्ति और भगवान की आज्ञा के संचालन के सामने बाधा बनना बंद कर देती हैं और सुविधा का साधन बन जाती हैं। परिणामस्वरूप, शाश्वत शक्ति ब्रह्मांड और पृथ्वी पर सभी प्राणियों की प्रजातियों को उतनी ही आसानी से बनाती है, जितनी आसानी से वह एक पेड़ बनाती है। उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है। यदि सृजन के इन सभी कार्यों का श्रेय उस शक्ति को न दिया जाए, तो उस एक पेड़ का निर्माण और संचालन उतना ही कठिन होगा जितना कि सभी पेड़ों, बल्कि पूरी पृथ्वी का निर्माण और संचालन। क्योंकि तब, हर चीज बाधाएँ और रुकावटें खड़ी करेगी। यदि सभी कारण एक साथ इकट्ठे हो जाएं, तो वे वृक्ष के "जीवन की गाँठ या नाभिक" के पेट या मुख्य स्रोत से फलों, पत्तियों, शाखाओं या टहनियों को आवश्यक पोषण व्यवस्थित, नियमित ढंग से नहीं भेज सकते - जो कि ईश्वरीय आदेश और इच्छा का प्रकटीकरण है - जब तक कि वृक्ष के सभी भागों, यहाँ तक कि उसके सभी परमाणुओं में दृष्टि, सर्वव्यापी ज्ञान और असाधारण शक्ति न हो, और वे पूरे वृक्ष को उसके सभी भागों और परमाणुओं के साथ समझने में सक्षम न हों, ताकि उन्हें जान सकें और उनकी सहायता कर सकें।

तो, इन छह सीढ़ियों पर चढ़ो और देखो कि अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदार बनाने में कितनी कठिनाइयाँ हैं - वास्तव में, असंभवताएँ - और वे कितनी अनुचित, अतार्किक और निषिद्ध हैं। फिर देखो कि ईमान और कुरान के मार्ग में कितनी आसानी और कितनी उचित, स्वीकार्य और निर्णायक सच्चाईयाँ हैं और कैसे इस आसानी और सच्चाई के ज़रिए चीज़ों का अस्तित्व ज़रूरी हो जाता है। इसे समझो, और कहो: "ईमान के अनुग्रह के लिए सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!"

मैं जिन बीमारियों और कठिनाइयों से पीड़ित रहा हूँ, उनके कारण इस महत्वपूर्ण कदम का शेष भाग स्थगित करना पड़ा है।

सातवां कदम: जो कुछ भी वह बनाता है, उसमें कला का एक ही गुण होता है; परमाणु, भाग, विशेष, बीज और मानव किसी भी तरह से तारे, समग्र, सार्वभौमिक, वृक्ष या ब्रह्मांड की तुलना में कम सुंदर या कम कलापूर्ण नहीं हैं।

(नोट: इन नौ चरणों में निहित सत्यों का आधार, स्रोत और सूर्य सूरतुल इखलास की निम्नलिखित आयतें हैं: कहो: “वह—
[वह] ईश्वर है, [जो] पूर्ण एकता का अद्वितीय है। ईश्वर - [ईश्वर वह है जो] शाश्वत-प्रार्थना है [स्वयं किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है]। वे ईश्वर के एक होने की अभिव्यक्ति की झलक के संक्षिप्त संकेत हैं, अद्वितीय जिसने अपनी अभिव्यक्तियों को केंद्रित किया है

(वस्तुओं के अलग-अलग नाम और गुण, तथा उनका शाश्वत रूप से प्रार्थी होना, जबकि उन्हें किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं है।)

इस सातवें चरण का बहुत संक्षिप्त विवरण देने के बाद, हम संदर्भित करते हैं

पाठकों को रिसाले-ए-नूर में इस विषय पर अधिक विस्तृत चर्चा देखने को मिलती है ।

आँख या मस्तिष्क में अद्भुत कार्य करने वाला परमाणु कला की सुंदरता और सृजन के चमत्कारों के मामले में किसी तारे से कम नहीं है; न ही उसका कोई भाग उसके पूरे भाग से कम है। उदाहरण के लिए, मस्तिष्क और आँख उस मानव शरीर से कम नहीं हैं जिसके वे भाग हैं। न ही कोई व्यक्ति कला की सुंदरता और सृजन के चमत्कारों के मामले में किसी प्रजाति से कम है; न ही अपने अद्भुत अंगों, इंद्रियों और क्षमताओं के साथ मनुष्य सभी सजीव प्रजातियों से कमतर है; न ही, उत्तम शिल्प कौशल और सामग्री की पूरी सूची, एक कार्यक्रम और स्मृति बैंक के रूप में एक बीज उससे उगने वाले विशाल वृक्ष से कमतर है; न ही, उनकी उत्तम रचना और उनके अद्भुत, व्यापक अंगों और क्षमताओं के संबंध में, जो हज़ारों अद्भुत कार्य करने के लिए रखे गए हैं, मनुष्य-सूक्ष्म जगत-पूरे ब्रह्मांड से कमतर है। इसका मतलब यह है कि जो परमाणु बनाता है, वह तारा भी बना सकता है। और जो जीभ जैसा अंग बनाता है, वह स्वयं-सिद्ध रूप से, आसानी से एक इंसान भी बना सकता है। और जो एक इंसान को इतनी पूर्णता से बनाता है, वह निस्संदेह सभी सजीव प्राणियों को पूरी सहजता से बना सकता है, जैसा कि वह हमारी आँखों के सामने करता है। और जो एक बीज को एक सूची, एक अनुक्रमणिका, सृष्टि और जीवन के नियमों की एक नोटबुक, एक "गाँठ या जीवन के नाभिक" के रूप में बनाता है, वह निश्चित रूप से सभी पेड़ों का निर्माता है। और वह जो मनुष्य को ब्रह्माण्ड के बीज के समान और उसके व्यापक फल के रूप में बनाता है, उन्हें अपने दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों से अनुग्रहित करता है और उन्हें इन नामों का दर्पण बनाता है - वह जो मनुष्य को संपूर्ण ब्रह्माण्ड से जोड़ता है और उन्हें पृथ्वी पर प्रतिनिधि नियुक्त करता है, उसके पास निश्चित रूप से ऐसी शक्ति है कि वह ब्रह्माण्ड को उतनी ही आसानी से बना सकता है, जितनी आसानी से वह एक अकेले मनुष्य को बनाता है और उसे व्यवस्थित कर सकता है। इस प्रकार, जो कोई भी परमाणु, भाग, विशेष व्यक्ति, बीज और मनुष्य का निर्माता, रचयिता और स्वामी है, वह सितारों, सभी प्रजातियों, सभी ब्रह्मांडों, सभी वृक्षों और वास्तव में, पूरे ब्रह्मांड का भी निर्माता, रचयिता और स्वामी होना चाहिए। यह अन्यथा नहीं हो सकता।

आठवां चरण: साथ ही, उन बड़े सार्वभौमिकों के संबंध में जो विशेषों को घेरते हैं और संपूर्ण जो भागों को घेरते हैं, व्यक्तिगत भाग और विशेष जो घेरे जाते हैं, उदाहरण के लिए, एक बीज की तरह हैं जिसमें एक विशाल

वृक्ष पर छोटे-छोटे अक्षर अंकित हैं, या उन बूंदों की तरह हैं जो उन्हें घेरे हुए हैं या निचोड़ी गई हैं। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं है कि बड़ी इकाइयाँ और सार्वभौमिक छोटी, घिरी हुई चीज़ों और विशेषताओं के निर्माता की मुट्ठी में हैं जिन्हें वे घेरते हैं: वह अपने ज्ञान के तराजू से सार्वभौमिक को विशेष में शामिल करता है या सम्मिलित करता है और अपनी बुद्धि के सिद्धांतों से सार्वभौमिक से विशेष को छानता है।

अर्थात्, उन विशाल समग्रों और सार्वभौमिकों के सम्बन्ध में जो उन्हें घेरे हुए हैं, घेरे हुए व्यक्तिगत भाग और विशिष्टताएँ एक बीज की तरह हैं जिसमें छोटे-छोटे अक्षरों में एक विशाल वृक्ष अंकित किया गया है। इस प्रकार, घेरे हुए सार्वभौमिकों को विशिष्टताओं के रचयिता की पहुँच में और पूरी तरह से उसके नियंत्रण में होना चाहिए ताकि, अपने ज्ञान के तराजू और उसकी बढ़िया कलमों से, वह उस विशाल सर्वव्यापी पुस्तक को सैकड़ों छोटे-छोटे खंडों या नोटबुक में समाहित कर सके; अर्थात्, वह उसके असंख्य बीजों में एक विशाल वृक्ष डाल सके। या घेरे हुए समग्रों या सार्वभौमिकों के सम्बन्ध में, घेरे हुए भाग या विशिष्टताएँ उन बूंदों की तरह हैं जिन्हें उन चीज़ों से “दूध निकाला” गया है जो उन्हें घेरे हुए हैं। उदाहरण के लिए, एक खरबूजे का बीज खरबूजे की समग्रता से दुहा गया एक बूंद है या एक बिंदु है जिसमें खरबूजे की पूरी पुस्तक अंकित है, क्योंकि बीज में इसकी अनुक्रमणिका, विषय-सूची और कार्यक्रम समाहित है। चूँकि ऐसा है, इसलिए व्यापक संपूर्ण और सार्वभौमिक उन विशेषों, बूंदों और बिंदुओं के निर्माता के हाथ में होने चाहिए, ताकि वह अपनी बुद्धि के सूक्ष्म सिद्धांतों के अनुसार व्यक्तियों, बूंदों और बिंदुओं को दूध पिला सके या छान सके। इसका मतलब यह है कि जो बीज और व्यक्ति को बनाता है, वही संपूर्ण और सार्वभौमिकों के साथ-साथ अन्य बहुत बड़े सार्वभौमिकों और प्रकारों को भी बनाता है जो बाद वाले को शामिल करते हैं; यह अन्यथा नहीं हो सकता। ऐसा होने पर, जो एक आत्मा को बनाता है, वह पूरी मानवजाति को बनाने में सक्षम है।

और जो एक मुर्दे को जिलाता है, वह क़ियामत के समय सभी जिन्नों और मनुष्यों को जिलाने पर भी सक्षम है, और उन्हें भी जिलाएगा। तो देखिये कि यह आयत कितनी स्पष्ट और शानदार ढंग से सत्य है: तुम्हारा सृजन और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28)।

नौवां कदम: "शानदार कुरान" की प्रति जो ईथर के कणों के साथ एक परमाणु में अंकित है, वह वाक्पटुता या कला के चमत्कारों में सितारों और सूरज की स्याही से आकाश के पन्नों पर लिखी गई "शानदार कुरान" की प्रति से कम नहीं है। इसी तरह, ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में, एक गुलाब वाक्पटुता और कला की सुंदरता में मोती जैसे सितारे से कम नहीं है; न ही एक चींटी हाथी से कम है या एक कीटाणु गैंडे से कम है। इसके अलावा, बिल्कुल सही गति और सहजता

चीज़ों की रचना गुमराह लोगों को रचनात्मक रचना को आत्म-रचना के साथ भ्रमित करने का कारण बनती है, जिसमें अंतहीन असंभवताएँ शामिल हैं और यह सभी संभावनाओं और अनुमानों से परे है। जबकि चीज़ों की रचना में अत्यंत और पूर्ण गति और सहजता सही मार्गदर्शन वाले लोगों को इस निश्चितता की ओर ले जाती है कि ब्रह्मांड के निर्माता की शक्ति के संबंध में तारे और सूक्ष्म परमाणु एक ही हैं, उनकी महिमा सर्वोपरि है! और उसके अलावा कोई पूज्य नहीं है, और वह सर्व-महान है।

(मैं इस अंतिम चरण को विस्तार से समझाना चाहता था, लेकिन दुर्भाग्य से मैं अपनी अत्यधिक व्यथा, कमजोरी तथा विष दिए जाने के कारण हुई गंभीर बीमारियों के कारण ऐसा नहीं कर सका। इसलिए मैं एक संक्षिप्त संकेत से ही संतुष्ट होने को बाध्य हुआ हूं।)

यदि एक विशाल कुरान को ईथर के सूक्ष्म कणों के साथ एक परमाणु पर लिखा गया हो, तथा यदि एक अन्य विशाल कुरान को आकाश के पृष्ठों पर तारों और सूर्यों में लिखा गया हो और दोनों की तुलना की जाए, तो कणों में लिखा गया सूक्ष्म कुरान, आश्चर्य और चमत्कारी कला के मामले में आकाश के मुख को सुशोभित करने वाले विशाल कुरान से किसी भी दृष्टि से कमतर नहीं होगा; बल्कि, कुछ मामलों में तो यह उससे भी बेहतर होगा।

इसी प्रकार, ब्रह्माण्ड के रचयिता की शक्ति के संबंध में, गुलाब शुक्र ग्रह से कम नहीं है, न ही चींटी अपनी रचना की मौलिकता और असाधारणता के संबंध में हाथी से कम है।

इसके अलावा, उनके निर्माण के संबंध में, एक बीज गैंडे से अधिक अद्भुत है और मधुमक्खी खजूर से बेहतर है। इसका मतलब यह है कि जो मधुमक्खी बनाता है, वह सभी जानवरों को बना सकता है। जो एक आत्मा को जीवन में लाता है, वह पुनरुत्थान के समय सभी मनुष्यों को जीवित कर सकता है और उन्हें सर्वोच्च सभा के स्थान पर एक साथ इकट्ठा कर सकता है, जैसा कि वह निश्चित रूप से करेगा। उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, क्योंकि हर वसंत में हमारी आँखों के सामने वह पुनरुत्थान के सैकड़ों-हज़ारों नमूने सबसे बड़ी आसानी और तेज़ी से बनाता है।

इस लेख के अंतिम वाक्य का अर्थ यह है कि चूँकि गुमराह लोग उपरोक्त "चरणों" के अटल सत्य को नहीं जानते हैं, और चूँकि जीव सबसे अधिक आसानी और गति से अस्तित्व में आते हैं, इसलिए वे निर्माता की अनंत शक्ति द्वारा अपने निर्माण और सृजन को आत्म-निर्माण मानते हैं, यह मानते हुए कि वे स्वयं अस्तित्व में आते हैं। ऐसा करके, वे अपने लिए अंधविश्वासों का द्वार खोलते हैं, जो हर दृष्टि से असंभव है और जिसे कोई भी स्वस्थ मन या कल्पना स्वीकार नहीं कर सकती। उदाहरण के लिए, उनके दावे के अनुसार प्रत्येक जीवित प्राणी के प्रत्येक परमाणु में अनंत शक्ति और ज्ञान होना चाहिए, एक आँख जो सब कुछ देखती है, और हर कार्य को निष्पादित करने की क्षमता होनी चाहिए।

कला और कौशल। एक ईश्वर को स्वीकार न करके, वे अस्तित्व में कणों की संख्या के अनुसार देवताओं को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं, और इस प्रकार नरक की सबसे निचली पहुंच में डाले जाने के लायक हैं।

जहाँ तक मार्गदर्शन पाने वालों का सवाल है, ऊपर दिए गए "चरणों" में मौजूद शक्तिशाली सत्य और प्रमाण उनके स्वस्थ हृदय और सीधे दिमाग को एक बहुत ही दृढ़ विश्वास, एक शक्तिशाली विश्वास और ज्ञान के आधार पर निश्चितता की डिग्री पर एक ठोस पुष्टि प्रदान करते हैं। नतीजतन, वे बिना किसी संदेह के और दिल की अत्यंत संतुष्टि के साथ विश्वास करते हैं कि दिव्य शक्ति के संबंध में

तारों और परमाणुओं में या छोटे-छोटे परमाणुओं में कोई अंतर नहीं है।

सबसे बड़ा और सबसे बड़ा; ये सभी आश्चर्यजनक चीजें हमारी आंखों के सामने होती हैं और कला का हर चमत्कार कविता की घोषणा की पुष्टि करता है,

> तुम्हारी सृष्टि और तुम्हारा पुनरुत्थान एक ही आत्मा के समान है,

और गवाही देते हैं कि यह शुद्ध सत्य और वास्तविकता है। और वे अपनी जीभ से घोषणा करते हैं: "ईश्वर महान है!" हम भी उनके साथ घोषणा करते हैं: "ईश्वर महान है!" और हम अपनी पूरी ताकत और दृढ़ विश्वास के साथ आयत के दावे की पुष्टि करते हैं, और हम असंख्य प्रमाणों के साथ गवाही देते हैं कि यह शुद्ध सत्य और वास्तविकता है।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह, तू ही सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

> हे ईश्वर! तूने जिसे सारे संसारों के लिए दया बनाकर भेजा है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर, और सारी प्रशंसा और कृतज्ञता उस ईश्वर के लिए है जो सारे संसारों का स्वामी है।

दमिश्क के तुर्की अनुवाद का परिचय
उपदेश, जो मूलतः अरबी भाषा में था

उसके नाम में उसकी महिमा है!

और ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करे।

आप पर शांति हो तथा ईश्वर की दया एवं आशीर्वाद हो!

मेरे प्यारे, वफादार भाइयों (और बहनों)!

इस अरबी उपदेश में व्यक्त सत्य को पूर्वाभास के साथ ओल्ड सईद ने महसूस किया, जिसे उन्होंने दमिश्क के विद्वानों के कहने पर 1911 में उमय्यद मस्जिद में लगभग दस हजार लोगों की एक सभा के सामने दिया था, जिसमें सौ धार्मिक विद्वान भी शामिल थे। उन्होंने भविष्य में होने वाली कुछ सुखद घटनाओं की खुशखबरी पूरी निश्चितता के साथ दी थी, जैसे कि वे जल्द ही साकार होने वाली हों। हालाँकि, दो विश्व युद्धों और पच्चीस वर्षों की निरंकुश तानाशाही ने उनके साकार होने में देरी की; अब जाकर इस्लाम की दुनिया में उनके साकार होने के संकेत दिखाई देने लगे हैं। इसलिए, यह महत्वपूर्ण सबक केवल कोई पुराना, पुराना उपदेश नहीं था, बल्कि यह एक नया, सच्चा सबक है जो अपने श्रोताओं को कुछ सामाजिक और इस्लामी मामलों के बारे में निर्देश देता है जो उमय्यद मस्जिद में अपेक्षाकृत छोटी भीड़ को संबोधित नहीं किया गया था, बल्कि मुस्लिम दुनिया की महान मस्जिद में एक अरब से अधिक की भीड़ को संबोधित किया गया था। यदि आप इसे उचित समझें तो आप इसका अनुवाद प्रकाशित कर सकते हैं।

प्रश्न: यहां एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर देना उचित होगा।

कई लोगों ने मुझसे और रिसाले-ए-नूर के छात्रों से पूछा है : "आप रिसाले-ए-नूर को इतना महत्व क्यों देते हैं , और यह अपने छात्रों को ऐसा विश्वास और संतुष्टि कैसे देता है कि वे इसके बारे में नहीं जानते हैं?"

"क्या वे अपने विरोधियों के अड़ियल दार्शनिकों और गुमराह लोगों से हार गए हैं? ईमान और इस्लाम पर कई सच्ची और मूल्यवान पुस्तकों के प्रकाशन को कुछ हद तक रोककर और सांसारिक सुखों और बुराइयों को बढ़ावा देकर, वे कई युवाओं और अन्य लोगों को ईमान की सच्चाइयों से वंचित कर रहे हैं। लेकिन रिसाले-ए-नूर पर उनके सबसे हिंसक और क्रूर हमलों और इसे नष्ट करने और लोगों को इससे दूर करने के उनके झूठे प्रचार के बावजूद, रिसाले-ए-नूर अपने संदेश को एक अद्वितीय तरीके से फैला रहा है। इसके ग्रंथों की छह लाख प्रतियां पहले ही अथक उत्साह के साथ हाथ से लिखी जा चुकी हैं और उनके छात्रों द्वारा प्रकाशित की जा चुकी हैं, और उन्हें पूरी उत्सुकता के साथ पढ़ा जाता है। इसका क्या कारण है?"

उत्तर : इसके जवाब में हम निम्नलिखित कहते हैं:

रिसाले -ए-नूर, बुद्धिमानी भरे कुरान की एक सच्ची व्याख्या है जो इसकी चमत्कारिकता से उत्पन्न होती है। यह दर्शाता है कि गुमराही में इस दुनिया में एक तरह का जहन्नम है, जबकि ईमान में एक तरह का जन्नत है। यह पापों, बुरे कामों और निषिद्ध सुखों में होने वाली भयंकर पीड़ाओं को दर्शाता है, और साबित करता है कि जन्नत के समान सुख अच्छे कामों और सद्गुणों में और शरीयत की सच्चाइयों में पाए जाते हैं। इस प्रकार, यह उन लोगों में से समझदार लोगों को बचाता है जो बुराई और गुमराही में पड़ गए हैं। इस समय दो भयानक वास्तविकताएँ हैं:

पहला: चूँकि मानवीय भावनाएँ, जो चीज़ों के परिणामों के प्रति अंधी हैं और भविष्य की ढेर सारी खुशियों के बजाय तत्काल खुशी के एक औंस को पसंद करती हैं, मन और तर्क पर हावी हो गई हैं, इसलिए भटके हुए लोगों को उनके दोषों से बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें वह दर्द दिखाना है जो उनके स्पष्ट सुखों के पीछे छिपा है और इस तरह उनकी भावनाओं को हरा देना है। जैसा कि आयत से संकेत मिलता है, वे परलोक की तुलना में वर्तमान, सांसारिक जीवन को चुनते हैं (14:3), हालाँकि वे ईमान वाले हैं और परलोक की हीरे जैसी कृपा और सुखों से अवगत हैं, बहुत से लोग सांसारिक सुखों को पसंद करते हैं, जो कांच के टुकड़ों की तरह हैं जो जल्द ही उनके ऊपर टूटकर बिखरने वाले हैं। इसलिए, इस वास्तविकता और दुनिया के प्रति प्रेम के कारण गुमराह लोगों का अनुसरण करने से ईमान वालों को बचाने का एकमात्र तरीका उन्हें गुमराही के रास्ते में मौजूद नारकीय यातनाएँ और दर्द दिखाना है। रिसाले-ए-नूर इसी तरीके का अनुसरण करता है। क्योंकि इस समय, पूर्ण अविश्वास से उत्पन्न हठधर्मिता और वैज्ञानिक भौतिकवाद या वैज्ञानिकता तथा बुराई की लत के कारण उत्पन्न गुमराही के सामने, केवल दस या बीस में से एक को ही बुराई से दूर किया जा सकता है और नरक के अस्तित्व और उसकी यातनाओं को साबित करके, सर्वशक्तिमान ईश्वर के बारे में कुछ ज्ञान देकर, उसे इसे छोड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।

हालाँकि, इस निर्देश को प्राप्त करने के बाद भी, यह अभी भी संभव है कि ऐसे लोग कहें: "ईश्वर क्षमाशील और दयावान है, और नरक बहुत दूर है," और अपने व्यभिचार में लगे रहें। उनके दिल और आत्मा उनकी भावनाओं से पराजित हो जाते हैं।

इस प्रकार, विश्वास और अविश्वास के बीच अपनी अधिकांश तुलनाओं के माध्यम से अविश्वास और गलत मार्गदर्शन की इस दुनिया में दुखद और भयानक परिणाम दिखाते हुए, रिसाले-ए-नूर सबसे जिद्दी और अहंकारी लोगों को भी उन अशुभ, अवैध सुखों के संबंध में घृणा महसूस कराता है, जिससे वे पश्चाताप करने लगते हैं। छठे, सातवें और आठवें वचन में छोटी तुलना, और बत्तीसवें वचन के तीसरे चरण में लंबी तुलना सबसे अधिक विचलित और गुमराह व्यक्ति को उनके द्वारा अपनाए जा रहे मार्ग से दूर कर देती है, जिससे उन्हें जो सिखाया जाता है उसे स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया जाता है। एक उदाहरण के रूप में, मैं उन स्थितियों को संक्षेप में बताऊंगा जो प्रकाश की आयत (24:35) ने मुझे कल्पना की यात्रा पर दिखाईं, जो वास्तव में वास्तविकता थीं।

जो लोग इसका विस्तृत विवरण चाहते हैं , वे सिक्के-ए-तस-दिक-ए-गायबी (“अदृश्य की पुष्टि करने वाली मुहर”) के अंत का संदर्भ ले सकते हैं ।

उस काल्पनिक यात्रा के दौरान मैंने देखा कि पशु जगत को भोजन की आवश्यकता है, और मैंने इसे भौतिकवादी दर्शन के चश्मे से देखा।

उनकी असंख्य आवश्यकताओं और तीव्र भूख के सामने उनकी दुर्बलता और नपुंसकता ने उस राज्य को सबसे अधिक दयनीय और कष्टदायक बना दिया।

चूँकि मैं गुमराह और असावधान लोगों की आँखों से देख रहा था, इसलिए मैंने चिल्लाया। फिर अचानक मैंने कुरान की बुद्धिमता और विश्वास की दूरबीन के माध्यम से देखा कि ईश्वर का नाम जो दयालु है, पृथ्वी पर उदय हुआ है।

वह चमकते हुए सूर्य के समान सर्व-प्रदाता का प्रतीक है, जो उस भूखे, दुखी पशु जगत को अपनी दया के प्रकाश से चमका रहा है।

फिर मैंने जानवरों की दुनिया में एक और दयनीय क्षेत्र देखा जो अंधकार में घिरा हुआ था और जहाँ युवा अपनी ज़रूरत और शक्तिहीनता में संघर्ष कर रहे थे। यह किसी को भी दया महसूस कराने के लिए पर्याप्त था। मुझे गुमराह लोगों की आँखों से देखने का पछतावा हुआ। अचानक, विश्वास ने मुझे अलग-अलग दृश्य दिखाए और मैंने देखा कि नाम सर्व-करुणामय स्नेह और कोमलता के संकेत के साथ उभरता है। इसने उस दर्दनाक दुनिया को इतने सुंदर और प्यारे अंदाज़ में एक खुशहाल दुनिया में बदल दिया और इसे इस तरह से रोशन कर दिया कि मेरी शिकायत और दुख के आँसू खुशी और धन्यवाद के आँसुओं में बदल गए।

फिर इंसानियत की दुनिया मुझे सिनेमा के पर्दे की तरह नज़र आई. गुमराह लोगों की दूरबीन से फिर से देखने पर मुझे लगा कि

मैंने उस दुनिया को इतना अंधकारमय और भयावह देखा कि मैं अपने दिल की गहराई से चिल्ला उठा। मनुष्य की इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ अनंत काल तक फैली हुई हैं; उनके पास ऐसे विचार और अवधारणाएँ हैं जो पूरे ब्रह्मांड को घेर लेती हैं और अनंत जीवन, अनंत सुख और स्वर्ग के लिए इच्छाएँ और लालसाएँ रखती हैं।

उनमें जन्मजात क्षमताएं और शक्तियां होती हैं जो अप्रतिबंधित और स्वतंत्र होती हैं।
इसके अलावा, अपनी कमज़ोरी, नपुंसकता और बहुत ही कम उम्र के बावजूद, उनकी ज़रूरतें और उद्देश्य अनगिनत हैं, और वे अनगिनत विरोधियों के हमलों और अंतहीन आपदाओं के प्रहारों के सामने हैं। मौत के निरंतर खतरे के तहत, वे दयनीय परिस्थितियों में एक संक्षिप्त और उथल-पुथल भरा जीवन जी रहे हैं। मौत और अलगाव के निरंतर प्रहारों से पीड़ित और दुख में अपनी आजीविका के लिए प्रयास करते हुए - दिल और विवेक के लिए सबसे दर्दनाक और भयावह स्थिति - वे सीधे कब्र की ओर बढ़ रहे हैं, जो गुमराह लोगों को अनंत अंधकार का द्वार लगता है। मैंने देखा कि उन्हें व्यक्तिगत रूप से और समूहों में अंधेरे के उस कुएं में फेंका जा रहा है।

मानवता की दुनिया को ऐसे अंधकार की परतों के नीचे देखकर मैं अपने दिल, आत्मा और दिमाग से, बल्कि अपनी सारी शक्तियों और अपने अस्तित्व के सभी कणों से चिल्लाने ही वाला था, जब कुरान से निकलने वाले विश्वास की रोशनी और शक्ति ने गुमराही के इन चश्मों को चकनाचूर कर दिया, और मुझे देखने का एक अलग माध्यम प्रदान किया। मैंने देखा कि न्यायी ईश्वर का नाम सूर्य की तरह सर्वज्ञ के चिह्न में उदय हुआ, दयालु नाम को दयालु के चिह्न में, दया करने वाले नाम को क्षमा करने वाले के चिह्न में, पुनर्जीवित करने वाले नाम को उत्तराधिकारी के चिह्न में, पुनर्जीवित करने वाले नाम को उपकार करने वाले के चिह्न में, और पालन-पोषण करने वाले नाम को प्रभु के चिह्न में। उन्होंने मानवता की उस पूरी अंधेरी दुनिया को प्रकाशित कर दिया, जिसके भीतर कई अन्य दुनियाएँ हैं। उन्होंने इन नारकीय स्थितियों को दूर किया और परलोक की चमकदार दुनियाओं से खिड़कियाँ खोलकर मानवता की दुनिया में प्रकाश फैलाया। मैंने कहा: "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं; ईश्वर का धन्यवाद!" अस्तित्व में मौजूद कणों की संख्या के लिए! मैंने देखा और दृष्टि से उत्पन्न होने वाली निश्चितता की सीमा तक जाना कि विश्वास में इस दुनिया में भी एक तरह का स्वर्ग है, जबकि गुमराही में एक तरह का नर्क है।

फिर धरती का साम्राज्य सामने आया। कल्पना की उस यात्रा पर, दर्शन के अंधकारमय, काल्पनिक नियम और विज्ञान के नियम जो धर्म का पालन नहीं करते, मेरी कल्पना के सामने एक भयावह दुनिया प्रस्तुत करते हैं। अत्यंत प्राचीन पृथ्वी के जहाज पर अंतरिक्ष में यात्रा करना - जो एक वर्ष में उतनी दूरी तय करता है जितनी दूरी एक मनुष्य तय कर सकता है

दमिश्क धर्मोपदेश 457 के तुर्की अनुवाद का परिचय

पच्चीस हज़ार वर्ष चलने के कारण, तोप के गोले से सत्तर गुना अधिक तेज़ गति से चलने के कारण, और एक ऐसी संरचना होने के कारण जो किसी भी क्षण टूट सकती है और जिसके भीतरी भाग निरंतर परिवर्तनशील और उथल-पुथल में रहते हैं -

दयनीय मानवजाति एक अत्यंत वीरान अंधकार में फंसी हुई प्रतीत हुई। मुझे चक्कर आने लगा और मैं लगभग अपना संयम खो बैठा। मैंने दर्शनशास्त्र के चश्मे को जमीन पर फेंक दिया और उन्हें तोड़ दिया। फिर, अचानक, मैंने कुरान और विश्वास की बुद्धि से प्रकाशित दृष्टि से देखा। मैंने आकाश और पृथ्वी के निर्माता, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ पालन-पोषण करने वाले, ईश्वर, आकाश और पृथ्वी के स्वामी और सूर्य और चंद्रमा के अधिपति के नामों को दया, भव्यता और प्रभुत्व के चिह्नों में सूर्य की तरह उगते देखा।

उन्होंने उस अंधेरे, उजाड़ और भयावह दुनिया को इतनी चमक से रोशन किया कि मेरी आस्था की नज़र में धरती एक पूरी तरह से व्यवस्थित, अधीन, सुखद और सुरक्षित बर्तन की तरह दिखाई दी, जिसमें सभी के लिए भोजन का भंडारण किया गया है। मैंने इसे एक जहाज या हवाई जहाज या ट्रेन के रूप में देखा, जिसे व्यापार और आनंद के लिए तैयार किया गया है, जो सूर्य के चारों ओर भगवान के क्षेत्रों के माध्यम से आत्माओं के साथ प्राणियों को ले जा रहा है, वसंत, गर्मी और पतझड़ की उपज को जीविका की ज़रूरत वाले लोगों तक पहुँचा रहा है। मैंने कहा: "विश्वास के पक्ष के लिए पृथ्वी के परमाणुओं की संख्या तक भगवान की सभी प्रशंसा और आभार!"

इस तरह रिसाले-ए-नूर में बहुत सी मिसालों और मिसालों से साबित किया गया है कि बदचलन और गुमराह लोग इस दुनिया में भी नारकीय यातना झेलते हैं, जबकि ईमान की वजह से ईमान और नेकी के लोग इस्लाम और इंसानियत के पेट से जन्नत की खुशियाँ चख सकते हैं। हर कोई अपने ईमान की हद के हिसाब से फ़ायदा उठा सकता है। लेकिन इस तूफ़ानी दौर में हवाएँ इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं और इंसान का ध्यान बेकार की बातों में लगा देती हैं और उन्हें अपने आगोश में ले लेती हैं, उनकी इंद्रियों को सुन्न कर देती हैं, सही सोच और सोच को खत्म कर देती हैं। नतीजतन गुमराह लोग कुछ समय के लिए अपनी रूहानी पीड़ा को पूरी तरह महसूस नहीं कर पाते, जबकि हिदायत वाले लोग लापरवाही में डूब जाते हैं और सही हिदायत के सुखों की सही तरह से कदर नहीं कर पाते।

इस युग की दूसरी भयावह सच्चाई: आज की तुलना में, पहले के समय में पूर्ण अविश्वास और विज्ञान में अंध विश्वास से उत्पन्न होने वाली गुमराही बहुत कम थी, और जिद्दी, जानबूझकर अविश्वास से उत्पन्न होने वाली हठधर्मिता बहुत कम थी। इस कारण से, उस समय के मुस्लिम विद्वानों की शिक्षा और तर्क किसी भी तरह के अविश्वास को दूर करने के लिए पर्याप्त थे।

संदेह। चूँकि लगभग सभी लोग ईश्वर में विश्वास करते थे, इसलिए ईश्वर के बारे में शिक्षा और नरक की आग के बारे में चेतावनी मिलने के बाद अधिकांश लोग गुमराही और बुराई छोड़ देते थे। लेकिन अब एक छोटे से शहर में सौ पूर्ण अविश्वासी हैं, जबकि पहले केवल एक ही था। विज्ञान और शिक्षा में अंध विश्वास के कारण भटकने वाले, विश्वास की सच्चाई का हठपूर्वक विरोध करने वाले, पहले के समय की तुलना में संख्या में सौ गुना अधिक हैं। जिस तरह ये हठीले इनकार करने वाले फिरौन के अहंकार के साथ विश्वास की सच्चाई का विरोध करते हैं, तो कोई ऐसा पवित्र सत्य अवश्य होना चाहिए जो इस दुनिया में उनके अविश्वास की नींव को परमाणु विस्फोट की ताकत से पूरी तरह से नष्ट कर दे, उनके आक्रमण को रोक दे और उनमें से कुछ को विश्वास में ले आए।

ईश्वर का अनंत धन्यवाद हो कि अपनी अनेक तुलनाओं और इस समय की बुराइयों के लिए दिए गए उपचारों के साथ, रिसाले-ए-नूर, जिसमें कुरआन की चमत्कारी व्याख्या की कुछ झलकियाँ हैं, कुरआन की हीरे जैसी तलवार से उन सबसे बुरे इनकार करने वालों को भी परास्त कर देती है। ईश्वरीय एकता और ब्रह्मांड के परमाणुओं की संख्या तक विद्यमान विश्वास की सच्चाइयों के प्रमाण और तर्क बताकर, पच्चीस वर्षों से यह सबसे गंभीर हमलों के सामने पराजित नहीं हुई है, बल्कि विजयी रही है। विश्वास और अविश्वास, सही मार्गदर्शन और गुमराही की अपनी तुलनाओं के साथ, रिसाले -ए-नूर इन सच्चाइयों को स्वयं-साक्ष्य रूप से साबित करता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई बाईसवीं आयत के दूसरे चरण, बत्तीसवीं आयत के पहले चरण, तैंतीसवीं आयत के "विंडोज़" और मूसा की लाठी (असा-यी मूसा) के ग्यारह प्रमाणों और प्रमाणों को देखे, और यदि उनकी रोशनी में अन्य तुलनाओं पर विचार किया जाए, तो यह समझा जा सकता है कि यह कुरान की सच्चाईयाँ हैं जो रिसाले-ए-नूर में प्रकट हुई हैं जो इस समय पूर्ण अविश्वास और अड़ियल गुमराही को चूर-चूर कर देंगी और नष्ट कर देंगी।

नर्सी ने कहा

उसके नाम में उसकी महिमा है!

उनतीसवीं झलक से दूसरा अध्याय

विश्वास मानव जाति के लिए सबसे बड़ा वरदान क्यों है?

यह अध्याय इस वाक्यांश से संबंधित है, सारी प्रशंसा और आभार परमेश्वर के लिए है।

इस लघु ग्रंथ में, विश्वास के उन अनंत लाभों और प्रकाशों में से, जो लोगों को यह घोषणा करने के लिए प्रेरित करते हैं कि सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, केवल नौ का ही वर्णन किया जाएगा।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पहला बिंदु

सबसे पहले, निम्नलिखित दो बातों पर ध्यान दिया जाना चाहिए:

- दर्शनशास्त्र (जो धर्म का पालन नहीं करता) एक काला चश्मा है जो हर चीज़ को बदसूरत और भयावह दिखाता है। इसके विपरीत, सच्चा धार्मिक विश्वास एक पारदर्शी, स्पष्ट, चमकदार चश्मा है जो हर चीज़ को सुंदर और प्यारा दिखाता है।

- क्योंकि वे सभी प्राणियों के साथ जुड़े हुए हैं, सभी चीजों के साथ एक प्रकार का लेन-देन करते हैं, और स्वभाव से ही अपने आस-पास की चीजों से मिलने, बातचीत करने और पड़ोसी होने के लिए बाध्य हैं, इसलिए मनुष्यों के छह पक्ष या पहलू हैं: बायां, दायां, सामने, पीछे, ऊपर और नीचे।

ऊपर बताए गए दोनों में से किसी भी चश्मे को पहनने पर मनुष्य को इन ओर स्थित प्राणियों और परिस्थितियों को देख सकते हैं।

दायाँ पक्ष: इस पक्ष या पहलू का मतलब अतीत है। जब अतीत को अधार्मिक दर्शन के चश्मे से देखा जाता है, तो यह एक विशाल, अंधकारमय, भयावह, उलटा कब्रिस्तान प्रतीत होता है, जिसका प्रलय पहले से ही आ चुका है।

ऐसा लगता है कि यह घटना घटित हो चुकी है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह दृश्य मनुष्यों में बहुत भय, डर और निराशा पैदा करता है।

हालांकि, जब इस पक्ष को आस्था के चश्मे से देखा जाता है, तो भले ही यह दायरा उलट-पुलट हो गया लगता है, लेकिन इसमें किसी तरह की जनहानि नहीं हुई है।
इसके बजाय यह समझा जाता है कि इसके चालक दल और निवासियों को स्थानांतरित कर दिया गया है

एक बेहतर, रोशनी से भरी दुनिया के लिए। कब्रों और गड्ढों को भूमिगत सुरंग माना जाता है, जो किसी दूसरी, रोशनी से भरी दुनिया की ओर ले जाने के लिए खोदी गई हैं। इसका मतलब यह है कि विश्वास से मनुष्य को जो खुशी, राहत, संतोष और मन की शांति मिलती है, वह ईश्वरीय कृपा है जो उसे हज़ारों बार बोलने के लिए मजबूर करती है:

“सारी प्रशंसा और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है!”

बायाँ भाग: बायाँ भाग भविष्य को दर्शाता है। अब जब भविष्य को दर्शनशास्त्र के चश्मे से देखा जाता है, तो यह एक विशाल, अंधेरी, भयावह कब्र के रूप में दिखाई देता है जो हमें सड़ा देगी और हमें साँपों और बिच्छुओं का भोजन बना देगी। लेकिन जब विश्वास के चश्मे से देखा जाता है, तो यह सर्वशक्तिमान ईश्वर, निर्माता, दयालु और दयालु द्वारा मनुष्यों के लिए तैयार किए गए भोज के रूप में दिखाई देता है, जिसमें सभी प्रकार के बेहतरीन और सबसे स्वादिष्ट भोजन और पेय शामिल हैं। और यह बनाता है

उन्हें हज़ारों बार कहना चाहिए: “सारी स्तुति और कृतज्ञता परमेश्वर के लिए है!”

ऊपर: जब कोई व्यक्ति स्वर्ग की ओर देखने के लिए दर्शनशास्त्र के चश्मे का उपयोग करता है, तो उसे अरबों सितारों और स्वर्गीय पिंडों की अत्यंत तेज़ और विविध गतिविधियों पर एक भयानक भय और आतंक महसूस होता है, जो अंतहीन अंतरिक्ष में जंगली घोड़ों की तरह दौड़ रहे हैं। हालाँकि, जब कोई आस्तिक उन्हें देखता है, तो वह देखता है कि जिस तरह सेना के युद्धाभ्यास एक कमांडर की देखरेख और आदेश पर किए जाते हैं, उसी तरह सितारे प्रकाश फैलाने वाले दीपक हैं जो स्वर्ग की दुनिया को सुशोभित करते हैं। नतीजतन, उन घोड़ों की दौड़ पर आतंक और भय महसूस करने के बजाय, वे मित्रता और प्रेम से भर जाते हैं। विश्वास की उदारता के बदले में हजारों बार "सभी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए हैं!" कहना निश्चित रूप से कम है, जो स्वर्ग की दुनिया को इतने सौम्य तरीके से दर्शाता है।

नीचे: जब कोई व्यक्ति अपने पैरों के नीचे की धरती को देखने के लिए दर्शनशास्त्र की नज़र से देखता है, तो वह देखता है कि यह एक ऐसा जानवर है जिसे बिना किसी उद्देश्य के सूर्य के चारों ओर घूमने के लिए छोड़ दिया गया है, या एक ऐसी नाव है जिसका कोई कप्तान नहीं है, और वे भय और चिंता से स्तब्ध हो जाते हैं। लेकिन जब वे विश्वास के चश्मे से देखते हैं, तो वे इसे दयालु ईश्वर के जहाज के रूप में देखते हैं, जो मानव जाति को सर्वशक्तिमान ईश्वर की आज्ञा के तहत सूर्य के चारों ओर एक सुखद यात्रा पर ले जा रहा है, जिसमें सभी शामिल हैं।

जहाज़ पर ज़रूरी खाने-पीने और कपड़ों की व्यवस्था की गई। और इसलिए वे पूरे दिल से कहना शुरू करते हैं कि “सारी प्रशंसा और आभार भगवान के लिए है!” इस महान उपहार के लिए जो विश्वास से निकलता है।

सामने: यदि कोई व्यक्ति जो दर्शनशास्त्र में लिप्त है, इस ओर देखता है, तो वह देखता है कि सभी जीवित प्राणी, चाहे मनुष्य हों या पशु, काफिले दर काफिले और बड़ी तेजी से गायब हो रहे हैं। अर्थात्, वे अस्तित्वहीनता की ओर जा रहे हैं और अस्तित्वहीन हो रहे हैं। चूँकि वे जानते हैं कि वे भी उसी अंत के लिए अभिशप्त हैं, इसलिए वे दु:ख से लगभग अपना दिमाग खो देते हैं। लेकिन एक आस्तिक के लिए जो उसी चीज़ को विश्वास की नज़र से देखता है, इस तरफ यात्रा करने वाले लोग अस्तित्वहीनता की दुनिया में नहीं जा रहे हैं; बल्कि, वे खानाबदोशों की तरह एक चरागाह से दूसरे चरागाह में स्थानांतरित हो रहे हैं। वे एक क्षणभंगुर क्षेत्र से एक शाश्वत स्थायी क्षेत्र में जा रहे हैं; जिस खेत पर उन्होंने काम किया है, वहाँ से उस कार्यालय में जहाँ से वे अपनी तनख्वाह लेते हैं; कठिनाई और कठिनाई के स्थान से आराम और दया के स्थान पर। और इसलिए वे इस पहलू को खुशी और कृतज्ञता के साथ देखते हैं।

रास्ते में आने वाली प्रत्यक्ष कठिनाइयाँ, जैसे कि मृत्यु और कब्र, वास्तव में अपने परिणामों के संदर्भ में खुशी के साधन हैं। क्योंकि प्रकाश से भरी दुनियाओं की ओर जाने वाला मार्ग कब्र से होकर गुजरता है, और सबसे बड़ी खुशी सबसे खराब, सबसे दुखद आपदाओं के परिणामस्वरूप आती है। उदाहरण के लिए, पैगंबर यूसुफ, उन पर शांति हो, मिस्र के उप-शासक होने की खुशी तभी प्राप्त हुई जब उन्हें उनके भाइयों ने एक कुएं में फेंक दिया और जुलैखा की बदनामी के कारण जेल में डाल दिया।149

इसी प्रकार, अपनी माँ के गर्भ से संसार में आने वाला बच्चा इस संसार में केवल उन थकाऊ, कष्टदायक कठिनाइयों के परिणामस्वरूप ही सुख प्राप्त करता है, जो वह रास्ते में झेलता है।

पीछे: जब कोई दर्शन के चश्मे से पीछे से आने वालों को देखता है, तो उसे इस सवाल का कोई जवाब नहीं मिलता: "वे कहाँ से आए हैं और कहाँ जा रहे हैं? और वे इस दुनिया के दायरे में क्यों आए?" स्वाभाविक रूप से प्रश्नकर्ता घबराहट और संदेह की पीड़ा में रहता है। लेकिन अगर वे विश्वास के चश्मे से देखें, तो वे समझ जाएँगे कि मनुष्य पर्यवेक्षक हैं जिन्हें दुनिया में भेजा गया है

---

[149] कुछ मुस्लिम इतिहासकारों के अनुसार, ज़ुलेख़ा उस मंत्री की पत्नी का नाम है, जिसने पैगम्बर यूसुफ़ को गुलाम के रूप में खरीदा था। वह उसके साथ मौज-मस्ती करना चाहती थी, लेकिन जब पैगम्बर यूसुफ़ ने उसे अस्वीकार कर दिया, तो उसने उसे कैद करने का आदेश दिया। कुरान देखें, 12:23–
35. (ट्र.)

अनन्त प्रभु द्वारा ब्रह्माण्ड के प्रदर्शन में प्रदर्शित शक्ति के अद्भुत चमत्कारों पर चिंतन और अध्ययन करने के लिए। जिस स्तर पर वे शक्ति के उन चमत्कारों के मूल्य और भव्यता को समझते हैं और जिस हद तक वे अनन्त प्रभु की भव्यता की ओर इशारा करते हैं, उसके अनुसार अपने ग्रेड प्राप्त करने के बाद, मनुष्य अनन्त प्रभु के दायरे में वापस आ जाएगा। और इसलिए वे कहेंगे, "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!" उस विश्वास के पक्ष के लिए जिसने उन्हें इस आशीर्वाद तक पहुँचाया है-

समझ की क्षमता.

चूँकि विश्वास के अनुग्रह के लिए, जो ऊपर वर्णित अंधकार की परतों को हटाता है, यह कहते हुए की गई प्रशंसा, "सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!" भी एक आशीर्वाद या अनुग्रह है, इसलिए इसके लिए भी प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता होती है।

इसके लिए तीसरी बार स्तुति और धन्यवाद अर्पित करने की आवश्यकता होती है, जिसके लिए चौथी बार की आवश्यकता होती है, और इसी प्रकार, स्तुति की एक अनंत श्रृंखला बनती है जो इस वाक्यांश के एक बार उच्चारण से पैदा होती है: "सभी स्तुति और आभार ईश्वर के लिए हैं!"

दूसरा बिंदु

हमें कहना चाहिए, “सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए है!” विश्वास की उदारता के लिए जो इन छह पक्षों को प्रकाशित करती है, क्योंकि छह पक्षों के अंधकार को दूर करने और इस प्रकार बुराई को दूर करने के कारण एक महान उपकार या आशीर्वाद होने के अलावा, विश्वास इस तथ्य के संबंध में भी एक उदारता और उपकार है कि यह इन पक्षों को प्रकाशित करता है और इस प्रकार लाभ आकर्षित करता है। इसलिए चूँकि

मनुष्य स्वभाव से सभ्य है, वह छहों दिशाओं के सभी प्राणियों से जुड़ा हुआ है, तथा विश्वास के माध्यम से इन दिशाओं से लाभ उठाने की संभावना रखता है।

इस प्रकार आयत के अर्थ के अनुसार, जिस ओर भी तुम मुड़ो, वहाँ ईश्वर का "चेहरा" है (2:115), मनुष्य छह दिशाओं में से जिस ओर भी हो, उसे ज्ञान मिलता है। वास्तव में, एक आस्तिक के पास एक जीवन होता है जो वास्तव में दुनिया की नींव से लेकर उसके अंत तक फैला होता है। उनका यह जीवन

जीवन के प्रकाश से लाभ मिलता है जो पूर्व-अनंत काल से लेकर उत्तर-अनंत काल तक फैला हुआ है। साथ ही, विश्वास के कारण, जो छह पक्षों को प्रकाशित करता है, वर्तमान संकीर्ण समय और स्थान जिसमें मनुष्य खुद को पाता है, एक विशाल दुनिया में बदल जाता है। यह विस्तृत दुनिया उनके घर की तरह बन जाती है, जबकि अतीत और भविष्य उनकी आत्मा और हृदय के लिए वर्तमान समय की तरह बन जाते हैं: उनके बीच की दूरी गायब हो जाती है।

तीसरा बिंदु

चूँकि विश्वास समर्थन और सहायता के बिंदु प्रदान करता है, इसलिए इसके लिए प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है कि "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!"

मानवता को अपनी नपुंसकता और अपने विरोधियों की बहुलता के कारण सहायता या भरोसे के स्रोत की आवश्यकता है, ताकि वे उन लोगों को पीछे हटाने के लिए उस स्रोत में शरण ले सकें जो उनके विरुद्ध हैं। इसी तरह, अपनी आवश्यकताओं की अधिकता और अपनी अत्यधिक जन्मजात गरीबी के कारण, उन्हें सहायता के स्रोत की आवश्यकता है, जिससे वे सहायता मांग सकें, ताकि इसके माध्यम से वे अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

हे मानवजाति! तुम्हारा सहारा या भरोसा केवल ईश्वर पर विश्वास है। तुम्हारी आत्मा और विवेक के लिए सहायता का एकमात्र स्रोत परलोक पर विश्वास है। इसलिए जो व्यक्ति इन दोनों स्रोतों से अनभिज्ञ है, उसके हृदय और आत्मा में निरंतर भय बना रहता है, और उसका विवेक निरंतर पीड़ाग्रस्त रहता है। लेकिन जो व्यक्ति पहले बिंदु पर भरोसा करता है और दूसरे से सहायता मांगता है, उसके हृदय और आत्मा में अनेक सुख और मित्रता के उदाहरण अनुभव होते हैं: परिणामस्वरूप वे सांत्वना पाते हैं और उनके विवेक को शांति और संतुष्टि मिलती है।

चौथा बिंदु

विश्वास का प्रकाश वैध सुखों के आसन्न लुप्त होने से उत्पन्न होने वाले दर्द को दूर करता है, यह दिखाते हुए कि ऐसे सुख हमेशा मौजूद हैं और भविष्य में फिर से आएंगे। इसके अलावा, यह वरदानों के स्रोत को इंगित करके सुनिश्चित करता है कि वे वरदान हमेशा जारी रहें और कम न हों।

साथ ही, मिलन के सुख को उनके समान सुखों के साथ दर्शाकर, यह वियोग और जुदाई के दर्द को दूर करता है। यानी, एक सुख में वियोग के विचार के कारण कई दुख होते हैं, जबकि विश्वास उस सुख की पुनरावृत्ति को ध्यान में रखकर उन्हें दूर करता है। सुख के नवीनीकरण में और भी सुख हैं। यदि वह वृक्ष अज्ञात है जिससे फल लिया जाता है, तो फल तक सीमित सुख उसे खा लेने पर गायब हो जाता है, जिससे दुख होता है। लेकिन यदि वृक्ष ज्ञात है, तो फल के समाप्त होने पर कोई दुख नहीं होता, क्योंकि उस वृक्ष से दूसरे फल तोड़े जा सकते हैं जो उसकी जगह ले सकते हैं।

वास्तव में, नवीनीकरण अपने आप में एक आनंद है। क्योंकि मानव आत्मा को सबसे अधिक कष्ट अलगाव से होने वाली पीड़ाओं से होता है। विश्वास का प्रकाश सुखों से अलग होने की पीड़ाओं को उनके स्थान पर समान सुखों द्वारा प्रतिस्थापित करके तथा उन्हें प्राप्त करने की आशा के माध्यम से दूर करता है।

पांचवां बिंदु

ईमान की रोशनी उन चीज़ों को दिखाती है जिन्हें इंसान अपने लिए अजनबी और दुश्मन समझता है या बेजान और खोई हुई चीज़ों को जैसे कि जीवों के बीच अनाथ, दोस्त और भाई-बहन, ज़िंदा और ईश्वर की महिमा करने वाले के तौर पर देखता है। यानी जो इंसान बेपरवाही की नज़र से देखता है, वह दुनिया के जीवों को दुश्मन की तरह नुकसानदेह समझता है और डरता है: उसे हर चीज़ पराया नज़र आती है।

क्योंकि गुमराह लोगों के दृष्टिकोण से, भूतकाल की और भविष्यकाल की चीजों के बीच भाईचारे का कोई बंधन नहीं होता: उनके बीच केवल एक नगण्य, आंशिक संबंध होता है। नतीजतन, गुमराह लोगों का भाईचारा हजारों वर्षों में से केवल एक मिनट के बराबर होता है।

विश्वास के अनुसार, सभी शरीर जीवित हैं, एक दूसरे से परिचित हैं और एक दूसरे के साथ मैत्रीपूर्ण हैं। विश्वास यह भी दर्शाता है कि उनमें से प्रत्येक अपने अस्तित्व की भाषा के माध्यम से अपने निर्माता की महिमा करता है। यह इस संबंध में है कि सभी शरीरों में प्रत्येक के लिए उपयुक्त एक प्रकार का जीवन और आत्मा है। इसलिए जब शरीरों को विश्वास के प्रकाश में देखा जाता है तो उनके बारे में कुछ भी डरावना या भयावह नहीं होता है; इसके बजाय मित्रता और प्रेम होता है।

गुमराही का दृष्टिकोण मनुष्य को, जो अपनी मांगों और आकांक्षाओं को पूरा करने में शक्तिहीन है, मालिकहीन और बिना किसी रक्षक के मानता है; यह उन्हें दुखी और शोकाकुल देखता है, अपनी नपुंसकता के कारण रोते अनाथों की तरह। इसके विपरीत, विश्वास का दृष्टिकोण जीवित प्राणियों को अनाथों के रूप में नहीं बल्कि कुछ कार्यों के लिए नियुक्त अधिकारियों के रूप में, भगवान की महिमा और प्रशंसा करने के कर्तव्य के साथ नियुक्त सेवकों के रूप में देखता है।

छठा बिंदु

आस्था का प्रकाश इस दुनिया और परलोक को दो ऐसी मेजों के रूप में दर्शाता है जो अनेक प्रकार की सौगातों से भरी हुई हैं: आस्थावान लोग आस्था के हाथ से, अपनी आंतरिक और बाह्य इंद्रियों और अपनी आध्यात्मिक क्षमताओं से उन तक पहुँचकर लाभ उठाते हैं। गुमराही के चश्मे से देखा जाए तो जीवों के लिए लाभ का दायरा कम होता जाता है और भौतिक सुखों तक सीमित रह जाता है। हालाँकि, आस्था के चश्मे से देखा जाए तो यह एक ऐसे क्षेत्र में फैल जाता है जो स्वर्ग और पृथ्वी को घेर लेता है। सच में, आस्थावान लोग सूर्य को अपने घर की छत पर लटका हुआ दीपक और चाँद को रात का उजाला मानते हैं।

इस कारण सूर्य और चंद्रमा उनके लिए ईश्वरीय कृपा के उपहार और उदाहरण हैं, और वह क्षेत्र जिससे विश्वासियों को लाभ मिलता है वह आकाश से भी व्यापक है। इसकी आयतों की वाक्पटुता के माध्यम से, उसने सूर्य और चंद्रमा को ईश्वरीय कृपा का स्रोत बनाया है ।

चाँद अपनी अपनी गति में स्थिर है और तुम्हारे काम आता है (14:33), और उसने आकाशों में और धरती में जो कुछ है, सब को तुम्हारे काम आने के लिए बनाया है
(31:20), चमत्कारिक रूप से वाक्पटु कुरान इन अद्भुत उपकारों और आशीर्वादों की ओर संकेत करता है जो विश्वास से उत्पन्न होते हैं।

सातवां बिंदु

विश्वास के माध्यम से यह जाना जाता है कि ईश्वर का अस्तित्व एक महान उपकार है जो अन्य सभी से बढ़कर है; यह एक स्रोत है, एक झरना है, जिसमें असंख्य उपकार, असंख्य आशीर्वाद और असंख्य उपहार हैं। इसलिए मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह सृष्टि के कणों की संख्या के प्रति विश्वास के उपकारों की प्रशंसा और प्रशंसा करके इस ऋण को चुकाए।

इनमें से कुछ उपकारों की ओर रिसाले-ए-नूर के विभिन्न भागों में संकेत किया गया है, जहां ईश्वर में विश्वास की चर्चा की गई है।

उन उपकारों में से एक जिसके लिए प्रशंसा और धन्यवाद अल-हम्दु लिल्लाह ("सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!") कहकर पेश किया जाना चाहिए - अल-हम-दु के रूप में निश्चित उपपद अल के साथ हम्द (प्रशंसा) शब्द का उल्लेख करके, जिसका अर्थ है "सभी प्रशंसा" - ईश्वर का दयालु होने का उपकार है।

ईश्वर की दया का तात्पर्य उन जीवों की तरह असंख्य कृपाओं और उपहारों से है, जिन्हें दया की आवश्यकता है और जिन्हें दया की कृपा प्राप्त होती है। क्योंकि मनुष्य विशेष रूप से सभी जीवों से जुड़ा हुआ है, और इस कारण से वह उनके सुख से खुश होता है और उनके दुख से दुखी होता है। इस प्रकार एक व्यक्ति द्वारा प्राप्त कृपा उसके साथियों के लिए भी कृपा है।

ईश्वर का एक और महत्वपूर्ण गुण है, वह है करुणा। वह दयालु है और वह उन बच्चों और शिशुओं के समान ही अनेक प्रकार के वरदानों का स्रोत है, जिन्हें अपनी माताओं की कोमलता का वरदान मिला है, इसलिए वह उसी के अनुसार प्रशंसा और प्रशंसा का पात्र है। विवेकशील व्यक्ति जो मातृहीन, भूखे बच्चे के रोने पर दुःख और दया महसूस करता है, निश्चित रूप से एक माँ की अपने बच्चों के प्रति करुणा देखकर प्रसन्न होता है: वे इससे प्रसन्न और खुश होते हैं। इस प्रकार के सभी सुख अनुग्रह हैं और प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता रखते हैं।

एक और वरदान या उपकार जिसके लिए सभी प्रकार की बुद्धिमत्ता और उदाहरणों की प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता होती है जो इसमें निहित हैं
ब्रह्माण्ड ईश्वरीय बुद्धि या ईश्वर का सर्वज्ञ होना है। क्योंकि जिस प्रकार किसी व्यक्ति की आत्मा को ईश्वरीय दया और उनकी कृपा प्राप्त होती है

ईश्वरीय करुणा के प्रकटीकरण से हृदय को आकृष्ट करने वाले, उनकी बुद्धि भी ईश्वरीय ज्ञान की सूक्ष्मताओं से आनंद प्राप्त करती है। इसलिए उन्हें "सर्व मंगलमय" के उच्च उच्चारण के माध्यम से अंतहीन प्रशंसा और स्तुति की आवश्यकता होती है।

स्तुति और आभार परमेश्वर के लिए है!"

इसके अलावा, ईश्वरीय संरक्षण या ईश्वर का सर्वरक्षक होना एक और उपकार है जिसके लिए प्रशंसा इस तरह की जानी चाहिए कि "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है!" इतनी महान कि इसकी ध्वनि से पूरा स्थान भर जाए - इसे उतनी बार किया जाना चाहिए जितनी बार ईश्वरीय नाम सर्व-उत्तराधिकारी की अभिव्यक्तियाँ हैं, जितने वंशज हैं जो अपने पूर्वजों की मृत्यु के बाद भी जीवित रहते हैं, जितने प्राणी अगली दुनिया में हैं, और जितने मनुष्य के कर्म हैं जो संरक्षित हैं ताकि वे परलोक में अपना पुरस्कार प्राप्त कर सकें। क्योंकि उपकार की निरंतरता अधिक मूल्यवान है

अनुग्रह से भी अधिक; आनंद की स्थायित्व आनंद से भी अधिक आनंददायक है; स्वर्ग में शाश्वत स्थायित्व स्वर्ग से भी श्रेष्ठ है, इत्यादि। परिणामस्वरूप, इसमें निहित सभी उपहारों के साथ, सर्वशक्तिमान ईश्वर का संरक्षण का गुण ब्रह्मांड में मौजूद सभी उपहारों से कहीं अधिक महान और श्रेष्ठ है। इस प्रकार इस गुण के लिए एक "सभी प्रशंसा और आभार ईश्वर के लिए हैं!" की आवश्यकता होती है जो इतना महान हो कि यह दुनिया को भर दे। आप बाकी दिव्य नामों और गुणों की तुलना यहाँ बताए गए चार नामों से कर सकते हैं, और चूँकि प्रत्येक में अनंत उपहार या अनुग्रह हैं, इसलिए प्रत्येक के लिए अनंत प्रशंसा और धन्यवाद की आवश्यकता है।

इसी प्रकार, पैगम्बर मुहम्मद - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, जो ईमान की कृपा प्राप्त करने का साधन हैं, जिनके पास नेमतों के सभी खजाने खोलने का अधिकार है, वे भी ऐसे उपकार हैं कि मानव जाति को अनंत काल तक उनकी प्रशंसा और प्रशंसा करने का ऋण है।

इसी प्रकार, इस्लाम और कुरान की कृपाएं, जो भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार की सभी प्रकार की कृपाओं का संकेन्द्रित रूप और स्रोत हैं, असीम प्रशंसा की हकदार हैं।

आठवां बिंदु

सारी प्रशंसा और आभार ईश्वर को है कि, जैसा कि महान कुरान ने अपने सभी अध्यायों और खंडों, सभी पृष्ठों और पंक्तियों, और सभी शब्दों और अक्षरों के साथ स्थापित किया है, यह ब्रह्मांड के रूप में जाना जाने वाला ब्रह्मांडीय पुस्तक उसकी सुंदरता और अनुग्रह और पूर्णता के गुणों को प्रकट करके, सर्व-शुद्ध और पवित्र की प्रशंसा और महिमा करता है। यह इस प्रकार है:

अपनी क्षमता के अनुसार, चाहे वह बड़ी हो या छोटी, इस ब्रह्मांडीय पुस्तक की प्रत्येक कढ़ाई अपने कढ़ाईकर्ता की प्रशंसा और गुणगान करती है, जो एक है और हमेशा से ही मांगा जाता है, उसकी महिमा के गुणों को प्रकट करके। साथ ही, उसकी सुंदरता और अनुग्रह के गुणों को प्रदर्शित करके, इस पुस्तक का प्रत्येक शिलालेख अपने लेखक की प्रशंसा करता है, जो सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय है। इसके अलावा, दिव्य सर्व-सुंदर नामों के प्रतिरूपण के साथ अनुग्रहित होने और उन्हें प्रतिबिंबित करने के कारण, इस पुस्तक के सभी शिलालेख, बिंदु और कढ़ाई सर्व-शुद्ध और पवित्र एक की प्रशंसा, महिमा और महिमा के माध्यम से प्रशंसा और गुणगान करते हैं। इसके अलावा, इस पुस्तक का प्रत्येक स्तोत्र अपने रचयिता की प्रशंसा और महिमा करता है, जो सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है।

प्रार्थी

मैं एक उजड़ी हुई कब्र हूँ, जिसमें ढेर लगे हैं
सत्तर-नौ मरे सईद अपने पापों और दुखों के साथ।
अस्सीवाँ पत्थर उसकी कब्र के लिए एक क़ब्र का पत्थर है;
वे सब मिलकर इस्लाम के पतन पर रोते हैं।
मेरी क़ब्र के पत्थर और मृत सईदों की कराहती क़ब्र के साथ,
मैं अपने कल के निवास की ओर आगे बढ़ रहा हूं।
मुझे पूरा यकीन है कि भविष्य का आकाश और पृथ्वी
हम सब मिलकर इस्लाम के स्पष्ट, चमकते हाथों के आगे आत्मसमर्पण कर देंगे।
क्योंकि इसकी शक्ति विश्वास के आशीर्वाद में निहित है,
यह सभी प्राणियों को शांति और सुरक्षा प्रदान करता है।

अनुक्रमणिका

सी

एच

मैं

एन

क्यू

आर

टी

में

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

एम

एन

पी